प्रकाशक —

नाहटा ब्रदर्स
४ जगमोहन मल्लिक लेन
कलकत्ता ७

चैत्र शुक्ल १३
वि० सं० २०१३
वीर सं० २४८३

प्रथमावृत्ति
२००

मूल्य
५)

मुद्रक—
जैन प्रिन्टिंग प्रेस, कोटा

१ जैन साहित्य महारथी स्व० श्री मोहनलाल द० देसाई

समर्पण

जिनके "कविवर समयसुन्दर" निबन्ध ने हमें साहित्यक्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दिया, जिनके "जैन गूर्जर कविओ" भाग १ २ ३ व "जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास" ग्रन्थ जैन साहित्य और इतिहास के लिए परम प्रकाश पुञ्ज हैं, उन्हीं सहृदय, परम अध्यवसायी, शोध निरत, महान् परिश्रमी और निष्णात साहित्य-महारथी स्वर्गीय श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई (एडवोकेट, बम्बई हाईकोर्ट) महोदय की मधुर स्मृति में यह समयसुन्दर कृति कुसुमाञ्जलि सादर समर्पित है।

—•••—

अगरचन्द नाहटा,
भँवरलाल नाहटा

भूमिका

मेरे मित्र श्री अगरचन्दजी नाहटा प्राचीन ग्रन्थों के अन्वेषक की अपेक्षा उद्धारक अधिक हैं क्योंकि वे केवल पुस्तकों के भाण्डारों में गोते लगाकर सिर्फ पुरानी अज्ञात अपरिचित पुस्तकों और ग्रन्थकारों का पता ही नहीं लगाते हैं बल्कि पता लगाई हुई पुस्तक और लेखकों के अतिरिक्त वक्तव्य विषय का ऐतिहासिक वृत्त एवं सांस्कृतिक महत्त्व बताकर साहित्य प्रेमी जनता को उनके प्रति उत्सुक बनाते हैं और समय समय पर महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके उन्हें सर्व जन-सुलभ भी बनाते हैं। नाहटाजी ने अब तक सैकड़ों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का संग्रह कराया है और विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में सैकड़ों लेख लिखकर विस्मृत ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की ओर सहृदयों का ध्यान आकृष्ट किया है। नाहटाजी जैसे परिश्रमी और बहुश्रुत विद्वान हैं वैसे ही उदार और निस्पृह भी। उन्होंने अपने महत्त्व-पूर्ण लेखों को दोनों हाथ लुटाया है। छोटी-छोटी अपरिचित पत्रिकाएँ भी उनकी कृपा से कभी वंचित नहीं रहती हैं। इस अवढर दानी स्वभाव का फल यह हुआ है कि उनके लेख इतने बिखर गए हैं कि साहित्य के विद्यार्थी के लिए एकत्र करके पढ़ना और लाभ उठाना लगभग असम्भव हो गया है। यदि ये सभी लेख पुस्तक रूप में एकत्र संगृहीत हो जाँय तो बहुत ही अच्छा हो। अस्तु।

उत्तर भारत में ईस्वी सन् की १० वीं शताब्दी के बाद विदेशी आक्रमकों के धक्के बार-बार लगते रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में जो साहित्य बना वह उचित संरक्षण नहीं पा सका। साधारणतः तीन प्रकार से प्राचीन काल में हस्तलिखित ग्रन्थों का रक्षण होता रहा है—(१) राजशक्ति के आश्रय में (२) संगठित धर्म-सम्प्रदाय के संरक्षण में और (३) लोक-मुख में। जिन प्रदेशों न परवर्तीकाल में अवधी और ब्रजभाषा का साहित्य लिखा गया उनमें दुर्भाग्यवश चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में लिखे गए साहित्य के लिए प्रथम दो आश्रय बहुत कम उपलब्ध हुए। मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा के बाद देश में शान्ति और सुव्यवस्था कायम हुई और हस्तलिखित ग्रन्थों के संरक्षण का सिलसिला भी जारी हुआ। परन्तु राजपूताने में दोनों प्रकार के आश्रय प्राप्त थे। इसीलिये राजस्थान में देशी भाषा के अनेक ग्रन्थ सुरक्षित रहे। यद्यपि विदेशी आक्रमकों ने राजपूताने पर भी आक्रमण किए परन्तु भौगोलिक कारणों से उस प्रदेश में बहुत-सी साहित्यिक सम्पत्ति सुरक्षित रह गई। अनेक राजदरबारों के पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकें किसी न किसी रूप में सुरक्षित रह गईं। किन्तु पुस्तकों के संग्रह और संरक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जैन-ग्रन्थ-भाण्डारों ने किया है। जैन मुनि लोग सदाचारी और विद्याप्रेमी होते थे। वे स्वयं शास्त्रों का पठन-पाठन करते थे और लोक-भाषा में काव्य-रचना भी करते थे। इन ग्रन्थ भाण्डारों का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है। काल-क्रम से गृहस्थ भक्तों के चित्त में इन ग्रन्थ भाण्डारों के प्रति कभी कभी मोहान्ध भक्ति भी देखी गई है। कितने ही भाण्डारों के ताले वर्षों से खुले ही नहीं, कितने ही ग्रन्थ भाण्डारों में पुस्तकें रखी-रखी राख हो गईं, और जाने कितने बहुमूल्य

ग्रन्थ सदा के लिये लुप्त हो गए। फिर भी इस निष्ठा पूर्वक समाचरित ग्रन्थभक्ति का ही सुफल है कि इन ग्रन्थ-भाण्डारों के ग्रन्थ बिना हेर-फेर के शताब्दियों से ज्यों के त्यों सुरक्षित रह गए हैं। इन ग्रन्थ-भाण्डारों की पूर्ण परीक्षा अभी नहीं हुई है। परन्तु जिन लोगों को भी इन महत्त्वपूर्ण भाण्डारों को देखने का सुअवसर मिला है, वे कुछ न कुछ महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ अवश्य (प्रकाश में) ला सके हैं। नाहटाजी को कई भाण्डारों के देखने का अवसर मिला है और उन्होंने अनेक ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार भी किया है। समयसुन्दर कृत 'कुसुमाञ्जलि' भी ऐसी ही खोज का सुफल है। यह ग्रन्थ भाषा छन्द, शैली और ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से बहुत महत्त्व-पूर्ण है। इसमें सन् १६३० ई० के अकाल का बड़ा ही जीवन्त वर्णन है। यह अकाल गोसाईं तुलसीदास के गोलोकवास के सिर्फ सात वर्ष बाद हुआ था। कवि ने इसका बड़ा ही हृदय-द्रावक और जीवन्त वर्णन किया है। इस ग्रन्थकार के बारे में नाहटाजी ने नागरी-प्रचारिणी पत्रिका के भा० १० ६ के प्रथम अङ्क में जो लिखा था उससे ज्ञान पड़ता है कि इस ग्रन्थकार की जन्म-भूमि मारवाड़ प्रान्त का सांचोर स्थान है। ये पोरवाड़ वंश के रत्न थे और इनका जन्मकाल सम्भवतः सं० १६२० वि० है। अकबर के आमंत्रण पर ये लाहौर में सम्राट से मिलने गए थे। इनके लिखे संस्कृत ग्रन्थों की संख्या पच्चीस है और भाषा में लिखे ग्रन्थों की संख्या भी तेईस है। इन्होंने मात्र छत्तीसियाँ' की भी रचना की थी। कई ग्रन्थ रचनाएं भी इनके नाम पर चलती हैं पर नाहटाजी को उनकी प्रामाणिकता पर सन्देह है। सं० १७०२ में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी (महावीर जन्म जयन्ती) के दिन अहमदाबाद में इन्होंने अनशन आराधना पूर्वक शरीर त्याग किया।

इनके द्वारा रचित साहित्य की नामावली देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह कितना महत्त्व पूर्ण है। उसमें रास, चौपाई आदि कई ऐसे काव्य रूप मिलते है जो अपभ्रंश-काल से उस समय तक बनते चले आ रहे थे। इनके प्रकाशित होने पर उन छूटी हुई कड़ियों का पता लग सकता है, जो अब तक अज्ञात हैं। नाहटाजी ने जिस ग्रन्थ का संपादन किया है वह इनकी कवित्व-शक्ति की प्रौढ़ता का उदाहरण है। इसकी भाषा में भावों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। कवि का ज्ञान-परिसर बहुत ही विस्तृत है, इसलिये वह किसी भी वर्ण्य विषय को बिना आयास के सहज ही समाप्त लेता है।

इस पुस्तक के छन्दों और रागों से तत्कालीन भजभाषा में प्रचलित पद-शैली के अध्ययन में सहायता मिलेगी। भाव-पेशी योगियों और निर्गुणियों सन्तों की भाषा और शैली की तुलना की जा सकती है। ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ का लेखक निर्गुण भाव से भजन करने वाले सन्तों की साखी तथा सबदी शैली से पूर्णतः परिचित है और सूरदास तुलसीदास जैसे सगुण भाव से भजन करने वाले भक्त कवियों की पदावली से भी प्रभावित है। कई पदों में सूरदास और तुलसीदास की शैलियों का रस मिलता है। यह ग्रन्थ सन् ई० की सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी की भाषा और शैली के अध्ययन में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

नाहटाजी ने इस ग्रन्थ का संपादन करके हिन्दी-साहित्य के अध्येताओं के सामने बहुत अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है। मैं हृदय से उनके प्रयत्न का अभिनन्दन करता हूँ। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि नाहटाजी को दीर्घायुष्य और पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें, जिससे वे अनेक महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार करते रहें। तथास्तु।

काशी
११-२-५१

हजारीप्रसाद द्विवेदी

वक्तव्य

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दर की लघु रचनाओं का यह संग्रह प्रकाशित करते हुए २८ वर्ष पूर्व की मधुर स्मृतियें उभर आती हैं। वैसे तो कविवर की रचनाओं का रसास्वाद हमें अपने बाल्यकाल में ही मिल गया था क्योंकि राजस्थान में विशेषतः बीकानेर में आपके रचित शत्रुञ्जय रास, ज्ञान पञ्चमी और एकादशी के स्तवन, वीर स्तवन (वीर सुणो मोरी वीनती) शत्रुञ्जय चालोयणा स्तवन (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार) और कई अन्य स्तवन और सज्झायें जैन जनता के कण्ठहार बन रही हैं। इनमें से कई रचनायें तो किसी गच्छ और सम्प्रदाय के भेदभाव बिना समस्त श्वेताम्बर जैन समाज में खूब प्रसिद्ध हैं। हमारे पिताजी प्रातःकाल की सामायिक में आपके रचित शत्रुञ्जय रास गौतमगीत आलोयणा स्तवन आदि नित्य पाठ किया करते थे और माताजी एवं अन्य परिवार वालों से भी आपकी रचनाओं का मधुर गुञ्जारव हमने बाल्यकाल में सुना है। पर सं० १९८४ को माघ शु० ५ को खरतरगच्छ के बड़े प्रभावशाली और गीतार्थ आचार्य श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी हमारे पिताजी और बाबाजी आदि के अनुरोध से बीकानेर पधारे। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हमारी कोटड़ी में ही उनके विराजने से हम भी व्याख्यान प्रतिक्रमण आदि का लाभ उठाने लगे। इससे पूर्व भी कलकत्ता में सरवसुखजी नाहटा के साथ प्रतिदिन सामायिक में गाते हुए शत्रुञ्जय रास आदि तो हमने कण्ठस्थ कर लिये थे और ज्ञानपञ्चमी-एकादशी के स्तवन आदि भी समय समय पर बोलने और सुनाने के कारण अभ्यस्त हो गये थे। आचार्यश्री के साथ उपाध्याय सुखसागरजी विनयी राजसागरजी और लघु शिष्य

मंगलसागरजी थे उनसे भी प्रतिक्रमण आदि में आपके कई स्तवन-सज्झाय सुनते रहते थे। पर एक दिन उनके पास आनन्द काव्य महोदधि का सातवाँ मौक्तिक देखा, जिसमें जैन-साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई का "कविवर समय-सुन्दर"† निबन्ध पढ़ने को मिला। इस ग्रन्थ में कविवर का चार प्रत्येकबुद्ध रास भी छपा था। देसाई के उक्त निबन्ध ने हमें एक नई प्रेरणा दी। विचार हुआ कि समयसुन्दर राजस्थान के एक बहुत प्रसिद्ध कवि हैं और बीकानेर की आचार्य खरतर शाखा का उपाश्रय तो समयसुन्दर जी के नाम से ही प्रसिद्ध है। अतः उनके सम्बन्ध में गुजरात के विद्वान ने इतने विस्तार से लिखा है तो राजस्थान में खोज करने पर तो बहुत नई सामग्री मिलेगी। बस इसी आंतरिक प्रेरणा से हमारी शोध प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। श्रीजिन-कृपाचन्द्रसूरिजी के उपाश्रय में ही हमें आपकी अनेक रचनाएँ मिलीं, जिनमें से चौबीसी को तो हमने अपने 'पूजा संग्रह' के अन्त में सं १९८५ ही में प्रकाशित करदी थी और बड़े उपाश्रय के ज्ञान-भंडार, जयचंदजी भंडार, श्रीपूज्यजी का संग्रह, यति सुमीभालजी सं० अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और पार्श्वचंद्रसूरि उपाश्रय में व खरतर आचार्य शाखा का भण्डार मुख्यतः इसी दृष्टि से देखने आरम्भ किये कि कविवर की अज्ञात रचनाओं का संग्रह और प्रकाशन किया जाय। ज्यों ज्यों इन संग्रहालयों की हस्तलिखित प्रतियाँ देखने लगे त्यों त्यों कविवर की अनेक अज्ञात रचनाएं मिलने के साथ अन्य भी कई नई सुन्दर सामग्री देखने को मिली जिससे हमारा उत्साह बढ़ता चला गया। सबसे पहले महावीर मण्डल के पुस्तकालय में हमें एक ऐसा गुटका मिला जिसमें कविवर की छोटी छोटी पचासों रचनाएँ संगृहीत थीं। साथ ही विमलचन्द्र आदि सुकवियों की मधुर

---

† यह गुजराती साहित्य परिषद में पहले पढ़ा गया फिर जैन साहित्य संशोधक भा० २ अं० ३-४ में छपा था।

रचनाएँ भी देखने को मिलीं। हमने बड़े उत्साह के साथ उन सब की नकलें करलीं। उस समय की लिखी हुई उत्तम पद्य-संग्रह की दो कापियां आज भी हमें उस समय की हमारी रुचि और प्रवृत्ति की याद दिला रही हैं। साथ ही दूसरे कवियों की जो छोटी छोटी सुन्दर रचनाएँ हमें मिलीं, उनके नोट्स भी दो छोटी-कॉपियों में लेते रहे जो अब तक हमारे संग्रह में हैं। कविवर की रचनाएँ इतनी अधिक प्रचलित हुई व इतनी बिखरी हुई हैं कि जिस किसी समुदाय में हम पहुँचते वहाँ कोई न कोई अज्ञात छोटी मोटी रचना मिल ही जाती। इसलिये हमारी शोध प्रवृत्ति को बहुत वेग मिला। बड़े-बड़े ही नहीं छोटे-छोटे भण्डारों के फुटकर पत्रों और गुटकों को भी हमने इसी लिये छान डाला कि उनमें कविवर की कोई रचना मिल जाय। आशानुरूप हर जगह से कुछ न कुछ मिल ही जाता। इस तरह वर्षों के निरन्तर लगन और श्रम से इस संग्रह को हम तैयार कर सके हैं।

कविवर के सम्बन्ध से ही हमें बड़े बड़े विद्वानों से पत्र व्यवहार करने मिलने और भण्डारों को देखने का सुयोग मिला। अन्यथा पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थी और व्यापारी घराने में जनमे हुए साधारण व्यक्ति के लिये वैसे सम्पर्कों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस लिये कविवर का जितना ऋण हमारे पर है, उससे थोड़ा सा उऋण होने का हमारा यह प्रथम-प्रयास है। देसाई के अज्ञात कविवर की कई रचनाओं के सम्बन्ध में हमें उन्हें पूछ-ताछ करना आवश्यक था। इसलिये हमने अपनी जिज्ञासा कई मनों के रूप में उन्हें लिख भेजी। किसी भी साहित्यिक विद्वान से पत्र व्यवहार करने का हमारा यह पहला मौका था। कई महीनों तक उनका उत्तर नहीं आया तो बड़ा विचार और निरुत्साह होने लगा। पर कई महीनों बाद (ता० १६. १-३० को) उनका एक विस्तृत पत्र आया और फिर तो हमारा और उनका घनिष्ठ सम्बन्ध होगया। उनके करीब २० महत्त्वपूर्ण

पत्र हमारे संग्रह के हजारों पत्रों में निबिष्ट है। फिर तो देसाईजी ने हमारे यु० जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ की विस्तृत प्रस्तावना लिखी। वे बीकानेर भी आये और कई दिन हमारे यहां रहे। तत्पूर्व और तब सैकड़ों अज्ञात ग्रन्थों की जानकारी हमने शताधिक पृष्ठों को उन्हें दी जिसका उपयोग उन्होंने 'जैनगूर्जर कविओ' के तीसरे भाग में किया है। इसी तरह पं० लालचन्द भगवानदास गांधी बड़ौदा इन्स्ट्रीच्यूट के बड़े विद्वान हैं; उन्होंने जैसलमेर भांडागारीय सूची में समयसुन्दरजी की रचनाओं की सूची दी है, उसमें से कई रचनाएं हमें कहीं नहीं मिली थीं। इसलिये उनसे भी सर्व प्रथम (ता० २७-१२-२६ के हमारे पत्र का उत्तर ता० १-१-३० को मिला) पत्र व्यवहार कवि की उन रचनाओं के लिये ही हुआ। कलकत्ते के अद्वितीय संग्राहक स्व० पूर्णचन्द्रजी नाहर से भी हमारा सम्बन्ध कविवर की आलोयणा छत्तीसी को लेकर हुआ। हम कविवर की अज्ञात रचनाओं की जानकारी के लिए उनके यहाँ पहुँचे तो आलोयणा छत्तीसी का नाम उनकी सूची में पाप छत्तीसी लिखा देखकर दोनों रचनाओंकी अभिन्नता की जाँच करने के लिए उसकी प्रति निकलवाई। तभी से उनसे हमारा मधुर सम्बन्ध दिनों दिन बढ़ता गया। वे कई बार हमारे इस प्रारम्भिक सम्पर्क की याद दिलाते हुए कहा करते थे कि हमारा और आपका सम्बन्ध इस "पाप छत्तीसी" के प्रसाद से हुआ है। ये थोड़े से उदाहरण हैं, जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि कविवर की रचनाओं की शोध के द्वारा ही हमारा साहित्यिक ऐतिहासिक, अन्वेषणात्मक जीवन का प्रारम्भ हुआ और बड़े बड़े विद्वानों के साथ सम्पर्क स्थापित हुआ।

उपाध्याय सुखसागरजी की प्रेरणा और सहयोग भी यहां उल्लेखनीय है। उन्हें भी कविवर के ग्रन्थों के प्रकाशन की ऐसी धुन लगी कि बीकानेर चातुर्मास के बाद सर्व प्रथम सं० १९८८ में कल्पलता मंजिर वृत्ति जिसकी उस समय एक मात्र प्रति पारख-

चन्द्रसूरि गच्छ के ज्ञानभंडार में ही मिली थी प्रकाशित करवाई और उसके बाद क्रमशः गाथा सहस्री कल्पसूत्र की कल्पलता टीका, कालिकाचार्य कथा (सं० १६६५) समवसरण वृत्ति समाचारी शतक (सं०१६६६) आदि बड़े-बड़े ग्रंथ सम्पादित कर प्रकाशित करवाये। इसके पूर्व भी विशेषशतक (सं० १६७१) जयतिहुअणवृत्ति, दुरियर वृत्ति (सं० १६७२-७३), जिनदत्तसूरि ग्रन्थमाला से वे प्रकाशित करवा चुके थे। इनके अतिरिक्त इससे पूर्व कविवर की संस्कृत रचनाओं में दशवैकालिकवृत्ति सप्तपदुत्वगर्भित वीरस्तवस्वोपज्ञ वृत्ति श्रावकाराधना और अष्टलक्षी ये अन्य ग्रन्थ भी विभिन्न स्थानों से छपे थे। सं० २००८ में बुद्धिमुनिजी ने चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति प्रकाशित की। राजस्थानी भाषाओं की रचनाओं में शत्रुंजय रास दानादि चौढालिया ज्ञानपञ्चमी पञ्चदशी आदि के पूर्व वर्णित स्तवन, सज्झाय 'रत्नसागर' 'रत्न समुच्चय' और हमारे प्रकाशित 'अभयरत्नसार' आदि में बहुत पहले ही छप चुके थे। देसाई ने भी इन्हें प्रस्तुत कई छोटे-मोटे गीत और वस्तुपाल तेजपालरास सत्यासिया दुष्काल वर्णन आदि जैनयुग (मासिक) में प्रकाशित किये थे। हमने कविवर की रचनाओं में सर्वप्रथम 'जैनज्योति' मासिक पत्र में पुञ्जा ऋषिरास सं १६८० में प्रकाशित करवाया और कवि के मृगावतीरास के आधार से 'सती-मृगावती' पुस्तक लिखकर सं० १६८६ में प्रकाशित की। इसके बाद तो कविवर सम्बन्धी कई लेख जैन सत्यप्रकाश (गुज०) भारतीय विद्या (सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जैन-भारती [1] जैन जगत आदि पत्रों में प्रकाशित किये।

सं० १६८६ में ही हमें कविवर के जीवनी संबंधित उन्हीं के शिष्य हर्षनन्दन और देवीदास रचित 'समयसुन्दरोपाध्यायनाम गीत द्वयम्' का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसकी नकल हमने देसाईजी को भेजकर जैनयुग

---

[1] गत वर्ष धनदत्त रास व विमलेक रास का सार भी जैनभारती और मरुभारती में प्रकाशित किया गया है।

के सं० १९८६ के वैशाख जेठ अङ्क के पृ० ३५९ में प्रकाशित करवाये। साथ ही सत्यासिया दुष्काल वर्णन के अपूर्ण भाग १६ पद्य देसाई ने जैनयुग सं० १९८५ के भाद्रवे से कार्तिक अङ्क के पृ० ६८ में छपवाये थे उनके कुछ और पद्य हमें प्राप्त हुए उन्हें भी अगरचन्दजी के साथ उसी वैशाख-जेठ के अङ्क में प्रकाशित करवा दिये। गीत द्वय को प्रकाशित करते हुये उस समय हमारे सम्बन्ध में देसाई जी ने लिखा था—"आ कवि नी सम्बन्ध मां में जामनगर गुजराती साहित्य परिषद् माटे एक निबन्ध लख्यो हतो अने ते जैन साहित्य संशोधक ना खंड २ अङ्क ३।४ मां अने ते सुधारा वधारा सहित आनन्द काव्य महोदधि ना मौक्तिक ७ मां नी प्रस्तावना मां प्रकट थयो छे। ते कवि सम्बन्धी बीकानेर ना एक सज्जन श्रीयुत अगरचन्द भँवरलाल नाहटा घणो प्रयास करता रह्या छे अने अप्रकट कृतियो तेमणे मेलवी छे। ए शोधना परिणाम रूपे तेमना सम्बन्ध मां तेमना शिष्य हर्षनन्दने अने देवीदासे गीतो रच्या छे — "आ बन्ने गीतो अमे नीचे उतारीने आपिये छीये अने तेनो उपकार श्रीयुत नाहटाजी ने छे कारण के तेमने पोताना संग्रह मां थी उतारी ने मोकल्या छे।"

कविवर की जीवनी संबन्धी जो दो गीत उपर्युक्त 'जैनयुग' में प्रकाशित करवाये गये उनमें सं १६७२ तक की घटनाओं का ही उल्लेख था। इसके बाद जयसलमेर के यतिवर्य नेमिचन्दजी से कविवर के प्रशिष्य राजसोमरचित महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्' प्राप्त हुआ जिसमें उनके उपाध्यायपद क्रियाउद्धार और अहमदाबाद में सं १७०२ के चैत्र शु १३ को स्वर्गवास होने का महत्त्वपूर्ण उल्लेख पाया गया। इसके बाद आज तक भी उनकी जीवनी सम्बन्धी कोई रचना और कहीं से प्राप्त नहीं हुई।

कविवर के प्रगुरु अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्र सूरि थे। कविवर के प्रसङ्ग से ही उनका संक्षिप्त परिचय पहले लिखा गया जो बढ़ते बढ़ते ४५० पृष्ठों के महत्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में परिणित हो गया। शताधिक ग्रन्थों के आधार से हमारा यह सर्वप्रथम विशिष्ट ग्रन्थ लिखा गया उसका श्रेय भी कविवर को ही है। इस ग्रन्थ में विद्वत् शिष्य समुदाय नामक प्रकरण में कविवर का भी परिचय दिया गया था। उसी के साथ-साथ हमारा दूसरा बृहद् ग्रन्थ 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' छपना प्रारम्भ हुआ जिसमें कविवर के जीवन सम्बन्धी उपर्युक्त तीनों गीत प्रकाशित किये गये।

कविवर ने अपनी लघु रचनाओं का संग्रह स्वयं ही करना प्रारम्भ कर दिया था। क्योंकि वैसी रचनाओं की संख्या लगभग एक हजार के पास पहुँच चुकी होगी। अतः उनका व्यवस्थित संकलन किये बिना इन फुटकर और बिखरी हुई रचनाओं का उपयोग और संरक्षण होना बहुत ही कठिन था। हमें उनके स्वय के हाथ के लिखे हुए कई संकलन प्राप्त हुए हैं और कई संकलनों की नकलें भी प्राप्त हुई हैं जिनसे उन्होंने समय-समय पर अपनी लघु रचनाओं का किस प्रकार संकलन किया था उसकी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनके किये हुए कतिपय संकलनों का विवरण इस प्रकार है—

छत्तीस की संख्या तो उन्हें बहुत अधिक प्रिय प्रतीत होती है। क्षमा छत्तीसी कर्मछत्तीसी पुण्य छत्तीसी, सन्तोष छत्तीसी आलोयण छत्तीसी आदि स्वतन्त्र छत्तीसियां प्राप्त होने के साथ-साथ निम्नोक्त संकलित छत्तीसियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं —

१ प्रथम छत्तीसी—इसमें छोटे छोटे छत्तीस पद जो राग रागनियों में हैं, उनका संकलन किया गया है। यद्यपि हमने

इसको उस रूप में इस ग्रन्थ में नहीं रखा है। हमारा वर्गीकरण कुछ विशेष प्रकार का होने से प्राप्त कई संकलनों का क्रम टूट गया है। इस मु पद छत्तीसी की सं० १६७७ की लिखित प्रति देसाई के संग्रह में है। अन्य प्रति बीकानेर के बड़े ज्ञान भंडार में है।

२. तीर्थ माल छत्तीसी—इसमें तीर्थों सम्बन्धी छत्तीस गीतों का संकलन किया गया है। इसकी ११ पत्रों की अहमदाबाद में सं० १७०० आषाढ़ वदि १ रवि की लिखित प्रति बम्बई रॉयल एशियाटिक सोसाइटी से प्राप्त हुई है। अन्य प्रति हमारे संग्रह में है।

३ प्रस्ताव सवैया छत्तीसी—इसमें छत्तीस फुटकर सवैयों का संकलन है, जो समय समय पर रचे गये होंगे। इसकी स्वयं लिखी प्रति हमारे संग्रह में है।

४ साधु गीत छत्तीसी—इसके अन्तिम २ पत्रों वाली प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ११ से ३६ तक के गीत व अन्त में ३६ गीतों की सूची है।

५. सत्यासिया दुष्काल वर्णन छत्तीसी—इसके फुटकर वर्णन वाले छन्दों की कई प्रकार की प्रतियां मिली हैं। जिससे मालूम होता है कि समय समय पर उन छन्दों की रचना फुटकर रूप में हुई और अन्त में पूर्तिस्वरूप कुछ पद्य बनाकर यह छत्तीसी रूप संकलन तैयार कर दिया गया।

६ नेमिनाथ गीत छत्तीसी—इसकी स्वयं लिखित प्रति के दो पत्र हमारे संग्रह में हैं इसका अन्त का एक पत्र नहीं मिलने से ३४ वें गीत की एक पंक्ति के बाद शेष २ गीत अपूरे रह जाते हैं।

७ वैराग्य गीत छत्तीसी—इसमें वैराग्योत्पादक छत्तीस गीतों का संकलन था पर इसकी प्रति भी त्रुटित (पत्रांक ४-१ वां दो पत्र)

प्राप्त हुई है। उसके अन्त में जो सूची दी गई है, उसमें से तीन गीत तो अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं—१ मोरा जीवनजी, २. अपव पश्च परमेष्ठी परमाति आर्य ३ मत्या पगा माहि नित वहइ।

सांझी गीत पचीसी—इसी तरह सांझी गीतों का एक संग्रह तैयार किया गया जिसकी एक प्रति पालनपुर भण्डार में इन्द्रदुर्ग में स्वयं की लिखी हुई सात पत्रों की मिली, जिसमें २१ सांझी गीत थे। इसके बाद बीकानेर के यति गणेशरामजी के संग्रह में दूसरी प्रति मिली जिसमें चार गीत और जोड़कर गीतों की संख्या २५ की करदी गई है। इसलिये हमारे इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४६३ में सांझी गीतों का कलश रूप जो गीत छपा है उसके अन्तिम पद्य में 'सांझी गीत सुहावणा ए, मैं गाया इकवीस' छपा है। यहां दूसरी प्रति में २१ के स्थान 'पचवीस' का पाठ मिलता है।

रात्रिजागरण गीत पंचास—इसमें धार्मिक उत्सवों के समय रात्रिजागरण करने की जो प्रणाली थी उसमें गाये जाने योग्य ५० गीतों का संकलन कवि ने किया है। जिसका अंतिम कलश-गीत इसी ग्रन्थ के पृ० ४६३ में छपा है। इसकी स्वयं की लिखित प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ४६ गीत हैं।

भास शतकम्—इसमें भास संज्ञावाली एक सौ रचनाओं का संकलन है। स० १६६७ अहमदाबाद में स्वयं की लिखी हुई २६ पत्रों की प्रति महोपाध्याय विनयसागरजी को प्राप्त हुई। इसका प्रथम पत्र नहीं मिला है।

साधु गीतानि—इसमें मुनियों की जीवनी सम्बन्धी गीतों का संकलन किया गया है। इसकी भी स्वयं लिखित दो प्रतियां और अन्य लिखित कई प्रतियां मिली हैं। जिनमें एक के तो मध्य पत्र ही मिले हैं। उनमें संख्या २१ से ४१ तक के गीत ही मिले हैं।

सं० १६६२ में हरिराम का लिखा हुआ गीत भी इसमें है। प्रारम्भिक गीत स्वयं लिखित हैं और पीछे के गीत हरिराम के लिखित हैं। एक गीत में ११। गाथा तो स्वयं की लिखित और पीछे का अंश हरिराम का लिखा मिला है। बीकानेर भण्डार में 'साधुगीतानि' की जो दूसरी प्रति मिली है उसमें ४६ गीत हैं। इनमें सं० १६६२ मिग० सुदि १ अहमदाबाद के ईदलपुर में चातुर्मास करते हुये ४२ गीत लिखे और ४ गीत फिर पीछे से लिखे गये। ६ पत्रों की अपूर्ण अन्य प्रति में ७३ गीत मिले हैं।

वैराग्यगीत—साधुगीतानि—की एक दूसरी प्रति के अंत के पत्रों में वैराग्य गीतों का संकलन किया है। पर यह प्रति अधूरी मिली है।

नाना प्रकार गीतानि—इसकी स्वयं लिखित एक प्रति २७ पत्रों की हमारे संग्रह में है, जिसमें ११६ गीत संगृहीत हैं। पर इसके प्रारम्भ और मध्य के कुछ पत्र नहीं मिले हैं।

पार्श्वनाथ लघुस्तवन—इसकी ८ पत्रों की स्वयं लिखित प्रति हमारे संग्रह में है। इसमें पार्श्व नाथ के १४ गीतों का संकलन है, सं १७०० मार्ग व० ५ अहमदाबाद के हाजा पटेल पोल के बड़े उपाश्रय में शिष्यार्थ यह प्रति लिखी गई।

अन्य समये जीव प्रतिबोध गीतम्—इसमें इस भाव वाले १२ गीत संकलित हैं। प्रथम पत्र प्राप्त नहीं होने से प्रथम के दो गीत प्राप्त नहीं हो सके। प्रति स्वयं लिखित है।

दादागुरु गीतम्—इसमें जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि जी के ९ गीत हैं। इसका स्वयं लिखित सं० १६८८ के एक पत्र का आधा अंश ही मिला है। जिससे पांच गीत त्रुटित प्राप्त हुए हैं जो इस ग्रन्थ के अन्त में दिये गये हैं। इनमें से अजमेर दादा जी स्तवनादि का एक पत्र स्वयं लिखित और हमारे संग्रह में था पर अभी नहीं मिला अन्यथा पूर्ति हो जाती।

जिनसिंहसूरि गीत—हमारे संग्रह की वृहद् संग्रह प्रति के बीच के पत्रांक ४२ से ४६ में जिनसिंहसूरि के २२ गीत लिखे हैं। पीछे

के कई पत्र नहीं मिले उनमें और भी होंगे। इसी तरह जिन-सागरसूरि का गीत समह आदि विविध प्रकार के अनेक सङ्कलन-संग्रह मिले हैं।

इस प्रकार और भी कई छोटे-बड़े संकलन कवि के स्वयं लिखित या उनकी प्रतिलिपि किये हुये प्राप्त हैं। इमें ये सङ्कलन आहिस्ता-आहिस्ता मिलते गए और कइयों की प्रतियां तो अधूरी ही मिली हैं। इसलिये बहुत से गीत अभी और मिलेंगे और कई जो त्रुटित रूप में अपूर्ण मिले हैं उनकी भी अन्य प्रतियां प्राप्त होनी आवश्यक हैं। हमने उनको पूरा करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। पचासों प्रतियां व सैकड़ों फुटकर पत्र देखे पर जिनकी अन्य प्रति नहीं मिली उन्हें जिस रूप में मिले उसी रूप में छपाने पड़े हैं।

अब हम इस संग्रह में प्रकाशित जिन रचनाओं में कुछ पाठ त्रुटित रह गये हैं। उनकी सूची नीचे दे रहे हैं जिससे उन रचनाओं की किसी को पूरी प्रति प्राप्त हो तो वे पूर्ति के पाठ का लिख भेजें।

पृ० १६ 'चौबीस जिन सवैया' के ७ वें पद्य का प्रारंभिक अंश।
" १७ " ८ वें पद्य का मध्यवर्ती अंश।
" २२ 'ऐरवतक्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि' के प्रारम्भिक सात जिनगीत
" १०४ 'पाटण शांतिनाथ स्तवन' की प्रारम्भिक १६ गाथायें।
१२६ 'नेमिनाथ गीत' की प्रथम पद्य के बाद की गाथायें।
१३३ 'नेमिनाथ सवैया' के प्रारम्भिक ८॥ सवैये।
१३६ " पद्यांक १६ में इस प्रकार छपने से रह गया है—
बिजुरी झिवइ डरावइ सखि मोहि नींद न आवइ
कृपानाथ कुं कहावइ ऐकु अरदास रे।'
" १४२ 'नेमिनाथ सवैया के पिछले २॥ सवैये।

पृ० १८८ श्लोक ८ की प्रथम पंक्ति में 'सहित' और 'विनात मम्मे' के बीच एक अक्षर त्रुटित है।

१९४ 'पार्श्वनाथ शृङ्गारक पद्य स्तवन' के ८ वें पद्य की तीसरी पंक्ति में 'सकर्म' और 'विचारिरिक' के बीच में एक अक्षर त्रुटित है।

,, २४० 'आद्रमचा मुनिगीत' के सवा दो पद्यों के बाद के पद्य नहीं मिले हैं।

,, ३३२ 'चुमासी मास' के पद्य ३।। से ४।। नहीं मिले हैं।

,, ३४१ 'राजुल रहनेमि गीतम्' के पद्य ५ की अन्तिम दूसरी पंक्ति का छूटा हुआ अंश त्रुटित है।

३७१ 'जिनचन्द्रसूरि छन्द' के तीसरे छन्द की तीसरी पंक्ति त्रुटित है।

,, ३८८ 'जिनसिंहसूरि आलीजा गीत' गाथा १० के बाद त्रुटित है।

,, ३९४ 'जिनसिंहसूरि गीत' के गीत नं० ७ की गाथा नं० १ का मध्यवर्ती अंश त्रुटित।

४०३ 'जिनसिंहसूरि गीत' में १२ गाथा ३।। के बाद त्रुटित।

,, ४०७ जिनसागरसूरि अष्टक' तीसरे श्लोक की अन्तिम पंक्ति त्रु०

,, ४४८ 'कर्मनिर्जरा गीत' चौथी गाथा की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४५५ 'पुर्व वीसामा गीत' दूसरी गाथा की तीसरी पंक्ति त्रुटित।

४७३ 'ऋषि महत्व गीत' दूसरी गाथा की अन्तिम पंक्ति प्राप्त नहीं।

४७५ 'हित शिक्षा गीत' ७ वें पद्य की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४८० आहार ४७ दूषण सज्झाय' गाथा १६ की अन्तिम पंक्ति के कुछ अक्षर त्रुटित।

,, ५० फुटकर श्लोकों में सं० १ की अन्तिम और अन्त्य श्लोक की प्रत्येक पंक्ति का प्रारम्भिक अंश त्रुटित।

५११ 'मानाधिपकम्पनार्थिमर्द नेमिनाथ स्तवनम्' के प्रारम्भिक १।। श्लोक त्रुटित।

„ ६१७ 'नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्' ६ वें श्लोक की प्रथम पंक्ति में त्रुटित अंश।

„ ६१८ 'यमकबद्ध पार्श्वनाथ स्तवन' में गाथा प्रथम की पंक्ति दूसरी त्रुटित।

„ ६१६ 'समस्यामयं पार्श्वनाथ स्तवन' पहले और दूसरे श्लोक त्रु०

„ ६२० „ „ श्लोक ६ से १२ त्रुटित।

„ ६२२ 'यमकमय पार्श्व लघुस्तवन' श्लोक ७ की प्रथम पंक्ति त्रुटित

„ 'यमकमय महावीर बृहद्स्तवन' श्लोक १ और ४ में दो दो अक्षर त्रुटित।

„ „ 'यमकमय महावीर बृहद् स्तवन' श्लोक ११ और १२ में दो दो अक्षर त्रुटित।

„ ६२४ 'मणिधारी जिनचन्द्रसूरि गीत' दोनों ही गाथा त्रुटित।

„ „ 'जिनकुशलसूरि गीत' „ „

„ ६२६ 'जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि गीत' दोनों की पांचों गाथा त्रुटित।

„ ६२७ 'अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीत' चारों गाथाएं त्रुटित

„ ६२८ 'प्रबोध गीत' गाथाएँ २ से ५ त्रुटित।

कविवर की रचनाएँ आज भी जहां तहां नित्य मिलती रहती हैं। पृ० ६१४ छप जाने पर इस संग्रह को पूरा कर दिया गया था। पर उसी समय विकमार्व एक त्रुटित प्रति प्राप्त हुई जिसमें आपकी बहुत सी रचनाएँ थीं। अतः उसमें जो रचनाएं पहले नहीं मिली थी उन्हें भी इसमें सम्मिलित करना आवश्यक हो गया। हस्तलिखित पुस्तक पत्र आदि के लिये हमारा संग्रह भी एक बहुत बड़ा भण्डार है। समयसुन्दरजी के गीतों के फुटकर पत्रों की संख्या सैकड़ों पर है। उनमें की अभी कुछ रचनायें यहीं ठीक मालूम होती हैं जो बहुत ध्यानपूर्वक संग्रह करने पर भी इस संग्रह में नहीं आ सकीं।

साहित्य में अपने पूज्य गुरु श्री कृपाचन्द्रसूरिजी का यह वचन याद कर संतोष करना पड़ता है कि "समयसुन्दर ना गीतडा, भींतों पर मा चीतरा या कुम्भे राणा मा भीतड़ा" अर्थात् दीवालों पर किये गये चित्रों का और राना कुम्भा के बनाये हुये मकान और मन्दिरों का पार पाना कठिन है उसी तरह समयसुन्दर जी के गीत भी हजारों की संख्या में और जगह-जगह पर बिखरे हुए हैं उन सबको एकत्र कर लेना असम्भव सा है। पचासों संग्रह प्रतियां हमें त्रुटित व अपूर्ण मिली हैं। उनके बीच के और आदि अन्त के पत्र माला के मोतियों की तरह न मालूम कहाँ कहाँ बिखर गये हैं। बहुत से तो उनमें से नष्ट भी हो गये होंगे। इसी तरह समयसुन्दर जी का विहार भी राजस्थान और गुजरात के बहुत लम्बे प्रदेशों में था और उनके शिष्य प्रशिष्य भी बहुत थे। अतः उन सभी स्थानों और व्यक्तियों में प्रतियां बिखर चुकी हैं। जालोर, खम्भात और अहमदाबाद आदि स्थानों में जहां कवि कई वर्षों तक रहे थे उन स्थानों के भण्डारों को तो हम देख ही नहीं पाये।

महान् गीतिकार समयसुन्दर

गीति काव्य के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य में इधर में काफी चर्चा हुई और कई बड़े-बड़े ग्रन्थ भी प्रकाशित हुये लेकिन अभी तक आज से ४ /५ वर्ष पहले कितने प्रकार के गीत प्रचलित थे उनका शायद किसी को पूरा पता नहीं है। जिस प्रकार लोक गीतों के अनेक प्रकार हैं—अनेक राग-रागनियां हैं हर प्रसंग के गीतों के अलग-अलग नाम हैं, उसी तरह विद्वानों के रचित गीतों के भी अनेक प्रकार थे। उनकी अच्छी झांकी समयसुन्दरजी के इस गीत समूह से मिल सकेगी। वैसे तो प्रायः सभी लघु रचनाओं की संज्ञा गीत ही दी गई है, पर उनके प्रकारों की संख्या

बहुत अच्छी है। जैसे कि—मास स्तवन फाग सोहला, दुखरा-
यल गहुंली चन्द्रायणा भावीमा हिंडोलना, चौमासा बारहमासा
सांझी राखी सागरस ओलम्भा, चूनड़ी पर्व-गीत, तप-गीत
वाणी-गीत स्वप्नगीत वेलिगीत, वधावा बधाई, चर्चरी तिथि
विचारणा वियोग में रुदन-गीत, प्रबोध-गीत महिमा-गीत मनोहर
गीत, मङ्गल-गीत भावना-गीत हियाली-गीत इत्यादि नाना प्रकार
के गीत इस संग्रह में हैं। समय-समय पर कवि-हृदय में जो
स्फुरणा हुई उनका मूर्त रूप इन गीतों में हम पाते हैं। यद्यपि
कवि को अपनी काव्य-प्रतिभा दिखाने की लालसा नहीं थी फिर
भी कुछ रचनाएँ उसको व्यक्त करने वाली स्वतः बन गई हैं। ऐसी
रचनाओं में कुछ तो जरा दुरूह सी लग सकती हैं, पर स्वाभाविक
प्रवाह बना रहता है। रूपाष्टक स्तोत्रक के अन्त में तो कवि ने
स्वयं कहा है कि ये कवि कल्लोल के रूप में ही बनाये गये हैं।
इनमें कल्पनाएं बड़ी सुन्दर हैं। बहुत सी रचनाओं में ऐति-
हासिक तथ्य भी मिलते हैं। जैसे पृ० ३० ३८ ६२, ६६ ६८
७९, ८८ ८७ ८६, १०७ १२३, १४४ १४३, १६४ १६६, १७६,
१७७, १८८ ३०६ ३५७ ३६४ ४०४।

शब्दों और भावों की दृष्टि से भी इस संग्रह की कतिपय रचनाओं
का बहुत ही महत्त्व है। अनेक अप्रसिद्ध व अल्पप्रसिद्ध शब्दों का
प्रयोग इनमें पाते हैं जिनका अर्थ अभी तक शायद किसी कोश में
नहीं मिलेगा। हमारा विचार ऐसे शब्दों का कोष भी देने का
था, पर ग्रन्थ इतना बड़ा हो गया कि इसी तरह के अनेक विचारों
को मूर्त रूप नहीं दे सके। इसी प्रकार गहुंलियों और कई
स्तवनों में जिन व्यक्तियों का केवल नामोल्लेख हुआ है उनमें से
बहुतसों का परिचय कम लोगों को ही होगा तथा जिन साधु और
यतियों के जीवन चरित्र को स्पष्ट करने वाले गीत प्राप्त हैं उनकी

भी संक्षिप्त जीवन गाथा देना आवश्यक था। पर उस इच्छा को भी संवृत्त करना पड़ा है।

कवि की संवतानुक्रम से लिखी हुई संक्षिप्त जीवनी और उनकी रचनाओं व विविध प्रतियों की सूची नागरी-प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५७ अङ्क १ में प्रकाशित की गई थी पर उनकी रचनाओं के उदाहरण सहित जो विस्तृत जीवनी हम लिखना चाहते थे वह भी करीब ५०० पृष्ठों के लगभग की होती क्योंकि २० वर्षों से हम इनकी रचनाओं का रसास्वादन कर रहे हैं। इसलिये हमने ग्रन्थ बढ़ जाने के भय से संक्षिप्त जीवनी महोपाध्याय विनयसागर जी से लिखवा लेना ही उचित समझा और उनके भी बहुत संक्षिप्त लिखने पर भी १०० पृष्ठ तो हो ही गये।

भाषाएँ भी इस ग्रन्थ में कई हैं। प्राकृत संस्कृत समसंस्कृत हिन्दी की रचनाएँ थोड़ी हैं पर राजस्थानी, गुजराती और हिन्दी तीन तो मुख्य ही हैं। इनमें से हिन्दी के भी इसमें दो रूप मिलते हैं जो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्य पदों एवं गीतों की हिन्दी भाषा से पृ० ११३ में जिनसिंहसूरि सम्बन्धी जो ५ पद छपे हैं, उनसे तुलना करिये। वे एक दम खड़ी बोली के और मानों जहाँगीर के भेजे हुए मुसलमान मेवड़ों की स्वयं की भाषा हो लगते हैं। उसका थोड़ा सा नमूना देखिये—

ये मेवरे, काहेरी सेवरे, भरे कहाँ जान हो उतावरे, टुक रहो नइ जारे।
हम जाते बीकानेर साहि जहाँगीर के भेजे
हुकम हुआ फुरमाण जाइ मानसिंघ कू देजे।
सिद्ध साधक हम तुम्ह चाह मिलने की हमकूं
वेगि आवउ हम पास काम देऊँगा तुम कूं ।१। ये मेवरे०।

कवि के गीतों में दोनों प्रकार का सङ्गीत प्रतिध्वनित हुआ है। बहुत से गीत तो शास्त्रीय संगीत की राग-रागनियों में रचे गये हैं

और बहुत से लोक प्रचलित गीतों की देशी या चाल में। उनके रास-चौपाई आदि में भी इन लोक गीतों की देशियों को खूब अपनाया गया है। सीताराम चौपाई जो लोक भाषा की आपकी सबसे बड़ी कृति है में लगभग ५० देशियें हैं। कवि ने इस चौपाई में देशियों के आदि पद के साथ ऐसा भी निर्देश किया है कि— 'ए गीत सिंध मांहे प्रसिद्ध छै नोखा रा गीत मारूआडी, ढूंढाडी नागोर नगरे प्रसिद्ध छै। दिल्ली रा गीतरी चाल मेड़ता आदि देशे प्रसिद्ध छै" और अन्त में कहा है कि—

सीताराम नी चौपाई, जे चतुर हुई ते वाँचो रे ।
राग रतन जवाहर तणो कुण भेद लहै नर कांचो रे ॥
नवरस पोष्या मैं इहां ते सुघड़ो समझो लेज्यो रे ।
जे जे रस पोष्या इहां ते ठाम देखाड़ी देज्यो रे ॥
के के ढाल विषम कही ते दूषण मत द्यो कोई रे ।
स्वाद सांभली जे हुवे ते किण हरे कदे न होई रे ॥ १ ॥
जे दरबार गयो हुसे दुसाधि मेवाडि ने दिल्ली रे ।
गुजराति मारूवाडि मैं ते कहिसे ए मल्ली रे ॥
मत कहो मोटी कां जोडी वांचतां स्वाद लहैसो रे ।
नवनवा रस नवनवी कथा सांभलतां साबास देसो रे ॥
गुण लेज्यो गुणियण तणो मुझ मस्तकि साहमो बोल्यो रे ।
अणसहतां अवगुण मही मत चालवि परसा होज्यो रे ॥
आलस अभिमान छोडि ने सूधो मत हाथ लेई रे ।
ढाल लेजो सुमे गुरु मुखे वली रागनो उपयोग देई रे ॥
सखर सभा महि वांचजै, वे वक्ता मिल मिलते सारे रे ।
नरनारी बहु-रीझसे जस लेहसो गुरु मसारे रे ॥

कवि की कविता में एक स्वाभाविक प्रवाह है। भाषा में सरलता तो है ही क्योंकि उनकी रचना का उद्देश्य पांडित्य प्रदर्शन

नहीं। पर जैसा कि उन्होंने अपने अनेक ग्रन्थों में भाव व्यक्त किया है, कि साधु और सती के गुणानुवाद में मुझे बड़ा रस है। और बहुत सी रचनाएँ तो उन्होंने अपने शिष्यों और श्रावकों के सुगम बोध के लिये ही बनाई हैं। कुछ अपनी स्मृति की रक्षार्थ। इन सब कारणों से कवि प्रतिभा का चमत्कार उतना नहीं दिखाई देता जितना कि स्वाभाविक सारल्य।

प्रस्तुत ग्रन्थ में संकलित गीतों का भक्ति प्रेरणा प्रबोध प्रधान विषय है। भक्ति का स्रोत अनेक रचनाओं में बह चला है। विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन में कवि कहता है कि—

विमलगिरि क्यों न भये हम मोर,
क्यों न भये हम शीतल पानी सींचत तरुवर छोर।
अहनिश जिनजी के अंग पखालत तोड़त कर्म कठोर। वि १।
क्यों न भये हम बावन चन्दन, और केसर की छोर।
क्यों न भये हम मोगरा मालती रहते जिनजी की ओर। वि २।
क्यों न भये हम मृदङ्ग झल्लरिया करत मधुर ध्वनि घोर।
जिनजी आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर। वि ३।

इसी प्रकार अन्य गीतों में भी कहीं पर पाँख न होने से पहुँच न सकने की शिकायत कहीं पर चन्द्रमा द्वारा सन्देश भेजना कहीं पर स्वयं न पहुँच सकने की वेदना व्यक्त की है। इस प्रकार नाना प्रकार के भक्ति के उद्गार इस ग्रन्थ में प्रकाशित गीतों में मिलेंगे। उन सबके उद्धरण देने का बहुत विचार था पर विस्तार भय से उस इच्छा को संवरित करना पड़ा है। प्रेरणा गीतों में कवि अपने शिष्यों को किस ढङ्ग से प्रेरित कर रहा है यह इस ग्रंथ के पृष्ठ ४३६-४० में प्रकाशित पठन प्रेरणा और क्रिया प्रेरणा गीत में पढ़िये। इसी प्रकार प्रबोध गीत भी पृ ४१० से प्रारम्भ होते हैं।

कई गीतों में कवि कल्पना भी बड़े सुन्दर रूप में प्रगट हुई है। इन सबके उदाहरण नोट किये हुये होने पर भी यहां विस्तार भय से नहीं दिये जारहे हैं। कभी विस्तृत विवेचन का अवसर मिला तो अपने इन नोट्स का उपयोग किया जा सकेगा।

महोपाध्याय विनयसागरजी ने कवि का परिचय देते हुए कथाकोश की पूरी प्रति नहीं मिलने का उल्लेख किया है। यद्यपि इसकी कई प्रतियां हमें प्राप्त हुई हैं जिनमें से एक तो कवि की स्वयं लिखित है। पर भिन्न-भिन्न प्रतियों के मिलान से ऐसा मालूम पड़ता है कि कवि ने दो तरह के कथाकोश बनाये हैं। एक में अन्य विद्वानों के ग्रन्थों से कथाएं उद्धृत व संगृहीत की गई हैं और दूसरे में उन्होंने स्वयं बहुत सी कथाएं लिखी हैं। इनमें से पहले प्रकार की एक प्रति नाहरजी के संग्रह में मिली और दूसरी की एक पूरी प्रति स्व० जिनचारित्रसूरिजी के संग्रह में से प्राप्त हुई है। इसमें १६७ कथाएं हैं। पर कवि के अन्य ग्रन्थों की भांति इसमें प्रशस्ति नहीं मिलने से सम्भव है कुछ और भी कथाएं लिखनी रह गई हों या प्रशस्ति नहीं लिखी गई हो। 'कथापत्राणि' नामक कवि के स्वयं लिखित फुटकर पत्रों की एक प्रति मिली है जिसके १३७ या १४५ पत्र (दोनों हासियों पर था संख्याङ्क) थे। इसमें ११४ कथाएं हैं और ग्रन्थ परिमाण करीब ६००० श्लोक का लिखा है। अन्त में कवि ने स्वयं लिखा है कि—

"सं० १६६५ वर्षे चैत्र सुदि पञ्चमी दिने श्री जालोर नगरे लिखितं श्री समयसुन्दर उपाध्यायैः। इयं कथाकोशप्रति मयि जीवति मदधीना पश्चात् पं० हर्षकुशलमुनेः परस्तास्ति। वाच्यमाना चिरं विजयताम्।"

अर्थात् कविवर स्वयं जहां तक जीवित रहे अपनी रचनाओं में उचित परिवर्तन परिवर्द्धन करते रहे हैं।

कवि के रचित माघ काव्य की टीका के केवल तृतीय सर्ग की वृत्ति के मध्य पत्र चूरू सुराणा लाइब्रेरी में स्वयं लिखित मिले हैं। उनमें बीच

के पत्रांक दिये हैं। अतः यह टीका तो पूरी बनाई ही होगी, पर अभी तक अन्य सर्गों की टीका के पत्र नहीं मिले। जिसकी खोज आवश्यक है। इसी प्रकार मेघदूत वृत्ति की अपूर्ण प्रति ओरियन्टल की लाइब्रेरी लाहौर में देखी थी, उसकी भी अन्य प्रति नहीं मिली। अतः पूरी प्रति अन्वेषणीय है।

सं० २००२ मे जब कवि के स्वर्गवास को ३०० वर्ष हुये हमने सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की ओर से समयसुन्दर त्रिशती उत्सव मनाया था और कवि की रचनाओं का प्रदर्शन भी किया गया था, जो विशेष रूप से स्मरणीय है।

कवि की कई रचनायें अभी सन्दिग्धावस्था में हैं। उनकी अन्य प्रतियों की प्राप्ति होने से ही निर्णय किया जा सकेगा। जिस प्रकार जैन गुर्जर कवियों भाग १ के पृ० ८५४ में स्थूलभद्र रास का विवरण छपा है। इस प्रति को हमने मँगवा कर देखी तो पद्यांक ६५ में समयसुन्दर नाम आता है, अन्यत्र कवियण उपनाम प्रयुक्त है और ग्रन्थ का रचना काल संदिग्ध है—

> वसु रस संवत्सर पाइ संवत्सर मान
> आदिनाथ श्री नेमिप्रभ तेहतणा वरस प्रधान।

इसकी अन्तिम पंक्ति से देसाईजी ने ७१ की संख्या ग्रहण की है, पर यह संदिग्ध लगती है। इसी प्रकार भक्तिविजयगुरु (पंजाब) की सूची में कवि के रचित शालिभद्र चौपाई और भगवद्गीता कथा (सं १६५१ में रचित पत्र १) आदि का उल्लेख है। जेसलमेर भण्डार की सूची में पं० लालचन्द गांधी उल्लिखित कई रचनायें हमें अभी तक नहीं मिली। ये वास्तव में कवि की हैं या नहीं प्रतियाँ मिलने पर ही निर्णय हो सकेगा।

हमारे संग्रह में एक अत्र महत्त्व विज्ञप्ति मिला है। जिससे मालूम होता है कि सं० १६६७ के फाल्गुन सु० ११ गुरुवार को

अहमदाबाद में संखवाल गोत्रीय साह नाथा की भार्या श्राविका धनादे ने जो शाह कर्मसी की माता थी, महोपाध्याय समयसुन्दरजी के पास इच्छा परिमाण (१२ व्रत) ग्रहण किये थे। इस पत्र के पिछली ओर में कवि ने उन १२ व्रतों के ग्रहण का रास बनाया था जिसकी कुछ ढालें स्वयं लिखित मिली हैं। इससे कवि के रचित १२ व्रत रास का पता चलता है, जिसकी पूरी प्रति अभी अन्वेषणीय है। और भी कई श्रावक-श्राविकाओं ने आपसे इसी तरह व्रत आदि ग्रहण किये होंगे जिनके उल्लेख कहीं भण्डारों के बिखेरे पत्रों में पड़े होंगे या ऐसे साधारण पत्र अनुपयोगी समझे जाते हैं, अत उपेक्षावश नष्ट हो चुके होंगे। विविध विषयों के सैंकड़ों फुटकर पत्र कवि के लिखे हुए हमने भण्डारों में देखे हैं और हमारे संग्रह में भी हैं। उन सबसे इनकी महान् साहित्य-साधना की जो झांकी मिलती है, उससे हम तो अत्यन्त मुग्ध हैं। सुयोग-वश कवि ने दीर्घायु पाई और प्रतिभा तो प्रकृति प्रदत्त थी ही। विद्वान् विद्यागुरुओं आदि का भी सुयोग मिला सैंकड़ों ज्ञानभंडार देखे विविध प्रान्तों के सैंकड़ों स्थानों में विचर कर विशेष अनुभव प्राप्त किया और सदा अप्रमत्त रहकर पठन-पाठन और साहित्य निर्माण में सारे जीवन को लगा दिया। उस गौरवमयी साहित्य-विभूति की स्मृति से मस्तक उनके चरणों में स्वयं झुक जाता है। उनके शिष्यों में हर्षनन्दन आदि बड़े विद्वान् थे। अभी अभी तक उनकी परम्परा विद्यमान थी।

उनकी चरण पादुका गढ़ाश्रय (नाल) में होने का उल्लेख तो म० विनयसागरजी ने किया ही है; पर जैसलमेर में भी दो स्थानों पर आपके चरण प्रतिष्ठित हैं। तीनों पादुका लेख इस प्रकार हैं—

१ 'संवत् १७०५ वर्ष (पं) फाल्गुण सुदि ५ सोम श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय पादुके कारिते श्रीसंघेन प्रतिष्ठि। हर्षनंदन (गणिभि) शुभं भवतु।"

(नाल गढ़ालय में जिनकुशलसूरि गुरु मन्दिर के पास चौमुख स्तूपे में आपके गुरु सकलचन्द्र जी की भी पादुका ठीक उसी तरह उत्कीर्ण व यु० जिनचन्द्रसूरि प्रतिष्ठित है। (देखें हमारा बीकानेर जैन लेख संग्रह ग्रन्थ। लेखांक २२८७।)

२ "सं० १७०५ वर्षे पोष वदि ३ गुरुवारे श्रीसमयसुन्दर-महोपाध्यायानां पादुका प्रतिष्ठिते वादि श्रीहर्षनन्दन गणिभिः।"
(जैसलमेर के समयसुन्दरजी के उपाश्रय में)

३ जैसलमेर देरासर वालावाड़ी की समयसुन्दरजी की शाखा में स्तूप पर—

श्री जिनायनमः ॥ सं १८८२ रा मिति आषाढ़ सुदि ५ श्री जैसलमेर नगरे राउल श्री गजसिंहजी विजयराज्ये आचारज गच्छे श्रीजिनसागरसूरि शाखायां भ। जं । श्रीजिनउदयसूरिजी विजय-राज्ये ॥ व । श्री १०८ श्री समयसुन्दरजी गणि पादुकामिदं ॥ व। श्री आलमचन्दजी तत्शिष्य प। म। श्री चतुरभुज जी तत्शिष्य पं। सरूपचंद्रेण कारापितमिदं थंभ पादुका शाला मढ़ो २।

पादुकाओं पर

॥ व ॥ श्री १०८ श्री समयसुन्दर गणि पादुका।

स्वर्ग स्थान अहमदाबाद में भी चरण अवश्य प्रतिष्ठित किये गये होंगे पर वे शायद अब न रहे या खोज नहीं हुई।

कवि की प्राप्त लघु कृतियों का यह संकलन हमने अपने संग्रह से किया है। सम्भव है उसमें कुछ अशुद्धता रह गई हो।

आभार—

इस ग्रन्थ को इस रूप में तैयार करने और प्रकाशन करने में हमें अनेक भण्डारों के संरक्षकों और कई अन्य व्यक्तियों से

विविध प्रकार की सहायता मिली है। ३७ वर्षों से हम भी निरन्तर इस सम्बन्ध में काय करते रहे हैं उनमें इतने अधिक व्यक्तियों का सहयोग है कि जिनकी स्मृति बनाये रखना भी सम्भव नहीं। इसलिये जो महत्व रूप में स्मरण आरहे हैं उन्हीं का उल्लेख कर अवशेष सभी के लिये आभार प्रदर्शित करते हैं।

सबसे पहले जिनकृपाचन्द्रसूरिजी उपाध्याय सुखसागरजी, बीकानेर के भण्डारों के संरक्षक, फिर स्वर्गीय मोहनलाल दलीचन्द देसाई १२० यति नेमचन्द्रजी बाड़मेर पन्यास केशरमुनिजी और बाहर के अनेक भण्डारों क संरक्षगण पूरणचन्दजी नाहक, मुनि पुण्यमुनिजी आनन्दसागरसूरिजी स्व पूर्णचन्द्रजी नाहर आदि से जो कवि की रचनाओं की उपलब्धि और अन्य प्रकार की सहायता मिली है, उसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

अन्त में महोपाध्याय विनयसागरजी जिन्होंने इस सारे ग्रंथ का प्रूफ संशोधन का और कवि के विषय में अध्ययनपूर्ण निबन्ध लिखकर हमारे काम में बड़ी आत्मीयता के साथ हाथ बंटाया है, उनके हम बहुत ही उपकृत हैं।

हिन्दी साहित्य महारथी विद्वान् मित्र डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी ने हमारे इस ग्रंथ की भूमिका लिख भेजी है। जिसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में एक प्रेरणा रूप भी अनोपचन्दजी म्यावक कनूर न हमें रु० १४१) अपनी सद्भावना से भेजकर इस ग्रंथ को तत्काल प्रेस में देने का प्रेरित किया अत: वे भी स्मरणीय हैं।

कवि की लिखी हुई सैकड़ों प्रतियाँ और फुटकर पत्र हमारे संग्रह में हैं। उनमें से संवतोल्लेख वाले २ पत्रों का सम्मिलित ब्लॉक इस ग्रन्थ में छपाया जा रहा है। कवि का कोई चित्र

नहीं मिलता तो उनकी अक्षर देह को ही प्रकाश में लाना आवश्यक समझा गया। दूसरा श्लोक कवि के एक चित्र-काव्य स्तोत्र का है, जिसका हारबद्ध चित्र पन्यास केशर मुनिजी ने पालीताना से बनाकर भेजा था और दूसरा चित्र-बद्ध उपाध्याय सुखसागरजी ने कवि की कल्याण मन्दिर स्तोत्रवृत्ति के साथ छपवाया है।

जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई अपनी विद्यमानता में हमारे इस संग्रह को प्रकाशित देखते तो हर्षोल्लास से झूम उठते। अतः उन्हीं की मधुर स्मृति में अपना यह प्रयास समर्पित करते हैं।

अगरचन्द नाहटा

भँवरलाल नाहटा

कविर-लेखनदर्शनम्—(१)

[सं० १६६४ वि० करकण्डु प्रत्येक बुद्ध चौ० का अन्तिम पत्र]

कविता-लेखनदर्शनम्—(२)

[सं० ११८४ वि० मेघदूतपदविवेचना का अन्तिम पत्र]

महोपाध्याय समयसुन्दर

प्रस्तुत संग्रह के प्रणेता १७वीं शती के साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र, महोपाध्याय पद-धारक, समय-सिद्धान्त (स्वदर्शन और परदर्शन) को सुन्दर प्रस्तुत-मनोहर रूप में जनभाषा एवं विद्वत्समाज के सम्मुख रखने वाले समय-काल एवं देशोचित साहित्य का सर्जन कर समय का सुन्दर-सुन्दरतम उपयोग करने वाले अन्वर्थक नाम धारक महामना महर्षि समयसुन्दर गणि हैं। इनकी योग्यता एवं बहुमुखी प्रतिभा के सम्बन्ध में विशेष न कहकर यह कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी कि कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के पश्चात् प्रत्येक विषयों में मौलिक सर्जनकार एवं टीकाकार के रूप में विपुल साहित्य का निर्माता अन्य कोई शायद ही हुआ हो! साथ ही यह भी सत्य है कि आचार्य हेमचन्द्र के सदृश ही व्याकरण, साहित्य अलङ्कार न्याय, अनेकार्थ, कोष छन्द देशी भाषा एवं सिद्धान्तशास्त्रों के भी ये असाधारण विद्वान् थे। सङ्गीतशास्त्र की दृष्टि से एक अद्भुत कलाविद् भी थे।

कवि की बहुमुखी प्रतिभा और असाधारण योग्यता का मापदण्ड करने के पूर्व यह समुचित होगा कि इनके जीवन और व्यक्तित्व का परिचय दिया जाय क्योंकि व्यक्तित्व के बिना बहुमुखी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। अतः ऐतिह्य ग्रन्थों के अनुसार संक्षिप्त रूप से उनकी जीवन-घटनाओं का यहाँ क्रमशः उल्लेख कर रहा हूँ।

जन्म और दीक्षा

मरुधर प्रदेशान्तर्गत साचोर (सत्यपुर) में आपका जन्म हुआ था जैसा कि कवि स्वयं स्वरचित सीताराम चतुष्पदी के खण्ड ६ ढाल तीसरी के अन्तिम पद्य में कहता है:—

"मुझ जनम श्री साचोर मांहि, तिहां च्यार मासि रह्या उछाहि।"
[पद्य ५०]

आप पोरवाल* (प्राग्वाट) ज्ञाति के थे तथा आपके मातु† श्री का नाम लीला देवी और पिता श्री का नाम रूपसिंह (रूपसी) था। कवि का जन्म समय अज्ञात है, किन्तु जैन साहित्य के महारथी श्री मोहनलाल¶ दुलीचन्द देसाई बी० ए० एल० एल० बी० के मत को मान्य रखते हुये जैन इतिहास के विद्वान् और मेरे मित्र श्री अगरचन्द जी नाहटा ने अपने 'कविवर समय सुन्दर' ‡ लेख में इनका जन्म काल अनुमानतः सं० १६२० स्वीकृत

---

* "प्रज्ञाप्रकर्षः प्राग्वाटे इति सत्यं व्यधायि च।११।" वादी हर्षनन्दन प्रणीत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति।

† कवि देवीदास कृत समयसुन्दर गीत 'मातु लीलादे रूपसी जनमिया।" [प १]

¶ "प्रथमनो ग्रन्थ भावशतक सं० १६४१ मां रचेलो मली आवे छे तेथी ते वखते तेमनी उमर २१ वर्ष नी गणीए तो तेमनो जन्म सं० १६२० मां मूकी शकाय। कविवर समयसुन्दर निबन्ध आनन्द काव्य महोदधि मौक्तिक ७ पृष्ठ २।

‡ 'परन्तु इनकी प्रथम कृति भावशतक' के रचना काल के आधार पर श्री मोहनलाल दुलीचन्द देसाई ने उस समय इनकी आयु २ -२१ वर्ष अनुमानित कर जन्म काल वि० १६२० होने की सम्भावना की है जो समीचीन ज्ञात पड़ती है। वादी हर्ष-

किया है किन्तु मेरे मतानुसार इससे कुछ पूर्व ज्ञात होता है। क्योंकि देखिये—

महालाक्षणिक आचार्य मम्मट द्वारा प्रणीत काव्य प्रकाश नामक लक्षण ग्रन्थ में मम्मट ने वाच्यातिशायि व्यङ्ग्या ध्वनि भेद की जो चर्चा की है, कवि उसी वाच्यातिशायि व्यङ्ग्या ध्वनि भेद के भेदों का स्वरूप सहित लक्षण इस (भावशतक) ग्रन्थ में स्वोपज्ञ वृत्ति के साथ दे रहा है—

"काव्यप्रकाशे शास्त्रे, ध्वनिरिति संज्ञा निवेदिता येषाम्।
वाच्यातिशायि व्यङ्ग्यान्, कवित्वभेदानहं वच्मे ॥२॥"

काव्यप्रकाश जैसे क्लिष्ट लक्षण ग्रन्थ का अध्ययन कर 'ध्वनि' जैसे सूक्ष्म विषय पर लेखिनी चलाने के लिये प्रौढ़ एवं तलस्पर्शी ज्ञान की आवश्यकता है; जो दीक्षा के पश्चात् ५–६ वर्ष में पूर्ण नहीं हो सकता। यह ज्ञान कम से कम भी १०–१२ वर्ष के निरन्तर अध्ययन के फलस्वरूप ही हो सकता है और दूसरी बात यह है कि यदि हम सं० १६३५ दीक्षा स्वीकार करें तो यह असंभव सा है कि ५–६ वर्ष के अल्प-दीक्षा पर्याय में गणि पद प्राप्त हो जाय। अतः वि० १६२८ के आस-पास या १६३० में दीक्षा हुई

नगपन के नवयौवन भर संयम संग्रह्यो जी सई हाथे श्रीजिनचंद" इस उल्लेख के अनुसार दीक्षा के समय इनकी अवस्था कम से कम १४ वर्ष होनी चाहिये। इस अनुमान से दीक्षा-काल वि० १६३५ के लगभग बैठता है।"

[नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५७ अङ्क १ सं० २००६]

हो यह मानना उचित होगा। और वहां वादी हर्षनन्दन अपने समयसुन्दर गीत में "नवयौवन भर संयम संग्रह्यौ जी" कहते हुये नजर आरहे हैं, वहीं यह स्पष्ट हो जाता है कि "नवयौवनभर" परिपूर्ण तरुणावस्था का समय १६ से २० वर्ष की आयु को सूचित करता है। अतः दीक्षा का अनुमानतः संवत् १६२८—३० स्वीकार करते हैं तो जन्म सम्वत् १६१० के लगभग निश्चित होता है। इनका जन्म नाम क्या था और इनका प्रारम्भिक अध्ययन कितना था? इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु मरुधर प्रान्त जिसमें साचोर विशेषतः में देवगिरा के पठन-पाठन का अस्पष्टाभाव होने से इनका अध्ययन दीक्षा पश्चात् ही हुआ हो, समीचीन मालूम होता है।

युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६२८ में खंभात के श्री संघ को पत्र दिया था उसमें समयसुन्दर का नाम नहीं है। हो भी नहीं सकता क्योंकि इस पत्र में उल्लिखित पदाधिकारक प्रमुख साधुओं के ही नामों का उल्लेख है। अतः सं० १६२८ में इस पत्र के देने के पूर्व या पश्चात् या आस-पास ही आचार्य श्री ने स्वहस्त * से इनको दीक्षा प्रदान कर अपने प्रमुख एवं प्रथम शिष्य श्री सकलचन्द्र गणि का शिष्य घोषित कर समयसुन्दर नाम प्रदान किया होगा।

कवि अपने को खरतरगच्छ का अनुयायी बतलाता हुआ, खरतरगच्छ ¶ के प्राचार्य श्रीवर्धमानसूरि के प्रमुख से अपनी परम्परा सिद्ध करता है। इस परम्परा में कवि केवल गणनायकों के नामों का ही उल्लेख कर रहा है। अष्टलक्षी प्रशस्ति के अनुसार कवि का वंशवृक्ष इस प्रकार बनता है —

---

* वादी हर्षनन्दन कृत गुरु गीत "सह हथे श्रीजिनचन्द्र"।

¶ खरतरगच्छ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में देखें मेरी लिखित वल्लभ-भारती प्रस्तावना।

|
जिनलब्धिसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि
|
जिनोदयसूरि
|
जिनराजसूरि[११]
|
जिनभद्रसूरि (जेसलमेर, जालोर, देवगिरि नागपुर आश-
| हिलपुर पत्तन आदि भंडारों के संस्थापक)
जिनचन्द्रसूरि
|
जिनसमुद्रसूरि
|
जिनहंससूरि
|
जिनमाणिक्यसूरि[१२]
|
जिनचन्द्रसूरि[१३] (सम्राट् अकबर प्रदत्त युगप्रधान पद
| धारक)
सकलचन्द्र गणि (प्रथम शिष्य)
|
समयसुन्दर गणि (महोपाध्याय पद धारक)

कवि को दीक्षा प्रदान करने वाले युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि हैं; जो आपके प्रगुरु होते हैं और कवि के व्यक्तित्व का विकास भी इनकी ही उपासना में और इनके ही प्रसाद से हुआ है। अतः यहां युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि का संक्षिप्त जीवन-दर्शन कर लेना समुचित होगा।

---

११ मेरी लि॰ खरतरजिनरत्न प्रस्तावना. १२-१३ नाहटा बन्धु लि॰ युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि।

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के माता-पिता बीसा ओसवाल ज्ञातीय श्रीवंत और सियादे खेतसर (मारवाड़) के निवासी थे। आपका जन्म सं० १५९५ में हुआ था और आपका बाल्यावस्था का नाम सुलतान था। आचार्य प्रवर श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी के उपदेश से प्रभावित होकर ६ वर्ष की अवस्था में आपने सं० १६०४ में दीक्षा ग्रहण की थी। आपका दीक्षा नाम रखा गया था सुमतिधीर। आचार्य जिनमाणिक्यसूरि का देराउर से जेसलमेर आते हुए मार्ग में ही स्वर्गवास हो गया था। अतः सम्वत् १६१२ भाद्रपद शुक्ला ६ गुरुवार को जेसलमेर में बेगड़गच्छ (खरतरगच्छ की ही एक शाखा) के आचार्य श्री गुणप्रभसूरि ने आपको आचार्य पद प्रदान कर, जिनचन्द्रसूरि नाम प्रख्यात कर श्री जिनमाणिक्यसूरि का पट्टधर (गच्छनायक) घोषित किया। इस पट्टाभिषेक का महोत्सव जेसलमेर के राउल श्री मालदेवजी ने किया था। जेसलमेर से विहार कर, बीकानेर के मन्त्रिवर्य संग्रामसिंह जी के आग्रह से आप बीकानेर पधारे। वहां सं० १६१४ चैत्र कृष्णा सप्तमी को स्वगच्छ में प्रचलित शिथिलाचार को दूर करने के लिये आपने क्रियोद्धार किया। सं० १६१७ में पाटण में जिस समय तपगच्छीय प्रखर विद्वान् किन्तु कदाग्रही उपाध्याय धर्मसागरजी* ने गच्छविद्वेषों का

---

* सागर जी के गच्छ विद्वेष प्रकरण पर लिखते हुए कविवर समयसुन्दर निबन्ध में श्री मो० द० देसाई लिखते हैं:—

श्वेताम्बर मतना खरतरगच्छ अने तपगच्छ बच्चेनी मतामतो पण प्रबल थई पड़ी हती अने तेमां धर्मसागर उपाध्यायजी नामना तपगच्छीय विद्वान्-पण उग्र स्वभावी साधुए कुमतिकदकुद्दाल (याने प्रवचन परीक्षा) नामनो ग्रन्थ बनावी तपगच्छ सिवाय ना अन्य सर्व गच्छ अने मत सामे अनेक आक्षेपो मूक्या। आवी ते सर्व मतो सामसामी खट्पाः अने तेनु

सूत्रपात किया उस समय आचार्यश्री ने उसको शास्त्रार्थ के लिये आह्वान किया और उसके उपस्थित न होने पर तत्कालीन अन्य समग्र गच्छों के आचार्यों के समक्ष धर्मसागर जी को उत्सूत्र

जो समाधान न थाय तो आखा जैन-समाजमां दावानल अग्नि प्रकटे। आ माटे जोखमदार आचार्यों ने बन्ने पक्षना अग्र रही शक्य नहीं तेथी तपागच्छाचार्य विजयदानसूरिये उपरोक्त ग्रन्थ पाणीमां बोळावी दीधो अने तने अप्रमाण ठेरव्यो। तेमणे जाहिरनामुं बहारी 'सात बोल' नी आज्ञा बहारी एक बीजा गच्छ-वाळाने वाद-विवाद नी अवहेलना करता अटकाव्या हता। पण आटलाथी विरोध ओछो तेमो न रह्यो त्यारे विजयदानसूरि पछी आचार्य हीरविजयसूरि ए एक सात बोल पर विवरण करी बार बोल' ए नामनी बार आज्ञाओ बाहिर करी हती सं० १६४६। आथी जैन समाजमां घणी शान्ति व्यापी।" [पृ० ३]

× × × ×

"११ विक्रमनी सत्तरमी शताब्दि मां (सं० १६१७) अभयदेवसूरि खरतर हता के नहि ते संबंधी पाटणमां तपागच्छना धर्मसागर उपाध्याय अने खरतरगच्छना धनराज उपाध्यायने जबरो झगडो थयो हतो। धर्मसागरे एवुं प्रतिपादन करवा मांड्युं हतुं के खरतरगच्छनी उत्पत्ति जिनेश्वरसूरि थी नहि, पण जिनदत्तसूरि थी थई छे अभयदेवसूरि खरतरगच्छमां थइ शक्या नथी जिनवल्लभसूरिए शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करी छे-वगेरे चर्चास्पद विषयो पोताना औष्ट्रिक मतोत्सूत्र दीपिका नामना ग्रन्थमां मूक्या (रच्या सं० १६१७)। आ ग्रन्थनुं बीजुं नाम प्रवचन परीक्षा छ था बन्ने मूल होय-बन्नेमां विषयो सरखा छ। तेमाना एकनुं बीजुं नाम कुमतिकंदकुद्दाल छे। आथी बहु कोलाहल थयो। बे गच्छ वच्चे अथडामणी अने बन्ने प्रबल विवाद उत्पन्न थतां त्यां अटक्यो ए विचारवानुं रहे।

गरी[1] घोषित किया था। सम्राट् अकबर के आमन्त्रण से सूरिजी
म्भात से विहार कर सं० १६४८ फाल्गुन शुक्ला १२ के दिवस
महोपाध्याय जयसोम, वाचनाचार्य कनकसोम, वाचक रत्ननिधान

> जो जोसमशर आचार्यो ने वच्चे पड्या वगर चाले नहिं ते थी तपागच्छना विजयदानसूरिए एक कुमतिकुद्दाल ग्रंथ सभा समक्ष पाणीमां बोळावी दीधो हतो अने ए ग्रन्थनी नकल कोईनी पण पासे होय तो, ते अप्रमाण ग्रन्थ छे माटे तेमानु कथन कोईए प्रमाणभूत मानवु नहि एवु जाहेर कर्यु हतु। खरतरगच्छ वालाए पोताना मतनु प्रतिपादन कराववा भगीरथ प्रयत्न सेव्यो हतो, ए वातना प्रमाणमां जणाववानु के आपणा नायक समयसुन्दर उपाध्यायजी ना सं १६७२ मां रचेला समाचारी शतक मां सं० १६१७ मां पाटण मां थयेला एक प्रमाण पत्र नी नकल आपली छे के जेमां एवी हकीकत छे के अभयदेवसूरि खरतर गच्छ मां थयेला छे ए वात पाटणना ८४ गच्छो वाला माने छे पण ए प्रमाण पत्र साचु जणातु नथी अने तेनो हेतु उपरनो अपवाद टालवा अर्थे हतो। [पृ० १४ टिप्पणी]

यहाँ प्रवचन-परीक्षा जैसे ग्रन्थ को अप्रामाणिक ठहराकर जल-शरण कराया गया और इसी कारण धर्मसागरजी को सात और बारह बोल निकाल कर गच्छ बाहर घोषित किया गया था। वही उन्हीं के विचारानुयायी उसी ग्रन्थ को प्रकाशित कर और उसी विचार सरणि को पुनः समाज पर लादकर जो समाज में विषमता का बीज बो रहे हैं, वह सचमुच में दयनीय विषय है। अस्तु धर्मसागरजी कथित समस्त प्रश्नों का विशद्-समाधान मह उत्तरके लिये देखें मेरी लिखित अप्रमभारती प्रस्तावना।

[1] देखें उ० समयसुन्दर रचित समाचारी शतक श्री अभयदेवसूरि खरतरगच्छदर्शाधिकार" पृ १६ [प्र० जि० भं० सूरत]

और प० गुणविनय प्रभृति ३१ साधुओं के परिवार सहित लाहोर में सम्राट् से मिल और सात्त्विक उपदेशों से प्रभावित कर आपने तीर्थों की रक्षा एवं अहिंसा प्रचार * के लिये आषाढ़ी अष्टाह्निक एवं स्तम्भतीर्थीय जलचर रक्षा आदि कई फरमान प्राप्त किये थे। और सं० १६४९ फाल्गुन वदि १० के दिवस सम्राट के हाथ से ही युगप्रधान † पद प्राप्त किया था जिसका विशाल महोत्सव एक करोड़ रुपये व्यय कर महामन्त्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने किया था। एक समय जब कि सम्राट् जहांगीर अपने अन्तःपुर में सिद्धिचन्द्र नामक व्यक्ति को दुष्कृत्य करते हुए देखता है तो अत्यन्त ही कुपित होकर समग्र जैन साधुओं को कैद करने का और अपनी सीमा से बाहर करने का हुक्म निकाल देता है। उस समय जैन-शासन की रक्षा के निमित्त आचार्यश्री वृद्धावस्था में भी आगरा जाते हैं और

---

* युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि परिशिष्ट ग

विद्याम्भोधिविशेषैरपमतरूणः श्रीमज्जलालुद्दीनोऽपि ।
श्रीस्तम्भतीर्थजलनिधिजलजन्तुरक्षापरो वर्षम् । ८ ।
आषाढ़-सितपक्षे दिनाष्टकं सर्वदेशसूत्रेषु ।
अनुकम्पया पटहः साहेर्वचनेन दत्तो यैः । ९ ।
[उत्तराध्ययन वृत्ति प्रशस्ति, हर्षनन्दन कृता]

† तेन श्रीमदकब्बराभिधनृप श्रीभाविसाहिप्रदा-
प्तोदीपस्तु युगप्रधान इति सन्नाम्ना यथार्थेन च ॥ ४ ॥
श्रीमन्त्रीश्वरकर्मचन्द्रविहितोपत्कोटिद्रव्यात्र
श्रीमन्नुत्सवपूर्वकं युगवरा यस्मै ददौ स्वं पदम् ।
श्रीमल्लाभपुरे कृपापरमति-श्रीपातिसाहाग्रतः—
सन्मान्याः जिनचन्द्रसूरिसुगुरु सत्कीर्तितेऽस्मत्प्रभ ॥ ५ ॥
[श्रीपद्ममोपाध्याय कृत अभिधानचिन्तामणिनाममाला टीका.]

‡ कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध वृत्ति सह

स्वनामधन्य मन्त्रिवर श्री कर्मचन्द्रजी बच्छावत

२ युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि मूर्ति

(बीकानेर ऋषभदेव मन्दिर)
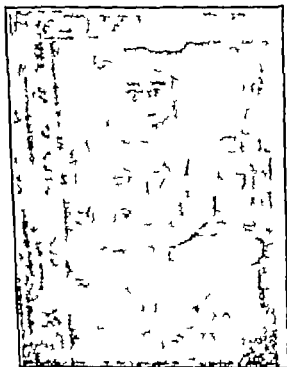
सम्राट् जहांगीर (जो इनको अपना गुरु मानता था) को समझा कर इस हुक्म को रद्द करवाते हैं।* सं० १६७० में आश्विन कृष्णा द्वितीया को बिलाड़ा में आपका स्वर्गवास हुआ था। महामन्त्री कर्मचन्द्र बच्छावत और अहमदाबाद के प्रसिद्ध श्रेष्ठी संघपति श्री सोमजी शिवा† आदि आपके प्रमुख उपासक थे। आपने सं० १६१७ विजयदशमी के दिवस पाटण में आचार्य प्रवर जिनवल्लभसूरि प्रणीत पौषधविधि प्रकरण पर ३५५४ श्लोक परिमाण की विशद टीका की रचना की, जो सैद्धान्तिक और वैधानिक दृष्टि से बड़ी ही उपादेय है।

कवि के गुरु श्री सकलचन्द्रगणि थे, जो रीहड़ गोत्रीय थे और थे युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के प्रथम शिष्य। जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६१२ में गच्छनायक बनने पर सर्वप्रथम नन्दी 'चन्द्र' ही स्थापित की थी। अतः इनकी दीक्षा भी सं० १६१२ के अन्त में या १६१३ के प्रारंभ में ही हुई होगी। अथवा सं० १६१४ में आचार्य श्री बीकानेर पधारे, वहीं हुई हो। क्योंकि आपकी चरणपादुका नाल में रीहड़ गोत्रियों द्वारा स्थापित है। अतः शायद ये बीकानेर

* येऽभ्यस्तीयकरस्तदीय नृपतेः कार्सं परिस्पवत्काम
येभ्यः साधुजना तुरुष्कनृपतेर्देशे विहारं क्षमुः । ६ ।
[हर्षनन्दन कृत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति-प्रशस्ति]

इसका विशेष अध्ययन करने के लिए देखें नाहटा बन्धु लिखित युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पुस्तक का 'महान् शासन सेवा' नामक ग्यारहवां प्रकरण।

† देखें लालमल बोथरा लि० संघपति सोमजी शिवा।

* रवि सकलचन्द्र स्यो रीहडान्वयभूषणम् ॥ १० ॥ [कल्पलता प्रशस्ति]

के निवासी हों और वहीं दीक्षा हुई हो। सं० १६२८ के सोमसि वाले पत्र में आपका नामोल्लेख है अतः सं० १६२८ से १६४० के मध्यकाल में ही आपका स्वर्गवास हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है। आपकी जो चरण पादुका* नाल (बीकानेर) दादा-वाड़ी में स्थित है जिसके निर्मापक रीहड़ गोत्रीय हैं संभव है वे आपके ही संबंधी हों! पादुका के प्रतिष्ठा-कारक हैं आचार्य जिनचन्द्रसूरि और जिनकी उपाधि युगप्रधान सूचित की गई है जो आपको सं० १६४९ में प्राप्त हुई थी। अतः पादुका की प्रतिष्ठा इसके बाद ही हुई है।

श्री देसाई ने सकलचन्द्र गणि के सम्बन्ध में अपने लेख में लिखा है† —

सकलचन्द्र गणि—तेओ विद्वान् पंडित अने शिल्पशास्त्रमां कुशल हता। प्रतिष्ठाकल्प श्लोक (११०००) जिनवल्लभसूरि कृत धर्मशिक्षा पर वृत्ति (पत्र १९८) अने प्राकृतमां हिंदावरस नामना औपदेशिक ग्रन्थ पर वृत्ति १२४२६ श्लोकमां सं० १६१ मां रचेल छे।"

जो वस्तुतः भ्रमपूर्ण है। इन ग्रन्थों के रचयिता व सकल

---

* "　　　　वर्षे　　　　सुदि ३ दिने शनौ मिढ़ियोगे श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्यमुख्य प० सकल———चरण पादुका श्री खरतरगणाधीश्वर युगप्रधानप्रभु श्री—　— श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं — —— इह अपवत् वल्लाभ्यां कारिते॥"

† कविवर समयसुन्दर पृ ११ टि ११
जिनरत्नकोष और जैन ग्रन्थावली में यही उल्लेख है। किन्तु मेरे नम्र विचारानुसार जिनप्रभ सूरि प्रणीत धर्मशिक्षा पर वृत्ति होगी न कि जिनवल्लभीय धर्मशिक्षा पर। विशेष विचार तो प्रति सम्मुख रहने पर ही हो सकता है। अस्तु,

चन्द्र गणि तपगच्छीय विजयदानसूरि के शिष्य हैं तथा भानुचन्द्र महोपाध्याय के दीक्षा गुरु हैं। नाम और समय की साम्यता वश ही देसाईजी भूल कर गये हैं।

शिक्षा और पद

कवि ने अपना विद्यार्जन यु० जिनचन्द्रसूरि वाचक महिमराज (श्री जिनसिंहसूरि *) और समयराजोपा-

* आचार्य जिनसिंहसूरि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के पट्टधर थे और साथ ही ये एक असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान्। इनका जन्म वि० १६१५ के मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को खेतासर ग्राम निवासी चोपड़ा गोत्रीय शाह चांपसी की धर्मपत्नी श्री चाम्पल देवी की रत्नकुक्षि से हुआ था। आपका जन्म नाम था मानसिंह। सं० १६२३ में जब आचार्य जिनचन्द्रसूरि खेतासर पधारे थे तब आचार्यश्री के उपदेशों से प्रभावित होकर एवं वैराग्यवासित होकर आठ वर्ष की अल्पायु में ही आपने आचार्यश्री के पास ही दीक्षा ग्रहण की। दीक्षावस्था का आपका नाम रखा गया था महिमराज। आचार्यश्री ने सं० १६४ माघ शुक्ला ५ को जैसलमेर में आपको 'वाचक' पद प्रदान किया था। जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास के अनुसार सम्राट् अकबर के आमंत्रण को स्वीकार कर सूरिजी ने वाचक महिमराज को गणि समयसुन्दर आदि ६ साधुओं के साथ अपने से पूर्व ही लाहोर भेजा था। लाहोर में सम्राट् आपसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ था। सम्राट् के पुत्र शाहजादा सलीम (जहांगीर) सुरत्राण के एक पुत्री मूलनक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न थी जो अत्यंत ही अनिष्टकारी थी। इस अनिष्ट का परिहार करने के लिये सम्राट् की इच्छानुसार,सं० १६४८ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को महिम

ध्याय¹ के चरण कमलों में रहकर किया था। यही कारण है कि कवि अपनी सर्वप्रथम रचना भावशतक और अपनी विशिष्ट कृति अष्टलक्षी में इन दोनों को मेरी विद्या के एक मात्र गुरु श्रद्धा-पूर्वक स्मरण करता हुआ नजर आ रहा है —

"श्रीमहिमराजवाचक–वाचकवर–समयराजपुण्यानाम्।
मद्विद्यैकगुरूणां, प्रसादतो भावशतकमिदम् ॥"

[भावशतक]

"श्रीजिनसिंहमुनीश्वर–वाचकवर–समयराज–गणिराजाम्।
मद्विद्यैकगुरूणामनुग्रहो मेऽत्र विज्ञेयः ॥"

[अष्टलक्षी पृ० २८]

---

¹ उपाध्याय समयराज भी आचार्य जिनचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्यों में से हैं। आपके सम्बन्ध में कोई ऐतिह्य वृत्त प्राप्त नहीं है। 'राज' नंदी को देखते हुए आपकी दीक्षा भी जिनसिंहसूरि के साथ ही या आस-पास सं० १६२३ में ही हुई होगी। आपकी प्रणीत निम्न कृतियाँ प्राप्त हैं -

१ धर्ममञ्जरी चतुष्पदी (१६६२) मेरे संग्रह में।
२. पर्युषण व्याख्यान पद्धति (महिमा संग्रह में)
३ जिनकुशलसूरि प्रणीत शत्रुञ्जय ऋषभजिनस्तव अवचूरि (मेरे संग्रह में)
४. साधु-समाचारी (आगरा विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मन्दिर) आदि कई संस्कृत भाषा के स्तोत्र।

राजजी ने अष्टोत्तरी शान्तिस्नात्र करवाया जिसमें लगभग एक लाख रुपया व्यय हुआ था और जिसकी पूजा की पूर्णाहुति (आरती) के समय शाहजादा ने १ ००) रु० चढ़ाये थे।

काश्मीर विजय यात्रा के समय सम्राट की इच्छा को मान

अध्येता समयसुन्दर ने इन दोनों विद्वानों के समीप किन किन ग्रन्थों का अध्ययन किया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु कवि की जिस प्रतिभा का परिचय हमें उनप्रणीत द्वितीय कृति अष्टलक्षी से मिलता है, उससे अनुमान करने पर यह सिद्ध है कि आपने वाचकों से सिद्धहेमशब्दानुशासन, अनेकार्थ संग्रह, विश्वशम्भुनाममाला काव्यप्रकाश पंच महाकाव्य आदि ग्रन्थों के साथ साथ जैन आगमिक साहित्य का और जैन दर्शन का विशेषतया अध्ययन किया था। इनके ज्ञानार्जन की योग्यता के सम्बन्ध में हम अगले प्रकरणों में विचार करेंगे। अस्तु

देते हुए आचार्यश्री ने वा० महिमराज को हर्षविशाल आदि मुनियों के साथ काश्मीर भेजा। काश्मीर के प्रवास में वा० महिमराज की अवर्णनीय उत्कृष्ट साधुता और मार्मिक एवं मार्मिक चर्चाओं से अकबर अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसी का फल था कि वाचकजी की अभिलाषानुसार गजनी, गोलकुण्डा और काबुल पर्यन्त अमारि (अभयदान) उद्घोषणा करवाई और मार्ग में आगत अनेक स्थानों (सरोवर) के जलचर जीवों की रक्षा कराई। काश्मीर विजय के पश्चात् श्रीनगर में सम्राट् को उपदेश देकर आठ दिन की अमारी उद्घोषणा कराई थी।
(देखें जिनचन्द्रसूरि प्रतिबोध रास)

"शुभ दिवस रिपुबल हणि भेजी नयर श्रीपुरि अवारि।
अमारी तिहां दिन आठ पाली, देश साधी जयवरी।।"
(जि० च० प्र० रास)

श्रीपुरनगर आइ अमारि गुरु पलाइ
मछरी सबई छोराइ नीकउ अमल अइयारी।" (कु० पृ० ३११)

वाचकजी के चारित्रिक गुणों से भावित होकर, स० अकबर ने आचार्यश्री को निवेदन कर बड़े ही उत्सव के साथ में आपको

गणिपद—भावशतक (र० ई० १६४१) में सूचित 'गणि'¹ शब्द को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी मेधावी प्रतिभा और सच्चरित्रता से आकर्षित होकर आचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरि ने स्वकरकमलों से वाचक श्री महिमराज के साथ ही स० १६४० माघ शुक्ला पंचमी को जेसलमेर में कवि को 'गणि' पद प्रदान किया होगा।

'दधिकाव्य समयसुन्दरगणिना स्वाभ्यास वृद्धिकृते ॥६६॥
शशिसागररसभूतल (१६४१) संवति विहितं च भावशतकमिदम् ॥१०॥'

स १६४६ फाल्गुन कृष्णा १० के दिन आचार्यश्री के ही करकमलों से आचार्य पद प्रदान करवा कर जिनसिंहसूरि नाम रखवाया। (देखिये स समयसुन्दर रचित 'जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य')

सम्राट् जहांगीर भी आपकी प्रतिभा से काफी प्रभावित था। यही कारण है कि अपने पिता का अनुकरण कर स० जहाँगीर ने आपको युगप्रधान पद प्रदान किया था।

(देखें राजसमुद्र कृत 'जिनसिंहसूरि गीतम्')।

गच्छनायक बनने पश्चात् आपकी अध्यक्षता में मेड़ता निवासी चोपड़ा गोत्रीय शाह आसकरण द्वारा शत्रुञ्जय तीर्थ का संघ निकाला गया था।

सं १६७४ में आपके गुणों से आकर्षित होकर आत्मा सहवास एवं धर्मबोध प्राप्त करने के लिये सम्राट जहांगीर ने शाही सम्मान के साथ अपने पास बुलाया था। आचार्यश्री भी बीकानेर से विहार कर मेड़ता आये थे। दुर्भाग्यवश वहीं सं १६७४ पोष शुक्ला त्रयोदशी को आपका स्वर्गवास हो गया।

आपके जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि आदि कई विद्वान शिष्य थे।

वाचनाचार्य पद— सं० १६४९ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को लाहोर में जिस समय वाचक महिमराज को आचार्य श्री ने आचार्य पद प्रदान कर जिनसिंहसूरि नाम उद्घोषित किया था उसी समय गणि पद भूषित कवि को 'वाचनाचार्य'[¶] पद प्रदान कर सम्मानित किया था।

उपाध्याय पद—श्री राजसोम गणि प्रणीत समयसुन्दर गुरु गीतम्'[†] के अनुसार यह निश्चित है कि तत्कालीन गच्छनायक श्रीजिनसिंहसूरि ने लवेरा में आपको 'उपाध्याय' पद से अलंकृत किया था किन्तु संवत् का इस गीत में उल्लेख न होने से हमें उनके ग्रन्थों के आधार से ही निश्चित करना है।

सं० १६६८ तक की आपकी कृतियों में उपाध्याय पद का कहीं भी उल्लेख नहीं है। नाहटाजी के लेखानुसार सं० १६७१ में लिखित अनुयोगद्वारसूत्र की पुष्पिका में भी वाचक पद का ही उल्लेख है। किन्तु कवि की १६७१ के पश्चात् की रचनाओं में उपाध्याय पद का उल्लेख है। देखिये—

"तेषां शिष्यो मुख्यः, स्वहस्तदीक्षित सकलचन्द्रगणिः।
तच्छिष्य-समयसुन्दर सुपाठकैरकृत शतकमिदम् ॥४॥"
[विशेषशतक* सं० १६७२]

[¶] 'तेषु च गणि जयसोमा रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
गुणविनय-समयसुन्दरगणिकृतौ वाचनाचार्यौ ॥'
[कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध]

[†] "श्रीजिनसिंहसूरिन्द, सहेर लवेरइ दी पाठक पद कीयउ"

[*] 'विक्रमसंवति लोचनमुनिदर्शनकुमुदबांधव (१६७२) प्रमित।
श्रीपार्श्वजन्मदिवसे, पुरे श्रीमेडतानगरे ॥ २ ॥'

"सयर्वता गुरु राजीयारे, श्रीजिनसिंहसूरि राय ।
समयसुन्दर तसु सानिधि करी रे, इम पभणइ उवझाय रे ॥६॥"
[सिंहलसुत प्रियमेलक रास¹ सं० १६७२]

अत यह निश्चित है कि सं० १६७१ के अंतिम भाग में या १६७२ के माघ मास के पूर्व ही आपको उपाध्याय पद प्राप्त हो गया था।

महोपाध्याय पद—परवर्ती कई कवियों ने आपको 'महोपाध्याय' पद से सूचित किया है, जो वस्तुतः आपको परम्परानुसार प्राप्त हुआ था। सं० १६८ के पश्चात् गच्छ में आप ही वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और पर्यायवृद्ध थे। साथ ही खरतरगच्छ की यह परम्परा रही है कि उपाध्याय पद में जो सबसे बड़ा होता है, वही महोपाध्याय कहलाता है। अत: स्वत: सिद्ध है कि आपकी महिमा और योग्यता से प्रभावित होकर यह पद लिखा गया है। यही कारण है कि वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन सूत्र के प्रारम्भ में "श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय चरणसरोरुहाभ्यां नम:" लिखता है।

प्रवास और उपदेश

कवि के स्वरचित ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ तीर्थमालायें और तीर्थस्तव साहित्य को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का प्रवास उत्तर भारत के क्षेत्रों में बहुत लम्बा रहा है। सिन्ध उत्तर प्रदेश राजस्थान, सौराष्ट्र, गुजरात के प्रदेशों में विचरण अत्यधिक रहा है। प्रशस्तियाँ आदि के अनुसार वर्गीकरण किया जाय तो इस प्रकार होगा:—

¹ "सवत सोलबहुत्तरि समइ रे, मेड़तानगर मझारि।"

पूर्वी के पांच पहाड़ क्षत्रियकुण्ड, चम्पानगरी, पावापुरी कंतरीक और मक्सी आदि प्रदेशों में विचरण का अनुमान करते हैं जो समुचित नहीं है। क्योंकि इस बात का कोई पुष्टप्रमाण नहीं है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण हुआ हो। किन्तु कवि की रचनाओं और प्रवास को देखते हुये यह सिद्ध है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण नहीं हुआ है किन्तु, प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान होने से स्तव रूप में नमस्कार-मात्र ही किया है।

कवि अपने प्रवास को तीर्थयात्रा और प्रचार का माध्यम बनाकर सफलता प्रदान कर रहा है। जहाँ जहाँ भी तीर्थगण आते हैं, वहां-वहां कवि मुक्त हृदय से भक्ति करता हुआ भक्त के रूप में दिखाई पड़ता है नूतन स्तवन बनाकर अर्चा करता रहता है। कवि के तीर्थयात्रा सम्बन्धी कई स्तव भी ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करते हैं। उदाहरण स्वरूप पत्तनी* और राणकपुर¶ का स्तवन देखिये।

कवि विचरण करता हुआ अपने समाज में तो ज्ञान और धर्म का प्रचार करता ही रहा है, किन्तु साथ ही राजकीय अधिकारियों से भी सम्बन्ध स्थापित कर अहिंसा-धर्म का भी मुक्तहृदय से प्रचार करता रहा है। कवि अपनी वृत्ति को संकीर्ण न रखकर केवल स्वसमुदाय में ही नहीं अपितु सामान्य जनता और मुसल

---

* कुसुमाञ्जलि पृ २१७।

¶ वही पृ २८। इस स्तवन में कवि खरतरवसही का भी उल्लेख करता है—

'खरतर वसही खांतीसु रे लाल मिरखंता सुख थाय मन मोह्यउ रे।६।'

जो कि वर्तमान में नहीं है। किन्तु सं २००८ वैशाख शुक्ला में मैं आचार्य राणकपुर गया था। वहां वैरवा का मन्दिर नाम से प्रसिद्ध मन्दिर के तल घर में खिरतसक खरतर शाखा के प्रवर्तक आचार्य जिनवधनसूरि के पौत्र शिष्य श्रीजिनचन्द्रसूरि

मानों तब से अपना संपर्क स्थापित कर उपदेश देता है। यही कारण है कि वह सिद्धपुर (सिन्ध) के कार्यवाहक (अधिकारी) मखनूम मुहम्मद शेख काजी को अपनी वाणी से प्रभावित कर समग्र सिन्ध प्रान्त में गौमाता का पञ्चनदी के जलचर जीव एवं अन्य सामान्य जीवों की रक्षा के लिये अभय की उद्घोषणा कर पाता है † इसी प्रकार यहां जैसलमेर में मीना-समाज सांडों का

के पट्टधर श्रीजिनसागरसूरि प्रतिष्ठित एक मूर्ति (जो सम्भवतः मूलनायक की होगी !) लगभग २५ अंगुल की थी और १०-१२ मूर्तियां छोटी मौजूद हैं। इससे निश्चित है कि कवि वर्णित खरतरवसही का ध्वंस होने से मूर्तियें एक मन्दिर के तलघर में रखी गई हों।

† सीधपुर मांहि सिद्ध समस्याविषइ मखनूम महमद सेखोजी।
जीवदया पडह फेराविया राखी चिहुँ गंइ रेखोजी।३।
[देवीदास कृत समयसुन्दर गीतम्]
सिंधु विहारे लाभ लिया घणो रे रंजी मखनूम सेख।
पांच नदियां जीवदया मरी रे, वलि धेनु विशेष ॥४॥
[वादी हर्षनन्दन कृत समयसुन्दर गीतम् ।]

वादी हर्षनन्दन तो कवि के उपदेश द्वारा अकबर के हुक्म से सम्पूर्ण गुर्जरभूमि में किया हुआ अमारि पडह का भी उल्लेख करता है —
"अमारिपटहो येन साहिपत्रप्रमाणतः ।
वादयाञ्चक्रिरे सर्व-गुर्जरधरणीतले ।१०।
श्रीसक्कनगरे येन श्रीमखनूम सिद्दानीयम्।
प्रतिबोध्य गवां जातो वारितस्तारितरमसि" ।११।
[मध्याह्नव्याख्यान पद्धति टीका प्र०]
'मखनूमसिद्दानीयं श्रीमत्पद्गुरु प्रभावकाः ।
सिन्धौ लोमकजीवा मारात् वारयामासुः ।१४।'
[उ० टी० प्र०]

वध किया करता था वहाँ ही जेसलमेर के अधिपति रावल भीमजी को बोध देकर इस हिंसा-कृत्य को बन्द करवाया था और मण्डोवर[1] (मंडोर, जोधपुर स्टेट) तथा मेड़ता[2] के अधिपतियों को ज्ञान-शिक्षा देकर शासन-सेवी बनाया था।

औदार्य और गुणग्राहकता

कवि सचमुच में ही भावुकता और औदार्य के कारण कवि ही था। वैसे तो कवि खरतरगच्छ का अनुयायी और महासंभ गीतार्थ था किन्तु अनुयायी होने पर भी उसके हृदय में गुणद्वेषी का निवास होने अथवा किंचित् भी हठाग्रह या संकीर्णता नहीं थी, थी तो केवल उदारता ही। उदाहरण स्वरूप देखिये:—

तपागच्छ के धर्मसागरजी जहाँ प्रतापी की तरह खरतरगच्छ को और उसके कर्णधार महाप्रभावी आचार्यों को खर-तर, निह्नव उत्सूत्रभाषी मिथ्याप्रलापी और आर-पुत्र आदि अशिष्ट विशेषण दे रहा था वहाँ कवि अपने गच्छ और आचार्यों की मर्यादा तथा अपनी वैधानिक परम्पराओं को सुरक्षित रख रहा था। समाचारी शतक' म कवि अभयदेवसूरि की खरतरगच्छीयता पट्कल्याणक निर्णय अधिकमास निर्णय, उपवास सह पौषध और खरतरगच्छ की परिभाषा एवं ऐतिहासिकता सिद्ध करता हुआ उदारता का प्रतिपादन कर रहा है। किन्तु क्या मजाल की कहीं भी धर्मसागर का नामोल्लेख भी किया हो अथवा कहीं भी, किसी के लिये भी अशिष्ट विशेषणों का या शब्दों का प्रयोग किया हो! अपितु देखा देखा जाता है कि कवि धर्मसागर जी के ही सहपाठी गुरुभ्राता और तपागच्छनायक हीरविजयसूरि

१-२ देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ १६०।

को अपने गच्छनायक के समान ही प्रभाविक और जिनशासन का सितारा मानकर स्तुति करता है—

> भट्टारक तीन भये बड़भागी।
> जिण दीपायउ श्रीजिनशासन सबल पडूर सोभागी। भ० १।
> खरतर श्रीजिनचन्द्रसूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी।
> विधिपक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी। भ० २।
> मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक पुण्य दशा हम जागी।
> समयसुन्दर कहइ तत्त्वविचारउ भरम जाय जिम भागी। म० ३।

कवि गुणों का ग्राहक और साधुता का पूजक था। न तो उसके सामने गच्छ का ही महत्त्व था और न था छोटे-मोटे का ही महत्त्व अपितु महत्त्व था तो केवल गुणों का आदर करना। यही कारण है कि पार्श्वचन्द्रगच्छ (लघु-समुदायी) के आचार्य विमलचन्द्रसूरि के शिष्य पूँजा ऋषि थे जो रातिज (गुजरात) ग्राम निवासी कहुआ पटेल गोरा और ममबाई का पुत्र था और जिसने १६७० में अहमदाबाद में दीक्षा ली थी। बड़ा ही उग्र तपस्वी था। देखा जाय तो कवि पुञ्जा ऋषि से अवस्था ज्ञान प्रतिभा और चारित्र में अधिक सम्पन्न होने पर भी पूँजा ऋषि की तपस्या से अत्यधिक प्रभावित होता है और श्लाघा पूर्वक रास मे वर्णन करता है —

> श्रीपार्श्वचन्द्र ना गच्छ महि, पुंजो ऋषि आज।
> आप तरे नै तारिवै, जिम बड़ सफरी जहाज। ८।
> × × ×
> ऋषि पुंजा अति रूड़ो होवइ, जिन शासन माँहि शोभ चढ़ावइ।१४।
> तेहना गुणगातों मन मोहइ, आनन्द उपजै अति उछाहे।
> जीभ पवित्र हुवै जस भणतां श्रवण पवित्र थाये साँभलतां।१५।

यपि पुंजे तप कीधो ते कहुँ सांभळजो सहु कोई रे।
आज नइ कळे करइ कुम पईसा, पणि अनुमोदन आई रे ॥११॥

× × ×

पुंजराज मुनिवर थयो मम माव मुनीसर सोहै रे।
कम करइ तप व्याकरो, भविषण बन मन मोहै रे ॥१२॥

× × ×

आज तो तपसी पहवो पुंजा आप सरीखो न दीसइ रे।
तेहने वांदतां विहरावतां हरखे कवि हियड़ो हीसइ रे ॥१४॥
एक वे वैरागी पहवा श्रीपासचन्द गच्छ मांहि सवाई रे।
गच्छपत आवइ गच्छ मांहि श्रीपासचन्द्रसूरिनी पुण्याई रे ॥१५॥

× × ×

इतना ही नहीं कवि के हृदय में गच्छ वाद तो दूर रहा किन्तु श्वेताम्बर-दिगम्बर जैसे विवादास्पदीय विषयों से भी वे दूर रहे। उनके तीर्थों के प्रति भी उनकी वैसे ही श्रद्धा और आदर भक्ति है, जैसे कि अपने तीर्थों के प्रति। *दिगम्बर प्रसिद्ध तीर्थस्थलों* में भी कवि यात्रा करने जाता है और भाव चर्चा करता है —

"चन्द्रपुरी अवतार, लखमणा माता मल्हार,
 चन्द्रमा लाछन सार वरु अभिराम मैं।
चरम पूनिमचार चवन हीतलचव
 महासेन नृपचव नवनिधि नाम मैं।
तेव कहइ फिर फिर फटित रतन बिंब
 सांचली है---- ---दिगम्बर ग्राम में।
समयसुन्दर इम तीरथ कहइ वचन
 चन्द्रप्रभ भेटयो हम चारवारि गाम में। ८।

इस प्रकार की विशालहृदयता और उदारता उस समय के महर्षियों में भी विरलता से प्राप्त होती है जैसे कि कवि में थी।

सचमुच में कवि के ऐसी गुणग्राहकता तत्कालीन मुनि-मनों में होती तो आज गच्छवाद' का विकृत स्वरूप हमें देखने को प्राप्त नहीं होता और न समाज की ऐसी करुणदशा ही होती। आज भी हम यदि कवि की इस *गुणग्राहकता* को अपना करके चलें तो निश्चय ही हम विश्व में अपना स्थान बना सकेंगे। अस्तु

गुजरात का दुष्काल और कवि का क्रियोद्धार

कवि के जीवन को करुण और दयनीय स्वरूप प्रदान करने वाला गुर्जर देश का संवत् १६८७ का भयंकर दुष्काल है। इस दुष्काल ने अन्नाभाव के कारण इस प्रकार की दुर्दशा कर दी थी—कि चारों तरफ त्राहि-त्राहि की पुकार मची हुई थी—

> अन्न पा न लाहे अन्न भला भर थया भिखारी
> मूकी दीधउ मान पेट पिण भरइ न भारी
> पमाड़ियाना पांन, केइ वगरी मइ कांटी
> खावे खेजड़ छोड़ शालितुस सबला बांटी।
> अमकरण चुणइ के आइ ठि मैं पीवइ आइ ठि पुसली भरी।
> समयसुन्दर कहइ सत्यासीया यइ अवस्था लई करी ॥८॥

× × ×

> मांटी मु की बहर मुक्या बइरे पणि मांटी
> बेटे मुक्या बाप, चतुर दैतां जे चांटी,
> माई मुकी मइया मइयि पिण मु क्या भाइ,
> अधिको व्हालो अन्न, गइ सहु कुटुम्ब सगाइ।
> परवार मु की मायस घणा परदेशइ गया पाधरा
> समयसुन्दर कहइ सत्यासीया तेही न राख्या आपरा ॥६॥

× × ×

इस दुष्काल ने अपने भयंकर करद हस्त से समाज के रुधिर और मज्जा से यमराज को भी अपनी प्रसन्न किया था—

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया,
सोजो वल्यो शरीर, पछइ पाज मांहे पडिया
कालइ कवण कमाइ कुण उपाडइ किहां काठी
ताणी नाख्या तेह मांहि थइ सगली माटी।
दुरगंधि दसो दिसि ऊछली मडा पड्या दीसइ मुआ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया किण घरइ न पड्या कूकुआ ॥१६॥

× × ×

ऐसी भयंकर अवस्था में जो उपासक देव-गुरु और धर्म के परमपूजारी और श्रद्धालु थे वे भी अपने कर्त्तव्यों से पराङ्मुख हो गये थे। अतः उपासकों के अभावस्वरूप ८४ गच्छ के साधुओं की दशा भी आहार न मिलने के कारण बड़ी विचित्र हो गई थी। देवमंदिर शून्य से हो गये थे —

घर तेडी घणी वार भगवान भा पात्रा भरता
मांग्य ते बहु भाव निरत थया वहिरण निरता;
जिमता अरइ जिमाय की खबर ले कोई
घर फेरा दस पांच करी निठ आपइ कोई।
आपइ दुखइ अणाहूतो ते ऊपर बहु दुख वखाण
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया विहरण नहीं निगुणाण ।१७।

× × ×

पडिकमणउ पोसाल करण को श्रावक आवइ,
देहरा सगला दीठ गीत गंधर्व न गावइ,
शिष्य भणइ नहीं शास्त्र, मुख मूकइ अणबोलइ,
गुरुवंदण गइ रीति छती प्रीत मांहे छोडइ।
वखाण खाण माठा पड्या गच्छ चोरासी एही गति;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया कांई दीधी तइं ए कुमति ।१८।

× × ×

इस सत्यासीया भाग्यशाली ने तो कई आचार्यों को अपना दास बनाया था। कितने गीतार्थों को अपने अधिकार में किया था; कल्पना हो नहीं —

श्री ललितप्रभसूरि, पाटण पूनमिया सुगुरु
प्रभु कडुवा पोसाल, पूज्य वलि पीपलिया खरतर,
गुजराती गुरु वेद, वडउ असमत नइ केसव
शालिवाहियव सूरि कहुं किसो पूरो हिसव।
सिरदार घणेरा सहरना गीतारथ गिणतो नहीं,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया तु हतियारउ साचो सही।।९॥

ऐसी अवस्था में कई साधुओं ने उल्टा काम उठाया था। मावकों की अनिच्छा होते हुये भी अनेकों अनाथ बच्चों को दीक्षित कर जमात बढ़ाई थी। इसी पर कवि व्यंग्य कसता हुआ कहता है—

आपणा वालहा चौज पड्या जे आपणों पेटा
नाखयो नेह शिगार आपइ पिण वेच्या बेटा,
छावर छतीस लाग मूकी नइ मांहइ लीधा
हुंती जितरी हूंस दीध तितराहिज कीधा।
छूकीया घणा मावक किता वलि दीक्षा लाभ वैसाडीया
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तइ कुटुम्ब विछोहा पाडीया।१०।

× × ×

कवि भी इस दुष्काल की मार से बचा नहीं। इधर तो कवि की वृद्धावस्था और इधर शिष्यों द्वारा त्याग ऐसी अवस्था में यह ८४ गच्छ का सर्वमान्य कवि अति-दुर्बल और पीड़ित हो जाता है। फिर भी ऐसा ऐसी कवि अपने शिष्यों के मोह में प्रसित होकर, साधुओं के लिये असाधारणीय शास्त्र पात्र और वस्त्र बेचकर कितना ही काल व्यतीत करता है*। पर हा हतभाग्य! कवि के वे ही शिष्य उसका त्याग कर जाते हैं—

दुःखी थया दरसणी भूख भाजी न समावइ
मावक न करी सार जिण धीरज किम थायइ,
बेसे चीधी वास पूज्य परिगइ परहउ छांडउ

* यह दशा उस समय सर्व साधारण की थी।

पुस्तक पाना वेचि किम तिम अम्हनइ औषाइ।
वस्त्र पात्र वेची करी केलोक तो काल कांढियउ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया गुनइ निपट निरधाटीयउ ।१३।
× × ×

इस प्रकार दुर्भिक्ष से स्वस्थ होने पर कवि अनुभव करता है कि स्वसाधना और परार्थसाधना जो हमारा जीवन का लक्ष्य है, उससे हम दूर होते चले जा रहे हैं। साध्वाचार के प्रतिकूल शिथिलता में पनपते जा रहे हैं जो हमारे साध्यजीवन के लिये सरासर ही घातक है। हमें पुनः उत्थान की तरफ चलकर आदर्शमय बनना होगा। इन्हीं विचारों में अग्रसर होकर कवि वृद्धावस्था में भी सं० १६९१ में शैथिल्य का त्याग कर सुविहित साधुता अपनाते हुये 'क्रियोद्धार' करता है और भावी-समाज के लिये आदर्श की भूमिका छोड़ जाता है।

जीवन की कातरता

यह जीवन का सत्य है कि भौतिकवाद की दृष्टि से मानव की सम्पूर्ण आकांक्षायें कदापि पूर्ण नहीं होती। किसी न किसी प्रकार की कमी रहती ही है और वही कमी जीवन का शल्य बनकर सम्पूर्ण भौतिक सुखों पर पानी फेर देती है तथा जीवन को दुःखी बना देती है। यही दुःखीपना कातरता का स्वरूप धारण कर मनुष्य को दीन भी बना देता है। यही जीवन की एक आकांक्षा कवि जैसे सक्षम व्यक्ति को भी कातर बना देती है।

कवि का जीवन सर्वथा सुखमय रहा है। क्या शारीरिक दृष्टि से क्या अधिकार की दृष्टि से क्या उपाधियों की दृष्टि से क्या सम्मान की दृष्टि से और क्या शिष्य-प्रशिष्य बहुल परिवार की दृष्टि से। कहा जाता है कि कवि के स्वहस्तदीक्षित[१] ४२ शिष्य

[१] दीक्षा तो स्वयं आचार्य देते थे [किन्तु जिनके द्वारा प्रतिबोधित होते थे उन्हीं के शिष्य बनाया करते थे।

थे, जिसमें शायद प्रशिष्यों की संख्या सम्मिलित नहीं है उन शिष्यों में से कई तो शिष्य महा विद्वान्, वादी और प्रतिभा सम्पन्न मेधावी ‡ भी थे। किन्तु इतना होने पर भी कवि को शिष्यों का सुख प्राप्त नहीं हुआ। जिन शिष्यों को योग्य बनाने के लिये कवि ने अपना सर्वस्व त्याग किया गुजरात के सत्यासीया दुष्काल में भी शिष्यों को सुखी रखने के लिये जिसने कोई कसर नहीं रखी जिसने अपनी आत्मा को पतित कर साधु-नियमों का खण्डन कर माता-पिता के समान ही शिष्यों का पुत्रवत् पालन किया था। व्याकरण प्राचीन एवं नव्यन्याय साहित्य और दर्शन का अध्ययन करवा कर, गणनायकों से सिफारिशें कर उपाधियां दिलवाई थीं- और जो समाज एवं गच्छ प्रतिष्ठित यशस्वी माने जाते थे वे ही शिष्य कवि को वृद्धावस्था में त्याग करके चले जाते हैं, सेवा शुश्रूषा भी नहीं करते हैं और जो पास में रहते हैं वे भी कवि की मनोपीड़ा नहीं पहचान पाते हैं तो कवि का हृदय रो उठता है और अनिच्छा होने पर भी बलात् वाणी द्वारा अभिव्यक्त करता हुआ अन्य साधुओं को सचेत करता है कि शिष्य-सम्पत्ति नहीं है तो चिंता मत करो। देखो मैं अनेक शिष्यों का गुरु होता हुआ भी दुःखी हूँ--

चेला नहीं तउ म करउ चिन्ता,
दीसइ घणे चेले घणि दुक्ख।
सन्तान करमि हुआ शिष्य बहुला,
पणि समयसुन्दर न पायउ सुक्ख ॥ १ ॥
केइ मुया गया पणि केइ,
केइ जुया रहइ परदेस।
पासि रहइ त पीड न जाणइ,

‡ देखिये, आगे का शिष्य परिवार अध्याय।

कहियत पसत्त तठ थायइ किलेस ॥ २ ॥
ओड घड़ी बिस्तरी जगत मां,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यन्त ।
पणि एकणि वात रही असूरति,
न कियउ किण चेलइ निश्चिन्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सांभलिज्यो,
देखउ नहीं छु चेला दोस ।
× × ×

इधर वृद्धावस्था उधर दुष्काल से जर्जरित काय और ऐसी अवस्था में भी अपने प्राण प्यारे शिष्यों की उपेक्षा से कवि अत्यंत दुःखी हो जाता है जिसका वर्णन कवि अपने 'गुरु दुःखित वचन' में विस्तार से प्रकट करता हुआ कहता है कि ऐसे शिष्य निरर्थक ही हैं—

"क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीत्वा अपवादतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१।
वंचयित्वा निजात्मानं, पोषिता मृष्टखादितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।२।
लालिता पालिता पश्चान्मातृपितृपरिदृश्य सुरम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।३।
पाठिता दु:खपापेन, कर्मबन्धं विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।४।
गुरुस्थानासुपाख्यात्, सोढा वादं समोहता ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।५।

तपोपि वाहितं कष्टात्, कालिकोत्कालिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता , शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।६।
वाचकादि पदं प्रेम्णा, दापितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।७।
गीतार्थं नाम धृत्वा च, वृहत्क्षेत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।८।
तर्क–व्याकृति–काव्यादि–विद्यायां पारगामिन ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।६।
सूत्रसिद्धान्तचर्चायां, याथातथ्यप्ररूपका ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१०।
वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।११।
ज्योतिर्विद्या चमत्कार, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता , शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१२।
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्याश्च महिमा महान् ।
यदि त न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१३।
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छवाञ्छित ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता', शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१४।
गच्छस्य कार्यकर्त्तारो, हर्त्तारोऽर्थेश्च भूस्पृशाम् ।
यदि त न गुरोर्भक्ता , शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१५।
गुरुर्ज्ञानाति वृद्धत्वे, शिष्या सेवाविधायिन' ।
यदि त न गुरोर्भक्ता', शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१६।

गुरुस्या पालिता नाऽऽज्ञाऽर्हतोऽस्मोऽविदुःखमागमत्।
एषामहो! गुरुर्दुःखी, लोकस्तज्ज्ञापि चेमहि ।१७।*

पराधीनता

यह भी एक जीवन का सत्य है कि मानव अपनी बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था में अपने विशद ज्ञान अधिकार और प्रतिभा के बल पर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होकर जीवित रहता है किन्तु वही वृद्धावस्था में अपने मनको मारकर पुत्रों की इच्छानुसार चलने को बाधित हो जाता है। उसकी सारी योग्यता प्रतिभा और स्वाभिमान का नामोनिशान भी मिट जाता है। देखिये कवि के जीवन को ही। घटना इस प्रकार है—

आचार्य जिनसिंहसूरि के पश्चात् श्रीजिनराजसूरि[1] गच्छनायक बने और जिनसागरसूरि आचार्य बने। जिनसागर

---

* सम्भवतः यह 'दुःखित वचन' वादी हर्षनन्दन को लक्ष्य कर लिखा गया प्रतीत होता है।

[1] आचार्य जिनराजसूरि—बीकानेर निवासी बोहिथरा गोत्रीय श्रेष्ठि धर्मसी के पुत्र थे। आपकी माता का नाम धारलदे था। आपका जन्म नाम रायसिंह था। सं० १६५६ मिगसर सुदि ३ को आपने आचार्य जिनसिंहसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। आपका दीक्षा नाम था राजसमुद्र। आपको उपाध्याय पद स्वयं युगप्रधानजी ने सं० १६६८ में दिया था। आ० जिनसिंहसूरि के स्वर्गवास होने पर आप सं० १६७४ वैशाख शुक्ला सप्तमी को मेड़ता में गच्छनायक आचार्य बने। इसका पट्टमहोत्सव मेड़ता निवासी चोपड़ा गोत्रीय संघवी आसकरण ने किया था। अहमदाबाद निवासी संघपति सोमजी कारित शत्रुंजय की खरतर वसही में सं० १६७५ वैशाख शुक्ला १३ शुक्रवार को

५०० मूर्तियों की स्थापन प्रतिष्ठा की थी। भायणबड पार्श्वनाथ तीर्थ के स्थापक भी आप ही थे। सं० १६७० जेठ बदि ५ को भोपड़ा आसकरण कारापित शान्तिनाथ आदि मन्दिरों की आपने प्रतिष्ठा की थी, (देखें मेरी संपादित, प्रतिष्ठा लेख संग्रह प्रथम भाग) । जेसलमेर निवासी भणशाली गोत्रीय संघपति थाहरु कारित जैनों के प्रसिद्ध तीर्थ लोद्रवाजी की प्रतिष्ठा भी सं० १६७५ मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को आपने ही की थी और आपकी ही निश्रा में सं० थाहरु ने शत्रुञ्जय का संघ निकाला था। कहा जाता है कि अंबिका देवी आपको प्रत्यक्ष थी और देवी की सहायता से ही घंघाणी तीर्थ में प्रकटित मूर्तियों के लेख आपने बांचे थे। आपकी प्रतिष्ठापित सैकड़ों मूर्तियाँ आज भी उपलब्ध हैं। सं० १६९९ आषाढ शुक्ला ९ को पाटण में आपका स्वर्ग वास हुआ था। आप न्याय, सिद्धान्त और साहित्य के उद्भट विद्वान् थे। आपकी रचित निम्न कृतियें प्राप्त हैं—

१ स्थानांग सूत्र वृत्ति (अप्राप्त वक्तव्य मात्र प्राप्त है)
२ नैषध महाकाव्य जैनराजी टीका ग्रं० सं० ३६००० (उत्कृष्ट पाण्डित्यपूर्ण टीका प्रति मेरे संग्रह में)
३ धन्ना शालिभद्र रास सं० १६७८ (सचित्र प्रति मेरे संग्रह में)
४ गुणस्थान विचार पार्श्वस्तवन सं० १६६५
५ पार्श्वनाथ गुणवेली स्तव १६८९ पो० व० ८
६ गज सुकुमाल रास. १६९९ अहमदाबाद (प्रति मेरे संग्रह में)

७. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका बालावबोध
८. चौबीसी
९. बीसी
१० शील बत्तीसी
११ कर्म बत्तीसी
१२ नवतत्त्व स्तबक
१३ [illegible]

सूरि * १२ बारह वर्ष तक आ० जिनराजसूरि के साथ ही रहे। सं० १६८६ में कवि का प्रसिद्ध शिष्य बहुश्रुत, प्रकाण्ड विद्वान् उपाध्याय जैसा यशस्वी वादी हर्षनन्दन के बखेड़े के कारण दोनों आचार्यों में मनोमालिन्य हुआ। फलस्वरूप अलग अलग हो गये। वादी हर्ष-नन्दन ने जिनसागरसूरि का पक्ष लिया था क्योंकि उनका वह पक्ष लेता रहा है। अतः कवि को भी प्रमुख आ० जिनराजसूरि का साथ छोड़कर अपने शिष्य के हठाग्रह से पराधीन हो उसके मतानुसार ही चलना पड़ा। यहीं से खरतरगच्छ की एक 'आचार्य शाखा' का प्रादुर्भाव हुआ। हाय रे वार्धक्य! तेरे कारण ही कवि जैसे समदर्शी विद्वान् को भी एक पक्ष स्वीकार करना पड़ा।

---

* जिनसागरसूरि—बीकानेर निवासी बोहिथरा गोत्रीय शाह वच्छराज और मृगादे माता की कुक्षि से सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रवि अश्विनी नक्षत्र में इनका जन्म हुआ था। जन्म नाम था चोला। सं० १६६१ माघ सुदि ७ को अमरसर में जिनसिंहसूरि ने आपको दीक्षा दी। दीक्षा महोत्सव श्रीमाल थानसिंह ने किया था। युगप्रधानजी ने बड़ी दीक्षा देकर इनका नाम सिद्धसेन रखा था। इनके विद्यागुरु थे उपाध्याय समयसुन्दरजी के शिष्य वादी हर्षनन्दन। सं० १६७४ फागुण सुदि ७ को मेड़ता में संघपति आसकरण द्वारा कारित महोत्सव पूर्वक आप आचार्य बने। जिनराजसूरि के साथ ही आप शत्रुंजय खरतर वसही की प्रतिष्ठा के समय मौजूद थे। १२ वर्ष तक आप जिनराजसूरि के साथ ही रहे। किन्तु सं० १६८६ में किंचित् मतभेद एवं वादी हर्षनन्दन के आग्रह के कारण आप पृथक् हुये। तब से आपकी शाखा आचार्य शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपने अहमदाबाद में ११ दिन का अनशन कर सं० १७२० ज्येष्ठ कृष्णा ३ को स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया था।

आप बड़े ही मनस्वी और श्रेष्ठ संयमी थे तथा आपकी

प्रसिद्धि भी अत्यधिक फैली हुई थी। इसके सम्बन्ध में कवि स्वयं उल्लेख करता है:—

"सोलह पोहर मठा रहइ रे, भाषइ सूत्र सिद्धान्त।
राति उभा काउसग्ग करइ रे, ध्यान धरइ एकांत।। ४।"

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४१३]

"श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे श्रीविक्रमे गुर्जरे,
पट्टायां मरुनेर-मेदिनीतटे, श्रीमद्पाटे स्फुटम्।
श्रीजाबालपुरे च योधनगरे श्रीनागपुर्यां पुन,
श्रीमद्ब्रह्मपुरे च वीरमपुरे, श्रीसत्यपुर्यामपि ।१।
मूलत्राणपुरे मरोट्टनगरे देरावरे पुग्गले
श्रीउच्चे किरहोर-सिद्धनगरे धींगोटके सच्चले।
श्रीलाहोरपुरे महाजन-रिणी-श्रीआगराख्ये पुरे,
सांगानेरपुरे सुपर्वसरसि श्रीमालपुर्यां पुनः ।२।
श्रीमत्पत्तननाम्नि राजनगरे श्रीस्तम्भतीर्थे तथा,
द्वीपश्रीभृगुकच्छ-वडनगरे सौराष्ट्रके सर्वतः।
श्रीवाराणपुरे च राधनपुरे श्रीगुर्जरे मालवे

।३।

सर्वत्रप्रसरी करोति सततं सौभाग्यमाभाग्यतः,
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता भाग्याधिकत्वं भृशम्।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता येषां यशोवादता,
सूरिश्रीजिनसागरा विजयिनो भूयासुरते चिरम् ।४।

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४००]

स्वर्गवास

कवि वृद्धावस्था में शारीरिक क्षीणता के कारण संवत् १६६६ से ही अहमदाबाद में स्थायी निवास कर लेते हैं। वहीं रहते हुए आत्म-साधना और साहित्य-साधना करते हुए संवत् १७०३ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को इस नश्वर देह का त्याग कर समाधि पूर्वक स्वर्ग की ओर प्रयाण कर जाते हैं। इसी का उल्लेख कवि राज सोम अपने समयसुन्दर" गीत म करता है —

"अणसण करि अणगार संवत् सतरहो सय बीड़ोतरे।
अहमदाबाद मम्झर परलोक पहुंता हो चैत्र सुदि तेरसै।"

किन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि सर्वगच्छ-मान्य कवि के स्वर्गारोहण स्थान पर अहमदाबाद के उपासकों ने स्मारक बनवाया था या नहीं? सम्भव ही नहीं निश्चित है कि कवि का स्मारक अवश्य बना होगा किन्तु अब प्राप्त नहीं है। सम्भव है उपेक्षा एवं सारसम्भार के अभाव में नष्ट हो गया हो। यदि कहीं हो भी तो शोध होनी चाहिये। अस्तु,

वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन टीका में उल्लेख करता है कि गढाळय (नाल, बीकानेर) में कवि की पादुका स्थापित है—

"श्रीसमयसुन्दराणां गडाल्लये पादुके वन्दे।४।"

शिष्य परिवार

एक प्राचीन पत्र के अनुसार ज्ञात होता है कि कवि के ४२ वयाधीम शिष्य थे। कवि के ग्रन्थों की प्रशस्तियों को देखने से कुछ ही शिष्यों और प्रशिष्यों के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। अतः अनुमानतः आपके शिष्य-प्रशिष्यादिकों की संख्या विपुल ही थी। कौन-कौन और किस किस नाम के शिष्य थे? उल्लेख नहीं मिलता। कतिपय ग्रन्थों के आधार पर कवि की परम्परा का कुछ आभास हमें होता है —

महोपाध्याय

- वाची हर्षनंदन
  - जयकीर्त्ति
    - रायसोम
      - ज्ञानक्षम
        - समयनिधान
          - मुरारि
            - भीमजी
              - बाघाजी
                - हजारीमल
            - सारंगजी
  - दयाविजय
- सहजविमल
  - हरिराम
- मेघविजय
  - हर्षकुशल
    - हर्षनिधान
      - हर्षसागरसूरि
        - नयणसी
        - प्रतापसी
      - ज्ञानतिलक
        - विनयचन्द्रकवि
      - पुण्यतिलक
        - महो० पुण्यचंद्र
          - पुण्यविलास
            - वा० पुण्यशील
            - मानचंद्र

* सूरजरामजी से चन्देचंदजी तक की परंपरा, आचार्य शाखा भंडार, बीकानेरस्थ

समयसुन्दर

- मेघकीर्ति
  - मेघराज
    - कीर्तिकुशल
      - कीर्तिनिधान
        - कीर्तिसागर
  - रामचंद
    - उ० कमलोदास
      - वा ठाकुरसी
        - वा. कीर्तिधमन (कुशालो)
          - अमरविमल (आसकरण)
            - मतिविलास
              - जयराज
                - कस्तूरचन्द्र
                  - ईसराज
            - कल्याणचन्द्र
            - आलमचन्द
              - धार्यचन्द
                - चतुर्भुज
                  - लालचन्द
                    - हर्षचंद
                      - अमरचन्द
                        - चुन्नीलाल †
                    - गुलाबचन्द
                      - जीवणजी
                        - भमचन्द
              - भवानीराम
                - भगवानराम
                  - माणकचन्द
                    - मनसुखजी
                      - दोलतजी
                        - चुन्नीलालजी
                  - कपूरचन्द
                    - मनसुख
                      - भागचन्द
                      - रामपाल *
                - कपूरचंद
          - भीमजी
            - सूरदासजी*
              - माईदास
                - जयचन्द
                  - प्रतापसी
                    - धर्मदास
                      - हरेचन्द
- महिमासमुद्र
  - विद्याविजय
    - वीरपाल
  - धर्मसिंह
- सुमतिकीर्ति
- माईदास

*[illegible] पर से दी गई है। † चुन्नीलालजी कुछ वर्षों पूर्व विद्यमान थे। * बड़े

कवि की शिष्य परंपरा में अनेकों उद्‌भट विद्वान मौलिक साहित्य-सर्जन कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध करने वाले हुये हैं जिनमें से कुछ विद्वानों का संक्षिप्त उल्लेख कर देना यहाँ अप्रासंगिक न होगा।

१ वादी हर्षनन्दन–कवि के प्रधान शिष्यों में से हैं। वादीजी गीतार्थ और उद्‌भट विद्वानों में से हैं। कवि स्वयं इनके सम्बन्ध में उल्लेख करता है:—

"प्रक्रिया-हैममाष्यादि-पाठकैश्च विशोधिता।
हर्षनन्दनवादीन्द्रैः, चिन्तामणिविशारदैः ॥१२॥"

[कल्पलता प्रशस्ति]

"सुशिष्यो वाचनाचार्यस्तर्कव्याकरणादिवित्।
हर्षनन्दनवादीन्द्रो, मम साहाय्यदायकः।"

[समाचारी शतक प्रशस्ति]

इसी प्रकार की योग्यता का अङ्कन कवि ने कतिपय पद्यों द्वारा 'गुरुदुःखित वचनम्' में भी किया है। वादी ने कवि कृत कल्पलता, समाचारी शतक सप्तस्मरण टीका एवं द्रौपदी चतुष्पदी के संशोधन एवं रचना में सहायता दी थी। कवि ने हर्षनन्दन के लिये ही मगलवाद की रचना की थी।

वादी प्रणीत निम्नलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं:—

मान में पो० सबली. (मिआमस्टेट) में विद्यमान हैं। और यतिवर्य ब० श्री नेमिचन्द्रजी (बाड़मेर) के कथनानुसार 'ब० समयसुन्दरजी की शाखा में भारतचन्द्रजी हीराचन्द्रजी म्हारा में वे और मालकजी बच्छराजजी, सुगनजी भवानीदास, रूपजी, अमरचन्दजी, हेमराजजी दौलतजी आदि कईयों का हमने देखा है।' किन्तु ये किनकी शाखा में थ ज्ञात नहीं।

(१) शत्रुंजय चैत्य परिपाटी स्तव र० सं० १६७१
(२) मध्याह्न व्याख्यान पद्धति र० सं० १६७३ भाद्रपदवदी पाटण [त्रिकरात्मपदखंडेकाब्दे] ग्र० ६००१
(३) गौडीस्तव र० सं० १६८३
(४) ऋषिमण्डल वृत्ति र० सं० १७०४ वसंतपंचमी बीकानेर कर्मसिंह राज्ये शिष्य दयाविजय पठनार्थ
(५) स्थानांग वृत्तिगत गाथा वृत्ति र० सं० १७०५ माघ अहमदाबाद ग्र० ११००० सुमतिकल्लोल सह
(६) उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति र० सं० १७११ भाद्रपदवदी अहमदाबाद ग्र० १८२६१ प्रथमादर्श लेखक शिष्य दयाविजय.
(७) आदिनाथ व्याख्यान.
(८) पार्श्व नेमि चरित्र
(९) ऋषिमण्डल बालावबोध
(१०) आचार दिनकर लेखन प्रशस्ति
(११) उपशम कर्म सझाय (प्रति तेरापंथी सभा, सरदार शहर)
(१२) जिनसिंहसूरि गीत आदि

वादी की मध्याह्न व्याख्यान पद्धति ऋषि मण्डल टीका, स्थानांग वृत्ति गत गाथा वृत्ति और उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति ये चारों ही ग्रन्थ बड़े ही महत्व के हैं।

मध्याह्न व्याख्यान पद्धति अर्थात् शास्त्रीय परिपाटी के अनुसार प्रातः आगमों का वाचन होता ही है। मध्याह्न में जनता को मनोरंजन के साथ उपदेश प्राप्त हो सके—इसी लक्ष्य से इसका प्रणयन किया गया है। वादी इस ग्रन्थ के प्रति गर्वोक्ति के साथ कहता है कि 'मतिमन्दाक्षी हो या अत्यन्त सुस्वर हो या दुःस्वर, गीतार्थ हो या अगीतार्थ, पुरुषार्थी हो या प्रमादी संकोचशील हो या धृष्ट

हो, सौभाग्यशाली हो या दुर्भागी, वक्ता सभा के समक्ष इन प्रबन्धों को निश्चित होकर वाचन करे।—

> सुमेधाऽल्पमेधा वा, सुस्वरो दुःस्वरोऽपि वा ।
> अगीतार्थः सुगीतार्थः, उद्यमी अलसोऽपि वा ॥१४॥
> लज्जालुर्धृष्टचित्तो वा, सुभगो दुर्भगोऽपि वा ।
> सभाप्रबन्ध सर्वोऽपि, निश्चिन्तो वाचयत्विदम् ॥१५॥

यह ग्रन्थ १८ विभाग-अध्यायों में विस्तार के साथ लिखा गया है।

ऋषिमण्डल टीका ४ विभागों में विभाजित है। यह टीका अत्यन्त ही विस्तार के साथ लिखी गई है। इसमें दृष्टान्तों की भरमार है जिसका अनुमान निम्नतालिका से हो जायगा। उदाहरणों की विपुलता को देखते हुये हम इसे टीका की अपेक्षा एक दृष्टान्त कोष कह दें तो कोई अत्युक्ति न होगी। कथानकों की तालिका इस प्रकार है—

प्रथम विभागः—

१ भरत	२. बाहुबलि	३ सूर्ययशा
४ महायशा	५. अतिबल	६ बलभद्र
७ बलवीर्य	८. जलवीर्य	९. कीर्तिवीर्य
१० दण्डवीर्य	११ सिद्धिदण्डिका	१२. सगर चक्रवर्ती
१३ मघवा चक्रवर्ती	१४ सनत्कुमार चक्र०	१५. शान्ति ,,
१६ कुन्थु ,,	१७ अर ,,	१८. श्री पद्म ,,
१९. हरिषेण ,,	२० जय ,,	२१ ब्रह्मदत्त ,,
२२. अचल बलदेव	२३ विजय बलदेव	२४ बलभद्र बलदेव
२५ सुप्रभ ,,	२६ सुदर्शन ,,	२७ आनन्द ,,
२८ नन्दन ,,	२९ रामचन्द्र ,,	३० बलदेव ,,

तृतीय विभाग सम्मुख न होने के कारण हम नहीं कह सकते कि इसमें कौन-कौन सी और कितनी कथायें हैं। इन कथाओं के लिये भी वादी का कथन है कि "ये कथायें विकथायें नहीं हैं, अपितु जिन महापुरुषों के नाम स्मरण से ही चिर सञ्चित पापों का नाश होता है, वैसी ही सार-गर्भित कथायें हैं —

चिरपापप्रणाशिन्यः, प्राज्ञनिर्ग्रन्थसत्कथा ।
विकथा-वर्जितो याथा, कथयामि निरन्तरम् ।४।

स्थानांगवृत्तिगत गाथावृत्ति, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के विद्वान् शिष्य वाचनाचार्य सुमतिकल्लोल और वादी इस युग्म ने आचार्य अभयदेव द्वारा स्थानांग सूत्र की टीका में 'कर्मग्रन्थादि प्रकीर्ण साहित्य, भिक्षु कि एवं भाष्य साहित्य, देवेन्द्रस्तव विशेषणवती षट् त्रिंशिकायें सप्ततिकायें संग्रहणी आदि, पंचाशक सिद्धप्राभृत सम्मतितर्क, आदि शास्त्र और ज्योतिष संगीत शिक्षा प्राकृत कोष एवं सूक्तियें आदि सम्बन्धित विषयों के जो अवतरण हजार से ऊपर दिये हैं, वे अस्पष्ट क्लिष्ट हैं, अतः उन पर विशिष्ट प्रकाश डालते हुये विपुल परिमाण में यह टीका रची है —

कर्मग्रन्थप्रकीर्णकव्यवहारभिक्षुकिभाष्योत्तराः ।
देवेन्द्रस्तवसद्विशेषणवती प्रज्ञप्तिकल्पा भेयो (?)।
अङ्गोपाङ्गकसूत्रसत्कमिलिता' षट्त्रिंशिका-सप्तति',
सिद्धप्पद् संग्रहणीसमप्रकरणाः पञ्चाशिका संस्थिताः ।८।
सिद्धप्राभृतसम्मतीप्रकरणे ज्योतिष्क – सङ्गीतक–
शिक्षा-प्राकृत-कोष-सूक्तलिखिता गाथाः सहस्रात्पराः ।

सत्रालापकसूत्रितार्थविवृतौ सत्साधिभूता धृता,
प्रापस्ता कठिनास्सदर्थविवृतौ टीका विना दुर्घटा ।६।

उत्तराध्ययन टीका भी साहित्यिक दृष्टि से अच्छी महत्व रखती है। इसकी प्रशस्ति में वादी स्वयं अपने को नव्यन्याय और महाभाष्य का विशारद कहता है—

तच्छिष्यमुख्यदक्षेण, हर्षनन्दन वादिना ।
चिन्तामणि–महाभाष्य–शास्त्रपारप्रदृश्वना ।१५।

इन चारों ही कृतियों की भाषा अत्यन्त प्रौढ़ एवं प्राञ्जल होते हुये भी सरल–सरस प्रवाह युक्त है। वादी की लेखिनी में चमत्कार यह है कि पाठक स्वतः ही आकृष्ट होकर मननशील हो जाता है।

(क) वादी हर्षनन्दन के शिष्य वाचक जयकीर्ति गणि जैन साहित्य के साथ साथ ज्योतिष शास्त्र के भी अच्छे निष्णात थे। कवि 'दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि' में स्वयं कहता है कि 'यह ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् है और इस की सहायता से इस ग्रन्थ की मैंने रचना की है:—

"ज्योतिश्शास्त्र विचक्षण-वाचक-जयकीर्ति-दत्तसाहाय्यैः"

इनकी प्रणीत निम्न रचनायें प्राप्त हैं—

(१) पृथ्वीराज वेलि बालावबोध सं० १६८६ बीकानेर
(२) षडावश्यक बालावबोध, सं० १६९३
(३) जिनराजसूरि रास

(ख) वादी हर्षनन्दन के द्वितीय शिष्य दयाविजय भी अच्छे विद्वान् थे। इन्हीं के पठनार्थ वादीजी ने ऋषिमण्डल

टीका और उत्तराध्ययन टीका की रचना की है। उत्तराध्ययन टीका का प्रथमादर्श भी इन्हीं ने लिखा था।

"दयाविजयशिष्यस्य, वाचनाय चिरम्भव।"
[भ० टी०]

"प्रथमादर्शोऽलेखि, दयाविजय साधुना।"
[उ० टी०]

(ग) वाचक जयकीर्ति के शिष्य राजसोम प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं—

(१) श्रावकाराधना भाषा सं० १७१५ ले० मु० नोखा
(२) इरियावही मिथ्यादुष्कृत बालावबोध

(घ) वाचक जयकीर्ति के पौत्र शिष्य समयनिधान द्वारा सं० १७३१ अकबराबाद में रचित सुसढ चतुष्पदी प्राप्त है।

२. सहजविमल और मेघविजय के पठनार्थ कवि ने रघुवंश टीका नव तत्त्व टीका और जयतिहुअण स्तोत्र टीका की रचना की थी।

(क) सहजविमल के शिष्य हरिराम के निमित्त कवि ने रघुवंश टीका और वाग्भटालंकार टीका की रचना की है और इसे अपना पौत्र 'पाठयता पौत्र हरिरामं" [रघु टी] बताया है। निश्चिततया नहीं कहा जा सकता कि हरिराम किसका शिष्य था सहजविमल का या मेघविजय का? और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हरिराम यह नाम इनका पूर्वावस्था का था या दीक्षितावस्था का? अथवा दीक्षितावस्था का नाम हर्ष कुशल था? यहां इनका नाम सहजविमल के शिष्य रूप में अनुमानतः ही लिखा गया है।

३ मेघविजय कवि का प्रिय शिष्य है। स्वयं कवि ने सं० १६८७ में 'विशेष शतक' की प्रति लिखकर इसको दी थी। कवि इस पर प्रसन्न भी अत्यधिक था। इसने दुष्काल जैसे समय में भी कवि का साथ नहीं छोड़ा था। यही कारण है कि कवि इसकी प्रशंसा करता हुआ लिखता है—

"मुनि मेघविजयशिष्यो, गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्ती च।
तस्मै पाठनपूर्व, दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा ॥६॥
[विशेषशतक लेखन प्रशस्ति]

(क) मेघविजय के शिष्य हर्षकुशल अच्छे विद्वान् थे। जैसे कवि को 'गुरुभक्त' मेघविजय अत्यन्त प्रिय थे, तो वैसे उनसे भी अत्यधिक पौत्र हर्षकुशल कवि को प्रिय थे। ऐसा मालूम होता है कि वृद्धावस्था में कवि (दादागुरु) की इसने प्राण-पण से सेवा की होगी। यही कारण है कि कवि वृद्धावस्था में भी स्वयं अपने जर्जर हाथों से लिखित माघकाव्य तृतीय सर्ग टीका, रूपकमाला अवचूरि आदि पचासों महत्व के ग्रन्थ इसको देता है जैसा कि कवि लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों जाना जाता है। इसने 'द्रौपदी चतुष्पदी' की रचना में भी कवि को पूर्ण सहायता दी थी—

वाचक हर्षनन्दन वलि, हर्षकुशल सानिधि कीधा रे।
लिखन शोधन सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करी दीधी रे।६।
[द्रौ० चौ० ढ० सं० ७ की ढाल]

इनकी स्वतंत्र रचना केवल 'चौसी' ही प्राप्त है।

(ख) हर्षकुशल के पौत्र आचार्य हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ कार्तिक कृष्णा नवमी को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लायब्रेरी बीकानेर) प्राप्त है।

(ग) हर्षकुशल के द्वितीय पौत्र ज्ञान तिलक रचित १-४ स्तोत्र और स्वयं लिखित फुटकर संग्रह का एक गुटका (मेरे संग्रह में) प्राप्त है और ज्ञान तिलक के शिष्य विनयचन्द्र गणि अच्छे कवि थे। इनकी प्रणीत निम्न-लिखित कृतियाँ प्राप्त हैं:—

(१) उत्तमकुमार चरित्र र० सं० १७५२ फा० शु० ५ पाटण (२) बीसी र० सं १७५४ राजनगर (३) ग्यारह अंग सज्झाय, र सं १७५५ (४) रातु-क्षय स्तव र० सं० १७५५ पो शु० १० (५) मयन-रेखा रास (?), (६) चौबीसी (७) रोहूक कथा चौपाई (८) रहनेमि स्वाध्याय, (९) नेमि राजुल बारहमासा

(घ) हर्षकुशल के तृतीय पौत्र पुण्यतिलक प्रणीत 'नरपति जय चर्या यन्त्रोद्धार टिप्पणक (जिनहरिसागर सूरि भ० लोहावट) प्राप्त है। इन्हीं पुण्यतिलक के पौत्र वाचक पुण्यशील द्वारा सं० १८१० में लिखित 'महाराजकुमार चरित्र चतुष्पदी' (पूज्यजी का संग्रह, बीकानेर) प्राप्त है।

४ मेघकीर्ति के शिष्य रामचन्द्र प्रणीत एक बीसी प्राप्त है। और सं १६८८ में लिखित सिंगासुरासन की प्रति भी (ब० अगरचन्दजी सं० बीकानेर) प्राप्त है। इन्हीं की परम्परा में अमरविमलजी के तृतीय शिष्य आलमचन्दजी एक श्रेष्ठ कवि थे। इनकी निम्न रचनायें प्राप्त हैं:—

(१) मौन एकादशी चौपाई र० सं० १८१४ माघ शु० ५ रवि० मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में) (२) सम्यक्त्व कौमुदी र० सं० १८२२ मि० सु० ४ मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में), (३) जीवविचार स्तव, र० सं० १८१५ वै० शु० ५ रवि मकसूदाबाद, (४) त्रैलोक्य प्रतिमा स्तव, र० सं० १८१७ मा० शु० २।

इन्हीं अमरविलासजी के पौत्र शिष्य वाचक जयरत्न के शिष्य कस्तूरचन्द्र गणि एक प्रौढ़ विद्वानों में से थे। इनकी रची हुई केवल दो ही कृतियां प्राप्त हैं–

(१) षड्दर्शन समुच्चय बालावबोध, सं० १८६४ वै० ब० २ शनि बीकानेर, (इसकी प्रति यति श्री सुकन चन्द्रजी के संग्रह, बीकानेर में प्राप्त है।)

(२) आचारांगसूत्र दीपिका, जिनहेमसूरि राज्ये, सं० १८६६, प्रारम्भ जयपुर और समाप्ति इन्दौर ग्रं० १८००० कृति अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण है।

(प्रेस कॉपी मेरे संग्रह में)

मेघकीर्ति की परम्परा में कीर्तिनिधान के शिष्य कीर्तिसागर लिखित (१) रत्नपरीक्षा ले० सं० १७२२ (पुष्पी की सं० बी०) और (२) स्याद्वादमंजरी ले० सं० १७२५ मेड़ता (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त हैं।

५ महिमासमुद्र के लिये कवि ने सं० १६६० उच्चानगर में श्रावकाराधना की रचना की थी।

(क) महिमासमुद्र के शिष्य धर्मसिंह द्वारा सं० १७०८ में लिखित आवश्यक चतुष्पदी (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त है।

(ख) महिमासमुद्र के पौत्र श्रीविद्याविजय के शिष्य वीरपाल द्वारा सं० १६९६ में लिखित जिनचन्द्रसूरि निर्वाण रास एवं आलीजा गीत (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त हैं।

साहित्य—सर्जन

कविवर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धारक एक उद्भट विद्वान् थे। केवल वे साहित्य की चर्चा करने वाले भाषा के विद्वान् ही नहीं थे अपितु वे थे प्रकाण्ड-पाण्डित्य के साथ लेखनी के धनी भी। कवि ने व्याकरण, अनेकार्थी साहित्य, साहित्य, लक्षण, छन्द, ज्योतिष, पादपूर्ति साहित्य, चार्चिक, सैद्धान्तिक और भाषात्मक गेय साहित्य की जो मौलिक रचनायें और टीकायें ग्रथित कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध कर जो भारतीय वाङ्मय की सेवा की है, वह वस्तुतः अनुपमेय है और वर्तमान साधु-समाज के लिये आदर्शभूत अनुकरणीय भी है। कवि की कृतियाँ निम्न हैं। जिनकी तालिका विषय-विभाजन के अनुसार इस प्रकार है—

व्याकरण— सारस्वत वृत्ति* सारस्वत रहस्य लिंगानुशासन अवचूर्णि¶, अनिट्कारिका‡

---

* कवि स्वयं लिखित सारस्वतीय शब्दरूपावलि में उल्लेख करता है—

"सारस्वतस्य रूपाणि, पूर्वं ह्येरलीलिखत् ।
स्तम्भतीर्थे मधौ मासे, गणिः समयसुन्दरः ॥१॥"

कवि की यह कृति अभी तक अज्ञात ही है। शोध होनी चाहिये।

¶ कवि स्वयं लिखित पुष्पिकान्त तक ही पूर्ण है।

‡ प्रति अ० जै० ग्र० में है।

सारस्वतीय शब्द रूपावली † वेदुषपद विवेचना φ।

अनेकार्थी साहित्य— अष्टलक्षी१, मेघदूत प्रथम श्लोक के तीन अर्थ द्रुपदराग गर्भित पार्श्व(?)पुर मण्डन चन्द्रप्रभजिन स्तवनम्२, चतुर्विंशति तीर्थंकर-गुरुनाम गर्भित श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्३ ६ राग ३६ रागिणी नाम गर्भित श्री जिन चन्द्रसूरि गीतम्४ पूर्व कवि प्रणीत श्लोक द्वयर्थकरण अमीझरा पार्श्व स्तवन५ श्री वीतराग स्तव-छन्द जातिमयम्।

साहित्य— रघुवंश टीका६, शिशुपाल वध तृतीयसर्ग

† स्वयं लिखित प्रति अ० जै० म० में है।

φ "सं १६८४ वर्षे अक्षयतृतीयायां श्रीविक्रमनगरे श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैर्व्यलेखि।" अ० जै० म०

१ "श्रीविक्रमनृपवर्षात् समये रसजलधिरागसोम (१६४६) मिते। श्रीमल्लाभपुरे'स्मिन् वृत्तिरियं पूर्णतां नीता ॥४२॥"

२ 'संवत् १६७१ माहवा सुदि १२ कृतम्' (कुसुमाञ्जलि पृ० ५६)

३ "सूर्याचाररसेन्दुसंवति नुति श्री स्तम्भनस्य प्रभो!" (कुसुमाञ्जलि पृष्ठ १८२)

४ 'सोलसइ बावन विजयदसमी दिने सुरगुरु वार। अंबरपास पसायइ अंबावती मझार ॥' (कुसुमाञ्जलि पृ० ३८६)

५ कुसुमांजलि पृ० १६१

६ संवत् १६९२ सम्मात'

"लोचनमह(?)श्रृङ्गार वर्षे मासे च माधवे। स्तम्भतीर्थेषु रेखा(?)पाटकमतिमध्ये ।७।
× × ×
पाठका पौत्र हरिरामम ।६।"

टीका[७] ।

भाषा काव्य पर संस्कृत टीका — रूपकमाला अवचूरि[८] ।

पादपूर्ति साहित्य:— श्रीजिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य (रघुवंश तृतीय सर्ग पादपूर्ति), ऋषभ भक्तामर (भक्तामरस्तोत्र पादपूर्ति) ।

लक्षण — भावशतक[९], वाग्भटालङ्कार टीका[१०] ।

छन्द— वृत्तरत्नाकर वृत्ति[११]

न्याय— मङ्गलवाद[१२]

---

७ "इति श्रीमाघकाव्यस्य, सर्गे किल तृतीयके ।
वृत्तिः सम्पूर्णतां प्राप्ता कृता समयसुन्दरैः ।१।"
स्वयं लिखित प्रति सुराणा लायब्रेरी चूरू ।

८ "संवति गुणरसदर्शनसोमप्रमिते च विक्रमाब्दे ।
कार्तिक शुक्ल-दशम्यां विनिर्मिता स्व-पर-शिष्यकृते ।४।"

९ 'शशिसागररससमुद्रकसंवति विहितं च भावशतकमिदम्'

१० 'अहमदाबादे नगरे, करनिधिशृङ्गाररससङ्ख्याब्दे ।२।
× × ×
विमलवर्धनापन्न पाठे, हरिरामसुने कृते ।३।"

११ "संवति विधिमुख-निधि-रस-शशि (१६६४) सङ्ख्ये दीप-पर्व दिवसे च ।
'जालोर' नामनगरे लूणीया कर्मचन्द्रस्थाने ॥ २ ॥"

१२ 'कृता लिखिता च संवत् १६९१ वर्षे आषाढ सुदि १० दिने श्रीजालोरदुर्गे चातुर्मासस्थितेन श्री युगप्रधान श्री ५ श्रीजिनचन्द्र सूरिशिष्य मुख्यपण्डितसकलचन्द्रगणिशिष्येण उ० समयसुन्दरगणिना पं० हर्षनन्दन-मुनि-कृते ।'

कथा-साहित्य— कालिकाचार्य कथा२१ कथा-कोष२२, महावीर २७ भव द्रौपदी संहरण, देवगुम्फचतुष्पदी कथानक।

संग्रह-साहित्य— गाथा सहस्री२३,

जैनागम एवं प्रकरण साहित्य—कल्पसूत्र टीका२४, दशवैकालिक टीका२५ नवतत्त्व शब्दार्थवृत्ति२६ दण्डक वृत्ति२७ चत्तारि परमंगाणि व्याख्या२८ अल्पबहुत्वगर्भित स्तव स्वोपज्ञवृत्ति सह, चातुर्मा-

२१ "श्रीमद्विक्रम संवति रस-मुनि-शृङ्गार-संख्यके वहसि।
श्रीवीरमपुरनगरे, राउलनृपतेजसी राज्ये ॥१॥

२२ 'सं० १६६७ वर्षे भीमरोहे वा० समयसु दरेण' ।

२३ "ऋतु-वसु रस-शशि (१६८६) वर्षे विनिर्मितो विजयतां चिर मम्ना।
व्याख्यानपुस्तकेषु, व्याख्याने वाच्यमानोऽसौ ॥६॥"

२४ "लूणकर्णसरे ग्रामे प्रारम्भा कर्तुं मादरात्।
वर्षमध्ये कृता पूर्णा मया चेयं रिणीपुरे ॥१७॥ (१६८५-८६)"

२५ "सवत् १६६१ कम्मात"
"चन्द्रकुल-समयसुन्दरगणिना चक्रे च स्तम्भतीर्थपुरे दशवैकालिकटीका शशिनिधिशृङ्गारमित वर्षे।"

२६ "सवत्वसुगजरसशशिमिते च दुर्भिक्ष-कार्तिके मासे।
अहमदावादे नगरे पठैक हाजामिच प्रोल्यां ॥१॥"

२७ "संवतिरसनिधिशृङ्गारमुखसोममिते नभसि कृष्णपक्षे च।
अमदावादे हाजा पटेल पोळीस्थ शालायाम् ॥१॥

२८ "मवीन शिष्यस्य पूर्वे अकृत व्याख्यामस्य हितकृते।
सवत १६८० फा० शु द दिने श्रीपत्तने ॥"

भाषा टीका— षडावश्यक बालावबोध[८] ।
भाषा रास-साहित्य— शांब प्रद्युम्न चौपाई[१५], दानादि चौढालिया[१०]
चार प्रत्येक बुद्ध रास[११] मृगावती रास[१२],
सिंहलसुत प्रिय मेलकरास[१३] पुण्यसार

३८ "श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे, पूर्वे सदा वासित-
प्रस्तारप्रचुरा समीकृत चतुर्मास्यां मया पाठिताम् ।२।
× × ×
कल्याणाभिधराउल क्षितिपतौ राज्यश्रियं शासति
श्रीमद्विक्रमभूपतेस्त्रिवसुषट्गुणी सत्सर वत्सरे ।"
३९ श्री संघ सुजगीस ए, हीयडइ म हरख अपार ।
समयसुन्दर पास पसाउलइ, कम्माणत सुखकार ॥
सुखकर संवत् सोल पगुणसट्टि विक्रम दशमी दिनइ ।
एक वीस ढाल रसाल ए प्रत्य रच्यउ सुन्दर शुभ मनइ ॥
४० ' सोल से बासठ समें रे, सांगानेर मझार ।
पद्मप्रभु सुपसाउले रे, एह भणयो अधिकारो रे । धर्म हिये धरो"
४१ "सोलइ चोसठि समइए, जेठ पूनिम दिन सार
चउथउ खंड पूरउ थयउ ए, आगरा नयर मझार
विमलनाथ सुपसाउलइ ए, सानिधि कुशल सूरिंद
च्यारे खंड पूरा थया ए, पाम्या परमानन्द" ।
४२ सोलसइ अडसठी वरष हुई चउपइ थया हरषे मैं
मृगावती चरत्र कम्प किहुं सरखे पयो आनन्द अमरदे मैं ।३१।
× × ×
सदर बड़ा सुलताण विराजित, जयन सुपरयासय वेला के
सुमतिनाथ श्री पासजिनेसर सुखदायक सुखकाल मैं ।८२।"
४३ "संवत् सोल चउपरि मेडता नगर मझारि
प्रिय मेलक तीरथ चोपड़ रे, कीधी दान अधिकार ।२४।
कवरो मानक मोतीयी रे, जसलमेरि वासी
चतुरे चोपाड़ी विधियि चोपड़ रे, मूल आग्रह मूल्याण ।२५।

रास४४, नल दमयन्ती चौपाई४५, सीताराम चौपाई४६ वस्कलचीरी रास४७, शत्रुञ्जय रास४८, वस्तुपाल-तेजपाल रास४९ बावचा

---

४४ "संवत सोल बिहुत्तरइ, मर मादव मास ।
ए अधिकार पूरउ थयो, समयसुन्दर सुख वास ॥"

४५ "दिसकालिक कही पहली टीका सात हजार ।
दसविकालिक मूल सूत्रनी, महाविदेह क्षेत्र मझार ॥
× × ×
संवत सोल बिहुत्तरे मास वसंत आणंद ।
नगर मनोहर मेड़तो जिहाँ वासुपूज्य जिणंद ॥
× × ×
स्वमध्य पभणइ समयसुन्दर कीयो आमह नेतसी
चउपइ नल दवदन्ती केरी चतुर माणस चितवसी ।

४६ "त्रिगइमार नें सातसे माम्हने सह गम्बजुं मानो रे,१६
× × ×
खरतर गच्छ मांहि दीपता श्री मेड़ता नगर मझारो रे,
२०" (सं० १६७७ आदि)

४७ "जेसलमेरइ जिम प्रासाद जिहाँ घणा रे,
सोम वसु सिणगार १६८१ वरस वखाणीये रे' ×

४८ "मयराशी दिव अवि भलोय, दयावंत दातार,
शत्रुञ्जय सङ्घ करावीयो ए, जेसलमेर मझार ।
'शत्रुञ्जय महात्म्य' मन्थ थी ए, रास रच्यो सुखकार
रास भणयो शत्रुञ्जय तणो ए, नयर नागोर मझार."-२२-२३

४९ 'संवत सोले बयासीआ वरसे रास कीधो तिमिरीपुर हरखे
वस्तुपाल तेजपाल नो रास भणतां सुणतां परम उल्लास "४०

चौपाई[१६], स्थूलिभद्र रास[१७], क्षुल्लक कुमार रास[१८], चम्पक श्रेष्ठि चौपाई[१९], गौतम पृच्छा चौपाई[२०], व्यवहार शुद्धि धनदत्त चौपाई[२१], साधु-वन्दना पुञ्जा ऋषि रास[२५], केशी प्रदेशी प्रबन्ध[२७], द्रौपदी चौपाई[२८]।

---

५० 'संवत सोल एकाणू वरसे काती वदी दस दरसे जे ।१६
श्री खम्भायत सार नयर, चउमास रह्या सुविचार जे २०'

५१ "इम रस सम्माइ पद संवच्छरमान
आदिनाथ की नेमिजिन तेरमा वरस प्रमान।
माह हेमंत पूर्णिमा चौमासा सुभंग,
पंचमी बुधवारइ रचीउ रास सुरंग ॥८॥"

५२ 'संवत १६६४ जालोर'

५३ "संवत सोल चउसठमइ मई, जालोर मं हे आणी रे।
चंपक सेठनि चउपइ करि आणंद मइ सम जोगी रे ॥१६

५४ "पालणपुर की पांचे कोसे उत्तरदिशि पाल्हेठ गामो रे।
तिहाँ वारुर मानक वसइ साह मीवड वसवत नामो रे।पु०५।
तेह मइ मानइ तिहाँ रह्या दिन पनरहसीम निठमणु रे
तिहाँ कीधी ए चउपई संवत सोल पंचासु रे।पु० ६।"

५५ 'संवत सोल अठ्ठ समइ ए, भादव मास मझारि।
समरावाहइ ए कहइ ए, समरथ मन आविचार।

५६ संवत सोल अठ्यासिया अवसर पंचमी चउमासइ रे।
रास भणयो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुरु गाइ ॥२०॥"

५७ "सं० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि ९ दिने कृतो लिखितश्च श्री अहमदाबादनगरे श्रीहाजापटेलपोलमध्यवर्ती श्रीबृहत्खरतरोपाश्रय भट्टारक—श्रीजिनसागरसूरि—विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः, पं. हर्षकुशलगणिसहाय्येन ।"

चौबीसी-बीसी —	चौबीसी[४९], ऐरवतक्षेत्रस्थ चौबीसी[५०], विहरमान बीसी[५१]।
छत्तीसी-साहित्य —	सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी प्रस्ताव सवैया छत्तीसी[५२], क्षमा छत्तीसी[५३]

४८ "रूपचंदनी प चउपइ, मइ पूरी पणइ परिघ कीधी रे ।
शिष्य तणइ आग्रह करी मइ काम ऊपरि मति दीधी रे ।१।

× × ×

अमदावाद नगर मांहे संवत सतरसइ वरसे रे ।
माह मास वद चउथई हुंसी मानस ने हरषे रे । द्रु० ५ ।
वाचक हरषनन्दन वली हरषकुशलइ सानिधि कीधइ रे ।
लिखवा सोभाग्य सहाय थकी लिख तुरत पूरी करि दीधी रे । द्रु० ६।

४९ "वसु शशी रे रस रजनीकर संवच्छरें रे
(१६४८) हरि अमदाबाद मझार ।
विजयधरमी जिमें रे गुण गाया रे,
तीर्थंकरना शुभ मर्मे रे । ती० २ ।"

५० "संवत् सोल सतारा या वरसे जिनसागर सुपसाय ।
हाथो शाह तणइ आग्रह करइ
समयसुन्दर उवझाय रे । ऐ० २।"

५१ 'संवत सोलह सत्ताणु, माह वदि नवमी वखाणु ।
अहमदाबाद मझारि श्रीखरतरगच्छ सार । बी० ५।'

५२ संवत सोलनेउआ वरसें, श्री खंभायत नयर मझारि;
श्रीपूज्य सवाया करण जिनोदय गुरु नंदन भणयो सुखकारि ।

५३ नगर मांहि नागोर नगीनउ जिहां जिनवर प्रासादजी ।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया
धर्म तणइ परसाद जी । श्रा० । ३४ ।

कर्मछत्तीसी[१४] पुण्य छत्तीसी[१५] सन्तोष छत्तीसी[१६] आलोयणा छत्तीसी[१७]।

फुटकर साहित्य:— स्तोत्र स्तव स्वाध्याय गीत वेलि, भास आदि।

सैद्धान्तिक-ज्ञान

कवि के रचित विशेषशतक विसंवादशतक और विशेष संग्रह आदि का आलोडन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने अनुपमेय आगमिक ज्ञान का निचोड़ इन ग्रन्थों में रखकर जो जैन-साहित्य की अनिर्वचनीय सेवा की है वह सचमुच में पीढ़ियों तक चिर-स्मरणीय रहेगी। क्योंकि आगम-साहित्य में जो स्थल-स्थल पर पूर्वापरविरोधिनी और कई विरोधी वक्तव्यों का उल्लेख है जिससे आगम साहित्य, पर एक बहुत बड़ा धब्बा सा लगता है उन लगभग १५० विरोधी वक्तव्यों का आगमिक-प्रमाणों द्वारा समाधान करते हुये जिस प्रकार सामञ्जस्य स्थापित किया है; वह हर एक के लिये साध्य नहीं। इस प्रकार का सामञ्जस्य बहुश्रुत और प्रवर गीतार्थ ही कर सकता है। यही कार्य कवि ने करके अपनी 'महोपाध्याय'

---

१४ सकलचन्द्र सद्गुरु सुपसाये सोलह सइ अडसठजी।
करम छतीसी ए मइ कीधी माहवदी सुदी छठजी।।क०।।३५।।

१५ संवत सिधि दरसण रस ससिहर सिघपुर नगर मझारजी।
शांतिनाथ सुपसाये कीधी पुण्य छत्तीसी सारजी।।पु० ।।३५।।

१६ संवत सोल चउरासी वरसइ, सर मांहि रह्या चउमास जी।
जस सोभाग थयउ जग मांहि, सहु दीधी साबासजी।सा०।।३६।

१७ संवत सोल अठाणुए अहमदपुर मांहि।
समयसुन्दर कहइ मइ करी आलोयण सुखदाइ।।पा० ।।३६।।

और ज्ञान-वृद्ध-गीतार्थ की योग्यता समाज के सम्मुख रखकर आगम-साहित्य की प्रामाणिकता और विशदता की रक्षा की है।

कवि का आगमिक ज्ञान अगाध था, जिसकी विशदता का आस्वादन करने के लिये हमें उपर्युक्त ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिये। कवि के जैन-साहित्य-ज्ञान की परिधि का अनुमान करने के लिये गाथा सहस्री विशेषशतक और समाचारी शतक में उद्धृत ग्रन्थों की अधोलिखित तालिका से उसकी विपुल ज्ञान राशि का और अद्भुत स्मरण शक्ति का उल्लेख हमारे सामने आ जायगा।

आगम— आचारांग सूत्र नियुक्ति-चूर्णि-टीका सह सूत्रकृतांग निर्युक्ति-चूर्णि-टीका सह, अभयदेवीया टीका सह स्थानांग सूत्र कलिकाल सर्वज्ञ के गुरु देवचन्द्रसूरि कृत स्थानांग टीका सह (देखिये स० श० पृ० ४३] समवायांग टीका सह, भगवती सूत्र लघु एवं वृहट्टीका सह, ज्ञाताधर्मकथा–उपासकदशा प्रश्नव्याकरण – विपाकसूत्र-औपपातिक सूत्र राज प्रश्नीय-प्रज्ञापना-जीवाभिगम-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति टीका सह सूर्यप्रज्ञप्ति नियुक्ति–टीका सह, चन्द्रप्रज्ञप्ति–निरयावलिका टीका सह, ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्ण टीका सह गच्छाचार प्रकीर्ण महा प्रकीर्ण संस्तारक प्रकीर्ण मरण समाधि प्रकीर्ण तीर्थोद्गालिक प्रकीर्ण, तीर्थोद्धार प्रकीर्ण* विवाह चूलिका।

बृहत्कल्पसूत्र भाष्य-टीका सह, व्यवहार सूत्र भाष्य टीका सह निशीथ भाष्य चूर्णि सह, महा-

* देखिये, स० श० पृ० २२

निशीथ चूर्णि[1] सह जीतकल्प पंचकल्पसूत्र बृहद्वृत्ति सह[2] विशेषकल्पचूर्णि[3] दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि-टीका सह

ओघनिर्युक्ति भाष्य-टीका सह, पिंडनिर्युक्ति लघु टीका अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि टीका सह, नन्दीसूत्र टीका सह प्रवचन सारोद्धार टीका सह, दशवैकालिक निर्युक्ति-टीका सह, उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णि, लघु वृत्ति शान्त्याचार्य कृत बृह टीका कमलसंयमोपाध्याय कृत सर्वार्थसिद्धि टीका सह,

कल्पसूत्र जिनप्रभीय सन्देहविषौषधि टीका, पृथ्वीचन्द्रसूरि कृत कल्पटिप्पनक विनयचन्द्रसूरि कृत कल्पनिरुक्त कुलमण्डनसूरि कृत कल्पसूत्र अव चूरि और टिप्पनक, हेमहंससूरि कृत कल्पान्त वांच्य

आवश्यक सूत्र—चूर्णि निर्युक्ति, भाष्य सह देवर्धिगणि कृत आवश्यक चूर्णि[4] हारिभद्रीय बृह टीका मलयगिरि कृता लघु टीका तिलकाचार्य कृता लघु टीका श्रीचन्द्रसूरि कृता पाक्षिक प्रतिक्रमण टीका

षडावश्यक—नमि साधु और देवेन्द्रसूरि कृत टीका तरुणप्रभसूरि मुनिसुन्दरसूरि-शि० मेरुसुन्दर और हेमहंस गणि कृत बालावबोध जयचन्द्रसूरि कृत

---

१ म० शा० पृ० ४०   २ म० शा० पृ० ३३
३ म० शा० पृ० १०५   ४ म० शा० पृ० ४०
५ म० शा० पृ० ८

प्रतिक्रमण हेतु, श्राद्धविधि प्रकरण समाप्य हरिभद्र सूरि कृत श्रावक प्रज्ञप्ति टीका सह जिनयसिंहसूरि कृत श्रावक प्रतिक्रमण चूर्णि महाकवि धनपाल कृत श्रावकविधि, जिनवल्लभसूरि कृत श्रावकव्रतकुलक जिनेश्वरसूरि कृत श्रावकधर्मप्रकरण देवेन्द्रसूरिकृत श्राद्धदिन कृत्य टीका रत्नशेखरसूरि कृत श्राद्धविधि कौमुदी तथा कृत प्रतिक्रमण सूत्री

समाचारी— परमानन्द – अजितसूरि-कृष्णाचार्य तिलकाचार्य- श्री चन्द्राचार्य कृत योगविधि श्रीदेवाचार्य कृत यति-दिनचर्या टीकासह, जिनवल्लभसूरि–जिनदत्तसूरि–जिनपतिसूरि – तिलकाचार्य – देवसुन्दरसूरि – सोम सुन्दरसूरि और बृहद्गच्छीय सामाचारी जिनप्रभ सूरि कृत विधिप्रपा।

ऐतिहासिक—आमदेवसूरि और चन्द्रप्रभसूरि कृत प्रभावक चरित्र कुमारपाल चरित्रे भावदेवा कृत गुरुपर्वभावक आंचलिया पूनमीया गच्छीय–साधु पूनमीया गच्छीय–तपागच्छीय–तथा साधुशाखीय पट्टावली विजयचन्द्र सूरि कृत तपागच्छीय प्रबन्ध।

प्रकरण— उपदेशमाला उपदेश कर्णिका उपदेशमाला विवरण उपदेशचिन्तामणि, मलयगिरि कृत बृहत्क्षेत्रसमास और बृहत्संग्रहणी प्रकरण टीका धनेश्वरसूरि कृत सूक्ष्मार्थविचारसार प्र० टीका देवेन्द्रसूरि कृत षड-शीति प्रकरण कम्मपयडी पञ्चसंग्रह टीका सह, यशोदेवसूरि कृत पञ्चाशक चूर्णि पञ्चाशक टीका सह पुष्पमाला टीका सह, सिद्धमाभृत टीका मुनि चन्द्रसूरि कृत धर्मबिन्दु प्र० टीका उ० धर्मकीर्ति कृत

१ गा० पृ० ५

पञ्चसार भाष्य, 'निच्छय' गाथा वृत्ति[1] रत्नसञ्चय[2] यशोदेवसूरि एवं देवगुप्तसूरि कृत नवपद प्रकरण वृत्ति हरिभद्रसूरि कृत ज्ञानपञ्चक विवरण पञ्चलिङ्गी प्रकरण टीका सह, निर्वाण कलिका विचारसार कुलमण्डनसूरि कृत विचारामृतसंग्रह उमास्वाति कृत पूजा प्रकरण आचारवल्लभ और प्रतिष्ठा कल्प, पाद लिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प जिनप्रभसूरि कृत गृह पूजाविधि जिनवल्लभसूरि कृत पौषधविधि प्रकरण पिण्डविशुद्धि बृहट्टीका जिनदत्तसूरि कृत उपदेश रसायन चर्चरी सूत्रपदोद्घाटनकुलक जिनपति-सूरि कृत प्रबोधोदय वादस्थल और महाष्टक टीका, देवेन्द्रसूरि कृत धर्मरत्न प्रकरण टीका हेमचन्द्राचार्य कृत योगशास्त्र स्वोपज्ञ वृत्ति योगशास्त्र अवचूरि और सोमसुन्दरसूरि कृत बालावबोध नवतत्त्व बृहद्बा-लावबोध उपदेश सप्तती चैत्यवन्दन भाष्य प्रत्या-ख्यान भाष्य प्रत्याख्यान भाष्य नागपुरीय तपागच्छ का[3] अभयदेवसूरि कृत वन्दनक भाष्य जीवानु शासन टीका पीठिका नृपराज कृत जीवानुशासन चैत्यवन्दनकुलक टीका आचारप्रदीप उ० जिनपाल कृत सन्देह दोलावली बृहद्वृत्ति (?) और द्वादश-कुलक टीका संबोधप्रकरण कायस्थिति सूत्र संघ तिलकसूरि कृत सम्यक्त्व सप्तति वृत्ति, देवेन्द्रसूरि कृत प्रश्नोत्तर रत्नमाला टीका मुनिचन्द्रसूरि कृत उपदेश (पद) वृत्ति, सोमधर्मकृत उपदेशसप्ततिका, मुनिसुन्दरसूरि कृत उपदेश तरङ्गिणी व श्रीतिलक कृत गौतमपृच्छा प्र० टीका वनस्पति सप्ततिका

१ ग्रा० पृ० १४। २ ग्रा० पृ० १५। ३ स० ग्रा० पृ० १२०

दर्शन सप्ततिका, आराधना पताका, नमस्कार पञ्जिका, भावना कुलक मानदेवसूरि कृत कुलक१, उ० मेरुसुन्दर कृत प्रश्नोत्तर ग्रन्थ हीरप्रश्न।

स्तोत्र— जिनवल्लभसूरि कृत नन्दीश्वर स्तोत्र टीका सह, हेमचन्द्रसूरि कृत महादेवस्तोत्र और वीतराग स्तोत्र प्रभाचन्द्रसूरि कृत टीका सह, जिनप्रभसूरि कृत सिद्धान्त स्तव देवेन्द्रसूरि कृत समवसरण स्तोत्र ऋषिमण्डल स्तव देवेन्द्रस्तव।

चरित्र— संघदासगणि कृत वसुदेवहिण्डी पउम चरियं जिनेश्वरसूरि कृत कथाकोष प्रकरण देवभद्राचार्य कृत पार्श्वनाथ चरित और महावीर चरित, वर्धमानसूरि कृत कथाकोष और आदिनाथ चरित हेमचन्द्राचार्य कृत, आदिनाथ-नेमिनाथ-महावीर चरित शान्तिनाथ चरित चित्रावलीय देवेन्द्रसूरि कृत सुदर्शन कथा, देवधर प्रबन्ध१ जयतिलकसूरि कृत सुलसा चरित महाकाव्य पद्मप्रभसूरि कृत मुनिसुव्रत चरित अभयदेवसूरि कृत जयन्तविजय काव्य भावदेवसूरि एवं धर्मप्रभसूरि कृत कालिकाचार्य कथा पूर्णभद्रगणि कृत कृतपुण्यक चरित सिंहासन द्वात्रिंशिका।

लेख— आबू वस्तुपाल मंदिर-देवकुलिका प्रशस्ति२ कन्नानगर प्रतिमालेख३ बीजापुर शिलालेख४।

इन उल्लेखनीय ग्रन्थों में छोटे-मोटे प्रचलित प्रकरणों आदि का समावेश नहीं किया गया है। साथ ही इस सूची में आगत श्री देवचन्द्रसूरि कृत स्थानाङ्ग टीका तीर्थोद्धार प्रकीर्ण महानिशीथ

१ स० शा० पृ० ६७-७१। २ म० शा० पृ० ४। ३ स० शा० पृ० ८। ४-५-६ स० शा० पृ० २४।

चूर्णि यतिजीत कल्पसूत्र बृहद्वृत्ति विशेष कल्पचूर्णि देवर्धिकृत आवश्यक चूर्णि, प्रायश्चित्त विधि प्रकरण भाष्य आम्रदेवसूरि कृत प्रभावक चरित्र जिनप्रभसूरि कृत तपागच्छ प्रबन्ध मानदेव गुरु पर्वक्रम आगरीय पूनमीया-साधुपूनमीया गच्छ की पट्टावलियें, देवसुन्दरसूरि कृत समाचारी बृहद्गच्छीय समाचारी, क्षमाकल्याण कृत आचारपद्धति और प्रतिष्ठा-कल्प पादलिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प नागपुरीय तपागच्छ का प्रत्याख्यान भाष्य पीपलिया जयरत्न कृत जीतानुशासन मानदेवसूरि कृत कुलक धर्मनामसूरि कृत कथाकोष देवपर प्रबन्ध आदि ग्रन्थ प्राप्त उपलब्ध नहीं हैं। अतः मनीषियों का कर्त्तव्य है कि इन अप्राप्त ग्रन्थों का अनुसंधान करें।

वैधानिकता

जिस चैत्यवास का खण्डन कर आचार्य जिनेश्वर ने सुविहित-विधिपक्ष-खरतर गच्छ का निर्माण किया था और जिसकी नींव दृढ़ करने के लिये आचार्य जिनवल्लभ आचार्य जिनदत्त, आचार्य मणिधारी जिनचन्द्र और आचार्य जिनपति ने वैधानिक ग्रन्थ निर्माण किये थे। आचार्य जिनप्रभ ने विधि प्रपा और रुद्रपल्लीय आचार्य वर्धमान ने आचार दिनकर रचकर जिसके अनुष्ठानों की वैधानिकता स्थापित की थी। वही गच्छ ४-५ शताब्दियों पश्चात् पुनः शैथिल्य के फन्दे में फँस चुका था—जिसका उद्धार युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने किया था किन्तु जिसकी वैधानिक शास्त्रीय परम्परा पुनः स्थापित न कर पाये थे और इधर अन्य गच्छीयों ने (जिसमें विशेषकर तपागच्छ वालों ने) इस गच्छ की मान्य परम्पराओं पर कुठाराघात करना प्रारम्भ किया था। उसकी रक्षा के लिये तथा मर्यादा अक्षुण्ण और प्रतिष्ठित रखने के लिये

१ पद-व्यवस्था कुलक।

कवि ने अभूतपूर्व साहस कर इस गच्छ की रक्षा की थी। उसी का फल था समाचारी शतक का निर्माण।

समाचारी शतक में महावीर के षट् कल्याणक थे, अभय-देवसूरि खरतरगच्छ के थे पर्व दिवस में ही पौषध करना चाहिये सामायिक में पहले 'करेमिभंते' के पश्चात् ईर्यापथिकी आलोचना करनी चाहिये 'आयरिय उवज्झाय' श्रावकों को ही पढ़ना चाहिये साध्वी को व्याख्यान देने का अधिकार है देवपूजा शास्त्रीय है तरुण स्त्रियों के लिये मूलनायक का स्नात्र-विलेपन निषिद्ध है प्रासुक जल ग्रहण करना चाहिये ५० वें दिन संवत्सरी पर्व मानना चाहिये, तिथियों की क्षय-वृद्धि में लौकिक पञ्चांगों को मान्यता देनी चाहिये पौषध में भोजन नहीं करना चाहिये और साधु को पानी ग्रहण करने के लिये मिट्टी का घड़ा रखना चाहिये आदि चार्चिक प्रश्नों का समाधान करते हुये शिष्टता के साथ शास्त्रीय प्रमाणों को सम्मुख रखकर गच्छ की परम्परा को वैधानिक स्वरूप प्रदान किया है तथा अनुष्ठानीय कर्मकाण्ड उपधान दीक्षा-शान्ति-स्नात्र प्रति क्रमण सूत्रन, देवपूजन आदि का विधान निर्णीत कर कवि ने स्थायित्व प्रदान किया है।

इस भगीरथ प्रयत्न में कहीं भी कवि ने अन्य विद्वानों की तरह कि 'मेरा सत्य है तेरी मान्यता झूठी और असत्प्राय है' आदि अशिष्ट वाक्यों का प्रयोग कर अन्य गच्छीयों का खण्डन कर; स्व मत के मण्डन का कहीं भी प्रयत्न नहीं किया है। किन्तु सैद्धान्तिक परम्परा को सम्मुख रखकर सभी जगह यह दिखाया है कि यह शास्त्रसिद्ध और सत्य है। इस प्रकार कवि को हम व्यावहारिक जीवन और साधक जीवन में देखते हैं तो वह विधानकार के रूप में दिखता हुआ वैधानिक अनुष्ठानों का मूर्तिमान स्वरूप ही दिखाई पड़ता है।

व्याकरण

यह सत्य है कि कवि ने अपनी कृतियों में अन्य विद्वानों की तरह पण्डिताऊपन दिखाने के लिये स्थल-स्थल पर, शब्द-शब्द पर व्याकरण का उपयोग नहीं किया है। किन्तु यह नहीं कि कवि का व्याकरण ज्ञान शून्य हो। कवि की समग्र देश्यभाषामय रचनाओं को देख जाइये; कहीं भी व्याकरण ज्ञान की त्रुटि प्राप्त नहीं होगी। कवि को 'सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन पाणिनीय व्याकरण कलापव्याकरण सारस्वत व्याकरण और विष्णुवार्तिक* आदि व्याकरण ग्रन्थों का भी विराट् ज्ञान था। कवि की प्रकृति को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि उनका विचार था कि ऐसी वाणी का प्रयोग किया जाय जो सर्वमान्य हो सके और संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञाता भी उसको समझ सके। यदि स्थल-स्थल पर व्याकरण का उपयोग किया गया तो वह कृति केवल विद्वद्भोग्या ही बनकर रह जायगी। यदि उस विद्वद्भोग्या कृति का सामान्य विद्यार्थी अध्ययन करेगा तो व्याकरण के दल-दल में फँसकर सम्भव है देवगिरा के अध्ययन से पराङ्मुख हो जाय। अतः जहाँ विशेष मार्मिक-स्थल या अनेकार्थी या श्लिष्टाभास से स्थल हों, वहीं व्याकरण से सिद्ध करने की चेष्टा की जाय। इसी भावना को रखते हुये व्याकरण के दल-दल में न फँसकर कृति को निर्दोष रखते हुये जिस सरलता को अपनाया है; वह व्याकरण के सामान्य-अभ्यासी के अधिकार के बाहर की बात है। इस प्रकार का प्रयत्न पूर्ण वैयाकरणी ही कर सकता है और यह प्रतिभा इस कवि में विद्यमान है।

---

* अने० पृ० ४६

अनेकार्थ और कोष

कहा जाता है कि एक समय सम्राट अकबर की विद्वत्सभा में किसी दार्शनिक विद्वान ने जैनों के आगम सम्बन्ध की 'एगस्स सुत्तस्स अणंतो अत्थो' 'एक सूत्र के अनन्त अर्थ होते हैं' पर व्यंग कसा*। उससे तिलमिलाकर कवि ने अपने शासन की सुरक्षा और प्रभावना सर्वज्ञ की सर्वज्ञता और आगम साहित्य की प्रामाणिकता रखने के लिये सम्राट से कुछ समय प्राप्त किया। इसी समय में कवि ने "राजानो ददते सौख्यम्" इन आठ अक्षरों पर ८ आठ † लाख अर्थों की रचना की। इस ग्रन्थ का नाम कवि ने 'अर्थरत्नावली' रखा और सं० १६४९ श्रावण शुक्ला १३ की सांय को जिस समय अकबर ने कश्मीर विजय ‡ के लिये श्रीराज श्री रामदासजी की वाटिका में प्रथम-प्रयाण किया था वहीं समस्त

* श्री० रूपचन्द्र (रामविजय) लिखित एक पत्रानुसार।

† मूलतः अर्थ १० लाख किये थे किन्तु पुनरुक्ति आदि का परिमार्जन कर ८ लाख ही अर्थ सुरक्षित माने गये हैं।

‡ "संवति १६४९ प्रमिते श्रावण सुदि १३ दिनसन्ध्यायां 'कश्मीर' देशविजयमुद्दिश्य श्रीराज-श्रीरामदासवाटिकायां कृत प्रथमप्रयाणेन श्रीमदकबरपातिसाहिना सकलसुरीनेन अभिजातसाहिजादा श्रीसलेमसुरत्राणसामन्तमण्डलिकराजराजिविराजसभायां अनेकविधवैयाकरणतार्किकविद्वत्तमसमक्षं अस्मद्गुरुखरतरयुगप्रधानभट्टारकश्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराणाम् आचार्यश्रीजिनसिंहसूरिप्रमुखसुबहुसाधुसमुदायपरिकराणाम् असमानसन्मानबहुमानदानपूर्वं समाहूय अस्मदुक्तार्थी ग्रन्थो मस्तकधारणक साक्षात् कृतः प्रमुदित चेतसा। ... साधिरेकेण सञ्जातविस्मयभरेण ... श्रीसाहिना

राजाओं सामन्तों और विद्वानों की परिषद् में कवि ने अपना वह नूतन ग्रन्थ सुनाकर सबके सम्मुख यह सिद्ध कर दिखाया कि मेरे जैसा एक अल्पज्ञ व्यक्ति भी एक अक्षर का एक लाख अर्थ कर सकता है तो सर्वज्ञ की वाणी के अनन्त अर्थ कैसे न होंगे ? इस ग्रन्थ सुनकर सब चमत्कृत हुये और विद्वानों के सम्मुख ही सम्राट ने इस ग्रन्थ को प्रामाणिक ठहराया।

वस्तुतः कवि की यह कृति जैन-साहित्य ही क्या अपितु समग्र भारतीय वाङ्मय में ही अद्वितीय है। क्योंकि वैसे अनेकार्थी कृतियें अनेकों[1] प्राप्त हैं किन्तु एक अक्षर के हजार अर्थ के ऊपर किसी ने भी अर्थ कर रचना की हो साहित्य-संसार को ज्ञात नहीं। अतः इस अनेकार्थी रचना पर ही कवि का नाम साहित्य जगत में सर्वदा के लिये अमर रहेगा।

इस कृति को देखने से ऐसा मालूम होता है कि कवि का व्याकरण, अनेकार्थी कोष एकाक्षरी कोष और कोषों पर एकाधिपत्य था और एकाक्षरी तथा अनेकार्थी कोषों को तो कवि मानो घोट-घोट कर पी गया हो। अन्यथा इस रचना को कदापि सफलता के साथ पूर्ण नहीं कर पाता। कवि इस कृति में निम्न कोषों का उल्लेख करता है:—

अभिधान चिन्तामणि नाममाला कोष अमरकोष नाममाला, हेमचन्द्राचार्य कृत अनेकार्थ संग्रह, तिलकानेकार्थ अमर एकाक्षरी नाममाला विश्वशम्भु एकाक्षरी नाममाला सुधाकलश

बहुमतंसम्पूर्णं पठित्वा पाठयित्वा सर्वत्र विस्तार्यतां सिद्धरस्तु। इत्युक्त्वा च स्वहस्तेन गृहीत्वा एतत् पुस्तकं मम हस्ते दत्वा प्रमाणीकृतोऽयं ग्रन्थः। [अने पृ ६२]

[1] हीरालाल र० कापडिया लिखित 'अनेकार्थरत्नमंजूषा-प्रस्तावना'

एकाक्षरी नाममाला वररुचि एकाक्षरी निघटु नाममाला *
समयसुन्दरसूरि कृत एकाक्षरी नाममाला † (?)

और इस प्रकार की अनेकार्थी तो नहीं किंतु द्व्यर्थी कृतियें स्तोत्र और गीत रूप में कवि की और भी प्राप्त हैं, जो 'साहित्य-सर्जन' अध्याय में अनेकार्थी-साहित्य की तालिका में उल्लिखित हैं।

छन्द

कवि प्रणीत 'भावशतक' और 'विविधछन्द जातिमय वीत रागस्तव' को देखने से स्पष्ट है कि कवि का 'छन्द' साहित्य पर भी पूर्ण अधिकार था। अन्यथा स्तोत्रों में छन्दनाम सह द्व्यर्थी रचना करना सामान्य ही नहीं अपितु अत्यन्त दुष्कर कार्य है। कवि ने जिन जिन छन्दों का प्रयोग किया है उनमें से कतिपय तो साहित्य में अप्रयुक्त ही है है तो भी कचित् ही। कवि प्रयुक्त छन्द निम्न हैं—

आर्या गीतिका, पथ्यावक्त्रा वैतालीय, पुष्पिताग्रा अनुष्टुप्, उपजाति इन्द्रवज्रा इन्द्रवंशा सोमराजी, मधुमती हंसमाला चूडामणि, चित्रमाला भद्रिका चम्पकमाला, मत्ताक्रीडा दोधक, तोटक, मणिनिकर मृदङ्गक रथोद्धता भामिनी शालिनी स्रग्विणी द्रुतविलम्बित प्रमाणिका वसन्ततिलका मालिनी हरिणी मन्दाक्रान्ता शिखरिणी शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

अलङ्कार —रस

कवि की खण्डकाव्य अथवा महाकाव्य के रूप में रचनायें प्राप्त नहीं हैं है तो भी केवल पादपूर्ति रूप 'जिनसिंहसूरि पद

* अने० पृ० ५४।

महोत्सव काव्य' और अपरम मत्सर काव्य। इस काव्य में कवि ने शब्दालङ्कारों के साथ अर्थालङ्कारों में उपमा रूपक, प्रदीप, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति स्वभावोक्ति विभावना, निदर्शन दृष्टान्त सन्देह और सङ्कर तथा संसृष्टि अलङ्कारों का सन्निवेश रस-परिपाक की दृष्टि से बहुत ही सुन्दर किया है।

स्तोत्र साहित्य में श्लेष और यमकालङ्कारों की प्रधानता कवि की शब्दालङ्कार प्रियता को प्रकट करती है।*

आनन्दवर्धनाचार्य ने 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' कहकर ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार की है। आचार्य मम्मट ने अपने काव्य-प्रकाश नामक लक्षणग्रन्थ में इसी ध्वनि को आश्रित करके वाच्य-विशायी व्यङ्ग्य के पूर्णकाव्य को उत्तम काव्य स्वीकार किया है। इसी उत्तम काव्य के कतिपय भेदों पर कवि ने भावशतक † में विशदता से विचार किया है और इसके द्वारा ही रस-परिपुष्टि सिद्ध करता हुआ उत्तम काव्य की महत्ता पर विशद प्रकाश डाला है।

चित्रकाव्य

साहित्यशास्त्र की दृष्टि से चित्रकाव्य अधम काव्य माना गया है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि चित्रकाव्य की रचना में शब्द शास्त्र व्याकरण निर्वचन तथा कोष आदि पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है। कवि ने भी अपने कतिपय स्तोत्रों में ऐसे ही पाण्डित्य का परिचय दिया है। इन चित्रकाव्यमय स्तोत्रों को भावाभिव्यक्ति या रसनिष्पत्ति की दृष्टि से चाहे उत्कृष्ट काव्य न मानें किन्तु विचार वैदग्ध्य और रचना-कौशल की दृष्टि से इन स्तोत्रों को उत्कृष्ट काव्य मानना ही होगा। कवि प्रणीत चित्रकाव्यमय स्तोत्र निम्न हैं —

* कु० पु० १७० १८८, १६२।   † भावशतक पद्य २।

पद्ममहाकाव्य सवदप्रशस्ति, चम्पू मेघदूत महाभारत आदि ग्रन्थों के सम्वेत्ता और अभ्यासक भी थे। निष्णात होने के कारण ही ऐसे पादपूर्तिरूप और स्तोत्रात्मक स्वतन्त्र काव्यों की वे रचना कर सके। इनके काव्यों में शब्दमाधुर्य, लालित्य और ओज के साथ अलङ्कारों का पुट आदि सब ही गुण प्राप्त हैं। इनके काव्य रसाभिव्यक्ति के साथ ही मन्तस्तलस्पर्शी भी हैं। इनकी आश्चर्यकारी रचनाकौशल का देखिये—

> "भक्त्या न ह वराग्रममदानन्दात्पर्यसक,
> तपमोदीमसनु दयागुणमुर्व तातां सतां वेन रम्।
> कम्बसलीतर्षि नरा नमत भो! बीबामतीति चिर्प,
> त्यागमेघुकशोरण कुर्वनति नेमि मुदा प्रावक।६।"

देखिये कवि इसी पद्य के अक्षरों को ग्रहण कर अनुष्टुप् का नया श्लोक निर्माण करता है—

> "भजऽहं भगदानन्दं, सकलमङ्गलाकरम्॥
> कृत्व राजीमतीत्यागं, भेषा सन्तविदायकम्।६।"
> [नेमिनाथस्तव कु० पृ० ११६]

अनेकविध श्लेष और मङ्गश्लेष तथा यमकमय काव्य होते हुये भी इनकी स्वाभाविक सरलता और माधुर्य देखिये —

> "कैवलागममाश्रित्य, पुष्पवृष्ट्याकरये स्थिताः।
> सिद्धिं प्रकृतयः प्रापुः, पार्श्व! चित्रमिदं महत्।४।"
> [चिन्ता० पार्श्व स्तोत्र श्लेष कु० पृ० १८८]

"जय प्रभो! कैवल्यधारी, यस्य स्तुवेसर्व सव चारुहारी।
मायामहीधारहलोमवार्य, स्वर्गाधिपमार हसो नमाम।४।

× × ×

त्वां नुवे यस्य स शंकरे मे मवे, देवपादाम्बुजेशं करे मे मवे।
मन्मन(?)चञ्चरीकोपसंतापत्ते, नाभिभूपाङ्गभूः को-पसंताप ते।१३।"
[श्लेषमय आदिनाथस्तोत्र कु० पृ० ६१४]

"ततान धर्म्मे अगनाइ गार, मदीदह दुःखवती-इतार।
अधीकरच्चर्म सतां सनानां, जहार दीप्तारशिवांजनानाम्।१।
नैगातुम्यनीपी दरिक्रममाद, भियापि नो यो मबिक्रममादम्।
जुव अमुं ते च नता रराम्र, शिवे यशः कैरवतारराम्र।४।"
[यमकबद्ध पार्श्वस्तोत्र कु० पृ० १८०]

"अमर-सत्कल-सत्कलसत्कलं, सुपदयाऽमलया मलयामलम्।
प्रबलसादर-सादरसादरं, शमदमाकर-माकर-माकरम्।२।"
[यमकबद्ध पार्श्वस्तोत्र कु० पृ० ११२]

एक ही स्वरसंयुक्त पद्य का रसास्वादन करियेः—
"पदकजनत सदमरशरण, धरकमलवदनवरकरचरण!।
शमदमधर नरवरहरण! जय जलज-चरणमरकतवरण!।११"।

* * *

प्राच्य कवि के रचित काव्य के एक चरण को ग्रहण कर तीन नये चरणों का निर्माण-पादपूर्ति कहलाता है। यह कार्य अति दुष्कर है। क्योंकि इसमें कवि को प्राच्य कवि के भाव, भाषा शब्दयोजना को बरकरार रखते हुये अपने भाव और विचारों का समावेश करना होता है। यह कार्य प्रतिभा पटुता और शब्द योजना सम्पन्न कवि ही कर सकता है। इसीलिये कहा जाता है कि नवीन काव्य का निर्माण करना, पादपूर्ति साहित्य की अपेक्षा अत्यन्त सरल है।

कवि की लेखिनी इस साहित्य पर भी स्वाभाविक गति से अविराम चलती हुई दिखाई पड़ती है। कवि प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं —

१ जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य
२. ऋषभ भक्तामर,

इसमें प्रथम काव्य महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य के तीसरे सर्ग के चतुर्थ चरण की पादपूर्ति रूप में है। इस काव्य में कवि अपने गच्छनायक, काव्यगुरु महिमराज के आचार्य पदोत्सव का वर्णन करता है। यह पद सम्राट अकबर के आग्रह पर यु० जिनचन्द्रसूरि ने दिया था—और इसका महामहोत्सव महामन्त्री स्वनामधन्य श्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने किया था। इस प्रसङ्ग का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता के साथ कालिदास की पंक्ति के सौन्दर्य को अक्षुण्ण रखते हुए किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये-

"पदुर्ध्वरेखामिषमर्गाहिपङ्क्ते, मयान्तत पूज्यपद प्रकाशवान् ।
प्रभो ! महामात्यविशीर्णकोटिशः-मुदविपाऽस्य इव !
८ पर्णा दधौ ।१।

अकबररोक्त्या सचिवेशसद्गुरु , गणाधिपं कुर्वीति मानसिंहकम् ।
गुरोर्यकः शरिपदं यतिमतिप्रियाऽऽप्रपेदे प्रकृतिप्रियं वद ।२।

× × ×

श्लेष का चमत्कार देखिये
"अरे ! महाम्सेप्कृतृपाः पत्ताशिन ,
पद्मजा मां इव वेद्धितैविवा ।

समाप्स्यमीवं निशि सान्, सुरां गुरो !
नवावतारं कमला-दिवोस्परम् ।२८।"

दूसरी कृति आचार्य मानतुङ्गसूरि प्रणीत भक्तामर स्तोत्र के चतुर्थ चरण पादपूर्ति रूप है। इसमें कवि ने आचार्य मानतुङ्ग के समान ही भगवान आदिनाथ को नायक मानकर स्तवना की है। यह कृति भी अत्यन्त ही प्रोज्ज्वल और सरस-माधुर्य संयुक्त है।

कवि का स्तव के समय भावुक स्वरूप देखिये और साथ ही देखिये शब्द योजना—

"नमेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्रचन्द्र !
ज्ञानात्मदर्श-परिदृष्ट-विशिष्ट ! विश्व ! ।
त्वन्मूर्तिरर्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।१।"

कवि की उपमा सह उत्प्रेक्षा देखिये —
"केशाञ्छटां स्फुरतां दधदञ्जवेशे,
भीतीर्यराजविभुधावलिसंभितस्त्वम् ।
मूर्धस्थकुन्तलतिका-सहित च मञ्ज—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।३०।"

न्याय

कवि ने अपने प्रमुख शिष्य वादी हर्षनन्दन को नव्यन्याय का मौलिक एवं प्रमुख ग्रन्थ 'तत्त्वचिन्तामणि' का अध्ययन करवा

कर हर्षनन्दन को 'विद्यामविचिरारद' बनाया था। इससे स्पष्ट है कि कवि का न्यायशास्त्र के प्रति उत्कट प्रेम था। इतना ही नहीं कवि ने हर्षनन्दन के प्रारम्भिक अध्ययन के लिये सं १६८१ आषाढ शुक्ला १० को इलादुर्ग (ईडर) में 'मङ्गलवाद' की रचना भी की थी।

मङ्गलवाद का विषय है—केशव मिश्र ने 'तर्कभाषा' में शास्त्रीय-परम्परा के अनुसार मङ्गलाचरण क्यों नहीं किया? इसी प्रश्न को व्याप्तिसह, अनुमान पक्ष-प्रमाण कार्य-कारण विघ्न-समाप्ति शिष्टाचार-पद्धति से बढ़ाकर नैयायिक ढङ्ग से ही उत्तर दिया है और सिद्ध कर दिखाया है कि मिश्र ने हार्दिक मङ्गल किया है।

मङ्गलवाद' न्याय का विषय और उत्तर देने की नैयायिकों की प्रणाली होने पर भी कवि ने इसको अत्यन्त ही सरल बनाया है। इससे यह सिद्ध है कि कवि न्यायशास्त्र के भी प्रकाण्ड परिडत थे।

ज्योतिष

जैन साधुओं के जीवन में दीक्षा और प्रतिष्ठा ऐसे संबंधित विषय हैं जिनका की अध्ययन आवश्यक है। क्योंकि व्यावहारिक ज्योतिष से जैन-ज्योतिष में तनिक अन्तर सा है। अतः इनका ज्ञान होने पर ही इस सम्बन्ध के मुहूर्त आदि निकाले जा सकते हैं। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर कवि ने अपने पौत्र-शिष्य जयकीर्ति को इस ज्योतिष शास्त्र का अच्छा विद्वान बनाया था। कवि स्वयं कहता है कि 'ज्योतिश्शास्त्र-विचक्षण-वाचकजयकीर्ति' और भविष्य में परम्परा के श्रमण भी ज्ञान-पूर्वक इस कार्य को सफलता से कर सकें इसलिये 'भारचन्द्र रत्नकोष रत्नमाला विवाह

पटल, शीघ्रबोध और सारंगधर आदि ग्रन्थों के आधार पर कवि ने 'दीक्षा-प्रतिष्ठा शुद्धि' नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना अस्यन्त ही सरल भाषा में की है। साथ ही कल्पसूत्र टीका, गाथा सहस्री आदि ग्रन्थों में कई धर्मस्थलों पर इस सम्बन्ध का अच्छा विशद-विवेचन किया है और वह भी पृथक्-पृथक् भेदों के साथ। अतः यह स्पष्ट सत्य है कि कवि ज्योतिष्-शास्त्र के भी विशारद और निष्णात थे।

टीकाकार के रूप में—

काव्य, अलङ्कार, छन्द आगम, स्तोत्र आदि प्रत्येक साहित्य पर कवि ने टीकाओं की रचना की है। जिसकी सूची हम साहित्य-सर्जन में दे आये हैं; अतः यहां पुनरुक्ति नहीं करेंगे। इन टीका ग्रन्थों को देखने से यह तो निर्विवाद है कि टीकाकार का जिस प्रकार पाण्डित्य बहुश्रुतता और योग्यता होनी चाहिये वह सब कवि में मौजूद है। कवि का ज्ञान-विशद और भाषा प्राञ्जल होते हुये भी आश्चर्य यह है कि कहीं भी 'मूले ग्रन्थ विशेषा टीका' उक्ति के अनुसार अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करता या बघारता हुआ नहीं चलता है। अपितु शिष्यों के हितार्थ अतिसरल होते हुये भी वैदग्ध्यपूर्ण प्राञ्जल भाषा में लिखता हुआ नजर आता है। कवि, प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ की अपेक्षा भी मूल काव्यकार के भावों को अर्थगाम्भीर्य को सरस-रसप्रवाह युक्त प्रकट करने में अधिक सफल हुआ है। कवि की शैली अन्वयात्मक है। अन्वयात्मक होते हुये भी अतिप्रचलित प्रत्येक वाक्यों की व्याख्या नहीं करता है। जहां मूल अति सरल होता है वहां कवि सारांश (भावार्थ) कह देता है और अन्य वाक्यों की व्याख्या। अप्रचलित विषयों पर विशदता से भी लिखता है जिससे विषय का प्रतिपादन कहीं

अस्पष्ट न रह जाय। सामान्यतः इस सम्बन्ध के एक दो अव तरण ही देकर हम सन्तोष करेंगे। देखिये—

'अथ' अधुना प्रजानामधिप दिलीपो राजा 'ऋषेः' वशिष्ठस्य 'धेनुं' गां प्रभाते वनाय मुमोच। किंविशिष्टां धेनुं ? 'आत्त-प्रतिमाल्यगन्धमाल्याम्' गन्धश्च माल्यं च गन्धमाल्ये यस्याः सा, कोऽर्थः ? राजा स्वयं गन्धमाल्ये गृह्णाति राज्ञी च ग्राहति। पुनः किंविशिष्टां धेनुम् ? 'पीतप्रतिबद्धवत्सां' पूर्वं पीतः पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्याः सा पीत इति कोऽर्थः ? पायितः पूर्वं पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्याः सा तां पी । अथवा अयमपि अर्थः पीतः-शंकरस्तद्रुपत्वात् पीति शंके प्रतिबद्धो वत्सो यस्या सा पी० ताम्। किंविशिष्ट प्रजानामधिपः ? 'यशोधन' यश एव धनं यस्य स यशोधन ॥१॥ [रघुवंश टीका द्वि. स प्र श्लो.]

"हे अधीश !—हे स्वामिन्! अस्मादृशा मन्दमतयः तव स्वरूपं वर्णयितुं सामान्यतोऽपि आस्तां विशेषतः प्रतिपादयितुं कथं अधीशाः-समर्था भवन्ति ? अपि तु न। अत्र दृष्टान्तमाह—'अपि वा' इति द्योत्यते। कौशिकशिशुः-घूकस्य बालो दिवसे अन्ध सन् किं धर्मरश्मेः' सूर्यस्य रूपं-भास्करबिम्बस्वरूपं 'किल' इति प्रसिद्ध वार्तायां किं प्ररूपयति-यथावस्थितं कथयति ? अपितु नैस्यर्थः। किंविशिष्टः कौशिकशिशुः ? धृष्टोऽपि दृढहृदयतया प्रगल्भोऽपि ॥३॥" [कल्याणमन्दिर स्तोत्र श्लो ३ टीका]

इसी स्तोत्र के पांचवें पद्य की व्याख्या के पूर्व भूमिका की विशदता देखिये —

"ननु यदि भगवतो गुणान् प्रति स्तोतुं शक्तिर्नास्ति तदा स्तवं कर्तुं कथमारब्धवान् ! न चैवं वक्तव्यम्। यत एकान्तेन एवं नास्ति —स्तुतेः सम्पूर्णशक्तावेव सत्यां कार्यं कर्तुमारभ्यते यतो गच्छता-

ग्रहीतुमसमर्थोपि कीटिका किं स्वकीयेन चारेण न चरति ? चरत्येव, चरन्ती न केनापि वार्यते । अतो जिनयोग्यस्य सद्भूतस्य सम्पूर्णस्य स्तवस्य करणशक्तेरभावेऽपि भक्तिभरप्रेरितस्य मम स्वकीयशक्त्यनुसारेण स्तोत्रकरणे प्रवृत्तस्य दोषो नाशङ्कनीय-स्तवेषाऽऽह—

व्याख्या का चातुर्य देखना हो तो देखें मेघदूत प्रथम श्लोक की व्याख्या।

कवि ने केवल संस्कृत-प्राकृत भाषा-मथित ग्रन्थों पर ही टीका नहीं की है अपितु 'रूपकमाला' जैसे भाषा काव्य पर भी संस्कृत में अवचूरि की रचना की है। वस्तुतः कवि कृत अवचूरि पठन योग्य है।

औपदेशिक और कथासाहित्य

कवि स्वयं तो सफल प्रचारक और उपदेशक थे ही। अन्य अमण भी प्रचार और उपदेश में सफलता प्राप्त करें इसी विचार धारा से कवि ने औपदेशिक और कथा साहित्य की सृष्टि की।

व्याख्याता का 'जनरञ्जन करना सर्वप्रथम कर्तव्य है और जनरञ्जन तब ही संभव है जबकि उपदेश के बीच-बीच में प्रासंगिक और औपदेशिक श्लोकों की छटा बिखेरी जाय और चुटकुले चुटकले या कहानियों का जाल बिखेरा जाय।

गाथा-सहस्री इसी आवेदिक और प्रासंगिक श्लोकों की पूर्ति-स्वरूप ही बना है इसमें अनेकों ग्रन्थों के चुने हुये फूलों के समान सौगन्ध्य बिखेरते हुये उत्तम-उत्तम पद्यों का चयन किया गया है और वे भी सब ही विषयों के हैं। इससे कवि की भ्रमर की तरह चयन शक्ति का श्रेष्ठ परिचय प्राप्त होता है।

कथा-साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने की दृष्टि से 'कथा-कोष' रचा गया। इसमें छोटे-मोटे रसपूर्ण अनेकों आख्यायिकायें हैं जो श्रोता को मुग्ध करने में अपनी सानी नहीं रखती हैं। किन्तु अफसोस है कि यह कुन्तकों और आख्यायिकाओं भण्डार आज हमें प्राप्त नहीं है है तो भी अपूर्ण रूप में। अतः तज्ज्ञों का कर्तव्य है कि इसकी प्राप्ति के लिये अनुसन्धान करें।

संस्कृत भाषा सर्वमान्य न थी क्योंकि सामान्य उपदेशक भी इससे अनभिज्ञ थे। अतः कवि ने सर्वमान्य दृष्टि से प्रान्तीय भाषाओं में 'रासक और चतुष्पदियों' की रचना की है; जिसकी तालिका हम ऊपर दे आये हैं। ये रास संस्कृत के काव्यों की तरह ही काव्य शास्त्रों के लक्षणों से युक्त प्रान्तीय भाषा के कलेवर से सुसज्जित किये गये हैं। कवि के रासक साहित्य में सीताराम चतुष्पदी और 'द्रौपदी चतुष्पदी' महाकाव्यों की तरह ही विराट और अनुपम सौन्दर्य को धारण किये हुये हैं। इनके रासक अन-रञ्जन के साथ विद्वज्जनों के हृदय को आह्लादित कर रसाभिव्यक्ति करने में भी समर्थ हैं। कवि ने 'कथा' के साथ प्रसङ्ग-प्रसङ्ग पर जो धार्मिक अनुष्ठानों व उपदेशों की बहार दिखाई है, उससे रसाभिव्यक्ति के साथ जीवन की उत्कट श्रद्धा और विश्व-प्रेम का भी अभ्युदय होता दिखाई देता है।

कई संस्कृतनिष्ठ विद्वान भाषा-साहित्य की उपहास किया करते हैं, वे यदि कवि के रासक-साहित्य का अध्ययन करें तो उन्हें अपनी विचार-सरणि अवश्य बदलनी पड़ेगी।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो ये 'रास' बड़े ही उपयुक्त हैं। १७ वीं शती के भाषा के स्वरूप को स्थिर करने के लिये इन रासों में काफी सामर्थ्य है। आवश्यकता है केवल वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसंधान करने की।

सङ्गीत-शास्त्र

विश्व को आकर्षित और अभिभूत करने का जितना सामर्थ्य संगीत-शास्त्र में है उतना सामर्थ्य और किसी साहित्य में नहीं। यही कारण है कि महाकवियों ने अपने काव्यग्रन्थों को छन्दस्यूत' किये हैं। पद्य में छन्दों का निर्माण संगीतशास्त्र की नैसर्गिकता और अनिर्वचनीयता प्रगट करता है। ताल, लय गण गति और और यति आदि संगीत के ही प्रमुख अंग हैं और ये ही छन्दज्ञों ने स्वीकार किये हैं। इसी कारण पद्य काव्य श्रव्य काव्य कहलाते हैं।

भाषा-साहित्यकारों ने जनता को आकृष्ट करने के लिये गेय पद्धति अपनाई। प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशीयें ख्याल, तर्जे आदि का प्रमुखता से अपनी रचनाओं में स्थान दिया। यह अनुभव सिद्ध है कि जनता ने अपने हृदय में जितना स्थान इन गेयात्मक' काव्यों को दिया उतना और किसी को नहीं।

संगीत में प्रमुख ६ राग और छत्तीस रागिनियाँ हैं और इन्हीं के भेदानुभेद, मिश्रभाव और प्रान्तीय आदि से सैंकड़ों नयी रागिनियों का निर्माण माना गया है।

कवि भी संगीत की प्रभावशालिता को पहिचान कर इसका आश्रय ग्रहण करता है और स्वच्छन्दता के साथ गंगा-प्रवाह के समान मुक्त रूप से गेय गीतों और काव्यों की रचना करता है। कवि का गेय साहित्य इतना प्रवाहशील और व्यापी है कि परवर्ती कवियों को यह कहना पड़ा कि 'समयसुन्दर रा गीतड़ा कुम्भे राणे रा भीतड़ा।'

कवि का वर्चस्व इस साहित्य पर भी फैला हुआ है। कहीं तो कवि गुरुवर्णन* करता हुआ ६ राग और छत्तीस रागिणी के

* कु० पृ० २६६.

के नाम देता है, तो कहीं भगवान † की स्तुति करता हुआ इकत्तीस रूप ४४ रागों के नाम गिनाता है तो कहीं एक ही स्तव १० रागों ‡ में बनाकर अपनी योग्यता प्रकट करता है, कहीं प्रत्येक पृथक् पृथक् रागों में मुक्तक-काव्यों की रचना करता दिखाई दे रहा है।

कवि ने अपने गीत और रासक साहित्य में प्रायः प्रत्येक राग-रागिनियों समावेश किया है। केवल राग-रागिनियें ही नहीं; सिन्ध गुजरात दूढाड मारवाड़ मेवाड़ी, मालवी आदि देशों की प्रसिद्ध देशियों का समावेश कर अपने ग्रन्थों को 'कोष' का रूप प्रदान किया है। कवि के द्वारा गृहीत व निर्मापित देशियों की टेक पंक्तियों को आलम्बन कर कवि ऋषभदास, नयसुन्दर आदि अनेक परवर्ती कवियों ने उपयोग किया है।

कवि की राग-रागिनियों की विशदता का आस्वादन करने के लिये देखिये सीताराम चौपाई आदि रासक और तत्सम्बंधीय अप्रेल जैन गुर्जर कविओ भाग १।

अनेक भाषा-ज्ञान

प्राकृत संस्कृत, सिन्धी मारवाड़ी, राजस्थानी हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं पर कवि का अच्छा अधिकार था। कवि ने इन प्रत्येक भाषाओं में अपनी रचनायें की हैं। इन प्रत्येक भाषाओं के ज्ञान का महत्त्व भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अत्यधिक है।

भाषा पर अधिकार होने के पश्चात् रचना करना सरल है किन्तु दो भाषाओं में संयुक्त रूप में रचना करना अत्यन्त ही दुष्कर है। समसंस्कृत और प्राकृत भाषा में रचना करना वैदग्ध्य का सूचक है। कवि इन दोनों ही भाषाओं में समान रूप से अपनी पटुता दिखलाता है —

† कु० पृ० ११। ‡ भ० पृ १४६।

गयुं दुःखनासी, पुनः सौम्यदृष्ट्या,
थयु सुखस्य स्फूर्त्ति, यथा मेघवृष्ट्या ।१।
जिके पार्श्व केरी, करिष्यन्ति भक्तिं, –
तिके धन्य बाढ, मनुष्या प्रशक्तिम् ।
मही भाग्य येसा, यथा वीतरागाः,
सुखी मांहि मेल्या, नमद् देवनागाः ।२।
तुमे विश्वमांहे, महाकल्पवृक्षा,
तुमे मध्य सौख्यं, मनोऽभीष्टदक्षा ।
तुमे माय बाप, प्रियाः स्वामिरूपाः,
तुमे देव मोटा, स्वयम् स्वरूपाः ।३। आदि
[पार्श्वनाथाष्टक कु० पृ० १६१]

कवि अम्मद राजस्थानी होता हुआ भी 'सिन्धी' भाषा पर अच्छा अधिकार रखता है । देखिये कवि का पद्य—

"मरुदेवी माता इवें आखइ, इदर उदर किवनु मुखइ ।
आउ आपाइड़ कोल ऋषभजी, आउ असाड़इ कोल ।१।

× × ×

मिट्ठा मे मेवा देंडु देवां, आउ इकडुं येमल खेमां ।
सातां सुख परमेस ऋषभजी, आउ असाड़इ कोल ।२।

× × ×

आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, बही बेडा गोदी में सुख पावां ।
मम असाडा बोल ऋषभजी, आउ असाडा कोल ।७।

तु जगजीवन प्राण आधारा, तूं मेरा पुत्र बहुत पियारा।
ऐसे वचन बोलत ऋषभजी, आउ असाढा कोल।८।"

[कु० पृ० ६१]

* * *

"साहिब महंडा वगी करति, आ रथ वहीय आवंदा है महंडा।
नेमि महंकुं भावदा है।
भावदा है महंकु भावंदा है, नेमि असाडे भावंदा है।१।
आया तोरण छाल असाडा, पशुय देखि पछिताउदा है महंडा।२।
ए दुनिया सब खोटो यारों, धरमड से दिलु लाउदा है महंडा।३।
छडी गया मीनो दइ करवि, आडु किलकुँ आवंदा है महंडा।४।
चोड़ असाडइ संयम लिद्धा, सच्चा राह सुणावंदा है महंडा।६।
ऐसे राजुल राणी आखै, संयम महंकु सुहावंदा है महंडा।७।

* * *

[नेमिस्तव कु० पृ० १३२]

इसी प्रकार मृगावती चतुष्पदी तृतीय खण्ड नवमी ढाल सिन्धी भाषा में ही प्रथित है।

कवि ने सर्व प्रथम राजस्थानी में ही लेखनी चलाई, किन्तु ज्यों ज्यों उसके भ्रमण का क्षेत्र विस्तृत होता गया त्यों-त्यों उसका भाषा-ज्ञान भी विस्तृत होता गया और वह प्राचीन हिन्दी गुजराती सिन्धी आदि में भी साहित्य के भण्डार को भरता गया। प्राचीन हिन्दी राजस्थानी और गुजराती सम्मिश्रित तो प्रस्तुत ग्रन्थ है ही।

प्रस्तुत-संग्रह

प्रस्तुत संग्रह क्या भक्त की दृष्टि से क्या उपदेशक की दृष्टि से क्या उपदेश-पदों की दृष्टि से क्या क्रियावादियों की दृष्टि से क्या अध्यात्मक दृष्टि से क्या लोकोक्तियों की दृष्टि से क्या ऐतिहासिकों की दृष्टि से क्या संस्कृत-प्राकृत के विद्वानों की दृष्टि से अर्थात् सर्वांग दृष्टि से अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। भक्त की दृष्टि से देखिये तो चौबीसी, बीसी तीर्थंकरों के स्तव तीर्थ-स्तव, प्राचीन महर्षियों के गीत, सद्गुरुओं के गीत आदि की सामग्री इतनी भरी पड़ी है कि भक्त इसी गंगा की पावन-धारा में डुबकियां लगाता चला जाय आराध्यों और सद्गुरुओं को प्रसन्न करता चला जाय अर्थात् इस संग्रह में इतनी सामग्री है कि सबका अध्ययन कर हृदयंगम करने में भक्त असमर्थ ही रहेगा। भक्त की भक्ति के लिये संग्रह के कुछ गीत और स्तवन ही पर्याप्त हैं। उदाहरण स्वरूप सुविधिनाथ का स्तवन ही देखिये :—

प्रभु तेरे गुण अनन्त अपार।
सहस रसना करत सुरगुरु, कहत न आवे पार।प्र०।१।
कौन अम्बर गिणै तारा, मेरु गिरी को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कौन विचार।प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाख्यु, सुविधि जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम आधार।प्र०।३।
(सुविधि जिन स्तवन राग-केदार पृ० ७)

प्रभु के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कवि की लेखनी का आस्वादन कीजिये —

पूरण चन्द जिसौ मुख तेरो, दंत पंक्ति मचकुंद कली हो।
सुन्दर नयन तारिका शोभत, मानु कमल दल मध्य अली हो।२।
(अजितजिन स्तवन)

भक्त कवि के कोमल-हृदय का अवलोकन कीजिये —
तुम मुँ विचि अन्तर घणउ, किम करूँ तोरी सेव।
देव न दीधी पांखड़ी, पणि दिल में तूँ इक देव ॥२॥
(सीमन्धर गीत)
विधा पांख बिना किम वांदूं, पणि माहरूँ मन त्यांह रे ॥२॥
(बाहुजिन गीत)
पणि मुझ नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो चाली जाय पिछाण।
तुमे नीरागी निसनेही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण॥
(अजितवीर्य जिन गीतम्)
अहो मेरे जिन कूँ कुण ओपमा कहूं।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहुँ।अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूं।
जलद दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण तउ हूं किम सद्हुं।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, संख कुटिलता बहु।
समयसुंदर कहइ अनत तीर्थंकर, तुम मइं दोष न लहुँ।अ०।३।
(अनन्तजिन गीतम्)

प्रभु-दर्शन से कवि का मन-मयूर नाच उठता है—
तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चन्द चकोरड़ा।

दीप पतंग तणइ परि सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो।
हुं अत्यन्त तोरी रागिणी सुपियारा हो।
तु काइ पै मुझ छेह; नेम सुपियारा हो।१।
संगत तेसु कीजिये, सु० मल सरिखा हुवे जेह; ने० सु०।
आवटणु आपणि सहै, सु० दूध न दाझण देय; ने० सु०।२
ते गिरुया गुणवतजी, सु० चंदन अगर कपूर; ने० सु०।
पीड़ता परिमल करै, सु० आपइ आणंद पूर; ने० सु०।३।
मिलवां सुं मिलीयै सही, सु० जिम बापीयडो मेह; ने० सु०।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी, सु० आम मिलै सुमनेह; ने० सु०।४।
हुं सोना नी मूंदड़ी, सु० तु हिव हीरो होय; ने० सु०।
सरिखइ सरिखइ जउ मिलइ, सु० तउ ते सुंदर होय; ने० सु०।५।
(नेमिस्तव)

× × ×

अनुराग के साथ साथ कवि राजीमती पर गौतम के शब्दों द्वारा जिस सरणि से वियोग एवं विछोह का वर्णन करता है; वह सचमुच में साहित्य-निधि में एक अनमोल रत्न है। वियोग सम्बन्धित अनेकों गीत इस समय में संग्रहीत हैं। पाठकों को अवलोकन कर रसास्वादन कर लेना चाहिये।

कवि के हृदय में गुरु भक्ति और गच्छनायक के प्रति अतूट श्रद्धा थी। कवि ने दादा साहब श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिन कुशलसूरि जी के बहुत से स्तवन बनाए हैं। श्री जिनकुशलसूरि जी

पूरब चन्द जिसौ मुख तेरौ, दंत पंकि मचकुंद कली हो ।
सुन्दर नयन तारिका शोभत, मानु कमल दल मध्य अली हो ।२।
(अजितजिन स्तवन)

भक्त कवि के कोमल-हृदय का अवलोकन कीजिये—

तुम मुं विचि अन्तर घणउ, किम करूं तोरी सेव ।
देव न दीधी पांखड़ी, पणि दिल में तूं इक देव ॥२॥
(सीमन्धर गीत)

विण पांख विना किम वांद्, पणि माहरूं मन त्यांह रे ॥२॥
(बाहुजिन गीत)

पणि मुक्त नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो घणी जाण्य पिछाण्य ।
तुमे नीरागी निसनेही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण्य ॥
(अजितवीर्य जिन गीतम्)

अहो मेरे जिन कूं कुण ओपमा कहूं ।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहूं ।अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूं ।
जल दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण शठ हुं किम सदहुं ।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, सख कुटिलता बहु ।
समयसुंदर कहइ अनंत तीर्थंकर, तुम मांहि दोष न लहूं । अ०।३।
(अनन्तजिन गीतम्)

प्रभु-दर्शन से कवि का मन-मयूर नाच उठता है—

तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चन्द चकोरड़ा ।

दीप पतंग तणइ परि सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो।
हुं अत्यन्त तोरी रागिणी सुपियारा हो।
तु काइं थे मुझ छेह; नेम सुपियारा हो।१।
संगत तेसुं कीजिये, सु० जस सरिखा गुण जेह; ने० सु०।
आपटसु आपणि मरै, सु० वृष न दाम्बस देय; ने० सु०।२।
ते गिरुया गुणवंतमी, सु० चंदन अगर कपूर; ने० सु०।
पीडंता परिमल करै, सु० आपइ आणंद पूर; ने० सु०।३।
मिलतां सुं मिलीयै सही, सु० जिम बापीयड़ो मेह; ने० सु०।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी, सु० आम मिले सुसनेह; ने० सु०।४।
हुं सोना नी मूंदड़ी, सु० तु हिव हीरो होय; ने० सु०।
सरिखइ सरिखइ मउ मिलइ, सु० तउ ते सुंदर होय; न० सु०।५।

(नमिस्तव)

× × ×

अनुराग के साथ साथ कवि राजीमती एवं गौतम के शब्दों द्वारा जिस सरणि से वियोग एवं विछोह का वर्णन करता है; वह सचमुच में साहित्य-निधि में एक अनमोल रत्न है। वियोग सम्बन्धित अनेकों गीत इस समह में संगृहीत हैं। पाठकों को अवलोकन कर रसास्वादन कर लेना चाहिये।

कवि के हृदय में गुरु भक्ति और गच्छनायक के प्रति अतूट श्रद्धा थी। कवि ने दादा साहब श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिन कुशलसूरि जी के बहुत से स्तवन बनाए हैं। श्री जिनकुशलसूरि जी

के चरणों का चमत्कारी* उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है। श्री जिनचन्द्रसूरि जी के बहुत से गीत अष्टक आदि में ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ गुरु-भक्ति भी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार श्री जिनसिंहसूरि श्री जिनराजसूरि और श्री जिनसागरसूरि के पद अष्टकादिक भी बनाये हैं। श्री जिनचन्द्रसूरि अष्टक व बारहमासा गीत आदि अनेक गीत भावपूर्ण व धारावाही शब्दों में बद्ध हैं। श्री जिनसिंहसूरि के प्रति अगाध भक्ति पूर्ण पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप देखिये—

मुझ मन मोह्यो रे गुरुजी, तुम्ह गुणे जिम बावीहडउ मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चन्द चकोर सनेहो जी। मु।१।
मान सरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोही भरतारो जी। मु।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी। मु।३।
सकल सोभागी सह गुरु राजियउ, श्री जिनसिंघ सरीसो जी।
समयसुन्दर कहइ गुरु गुण गावतां, पूजइ मनह जगीसो जी। मु।४।

(कुसुमांजलि पृष्ठ ३८७)

गुरु दीवउ गुरु चन्द्रमा रे, गुरु देखाडइ वाट।
गुरु उपगारी गुरु बडा रे, गुरु उतारइ पार ॥२॥

(जिनसिंहसूरि गीत)

× × ×

इतिहास की दृष्टि से देखिये तो पृष्ठ ४२० से ४२१ तक ऐतिहासिक गीत ही गीत मिलेंगे। पृष्ठ ३४० से पृष्ठ ३४२ तक पूर्व

* "आयो आयो जी समरता दादो आयो"—कुसुमांजलि पृष्ठ ३५०

फिरङ्गी आदि की वेशभूषा का भी सुन्दर निदर्शन किया है। इसी प्रकार स्त्रियों को आभूषण की कितनी चाह होती है, इस पर गौर्वीय नारियों की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन भी कराया है। कवि द्वारा प्राकृतिक सुषमा का चित्रण प्रतिहारी का चित्रण पूजारी आवासादि का और व्यापारी का चित्रण तो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। अम्बरास शृङ्गार गीत नेमि शृङ्गार वैराग्य और चारित्र्य चूनड़ी आदि गीतों में तो उस युग के आभूषणों का भी उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये—

सिर राखड़ी काने वगड़ियों चूनी, झुमखा चूड़ा, हार, चमारका आलमाला चन्दहार नक फूल सिन्दूकी, कीटी कंदोरा मेखला मैडपी काजल मेंहदी बिछिया घुघरिया गवड़ चुन्नी, चूनड़ी नेवरी, तिलक आदि।

मुहावरों की दृष्टि से—कवि ने अपने युग में प्रचलित लोकोक्तियों का भी अपनी कृतियों में स्थान-स्थान पर, सुन्दर पद्धति से समावेश किया है इससे उन महाकवों की प्राचीनता पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। उदाहरण स्वरूप देखिये—

> आपणी करणी पार उतरणी, आप मुयाँ बिन
> सरग न जाइयइ, वातें पापड़ किमही न थाय,
> सता वह विगूता सही सोगतां कछ उर मय नाहि,
> सूंठारी पाखा ब्रिखड़ एक पाख सग सांचे रे,
> आप डूबे सारी डूब गई दुनियाँ,
> हाथिनी आँख सत्योमोरी फरकी "रंगमें भंग मचायक हो"

संगीत-शास्त्र की दृष्टि से—केवल छः राग और छत्तीस रागिनियों का ही इसमें समावेश नहीं है, प्रत्युत इसके

के परचों का चमत्कारी * उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है। श्री जिनचन्द्रसूरि जी के बहुत से गीत अष्टक आदि में ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ गुरु-भक्ति भी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार श्री जिनसिंहसूरि श्री जिनराजसूरि और श्री जिनसागरसूरि के पद अष्टकादिक भी बनाये हैं। श्री जिनचन्द्रसूरि अष्टक व भासश गीत आदि अनेक गीत भावपूर्ण व धाराबाही शब्दों में बद्ध हैं। श्री जिनसिंहसूरि के प्रति अगाध भक्ति पूर्ण पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप देखिये:—

मुझ मन मोह्यो रे गुरुजी, तुम्ह गुणे जिम बाबीहडउ मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चन्द चकोर सनेहो जी।मु।१।
मान सरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोह्या भरतारो जी।मु।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिय खिण नवि बीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी।मु।३।
सकल सोभागी सह गुरु राजियउ, श्री जिनसिंघ सरीसो जी।
समयसुंदर कहइ गुरु गुण गावतां, पूगइ मनह जगीसो जी।मु।४।

(कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३८७)

गुरु दीवउ गुरु चन्द्रमा रे, गुरु देखाडइ वाट।
गुरु उपगारी गुरु बड़ा रे, गुरु उतारइ घाट॥२॥

(जिनसिंहसूरि गीत)

× × ×

उपदेशक की दृष्टि से देखिये तो पृष्ठ ४७० से ५६३ तक औपदेशिक गीत ही गीत मिलेंगे। पृष्ठ २६७ से पृष्ठ ३६१ तक पूज

* "आयो आयो श्री समरता दादो आयो"—कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३५०

फिरङ्गी आदि की वेशभूषा का भी सुन्दर निदर्शन किया है। इसी प्रकार स्त्रियों को आभूषण की कितनी चाह होती है, इस पर गौर्जरीय नारियों की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन भी कराया है। कवि द्वारा प्राकृतिक सुषमा का चित्रण प्रतिहारी का चित्रण पूजारी, ब्राह्मणादि का और क्षपापिपी का चित्रण तो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। अष्टरङ्ग शृङ्गार गीत नेमि शृङ्गार वैराग्य और चारित्र चूनड़ी आदि गीतों में तो उस युग के आभूषणों का भी उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये—

सिर राखड़ी काने लगनियाँ, चुनी कुण्डल चूड़ा हार पमारङ्ग खालाइत्र चम्पकली नकफूल मिन्धुळी, बींटी, श्रोर मेखला वेडली कजल महँदी बिछिया पुत्रलिया गलह दुलड़ी, चूनड़ी नेवरी तिलक आदि।

मुहावरों की दृष्टि से—कवि ने अपने युग में प्रचलित लोकोक्तियों का भी अपनी कृतियों में स्थान-स्थान पर सुन्दर पद्धति से समावेश किया है इससे उन कहावतों की प्राचीनता पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। उदाहरण स्वरूप देखिये—

> आपणी करणी पार उतरणी, आप मुयाँ बिन
> सरग न जाइयइ, खातें पापड़ किमही न थाइ,
> घूता तइ बिगूता सही सांभलां काऊ उर भय नाहि,
> सूँवारी पाडा मिरइ यह बात जग जाणे रे,
> आप डूबे सारी डूब गई दुनियां,
> हारिनी आँख सलोनोरी फरकी "रंगमें भंग भयावइ हो"

संगीत-शास्त्र की दृष्टि से—केवल छः राग और छत्तीस रागिनियों का ही इसमें समावेश नहीं है, प्रत्युत इसके

साथ ही सिन्ध मारवाड़, मेड़ता मालव गुजरात आदि के प्रान्तों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशीयें रागिनियें ख्याल आदि सभी इसमें प्राप्त हो जायेंगे। गेय-प्रेमी इस सङ्गीत-पद्धति से अत्यन्त ही प्रसन्न हो उठेगा इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। उदाहरण स्वरूप जैसलमेर मण्डन पार्श्वनाथ का स्तवन ही देखिये, जो अष्ठ रागों में ग्रथित है—(पृ० १४६)।

ऐतिहासिकों की दृष्टि से—तीर्थमालायें (पृष्ठ ५४ से ६०) और तीर्थों के 'भास तीर्थों के स्तवन', घंघाणी पार्श्वनाथ स्तवन सेत्रावा स्तवन राणकपुर स्तव युग-प्रधान जिनचन्द्रसूरि—जिनसिंहसूरि-जिनराजसूरि-जिनसागरसूरि गीत और संघपति सोमजी बेलि आदि कृतियों बहुत ही महत्व रखती हैं। यदि अनुसन्धान किया जाय तो हमें बहुत कुछ नये तथ्य और नई सामग्री प्राप्त हो सकती है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो यह संग्रह महत्व का है ही। १७वीं शताब्दी की प्राचीन-हिन्दी, मारवाड़ी गुजराती सिन्धी आदि भाषाओं के स्वरूप को समझने के लिये और शब्दों के वर्गीकरण के लिये यह अत्यन्त सहायक होगा।

संस्कृत और प्राकृत के विद्वानों को भी उनके काल को मनो विनोद में व्यतीत करने के लिये इसमें प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। पहले-प्राकृत भाषा के काव्यों को ही लीजिये—

स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र (पृ० १२५), नेमिनाथ स्तव (पृ० ६१५) पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० १८२) यमकबद्ध पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० ६१८),

समसंस्कृत-प्राकृत भाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १८६)।

सम हिन्दी-संस्कृतभाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १८६)।

संस्कृत भाषा में—शान्तिनाथ स्तव (पृ० १०३), चतुर्विंशति तीर्थंकर गुरुनाम गर्भित पार्श्वनाथ स्तव (पृ० १८४), पार्श्वनाथ-

यमकमय श्लेषमय-शृंगारकमय-चक्रितशृंखलाबन्ध-कपाटशृंखलाबन्ध स्तवन-त्रिभंगीयुक्तस्तव (पृष्ठ १८६ से १९१ ११० ११४)। नानाविध श्लेषमय आदिनाथ स्तोत्र (पृ ११५) नानाविध काव्य जातिमय नेमिनाथ स्तव (पृ० ११६) समस्यामय पार्श्वनाथ वृद्ध स्तव (पृ० ११९) यमकमय पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० १२१) यमकमय महावीर वृहत्स्तव (पृ० १२२)।

अष्टक और पादपूर्ति साहित्य भी देखने योग्य है —

उदाहरणार्थ 'रत्नोक्ष ... समस्याष्टक, समस्या-गीत (पृष्ठ ४६४ से ५०० तक), पादपूर्ति रूप ऋषभ भक्तामर काव्य (पृष्ठ १०३)

समस्या-पूर्ति में कवि-कल्पना की उड़ान तो देखिये —

मस्तानाकवे देवा नीयमानाम् नभे घटान् ।
दीप्यान् दृष्ट्वा नराः प्रोचुः शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१॥
रामया रममाणेन कामोद्दीपनमिच्छता ।
प्रोक्तं तस्याः पयोधे शतचन्द्रनभस्तलम् ॥२॥
हस्त्यारोहशिरस्त्राणमेघिमाशोभ्य संगरे ।
पतितो विहस्तोऽवदीत् शतचन्द्रनभस्तलम् ॥४॥
सकपन रघुरस्माद्भ्रान्तदृष्टिरितस्ततः ।
अपश्यत्सोऽपि सर्वत्र शतचन्द्रनभस्तलम् ॥६॥

इस प्रकार अनेक विध दृष्टियों से देखने के पश्चात् हम निर्विवाद कह सकते हैं कि असाधारण मेधा-सम्पन्न सर्वतोमुखी प्रतिभावान था और था एक साहित्य-पथ का महायात्री भी। इस कवि की न जाने कितनी कृतियाँ इस साहित्य-संसार से विदा हो चुकी होंगी और न जाने आज जो प्राप्त हैं, वे भी सरस्वती–

भण्डारों में किस रूप में पड़ी-पड़ी विनाश रही होंगी ! नाहटा बन्धुओं ने कवि के फुटकर संग्रह को संगृहीत करने का और परिश्रम उठाकर प्रकाश में लाने का जो प्रयत्न किया है एतदर्थ वे साहित्य-समाज की ओर से अभिनन्दनीय हैं।

उपसंहार

अन्त में मैं कवि की प्रतिभा के सम्बन्ध में वादीन्द्र हर्षनन्दन कवि ऋषभदास और पंडित विनयचन्द्र कृत स्तुति द्वारा पुष्पाञ्जलि अर्पित करता हुआ अपनी भूमिका समाप्त करता हूँ—

"तच्छिष्य-मुख्यवर्याः, विद्वद्वर-समयसुन्दराह्वयः।
कलिकालकालिदासाः, गीतार्था ये उपाध्यायाः।
प्राग्वाटज्ञातिवंशाः, षड्भाषागीतिकाव्यकर्तारः।
सिद्धान्तकाव्यटीका—करणाद्यज्ञानहर्तारः।
(उत्तराध्ययन टीका)

× × ×

वचनकला-काव्यकला, रूपकला-माम्परजसनकलानाम्।
निस्सीमाश्रविभूयान्, सदुपाध्यायान् भुताध्यायान्।

× × ×

तेषां शिष्या मुख्या, वचन-कला कविकलासु निष्णाताः।
तर्क-व्याकृति-साहित्य-ज्योतिः समयतत्त्वविदः।
प्रश्नप्रकर्षः प्राग्वाटे, इति सत्यं व्यभायि यः।
येषां हस्तात् सिद्धिः, सन्ताने शिष्य-शिष्याद्यौ।
अष्टौ लक्षानर्थानेकपदे प्राप्य ये तु निर्ग्रन्थाः।
संसारः सक सुभगाः, विशेषतः सर्वराजानाम्।
(सम्पाज्ञव्याख्यान पद्धति)

× × ×

येषां वाग्विलासास्ते, गीतकाव्यादियोजना।
प्रकाशते कलौ शश्वत्, स्वगच्छ-परगच्छयोः ।

× × ×

तेषां मुख्या शिष्याः, चतुर्थपरमेष्ठिनः कलाचतुराः।
कलितकलाकलिरसा; उपास्तसरस्वतीरूपाः।

× × ×

सुसाधु हंस समयो सुरचन्द, शीतल वचन जिम शारद चन्द।
ए कवि मोटा, बुद्धि विशाल, ते आगलि हुं मूरख बाल॥

(कवि ऋषभदास)

ज्ञानपयोधि प्रबोधि वारे, अभिनव शशिहर भाय,
कुमुद चन्द्र उपमान चढ़ेरे, समयसुन्दर कविराय।
स्वपर शास्त्र समरपिवारे, सार अनेक विचार,
भवि कलिन्दिका कमलिनी रे, उल्लास दिनकर।

(प. विनयचन्द्र)

श्री नाहटा जी ने महोपाध्याय समयसुन्दर के सम्बन्ध में लिखने का आग्रह कर मुझे कवि के यशोगान का अवसर प्रदान किया इसके लिये मैं नाहटा बन्धु को हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

२१-८-१९५५
विवेक वर्धन सेवाश्रम
महासमुन्द (म० प्र०)

शुभाशंसु—
महोपाध्याय विनयसागर

अनुक्रमणिका

सं०	कृति नाम		आदि-पद	पृष्ठाङ्क
१	श्रीवर्धमान चौबीसी स्त	गा ३	वीर जपि जपि जिनवर०	१
२.	श्रीअनागत चौबीसी स्त	गा ६	८ अनागत तीर्थंकर०	१
३	श्री अतीत चौबीसी स्त	गा ५	केवलज्ञानी नइ निर्वाणी	२

चौबीसी

४	ऋषभजिन स्तवन	गा ३	ऋषभदेव मोरा हो ऋ०	३
५.	अजितजिन स्तवन		अजित तु अतुल बली०	३
६	संभवजिन स्तवन		थारो रूप सुन्दर सोहई०	४
७	अभिनंदनजिन स्तवन		मेरे मन तू अभिनंदन०	४
८.	सुमतिजिन स्तवन	,	जिनजी वारो हो वारो	५
९.	पद्मप्रभजिन स्तवन		मेरो मन मोह्यो मूरतियाँ	५
१०	सुपार्श्वजिन स्तवन	,	वीतराग तोरा पाय शरणां	६
११	चन्द्रप्रभजिन स्तवन		चन्द्रानगरी तुम्ह अवतार जी	६
१२.	सुविधिजिन स्तवन		प्रभु तेरे गुण अनंत अपार	७
१३	शीतलजिन स्तवन	,,	हमारे हो साहिब शीतल०	७
१४	श्रेयांसजिन स्तवन	,,	सुरतरु सुन्दर श्री श्रेयांस	८
१५	वासुपूज्यजिन स्तवन		भविक तुमे वासुपूज्य नमो	८
१६	विमलजिन स्तवन		जिनजी कु देखि मेरा मन०	९
१७	अनन्तजिन स्तवन	गा ४	अनंत तेरे गुण अनंत	९
१८.	धर्मजिन स्तवन	गा ३	अलख अगोचर तू परमे०	१०

संकेत—स्त.=स्तवन, गी.=गीत गा=गाथा ग.=गर्भित मं=मंडण

१९. शान्तिजिन स्त० गा० ४	शांतिनाथ सुणउ तू साहिब	१०
२० कुन्थुजिन स्तवन गा० ४	कुन्थुनाथ कु करू प्रणाम	११
२१ अरजिन स्तवन गा० ३	अरनाथ अरियण गंजणं	११
२२ मल्लिजिन स्त०	मल्लिजिन मिस्यउ री	१२
२३ मुनि सुव्रत स्त ,,	सखि सुन्दर रे पूजा सतर०	१२
२४ नमिजिन स्त०	नमु नमु नमि जिन चरण०	१२
२५. नेमिजिन स्त	यादवराय जीवे तू कोडि०	१३
२६. पार्श्वजिन स्त० गा० ४	माई आज हमारइ आणंदा	१३
२७. वीरजिन स्तवन गा० ३	प्रमहावीर मो कछु देहि दान	१४
२८. कलश ,,	तीर्थंकर रे चौबीसे मैं संस्त०	१४
(र० सं० १६५८ अहमदाबाद)		
२९. चौबीसजिन सवैया २५	नाभिराय मरुदेवी नंदन	१५

<u>ऐरवत क्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि</u> (प्रथम के ७ स्त० प्राप्त नहीं)

३० युक्तसेणजिन गीतम् गा० ३	युक्तसेण तीर्थंकर सेवी	२२
३१ अजितसेणजिन गी	आवइ चौसठ इन्द्रा	२२
३२ शिवसेनजिन गीतम् ,,	इगसमउ तीर्थंकर शिवसेन	२३
३३ देवसेनजिन गीतम् ,,	साहिब तू है सांमलउ	२३
३४ नक्षत्र सत्यजिन गी. ,,	नमूं अरिहंतदेव नक्षत्र०	२३
३५. असंख्यजिन गीतम् ,,	तेरमउ असंख्य तीर्थंकर	२४
३६. अनन्तजिन गीतम् ,,	अहो मेरे जिन कु कृपा कर०	२४
३७. उपशान्तजिन गीतम् ,,	वार पनरमा वाहला आगमिक	२५
३८. गुप्तिसेणजिन गीतम्	सोलमा श्री गुप्तिसेण	२५
३९. अतिपासजिन गीतम्	सतरमउ श्री अतिपास तीर्थ	२६
४० सुपासजिन गीतम्	सुपास तीर्थंकर साचउ सही री	२६
४१ मरुदेवजिन गीतम् ,,	ओगणीसमउ मरु० अरिहंत	२७
४२ श्री सीधरजिन गीतम् गा० २	हिव हूँ वांदू री वीसमउ श्री०	२७

४३ सामकोठजिन गीतम् श्रीसामकोठ तीर्थंकर देवा २८
४४ अग्गिसेणजिन गीतम् „ अग्गिसेण तीर्थंकर उपदिसइ २८
४५ अग्गपुत्तजिन गीतम् वीतराग वारस्सु रे हिव हूँ २८
४६ वारिसेणजिन गीतम „ वारसेण तीर्थंकर प वन्दी० २९
४७ कवरा गा० २ (र. स १६९७) गाथा गायरी पेरवत तीर्थे गाथा २९

विहरमान वीसी स्तवनाः

४८. सीमंधर जिन गी० गा० ३ सीमंधर सांमलउ ३०
४९. युगमंधरजिन गी० गा० ४ तू साहिब हूँ सेवक तोरउ ३०
५० बाहुजिन गीतम् गा० ३ बाहुनाम तीर्थंकर पय सुम्ह ३१
५१ सुबाहुजिन गीतम् „ सामि सुबाहु तू अरिहंत देवा ३१
५२. सुजातजिन गीतम् सुजात तीर्थंकर ताहरी ३२
५३ स्वयंप्रभ गीतम् स्वयंप्रभ तीर्थंकर सुन्दर प ३२
५४. ऋषभानन गीतम् पय १ ऋषभानन अरिहंत नमो ३२
५५ अनन्तवीर्य गीतम „ अनतवीरिज आठमउ तीर्थंकर ३३
५६ सूरिप्रभजिन गीतम् श्री सूरिप्रभ सेवा करिस्युं ३३
५७ विशालजिन गीतम् „ जिनजी वीनति सुणाउ तुम्हे ३४
५८ वज्रधरजिन गीतम् गा० २ वज्रधर तीर्थंकर वांदू पाय ३४
५९. चन्द्राननजिन गी० गा० ३ चन्द्रानन जिणचन्द ३५
६० चन्द्रबाहुजिन गीतम् „ चन्द्रबाहु चरण कमल ३५
६१ भुजंगजिन गीतम् भुजंग तीर्थंकर सेविवइजी ३६
६२. ईसरजिन गीतम् ईसर तीर्थंकर आगइ ३६
६३ नेमिजिन गीतम् विहरमान सोलमउ तू ३७
६४ वीरसेनजिन गीतम् वीरसेन जिन मी सेवा कीजइ ३७
६५. महाभद्रजिन गीतम् „ महाभद्र भवारमउ अरिहंत ३७
६६ देवयशा जिन गीतम् „ देवजसा जगि चिरजयउ ३८
६७. अजितवीर्यजिन गी० „ हां मेरी माई हो अजितवीरज ३८

६८. कलश गा० ७ बीस विहरमान गाथा ३६
(अहमदाबाद १६६७ सं०)
६६. बीस विहरमान स्त० गा० २३ प्रणमिय शारद माय ४०
(४ बोल गर्भित)
७० गा ४ बीस विहरमान जिनवर रायाजी ४२
७१ श्री सीमंधर स्वामि स्त० ५ पूर्व सुविदेह पुष्कल विजय० ४२
(संस्कृत)
७२. गा० ६ धन धन क्षेत्र महाविदेहजी ४६
७३ ,, गा० ६ विहरमान सीमंधर स्वामी ४७
७४. ,, गा० ३ चंदलाइ एक करु अरदास ४७
७५. ,, गा० ३ सीमंधर जिन सांभलउ ४८
७६ गा० ७ स्वामि तारि नइ रे मुझ ४८
७७ ,, गा० ६ पूरव महाविदेह रे ४६
७८. सीमंधर स्वामि गी गा० ३ सामि सीमंधरा तुम्ह मिल० ५०
७६. युगमंधर जिन गी गा० ५ तू साहिब हूँ तारउ ५०
८ शाश्वतजिन चैत्य प्रतिमा
स्तवन गा० १८ ऋषभानन ऋषभान १
८१ तीर्थमाला वृहत्स्व श्लोक १६ श्री शत्रुंजय शिखरे (संस्कृत) ५४
८२ गा १६ सेत्रुंजे ऋषभ समोसर्या ५६
८३. गा १ श्री सेत्रुंज गिरि शिखर ५८
८४. तीरथ भास गा ६ सखि चालउ हे (२) चतुर सु ६०
८५. अष्टापद तीर्थ भास गा ६ मोरूं मन अष्टापद सूं मोह्यउं ६१
(स १६७८ अहमदाबाद)
८६ अष्टापद तीर्थ भास गा ५ मनडूं अष्टापद मोह्यूं माहरूं रे ६१
८७ मंडन
(शांतिजिन) गीतम् गा ४ सो जिनवर प्रिय ...... मोहि० ६४

८८. श्री शत्रुञ्जय आदि० भास
गा० ५ आसन रे सखि शत्रुञ्जय० ६५
८९. गा ११ (स १६४८) सफल तीरथ माहि सु दरु ६७
९० , गा ६ (स १६५८) मुझ मन उलट अति घणाउ ६८
९१ , (आलोयणा ग) स्त
गा० ३२ बेकर जोड़ी वीनयू जी ७०
९२. ,, भास गा० ५ सामी विमलाचल सिणगार० ७२
९३ म्हारी बहिनी हे० सुणि एक० ७४
९४ गीतम् गा० ३ इया मो जनम की सफल० ७६
९५. ३ आपम की मेरे मन मगति० ७६
९६ , गा० ४ क्यों न भय हम मोर विमल० ७७
९७ श्री आबू तीर्थ स्त० गा० ७ आबू तीरथ भेटियइ ७७
(र० सं० १६५७)
९८. श्री आबू आदीश्वर भास आबू पर्वत रूयडउ म रे'मर ७८
गा० ७ (स० १६७८)
९९ श्री प्रभु दायक युगा० गी० सफल नर जन्म प्रभु आज० ८०
गा० ३
१०० पुरिमताल आदि० मास ,, ४ भरत नइ धाइ मोकलभइ रे ८१
१०१ आदि देवचंद गीतम् गा० ? नाभि राया कुलचंद ८०
१०२. राणपुर आदिजिन स्त० ,, ७ राणपुरउ रलियामणउ रे लाल ८२
(सं० १६७२)
१०३ बीकानेर (चौवीसटा) स्त० भाव भगति मन आणी घणी ८३
गा० १५ (सं० १६८३)
१०४ श्री विक्रमपुर आदिनाथ स्त श्री आदीसर भेटियइ ८५
गा ११
१०५. गणधरवसही , स्त प्रथम तीर्थंकर प्रणमिये हूँ० ८६
गा १२ (सं. १६८० जैसलमेर)

१०६	सेत्रावा मं० आदि० स्तवन गा० १६ (सं० १६५५)	मूरति मोहन वेलड़ी	८८
१०७	ऋषभ हुलरामणा गी. गा ४	सूता ऋषभजी घर आवत रे	९०
१०८	सिरधी मात्र आदिजिन स्त गा० १०	मरुदेवी माता इम भाखइ	९१
१०९	सुमतिनाथ वृहत्स्त० गा १३	प्रह ऊठी नइ प्रणमु पाय	९२
११०	पाल्हणपुर म० ४४ रागमय पार्श्व स्तवन गा० १२	सेवक श्री चन्द्रप्रभ स्वामी	९३
१११	चन्द्रवारि मंडन चन्द्रप्रभ भास गा० २	चन्द्र० भेटण मई पदधारि	९६
११२	श्री शीतलनाथ० स्त गा ३	मुझ मीठो शीतलनाथ जी	९६
११३	,, गहूंअर्ले गीत गा० ३	कहुं सखि कवण सरीखउ	९७
११४	श्री अमरसर म० शीतलजिन स्तवन गा० १५	मोरा साहिब हो श्री शीतल०	९७
११५	मेड़ता मं० विमल० स्तवन गा १५	विमलनाथ सुणौ वीनति	१००
११६	आगरा म० विमलनाथ भास गा० ४	देव जुहारण देहरइ आवी	१०२
११७	श्री शांतिनाथ गीतम् गा ३	शांतिनाथ भजे (संस्कृत)	१०३
११८	पाटण शांतिनाथ पञ्च कल्याणक गर्भित देवगृह वर्णन युक्त दीर्घ स्तवनम् गा० २५	(प्रारम्भिक १६ गाथा अप्राप्त)	१०४
११९	जेसलमेर म० शांतिजिन स्तवन गा० ७	अष्टापद हो अमरलो माता	१०६
१२०	श्री शांतिजिन स्तवनम् गा ६	सुन्दररूप सुहामणो	१०७
१२१	श्री शांतिनाथ वृह. गी. गा. ४	शांतिकर घर सोहामणो	१०८
१२२	श्री शांतिजिन स्तवनम् गा. ५	सुणताई रे सुणताई रे	१०९

१२३ „ गा ३ आगण बन्न पत्स्या री ११०
१२४ श्री गिरनारतीरथ भा० गा ८ श्री नमिसर गुणनिलय ११०
१२५ श्री गिरनार नेमिनाथ बारमा दूरि थकी मोरी वन्दणा १११
भास गा० ४
१२६ श्री गिरनार नेमिनाथ बारमा परविस प्रभु मोरी वंदणा ११२
बारणा भास गा० ४
१२७ श्री सौरीपुर मडन नेमि भास सौरीपुर यात्र करी प्रभु तेरी ११२
गा. ४
१२८ नडुलाई मं नेमि भा गा. २ प्रभु इ निरख्यउ आदर ११३
१२९ श्री नेमिराजुल गी० गा ६ चांपा ते रूपइ रूयडा ११३
१३० , गा ६ दीप पतंग तणी परइ सुणि
प्यारा हो ११४
१३१ गा ५ नेमजी रे सामलियउ
सोभागी रे ११५
१३२ श्री नेमिनाथ गीतम् गा ५ नेमजी सुं राउ रे साची
मोतडी ११६
१३३ श्री नेमिनाथ फाग गा ८ मास वसंत फाग खेलत प्रभु ११७
१३४ श्री नेमि सोहला गी गा ८ नेमि परणेवा चालिया ११७
१३५ श्री नेमि „ गा. ५ सुगति पूठारी म्हारेउ ११८
१३६ नेमिनाथ फाग गा. ११ आइ सुन्दर रूप सुहामणउ ११९
१३७ „ बारहमासा गा १४ सखि आवण आवण मास १२०
१३८ „ गीतम् गा २ प्रांइ प्रीति तोडइ १२२
१३९ „ „ गा ३ ऐसउ सखि नेमि कउ आवइ १२२
१४० ३ तोरण थी रथ फेरि चाले १२३
१४१ „ ३ मोहूँ पिउ बिन क्युं सखि १२३
१४२ „ २ एक बीनती सुणो मेरे मीत हो १२४
१४३ „ „ ३ यादव वंश चाखि जोवता की १२४

१६५. चौद्रवपुर सहसफणा पार्श्व
स्त० ६ (सं १६८१) चौद्रपुरइ माज महिमा घणी १५३
१६६. „ „ स्त गा २ चाकत चौद्रवपुरे १५४
१६७ श्रीस्तंभन पार्श्व स्तो गा ८
(माकृत) नमिर सुरासुर कयर राय० १५४
१६८. „ स्त गा. ७ सक्ल सयल सुख संपदा
हेतु माखी १५७
१६९ „ „ गा ४ सफल भेयउ नर जन्म १५८
१७० „ „ गा ५ चेकर जोडी वीनवु रे १५६
१७१ „ „ गा ३ मले भेट्यउरे पास जियोसर १५६
१७२. कंसारी-त्रंबावती मंडन मीड
भंजन पार्श्व स्त गा ४ घाशन सखी चित चाइ सू १६०
१७३ „ „ „ ४ मीड भंजण सु श्री अरिहंत १६१
१७४ „ „ „ ३ मीड भंजन तुम पर वारी हो १६१
१७५. „ „ „ „ मीड भंजन रे दुख गमन रे १६१
१७६ नाकोड़ा पार्श्वनाथ स्त गा ८ आपणे घर बइठा लील करो १६२
१७७ सरेश्वर पार्श्व स्तवन ५ परता पूरइ पृथ्वी तणा १६३
१७८. „ ३ सकलाप पारस संखेश्वरउ १६४
१७९. „ , ३ संखेश्वरउ रे आगउ तीरथ० १६४
१८० , ५ सामउ देव तउ संखेश्वरउ १६५
१८१ श्री गौडी पारवना स्त ७ गौडी गाजइ रे गिरूयउ पारस १६५
१८२. , ७ ठाम ठाम ना संघ आवइ यात्रा १६६
१८३ ३ परतिख पारसनाथ सूँ गौडी १६७
१८४ „ „ ३ तीरथ भेटन गइ सखि हुं० १६७
१८५ „ ३ गउडी पारसनाथ हुँ चाम्न १६८
१८६ „ „ ३ गउडी पारसनाथ सूँ गाजइ १६८
१८७. मामा पारसनाथ स्त० „ २ मामउ पारसनाथ मई भेट्यउ १६८

१८८ „ „ „ ३ मामा पारसनाथ मर्लु मन्द १६६
१८९ श्री सेरीसा पारस „ ३ सकलाप मूरति सेरीसा १६६
१९० श्री नखोल पार्श्व „ „ ३ पयावसी सिर ऊपरि १७०
१९१ श्री चिन्ता पार्श्व „ ७ आस्यो मन सूधी आसता १७०
१९२ „ , ३ चिन्तामणि म्हारी चिंता चूरि १७१
१९३ सिकन्दरपुर „ , ४ स्यामल वरण सुहामणी रे १७१
१९४ अमीझरा पार्श्व भास „ ४ आवउ देव जुहारउ अमी-
झरउ पास १७२
१९५ „ „ ४ आवउ जुहारउ रे अमीझ
रउ पास १७२
१९६ श्री नारंगा पार्श्व स्त गा ९ पारस कृपा पर, पाप रखन. १७३
१९७ „ „ „ ३ पाटण मांहि नारंग पुरउ री १७४
१९८ „ „ „ ४ पाटण में परसिद्ध भणी १७५
१९९ वाडी पार्श्वनाथ भास „ ३ अरमुख वाडी पास जी १७५
२०० मङ्गलोर नव पल्लव पार्श्व
भास „ ५ नवपल्लव प्रभु नमयो भिरजमर १७६
२०१ देवका पाटण दादा
पार्श्व० भास „ ४ देवकइ पाटण दादउ पास १७७
२ २. अमीझरा पार्श्व गीतम्, ३ मले भेटयउ पास अमीझरउ १७७
२०३ सामला पार्श्व गीतम् „ ३ सामल देव तउ प सामलउ १७७
२०४ अन्तरीक पार्श्व गीतम् „ २ पार्श्वनाथ परतिख अंतरीक १७८
२०५ बीबीपुर चिंतामणि पार्श्व
गीतम् „ ३ चिंताम आवउ देव जुहारस १७८
२०६ मगडुम पार्श्व. गीतम् „ ३ मगडुम भेटियउ हो १७८
२०७. तिमरीपुर पार्श्व गीतम् „ २ तिमरीपुर भेट्या पास
जिनेसर १७९
२०८. वरकाणा पार्श्व गीतम् „ ३ आगरउ तीरथ तूं वरकाणा १७९

२०९. नागौर पार्श्व स्तवनम् „ ८
(सं० १६६१ चै व ५) पुरिसादानी पास १८०
२१० पार्श्व लघु स्तवन „ ४ देव जुहारण देहरइ चाली० १८१
२११ संस्कृत प्राकृत मय पार्श्व
स्तो० गा ९ समवसरण-विभाण सभाण मोहं १८२
२१२. तीर्थंकर (२४) गुरु नाम
गर्भित पार्श्व स्त गा ७
(सं १६५१ खंभात) वृषभ धुरंधर तपोवन वर १८४
२१३. ईर्यापथिकी वि गर्भित पार्श्व
स्त० गा ४ मणुया वि सम विहुयर १८५
२१४ पार्श्वनाथ लघु स्त गा. ६ स प्रभुस्यापि बिना नाम १८६
२१५. „ यमकबद्ध स्तवनम् गा ८ पार्श्वप्रभु केवल मासमानं १८७
२१६ श्लेषमय चिंतामणि पार्श्व तपोपेत तपो लक्ष्म्या १८८
स्तवन गा ५ सं०
२१७. शृङ्खलामय पार्श्वनाथ स्तवन प्रणमामि जिनं कमला सदनं १८९
गा ९ सं०
२१८. श्री शंखेश्वर पार्श्व लघु स्त० श्री शंखेश्वर मंडन हीरं १९०
गा ५ सं
२१९. अमीझरा पार्श्व० पूर्व कवि अस्सुवरास्पाविदिशि देवतारमा १९१
भणीत प्रपूर्व स्त० गा ७
२२० पार्श्वनाथ यमक मय स्तोत्र प्रणत मानव मानव मानवं १९२
गा ५
२२१ पार्श्वनाथ शृङ्गारक मय कमनकंद निकंदन कर्म्मदं १९३
स्तवनम् गा १०
२२२. „ हारबद्ध शृङ्गाटक परामहे परमतं कृत सातघातं १९४
स्तवनम् गा ८
२२३. संस्कृत प्राकृत भाषामय भवं भाग भेन्पु प्रमो
पार्श्वनाथाष्टक गा ८ पार पयम् १९५

२२४ अष्ट प्रातिहार्यगर्भ पार्श्व स्त० गा ६ — कनक सिंहासन सुर रचित — १९८
२२५. पार्श्व पञ्च कल्याणक स्त० गा ८ — श्री पास जिनेसर सुख करणा — १९९
२२६ पार्श्वजिन (प्रतिमा स्था०) स्त० गा ७ — श्री जिन प्रतिमा हो जिन सारखी कही — २००
२२७ पार्श्वजिन (हृष्टान्तमय) स्त गा ६ — दरसण करि हियडइ मांहि अति घणउ — २००
२२८. महावीर जिन (जेसलमेर) वीनति स्त० गा ११ — वीर सुणो मोरी वीनती — २०२
२२९. „ (सांचोर) स्त गा. १४ (सं० १६७७) — धन्य दिवस मई आज सुणउ — २०४
२३० महावीरजिन (मोहणा ग्राम) स्त गा ३ — महावीर मेरउ ठाकुर — २०६
२३१ श्री महावीर देव गीतम् गा ४ — स्वामी मुँ मइ तारो मन पार उतारउ — २०७
२३२. „ „ गा ३ — नाचति सुरिआभ सुर — २०७
२३३ „ „ गा. ६ — हां हमारे वीरजी कुण रमणी पद — २०८
२३४ सुरिआभ नाटक गीत गा २ — नाटक सुरविरचित सुरि० — २०९
२३५. श्रेणिक विज्ञप्ति महावीर गीतम् गा. ४ — कृपानाथ तई कुण हू कृ पर्यंत री — २०९
२३६. महावीर (सुरिआभ नाटक) जिन गीतम् गा ? — रचति वेष करि विशेष — २१०
२३७ श्री महावीर पद् कल्याणक स्त० गा २१ — परम रमणीप गुण रयण गण सागरं — २११

२३८. छन्द जातिमय वीतराग स्तव गा २२ सं० — श्री सर्वज्ञ जिन लोच्ये — २१५
२३९. शास्वत तीर्थंकर स्त० गा. ५ — शासता तीर्थंकर च्यार — २१८
२४०. सामान्य जिन स्तवनम् गा ३ — प्रभु तेरो रूप बण्यो अति नीको — २१९
२४१ ,, ,, ,, ३ — शरण मही प्रभु थारी — २१९
२४२. अरिहन्त पद स्तवनम् ,, ३ — हां हो पक चित्त दिल में ध्यावि हुँ — २१९
२४३. जिन प्रतिमा पूजा गी ९ — प्र० पूजा भगवंति माखि रे — २२०
२४४. पञ्च परमेष्ठि गीतम ६ — जपउ पञ्चपरमेष्ठि परभाति जापे — २२१
२४५. सामान्य जिन गीतम् , ७ — दसदिशा सुरनर किंनर सुन्दर — २२१
२४६ सामान्य जिन गीतम् ३ — जगगुरु तारि परम दयाल — २२२
२४७ सा० जिन आंगी गी० ४ — नीकी प्रभु आंगी बणी हो — २२२
२४८. तीर्थ० समवशरण गी १० — विहरन्ता जिनराय — २२३
२४९. चत्तारि अट्ठ दस दोय गर्भित स्त० गा १७ — जिनवर भक्ति समुल्लसित — २२४
२५० अल्पाबहुत्व गर्भित स्त गा २२ — अरिहन्त केवल ज्ञान अनन्त — २२६
२५१ चौवीस दण्डक स्त गा १३ — श्री महावीर नमूँ कर जोडि — २३०
२५२. श्री चंपाणी तीर्थ स्तवन गा २४ (सं० १६६२) — पाय प्रणमूँ रे पद पंकज प्रभु पासना — २३०
२५३ ज्ञान पञ्चमी बृहत्स्तवन गा २० (सं० १६६६) — प्रणमूँ श्री गुरु पाय — २३१
२५४ ज्ञानपञ्चमी लघु स्त० गा. ५ — पञ्चमी तप तुम करो रे प्राणी — २३९
२५५ मौनेकादशी स्तवन गा १३ (सं० १६८१ जेसल०) — समवसरण बैठा भगवन्त — २४०
२५६ पजू पण पर्व गीतम गा ३ — पजूषण पर्व री मसइ आये — २४१
२५७ रोहिणी तप स्तवन गा ५ — रोहि तप भवि आदरो रे आज — २४२

२४८ उपधान (गुरु वाणी) गीतम् वाणि करावइ गुरुजी वाणि गा १ करावइ २४३
२४९ उपधान तप स्तवन गा १८ श्री महावीर धरम परकाशइ २४४

साधु गीतानि

२५ अइमत्ता ऋषि गी० गा २ बकुली मेरी री २४७
२५१ „ गा ३ अपूर्व श्री पोलास पुराधिप विजइ २४७
२५२ अनाथी मुनि गीतम् गा ६ श्रेणिक रयवाडी चडयउ २४८
२५३ अयवन्ती सुकुमाल गी „ ५ नयरी उज्जयिनी माँहि वसइ २४६
२५४ अरहन्नक मुनि गी० गा ६ विहरण वेला पांगुरयउ हो २४६
२५५ „ गा ७ विहरण वेला ऋषि पांगुरयउ २५०
२५६ „ गा ८ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी २५१
२५७ थावच्चा १८ पुत्र प्रतिबोध शांतिनाथ दिन सोलमउ गा १० २५३
२५८ आदित्ययशादि ८ साधु गीतम् गा ४ भावना मनि शुद्ध भावइ २५७
२५९ इलापुत्र गीतम् गा १८ इलावरधन हो नगरी मुं नामकि २५७
२६० „ गा ६ नाम इलापुत्र जाणियइ २६१
२६१ उदयनराजर्षि गीतम् गा ७ सिंधु सोवीरइ वीतमइ रे २६२
२६२ खंधक शिष्य गीतम् गा ५ खंधक सूरि समोसरया रे २६४
२६३ गयसुकुमाल मुनि गी „ ५ नयरी द्वारामती जाणियइ जी २६५
२६४ थावच्चा ऋषि गीतम् ५ नगरी द्वारिका निरखिवइ २६६

चार प्रत्येक बुद्ध गीत –

२६५ करकण्डू प्रत्येक बुद्ध गीतम् गा ५ चंपानगरी अति भली हूँ वारी २६७

२७६ दुमुह प्रत्येक बुद्ध गी ,, ७ नगरी कंपिला नव चवीरे २६८
२७७ नमि प्रत्येक बुद्ध गी ,, ६ नयर सुदरसण राय होशी २६९
२७८. ,, ,, ,, ७ जी हो मिथिला नगरी जव राजियउ २७१
२७९. नगाई प्रत्येक बुद्ध गी ,, ६ पुण्डवर्द्धन पुर राजियउ २७२
२८० चार प्रत्येकबुद्ध संलग्न गी
गा ५ चिहुं दिशि थी चारे आविया रे २७४
२८१. थिवाश्री पुत्र गीत गा ६ पुत्री सेठ भमा तणी २७५
२८२. जम्बू स्वामी गीत गा १२ नगरी राजगृह मांहि वसइ रे २७६
२८३. ,, ,, ,, ५ आठ वलिहारी जंबूस्वामि नी रे २७७
२८४ ढढण ऋषि गीतम् ,, २१
(सं १६६० ईसवपुर) नगरी अनोपम द्वारिका २७८
२८५. दशार्णभद्र गीतम् ,, ६ सुगण जन पभन सुणि राय २८१
२८६. धन्ना (काकंदी) अणगार गीत
१५ सरसती सामण वीनवु २८३
२८७. ,, ,, ,, ६ वीर जिणंद समोसरयाजी २८४
२८८. प्रसन्नचन्द्र राजर्षि गी ,, ५ मारग मांई मुनि नइ मिल्यव २८६
२८९. ,, ,, ,, ६ प्रसन्नचन्द्र प्रणमूं तुम्हारा पाय २८७
२९० बाहूबलि गीतम् ,, ४ तक्षशिला नगरी रिषभ समोसर्या रे २८८
२९१ ,, ,, ,, ७ राज तणा अति लोभिया २८९
२९२. मयरथ नागिला गी ,, ८ मयरथ माई घरि आविया रे २९०
२९३ मेतार्य ऋषि गीत ,, ७ नगर राजगृह मांहि वसतउ जी २९१
२९४ मृगापुत्र गीतम् ,, ७ सुग्रीव नगर सोहामणुं रे २९२
२९५. मेघरथ (शांतिजिन दसमइ भव श्री शांति जी २९३
१०म भव) गीतम् गा. २१
२९६. मेघकुमार गीतम् गा ५ धारणी मनावइ रे मेघकुमार नइ रे २९७

सती गीतानि

३१८. अञ्जना सुन्दरी गी० गा ११ अञ्जना सुन्दरी शील वखाणि ३२२
३१९. नर्मदा सुन्दरी ,, ८ नर्मदा सुन्दरी सतिय शिरो ३२३
३२० ऋषिदत्ता ,, , १७ रूक्मणी नइ परणवा चाल्यउ ३२५
३२१ दवदन्ती सती भास ,, ११ हो सायर सुत सुहामणा ३२८
३२२. दवदन्ती सती भास , ६ नल दवदन्ती मीठरया ३३१
३२३ पुनश्री भास ,, ५ नयरी कम्पिला नउ धणी ३३२
३२४ कलावती सती गी० ,, ७ बांधव मूक्या बहरखा रे ३३३
३२५. मरुदेवी माता , १४ मरुदेवी माताजी इम भणइ ३३५
३२६ मृगावती सती ८ चम्द सूरज वीर वांदण आव्या ३३६
३२७ चेलणा सती ,, ,, ७ वीर वांदी वलतां थकां जी ३३७
३२८ राजुल रहनेमि , ,, ८ राजमती मनरङ्ग ३३९
३२९. ,, , ,, २ रूडा रहनेमि म करिस्यइ म्हारी आखि ३४०
३३० ,, ,, , ५ यदुपति वांदण जांवतां रे ३४०
३३१ ,, , ,, ५ राजुल चाली रङ्गसुं रे सास ३४१
३३२. सुभद्रा सती ,, ,, ५ मुनिवर आव्या विहरताजी ३४२
३३३ द्रौपदी सती भास ५ पांच भरतारी नारी द्रूपदी रे ३४२

गुरु गीतानि

३३४ गौतम स्वामी अष्टक गा ८ मह ऊठी गौतम प्रणमीजइ ३४३
३३५. , गी० ७ सुगति समय आणी करी ३४४
३३६ , ,, ३ गौतम नाम जपउ परभाते ३४५
३३७ एकादश गणधर गी० गा. ४ प्रात समइ उठि प्रणमियइ ३४६
३३८. गहूंली गीतम् ,, ६ प्रभु समरण साहिब देवा रे ३४६
३३९. खरतर गुरुपट्टावली ,, ८ प्रणमी वीर जिणेसर देव ३४७

३६० छन्द ४ अवक्रियउ अकबर तास० ३७०
३६१ „ गीतम् ३ मइइ री माई श्रीजिनचन्द्र सूरि आये ३७१
३६२ „ „ „ ३ सुगुरु चिर प्रतपे तूं कोड़ि वरीस ३७२
३६३ „ „ ३ पूज्यश्री तुम चरणे मेरउ मन लीणउ ३७२
३६४ छन्द „ ७ सुगुरु जिणचन्द सोभाग सखरा लियो ३७३
३६५ „ आलिया गीत ११ आसू मास वसि आविया पूजश्री ३७४
३६६ „ „ गा १० अपूर्वा चिर अकबर सूं थापियउ ३७७
३६७ श्री जिनसिंहसूरि (वेली) श्री गौतम गुरु पाय नमी ३७८
गी गा ५
३६८ श्रीजिन (हिंडो) „ „ ५ सरसति सामियो वीनवूं ३८०
३६९ „ ६ आज सहेली सद्गुरु वंदिया ३८०
३७० (आ० पद) „ „ ३ आज मेरे मन की आस फली ३८२
३७१ „ „ ३ आयऊँ मन दिन मेरउ ३८३
३७२ (बधावा) „ ६ आज रङ्ग वधामणा ३८३
३७३ „ (बधाइ) २ अरी मोकूँ देहु वधाइ ३८४
३७४ श्री जिनसिंह सूरि (चोमासा)
गीतम गा ४ श्रावण मास सोहामणो ३८४
३७५ „ „ „ ५ आचारिज तुम मन मोहियउ ३८५
३७६ „ „ ६ चिहुं खंडि चावा चोपड़ा ३८६
३७७ „ „ „ ६ प्रह ऊठी प्रणमूं सदा रे ३८७
३७८ „ „ ४ मुझ मन मोह्यो रे गुरुजी ३८७
३७९ „ „ „ ३ अमरसर अब कइइ केती वेर ३८८

३८० ,, ,, ,, ५ सुन्दर रूप सुहामणो रे ३८८
३८१ ,, ,, ,, ३ सुणभरी सुथाव मेरे सतगुरु
  वयणा ३८६
३८२ ,, ,, ,, २ सतगुरु सेवणहो शुभ मतियां ३६०
३८३ ,, सवैयाष्टक ,, ८ एसु लाहोर नगर वर, पातसाह
  अकबर ३६०
३८४ ,, ,, ,, ५ वे मेधरे लाहेरी सेपरे ३६१
३८५ ,, गीतम् ,, ५ श्री आचारज कहयइ आवस्यइ ३६५
३८६ ,, ,, ,, ५ सूपटा सोभागी कहि किहाँ
  सुगुरु दीठा ३६५
३८७ ,, ,, ,, ४ मारग जोयतां गुरुजी तुम्हें
  मलाइ० ३६६
३८८ ,, चर्चरी ,, ,, ९ मीर सबइ मलिक बीच ३६७
३८९ ,, ,, ,, ३ गुरु के दरस अखियां मोहि
  तरसइ ३६७
३९० ,, ,, ,, ३ तुम चलत सखि गुरु वंदण ३६८
३९१ ,, ,, ,, ३ आज सखी माहि धन्य जोयारी ३६८
३९२ ,, ,, ,, ३ श्रीजिनसिंह सूरिंद जयकारी ३६६
३९३ ,, ,, ,, ३ जिनसिंह सूरि की बलिहारी ३६६
३९४ श्रीजिनसिंहसूरि गी. ,, ३ पंथियरा कहियो एक संदेशा ४००
३९५ ,, ,, ,, ३ सखिय चपणा गुरु सखिन मस ४०
३९६ ,, ,, ३ बलिहारी गुरु वदन चंद बलि ४०१
३९७ ,, ,, ,, ३ आवइ सुगुण साहेलडी ४ १
३९८ ,, विधि वि ,, ,, ५ पडिया जिम मुनि वड्ड ४ २
३९९ ,, , ५ चतुर लोक राजइ गुणे रे ४ ३
४०० श्रीजिनराजसूरि गी. ३ भट्टारक तुम्ह माग नमो ४०३
४०१ ,, ,, ,, ३ भट्टारक तेरी बड़ी ठकुराई ४०४

४०२. ,, ,, ,, ५ तू तूठउ थाइ सपना ४०४
४०३ ,, ३ श्री पूज्य सोम निजर करो ४०५
४०४ ,, (वियोग), ,, ४ श्री पूज्य तुम्ह नइ वांदि चलतां ४०५
४०५. श्रीजिनसागरसूरि अष्टकम् (सं० गु०) ,, ८ श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे ४०६
४०६ ,, गी ,, ३ सखि जिनसागरसूरि साचउ ४०८
४०७ ,, ,, ,, ३ धन दिन जिनसागर सूरि ४०८
४०८. ,, ,, ३ जिनसाग० गच्छपति गिरुयउ ४०९
४०९. ,, ,, ,, ३ जिनसाग० गच्छपति गिरुयउ ४०९
४१० ,, ,, ३ अइयो नइ नंदना ४१०
४११ ,, ,, ३ गुरु कुण जिनसा सरिखउ री ४१०
४१२. ,, ,, ,, ३ वंदउ वदउ जिनसा० वदउ री ४११
४१३. ,, ५ बहिनी आवउ मिली वेगउ जी ४११
४१४. श्रीजिनसागरसूरि ,, ,, ४ जिनसागरसूरि गुरु मला ए ४१२
४१५. ,, ,, ,, ५ पुण्य संजोगइ अम्हे सदगुरु पाया ४१२
४१६ ,, ,, ५ मनडु मोह्यु रे माहरु ४१२
४१७ ,, ,, ५ म्यावि चउरासी निरखता रे ४१३
४१८ सवैया १ सोल शृङ्गार करइ सुन्दरी ४१४
४१९. ,, गी गा. ४ साहेबजी हे सागरसूरि वांदियइ ४१४
४२० ,, ५ सिणगार करउ साहेलडी रे ४१५
४२१ संघपति सोमजी वेलि ,,१० संघपति सोम तणउ जस सगजे ४१५
४२२ गुरु दु:खित वचनम् ,,११ क्लेशोपार्जितवित्तेन ४१७
(सं० १६६८ राजधान्यां)
४२३ गुरु दु:खित वचनम् गा ५ पेखा नहीं तउ मकरउ चिन्ता ४१९

औपदेशिक गीतानि

४२४ जीव प्रतिबोध गी गा. ९ जागि जागि जतुया तु ४२०

—

४२५. „ ३ रे जीव मजाल किम्या सुख लहिया ४२१
४२६ „ ७ जिवड़ा आयो जिन धर्म सार ४२१
४२७ „ „ ११ जिवड़ा रे जिन धर्म कीजिये ४२२
४२८ „ „ ४ ए संसार असार छइ ४२३
४२९. „ „ १० मैं सारा माया असार संसार ४२४
४३० धर्म महिमा गीतम् गा ६ रे जीवा जिन धर्म कीजियइ ४२४
४३१ जीव नटावा गीतम् गा. ४ देखि देखि जीव नटावइ ४२५
४३२. आत्म प्रबोध „ गा ७ बूझि रे तू बूझि प्राणी ४२५
४३३ वैराग्य शिक्षा „ गा ५ म करि रे जीवड़ा मूढ ४२६
४३४ घड़ी लाखीणी „ गा. ५ घड़ी लाखीणी जाइ छै ४२७
४३५. सूता जगावण गा. ४ जागि जागि जागि भाई ४२७
४३६ प्रमाद त्याग „ गा ५ माया ममता माया मपत्र प्राणी ४२८
४३७ „ „ गा ५ जागो रे (२) भाई प्रमाद मकर ४२८
४३८. मन सज्झाय ७ मना तने कई रीते समझावूं ४२९
४३९. मन धोबी गीतम् ६ धोबीड़ा तू धोजे रे मन केरा धोतिया ४२९
४४० माया निवा सज्झाय „ ७ माया कारमी रे ४३०
४४१ „ ४ धन मेरा धन मेरा (२) ४३१
४४२ लोभ निवारण „ ३ रामा रामा धन धन ४३१
४४३. पारकी होड नि० गी „ ३ पारकी होड तुं म करे प्राणिया ४३२
४४४ मरण भय निवा „ २ मरण तणउ भय म करि मूरख ४३३
४४५ आरति निवारण „ „ ३ मेरी जीउ आरति कांइ धरइ ४३३
४४६ मन शुद्ध गीतम् „ २ एक मन शुद्धि बिन ४३४
४४७ कामिनी विश्वास निराकरण गा ३ कामिनी का करि कुण ४३४
४४८. स्वार्थ गीतम् „ ६ स्वारथ की सब हइ रे सगाई ४३५

४४६ अंतरङ्ग बाह्य निद्रा निवारण गीतम् गा ४ नींद्रड़ी निवारो रहो जागता ४३५
४५० निद्रा गीतम् „ ३ सोइ सोइ सारी रयणि गुमाइ ४३६
४५१ पठन प्रेरणा गीतम् ५ भणज्यो रे चेला भाई भणज्यो रे ४३६
४५२ क्रिया प्रेरणा „ ८ क्रिया करज्यो चेला क्रिया करज्यो ४३७
४५३ जीव व्यापारी „ ५ आये तीन जणे व्यापारी ४३८
४५४ पड़ियाळो „ ३ चतुर सुणाइ चित लाइ के ४३८
४५५ उद्यम भाग्य ३ उद्यम भाग्य बिना न फळइ ४३६
४५६ सर्वेभ्यो मुक्तिगमन गी गा ३ हां माई हर कोउ भेख मुगति पावे ४३६
४५७ कर्म गीतम् गा २ हां माई करमथी को छूटई नहीं ४४०
४५८ नारी गीतम् „ ९ नारा नीकी री चलइ नीरमञ्झार ४४०
४५९ जीव काया गीतम् „ ६ जीव प्रति काया कहइ ४४१
४६० काया जीव गीतम् ४ रूड़ा पंखीड़ा, मुग्ध मेल्ही म जाय ४४१
४६१ जीव कर्म संबंध गी „ ५ जीव नइ करम मांहो मांहि संबंध ४४२
४६२ सन्देह गीतम् ३ करम अचेतन किम हुयइ करता ४४२
४६३ जग सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर पृच्छा गीतम् गा २ पूछइ पंडित कहउ का हकीकत ४४३
४६४ करतार गीतम् „ ५ कबहु मिलइ मुझ जो करतारा ४४३
४६५ दुषमा काले संयम पालन गीतम् गा २ हां हो कहो संयम पथ किम पलइ ४४४
४६६ परमेश्वर भेद गीतम् „ १७ मक तू ही तू ही, नाम जुदा जुदि० ४४४
४६७ परमेश्वर स्वरूप दुर्लभ गी गा० ३ कुण परमेसर सरूप कहइ री ४४५

४९० फुटकर सवैया , ३ दोरा से सूची पासी थइ ४५७
४९१ नव वाड़ शील गी , ११ नववाड़ सेती शील पालउ ४५८
(सं० (१६७० भाद्र०)
४९२ बारह भावना गी गा १५ भावना मन धार भावउ ४५९
४९३ देवगति प्राप्ति „ ६ बारे भेद तप तपइ गति
पामइ वो ४६१
४९४ नरकगति प्राप्ति , , १० जीव वधी हिंसा करइ ४६२
४९५ व्रत पच्चक्खाण „ ११ बूझा ते पिण काहियइ बाल ४६३
४९६ सामायक „ ५ सामायक मन सुद्धे करउ ४६५
४९७ गुरु वचन गीतम् „ २ हां मित्र म्हारा र ४६५
४९८ श्रावक १२ व्रत कुलकम् श्रावक ना व्रत सुणजो चार ४६५
(सं १६६८ बीकानेर)गा १५
४९९ श्रावक दिन कृत्य कु० १४ श्रावक नी करणी सांभलउ ४६७
५०० गुरु श्रावक सुन्दर मिलन कहयइ मिलस्यइ श्रावक एहवा ४६९
(२१ गुण गर्भित) गोत गा २१
५०१ अंतरंग विचार गी, गा ४ कहउ किम तिण पार हुयइ
मली वार ४७१
५०२ आपि महत्त्व गीतम् गा २ बाइठि तमाच दुकम्म करइ ४७३
५०३ पर प्रशंसा „ „ ७ हुं बलिहारी जाऊं तेहनी ४७४
५०४ साधु गुण , ३ तिण साधु के जाऊं बलिहार ४७५
५०५ „ „ ३ धन्य साधु संजम धरइ सूधो ४७५
५०६ हित शिक्षा गीतम् १० पुण्य न मूकइ विनय न चूकइ ४७५
५०७ श्री संघ गुण गीतम् „ ३ संघ गिरुयउ रे ४७६
५०८ मिथ्यात्व नवा सज्झाय ६ आज आधार छइ सुभ मन ४७७
५०९ अध्यातम सज्झाय „ ८ इस योगी न आसन दृढ कीना ४७७
५१० श्रावक मनोरथ गी „ ६ श्रीजिनशासन हो मोहन पसाउ ४७८
५११ मनोरथ गीतम , ८ ते दिन क्यारे आवस ४७९

५३४ प्रस्ताव सवैया छत्तीसी सर्वे परमेसर परमेसर सहु करइ ५३२
गा ३७ (स १६६० खंभात)
५३५ क्षमा छत्तीसी (नागोर) आदर जीव क्षमा गुण आदर ५३६
५३६ कर्म (सं १६६८ मुल्तान) कर्म थी को छूटई नहीं प्राणी ५३६
५३७ पुण्य „ (स १६६९ सिधपुर) पुण्य तणा फल परतिख देखो ५३२
५३८ सन्तोष छत्तीसी (स १६८४ आदमी सु संतोष करी नइ ५४०
लूणकर्णसर)
५३९ आलोयणा छत्तीसी पाप आलोय तु आपणां ५४४
(स १६९९ अहमदपुर)
५४० पद्मावती आराधना गा ३५ हिव राणी पद्मावती ५४७
५४१ वस्तुपाल तेजपाल रास „ ४० सरसति सामिणि मन धरूँ ५५१
(स १६८२ तिमरी)
५४२ पुण्डरीक ऋषि रास गा ३७ श्री महावीर ना पाय नमुं ५५५
(स १६९८)
५४३ केशी प्रदेशी प्रबन्ध गा ५७ श्री सावत्थी समोसर्या ५५९
(स १६९९ अहमदाबाद)
५४४ क्षुल्लक ऋषि रास गा ५४ पारसनाथ प्रणमी करी ५६४
(सं १६९४ जालोर)
५४५ शत्रुंजय रास गाथा १०८ श्री रिसहेसर पय नमी ५७५
(स १६८२ नागोर)
५४६ दानशील तप भाव संवाद शतक प्रथम जिनेसर पय नमी ५८३
(स १६६६ सांगा) गा १०१
५४७ पौषधविधि गर्भित पार्श्व स्त जेसलमेर नगर मण्डो ५९४
(सं १६६७ मरोठ)
५४८ मुनिसुव्रत पर्योपवास स्तवन जंबूदीप मोहामणु
गा १९ ६०१
५४९ प्रथम भक्तामर स्तोत्रम् नमेंद्रचन्द्र प्रणत जिनचन्द्र ६०३
श्लोक ४५

[सं० १६६८ वि० पमार सवैया छपीसी का अन्तिम पत्र]

कविवर-लेखनदर्शनम्—(४)

[सं० १९११ लि० फेरी मरेरी प्रबन्ध का अन्तिम पत्र]

समयसुन्दरकृतिकुसुमाञ्जलि

—×[○]×—

श्री वर्तमान चौवीसी स्तवन

जीव जपि जपि जिनवर अंतरयामी । जी० ।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पदमप्रभु शिवपुर गामी ॥१॥ जी० ॥
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,
विमल अनंत धरम हितकामी ।
शांति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत,
नमि नेमि पार्श्व महावीर स्वामी ॥२॥ जी० ॥
चौवीस तीर्थंकर त्रिभुवन दिनकर,
नाम जपत आके नवनिधि पामी।
मन वंछित सुख पूरण सुरतरु,
प्रणमत समयसुन्दर सिर नामी ॥३॥ जी० ॥

श्री अनागत चौवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

प्र अनागत तीर्थंकर चौवीस जिन,
प्रह उठी नई नाम लेवां सफल दिन ॥१॥ प्र० ॥

पद्मनाभ सुरदेव सुपास,
स्वयंप्रभ सर्वानुभूति लील विलास ॥२॥ए०॥
देवश्रुत उदय पेढाल पोट्टिल स्वामी,
सतकीर्ति सुव्रत अमम नामी ॥३॥ए०॥
निःकषाय निःपुलाक निर्मम जिया,
चित्रगुप्त श्रीसमाधि अनंत गुण ॥४॥ए०॥
संवर यशोधर विजय मल्लि देव,
अनंतवीरज भद्रकृत मव मव सेव ॥५॥ए०॥
ए तीर्थंकर आगे होस्यै गुण अभिराम,
समयसुन्दर तेह अवस्था करे प्रणाम ॥६॥ए०॥

श्री अतीत चोवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

केवलज्ञानी नइ निर्वाणी,
सागर महायश विमल वखाणी ॥ के० ॥१॥
सर्वानुभूति श्रीधर दत्त नामी,
दामोदर श्री सुतेज स्वामी ॥ के० ॥२॥
मुनिसुव्रत सुमति शिवगति धर,
अस्ताग नमीश्वर अनिल यशोधर ॥ के० ॥३॥
कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमति शिवकर,
स्यंदन संप्रति चौवीसे तीर्थंकर ॥ के० ॥४॥
अतीत चौवीसी जग विख्याती,
समयसुन्दर प्रणमत प्रभाती ॥ के० ॥५॥
[कृयम् श्री सिद्धपुरे, स्वयं लिखित पत्र से]

चौबीसी

ऋषभ जिन स्तवन

राग—मारू

ऋषभदेव मेरा हो ऋषभदेव मेरा हो ।
पुन्य संयोगइ पामीया मइं, दरिसण तोरा हो ॥१॥ ऋ० ॥
चउरासी लख हूँ भम्यउ, भव का फेरा हो ।
दुख अनन्ता मइं सह्या, स्वामी तिहां बहुतेरा हो ॥२॥ ऋ० ॥
चरण न छोडूं तांहरा, सामी अब की वेरा हो ।
'समयसुन्दर' कहइ तुम्ह थइ, स्वामी कउण भलेरा हो ।३।ऋ०॥

अजित जिन स्तवन

राग—गउडी

अजित तु अतुल बली हो, मेरा प्रभु-अजित० ।
मोह महाभड हेलइ जीतउ,
मदन महीपति फौज दली हो ॥१॥ अ० ॥
पूरणचन्द जिसउ मुख तेरउ,
दंत पंक्ति मचकुन्द कली हो ।
सुन्दर नयन तारिका शोभित,
मानू कमल दल मध्य अली हो ॥२॥ अ० ॥
गज लांछन विजया कउ अंगज,
मेटत भव दुख भ्रांति टली हो ।

समयसुन्दर कहइ तरे अजित जिन,
गुण गावा मोड़ रंगरली हो ॥३॥ अ० ॥

सभव जिन स्तवन

राग—काफी

आ इ रूप सुन्दर सोहइ, सखि सम्भवनाथ । रूप० ।
गुण अनन्त मन मोहन मूरति, सुर नर क मन मोहइ ॥१॥
समोसरण सामी देसना दशवा, भविक जीव पडिबोहइ ।
केवलज्ञानी धर्म प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ ॥२॥ स० ॥
भवदधि पार उतार भगत कु, सुगति—पुरी आरोहइ ।
समयसुन्दर कहइ तीन भुवन मई, जिन सरिखउ नहि को हइ॥३॥

अभिनदन जिन स्तवन

राग—मालवी गौड़ी

मेर मन तू अभिनन्दन दवा ।
सौंस करी मैं तरे आग, हरि हरि आन वहवा ॥१॥ म ॥
मूरख कोया मखै नींम फल कु, जो लहै वंछित मेवा।
तू मगवंत वस्यौ चित मीतर, ज्यु गज के मन रवा ॥२॥ मे० ॥
तू समरथ साहिब मैं सेव्यो, मव दुख भ्रांति हरवा ।
समयसुन्दर मांगत अब इतनो, भव भव तुम्ह पाय सेवा ॥ ३ मे० ॥

सुमति जिन स्तवन

राग—कनड़ी

जिन जी तारो हो तारो ।
मेरा जिनराज जि०, विनती करूँ कर जोड़ी ।
असरण सरण भगत साधारण,
भवोदधि पार उतारो ॥ जि० ॥ १ ॥
पर उपगारी परम करुणा पर[1],
सेवक अपणो समारो ।
भगत अनेक भवोदधि तार,
इम विरियां क्यु विचारो ॥ जि० ॥ २ ॥
मेघ मन्हार मात-मंगला सुत,
वीनती ए अवधारो ।
समयसुन्दर कहै सुमति जिणेसर,
सेवक हुं छु तुम्हारो ॥ जि० ॥ ३ ॥

पद्मप्रभ जिन स्तवन

राग—वेलाउल

मेरो मन मोह्यो मूरतियां ।
अति सुन्दर मुख की छबि पखत,
विकसत[2] होत मेरी छतियां ॥१॥ मे० ॥

---

१ रस । २ हरषित

केसर चंदन मृगमद मेली[1],
भगति करूँ बहु भतियाँ ।
आठ करम सज्जमल की परि,
बोध बीज आपतियाँ ॥२॥ मे० ॥
पदम लांछन पदमप्रभु सामी,
इतनी करूँ बीनतियाँ ।
समयसुन्दर कहै यो मेरे साहिब,
सकल कुशल संपत्तियाँ ॥३॥ मे० ॥

सुपार्श्व जिन स्तवन

राग—श्रीराग

बीतराग तोरा पाय मरणं ।
दीनदयाल सुपास जिनेसर, योनी संकट दुख हरणं ।१। बी० ।
बनारसी जनम मात पृथिवी सुत, तीन भुवन तिलकामरणं ।
पर उपगारी तु परमेसर, भव समुद्र तारण तरणं ।२। बी० ।
आठ करम मल पंक पयोधर, सेवक सुख संपति करणं ।
सुर-नर-किंनर-कोटि[2] निसेवित, समयसुन्दर प्रणमति चरणं ।३बी०

चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

राग—रामगिरि

चंद्रानगरी[3] सुमह अमतार जी, महसेन नरिंद मल्हार जी ।
मगर्वत (तु) कृपा मंडार जी, इक बीनतड़ी अवधार जी ।
चन्द्रप्रभस्वामी तार जी ॥ १ ॥ स्वामी तारि जी ।

१ मेली । २ कोडि निषेवित । ३ चंद ।

स्वामी ए संसार असार जी, बहु दुख अनंत अपार जी।
मुझ[1] आवागमन निवार जी ॥ २ ॥ सा० ॥
मुझ नै दिव तु आधार जी, सरणागत नै समार[2] जी।
तुम सम कोइ नहीं ससार जी, समयसुन्दर नै सुखकार जी।३ सा०

सुविधि जिन स्तवन

राग—केदार

प्रभु तेरे गुण अनंत अपार।
सहस रसना करत[1] सुरगुरू, कहत न आवै पार।प्र०।१।
कोण अंबर गिणे तारा, मेरु गिर को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कोण विचार।प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाखु, सुविध जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम[4] आधार।प्र०।३।

शीतल जिन स्तवन

राग—केदारो

हमारे हो साहिब शीतलनाथ।
दीनदयाल मनिके[5] कु मले, मुगतपुरी को साथ।ह०।१।
भव दुख भंजण स्वामी निरंजण, संकट कोट प्रमाथ।
दृढरथ वंश विभूषण दिनमणि, सुभग रमणी सनाथ।ह०।२।

१ मुझ अस्यार अनंतो धारजी। २ आधार। ३ परइ। ४ नाथइ। ५ मुं। ६ मगत

सकल सुरासुर वंदित पदकज, पुण्यलता घन पाय ।
समयसुन्दर कहइ तसु कृपा तैं, होत मुगत सुख हाथ ।ह० ।३ ।

श्रेयांस जिन स्तवन

राग—ललित

सुरतरु सुन्दर श्री श्रेयांस ।
सुमनस श्रेणि सदा प्रभु शोभित,
साधु साख की नीकी प्रशंस ।सु० ।१ ॥
मन वंछित सुख संपति पूरति,
अरति[1] विघन करत विध्वंस ।
इंद चंद किन्नर अप्सर गण,
गावत गुण वासवि[2] सुत वंश ।सु० ।२ ॥
खड्ग लञ्छन तप तेज अखंडित,
अरिहंत तीन भुवन अवतंस ।
समयसुन्दर कहै मेरो मन लीना,
जिन चरण जिम मानस हंस ।सु० ।३ ॥

वासुपूज्य जिन स्तवन

राग—गोडी केदारो

मनिकु तुमे[3] वासुपूज्य नमो री ।
सुखदायक त्रिभुवन को नायक, तीर्थंकर बारमो री ।१ ।म० ।

१ अरति । २ वासव सुत । ३ तुम्हें ।

माय मगति मगवत मग्रोरी, चचल इंद्री दमोरी।
निर्मल आप जपो जिनजी को, दुर्गति दुख गमोरी।२।म०।
मेरो मन मधुकर प्रभु के पदांबुज, अहिनिस रंग रमोरी।
समयसुन्दर कहै कोय कहु अग, श्री जिनराज समो री।३।म०।

विमल जिन स्तवन

राग—मालवयी धन्याश्रिरी अडवसिरी

जिनजी कु देखि मेरउ मन रींझइ री।
तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इन्द्र चामर वींझइ री।जि०।१।
स्फटिक सिंहासन स्वामी अडसया, चैत्य वृक्ष शोभित कीजइ री।
मार्मडल झलकै प्रभु पूठि, देखत' मिथ्यामति खीजइ री'।जि०२।
दिव्य नाद सुर दुन्दुभि वाजइ, पुष्प वृष्टि सुर बिरचीजइ री।
समयसुन्दर कहइ तरे विमल जिन, प्रातीहारज पेखीजइ री।जि०३।

अनन्त जिन स्तवन

राग—सारग

अनत तेरं गुण अनंत, तेज प्रताप तप अनंत।
दरसण चारित अनत, अनत केवल ज्ञान री।१।अ०।
अ त सकति कउ निवास, अनत मुक्ति-सुख विलास।
अनंत वीरज अनत धीरज, अनंत शुक्ल ध्यान री।२।अ०।

---

१ पकाव। २ छीजई री

अनंत जीव कउ तू आधार, अनत दुख कउ फेड़णहार।
हमड़ स्वामी पार उतार, तू छो कृपा निधान री।३। प्र०।
समयसुन्दर तेरे जिणद, प्रणमति चरणारविंद।
गावति परमाणंद सारंग, राग तान मान री।४। प्र०।

धर्म जिन स्तवन

राग—आसावरी

अलख अगोचर तू परमेसर, अजर अमर तू अरिहंत जी।
अकल अचल अकलंक अतुल बल, केवलज्ञान अनंत जी।१ प्र०।
निराकार निरंजन निरुपम, ज्योतिरूप निरलंत जी।
तेरा सरूप तु ही प्रभु जाणइ, कह जोगींद्र सहंत जी।२ प्र०।
त्रिभुवन स्वामी तु अंतरजामी, भय भंजण भगवंत जी।
समयसुन्दर कहै तेरे धरम जिन, गुण मेरे हृदय वसंत जी।३ प्र।

शान्ति जिन स्तवन

राग—मारुणी

शांतिनाथ सुणउ[१] तू साहिब, सरणागत प्रतिपालो जी।
तिण हूँ तोरइ सरणइ आयउ, स्वामी नयण निहालो जी।१।
दयाल राय तारउ जी, मुँनै आवागमण निवारउ जी।
हूँ सेवक सामी तुमारो जी, तू साहिब शांति हमारउ जी।२।द।

१ सुणयउ

पूरव भव राख्यो पारेवो, तिम मुझनैं सरणइ राखि जी।
दीनदयाल कृपा करि स्वामी, मुझ नें दरसण दाखि जी।३।द०।
शांतिनाथ सोलमउ तीर्थंकर, सेव सुरनर कोडि जी।
पाय कमल प्रभु ना नित प्रणमइ, समयसुन्दर कर जोड़िजी।४ द०।

कुन्थु जिन स्तवन

राग—भैरव

कुंथुनाथ कुं करूं प्रणाम, मन वंछित पूरवइ सुख काम। कुं० १।
अलखस्वामी गुण अभिराम, अहिनिस समरूं अरिहंत नाम। कुं० २।
वीनति एक करूं मोरा स्वाम, द्यो मोहि मुगति पुरी को धाम। कुं० ३।
किसके हरि हर किसके राम, समयसुन्दर करै जिनगुण ग्राम। कुं० ४।

अर जिन स्तवन

राग—नट्टनारायण

अरनाथ अरियण गञ्जण। अ०।
मोह महीपति मान विहंडण, भवियण कू दुख भञ्जण। अ०।१।
मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुरनर को मन रञ्जण।
सुन्दर रूप वदन चंद सोभित, लोचन निरंजन खंजन[१]। अ०।२।
हरि हर देव प्रमुख व्यासंगी, तूं सब सुख[२] को मंजण[३]।
समयसुन्दर कहै देव तूं साचो, जो निराकार निरंजण। अ०।३।

---

१ खंजण। २ दोष। ३ भञ्जण। ४ सो देव साचा।

मल्लि जिन स्तवन

राग—सारंग मल्हार

मल्लि जिन मिल्यउ री सुगति दातार ।
फिरत फिरत प्रापति मइ पायउ, अरिहंत तु आधार ।१। म०।
तुम्ह दरसण विन दुख सह्या बहुला[1], ते कुण जाणइ पार ।
काल अनंत भम्या भवसागर, अब मोहि पार उतार ।२। म०।
सामल वरण मनोहर मूरति, कलश लांछन सुखकार ।
समयसुन्दर कहै ध्यान एक धरउ, मेरे चित्त मझार ।३। म०।

मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग—रामगिरी

सखि सुन्दर रे पूजा सतर प्रकार ।
श्री मुनिसुव्रत सांमी कउ रे, रूप बण्यो अंगि[2] सार ।स०।१।
मस्तकि मुकुट हीरे जड्यउ रे, भाल तिलक उदार ।
बांहि मनोहर[3] बहिरखा रे, उर मोतिन कउ हार ।स०।२।
सामल वरण सोहामणो रे, पद्मा मात मल्हार ।
समयसुन्दर कहइ सफल[4] रे, सफल मानव अवतार[5] ।स०।३।

नमि जिन स्तवन

राग—आसावरी

नमु नमु नमि जिन चरण तोरा,
हूँ सेवक तू साहिब मोरा ।न० ।१।

१ बहु । २ हसप । ३ भक्ति । ४ पहिर्या । ५ पामीजइ भव पार।

जउ तू जलधर तउ हूँ मोरा,
जउ तू चंद तउ हूँ मी चकोरा । न० । २ ।
सरणाइ राखि करइ क्रम जोरा,
समयसुन्दर कहइ इतना निहोरा । न० । ३ ।

नेमि जिन स्तवन

राग—गूजरी

यादव राय जीवे तू कोडि वरीस ।
गगन मडल उडत प्रमुदित चित, पखीयां देतु आसीस । या०।१।
इम ऊपरि करुणा तइं कीनी, जग जीवन जगदीस ।
तोरण थी रथ फेरि सिधार२, जोग ग्रह्यो सुजगीस । या०।२।
समुद्र विजय राजा कउ अगज, सुर नर नामइ सीस ।
समयसुन्दर कहै नेमि जिणद कउ, नाम जपूं निसदीस । या०।३।

पार्श्व जिन स्तवन

राग—देवगधार

माई आज हमारइ आणंदा ।
पास कुमार जिणद क आगइ, भगति करति धरणिंदा । मा०।१।
तता तता थेइ थेइ पद ठमकावति[1], गावत मुख गुण वृन्दा । मा०।२।
ग्राम सगीत भेद पदमावति, नृत्यति नव नव छंदा । मा०।३।
सफल करत अपनी सुर पदवी, प्रणमत पाय अरविंदा । मा०।४।
समयसुन्दर प्रभु पर उपगारी, जय जय पास जिणंदा । मा०।५।

१ करइ । २ सिधाये । ३ थेइ थेइ थइ तत थइ पद ठावति । ४ श्री जिणचंदा

वीर जिन स्तवन

राग—परजयो

ए महावीर मो' कछु वहि दान,
हूँ द्विज मीत तू दाता प्रधानं । ए० ।१।
ए वूठो तू कनक की धार, भए लच कोटि मानं ।
ए मैं कछु न पायो ताम, प्रापति पुण्य विनानं । ए० ।२।
ए तब देवदूष्य को अर्द्ध, दीनो कृपा निधान ।
ए गुण समयसुन्दर गाया, को नहीं प्रभु समानं । ए० ।३।

कलश

राग—धन्याश्री

तीर्थङ्कर रे चोवीसे मैं संस्तव्या रे ।
हां रे ऋषभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे । ती० ।१।
वसु इन्द्री रे रस रजनीकर संवच्छरें रे, हां रे अहमदाबाद मझार ।
विजयादसमी दिनें रे गुण गाया रे, तीर्थंकर ना शुभ मनें रे । ती० २।
खरतरगच्छ रे श्रीजिनचंद्रसूरीसरू रे, हां रे श्रीजिनसिंघसुरीस ।
सकलचंद मुनिवरू रे सुपसाये रे, समयसुन्दर आणंद करू रे । ती०

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर गीतम् ।

[इति श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां गीतानि सपूर्णानि समाप्तानि ।
संवत् १०८ वर्षे अहम्मदाबादे लि ।
श्री पोकरण नगर सं १६८८ वर्षे भादव वदि ८ दिने ।]

---

१ कछु मोहि देहु दान ।

श्री चौवीस जिन सवैया

नाभिराय मरुदेवी नंदन, युगलाधर्म निवारण हार।
सउ बेटां नै राज सौंपि करि, आप लियौ संयम व्रत भार ॥
समोसरणा स्वामी सेत्रुंज गिरि, जिनवर पूर्व निवाणु वार।
समयसुन्दर कहै प्रथम तीर्थंकर, आदिनाथ सेवो सुखकार ॥१॥

पंचास कोडी लाख सयरोपम, आदिनाथ थकी गया जाम।
वंश इक्ष्वाग मात विजया कुखि, जनम अयोध्या नगरी ठाम ॥
गयंगे मूरति अति सुन्दर, गज लक्षन स्वामी अभिराम।
समयसुन्दर कहै अजितनाथ नै, प्रह ऊठी नै करूं प्रणाम ॥२॥

सेना मात कुखि मानस सर, राजहंस लीला राजेसर।
प्रगट रूप पणि तू परमेसर, अलख रूप पणि तू अलवेसर ॥
हय लंछण अति रूप मनोहर, वंश इक्ष्वाग समुद्र शशिहर।
समयसुन्दर कहै ते तीर्थंकर, संभवनाथ अनाथ को पीहर ॥३॥

सुरगुरु सहस करइ मुखि रसना, तउ पणि कहितौ नावइ अंत।
गुण गिरुआ परमेसर केरा, प्रकट रूप त्रिभुवन पसरंत ॥
भव समुद्र तारण त्रिभुवन पति, भय भंजण स्वामी भगवंत।
समयसुन्दर कहै श्री अभिनंदन, चौथउ तीर्थंकर अरिहंत ॥४॥

शोक विहु झगड़ौ समझाव्यउ, सुमति दोष माता नै सार।
सुमति सहु वांछइ नर नारी, सुमति द्यो दे मुझ सरजनहार ॥

सुमति थकी सीजइ मन वंछित, इह लोक नै परलोक अपार।
समयसुन्दर कहइ सुमति तीर्थंकर, सेवउ सुमति सदाउ दातार ।५।

वदन पदम सम, कनक पदम क्रम,
पदम पाणि उपम, पदम हा पाय जु।
पदम लक्षन धर, पदम बांधव कर,
परख पदम घर, पद्म की छाय जु ॥
सुसीमा माता सुहाय, पदम सय्या विछाय,
पदम प्रभु कहाय, नामै जिनराय जु।
पद्मनिधान पायउ, पद्मसरसि न्हायउ,
समयसुन्दर गायउ, सुगुरु पसाय जु ॥६॥

ययउ आकाश,
इन्द्र सेवा आर्स जास, कर अरदास जु।
पाप का कया प्रणास, ताड़ी कम बंध पास,
टालो भव भ्रमउ त्रास, पूरो मन आस जु ॥
माता करइ कर फास, पिता का यथा सुपास,
सुकमाल सुविलास, अधिक उल्लास जु।
समयसुन्दर दास, परम दासानुदास,
वपति सुजस वास, साहिब सुपास जु ॥७॥

चन्द्रपुरी अवतार, लक्ष्मणा माता मल्हार,
चन्द्रमा लाछन सार उर अभिराम में।
वदन पुनिमचंद, वचन शीतलचंद
महासेन नृपचंद, नव निधि नाम में ॥

देव करइ भिन्न भिन्न, फटिक रतन बिंब,
मांड्यो है दिगम्बर ग्राम में।
समयसुन्दर इम, तीरथ करइ उत्तम,
चन्द्रप्रभ भेट्यो इम, चंदवारि गाम में ॥८॥
काकन्दी पुरी कहाय, राजा श्री सुग्रीव राय,
रमणीक रामा माय, उरे अवतार जू।
मकर लंछन पाय, एकसौ धनुष काय,
प्रभु की दीक्षा पर्याय, बरस हजार जू॥
निरमम निरमाय, कर्म आठ खपाय,
बि पूर्व लाख आयु, पाम्यौ भव पारजू।
समयसुन्दर ध्याय, साचौ इक तु सखाय,
सुविधि जिणंदराय, सुगति दातार जू ॥९॥
नगर भद्दिलपुर, दृढरथ नरवर,
नंदा कुखि सरवर, लीला राजहंस जू।
श्रीवच्छ लांछनधर, घन राशि मनोहर,
प्रकासै नइ साठि कर, तनु परसंस जू॥
एक असी गणधर, इक लाख मुनिवर,
सुगति समेतगिर, इक्ष्वाकु है बंस जू।
प्रणमै समयसुन्दर, दसमौ ए तीर्थंकर,
श्री शीतल सुरतर, कुल अवतंस जू ॥१०॥
कोउ ब्रह्मा भजौ कोई कृष्ण भजौ,

कोई ईशान को दुख वारक छइ ।
रागरु द्वेष जिण जिपवप,
सोठ देव सुख कउ कारक छइ ॥
श्री वीतराग निरंजन देव,
दया गुण धर्म कौ धारक छइ ।
समयसुन्दर कहइ भविक भजउ इक,
श्रेयांस तीर्थंकर तारक छइ ॥११॥

नभ बादल कहइ नास नीर, पथि बहु निरतर ।
सुपन दीठ शुभ दाखि अशुभ, मारग अभ्यन्तर ॥
दसराहे बहु दुख दयाउ, राजा हथियारे ।
दुख न पावस देह, मरिप नहीं सुख जमारे ॥
कवि एम समयसुन्दर कहै, साखीस्यौ अवसर साचौ ।
वासुपूज्य शरण आव्यउ वही, लांछन मिथि लागी रखौ ।१२।

विमल जाति कुल जया, विमल सुर चवण विमान ।
विमल पिता कृतवर्म, विमल स्वामी सुखखान ॥
विमल कंपिलावास, विमल किद्धौ दीक्षा महोत्सव ।
विमल नाम निर्माण, विमल सब गुण सस्तव ॥
वलि चढ्यौ विमलगिरि विचरतौ, वलि सीधौ समेतगिरि ।
कर जोडि समयसुन्दर कहइ, ते विमल नाथ नै सू समरि ।१३।

बल भी तरो अनत दल भी तरो अनंत,
पुण्य का फल अनंत साथै पर खंड छ ।

भोग भी तेरो अनत जोग भी तेरो अनत,
प्रयोग तेरो अनत प्रताप प्रचण्ड जु ॥
ज्ञान भी तेरो अनत दर्शन भी तेरो अनत,
चारित्र भी तेरो अनत आज्ञा अखण्ड जु ।
सुन्दर कहइ सत्यमेव (सुन्दर) सुरनर करइ सेव,
अनत तीर्थंकर देव तारण तरण्ड जु ॥१४॥

श्रेयांस नी परै दान तुम्हे द्यउ, जिम संसार समुद्र तरौ ।
पालउ शील सती सीता जिम, तप सुन्दरि सरिखौ आदरौ ॥
भरत नाम चक्रवर्त्ती सरखी परि भवियण मन भावना धरौ ।
समयसुन्दर कहइ समवसरण मांहि धर्मनाथ कहै धर्म करौ ।१५।

विश्वसेन पिता माता अचिरा, मृग लांछन सोभन तनु कांति ।
चउसठ इन्द्र मिली न्हवराव्यौ, मेरि उपरि मनि आणी खांति ॥
मरकी गई प्रजा सुख पाम्या, देश मांहि थई सुख शान्ति ।
समयसुन्दर कहै मात पिता ए, पुत्र तणौ दीधौ नाम शांति ॥१६॥

तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, सुर चामर ढालइ सुविहाण ।
दिव्यनाद सुरदुन्दुभि बाजइ, पुष्पवृष्टि पथि जानु प्रमाण ॥
कनक सिंहासण चारु चेइतरु, भामण्डल झलकै जिम भाण ।
समयसुन्दर कहइ समोसरण में, कुन्थुनाथ इम करइ वखाण ।१७।

चुरासी लाख अश्व रथ हाथी, छन्नू कोडि पायक परिवार ।
बत्तीस सहस मुकुट-बद्ध राजा, चौसठ सहस अंतेउर नार ॥

पच्चीस सहस करइ यच सेवा, चउदै रत्न नव निधि विस्तार।
समयसुन्दर कहइ भर तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती पण पदवी सार॥१८॥

पूरव भव ना मित्र महीपति, प्रतिबोध्या पूरवलि वैराग।
ती थापइ तीर्थ वरताव्यौ, ती आगै बैठी लहि लाग॥
निराकार निरंजन स्वामी, उगणीसमौ ए श्री वीतराग।
समयसुन्दर कहइ भव मांहें ममतां, मल्लिनाथ मिल्यौ मुझ माग॥१६

हरि हर ब्रह्मा देव सबै रे, देहरइ भूला भ्रम भमौ।
समकित सधो धरउ मन मांहे, मिथ्या मारग दूर गमौ॥
आठ करम बंधन थी छूटौ, अरिहंत देव नै आय नमौ।
समयसुन्दर कहइ श्री मुनिसुव्रत, वांदउ तीर्थंकर वीसमौ॥२०॥

गुरु मुख शुद्ध क्रिया विधि साचवी, सामायक नै पोसउ करौ।
दृढ आसन बैसी मन निश्चल, ध्यान एक अरिहंत धरौ॥
जरा मरण दुख वस पूरय, भविक क्षेम संसार तरौ।
समयसुन्दर कहै लय लगाडि नइ,
नमि नमि नमि नमि मुख उचरौ॥२१॥

वे बम्पीहा मार्ई भरे काहे री राजुल बाई,
भरी तें कहां देखे नेमि मैं तो विरह न समाई।
विरह कोकिल सहकार विरह गज रेवा होइ,
विरह पम्पीहा मेह विरह सर हंस विचोई॥
चकवाक चकवी निरहा, विरह सहु व्यापी रही।
म करि दुख राजुल मुधा कि,समयसुन्दर साची कही॥२२॥

वे बम्बीह माई,
आयउ री बसंत मास, सब जन पूगी आस,
रमत खेल रास, उडत अबीर जू ।
उछलै गुलाल लाल, लपटावौ दोउ गाल,
बाहइ पिचरके विचाल, भीजे चोली चीर जू ।
मति मली श्याम बाग, छैल छबीला लाग,
सुन्दर गीत सराग, सुन्दर सरीर जु ॥
समयसुन्दर गावै, परम आणंद पावै,
बसंत की तान भावै, गुहिर गंभीर जु ॥२३॥
पंच दिन करि ऊण्य, छमासी पारणा दिन,
झटकि पड़्या बधन पग का जंजीर जू ।
दुन्दुभि बाजी आकास प्रगट्यौ पुण्य प्रकास,
चन्दना की पूगी आस, पाम्यौ भवतीर जू ॥
साध सौ चवदे हजार, साधवी छत्रीस सार,
वीरजी कौ परिवार, गौतम वजीर जु ।
समयसुन्दर धर, ध्यान धर निरंतर,
चौवीसमौ तीर्थंकर, वांद्यौ महावीर जु ॥२४॥
आदिनाथ द आदि स्तव्या, चौवीस तीर्थंकर ।
पवित्र जीभ पद्म कीध, शुद्ध थयौ समकित सुन्दर ॥
सुखी भयौ सहु कोइ, भवण रसना करी सफला ।
इह लोक नै पर लोक, सफल थया पछि सगला ॥
चौवीस सवैया चतुर नर, कह्यो कर मुख नी कला।
समयसुन्दर कहइ सांभलो, ए मीठा मिश्री ना डला।२५।

ऐरवत क्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि*

(८) जुत्तसेण जिन गीतम्

राग—रे वारउ, ताल एकताली

जुत्तसेण तीर्थंकर सती, मोहि रह्या मन मोरा रे।
मालति सु मधुकर जिम मोह्या, मेघ घटा जिम मोरा रे। जु०।१।
मयगल जिम रेवा सु मोह्या, हंस मानस सु सदोरा रे।
मीन मोह्या जिम जलनिधि मांहे, चंद सु जम चकोरा रे। जु०।२।
पूरव पुण्य संजोगे पाया, दुर्लभ दरसन तोरा रे।
समयसुन्दर मांगई तुम्ह सेवा, नमि नमि करत निहोरा रे। जु ।३।

(९) अजितसेण जिन गीतम्

राग—शुद्ध नट चर्चरी ताल सगीत

आवइ चौसठ इन्द्रा, मन में रगइ ए। आ०।
मगरुर नी मगति करइ, सुर गिरि शृङ्गइ। आ०।१।
घप मप धौं मादल बाजइ, शुङ्गल भरि ए। आ०।
तत थे तत थे नटुया नाचइ, फरगट फेरि। आ०।२।
अजितसेन अरिहंत नइ, चरणे लागइ ए। आ ।
समयसुन्दर सगीत गायइ, शुद्ध नट रागइ। आ०।३।

---

* इन चौबीसी के प्रारम्भिक ७ गीत अप्राप्त हैं।

(१०) शिवसेन जिन गीतम्

राग—काफी भठवाला

दसमउ तीर्थंकर शिवसेन नामा साचउ । द०।
निराकार निरञ्जन निरुपम, मोह नहीं तिहां माचउ । द०।१।
हरि हर ब्रह्मा देव देखी नइ, नर नारी मत नाचउ ।
आप तरइ अवरां नइ तारइ, देव तिको तिहां राचउ । द०।२।
कल्पवृक्ष समउ प्रभु कहियइ, जो ओळगइ ते जाचउ ।
समयसुन्दर कहि शिवसेन नाम तउ, समवायांग सूत्र मइ वांचउ।

(११) देवसेन जिन गीतम्

राग—मारूणी एकतालो देसी नी

साहिब तु है सांमलउ, हूँ वीनति करु आप बीत । सा०।
चउरासी लख हूँ भम्यउ, तिहां वेदन सही विपरीत । सा०।१।
देवसेन देव तु सुपयउ, परम कृपाल कदीत ।
तिण तुझ शरणइ हूँ आवियउ, हिव तु देव तु गुरु मीत । सा०।२।
ध्यान इक तोरउ धरूँ, परणइ लाउँ चीत ।
समयसुन्दर कहइ माहरइ, हिव परमसर सु प्रीत । सा०।३।

(१२) नक्षत्रसत्य जिन गीतम्

राग—वसन्त

नमु अरिहन्त देव नक्षत्र सत्य । न० ।

सुगति जातां पकी मेलइ सत्थ । न० ।१।
पालउ जीव दया इह धरम पत्थ ।
मगवंत मास्वइ सुवत्थ सत्थ । न० ।२।
दुर्गति पड़तां झाइउ दिइ हत्थ ।
समयसुन्दर कहइ प्रभु छइ समत्थ । न० ।३।

(१३) अस्सनल जिन गीतम्

राग—भूपाल चउताल

वेरमउ अस्सनस्व तीर्थंकर, जिण देशन ए दीधी रे।
छ जीव नी रखा तुम करजो, सुगति तणी वाट सीधी रे। वे०।१।
वीतराग नी वाणी मोठी, प्रेम करी जिण दीधी रे।
भव समुद्र मांहे ते मवियण, नहीं भमइ बात प्रसिद्धी रे। वे०।२।
आज्ञा सहित क्रिया सहु कीधी, दीक्षा पणि फलइ सीधी रे।
समयसुन्दर कहइ मन शुद्ध करजो, धर्म थकी रान रिद्धी रे। वे०।३।

(१४) अनन्त जिन गीतम्

राग—वेलावल इकतालो

अहो मेरे जिन कु कुण ओपमा कहुँ।
काठ कल्प चिन्तामणि पाथर कामगवी पशु दोष ग्रहुँ। अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहुँ।
जल दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण तउ हुँ किम सद्दहुँ।२।
कमल कोमल पणि नाल कन्टक नित, सुरत छन्दिलता कहुँ।
समयसुन्दर कहइ अनन्त तीर्थंकर, तुम मइ दोष न लहुँ। अ०।३।

(१५) उपशान्त जिन गीतम्

राग—मारुणी एकताली

बार परखदा बइठी आगलि, आप आपणइ उल्लासइ रे।
पनरमउ श्री उपशांत तीर्थंकर, चउविधि धर्म प्रकासइ रे।१।
धन जीव्यु रे २ धन जीव्यु आज अम्हारु।
रन्या लोक कहइ नरनारी, वचन सुण्यु जे तुम्हारु रे।
धन जीव्यु रे २ ॥ आंकणी ॥
पंइतालीस धनुष नी उंची, कंचन वरणी काया रे।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, प्रणमइ सुरनर पाया रे।२ ध०।
दस लाख वरस नु आऊखु, सुप्रतिष्ठ गिरि (पर) सीधा रे।
समयसुन्दर कहइ जीभ पवित्र थइ, जिन गुण ग्राम मइ कीधा र।३।

(१६) गुप्तिसेण जिन गीतम्

राग—मिश्र विहागड़ केदारउ। एकताला

सोलमा श्री गुप्तिसेण तीर्थंकर सांभलउ,
श्री शांतिनाथ समान[२] तुम्हे तउ त सांभलउ।
पखि तिण तउ पारेवउ शरणे राखियउ,
तिम मुझ शरणे राखि मिलइ जिम माखियउ।१।
चालिम धनुस शरीर सोभन मइ-सोहतउ,
आउखु लाख वरस लांछन मृग मोहतउ।२।

पाठान्तर—१ अनंतसेन-गप्तसेन। २ सरिखु।

राशि मेल मन मेल विमासस्य साहवा,
साहिब सेवक जोड़ सेवु पय तुम तथा ।३।
भवि भवि देज्यौं सेव म करिस्यउ वेगलउ
समयसुन्दर कहि एम ए प्रेम पूरउ मलउ।४।

(१७) श्रीसपास जिन गीतम्

राग—बेलावल

सकरमउ श्री श्रतिपास तीर्थंकर, मन वंछित फल नउ दातार।
म बोल मांगु ब कर जोड़ी, मवि भवि मत के समकित सार।१।
मध्य भाइ पवि मारी करमउ, दुषम काल मरत श्रवतार।
पवि समरथ साहिब तु सेव्यउ, परु थाडिसी भाइ हु पार।२।
सिद्धि गमन परिपाक म जिम छइ, ते तिम छइ तिम तउ निरधार।
समयसुन्दर कहइ वां छु छदमस्थ,तो सीम चरम करिसी श्रीकार।

(१८) सुपास जिन गीतम्

राग—तोडी

सुपास तीर्थंकर साचउ सही री। सु०।
मसरउ श्रगोचर श्रकल सरूपी, राग द्वेष लव लेश नहीं री। सु०।
मान लांछन तीस धनुप मनोहर, कपा कंचन वरया कही री।
भी श्ररनाथ समउ ए श्ररिहंत,सुप्रतिष्ठ गिरि सुगति लही री।सु०।
गुस ग्राम कीधा गिरुया ना, दुगति नी वाव दूरी रही री।
समयसुन्दर कहइ सफल जनम थयउ,वीतराग दरसनी श्रास वही री।

(१९) मरुदेव जिन गीतम्

राग—मालवी गउड़

मोगथीसमठ मरुदेव अरिहंत, मल्लिनाथ समान रे।
नील वरणी तनु विराजइ, पुरुष रूप प्रधान रे ।१। मो०।
जिण दिन जिन' चारित्र लीधु , तिण दिन केवल ज्ञान रे।
इन्द्र चउसठि मिली आवइ, गायइ गीत नइ मान रे ।२। मो०।
तुम्ह बिना हुं भम्यउ भूलउ, जिम पड्यउ मृग रान रे।
समयसुन्दर कहइ हिव हुं, धरिस तोरउ ध्यान रे ।३। मो०।

(२०) श्री सीधर जिन गीतम्

राग—[illegible]

हिव हुं थांदु री बीसमउ सीधर।
सामि नित ऊठी ल्यु नाम ।हिव०।
हु करु गुण ग्राम, केवल मुगति काम।
प्रभु सोहइ अभिराम, ऐरवत ठाम ।हिव०।१।
हरिवंश कुल माया, उपनु कमल नाए ।
सरस करइ वखाण, अमृत वाणि ।
मीकदया पालउ आण, आप समा पर प्राण ।
समयसुन्दर कहइ, वचन प्रमाणि ।हिव०।२।

---

१ स्वामि।

(२१) सामकोठ जिन गीतम्

राग—केदारा गउडी

श्रीसामकोठ[१] तीर्थङ्कर देवा,
एकवीसमा जिन नाम कहेवा ।१। श्री सा० ।
तउ जाणउ भव समुद्र तरेवा,
तउ वीतराग नइ वयने रहेवा ।२। श्री सा० ।
मुझ मन मागु भव भइ ममेवा,
समयसुन्दर कहइ हुं करिस्युं सेवा ।३। श्री सा० ।

(२२) अग्गिसेण जिन गीतम्

राग—गउडी

अग्गिसेन[२] तीर्थङ्कर उपदिसइ, एह संसार असार रे ।
पुण्य करउ रे तुम्हे प्राणिया, मफल करउ अवतार रे ।१। अ० ।
हरिवंश सामवरया वरण, सत्त लाञ्छन श्रीकार रे ।
चित्रकूट परबत ऊपरिं, पामीसु शिव सुख सार रे ।२। अ० ।
एह अरिहंत बावीसमउ, एरवत क्षेत्र मझार रे ।
श्री नेमिनाथ ना[३] सारिखउ, समयसुन्दर सुखकार रे ।३। अ० ।

(२३) अग्गपुत्त जिन गीतम्

राग—धन्यासी

वीतराग वांदिस्यु रे हिव हुं, अग्गपुत्त[४] अरिहंत ।

---

१ समकोष्ठि । २ अतिसेन । ३ सरिसु मवि उपम । ४ हुत पवित्र ।

ससार[1] समुद्र नइ पारि उतारइ, मय भजण भगवत।१।वी०।
नील वरण महिमा निलउ रे, सरप लांछण सोमत।
तीर्थङ्कर तेवीसमउ रे, नव इथ तनु निरखत।२।वी०।
पारसनाथ सरिखु सहु रे, एहना गुण छइ अनत।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ इन्द्र, तउ पिण कहि न सकंत।वी०।

(२४) वारिसेण जिन गीतम्

राग—विहागड़

वारिसेण तीर्थङ्कर ए चउवीसमउ,
सगली परि श्री महावीर समउ।१।वा०।
खरउ वीतराग देव स्तवि समउ,
भजउ भगवत जिम भव न भमउ।२।वा०।
चरणे[2] चित्त लगाइ नमउ,
समयसुन्दर कहइ सुगति रमउ।३।वा०।

[कलश]

राग—धन्यासी

गाया गाया री ऐरवरत तीर्थङ्कर गाया।
चउवीसां ना नाम वीतरागां, समवायांग सूत्र मइ पाया री।१ ऐ०।
सवत सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया।
हाथी साह तणइ आग्रह कहइ, समयसुन्दर उवझाया रे।२ ऐ०।

इति ऐरवरत क्षेत्र २४ तीर्थंकर गीतानि समाप्तानि।

१ भवजल। २ समयसुन्दर कहि ए चुवीसमु श्री जिन पांयी भव मत गमु। (पाठान्तर भद्रमुनि, बुद्धिमुनि प्रेषित कापी से)

चन्द्रानन १ सुचन्द्र २ अग्गिसेण ३ नंदसेण ४ इसिदिन ५ वयधारि ६ सामचंद ७ जुत्तसेन ८ अजितसेन ९ सिवसेन १० देवसेन ११ निक्खित्तसत्थ १२ असंजल १३ अनंत १४ उवसंत १५ गुत्तिसेण १६ अतिपास १७ सुपास १८ मरुदेव १९ सीधर २० सामकोठ २१ अग्गसेण २२ अग्गिपुत्त २३ वारिसेण २४।

इति श्रीसमवायांगसूत्रोक्त ऐरवतक्षेत्र २४ तीर्थंकरनामानि।

[स्वयं लिखित प्रति से]

विहरमान-वीसी-स्तवनाः

१ सीमंधर जिन गीतम्

राग—मारुणी

सीमंधर सांभलउ, हुं वीनति करूं कर जोड़ि।सी०।
तू समरथ त्रिभुवन धणी, मुझ नइ भव संकट थी छोड़ि।सी०।१।
तुम मुं विचि अंतर घणउ, किम करूं तोरी सेव।
देव न दीधी पांखड़ी, पखि किम मई तु इक देव।सी०।२।
चंद चकोर तणी परि, तू वसइ मोरइ चित्ति।
समयसुन्दर कहइ तू सही, प परमेसर स्युं प्रीति।सी०।३।

२ युगमंधर जिन गीतम्

राग—गौड़ी

तू साहिब हूँ सेवक तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी।
हु प्रभु तोरइ सरणे आयउ, तू मुझ नइ साधारि जी।१।

श्री युगमंधर करुणा सागर, विहरमाण जिणंद जी।
सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणंद जी।२। श्री यु०।
जनम जरान्तिक दुख थी बीहतउ, हुं आव्यउ तुम्ह पासि जी।
मुझ ऊपरि प्रभु मया करी नइ, दीजइ निरमय वास जी।३ श्री यु०।
वीनतड़ी प्रभु सफल करज्यो, श्री युगमधरदेव जी।
समयसुन्दर कर जोड़ी वीनवइ, भवि भवि तुम पय सेव जी।४श्री०

३. बाहु जिन गीतम्

राग—आसावरी

बाहु नाम तायकर थउ मुझ, दुरगति पड़तो बांह रे।
हुं सरणउ आव्यउ तुम्ह पास, तुम्ह करउ गाढी छांह रे।१। बा०।
पच्छिम महाविदेह रहउ तुम्ह, हूँ तउ भरत खेत्र मांहि रे।
दिया पांख विना किम आवुं, पणि माहरू मन त्यांह रे।२। बा०।
चउरासी लख माहि भम्यउ हूँ, पणि सुख न लाधउ क्यांह रे।
समयसुन्दर कहइ सुणि मुझ साहिब, सासता सुख छइ ज्यांह रे।

४ सुबाहु जिन गीतम्

राग—आसावरी

स्वामि सुबाहु तू अरिहंत देवा, चउसठि इंद्र करइ तुझ सेवा।
सुरनर आगइ धरम सुणावा, माठी वाणि अमृत रस मावा।१ मा०।
फेड़इ भ्रमन संदेह हरवा, भवियउ समकित सुद करवा।२ सा०।
तुझ समरू भव समुद्र तरवा, समयसुन्दर कहइ शिव रमणी वरवा।३।

५ सुजात जिन गीतम्

राग—गु ड

सुजात तीर्थंकर साहरी हुयइ उव किम्ह छोडि र ।
दव मीज तउ दूषण घणां, तु मइ नहीं तिल खोडि र ।१।सु०।
पूरव स्नाउ स्वामी पछी, छो राज ऋद्धि छोडि र ।
संयम मारग आदयउ, महा मोह दल मोडि र ।२।सु ।
तुम्ह वीतराग नाइ समरतां, त्रुटइ करम नी कोडि र ।
समयसुन्दर कहइ स मसी, सु नइ नमू कर जोडि र ।३।सु०।

६ स्वयप्रभ जिन गीतम्

राग—प्रभाती

स्वयंप्रभ तीर्थंकर सुन्दरु ए, मित्रभूति रायां मा कु अरु ए ।१ स०।
सुमंगला राणी माता उरि घरू ए, वीरसेना राणी कत सुसकरु ए ।
चंद लांछन दव दया करू ए, समयसुदर ना परमसरू ए ।२ स ।

७ ऋषभानन जिन गीतम

राग—श्रीराग

(ढाल —पढ २ चंद्रानन जिणवर नमो ए चाल्ही जाति ।)
ऐठ २ रिषभानन अरिहंत नमो, भय मंजण मी भगवन्त नमो ।१।
भातकीखंड जिणंद नमो, कजलज्ञान दिणंद नमो ।२ रि०।
सिंह लांछन अभिराम नमो, समयसुन्दर ना सामि नमो ।३ रि ।

८ अनन्तवीर्य जिन गीतम्

राग—कल्याण

(ढाल —कृपानाथ तइ मूप नू वयर्य री । कृ० । एहनी जाति)

अनतवीरिज आठमउ तीर्थंकर । अ० ।
राग द्वेष रहित कृपा पीजउ,
देव कहु हरि ब्रह्मा संकर । १ । अ० ।
त्रिभुवन नाथ अनाथ कउ पीहर,
गुण अनत अतिसय अतिसुन्दर ।
सुर नर कोडि करइ तुम्ह सवा,
चउसठि इंद्र तिके पणि किंकर । २ । अ० ।
धातकीखंड मइ धरम प्रकासइ,
अरिहंत भगवंत तु अलवेसर ।
समयसुन्दर कहइ मनसुधि माहरइ,
इहभवि परभवि तु परमेसर । ३ । अ० ।

९ सूरिप्रभ जिन गीतम्

राग—गउडी

(ढाल—हइ मोटु पणि परम सरोवर । एहनी जाति)

श्री सूरिप्रभ सेवा करस्यु,
ध्यान एह भगवंत नु धरिस्यु । श्री० ।
पाप कम्मल प्रभु मा अनुसरस्यु,

संसार समुद्र हूँ हेला तरिस्यु । भी०॥१॥
पथ प्रमाद दूरि परिहरस्यु,
वीतराग देव ना वचन समरस्यु । भी०॥२॥
अरिहंत अरिहंत नाम ऊचरिस्यु,
समयसुन्दर कहइ हूँ इम तरिस्यु । भी०॥३॥

१० विशाल जिन गीतम्

राग—मुघडड

(ढाल—मन आणइ के सिरजणहार । एहनी जाति)

जिनजी वीनति सुणउ तुम्ह स्वामि विसाला,
तुम्हनइ सुण्या मइ दीनदयाला । जि०।१।
मिली न सकूं आया समुद्र विचाला,
पणि तुम्ह नाम जपुं जपमाला । जि०।२।
ममत ऊचरतां मत करउ टाला,
समयसुन्दर था तुम्हे प्रतिपाला । जि०।३।

११ वज्रधर जिन गीतम्

राग—वसंत

(ढाल—चंद्रप्रभ मेरपत मइ चवधारि । एहनी जाति)

वज्रधर तीर्थंकर वांदू पाय, जिहां छइ तिहां जाय ।
पणि पूरब विदेह मइ ते कहाय । १ । व० ।

मिलवानी मुझ नहि सगति काय,
दरसण दीठां विण दुख थाय।
समयसुन्दर कहइ मुझ करि पसाय,
सुपनंतरि पणि दरसण दिखाय।२।क०।

१२ चन्द्रानन जिन गीतम्

राग—प्रभाति

(ढाल—मेरउ गुरु जिणचंद सूरि। एहनी जाति)

चंद्रानन जिणचंद, दरसण दीठां आणंद।
धातकी खंड मझार, वीतराग विहरमाण।
भविक कमल भाण, दूरि करइ दंद।१।चं०।
वृषभ लांछन पाय, पद्मावती राणी माय।
पिता वालमीक राय, नमइ नर वृन्द।२।चं०।
दक्षिण भरत घर, अयोध्या नामइ नगर।
प्रणमइ समयसुन्दर, पाय अरविन्द।३।चं०।

१३ चन्द्रबाहु जिन गीतम्

राग—मारुणी

(ढाल—नेमि० जीव नणापइ मा मारा नाह रे म ढगगा दे। ए० एहनी जाति)

चन्द्रबाहु चरण कमल मधुकर मन मरउ हो। च०॥
सुर देव गिर नगराय नाग करि नरउ हो। चं०॥१॥

तुम्ह समरण थकी तुम्ह, करम मूकइ केरउ ।
सहस किरण परिव ऊग्यां, किम रहइ अंधेरउ हो । चं० ॥२॥
वीतराग देव किना हुं, दूव न मागु अनेरउ ।
समयसुन्दर कहइ मुम्ह, सरसउ एक तेरउ हो । चं० ॥३॥

१४ भुजंग जिन गीतम्

राग—मारुणी

भुजंग तीर्थंकर मेन्यिइ जी, त्रिभुवन केरउ ताय ।
ऊंची पांचसइ धनुषनी जी, कंचन वरणी काय । भु०॥१॥
पुष्करार्ध मांहे परगडउ जी, केवलज्ञानी कहाय ।
विहरमान विचरइ तिहां जी, चउरासी पूरव लाख आय । भु०॥२॥
समोसरण मांहे बइसि नइ जी, देसणा यइ जिनराय ।
समयसुन्दर कहइ हूँ दूरि थी जी, प्रणमुं प्रभु ना पाय । भु०॥३॥

१५ ईसर जिन गीतम्

राग—शुद्ध नट

ईसर तीर्थंकर आगइ आवइ इंदा । ए आं ।
बत्रीस बद्ध नाटक करइं, नव नव नव छंदा । ए आं । ई० ।१।
भवनपती देव व्यंतर, धरिनि चंदा । ए आं ।
देवलोक ना इन्द्र आवइ, गावइ गुण वृन्दा । ए आं । ई० ।२।
मगर्वत नी भगति जुगति, सुगति आणंदा । ए आं ।
समयसुन्दर वंदइ पाइ, परमारविन्दा । ए आं । ई० ।३।

१६ नेमि जिन गीतम्

राग—गधड़ी

विहरमान सोलमउ प्रभु नेमि नाम ।
दखिण विदेह नलिनाक्षी विजए, पु डरीकिणी पुरी ठाम ।१ वि०।
वीरराज सेना कउ नंदन, इन्द्र नमें सिर नामि ।
सुरतरु चिन्तामणि सरिखउ तू, पूरवइ वंछित काम ।२ वि०।
केवल ज्ञान अनंत गुणे करी, अरिहंत तू अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ नित करूं तोरा, रात दिवस गुण ग्राम ३ वि०।

१७ वीरसेन जिन गीतम्

राग—सबाब

वीरसेन जिन नी सेवा कीजइ,
पवित्र वचन अमृत रस पीजइ।१।वीर०।
पुगरारघ माहे दूरि कहीजइ,
तउ पणि अरिहंत ध्यान धरीजइ ।२।वीर०।
जनम जीवित नउ लाहउ लीजइ,
समयसुन्दर नइ दरसण दीजइ ।३।वीर०।

१८ महाभद्र जिन गीतम्

राग—केदारउ

महाभद्र महारमउ अरिहंत ।
गज लांछन देवराज नंदन, धरणि कन्ता कंत ।१। महा०।

कृपानाथ अनाथ पीहर, मय भंजण भगवंत ।
पच्छिम महा विदेह विजया, नगरी मइ विचरंत ।२। महा०।
उमादेवी मात अंगज, सकल गुण सोभंत ।
समयसुन्दर चरण तरे, प्रह ऊठी प्रणमंत ।३। महा०।

१९ देवयशा जिन गीतम्

राग—मारुणी

देवजसा अरिहंत चिर जयउ तीर्थंकर, दक्ष पुष्करद्वीप मझार रे । ती०।
भव्य जीव प्रतिबोधता ती०, क्रमि क्रमि करइ विहार रे । ती०।१।
सर्वभूति नामइ पिता ती०, गंगा मात मल्हार रे । ती ।
ए अरिहंत उगणीसमउ ती , त्रिभुवन नउ आधार रे । ती०।२।
राजऋद्धि किम्ही वस्तु नी ती०, लालच ही न करउ लिगार रे । ती०।
समयसुन्दर इम वीनवइ ती० आवागमया निवारि रे । ती०।३।

२० अजितवीर्य जिन गीतम्

राग—मारुणी

हां मेरी माई हो, अजित वीरज जिन वीसमउ,
मोहु मांग्यु हो समवसरण मझार ।
सुरनर कोडि सेवा करइ, वीतराग नु सुखइ सरम मझार । अ १।
मत थी लाख पूरब बउलइ, स्वामी तुम्हे नउ पहुचिस्यउ निरवाण ।
पणि मुझ न" संभारज्यो, तुम्ह सेती हो पत्नी जाय पिछाण । अ ।
तुमे नीरागी निसप्रेमीही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण ।
समयसुन्दर कहइ शिव पामु ,तां सीम तउ करज्यो कल्याण । अ०३।

॥ कलश ॥

राग—धन्याश्री चपल

वीस विहरमान गाया, परमाणद सुख पाया ।
वीम पवित्र जिह्वा कीधी, मिश्री दूधस्यु पीधी ।१। वी० ।
समकित पणि थयु निरमल, पुण्य थयु सुभ परिचल ।
सुखस्यइ ते पणि तरस्यइ, कान पवित्र पण करस्यइ ।२। वी० ।
जंबू द्वीप मइ च्यार, महा विदेह मझार ।
धातकी पुष्कर जेथि, आठ आठ अरिहंत तेथि ।३। वी० ।
मनकरति तु फल मांगू, वीतराग नइ पाए लागू ।
चिहां हुयइ जिणधर्म सार, तिहां देज्यो अवतार ।४। वी० ।
संवत सोलह सईत्रासु, माह वदि नवमी वलासु ।
अहमदावादि मझारि, श्री खरतरगच्छ सार ।५। वी० ।
श्री जिनसागर सूरि, प्रतपइ तेज पडूरि ।
रूपी साह नी हुंसे, तीथकर स्तव्या वीसे ।६। वी० ।
श्री जिनचंद सूरीस, सकलचंद तसु सीस ।
तेह तणइ सुपसायइ, समयसुन्दर गुण गायइ ।७। वी० ।

इति श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकराणां गीतानि

(लिखितानि वा० हर्षकुशल-गणिना १७१७)

बीस विहरमान जिन स्तवन

[जिननाम १ मात २ पिता ३ लांछन ४ सहितम्]

प्रणमिय शारद माय[1] समरिये सद्गुरु,
धर्म बुद्धि हियड़ धरी ए ।
विहरमान जिन बीस थुणिसु मन थिरै,
मात तात लंछन करी ए ॥१॥
श्री सीमंधर स्वामि सत्यकि नंदनो,
मन मोहन महिमा निलो ए ।
जास पिता श्रेयांस वृषभ लांछन धर,
श्री जिनवर त्रिभुवन तिलो ए ॥२॥
श्री युगमंधर देव सेव करु नित,
मात सुतारा नंदनो ए ।
सुदृढ पिता सुखकार गज लांछनधर,
वचन सुधारस चंदनो ए ॥३॥
बाहु नाम जिनराज विजया अंगज,
सुग्रीव वंश निशाकरु ए ।
अंकि हरिण उदार रूप मनोहर,
वंछित पूरण सुरतरु ए ॥४॥

॥ ढाल ॥

श्री सुबाहु सुविख्यात, सु(भ)नंदा अंग जात ।
तात निसढ वरु ए, कपि अंकि धरु ए ॥५॥

---
१ पाय

समरू स्वामी सुजात, देवसेना जसु मात ।
देवसेन अंगज ए, रवि चिन्ह पदकज ए ॥६॥
श्री स्वयंप्रभ स्वामि, मात सुमंगला नाम ।
मित्रभूति कुलतिलो ए, चन्द्र लाछन भलो ए ॥७॥
ऋषभानन जिनचंद, श्री वीरसेना नंद ।
कीर्त्तिराय कुंयरू ए, सिंह अंक सुंदरु ए ॥८॥

॥ ढाल ॥

अनंतवीर्य अरिहंतु ए, मंगलावती सुत गुणवंतु ए ।
मेघराया घर अवतर्या ए, चंद लाछन गुणरयणे भर्या ए ॥९॥
श्री सुरप्रभ वंदिये ए, विजया माता चिर नंदिये ए ।
विजयराय तसु तातु ए, ससिहर लाछन अवदातु ए ॥१०॥
श्री विमल[१] सुप्रशंसु ए, भद्रा माता उर हंसु ए ।
जसु पिता श्रीनाथु ए, सूरिज लाछन सोभागु ए ॥११॥
श्रीवज्रधर जग नाथिये ए, श्रीसरस्वती मात वखाणिये ए।
जनक पद्मरथ जासु ए, सख[२] लांछन जासु प्रकाशु ए ॥१२॥

॥ ढाल ॥

चन्द्रानन जिनवर, त्रिभुवन जन आधार ।
माता पद्मावती, गर्भी उर अवतार ॥
वाल्मीक पिता जसु, लांछन वृषभ उदार ।

[१] विशाल २ शंकह सख पूरइ भासु ए।

प्रभुना पद पंकज, प्रणमंतां जयकार ॥१३॥
भव भय दुख भंजन, चंद्रबाहु भगवंत ।
रेणुका राणी सुत, महियल महिमावंत ॥
देवानंद नरवर, वंश विभूषण हंस ।
भवभूत पद पंकज, लांछन जग अवतंस ॥१४॥
महियल जस मेरुखो, भीमभुजंग जिनराय ।
महिमा माता वसि, सातु महाबल राय ॥
पंके अति सुन्दर, सोहे जसु अरविंद ।
समरंतां सेवक, पामे परमानंद ॥१५॥
ईश्वर परमेश्वर, प्रणमु परम उल्लास ।
जयवंत जिणेसर, मात जसोअला वास ॥
गजसेन पिता गुण, माणिक रयण भंडार ।
शशि लंछन शोभित, सेवक जन(म) साधार ॥१६॥

॥ ढाल ॥

जगगुरु नेमि जिनेसरु, सेना मात मल्हारो जी ।
वीरसेन नृप नंदनो, परम पंक उदारो जी ॥१७॥
वीरसेन[1] प्रभु वंदिये, भानुमती सुत सारो जी ।
भूमिपाल भूपति पिता, लांछन वृषभ अपारो जी ॥१८॥
स्वामी महाभद्र समरिये, उमा देवी नंदो जी ।
देवराय कुल चंदलो, गज लंछन जिनचंदो जी ॥१९॥

---

१ वीरराज

देश यशा जगि विरचयो, गगा देवी मायो जी ।
सर्वभूति नामे पिता, शशिहर चिन्ह सुहायो जी ॥२०॥
अजितवीर्य जिन बीसमो, मात कनीनिका सासो जी ।
राजपाल सुत राजियो, स्वस्तिक अंक विलासो जी ॥२१॥
अइ उगमते प्रणमिये, विहरमान जिन बीसो जी ।
नामे नवनिधि सपजे, पूरे[१] मनह जगीसो जी ॥२२॥

॥ कलश ॥

इम बीस जिनवर सुवन दिनकर, विहरमान जिनेसरा ।
निय नाम माय सुताय लांछन, सहित थुणिय परमेसरा ॥
जिनचद सूरि विनेय पंडित, सकलचंद महामुणी ।
तसु सीस वाचक समयसुन्दर, सथुणया त्रिभुवन धणी ॥२३॥

बीस विरहरमान जिन स्तवन

बीस विहरमान जिनवर राया जी ।
अइ ऊठी नित प्रणमु पाया जी ॥
अइ ऊठी नित प्रमणु पाय प्रभुना, सीमंधर युगमंधरो ।
बाहु सुबाहु सुजात स्वयप्रभ, श्री ऋषभानन जिनवरो ॥
श्री अनंतवीर्य श्री सुरिप्रभ क, चरण से चित लाया ।
अइ ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, विहरमान जिनराया ॥१॥

---

१ पावइ

विशाल तीर्थंकर वांदू त्रिकालो जी ।
वज्रधर चंद्रानन प्रतिपालो जी ॥
प्रतिपाल चंद्रबाहु भुजग ईस्वर, नेमि प्रभ्य कमल नमुं ।
वीरसेन महाभद्र देवयशा भी अजितवीरिज वीसमुं ॥
ए वर्धमान जिणंद विचरै, अद्वीप द्वीप विचालो ।
'प्रह ऊठी प्रणमैं समयसुन्दर, तीर्थंकर त्रिकालो ॥२॥
वीसे जिनवर ज्ञान दिणंदा जी ।
चौमुख सोहै पूनमचंदा जी ॥
पूनमचंद छवी परे, प्रभु समवसरण विराजए ।
देशना अमृतधार वरसै, भविय संशय भाजए ॥
पांचसइ धनुष प्रमाण काया, नमइ इंद्र नरिंदा ।
प्रह ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, जिनवर ज्ञान दिणंदा ॥३॥
भवि भवि देज्यो तुम पाय सेवा जी ।
मिलन उमाहो गज जिम रेवा जी ॥
गज जेम रेवा मिलन उमहो, दैव न दीधी पांखड़ी ।
सो सफल दिवस गिणीस अपनो, जिण दिन दखिस आंखड़ी ॥
दूरि थी मोरी वंदना छिव, जाण्ज्यो नित मेवा ।
प्रह ऊठि प्रणमै समयसुन्दर, भव भव तुम पय सेवा ॥४॥

——x x——

श्रीसीमन्धरस्वामिस्तवनम्

पूर्वसुविदेहपुष्कलविजयमण्डन,
मोहमिथ्यात्वमतितिमिरमरखण्डनम् ।
वर्धमान जिनाधीश—तीर्थङ्कर,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥१॥
असुर-सुर-खचर-नरवृन्दकृतवन्दनं,
रूपसुररमखिसम-सत्यकिनन्दनम् ।
वृषभलाञ्छनधर ख्यातगुणसुन्दर,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि—सीमन्धरम् ॥२॥
परमकरुणापर जगति हितकारक,
भीमभवजलधिजलपारउत्तारकम् ।
धम धारिमधरा धरणधरमन्दरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि—सीमन्धरम् ॥३॥
ऋद्धिवर-सिद्धिवर-बुद्धिवर-दायक,
त्रिदशपति-भवनपति-मनुजपतिनायकम् ।
भविकजननयनकैरववने शशिकर,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥४॥
स्वर्णसमवर्णवरमूर्तिशोभाधरं,
सुगुरुजिनचन्द्र—जितमिंदगुणसागरम् ।
समयसुन्दर-सदानन्द-मङ्गलकरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥५॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन

धन धन क्षेत्र महाविदेह जी, धन पुण्डरंगिणी गाम ।
धन्य तिहना मानवी जी, नित उठ करै रे प्रणाम ।१।
सीमंधर स्वामी, कहये रे हूँ महाविदेह आवीस ।
जयवंता जिनवर, कहये रे हूँ तुमनें वांदीस ।आ०।
चांदलिया संदेसडो जी, कहजे सीमंधर स्वाम ।
भरतक्षेत्र ना मानवी जी, नित उठ करइ रे प्रणाम ।२।सी०।
समवसरण देवे रच्यो तिहां, चौसठ इन्द्र नरेश ।
सोना तणै सिंहासण बैठा, चामर छत्र धरेश ।३।सी०।
इन्द्राणी काढे गूहली जी, मोती ना चौक पूरेश ।
ललि ललि लीयें लूंछणा जी, जिनवर दियें उपदेश ।४।सी०।
एहवा समय मइ सांभल्यू जी, हवे करवा पचक्खाण ।
पोथी ठवणी तिहां कने जी, अमृत वाणी वखाण ।५।सी०।
राय नें व्हाला घोडला जी, वेपारी नै व्हाला दाम ।
अम्ह ने व्हाला सीमंधर स्वामी, जिम सीता ने राम ।६।सी०।
नहीं मांगू प्रभु राज ऋद्धि जी,नहीं मांगू ग्रथ भंडार ।
हूँ मांगू प्रभु एतलो जी, तुम पासे अवतार ।७।सी ।
देव न दीधी पांखडी जी, किम करि आवुं हजूर ।
मुजरो म्हारो मानजो जी, प्रह उगमते सूर ।८।सी०।
समयसुन्दर नी वीनति जी, मानजो वार वार ।
बेकर जोडी वीनवु जी, वीनतडी अवधार ।६।सी०।

सीमधर जिन स्तवन

विहरमान सीमधर सामी, प्रह ऊठी प्रणमु सिरनामी ।१। वि०।
सत्यकी माता उरि सर हसि, लांछन वृषभ पिता श्रेयसि ।२। वि०।
पूरव महाविदेह मझारी, पुखलावती विजयो अवतारी ।३। वि०।
कंचन वरणी कोमल काया, चउरासी लख पूरव आया ।४। वि०।
पांचसय धनुष शरीर प्रमाणा, अमृत वाणी करत वखाणा । वि०।
सकल लोक संदेह हरंता, समयसुन्दर वांदइ विहरंता ।६। वि०।

इति श्रीपुष्कलावतीविजयमण्डणश्रीसीमधरसामिभास ॥ २६ ॥

सीमधर जिन स्तवन

चंदालाइ एक करू अरदास चंदा,
चंदालाइ सीमधर सामी नैं कहे मोरी वंदना रे लो।
चंदालाइ मूरति मोहन वेल चंदा,
चंदालाइ सूरति तो अति सुन्दर शीतल चंदना रे लो ।१ चं०।
चंदालाइ मो मन मिलन उमद चंदा,
चंदालाइ दयइले न दीधी मुझने पांखड़ी र लो।
चंदालाइ सकल दिवस मुझ सोइ चंदा,
चंदालाइ आपणड़ा वाल्हसर देखिम आंखड़ी र लो ।२ चं०।
चंदालाइ मन मान्या मलाप चंदा,
चंदालाइ पूरबलै सरजे तिण कयु करि पामय र लो।

चंदाउलाप समयसुन्दर कहइ एम चदा,
चंदाउलाप पचरसठ सुपनतर साहिब आइये रे लो।२ चं०।

सीमधर जिन स्तवन

सीमंधर जिन सांभलउ, वीनति करूं कर जोड़ ।
तू समरथ त्रिभुवन धणी, मुने मन संकट थी छोड़ ।१। सी०।
तुम मूं विचि अतर घणो, किम करूं तोरी सेव ।
पांख विना किउ मिलू, पण दिल में तू एक देव ।२। सी०।
जिम चकोर मन चंद्रमा, तिम तू मोरे चित्त ।
समयसुन्दर कहइ ते खरी, ज परमसर सु प्रीत ।३। सी०।

सीमघर जिन गीतम्

राग—मारुणी

स्वामि तारि नइ रे मुझ परम दयाल, सीमधर भगवंत रे ।
सरवाभत सेरक अन पच्छल, श्री जिनवर जयवत रे ।१। स्वा०।
पुखलावती विजय प्रभु विहरइ, महाविदेह मझारि रे ।
हूँ अति दूरि पड्यं प्रभु तोरी, सवा करु किम सार रे ।२। स्वा०।
ह हूँ दैव कश्य नवि दीधा, पांखड़ली मुझ दोय रे ।
जिम हूँ आ नइ अगगुरु वांद्, हीयडलु हरखित होय रे ३। स्वा०।
समवसरण सिंहासण स्वामी, बइठा करइ वखाण रे ।
धन ते सुर किन्नर विद्याधर, वाणी सुणइ सुविहाण रे ।४। स्वा०।

धन ते गाम नयर पुर मंदिर, जिहां विहरइ जिनराय रे।
विहरमाण सीमधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे।५। स्वा०।
तुम दरसण विण चउ गति मांहि, हूँ भम्यउ अनंतीवार रे।
हवइ प्रभु तोरइ सरणे आव्यउ, आवागमण निवारि रे।६। स्वा०।
सेवक नी प्रभु सार करी नइ, सारउ वंछित काज रे।
समयसुन्दर कर जोडी बीनवइ, आपउ अविचल राज रे।७। स्वा०।

(२)

राग—गउड़ी

पूरव माहे विदेह र, पुखलावती विजय जेह रे।
पु डरीकणी पुरी नामि र, विहरइ सीमधर स्वामि र ॥१॥
वृषभ लांछन सुखकार रे, श्री श्रेयांस मल्हार र।
सत्यकी उरि अवतार रे, रुकमणि नउ भरतार र ॥२॥
पांच सइ धनुष नी काय रे, सेवइ सुरनर पाय र।
सोवन वरण शरीर र, सायर जेम गमीर रे ॥३॥
कनक कमल पद ठवइ रे, सुर किन्नर गुण गावइ रे।
भवियण सण नइ साधारइ रे, भवजल पार उतारइ* रे ॥४॥
धन धन ते पुरगाम र, विहरइ सीमधर स्वामि रे।
धन धन त नर नारी रे, भगति करइ प्रभु सारी र ॥५॥
श्री सीमधर स्वामी र, चरण नमु सिर नामी रे।
समयसुन्दर गुण गावइ र, मन वंछित फल पावइ रे ॥६॥

---

* पाठान्तर—सांभलइ देसणा सार रे, दियइ इरख अपार रे।

सीमधर स्वामी गीतम्

राग—कडखा

सामि सीमधरा तुम्ह मिलवा मणी,
हियडलु रासि नइ दिवस हींसै।
ध्यान धरतां सुपन मांहि आवी मिलउ,
झबकि जागु तब कोइ न दीसै।१। सा।
जउ हु रे देव दीधी हुती पांखड़ी,
तउ हूं ऊडी प्रभु जांत पासे।
सामि सेवा मणी भक्ति चाउ घलजयउ,
देवाय का दिउ दूरि पासे।२। सा०।
ध्यान समरण प्रभु ताहरू नित धरू,
तू पणि मुझ ने मत वीसारे।
समयसुन्दर कर जोडि इम वीनवइ,
सामि सुनइ भव समुद्र तारे।३। सा०।

युगमधर जिन गीतम्

राग—श्राज सफल दिन मुझ, एहनी

तू साहिब हू सेवक तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी।
हूं प्रभु तोरइ शरणइ आव्यउ, तू मुझ नइ साधारि जी।१।
श्री युगमधर करुणा सागर, विहरमान्य जिणंद जी। श्री०।
सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणंद जी।२ श्री०।

जन्म जरादिक दुख थी बीहतउ, हूँ आव्यउ तुम्ह पासि जी ।
मुझ ऊपरि प्रभु महिर करा नइ, आपउ निरभय वास जी ।३ श्री०।
पूरव पुण्य सजोगइ पाम्यउ, तू त्रिभुवन नउ नाह जी ।
एक वार मुझ नयण निहालउ, टालउ भव दुह दाह जी ।४ श्री०।
सीनतडी प्रभु सफल करज्यो, श्री जुगमधर देव जी ।
समयसुन्दर कर जोडी मांगइ, भव भवि तुम्ह पय सेव जी ।५ श्री०।

इति श्रीयुगमधरस्वामिगीतम् सं० १२ ॥

शाश्वतजिनचैत्यप्रतिमावृहत्स्तवनम्

रिषभानन वधमान, चन्द्रानन जिन,
वारिषेण नामइ जिणा ए ।
तइ तणा प्रासाद, त्रिभुवनि सासता,
प्रणमु बिंब सोहामणा ए ॥१॥
पाइहर सगकोडि लाख बहुत्तरि,
चइ चइ प्रतिमा सउ असी ए ।
तरमइ नव्यासी कोटि साठि लाख सु दर,
भवनपती मांहि मनि वसी ए ॥२॥
वार दवलोक प्रासाद चउरासी लख,
सहस छन्नू नइ सातमइ ए ।
एक सउ असी गुण रिर पावन गउ कोडि
चउगणु लख सहस छइ ए ॥३॥

॥ ढाल ॥

इम नवग्रैवेयक पंचाणुत्तर सार,
चेइहर प्रणमइ त्रेवीसा सुविचार।
प्रत्येकइ प्रतिमा वीसा सउ तिहां आखि,
अठवीस सहस सत साठ साठि गुण साखि ।४।
नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखाणि,
चउ चउ चेईहर साठि सवे त्रिहुं ठाणि।
एकसउ चउवीस गुणी प्रतिमा जिणु नामि,
च्यार सइ च्यालीसा सात सहस प्रणमामि ।५।
नदीसर जिनसइ सोलस कुलगिरि तीस,
मेरु वखि असी दस कुरु गजदंते वीस।
मानुषोत्तर पर्वति च्यार च्यार इषुकारि,
असा वखि सुन्दर इषुकारि मझारि ॥३॥

। ढाल ॥

दिग्गज गिरि च्यालीस असिय द्रहे सुवगीस,
कंचण गिरि वरइ ए, एक सहस धर ए ॥७॥
इम दीरघ वैताढ्य, वीस सतरि सउ आय,
सत्तरि महा नदी ए, पंच चूला सही ए ॥८॥
जंबू प्रमुख दस रूंख, इग्यारह सत्तरि सुक्ख,
कुंड त्रस माह भमी ए, वीस जमग वसी ए ॥९॥

॥ ढाल ॥

अथ सहस सउ एक नवाणु रे,
जिणवर प्रासाद वखाणु रे।
बीसा सउ य अक गुणीयइ रे,
तीर्थंकर पतिमा सुणियइ रे ॥१०॥

त्रिय लाख सहस वलि आसी रे,
प्रतिमा आठसइ नइ आसी रे।
सिर वालइ मवि मेलिजइ,
त्रिभुवन प्रासाद नमिजइ रे ॥११॥

आठ कोडि सतावन लक्खा रे,
दुय सत ब्यासी कय रक्खा र।
हिवइ प्रतिमा गान कहीजइ र,
जिणवर नी आण वहीजइ र ॥१२॥

पनर सइ बयतालीस कोडी रे,
अटावन लख अधिक सोडी रे।
छत्रीस सहस असि कहियइ र,
प्रतिमा सगली सरदहियइ र ॥१३॥

॥ ढाल ॥

सोहसवंतर प्रतिमा सासती, धर्मध्यान वलि जदोजी।
पाप कमल दहना नित प्रणमियइ, सोवन वरण सुददो वी ॥१४॥

विनय करी जिन प्रतिमा वांदियइ, सुन्दर सफल सरूपो जी।
पूजइ प्रतिमा पउमिह दसवा, चलिय विद्याधर भूपो जी ॥१५॥
जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी, हितसुख मोक्ष निदानो जी।
भवियण नइ भवसागर तारिवा, प्रवहण सम प्रधानो जी ॥१६॥
जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखियउ, एहनु अरथ विचारो जी।
सांभलतां भणतां सुख संपदा, हियडइ हरख अपारो जी ॥१७॥

॥ कलश ॥

इम सासता सासइ प्रतिमा संथुण्या जिणवर तणा,
तिहुं नाम जिनचंद तणो त्रिभुवन सकलचंद सुहामणा।
वाचनाचारिज समयसुन्दर गुण भणइ अभिराम ए,
तिहु कालि त्रिकरण सुद्ध करज्यो सदा सुभ परणाम ए ॥१८॥

तीर्थमाला बृहत्स्तवनम्

श्रीशत्रुञ्जयशिखरे, मरुदेवीस्वामिनीह गजचटिता।
पुत्रनमस्कृति चलिता, सिद्धा बुद्धा नमस्तस्यै ॥१॥
श्रीशत्रुञ्जयशृङ्गार—हारिणे दुःखहारिणे।
प्रलम्बतरबिम्बाय, ऋषभदेवस्वामिने नमः ॥२॥
श्रीमत्खरतरवसति—प्राग्प्रासादमूलबिम्बाय।
श्रीशान्तिनाथजिनवर ! सुखकर ! सततं नमस्तुभ्यम् ॥३॥
श्रीशत्रुञ्जयमण्डन ! मरुदेवाङ्गविराजहंससम !।
प्रणमामि मूलनायक ! चरणं तव नाथ ! मम शरणम् ॥४॥

युगादिगणधाराय, पञ्चकोटिसुसाधवे ।
श्रीशत्रुञ्जयसिद्धाय, पुण्डरीक नमोस्तु ते ॥५॥
श्रीयादवकुलतिलकं, योगीन्द्रब्रह्मधारिमुकुटमणिम् ।
गिरिनारनामतीर्थे, नमाम्यहं नेमिनाथजिनम् ॥६॥
श्रीवस्तुपालचैत्य, मन्त्रिश्रीविमलवसतिजिनभवने ।
श्रीअर्बुदगिरिशिखर, जिनवरबिम्बानि जू कुर्वे ॥७॥
श्रीअष्टापदतीर्थे, चक्रि-श्रीभरतकारित चैत्ये ।
चतुरष्ट-दश-द्विमितान् चतुर्दिशं नौमि जिनराजान् ॥८॥
सम्मेतशिखरतीर्थे, विंशतिरर्हद्वरा गता सिद्धिम् ।
प्रणमामि तत्र तेषां, सद्भक्त्या स्तूपरूपाणि ॥९॥
श्रीमज्जेसलमेरौ, श्रीपार्श्वप्रमुखसप्तचैत्येषु ।
वन्दे वारं वारं, सहस्रशो जैनबिम्बानि ॥१०॥
राणपुरे जिनमन्दिर—मतिरम्यं भ्रमयते सदा मयका ।
धन्यं मम जन्म तदा, यदा करिष्यामि तद् यात्राम् ॥११॥
विद्या-पक्ष-विहीनो, गन्तुमशक्तः करोमि किं हा ! हा !
नन्दीश्वरादिदेवान्, दूरस्थस्तेन वन्दामि ॥१२॥
श्रीस्तम्भतीर्थनगरे, पार्श्वजिनसकलविश्वविख्यातः ।
श्रीअभयदेवसूरिप्रकटितमूर्तिर्जिनो जीयात् ॥१३॥
श्रीशङ्खेश्वर-गउडी-मगसी-फलवर्द्धिकादि-चैत्येषु ।
या या अर्हत्प्रतिमा-स्तासां नित्यं प्रणामोस्तु ॥१४॥

स्वर्गे च मर्त्यलोके, पाताले ज्योतिषां च जिनभवने ।
शाश्वतरूपा प्रतिमा वन्दे श्रीवीतरागाणाम् ॥१५॥
इति जिनेश्वरतीर्थपरम्परा, सकलचंद्र-सुशिष्यमनोहरा ।
सुरनरादिनुता सुखि विभु सा, समयसुन्दर सन्मुनिना स्तुता । १६

इति श्रीशत्रुंजयादितीर्थपरस्तवनं समाप्तम् *

तीर्थमाला स्तवन

सेत्रुंजे ऋषभ समोसरया, भला गुण भरया रे ।
सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥
तीन कल्याणक तिहां थया, मुगते गया रे ।
नेमीश्वर गिरनार, तीरथ ते नमुं रे ॥ २ ॥
अष्टापद एक देहरउ, गिरि सेहरउ रे ।
भरते भराव्या बिंब, तीरथ ते नमुं रे ॥ ३ ॥
आबू चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ।
विमल वसही वस्तुपाल, तीरथ ते नमुं रे ॥ ४ ॥
समेत शिखर सोहामणो, रलियामणो रे ।
सीधा तीर्थंकर वीस, तीरथ ते नमुं रे ॥ ५ ॥

---

*स्वयं शोधित प्रति से । रचनाकाल सं १६७२ से पूर्व सुनिश्चित है क्योंकि राणकपुर की यात्रा से पूर्व इसकी रचना हुई । सं १६६६ के पश्चात् की कृति में लिखी मिलने से अनुमानतः इसकी रचना सं० १६६६ पश्चात् हुई होगी ।

नयरी चपा निरखिये, हियैं हरखिये रे।
सीधा श्री वासुपूज्य*, तीरथ ते नमु रे ॥ ६ ॥
पूरब दिसि पावापुरी, ऋद्धे भरी रे।
मुगति गया महावीर, तीरथ ते नमु रे ॥ ७ ॥
जेसलमेरि जुहारियइ, दुख वारियइ रे।
अरिहंत बिंब अनेक, तीरथ ते नमु रे ॥ ८ ॥
बीकानेर ज वंदियइ, चिर नंदिये रे।
अरिहंत देहरा आठ, तीरथ ते नमु रे ॥ ६ ॥
सेरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे।
फलोधी थंभण पास, तीरथ ते नमु रे ॥१०॥
अंतरीक अंवाहरउ, अमीझरउ रे।
जीरावलउ जगनाथ, तीरथ ते नमु रे ॥११॥
त्रैलोक्य दीपक देहरउ, जात्रा करो रे।
राणपुरे रिसहेस, तीरथ ते नमु रे ॥१२॥
श्री नाडुलाई जादवो, गौड़ी स्तवो रे।
श्री वरकाणा पास, तीरथ ते नमु रे ॥१३॥
[क्षत्रियकुण्ड सोहामणउ, रलियामणो रे।
जनम्यां श्री महावीर, तीरथ ते नमु रे ॥१४॥
राजगृही रलियामणी, सोहामणी रे।
फिरस्यु पहाड़ां पच, तीरथ ते नमु रे ॥१५॥

---

* मयमु पगलावरि

शत्रुञ्जय नी फेरणी, नवा नगर में रे।
श्री राजसी भराया बिंब, तीरथ ते नमु रे ॥१६॥]
नवीमर ना बहरा, बावन बरा रे।
रुचक कुण्डल च्यार च्यार, तीरथ ते नमु रे ॥१७॥
शासती नइ असासती, प्रतिमा छती रे।
स्वर्ग मर्त्य पाताल, तीरथ ते नमु रे ॥१८॥
तीरथ यात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे।
समयसुन्दर कहै एम, तीरथ त नमु रे ॥१६॥

तीर्थमाला स्तवन

श्री सेत्रुञ्जि गिरि शिखर समोसस्था,
    चौवीस तीर्थंकर श्री अरिहंत।
आठ करम नउ अत करी नइ,
    सीधा मुनिवर कोडि अनंत ।१।प्र०।
मह ऊठी ने नित प्रणमीजइ,
    तीरथ सत्रु बि प्रमुख प्रधान।
हियडइ ध्यान धरंतां आपइ[1],
    अष्ट महासिद्धि नवे रे निधान ।२।प्र०।
श्री गिरनार नमु नेमीसर,
    श्री जिनवर यादव कुल भाण।

---

१ दूषई

जिहां प्रभु त्रिणइ कल्याणक हूयउ,
दीक्षा ग्यान अनइ निरवाण ।३।प्र०।
अष्टापदि प्रणमुं चउवीसे,
भरत कराव्या जिन प्रासाद ।
गौतम सामि चढ्यां जिहां लबधि,
प्रतिबोध्या तापस सुप्रसाद ।४।प्र०।
श्री सम्मेत शिखर समरीजइ,
अजित प्रमुख तीर्थंकर वीस ।
सुक्ल ध्यान धरी शिव पहुता,
जगमभव जगगुरु जगदीश ।५। प्र०।
नदीसर वर दीपि नमीजइ,
सासता चौमुख च्यार ।
ऋषभानन वर्धमान जिणेसर,
वारिषेण चन्द्रानन सार ।६।प्र०।
अभयदेव सूरि खरतर गच्छ पति,
प्रगट कियउ प्रभु बिंब उलास ।
वेदनउ रोग हरयउ तिहां ततखिण,
प्रणमुं श्री थंभणपुर पास ।७।प्र०।
जरासिंधु विद्या बल गंजण,
हरिसेना मनि कियो र भार्याद ।
जय जय जादव वंश जीवादण,
श्री सखेसर पास जिणंद ।८।प्र०।

भावू आदीसर वरकाणइ,
  वीरथलि गउडी प्रभु पास ।
मांडवगढ़ वर्धमान जिणेसर,
  प्रणमंता पूरइ मन आस ।६।प्र०।
भुवनपति व्यंतर नइ ज्योतिषि,
  वैमानिक नरलोक मझारि ।
जे जिणवर तीर्थंकर प्रतिमा,
  प्रणमति समयसुन्दर सुखकार ।१०।प्र०।

इति श्री तीर्थमाला भास १३।
[प्रसिद्धतीर्थस्थिततीर्थंकरप्रतिमागीतम्]

तीरथभास

सखि चालउ हे, सखि चालउ हे चतुर सुजाण,
  भावइ हे, आपे भावइ हे तीरथ भेटस्यां ।
सखि करस्यां हे, सखि करस्यां हे जनम प्रमाण,
  दुरगति हे, आपे दुरगति ना दुख मेटस्यां ।।१।।
सखि सत्रुंज हे, सखि सेत्रुंज तीरथ सार,
  रिषभ हे, आपे पहिलुं रिषभ जुहारस्यां ।
सखि पछइ हे, सखि पछइ हे करिय प्रणाम,
  बीजा हे, आपे बीजा जिन संभारिस्यां ।।२।।
सखि चालउ हे, सखि चालउ हे गढ गिरनारि,
  ऊँचा हे, आपे ऊँचा हे टूंक निहालस्यां ।

सखी नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां नेमि जिणंद,
पगि पगि हे, आपे पगि पगि पाप पखालस्यां ॥३॥
सखि आबू हे, सखि आबू अचलगढ आवि,
चौमुख[1] हे, आप चौमुख मूरति चरचस्यां।
सखि प्रणमी हे, सखि प्रणमी हे विमल प्रासाद,
धरमइ हे, आपे धरमइ हे निज धन खरचस्यां ॥४॥
सखि जास्यां हे, सखि जास्यां हे राणकपुर जात्र,
देहरउ हे, आपे देहरउ देखी आणंदस्यां।
सखि नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां आदि जिणंद,
दोहग हे, आपे दोहग दुख निकंदस्यां ॥५॥
सखि फलवधि हे, सखि फलवधि हे जेसलमेरि,
जास्यां हे, आपे जास्यां जात्रा करण भणी।
सखि लहिस्यां हे, सखि लहिस्यां हे लील विलास,
बोलइ हे, मइ बोलइ हे समयसुन्दर गणी ॥६॥

इति श्री तीरथ भास।

अष्टापद तीर्थ भास

मोरू मन अष्टापद सु मोह्यु,
फटिक रतन अभिराम मेरे लाल।
भरतेसर जिहां भवन करायउ,
कीधु उत्तम काम मेरे लाल। मो०। १।

---

१ केसर हे, आपे केसर चंदन चरचस्यां

सगर सयो सुत साई रुण्यासी,
मगति दिखाड़ी भूरि मेरे लाल।
इस गिरि गग मागीरय ल्यावी,
पाखलि सल भरपूर मर लाल।मो०।२।
रिषमदेव तिहां मुगति पहुता,
भरत कराव्या थूम मेरे लाल।
सुरनर किन्नर नइ विद्याधर,
सेवा सारइ रूम मरे लाल।मो०।३।
ओयस्य सोयस्य पावड शाला,
भाठ जोयण ऊचाति मेरे लाल।
गौतम मामि चढ़्या जिहां लवधि,
अवर्णति रवि कांति मेरे लाल।मो०।४।
संवत सोल अठासना वरसे,
अहमदाबाद मझारि मेरे लाल।
सुथि सखी अटापद मंडाव्यउ,
मनजी साह अपार मर लाल।मो०।५।
ते अटापद नयणे निरख्यउ,
सीधा वांछित काज मेरे लाल।
समयसुन्दर कहे धन दिवस त,
तिहां भेट्या जिनराज मेर लाल।मो ।६।

इति श्री अष्टापद तीरथ भास ॥१०॥

(२)

मनइ अष्टापद मोह्यु माहरु रे,
    हूँ नाम जपूं निशदीस रे।
चत्तारि अठ दस दोय नमु रे,
    चिहु दिशि जिन चउवीस रे।१। म०।
जोयण जोयण आंतरइ रे,
    पावडसालां आठ रे।
आठ जोयण ऊँचो देखतां रे,
    दुख दोहग जायइ नाठि रे।२। म०।
भरत कराव्यउ भलउ देहरउ रे,
    सउं भाई ना थुंम रे।
आप मूरति सेवा करइ रे,
    लाखे जोइयइ ऊम रे।३। म०।
गौतम स्वामि चढ्या इहां रे,
    आणी भागीरथ गंग रे।
गोत्र तीर्थंकर बांधयउ रे,
    रावण नाटक रंग रे।४। म०।
देव न दीधी सुनइ पांखडी रे,
    कहउ किम आउं तिण ठाम रे।
समयसुन्दर कहइ माहरउ रे,
    दूरि थकी परणाम रे।५। म०

इति श्रीअष्टापद तीरथ भास ॥ ११ ॥

अष्टापदमण्डनशान्तिनाथगीतम्

राग—मालवी गउड़ी

सो जिनवर मिधु करउ मोहि कृत री।
रावण वेणु बजावत मधुरी,
नृत्य करत मंदोदरी पूरव री।१।सो०।
शरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरब भव मइसउ चरित सुणत री।
माकउ मनम भयउ सब जग मंइ,
शांति भई दुख दूरि गमत री।२।सो०।
पांचमउ चक्रवर्ती सोलमउ जिनपति,
साधत री षट खंड भरत री।
चउसठि सहस अंतेउरि मनोहरी,
तृण ज्युं तजी करि संयम गहत री।३।सो०।
तब संकेत हसी मिया कर भ्रही,
देखावति भगो इसु न मानत री।
इयां सो जिन मृग लांछन शोभित,
तीन भुवन वाकी आण मानत री।४।सो०।
त्रूटति तांति नसा सांधत री,
रावण तीर्थंकर गोत्र बांधत री।
अष्टापद गिरि शांति जिनेसर,
समयसुन्दर पाय प्रणमत री।५।सो०।

श्री शत्रुंजय आदिनाथ भास

पालउ रे सखि शेत्रुञ्ज जइयइ रे,
जिहां भेटीइ रिषभ जिणंद रे ।
नरग तुयंच गति रुधीयइ रे,
मुझ मनि अति परमाणद रे ।चा० ।१।

पालीताणइ पेसियइ रे,
रूडी ललित सरोवर पालि रे ।
सेत्रुञ्ज पाज चडीजियइ रे,
बिमला नयण निहालि रे ।चा० ।२।

जगगुरु आदि जिणेसरू रे,
मरुदेवी मात मल्हार रे ।
रायण रूख समोसरणा रे,
प्रभु पूरव निवाणु वार रे ।चा० ।३।

त्रेवीस तीर्थंकर समोसर्या रे,
इण गुणगति निसइ निरकंत रे ।
पांच पांडव शिव गया रे,
इम मुनिवर कोडि अनंत रे ।चा० ।४।

देसू बिहु दिस देहरी रे,
रायण तलि पगलां सुहारि रे ।

पुंडरीक प्रतिमा नमुं रे,
　　चउमुखि प्रभु प्रतिमा च्यारि रे ।चा०।५।

खरतर वसही वांदियइ रे,
　　श्री शांति जिनेसर राय रे ।
अदबुद आदि जुहारियइ रे,
　　नित चरण नमुं चित लाय रे ।चा०।६।

चढता चउ गति भय टलइ,
　　प्रणमतां पातक जाय रे ।
समरतां सुख संपजइ रे,
　　निरखतां नव निधि थाय रे ।चा०।७।

संवत सोल छिमालमइ रे,
　　चैत्र मासि वदि चउथि बुधवार रे ।
जिनचंद्रसूरि यात्रा करी रे,
　　चतुर्विध संघ परिवार रे ।चा०।८।

श्री आदीसर राजियउ रे,
　　श्री शेत्रुंज गिरि सिणगार रे ।
समयसुन्दर इम वीनवइ रे,
　　तुम्हो मन वंछित दातार रे ।चा०।९।

इति श्री शत्रुंजय आदिनाथ भास ॥ १ ॥

—×—

श्री शत्रुंजय तीर्थ भास

राग—मारुणी-धन्याश्री । जाति धमालनी

सकल तीरथ मांहि सुन्दरु, सोरठ देश मझार ।
सुरनर कोडि सेवा करइ, सेत्रुञ्ज तीरथ सार । १ ।
चालउ चालउ विमल गिरि जायइ रे,
भेटउ श्री ऋषभ जिणंद । चा०। आंकणी ।
ए गिरि नी महिमा घणी, पामइ को नहिं पार ।
सउ पग भगति सोलम भएयु, सेत्रुञ्ज जग सुखकार । २। चा०।
ऋषभ जिणंद समोसरथा, पूरव निवाणु वार ।
पांच कोडि सु परिवरथा, श्री पुण्डरीक गणधार । ३ । चा०।
सेत्रुञ्ज शिखरि समोसरथा, तीर्थंकर तेवीस ।
पांचे पांडव शिव गया, चरण नमु निशदीश । ४ । चा०।
सुगति निलउ सांखी करी, मुनिवर कोडि अनंत ।
इण गिरि आवी समोसरथा, सिद्ध गया भगवंत । ५ । चा०।
धन धन आज दिवस घड़ी, धन धन मुझ अवतार ।
सेत्रुञ्ज शिखर ऊपर चढ़ी, भेटयउ श्री नाभि मल्हार । ६ । चा०।
चंद चकोर तणी परइ, निरखंता सुख थाय ।
हीयड़ हेजइ उल्हसइ, आणद अंगि न माय । ७ । चा०।
दुख दावानल उपसम्यो, वूठउ अमिय मइ मेह ।
मुझ आंगणि सुरतरु फल्यउ, भागउ भव भ्रमण संदेह । ८। चा०।

धन धन खोगी सोम श्री, धन धन तुम्ह अवतार ।
सेत्रुञ्ज संघ करावियउ, पुण्य भरयउ भण्डार । ६ । षा०।
संवत सोल चिमासमइ, मास सु चैत्र मझार ।
श्री जिनचंद्र सूरीसरू, यात्र करी सपरिवार ।१०। षा०।
श्री सेत्रुञ्ज गुण गावतां, हियडइ हरख अपार ।
समयसुन्दर सेवक भणइ, रिषभ जिणंद सुखकार ।११। षा०।

इति श्री सेत्रुञ्ज तीरथ भास ॥ २ ॥

शत्रुंजय आदिनाथ भास

मुझ मन उलट अति घणउ मन मोह्यउ रे,
सेत्रुञ्ज भेटण काज लाल मन मोह्यउ रे ।
चैत्री पूनम दिन भइ मन मोह्यउ रे,
पालीताणा पाजि लाल मन मोह्यउ रे ॥ १ ॥
संघ करइ वधामणा मन मोह्यउ रे,
तीरथ नयण निहालि लाल मन मोह्यउ रे ।
सेत्रुञ्ज नदीय सोहामणी मन मोह्यउ रे,
ललित सरोवर पालि लाल मन मोह्यउ रे ॥ २ ॥
केसर भरिय कचोलड़ी मन मोह्यउ रे,
पूज्या प्रथम जिणंद लाल मन मोह्यउ रे ।

देव सुहारी देहरी मन मोहउ रे,
प्रगट्यउ परमाणंद लाल मन मोहउ रे ॥ ३ ॥
खरतर वसही वांदिया मन मोहउ रे,
संदीसर सुखकंद लाल मन मोहउ रे।
रायणि तल पगला नम्या मन मोहउ रे,
अद्‌भुद आदि जिणंद लाल मन मोहउ रे ॥ ४ ॥
पांचे पांडव पूजिया मन मोहउ रे,
सोलमउ जिनवर राय लाल मन मोहउ रे।
सकल बिंब प्रणम्या मुदा मन मोहउ रे,
गज चढि मरुदेवी माय लाल मन मोहउ रे ॥ ५ ॥
चेलण तलाइ सिद्ध सिला मन मोहउ रे,
अति भलउ उलखा झोल लाल मन मोहउ रे।
सिद्ध वड कुंड सोहामणा मन मोहउ रे,
निरखंता रगरोल लाल मन मोहउ रे ॥ ६ ॥
इण गिरि रिषभ समोसरथा मन मोहउ रे,
पूरब निवाणु वार लाल मन मोहउ रे।
मुनिवर के मुगति गया मन मोहउ रे,
ते कुण जाणइ पार लाल मन मोहउ रे ॥ ७ ॥
संवत सोल अठावनइ मन मोहउ रे,
चैत्री पूनम सार लाल मन मोहउ रे।

आज सफल दिन माहरउ मन मोहउ रे,
यात्रा करी सुखकार लाल मन मोहउ रे ॥८॥
दुरगति ना भय दुख टल्या मन मोहउ रे,
पूगी मन नी आस लाल मन मोहउ रे।
समयसुन्दर प्रणमइ सदा मन मोहउ रे,
सेत्रुञ्ज लील विलास लाल मन मोहउ रे ॥६॥

इति श्री सेत्रुञ्ज तीरथ आदिनाथ भास ॥२॥

आलोयणा गर्भित श्री शत्रुञ्जय मण्डन आदिनाथ स्तवन

वेकर जोडी वीनवू जी सुणि स्वामी सुविदीत।
कूड कपट मूकी करी जी, वात कहूँ आप वीति।१।
कृपानाथ मुझ वीनति अवधार ॥ आंकणी ॥
तू समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझ नइ दुत्तर तार।२।कृ०।
भवसागर भमतां थकां जी, दीठा दुख अनंत।
भाग संजोग भेटिया जी, भय भंजण भगवंत।३।कृ०।
जे दुख भांजइ आपणा जी, तेहनइ कहियइ दुख।
पर दुख भंजण तू सुण्यउ जी, सेवक नइ द्यो सुख।४।कृ०।
आलोयण लीधां थकइ जी, जीव रुलै संसार।
रूपी लखमणा महासती जी, एह सुण्यउ अधिकार।५।कृ०।

इसम काले दोहिलउ जी, सुघउ गुरु संयोग।
परमारथ मीकइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग। ६। कृ०।
तिण तुम्ह आगल आपणा जी, पाप आलोवु आज।
माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज। ७। कृ०।
जिनधर्म जिनधर्म सहु करइ जी, थापइ आपणी जी बात।
समाचारी जुइ जुइ जी, संसय पड्यां मिथ्यात। ८। कृ०।
जाण्या अजाण्या पणइ करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल।
रतनइ कागा उडावतां जी, हारयउ जनम निटोल। ९। कृ०।
भगवंत भाख्यउ ते किहां जी, किहां मुझ करणी एह।
गज पाखर खर किम सहइ जी, सबल विमासण एह। १०। कृ०।
आप परूप्यु आकरउ जी, जाणइ लोक महंत।
पण न करू परमादियउ जी, मासाहस दृष्टांत। ११। कृ०।
काल अनंतै मंइ लह्या जी, तीन रतन श्रीकार।
पण परमादे पाडिया जी, किहां जइ करु पुकार। १२। कृ०।
जाणू उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करु य विहार।
धीरज जीव धरइ नहीं जी, पोतइ बहु संसार। १३। कृ०।
सहज पड्यउ मुझ आकरउ जी, न गमइ भूंडी बात।
परनिंदा करतां थकां जी, जायइ दिन नइ रात। १४। कृ०।
किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणइ जीव।
धरम पखइ धधइ पड्यो जी, नरकइ करस्यइ रीव। १५। कृ०।
अणहूंता गुण को कहइ जी, तो हरखुं निसदीस।
को हित सीख भली कहइ जी, तो मन आणु रीस। १६। कृ०।

वाद मणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस ।
मन संवेग धरयउ नहीं जी, किम संसार तरेस ।१७। कृ० ।
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ।
खिण इक मन मांहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग ।१८। कृ० ।
त्रिविध त्रिविध करि उचरु जी, भगवंत तुम्ह हजूर ।
वार वार भांजू वली जी, छूटक बारउ दूर ।१९। कृ० ।
आप काज सुख राचतइ जी, कीधा आरंभ कोड ।
जयणा न करी जीवनी जी, देव दया पर छोड ।२०। कृ० ।
वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंड ।
कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंड ।२१। कृ० ।
अण दीधउ लीजइ तृणो जी, तोहि अदत्तादान ।
ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावै ज्ञान ।२२। कृ० ।
चंचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप ।
काम विटंबन सी कहूं जी, ते तू जाणइ सरूप ।२३। कृ० ।
माया ममता मंइ पड्यउ जी, कीधो अधिकउ लोभ ।
परिग्रह मेल्यउ कारमउ जी, न चढी संयम शोभ ।२४। कृ० ।
लागा मुझ नइ लालचइ जी, रात्रि भोजन दोष ।
मैं मन मूक्यउ मोकलो जी, न धरयउ धरम संतोष ।२५। कृ० ।
इण भवपर भव दूहव्या जी, जीव चउरासी लाख ।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं जी, भगवंत ताहरी साख ।२६। कृ० ।
करमादान पनर कह्या जी, प्रगट अठारे जी पाप ।
जे मंइ सेव्या ते हवइ जी, बगस बगस माइ बाप ।२७। कृ० ।

मुझ आधार छइ एतलउ जी, सद्दहणा छइ शुद्ध ।
जिन धम मीठउ मनगमइ जी, जिम साकर नइ दूध ।२८। कृ० ।
ऋषभदेव तू राजियउ जी, शेत्रुञ्ज गिरि सिणगार ।
पाप आलोया आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ।२६। कृ० ।
मरम एह जिन धरम नउजी, पाप आलोयां जाय ।
मनसु मिच्छामि दुक्कड जी, देतां दूर पुलाय ।३०। कृ० ।
तू गति तू मति तू धणी जी, तू साहिब तू देव ।
आण धरु सिर ताहरी जी, भव भव ताहरी सेव ।३१। कृ० ।

॥ कलश ॥

इम चडिय सेत्रुञ्जि चरण भेट्या, नाभिनंदन जिनतणा ।
कर जोडि आदि जिणंद आगल, पाप आलोया आपणा ॥
श्री पूज्य जिनचंद्रसूरि सद्गुरु, प्रथम शिष्य सुजस घणइ ।
गणि सकलचंद सुशीस वाचक, समयसुन्दर गुण भणइ ॥३२॥

— —

शत्रुञ्जय मण्डन आदिनाथ भास

सामी विमलाचल सिणगारजी,
एक वीनतड़ी अवधार जी ।
सरणागत नइ साधार जी,
मुझ आवागमण निवारि जी ॥ सा० ॥१॥

सामी ए संसार असार जी,
बहु दुख तणउ भंडार जी।
तिण मइ नहीं सुख लगार जी,
हुं भम्यउ अनंती वार जी ॥ सा० ॥२॥
चिंतामणि जेम उदार जी,
मानव भव पाम्यउ सार जी।
न करयउ जिन धर्म विचारजी,
गयउ आलि जेम प्रकार जी ॥ सा० ॥३॥
मुझ नइ हिव तू आधार जी,
तुझ समउ नहिं कोय संसार जी।
तोरी जाऊँ हु बलिहार जी,
करुणा करि पार उतारि जी ॥ सा० ॥४॥
आज सफल थयउ अवतार जी,
भेट्यउ प्रभु हरख अपार जी।
मरुदेवी मात मल्हार जी,
समयसुन्दर नइ सुखकार जी ॥ सा ॥५॥

इति सेत्रु जमंडन श्री आदिनाथ भास ॥ ४ ॥

श्री शत्रुंजय तीर्थ भास

म्हारी सहिनी हे, बहिनी म्हारी सुणि एक मोरी वात हे,
क सत्रुञ्ज तीरथ वडी।

म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी पूज्या प्रथम जिणंद के,
मइ केसर भरिय कचोलडी । १ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी प्रणम्या श्री पुंडरीक हे,
देहरइ मांहि बिंब सोहामणा ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी गज चढि मरुदेवी माय हे,
रायण तलि पगला प्रभु तणा । २ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी खरतर वसही खांति हे,
मइ चउमुख नयणे निरखिउ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी चउरी लागउ चित्त हे,
देखतां हियडउ हरखियउ । ३ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी अदभुद आदि जिणंद हे,
छालीयो तोरण चाडीउ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी सिद्धसिला सिद्ध ठाम हे,
सुनइ सिद्धवड सुगुरु देखाडीउ । ४ ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी धन धन श्री गुरुराज* हे,
मइ दव शुद्धारथा जुगति स्युं ।
म्हारी चहिनी हे, चहिनी म्हारी सफल कियउ अवतार हे,
भणइ समयसुन्दर इम भगति स्युं । ५ ।

इति श्रीशत्रुञ्जयतीरथभास ।

---

* गुजराति

शत्रुंजय मण्डन युगादिदेव गीतम्
राग—केदारा गउड़ी

इया मो जनम की सफल घरी री।
शत्रुंजय शिखरि ऋषभ जिन भेटे,
पालीताना की पाज चरी री।इया०।१।
प्रभु के दरस पाप गये सब,
नरग त्रिजंच की भीति टरी री।
इया सिद्ध क्षेत्र ऊपरि राम मात घरि,
मुनिवर कोरि मुगति कु वरी री।इया०।२।
अद्भुत चैत्य मनोहर मूरति,
करुं हुँ प्रणाम प्रभु पाय परी री।
समयसुन्दर कहै आज आणंद मयउ,
श्री शत्रुंजगिरि जात्र करी री।इया०।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन
राग—वाड़ी

ऋषभ की मेरे मन भगति बसी री। ऋ०।
मालती मेघ मृगांक मनोहर,
मधुकर मोर चकोर जिसी री। ऋ०।१।
प्रथम नरेसर प्रथम भिक्षाचर,
प्रथम केवलधर प्रथम ऋषी री।

प्रथम तीर्थंकर प्रथम भुवनगुरु,
नाभिराय कुल कमल ससी री। भ्र० ।२।
भगत ऊपर अलिकावलि ओपत,
कंचन कसवट रेख कसी री।
श्री विमलाचल मंडन साहिब,
समयसुन्दर प्रणमत उलसी री। भ्र० ।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन

क्यों न भये हम मोर विमल गिरि, क्यों न भये हम मोर।
क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर।
अहनिश जिनजी के अंग पखालत, तोड़त करम कठोर। वि० १।
क्यों न भय हम बावन चंदन, और केसर की छोर।
क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजी के मौर। वि० २।
क्यों न भय हम मृदंग झालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर।
जिनजी के आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर। वि० ३।
जग मंडल साचो ए जिनजी, और न देखा राचत मोर।
समयसुन्दर कहै ये प्रभु सेवो, जन्म जरा नहीं और। वि० ४।

श्री आबू तीर्थ स्तवन

आबू तीरथ भेटियउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर मेरे लाल।
सफल जन्म थयउ माहरउ, दुख दोहग गया दूर मेरे लाल।१।

विमलवसहि विहार प्रणमी जिन पूज्या, केशर चंदन कपूर मेरे लाल।
देव गुहारणा रूडी देहरी, भाव भगति भरपूर मेरे लाल।२।
वस्तुग तेजल वसही देखता, राजुलवर जिनराय मेरे लाल।
मंडप मोहो मन माहरउ, जोतां तृप्ति न थाय मेरे लाल।३।
भाव सु भीमग वसही भला, आदीसर उल्हास मेरे लाल।
मडलीक वसही मुख मडला, चउमुख चरच्या पास मेरे लाल।४।
खरतरवसहि आदीसर अरच्या, चौमुख प्रतिमा च्यार मेरे लाल।
शांति कुंथु प्रतिमा अति सुंदर, म्हमी अवर विहार मेर लाल।५।
संवत सोल सत्तावन वरस, चैत्र वदि चौथ उदार मेरे लाल।
यात्रा करी जिनसिंहसूरि सेती, चतुर्विध संघ परिवार मेरे लाल।६।
आबू तीरथ विंब अनुपम, अचलगिरिया अभिराम मेरे लाल।
समयसुन्दर कहइ नित २ माहरो, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम मेरे लाल।७

श्री आबू आदीश्वर भास

आबू परवत रूयडउ आदीसर,
ऊंचउ गाऊ सात रे आदीसर देव ।
पाप इ चन्ता दोहिलउ आदीसर,
पणि पुण्य नी पस्ती वात र आदीसर देव ॥१॥
आबू नी यात्रा करी आदीसर,
सफल कियउ अवतार र आदीसर देव । आंकणी।

पहिला आदीसर पूजिया आदीसर,
विमल वसही सुजगीस रे आदीसर देव।
देव जुहारया देहरी आदीसर,
अस थरया विमल मत्रीश रे आदीसर देव ॥२॥

श्री नेमीसर निरखिया आदीसर,
सोम मूरति सुकुमाल रे आदीसर देव।
आनन्द कुण्ड मडपी[1] कोरणी आदीसर,
धन वस्तपाल तेजपाल र आदीसर देव ॥३॥

भीम लूणग वसही भली आदीसर,
खरतर वसही जिणंद रे आदीसर देव।
सगला बिंब जुहारिया आदीसर,
दूरि गयउ दुख दद र आदीसर देव ॥४॥

अचलगढइ पछइ आवियां आदीसर,
चौमुख प्रतिमा चार रे आदीसर देव।
श्री शांतिनाथ कुंथुनाथ नी आदीसर,
प्रतिमा पूजी अपार रे आदीसर देव ॥५॥

आबू नी यात्रा करी आदीसर,
आव्या सिरोही उलास रे आदीसर देव।
देव अनइ गुरु वांदया तिहां आदीसर,
सहु नी पूगी आस र आदीसर देव ॥६॥

---

[1] कुण्ड मंडप नी।

यात्रा करी आठमोत्तरइ आदीसर,
श्री संघ पूजा सनात्र रे आदीसर देव ।
समयसुन्दर कहइ साससी आदीसर,
मास मण्या हुयइ यात्र रे आदीसर देव ॥७॥

इति श्री आबू तीरथ भास ॥ १ ॥

—०—

अर्बुदाचलमण्डन-युगादिदेवगीतम्

राग—गु ड

सफल नर जन्म मनु आज मेरउ ।
श्री अर्बुदगिरि श्री युगादीसर,
देखियउ दरसण सामि तेरउ ॥ स० ॥१॥
जिनजी ताहरा गुण अपयाइ मुखि गावत,
पावत परम सुख नव नवेरउ ।
तू जगआय जग मांहि सुरतरु समउ,
अउर सब देव मानूं बहेरउ ॥ स० ॥२॥
जिनजी राज नवि मांगत म्रद्धि नवि मांगत,
मांगत ही नहीं कछु अनेरउ ।
समयसुन्दर कर जोडि इहु मांगत,
मांजि भगवंत भव भ्रमण फेरउ ॥ स० ॥३॥

—०—

श्री पुरिमताल मडण आदिनाथ भास
ढाल—राती श्रांमरणी नी।

मरत नइ घर श्रोलंमड़ा रे ।
मरुदेवी अनेक प्रकार रे' म्हारउ बाल्हयउ ।
बाल्हयउ नयणे दिखाडि रे, म्हारउ नान्हडियउ । आंकणी ।
तू सुख लीला भोगवइ रे, ऋषभ नी न करइ सार रे। म्हा० ।१।
पुरिमताल समोसरया रे, ऋषभ श्री त्रिभुवन राय रे। म्हा० ।
भरत कु'यर सु परिवरी रे, मरुदेवी वांदण आय रे। म्हा० ।२।
ऋद्धि देखी मन चींतवइ रे, एक पखउ म्हारउ राग रे। म्हा० ।
राति दिवस हूँ झूरती रे, ऋषभ नु मन नीराग रे। म्हा० ।३।
पुत्र पहिली मुगति गयी रे, शिव वधू जोवा काज रे। म्हा० ।
समयसुन्दर सुप्रसन्न सदा रे, आदीसर जिनराज रे। म्हा० ।४।

श्री आदिदेवचद्गीतम्
राग—श्रीराग

नाभिरायां कुलचंद आदि जिणंद,
मरुदेवी नदन विश्वगुरो ।
त्रिभुवन दिनकर जिनवर सुखकर,
वांछित पूरण कल्पतरो ॥१॥ ना० ॥
जय मय रजणो दुख गजणो,
प्रणमति समयसुन्दर चरणो ॥२॥ ना० ॥

श्री राणपुर आदिजिन स्तवन

ढाल—रिषभ जिनेसर भेटिवा रे लाल

राणपुरउ रलिआमणउ रे लाल,
श्री आदीसर देव मन मोहयउ रे।
उत्तंग तोरण देहरउ रे लाल,
निरखीजइ नितमेव मन मोहयउ रे।१। रा०।
चउवीस मंडप चिहुं दिसइ रे लाल,
चउमुख प्रतिमा च्यार मन मोहयउ रे।
त्रैलोक्य दीपक देहरउ रे लाल,
समवड़ि नहिं को संसार मन मोहयउ रे।२। रा०।
दीठी भलन देहरी रे लाल,
मांड्यउ अष्टापद मेर मन मोहयउ रे।
भलु रे भुहारयउ भु हरउ रे लाल,
चर्ता उठि सवेर मन मोहयउ रे।३। रा०।
देश जिवाड़ ए देहरउ रे लाल,
मोटउ देस मेवाड़ मन मोहयउ रे।
लाख निवाणु लगाविया रे लाल,
धन धरणउ पोरवाड़ मन मोहयउ रे।४। रा०।
आज कृतारथ हुं हुयउ रे लाल,
आज भयउ आनंद मन मोहयउ रे।
जात्र करी जिनवर तणी रे लाल,
दूरि गयउ दुख दंद मन मोहयउ रे।५। रा०।

खरतर वसही खांत सु रे लाल,
निरखता सुख थाय मन मोह्यउ रे।
पांच प्रासाद बीजा भली रे लाल,
जोतां पातक जाय मन मोह्यउ रे।६। रा०।
संवत सोल बिहुत्तरइ रे लाल,
मगसिर मास मझारि मन मोह्यउ रे।
राणपुरइ जात्रा करी रे लाल,
समयसुन्दर सुखकार मन मोह्यउ रे।७। रा०।

इति श्री राणपुर तीरथ भास ॥ १ ॥

—०:—

बीकानेर चोवीसटा—

चिन्तामणि आदिनाथ स्तवन

भाव भगति मन आणी घणी, समकित निरमल करवा भणी।
बीकानेर वधाइ चउहटै, देव जुहारू चउवीसटै। १।
पावड़ आखा पूजी पइ, तिण हूँ नरक गति नवि पइ।
दीठा पुण्य दशा परगटै, देव जुहारू चउवीसटै। २।
निसही तीन कहइ तिणइ ठोडि, अरथइ घरम कामइ मोडि।
पाप व्यापार न करवो घटै, देव जुहारू चउवीसटै। ३।
ममती मांहे मसू मन रली, तिणइ प्रदक्षिणा दउ भली।
देखे भवयणा नो भोहटै, देव जुहारूँ चउवीसटै। ४।

॥ कलश ॥

इम चैत्य चौवीसटौ अविचल, श्री बीकानेर विराज ए।
श्री संघ आणंद उदयकारी, मन सबा दुख भाज ए॥
संवत सोलह श्रेयासीयइ तवन कीधउ मगसिरै
कहइ समयसुन्दर भणइ तेहना, मन वछित (कारज) सरइ।१५।

—०—

श्री विक्रमपुर आदिनाथ स्तवन

श्री आदीसर भेटियउ, प्रह ऊगमतइ सूरो जी।
दुख दोहग दूरि टल्या, प्रगटयउ पुण्य पडूरो जी।१। श्री०।
अदभुद मूरति अति भली, मोटां त्रिपति न थायो जी।
सेत्रुञ्ज तीरथ सांभरइ, आदीसर जिणरायो जी।२। श्री०।
जिम सेत्रुञ्जगिरि आगलउ, मूलनायक आदिनाथो जी।
जिम गिरनारइ गाजतउ, अदभुद शिवपुर साथो जी।३। श्री०।
गणधर पसाही गुण निलउ, जिम प्रभु मेसलमेरो जी।
नगरकोट प्रभु निरखंता, आणंद हुय अधिकेरो जी।४। श्री०।
अष्टापद जिम भरथियइ, भरत भराया बिंबो जी।
ग्वालेरइ गरुयडि निलउ, बावन गज परसबो जी।५। श्री०।
आबू आदीसर नमू, विमल मंत्रि प्रासादो जी।
माणिकदेव दखिण मांह, समर पच्छ प्रभु सादो जी।६। श्री०।

तिम ए तीरथ जागता, तिम ए तीरथ सारो जी।
मारुयाडि मांहे वडउ, सेत्रुञ्ज नउ अवतारो जी ।७। श्री०।
संवत सोल बासठि समइ, चैत्र सातमि वदि सारो जी।
युग प्रधान जिनचंद जी, जिंह प्रतिष्ठया पधारो जी ।८। श्री०।
मूलनायक प्रतिमा नमू, आदीसर निसदीसो जी।
सु दर रूप सोहामणा, बीजा बिंब चालीसो जी ।९। श्री०।
नाभिराया कुल चदलउ, मरुदेवी मात मल्हारो जी।
वृषभ लांछन प्रभु वांदियइ, मन वंछित दातारो जी ।१०। श्री०।
पदवा आदि जियेसरू, विक्रमपुर सिणगारो जी।
समयसुन्दर इम वीनवइ, सघ उदय सुखकारो जी ।११। श्री०।

इति श्री विक्रमपुर मंडण चवपुर आदिनाथ स्तवनम्।

—o—

गणधर वसही (जैसलमेर) आदिजिन स्तवन

१ ढाल—गलियारे साजन मिल्या

प्रथम तीर्थंकर प्रणमिय हुं वारी,
आदिनाथ अरिहंत रे हुं वारी लाल।
गणधर वसही गुण निलौ हुं वारी,
मरु मंडण भगवंत रे हु वारी लाल। प्र० ।१।

२ ढाल—आसावेरा नी

सम्प्रू गणधर शुभमती रे लाल,
जयवंत मतीम जास मन मान्या रे।

मिलि प्रासाद मडावियो रे सन्त,
 थासी मन उल्लास मन मान्या रे । प्र० ।२।

३ ढाल—कोसगढ़ी

घ्रमसी जिनदत्त देवसी, मीमसी मन उच्छाहो जी।
सुत च्यारे सब तया, च्यै लखमी नो लाहो जी । प्र०।३।

४ ढाल—पोमना री

फागुण सुदि पांचम दिने रे, पनरै सै छत्तीस।
जिनचंद्रसूरि प्रतिष्ठिया रे, जगनायक जगदीश। प्र० ।४।

५ ढाल—

भरत बाहूबलि अति भला जिनजी,
 काउसगिया विहु पास ।
मरुदेवी माता गज चढी जिनजी,
 शिखर मडप सुप्रकाश । प्र० ।५।

६ ढाल—वेगवती ते बांभणी

विहुँ भमती विंबावली, कोरणी अति श्रीकारो रे।
समोशरण सोहामणो, विहरमान विस्तारो जी। प्र० ।६।

७ ढाल—सबासिया नी

जिम जिम जिन मुख दखिये रे,
 तिम तिम आनंद थाय म्हारा जिन जी।
पाप पुलावन पाछला रे,
 जन्म तणा दुख जाप म्हारा जिन जी। प्र० ।७।

८ ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा

जिन प्रतिमा जिन सारखी जी,
　　ए कह्यउ सुगति उपाय।
नयणे मूरति निरखतां जी,
　　समकित निरमल थाय। प्र० ।८।

६ ढाल—करम परीक्षा करण कुमर चाल्यो

आर्द्रकुमार तणी परै जी, सन्यंमव गणधार।
प्रतिमा प्रतिबूझ्या घणी रे, पाम्या भव नो पार। प्र० ।६।

१० ढाल—चरणाली चामुंडा रण चढ़ै

नाभिराय कुल सिर तिलो, मरुदेवी मात मल्हारो रे।
लंछन वृषभ सोहामणो, युगला धरम निवारो रे। प्र०।१०।

११ ढाल—कर जोड़ी आगल रही

आज सफल दिन माहरो, भेट्या श्री भगवंत रे।
पाप सहु परा गया, हियड़ो अति हरखंत रे। प्र० ।११।

१२ ढाल—राग धन्याश्री

इम परि वीनव्यो जेसलमेर मझार।
गणधर वसही मुख मंडण जिन सुखकार॥
संवत सोलह सइ एव असी नम मास।
आर समयसुन्दर कर जोडि ए अरदास। प्र०।१२।

— —

तू प्रभु त्रिभुवन रानियो, पीनतणी आधार।
परि मनोरथ माहरा, आवागमन निवार।मू०।११।
तू गति तू मति तू धणी, तू मनतारण हार।
तू त्रिभुवन पति तू गुरु, तू मुझ प्राण आधार।मू०।१२।
मुझ मन मधुकर मोहियो, तुझ पद पंकज लीन।
सेव करूं नित ताहरी, जिम सागर जल मीन।मू०।१३।
तुम दर्शन सुख सपजै, तुम दरशन दुख जाय।
तुम दरसन संघ गहगहै, तुम दरसन सुपसाय।मू०।१४।
भगति भली पर कलवी, मीठी अमिय समान।
भक्ति वच्छल भगवंत जी, द्यो मुझ केवल ज्ञान।मू०।१५।

॥ कलश ॥

इय नाभिनंदन जगत वंदन, सेत्रावापुर मण्डणो।
भेटियो जिनवर संघ सुखकर, दुरिय दोहग खंडणो॥
गच्छराज युग प्रधान जिनचंद सूरि शिष्य शिरोमणि।
गणि सकलचंद विनेय वाचक, समयसुन्दर सुख भणी।१६।

श्री ऋषभदेव हुलरामणा गीतम्

राग—परजीयउ

रूडा ऋषभ नी परि आपउ रे, हालरियु गाऊं रे गाउ।रू।
मरुदेवी माता इण परि बोलइ, जीवन तोरी बलि जाउं रे।रू।१।

पगि घूघरडी घमसाँ करतउ, इक दिन आगणि आवइ रे।
मरुदेवी माता हियडइ मीठी, आणद अगि न मावइ रे। रू०।२।
सोलइ मोरइ सू करे न खेलइ, सुर रमणी सग मावइ रे।
पुत्र मोरु दूधडउ न पीयइ, तोरी मावडी किम सुख पावइ रे।३।
सोभागी सहु नइ तू वाल्हउ, इरखइ माँ हुलरावइ रे।
रिषभदेव तथा मन रगइ, समयसुन्दर गुण गावइ रे। रू०।४।

सिन्धी भाषामय श्री आदि जिन स्तवनम्

मरुदेवी माता इवं आखइ, इदर उदर किथइ आखइ।
आउ असाडइ कोल ऋषभ जी, आउ असाडड कोल। १।
मिट्ठा व मया तै कु डेवा, आउ इकट्ठे जमस जमां।
सार्वा सूच पमल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल। २।
कमची चीरा पै धांघू तर, पहिरण चोला मोहन मरे।
कमर पिछउडा लाल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल। ३।
काने करणिया पैरे कम्बिया, हाथ पगा जजइर जडिया।
गल मोतियन की माल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल। ४।
बांगा लाट्टू पखरी चंगी, खजर उम्नार्ग महिकर रगी।
आंगण असाड खल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल। ५।
नयस म नैंडै कजल पार्वा, मन मावदटा तिलक लगार्वा।
रूठा ऐंदि कोल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल। ६।

आवो मेरे बेटा दूध पिलाऊं, वही बेठा गोदीमें सुख पाऊं।
मरु असाडा बोल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल ।७।
तु जग जीवन प्राण आधारा, तू मेरा पुत्ता बहुत पियारा।
तैपु कंजा बोल ऋषभ जी, आउ असाडा कोल ।८।
ऋषभदेव कु माय बुलावै, खुसिया करेदा आपे आपे आवै।
आणंद अम्मा अंग ऋषभ जी, आउ असाडा कोल ।९।
सखा मे साहिब तू प्रभ मोरी, शिवपुर सुख दे मै कु मोरी।
समयसुन्दर मन रंग ऋषभ जी, आउ असाडा कोल ।१०।

—x—

श्री सुमतिनाथ वृहत्स्तवनम्

प्रह ऊठी नइ प्रणमु पाय, सेवता सुख संपति थाय।
अरिहंत सुमति बीनति अवधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।१।
पुण्य संजोगइ तु पामियउ, चरण कमल मस्तक नामियउ।
सफल थयउ मानव अवतार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।२।
प्रभु पूजा ना लाभ अनंत, हित सुख मोक्ष कह्या भगवंत।
ज्ञाता भगवती अंग मझार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।३।
प्रथम करूं प्रभु अंग पखाल, पाप करम आपइ तत्काल।
उत्तम अंग लूहण अधिकार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।४।
कनक कचोली केसर भरूं, नव अंगि प्रभु नी पूजा करूं।
कुसुम मुकुट मनोहर हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।५।

पंचवरण फूलां नी माल, प्रतिमा कंठि ठवु सुविशाल।
मृगमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।६।
एगसाडि करि उत्तरासग, शक्रस्तव पभणु मन रंगि।
गीत गान गुण गाऊँ सार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।७।
प्रभु भजतां पुण्य पहूर, दुख दोहग नासइ सवि दूरि।
पुत्र कलत्र वाधइ परिवार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।८।
आरति चिन्ता अलगी टलइ, मन चिंतव्या मनोरथ फलइ।
राज तेज दीपइ दरबार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।९।
आज मनोरथ सगला फल्या, सुमतिनाथ तीर्थंकर मिल्या।
अरिहंतदेव जगत आधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१०।
सुमतिनाथ जिनवर पांचमउ, कल्पवृक्ष चिंतामणि समउ।
मगला राणी मेघ मल्हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।११।
प्रतिमा अष्टकमलदल तणी, दहरासरि पूजू सुख भणी।
अठ महानिधि रिधि दातार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१२।
सुमतिनाथ साचउ तू देव, भवि भवि हुज्यो तोरी सेव।
समयसुन्दर पभणइ सुविचार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१३।

—०—

पाल्हणपुरमण्डन ४४
द्वचर्थरागगर्भित चन्द्रप्रभजिनस्तवनम्

सेवो भो चन्द्रप्रभ स्वामी,
मनिरू उठी परभातिर र।

रंगे चौमासीसे रागै,
समयसुन्दर सुखकार रे । से०।१२।

इति श्रीपाल्हणपुरमण्डन ४४ प्रवर्करागगर्भित
श्रीचंद्रप्रभस्वामि बृहत्स्तवनम् ।
संवत् १६७२ भाद्रवा सुदि १२ दिनम् ।

— • —

चन्द्रवारि मण्डन श्री चन्द्रप्रभ भास

राग—बसंत

चन्द्रप्रभ भेटयउ मंइ चंदवारि,
जमुना नदी पारि ॥ चन्द्र० ॥
सुन्दर मूरति जसुसी नहीं संसारि । चन्द्र० ।१।
निरमलदल फटिक रतन उदार,
दीपइ जवि दीप शिखा मझार ।
किव हरख्यउ चद्रप्रभ जुहारि,
समयसुन्दर नइ भव समुद्र तारि । चन्द्र० ।१।

इति श्री चन्द्रवारि मण्डण चन्द्रप्रभ भास ।।२७।।

श्री शीतलनाथ जिन स्तवनम्

मुख नीको, शीतलनाथ को मुख नीको ।
उठि प्रभात जिके मुख देखत, जन्म सफल ताही को । मु० ।१।
नयन कमल नीकी मचवारा, उपमा वारि मसी को ।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, भाल ऊपर मस टीको । मु० ।२।

तुझ मोहइ हो तु दीनदयाल कि,
वात सुणी मई तोरडी । मो० ।१।
सिंघ तोरइ हो हूं आयउ पासि कि,
मुझि मन आसा अति घणी ।
कर जोडी हो कहुं मननी वात कि,
तू सुणिज्यो त्रिभुवन धणी । मो० ।२।
हूं भमियउ हो भव समुद्र मझारि कि,
दुख अनंता मइ सह्या ।
ते आगइ हो तु हिम जिनराय कि,
मइ किम जास्यइ ते कह्या । मो० ।३।
भाग जोगइ हो थारेउ श्री भगवंत कि,
दरसण नयणे निरखियउ ।
मन मान्यउ हो मोरइ तू अरिहंत कि,
हीयडउ हेजइ हरखियउ । मो० ।४।
एक निश्चय हो मइ कीधउ आज कि,
तुझ विण देव बीजउ नहीं ।
चिंतामणि हो मउ पायउ रतन,
तउ काच ग्रहइ नहीं को सही । मो० ।५।
पंचामृत हो मउ भोजन कीध,
तउ खलि खाता किम मन धियइ ।
कठ तांई हो मउ अमृत पीध,
तउ खारउ जल कहउ कुण पीयइ । मो० ।६।

मोती कउ हो अउ पहिरउ हार,
    तउ चिरमठि कुण पहिरइ हियइ ।
अछु गांठि हो लाख क्रोड़ि गरथ,
    ते भ्याख कहटी दाम किम लीयइ ।मो० ।७।
घर मांहे हो अउ प्रगट्यउ निधान,
    तउ देसतरि कउ कुण भमइ ।
सोना कउ हो अउ पुरुसउ सीध,
    तउ धातुवादि नइ कुण धमइ ।मो० ।८।
जिण कीधा हो जवहर व्यापार,
    तउ मणिहारा मनि किम गमइ ।
जिण कीधउ हो सदा हाल हुकम्म,
    तउ वे तु करनघउ किम खमइ ।मो० ।९।
तू साहिब हो मोरउ जीवन प्राण कि,
    हूं सेवक प्रभु ताहरउ ।
मोरउ जीवित हो आज जन्म प्रमाण कि,
    भव दुख भागउ माहरउ ।मो० ।१०।
तुझ मूरति हो देखतां आय कि,
    समोवसरण मुझ सांभरइ ।
जिन प्रतिमा हो जिन सारिखी थाय कि,
    सूरिस ब सांसउ करइ ।मो० ।११।
तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
    जिम जगि चंद चकोरडा ।

तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि,
मेह आगम जिम मोरड़ा । मो०।१२।
तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि,
जिम दिन ऊगइ चोरड़ा ।
तुम नामइ हो सुख संपत्ति थाय कि,
मन वंछित फलइ मोरडा । मो०।१३।
हुं मांगू हो प्रिय अविहड़ प्रेम कि,
नित नित करूं य निहोरड़ा ।
मुझ देज्यो हो सामी भव भवि सेव कि,
पखइ न छोड़ तोरड़ा । मो०।१४।

॥ कलश ॥

इम अमरसर पुर संघ सुखकर, मात नंदा नंदणो,
सकलाप शीतलनाथ सामी, सकल पाप निकंदणो ।
श्रीवच्छ लंछण परम कंचण, रूप सुन्दर सोहए ।
ए स्तवन श्रीपउ समयसुन्दर, सुगत मण मन मोहए ।१५।

इति श्रीअमरसरमंडनश्रीशीतलनाथवृहत्स्तवन संपूर्ण हर्ष लिखितम् ।

श्री मेड़ता मंडण विमलनाथ पंच कल्याणक स्तवनम्

विमलनाथ सुणौ वीनति, हूँ छु तोरउ दासो जी ।
तू समरथ त्रिभुवन धणी, पूरि हमारी आसो जी । वि०। १ ।

तुम दरसन विन हूँ भम्यउ, काल अनादि अनंतो जी।
नाना विधि मइ दुख सह्या, कहतां नावै अंतो जी।वि०। २।
पुण्य पसाये पामियउ, अरिहंत तू आधारो जी।
मन वंछित फल्या माहरा, आणंद अंग अपारो जी।वि०। ३।
नगर कंपिल नरेसरू, राजा श्री कृतवरमो जी।
अद्भुत तासु अंतेउरी, श्यामा नाम सुधरमो जी।वि०। ४।
तासु उयरि प्रभु अवतर्या, सुदि बारस वैसाखो जी।
चवद स्वप्न राणी लह्या, सुपन पठिक सुत दाखो जी।वि०। ५।
जन्म कल्याणक जिन तणो, माह तणी सुदि त्रीजो जी।
दिन दिन वाधइ दीपता, चंद कला जिम बीजो जी।वि०। ६।
कंचन वरण कोमल तनु, क्रोड लांछन सुकुमालो जी।
साठि धनुष प्रभु शोभता, सुन्दर रूप रसालो जी।वि०। ७।
विमल थई मति मात नी, विमलनाथ तिण नामो जी।
राजलीला सुख भोगवै, पूरवे वंछित कामो जी।वि०। ८।
नव लोकान्तिक देवता, जस जंपे जयकारो जी।
माह तणी चौथ चांदणी, संयम ल्यै प्रभु सारो जी।वि०। ९।
च्यार कर्म प्रभु चूरिया, धरिय अनुपम ध्यानो जी।
पोष शुक्ल छठि परगडा, पाम्यो केवल ज्ञानो जी।वि०।१०।
समवशरण प्रभु देशना, बैठी परषदा बारो जी।
संघ चतुर्विध थापना, सत्तावन गणधारो जी।वि०।११।

साठ लाख वरसां लगी, पाली सगली आयो जी।
सप्तमी वदि आषाढ नी, सिद्ध थया निरमायो जी। वि०।१२।
सुन्दर मूरति प्रभु तणी, निरखतां सुख थायो जी।
हियडो हीसइ माहरो, पातिक दूर पुलायो जी। वि ।१३।
प्रभु दर्शन सुख संपदा, प्रभु दरसन दुख दूरो जी।
प्रभु दरसन दौलति सदा, प्रभु दरसन सुख पूरो जी। वि०।१४।

॥ कलश ॥

इम पंच कल्याणक परंपर, मेदनी तट मंडयो,
श्रीविमल जिनवर सप सुखकर, दुरिय दोहग खंडयो।
जिनचंद्रसूरि सुशिष्य पंडित, सकलचंद मुनीश ए,
तसु शिष्य वाचक समयसुन्दर, मधुरयोसु जगीश ए।१५।

— —

श्री आगरा मंडण श्री विमलनाथ भास

दस सुखारस दहरइ चाली,
मंडिय सममारी माथि री माइ।
कमर चदरा मरिय कचोलडी,
कुसुम की माला हाथि री माइ।१।
विमलनाथ मरउ मन लागउ,
श्यामा कउ नंदन लाल री माई ॥ आंकणी ॥

पग पूजी षट् पावड साले,
अरिहंत देव दुवारि री माइ।
निसही तीन करे तिहुं ठामे,
पांचे निगमन सार री माई।२। वि०।
त्रिण्ह प्रदक्षिण ममती देऊं,
त्रिण्ह करू परणाम री माई।
चैत्य वंदन करि देव जुहारु,
गुण गाऊं अभिराम री माई।३। वि०।
ममती मांहि ममवि जे भविषण,
ते न भमइ संसार री माई।
समयसुन्दर कहइ मन वंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई।४। वि०।

इति श्री आगरामण्डन श्री विमलनाथ भास ॥ २५ ॥

—•—

श्री शान्तिनाथ गीतम्

राग—केदारउ

शान्तिनार्थ भजे शांतिसुखदायकं,
नायकं केवलज्ञानगेहम्।
कर्ममलपङ्कचन्द्रम्बिनोसमर्म,
गगनसागरचन्द्रमानदेहम्। शां०।१।

—

कमलपङ्कजकदम्बेषु सञ्चारिणं,
चरितं सम्पदां भागधेयम् ।
भक्तिस्तुत मानसेनाङ्कितं जिनवरं,
पापपङ्कमीनसे वैनतेयम् ।शा०।२।
विकटसङ्कटपयोराशिघटसंभव,
विश्वसेनाङ्गजं विश्वभूपम् ।
सौख्यसन्तानवल्लीविताने घनं,
समयसुन्दरसदानन्दरूपम् ।शां०।३।

श्रीपाटण–शान्तिनाथपञ्चकल्याणकगर्भित देवपट्टमण्डनयुक्तदीर्घस्तवनम्

"सूरत सोवन वान ।
भरत सोहती ए, जन मन मोहती ए ॥१७॥
पीतल पडिमा पासि, मेवाड अधिक उल्लासि ।
संघीसर तस्यी ए, तिहुअण जस थयो ए ॥१८॥
प्रभु तोरण मझारि, सुन्दरि पुतलि प्यारि ।
प्रभु सेवा करि ए, दोइ दीवी धरी ए ॥१९॥
पंच वरण वर पाट, रचिय रसाल सुघाट ।
चिहु दिसि चंदुआ ए, झमरि बाँधिया ए ॥२०॥
वोपड अब सब कोई, पीतल थंग दोइ ।
रच रच रयणमय ए, जिम जय जय भयइ ए ॥२१॥

|| ढाल ||

जसु मंडप चिहुं पासि नित नाटक करइ,
मिलि चउवीसे पूतली ए।
दोय बजावइ साल दोय वीणा वंसी,
दोय बजावइ वांसली ए ॥
गोइ करि धरि भाव चांत बजावए,
गीत गान जिन ना करइ ए।
दोय बजावइ सार घों घों मद्दला,
दोय करियलि चामर धरइ ए ॥२२॥
दोय करि पूरण कुंभ जाय जिणवर,
स्नान भणी पाणी भणा ए।
एक बजावइ भरि सिय मुद्रि करि,
धरि जोता जिणा जण मण हया ए ॥
नव पूतलि नव वंप करिय नव पदे,
नाचइ सोचइ मनि करी ए।
जाणे शांति जिणंद आगलि अहनिशि,
नृत्य करइ सुर सुन्दरी ए ॥२३॥
चउदशी चउपासि रूप मणोहर,
पूर्ण कुंभ निय करि धरइ ए।
जाणु चउ दिगदंती सामि सेवा करी,
भवसागर छोसा तरइ ए ॥

नान्हा मोटा थंभ छोह पंक्ति भीति,
थारु चित्र चलित चिहुं दिसइ ए।
पइसउ जिणहर गइ अहनिसि निरखंता
भवियण जस मन उल्हसइ ए ॥२४॥

इम थुण्यउ जिणवर संति दिणयर, मरिय तिमिर विहडयो।
अणहिल्ल पाटण मांहि भी, श्रंगइ नाणा मडस्यो॥
गच्छराय जिनचंद सूरि सीसय, सकलचंद्र मुणीसरो।
तसु सीम पभणइ समयसुन्दर, इयउ जिन सुह सुह करो ॥२५॥

इति श्रीशांतिनाथपचकल्याणकगर्भितदेवगृहवर्णनमयबृहत्स्तवनम् समाप्तम्।*

—०—

जेसलमेर मण्डन श्री शान्ति जिन स्तवनम्

अष्टापद हो ऊपरलो प्रासादक, वींदे जी संघवी करावियउ।
जिण लीधो हो लच्छी नो लाहक, पुण्य भंडार भरावियउ ॥१॥
मोरा साहिब हा श्री शांतिजिणंदक, मनोहर प्रतिमा सु दर।
निरखंता हो थाप नयणानंदक, वंछित पूरण सुरतरु ॥२॥
देहरा में हो पगता दुवार क, सेत्रुञ्ज पाग सु दखियइ।
भमती महा हा बहु जिनवर बिंबक, नयण दरिस आणंदियइ ॥३॥

---

*जयसलमेर बड़ा ज्ञान भण्डार—द्वितीय पत्र से

सतरह स हो तीर्थंकर देवक, बिहु पासे नमु भारणौ ।
गज ऊपर हो चढ़िया माय ने बापक, मूरति सेवा कारणौ ॥ ४ ॥
अति ऊँचा हो सोहै मीनारक, दंड कलश ध्वज लहलहै ।
धन्य जीव्यो हो तसु सो परमाणक, यात्रा करी मन गहगहै ॥ ५ ॥
जेसलमेर हो पनरै छत्तीसक, फागुण सुदि तीज दस लियो ।
खरतर गच्छ हो जिन समुद्र सुरिन्दक, मूल नायक प्रतिष्ठियो । ६।
हित आण्यो हो श्री शांति जिणंदक, सु साहिब छइ माहरउ ।
समयसु दर हो कहै बकर जोडक, हुं सेवक छु ताहरउ ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवनम्

सु दर रूप सुहामणो, श्री शान्ति जिणेसर सोहइ रे ।
त्रिभुवन केरउ राजियउ, प्रभु सुरनर ना मन मोहइ रे ॥ १ ॥
समवसरण सुरवर रच्यउ, तिहां बैठा श्री अरिहंतो रे ।
पं षदिपद ने देसणा, मय भंजण भगवंतो रे ॥ २ ॥
त्रिण्ह छत्र सुरवर धरइ, बिहु दिशि सुर चामर ढालइ रे ।
मोहन मूरति निरखतां, प्रभु दुरगति नां दुख टालइ रे ॥ ३ ॥
आज सफल दिन माहरउ, आजपाम्यउ त्रिभुवन रायो रे ।
आज मनोरथ सवि फल्या, भउ भेट्या श्री जिनरायो रे ॥ ४ ॥
बकर जोडी वीनवु, प्रभु वीनतडी अवधारो रे ।
मुझ ऊपरि करुणा करी, आवागमन निवारो रे ॥ ५ ॥
चिन्तामणि सुरतरु समउ, जगजीवन शांति जिणंदो रे ।
समयसु दर सेवक भणइ, मुझ आपो परमाणंदो रे ॥ ६ ॥

श्री शान्तिनाथ हुलरामणा गीतम्

राग—१ गुण मलारी नी
२ गुजराती मल्हारी नी

शांति कुयर सोहामणउ म्हारउ बालुयडउ,
त्रिभुवन करो राय म्हारउ नान्हडियउ।
पालणडइ पउढ्यउ रमइ म्हारउ बालुयडउ,
हींडोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हडियउ ॥१॥
सोभागी सहु न वालहउ म्हारउ बालुयडउ,
सुरनर नामइ सीस म्हारउ नान्हडियउ।
हुलरावइ हरखइ घणइ म्हारउ बालुयडउ,
जीवउ कोडि वरीस म्हारउ नान्हडियउ ॥२॥
पग घूघरडी घमघमइ म्हारउ बालुयडउ,
ठम ठम मन्दइ पाय म्हारउ नान्हडियउ।
हजर मां हियडइ भीडइ म्हारउ बालुयडउ,
आणंद अंगि न माय म्हारउ नान्हडियउ ॥३॥
बलिहारी पुत्र ताहरी म्हारउ बालुयडउ,
तू मुझ प्राण आधार म्हारउ नान्हडियउ।
शांति कुयर हुलरामणउ म्हारउ बालुयडउ,
समयसुन्दर सुखकार म्हारउ नान्हडियउ ॥४॥

श्री शान्ति जिन स्तवनम्

सुखदाई रे सुखदाइ रे,
सेवो शांति जिणंद चित लाई रे। सु०।
प्रभु नी भगति करू मन भावइ रे,
म्हारा अशुभ करम जावइ रे।
एहवा मनियस्थ भावना भावइ रे,
मन वंछित ते सुख पावइ रे। सु० ।१।
चारू कम्मर चंदन लीजइ रे,
प्रभु नी नव अंग पूजा रचीजइ रे।
पुष्पमाल कंठे ठवीजइ रे,
मानव भव सफल करीजइ रे। सु० ।२।
प्रभु मइ काल अनंत गमायउ रे,
हिवणां तू पुण्य संयोगइ पायउ रे।
तोरे चरण कमल चित लायउ रे,
सामी हूं तुम शरणइ आयउ रे। सु० ।३।
हिव वीनतड़ी एक अवधारउ रे,
प्रभु शरणागत साधारउ रे।
दुरगति ना दुख निवारउ रे,
भव सागर पारि उतारउ रे। सु० ।४।
श्री शांति जिणेसर सामी रे,
नित चरणा नमइ सिरनामी रे।

समयसुन्दर भवरयामी रे,
प्रह नामइ नव निधि पामी रे। मु० ।४।

—०।—

श्री शान्ति जिन गीतम्

आंगण कल्प फल्यो री हमारे माई,
आंगण कल्प फल्यो री।
ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संपति दायक,
श्री शांतिनाथ मिल्यो री ॥इ०॥१॥
कपूर चंदन मृगमद मेली,
मांहि बरास मिल्यो री ।इ०।
पूजत शांतिनाथ की प्रतिमा,
अलग उद्वेग टल्यो री ॥इ०॥२॥
प्रभु राम कृपा करि साहिब,
ज्यूं पारेवो पल्यो री ॥। इ० ॥
समयसुन्दर प्रभु तुम्हरी कृपा त,
हित रहिस्यूं सोहिलो री ॥इ०॥३॥

— —

श्री गिरनार तीरथ भास

श्री नेमीसर गुण निलउ, त्रिभुवन तिलउ रे।
परम विहार पवित्र, जय जय गिरनार गिरे ॥१॥

अथ कल्याण जिन तणा, उच्छव घणा रे।
दीक्षा ज्ञान निर्वाण, जय जय गिरनार गिरे ॥२॥
अब कदब कली घने, सहसावने रे।
समोसरया श्री नेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥३॥
यदुपति वंदन आवती, राजीमति रे।
प्रतिबोध्या रहनेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥४॥
सब प्रद्युम्न कुमर वरा, विद्याधरा रे।
क्रीडा गिरि अभिराम, जय जय गिरनार गिरे ॥५॥
सघपति भरतेसरू, जात्रा करू रे।
थाप्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरे ॥६॥
फल अनत सेत्रुंज कह्या, शिव सुख लह्या रे।
ठेह उपउ ए शृङ्ग, जय जय गिरनार गिरे ॥७॥
समुद्र विजय नृप नदना, कृत वंदना रे।
समयसुन्दर सुखकार, जय जय गिरनार गिरे ॥८॥

इति श्री गिरनार तीरथ भास ॥ ८ ॥

—०—

श्री गिरनार तीर्थ नेमिनाथ उलभा भास

दरि धनी मोरी वदणा, आण ज्यो जिनराय। नेमिजी।
उमाहउ करि आवियउ, पणि कोई अन्तराय। न०।दृ०।१।

फल गिरनार गढइ पड़, जपतउ अहनिशि जाप।
प्रापति विण किम पामिइं मन मान्या मलाप। नें०। ह०।२।
तुम सु मांड्यउ नेहलउ, पूरउ नवि निरवाह।
आगे पणि राजिमती नारी करी निरुच्छाह। न०। ह०।३।
तू समरथ त्रिभुवन धणी, म तराय मति मनि।
समयसुन्दर कहइ नेमिजी, सगी दृज्यो मेनि। नें०। ह०।४।

इति श्री गिरनार तीरथ नेमिनाथ उलभा भास ॥ ६ ॥

(२)

परतिख प्रभु मोरी वन्दना, आज पन्नी परमाद। नेमिजी।
भाग संजोगउ तू मेल्हियउ, यादव प्रीति सुजाण। नेमिजी। १। प०।
परम प्रीति खरी प्रभु आदरी, निरवाहइ निरवाण। नेमिजी।
नव भव नारि राजिमती, तारी आप समान। नेमिजी। २। प ।
अंतरजामी आपणउ, तस कही आणि। नेमिजी।
ओलमा विण आपीयइ, कीजइ कोडि वखाण। नेमिजी। ३। प ।
टलमठ उतारीयउ, आपयउ सरऊ साखि*। नेमिजी।
श्री गिरनार यात्रा करी, समयसुन्दर सुविहाण। नेमिजी। ४। प०।

इति श्री नेमिनाथ उलभा स्तवन गिरनार भास । ७ ॥

श्री सोरीपुर मंडन नेमिनाथ भास

राग—गूजरी

सोरीपुर जात्र करी प्रभु तेरी।
जन्म कल्याणक भूमिका फरसी, मन आस्या फली मेरी। सौ०।१।

* श्री गिरनार गुहारियो जगजीवन जग माय। मे ।

मन घ्यावउ नेमि निइ जनमे, मन खेलया की सेरी ।
जरासंध निरताव मसावी, द्वारिका नगरी नवेरी ।सौ०।२।
नमि मनि रहनेमि सहोदर, मूरति राजुल फेरी ।
मात भगति रिकरी मांहि मेटी, जिन प्रतिमा महुतेरी ।सौ०।३।
आज नावत भावत हम भइठे, नमुना जल की भरी ।
समयसुन्दर कहइ भठ नमीसर, राखि संसार की फेरी ।सौ०।४।

इति श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ भास ।

श्री नडुलाई मंडण नेमिनाथ भास

राग—सारंग

नडुलाइ निरम्प्यउ, जादवउ न०
ऊंचउ परवत उपरि ठनयउ, मन मोरउ चातक हरम्प्यउ ।१। न०।
माम मूरति सज्ज बीजलि राजित, वसुधा जल वरम्प्यउ ।
समयसुन्दर कहइ समुद्रविजय सुत, प्रभु जलभर समउ परम्प्यउ ।२।

इति श्री नडुलाइ मंडण नेमिनाथ भास ॥ १८ ॥

श्री नेमिराजुल गीतम्

ढाल—मरी बहिनी सेतु अ भद्र गी—आदिनाथ नी बहिनी नो ।

चांपा[1] स रूपइ रूपड़ा, परिमल सुगंध सरूप ।
भमरा मनि मान्या[2] नहीं, गुण नाम्यइ न अनूप ।१।

[1] चांपकउ [2] मूषइ [3] मानइ

मेरी सहिनी मन मान्या नी वात, मच्छरउ करे कहनी सात । मे०।
छडुनी एहीज वात । मे० । आंकणी ।
आक तणा आक छोडिया, सरवंता सारा होय ।
ईसर देव नइ ते भखइ, मन मान्नी बात जोय । मे०।२।
रयणायर रयणे भरयउ, गमीर सुंदर रीति ।
राजहंसा रापइ नहीं, मान्न सरोवर प्रीति । मे०।३।
आंबलउ उठइ परिहर्यउ, नींब सु नेह सुरंग ।
कुमुदिनी सरव परिहरयउ, चंद्र कलंकी सु संग । मे०।४।
राजमती कहइ हुं सगी, गुणवंत रूप निधान ।
तउ ही नेमि परिहरी, निरगुण सुगति बहु मान्न । मे०।५।
अउ पक्षि नीरागी नेमि जी, तउ पखि न मूकू तास ।
उज्जल गिरि राजुल मिला, समयसुन्दर प्रभु पास । मे०।६।

इति श्री नेमिनाथ गीतम् ॥ १४ ॥

श्री नेमि जिन स्तवनम्

दीप पतंग तणी परइ सुपियारा हो,
एक पखो मारा नेह; नेम सुपियारा हो।
हूं अत्यंत तोरी रागिणी सुपियारा हो,
तूं कांइ यूं इक छेह; नेम सुपियारा हो ॥ १ ॥
सगला वसु कीजिये सुपियारा हो,

जल सरिखा हुवे जेह; नेम सुपियारा हो।
भामण्ण आपयि सहे सुपियारा हो,
दूध न दाभ्ड्य दय; नेम सुपियारा हो ॥ २ ॥
त गिरुया गुणवत जी सुपियारा हो,
चंदन अगर कपूर; नम सुपियारा हो।
पीड ता परिमल करै सुपियारा हो,
आपइ आणद पूर; नेम सुपियारा हो ॥ ३ ॥
मिलतां सु मिलीये सही सुपियारा हो,
जिम बापीयडो मह; नेम सुपियारा हो।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी सुपियारा हो,
आय मिल सुमनेह; नेम सुपियारा हो ॥ ४ ॥
हुं गोनी नी सु दडी सुपियारा हो,
तू दिव हीरो होय; नेम सुपियारा हो।
सरिखइ सरिखउ जउ मिलइ सुपियारा हो,
तउ त सु दर होय; नम सुपियारा हो ॥ ५ ॥
नव भव न गिण्यउ नेहलउ सुपियारा हो,
धिक धिक ए संसार; नम सुपियारा हो।
समयसुन्दर प्रभु फु मिलो सुपियारा हो,
राजुल त्यूँ भव सार; नम सुपियारा हो ॥ ६ ॥

श्री नेमिनाथ राजिमती गीतम्
राग—परजियउ

नम श्री र सामलियउ सोभागी र,

नेमजी थान नियउ वयरागी र । न० ।१।
हूँ भव भव की दासी र ने० हूँ०,
नेमजी भव वसु फरत उदासी र । न० ।२।
तू मोगी तउ हूँ मोगिणी रे ने० तू०,
नेमजी तू योगी तउ हू योगिणी रे । न० ।३।
तू छोड़र तउ हूँ छोड़ रे ने० तू ,
नेमजी फ्तुपारी न्यु हूँ छोड र । ने० ।४।
नेमि राजीमती तारी र ने० न०,
नेमजी समयसुन्दर फहइ हूँ वारी रे । न० ।५।

नेमिनाथ गीतम्

नेमिजी सु अट रे साची प्रीतड़ी, तउ सु भवर्रा प्रीतो रे।
गुणवत माणस सेती गोठा तउ सु निरगुण रीतो रे।१।ने ।
माग संजोगइ रे अमृत पीजियइ, तउ कुण पीजइ नीरो रे।
चारत कोवल पु मइ को नहीं, अउ पामीअइ चीरो रे।२।ने ।
मीठी द्राख चाखोली चाखवी, नींबोली कुण खायो र ।
रतन अमूलख चिंतामणी लही, काच ग्रहण कुण जायो रे।३।ने ।
राजुल कहइ सखि मम सुहामणउ, मुझ मन मान्यो एहो रे।
अहनिशि एहना गुण मन मांहि वस्या, अवर्रा कहउ नेहो रे।४।ने०।
राजुल उजल गिरि संयम लियउ, अपर्णा पिउ पिउ नेमो रे।
समयसुन्दर कहइ साचउ एहज्उ, अविहड निडु नउ प्रमो रे।५।ने०।

नेमिनाथ फाग

राग वसंत—जाति फाग नी डाल

मास वसंत फाग खेलत मह, उडत अबल अबीरा हो।
गावत गीत मिली सब गोपी, सुन्दर रूप शरीरा हो।१। मा०।
एक गोपी पकरइ प्रभु अंचल, लाल गुलाल लपेटइ हो।
केशर भरी पिचरके छांटत, राजुल हइ अति सारी हो।२। मा०।
रुकमणी कहइ परणउ इकनारी, राजुल हइ अभिसारी हो।
वउ निर्वाह न होइ गउ तुम तइ तउ, करिस्यइ कृष्ण मुरारी हो।३मा०
नेमि हसइ गोपी सब हरखी, नेमि विवाह मनाया हो।
छपन कोड यादव सु यदुपति, उग्रसेन तोरण आया हो।४। मा०।
गोख चढी राजुल पिउ देखत, नव भव नेह जगावइ हो।
दाहिनी आंखि सखी मोरी फरकी, रंग मइ भग मचावइ हो।५। मा०
पशुय पुकार सुणी रथ फेर्यउ, राजुल करत विलापा हो।
सरज्यां विन सखी क्यु कर पाइयइ मन मान्या मेलापा हो।६मा०।
तु रागिणी पण नेमि निरागी, जोरइ प्रीति न होइ हो।
एक हथि ताली पिय न पडइ मुझ, मन तरसइ तोइ हो।७। मा०।
राजुल नेमि मिले ऊजल गिरि, दूरि गए दु ख दंदा हो।
नमि कुमार फाग गावत सुन्न, समयसुन्दर आनंदा हो।८। मा०।

नेमिनाथ सोहला गीतम्

नेमि परणेवा चालिया, म्हारी सहियर रूयडि यादव जान हे।
छप्पन कोडि यादव मिल्या म्हां०, अति घणा आदर मान हे।१ ने०।

गज चढ्या श्री जिनराज हे, चांवर ढोलइ दयता म्हां० ।
मस्तक छत्र विराज हे ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ने० ॥
सुन्दर सेहरो सोहइ ए, सामल रूप सुहामणउ म्हां० ।
सुरनर ना मन मोहइ ए ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ने० ॥
इन्द्राणी गायइ गीत हे, माथा भाखइ मति घणा म्हां० ।
रूपडी सगली रीत हे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ ने० ॥
आविया उग्रसेन बारि रे, तोरण थी पाछा वल्या म्हां० ।
पशुय सुनी पुकारि हे ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ ने० ॥
राजुल करत विलाप हे, प्राणपति पिन किम पामियइ म्हां० ।
मन मान्या मेलाप हे ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ने० ॥
प्रभु चढ्या गढ गिरनारि हो, संयम केवल शिवसिरी ।
तिणइ वरी शिवां नारी हो ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ ने० ॥
साचउ सोहलउ एह हे, समयसुन्दर कहइ मुझ हुज्यो म्हां ।
नमि वरी नारि वह हे ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ ने० ॥

नेमिनाथ गीतम्

राग (भलु थयु म्हारे पूज्य श्री पधार्या)

सुगति पधारो म्हारउ उधार्यउ,
पधार्यउ, मुझ श्री राग सहियइ ।१।
काई मोयउ रे मु० ॥ आंकणी ॥
कर्म कथा कहउ कहनइ कहियइ,

सुख दुख सज्युं सहियइ ।३। षा० ।
इस्वर धूतारी बाई अनंत धूतार्या, –
सीसा सु बोलता निवार्या ।३। षा० ।
मुझ पिउडउ बाई नहीं म्हारइ हाथि,
हुं नहीं जाउ पिउ साथि ।४। षा० ।
राजुल पिउ थी पहिली गइ मुगति,
समयसुन्दर कहइ शुगति ।५। षा० ।

नेमिनाथ फाग

आइ सुन्दर रूप सुहामणउ, शिवादेवी मात मल्हार । सु ०।
आहे नव योवन भर आवियउ, लाडिलउ नमकुमार ।१। नव यो०।
आहे निरमल नीर खडोखलि, खेलण नेमि सराग । नि० ।
आहे हाव भाव विभ्रम करइ, गोपी गावइ फाग ।२। हाव०।
आहे लाल गुलाल चिहु दिसइ, उडव अबल अबीर । ला० ।
आहे केसर भरि भरि पिचरका, छांटत सामि शरीर ।३। के० ।
आहे एक बजावइ वांसली, एक करइ गोपी नृत्य । ए० ।
आहे एक देउर हासा करइ, एक हरइ मधु चित्त ।४। ए० ।
आहे एक अंचल प्रभु गहि रहो, एक कहइ परणउ नारि । ए० ।
आइ लउ निरवाह न होइ तउ, करिस्यइ कत मुरारि ।५। ल० ।
आहे नेम हंस्या गोपि भणइ, बवर मान्यउ विवाह । ने० ।
आहे रमलि करि घर आविया, शिवा देवि मात उछाह ।६। र० ।

म्हारे मस्त परवेसा पालिया, रूपहि यादव वान । प्र० ।
म्हारे छप्पन कोडि यादव मिल्या, सुरनर नउ नहीं गान ।७। छ०।
म्हारे नेमिजी तोरण म्राविया, साँभल्यउ पशुय पुकार । ने० ।
म्हारे तोरण थी रथ फेरियउ, जइ चढ्या गढ गिरनार ।८। तो०।
म्हारे राजुल रोयइ रस भरइ, मूं हि पडइ करइ रे विलाप । रा०।
म्हारे नाह विहूणी किम रहुं, किम सहु विरह सताप ।६। ना०।
म्हारे मैं अपराध न को कियउ, किम गय कंत रिसाय । मैं०।
म्हारे मुगति वधु मन मोहियउ, दोष पशु दे जाय ।१०। मु०।
म्हारे नव भव करउ नेहलउ, छांडलउ दीधउ केम । न० ।
म्हारे नयण सलूणउ नाहलउ, नयण न दखु नेम ।११। न० ।
म्हारे वैरागे मन वालियउ, राजुल गइ गढ गिरनार । वै० ।
म्हारे पिउ पासइ संयम लियउ, पहुँता मुगति मम्हार ।१२। पि ।
म्हारे ब नरनारी रग सु गास्यइ नेमजी फाग । बे० ।
म्हारे त मन वांछित पामस्यइ, समयसुन्दर सोभाग ।१३। ते० ।

नेमिनाथ बारहमासा

सखि आयउ श्रावण मास, पिउ नहीं मांहरइ पासि ।
कंत विना हु करतार, कोपी किमा मयी नारि ॥१॥
भाद्रवइ बरसइ मह विरहणी धूजइ दह ।
गयउ नेमि गढ गिरनारि, निरवही न सकि नारि ॥२॥
आसू अमीझरइ चंद, संयोगिनी सुखकंद ।
निरमल थया सर नीर, नेमि विना हु दिलगीर ॥३॥

कातियइ कामिनी टोल, रमइ रासवइ रग रोलि ।
हु घरि बइसी रहि एथि, मन माहरउ पिउ जेथि ॥४॥
मगसरइ पाळइ पाय, विरहणी केम खमाय ।
मंइ किया के अंतराय, ते केवली कहिवाय ॥५॥
पापियउ आव्यउ पोप, स्यउ मीजिया नउ सोस ।
दिन थया मानी राति, ते गमु केम्य सघाति ॥६॥
माह मास विरही मार, शीत पडइ सबल ठठार ।
मोगी रहइ तन मेलि, मुझ नइ पिउ मन मेल ॥७॥
फूटरा फागुण बाग, नर नारी खेलइ फाग ।
नेमि मिलइ नहीं जों सीम, तां सीम रमिवा नीम ॥८॥
चैत्र आम मउर्या चग, कोयली मिली मन रग ।
घाई माहरउ भरतार, की मेलस्यइ करतार ॥९॥
वैशाख वारु मास, नहीं दाढि वडकउ तास ।
उंची चढि आवास, बइसयइ केहनइ पास ॥१०॥
जेठ मासि लू नउ जोर, मेहनइ चिवरइ मोर ।
ई पिस चितारु नेम, पगि नेमि नायई प्रेम ॥११॥
आपाढ उमट्या मेह, गया पंथि आपणि गेह ।
हु पखि जोउ प्रिउ वाट, खांति बछाउ खाट ॥१२॥
बार मास विरह विलाप, कीधा ते पोतइ पाप ।
मन वासिउं वैराग, साचउ कउ सोभाग ॥१३॥

राजुल गई पिउ पास, संयम लियउ सुविलास।
इम फलउ सहुनी आस, भणइ समयसुन्दर आस ॥१४॥

श्री नेमिनाथ गीत

राग—कनारउ

काहे प्रीति तोरइ हो नेमि जी हुं तेरी रागिणी।
आठ भवन कउ मु मेरउ साहिब,
बिन अपराध कहो क्युं छोरइ ॥ हो।१। ने०।
मेरे मनि तुंही तेरे मनि कछु नहीं,
तउ किसइ कहो प्रीति जोरइ।
समयसुन्दर प्रभु आणि मिलावउ,
बउ मानइ कम कीनइ निहोरइ ॥ हो।२। ने०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—वेलाउल

देखउ सखि नेमि कउ आवइ, बिहु दिशि चामर ढुलावइ। दे०।
नील कमल दल सामल मूरति, सूरति सबहिं सुहावइ। दे०।१।
जय जयकार जपति सुरासुर, हरि रमणी गुण गावइ।
सीस समारि पुहप कउ सेहरउ, शिवादेवि मामथ भावइ। दे०।२।
राधा रुकमणी व्यासि पासि नंदन, चंदन अंगि लगावइ।
समयसुन्दर कहइ जो जिन ध्यावइं, सो शिव पदवी पावइ। दे०।३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग—मुलतानी धन्याश्री

तोरण थी रथ फेरि चले, रथ फेरि चले दोष पशु दे आल।
प्यारउ लेहु मनाई; मुगति वधू मन मइ वसी,
मन मई वसी हमहिं रहें विललाल। प्या० ।१।
हा यादव तंइ कहा किया तइ कहा किया,
नव भव तोर्यउ नेह। प्या०।
लाल मोहन बिन क्यु रहुं बिन क्यु रहुं,
विरह संतापइ देह। प्या० ।२।
राजुल पिउ सग आखि मिली हां आई मिली,
ऊजल गढ गिरनार। प्या०।
समयसुन्दर प्रभु शिखर मझार शिखर मझार,
नेमि सदा सुखकार। प्या० ।३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग—केदारा गौडी

मोहु पिउ बिन क्यु रहिउ रयणि विहाइ।
मोर किशोर पपीहा बोलत, पिया विण विरह सताई ।१। मो०।
सुनइ नहीं सखि कोउ न मग, यदुपति पण क्यों रिसाई।
आपपउ री मरम मुगति वधु मोहइ, दोष पशु द आइ।२। मो०।

दउरउ सखि पिउ पाय परउ तुम, मोहन लाल मनाई।
समयसुन्दर प्रभु प्रेम उदक करि, अंतर ताप बुझाई ।३।मो०।

श्री नमिनाथ गीतम्

राग—परजिया

एक बीनति सुणउ मेरे मीत हो ललना रे,
मेरा नेमि सु मोर्या चीत हो ।ल०।
अपराध विना तोरी प्रीति हो ल ,
इह नहीं सज्जन की रीति हो ।ल०।१।
नेमि बिन क्यु रहु मोरइ राजुल रे । आंकणी ॥
मोरइ नेमि की प्रत्य आधार हो ल०,
अब जाउंगी गढ़ गिरनारी हो ।ल०।
नीकउ लेउंगी सयम भार हो ल०,
समयसुन्दर प्रभु सुखकार हो । ल०।२।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

यादव वंश खाणि मोवरां बी,लाघु एक रतन नेमिजी हो ।
जाति उत्तम क्रांति दीपतउ बी, करिस्यु कोडि जतन ।१। ने०।
नेम नगीनउ मंइ पायउ सखिजी, एह अमूलिक नग्न ।
गुण गु फी प्रेमसुन्दर बडी जी, राखिसि हियडलइ रंग ।२। ने०।

मन गमतउ मायक मा लय् जी, करि राजुल इस्त नारि।
समयसुन्दर मगतें मयाइ जी, शीलाभरण सुखकारि।३। ने०।

श्री गिरनार मंडन नेमिनाथ गीतम्

राग—जयतश्री

भौ देखउ उंचउ गिरनारि । भौ०।
जिया गिरि भाय रहे जोगीसर,
नेमि निरंजन बाल ब्रह्मचारी । भौ०।१।
शाम्ब प्रद्युम्न कुमर क्रीडा गिरि,
अंबिका दुःख प्रद्युम्न विस्तारी । भौ०।
समवसरण शोभित सहसावन,
राजिमती रहनेमि विचारी । भौ०।२।
नेमिनाथ मूरति अति मनोहर,
धन्य दिवस मई भाज जुहारी । भौ०।
समयसुन्दर प्रभु सहद्र विजय सुत,
लात करत सुखकारी । भौ०।३।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरि

छपन कोडि यादव मिलि भाए, नयणे नेमि निहाल्यउ रे।
पशुय पुकार सुणी यदु नंदन, तोरण थी रथ वाल्यउ रे।१।रा०।

रामुल नारि कहइ मृग नयणी, मृग कउ कयउ म मानउ रे।
नयण विरोध हमारइ इण सु, वादव ए मन आणउ र।२।रा०।
भाग विना सीता नइ इण मृग, राम विछोहउ पाडयउ रे।
रोहिणी कउ मन रंग गमाड्यउ, चंद कलंक दिखाड्यउ रे।३ रा०।
दोषी हुयइ ते देखि न सकइ पाप विपालाइ पालइ रे।
समयसुन्दर प्रभु साप्रभ सरिखा, पडिबन्धउ पालइ रे।४।रा।

—

नेमिनाथ गीत

राग—मारुणी

उग्रसेन की अगजा, बोलति गदा गज वाणि।
किम सु वाणि न तोडियइ, जग जीवन चतुर सुजाणि।१। ह०।
हमारे मोहन विन अपराधि न छांडि ॥ आंकणी ॥
भाट मदन की प्रीतडी, नवमेंतामा वाणि।
जल विन मछली किउं रहइ, कछु माहरि हमारी भाणि।२। ह०।
नभिनाथ न की फरी, तारी आप समानि।
समयसुन्दर कहइ मानयि, प्रीत चली नेमि प्रमाणि।३। ह०।

—

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

चंदइ कीधउ पानसउ र, दाठउ मृग दु:ख दाय।
तु देखि मुख तिण दाखवु, भलउ समुद्रविजय सुत माइ।१।

चंदलिया चित्त विचारइ रे,तु तउ मृग नइ घर मंइ म राखि ।च०।
एतउ सीखलडी समया, एतउ मातलडी वयणा।। च०। ग्रौंकणी।
पापी विछोहउ पाडियउ, माइरउ ममेरचउ भरतार।
सीता दु ख दिखाडियउ, चदा लिव छइ ताहरी मार ।चं०।२।
रोहिणी रग गमाडिस्यइ कहिस्यइ लोक कलक।
राजुल कहइ मात स्यूं पडि, पछइ मानि म मानि मृगांक।च०।३।
वइरागइ मन वालिउ रे, गई राजुल गिरनार।
समयसुन्दर कहइ सांमलउ ए, सतियां माहि सिरदार।चं०।४।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—सुघराइ

नेमि जी मन लागइ क सरअण हारा,
तु रे मीतम मुझ लागत प्यारा। १।
नव भव नेह न मुक्या जावइ,
मुगति मुगति तुम सेती भावइ। २।
राजुल नमि मिले गिरनारी,
समयसुन्दर कहई बाल ब्रह्मचारी। ३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग आसावरी

सामलियउ नेमि सुहावइ रे सखियां,
कालउ पणि गुण भरियउ र सखियां ।१। सा०।

माँहि सोहइ नहीं अजवा पारवइ,
फागउ मरिष कपूर नइ राखइ ।२। सा०।
कसी फीकी करइ अलुणउ,
रचा करइ रूडउ पदरउ फागउ ।३। सा०।
फागउ कृष्ण वृन्दावनि सोहइ,
सोल सहस गोपी मन मोहइ ।४। सा०।
नर नारी सहु को पशु हरसइ,
फागउ मेह घटा करि बरसइ ।५। सा ।
राजुल कहइ सखि स्यु करु गोरइ,
समयसुन्दर प्रसु मन मान्यउ मोरइ ।६। सा०।

श्री नेमिनाथ गूढा गीतम्

राग—आसावरी

सखि मोहन मोहन लाल मिलावइ । स० ।
दधि सुत बंधु सामि तसु सोदर, तासु नंदन सतावइ ।१। स०।
नृप पति सुत वाहन तसु वासिम, मयडन मोहि डरावइ ।
अगनि सत्तारिपु तसु रिपु खिएा खिएा,रवि सुत शब्द सुणावइ ।स०।
हिमगिरितनया सुत तसु वाहन, तास भखस मोहि भावइ ।
समयसुन्दर प्रसु इ मिलि राजुल,नेमि जिणंद गुण गावइ ।२।स०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—आसावरी

नमि नमि नेमि नेमि, अरज राजुल नारि करे । ने०।

चारित्र चूनड़ी

तीन गुपति ताणो तण्यो रे, बीणो र वयणो गुण सुंदर।
रंग लागो बैराग नो रे, विच में वण्यो चारित चंद ।१।
साधीणी चूनडी र साल, मोक्तवि सखि कपाउ मूल।
चूनडी पिउ मानी अमूल, मूनें नेम उढाडी रे। आं०।
अविहड रग ए चूनडी रे, मत मल विच में गांठि।
समयसुन्दर कहइ सेवतां र, सरी पूगी राजुल आंति ।२।

गूढा गीत

सावय कहे लघु री सखि समम्रइ । सा ।
अगनि सखी प्रिय वनक तण्यो सुत, साथि मिलावो माइ । सा०।१।
ईस भूषण च च सुत सामि रिपु, लघु प्रीया महरा साइ। सा०।
मोजन इन्द्र सहोदर सुत रिपु, कठामरण सुहाइ । सा०।२।
अभिमानी पंखी माया बिणु, सिय इक में न रहाइ । सा०।
राजुल नेमि मिल उज्जल गिरि, समयसुन्दर सुखदाई। सा ।३।

नेमिनाथ गीतम्—

राग—मारुणी (मम्बाणी जयतश्री मिश्र)–

एतनी बात मर जीउ खटकइ री ।
बिय अपराध छोरि गये यादु,
तेरी प्रीति तारथ अटकइ री ॥१॥ ए०।

गिरिधर रामराय उग्रसेन हइ,
एसउ नहीं कोइ प्रियु इटकइ री ।
तोर सिंहार दोर सब राजुल,
नाह विना कहा कीयइ मटकइ री ॥२॥ ए०।
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र बहुत हइ,
अउर ठौर मेरउ जीउ न टकइ री ।
समयसुन्दर प्रभु कोउ मिलावउ,
पाय परु नीकइ लटकइ री ॥३॥ ए०।

नेमिनाथ गीत

सखी यादव कोडिसु परवरे, प्रीयु आए तोरण बारि रे ।
रथ फेरि सीधारे, पशु की सुणि पुकारि रे ।१।
मन मोहनगारो, कोइ आखी मिलावउ नेमि रे ।
मोहि विरह सतावइ, सखी पूरव भव कउ प्रेम रे । मन०। आं०।
सखी मइ अपराध न को कियउ, यदुराय रीसाणे केम रे ।
हां हां मरम पिछाण्यउ, सिव नारि धुतारे नेमि रे ।२। मन०।
सखी नयण न देखु नेमजी, मोहि चित पटि लागी चीत रे।
पर पीर न जाणइ नहि को, मेरइ एहसउ मीत रे ।३। मन०।
सखी अबहु मौन करूंगी, मोहि लागी मोटी सीख रे ।
गिरनारि चढूंगी, प्रभु पासि लेउंगी दीख रे ।४। मन०।
सखी राजुल संयम आदर्यो, मन माहि धर्यो वइराग रे ।
परमाणंद पायउ, समयसुन्दर कउ सोभाग रे ।५। मन०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरी

प्रिय अपराध विमि मुनइ वाल्हम,
नेमि गयउ गिरनारी रे बहिनी ।
सामलियउ सुहावा र वहिनी,
बीजउ कोइ दाय नावइ र वहिनी ॥ आं० ॥
प्रिउ छोडी पिस हूँ नवि छोडू,
मइ आगमी इक त्यारी रे बहिनी ॥ १ ॥
पदक प्रिउ तउ हूँ मोतिन माला,
हीरउ तउ हूँ मूंदरडी र वहिनी ।
चंद्र प्रिउ तउ हूं रोहिणी थाऊं,
चंदन मलय हूं गरडी रे बहिनी ॥ २ ॥
प्रिउ पासइ संयम लियउ राजुल,
पहिली मुगति सिधाई रे बहिनी ।
मूलगी परि मत मूकी साथइ ए,
समयसुन्दर मनि भाई रे बहिनी ॥ ३ ॥

सिन्धी भाषामय श्रीनेमिजिनस्तवनम्

साहिब महड़ा चंगी वरति, भा रव पढीय आवंदा ह महड़ा ।
नेमि महड़ा मावंदा है ।
मावंदा है महड़ा मावंदा है, नेमि असाडे मावंदा है ।१।

समयसुंदर के प्रभु मइ श्रोलख,
सिवनारि सुं वात कीनी हित करी ॥१०॥
सुणि राक्षस नारि कहइ गिरनार,
जिन्ह बात सह कही त तउ खरी ।
पणि ए नेमिनाथ त्रिलोक कउ नाथ,
ताकुं कहि ना कहुं केण परी ॥
इण की अधिकी महिमा वाधस्यइ,
गिरनार तीरथ हुं होस्युं गिरी ।
समयसुदर कउ प्रभु दीक्षा नइ ज्ञान,
मुगति त्रिपखे वरिस्यइ सुंदरी ॥११॥
एक ईस्वर सेती राखी उमया,
पणि त तउ चतुरउ नइ मांगि मली ।
मउ कृष्ट सेती तउ राखी कमला,
पणि ते न रहइ महिमारी पली ॥
कहइ राजिमती रलियात थकी,
हम भाग वडउ महिला मइ सखी ।
समयसुन्दर कउ प्रभु मइ वर पायउ,
त तउ ब्रह्मचारी आचार रखी ॥१२॥
एकु कीकि कहती अनुपालउ करइ,
कस्तूरी काली पणि महा महकइ ।
कालउ कृष्ण गोपांगना मन मोहइ

उन्नई गगनि घटा घरपति मेघ छटा,
　　रयणि भई विकटा पिय ही उदास रे ।
योवन उछटयउ जाइ प्रिय विना क्यूँ रहाय,
　　आदय गयउ रिसाइ, अब कैसी आस रे ॥
जपति राजुल नारि जाउंगी हूँ गिरनारि,
　　लेउगी संजमभार सुन्दर कंत पास रे ॥१६॥
गायांगना मनावही आणंद अंगि पावही,
　　सुरिंद गुण गावही तोरणय तांइ आउ री ।
पशु पोकार मीनती सुणी मिया जदुपति,
　　छोडाइ मोडि पंखती फेराइ रथ डारती
　　　　　　कपारा कहे नाउ री ॥
झटकि हार तोडती मटकि अग मोडती,
　　झटकि बीरा छोडती लटकि मु हि छोडति
　　　　　　जपथि राजु नाउरी ।
गुनह हम न को किया मुगति चित मोहिया,
　　सुजोग पथ तें छोया मो ठउर क्यूँ रहइ हिया
　　　　　　सामि सुन्दर कु समझाउ री ॥१७॥
कोकिल कल कंठ हंस गति हीम्यां,
　　सुक नासा दग हरिण चकोर ।
केसरि कटि लंक सु यालिम सिसरउ,
　　मंगल चाप¹ वेणी दड मोर ॥

१ आफ मातिस्य में चाप को एक मात्रा स्वर बाला पढ़ी लिखा है

जदुपति मइ सगला ए बीता,
सहु दुसमिय मिलि करइ त्रिय सोर।
समयसुन्दर प्रभु मुझ मुकउ मां,
राजुल नारी करइ निहोर ॥१८॥
राजा उग्रसेन समुद्र विजय हरि,
कृष्ण गोपी भी मिली एकठी ।
कर जोड़ि करइ वीनति वार वार,
म मानइ कथ वात हीया मइ गठी ।
सब राजनइ रिद्धि छोड़ी नीसर्यउ,
कृष्ण बाखइ देखां हिव आइ कठी ॥
समयसुन्दर कउ प्रभु देखि सखी,
करइ राजुल नेमि निपट्ट हठी ॥१६॥
मन मान्या सेती एक वार की प्रीति,
छुटो विख्र से पि न मास लोपी ।
मेरे सउ प्रीति नथी मन कीन,
छोडावि सकइ नर नारि कोपी ॥
नेमिनाथ विना तुम्हे कां नाम ल्यउ,
सखि उप्परि राजमती करइ कोपी ।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि बिना,
न वरु वर ई रही पग्ग रोपी ॥२०॥
धनपति राय पिया वसु धनवति १,

देवमित्र २ चित्र इ रत्नवती ३ ।
देवमित्र ४ अपराजित राना,
प्रेम पात्र नारी प्रियमती ५ ॥
आरण मत्ता ६ तु मंख जसोमति ७,
सुरमित्र ८ ई नारी तु पती ।
समयसुन्दर प्रभु नवमइ भवि सुं,
किम मूकी कहइ राजीमती ॥२१॥

चउसट्ठि कला चतुराई चरु,
सजि सोल शृङ्गार रहुं सुघरी ।
भरतार कुंवार गिणु मनिखउ,
हुं मनावु रीसावइ तउ पाय परी ॥
एक नमि सरइ एक नेमि मरइ,
अरु बीजउ नहीं मइ तउ ध्रम करी ।
समयसुन्दर कइ प्रभु कु न गमी,
पणि मु सरिखी कुण छइ सुन्दरी ॥२२॥

मद मच गडस्थल मद भरइ,
भमरा भमरी चिहु पासि भमई ।
सिर लाल सिन्दूर कीयउ सिणगार,
सु डा दड उचउ उलासइ नमई ॥
घणणु घणणु गल घंट वगइ,
गज गज करइ जाण मप घुमइ ।

समयसुन्दर के प्रभु नेमि की आन,
हाथी हम देखे सबइ कु गमइ ॥२३॥
नीलइ पीलड़े फागुण घठल्गुण,
रातड़े चतुराई दुती चेतइ ।
कसबी मुख मख मोती मखि माखिक,
कचवा सेती पलाण जड़ ।
हांसले बामल धूसर दूसरे,
हीं हीं हींसत प्रभु पास खड़ ।
समयसुन्दर क प्रभु प्रभु की आन में,
हम तौ सखि देखि हराय पड़ ॥२४॥
मणि माणक रत्न प्रवाल जड़घउ,
सिर ऊप्पर पंच रंगो सेहरउ ।
कने कुंडल से भलकइ बीजुरी,
पग पक्ति हार मोती वहरउ ॥
गाजतइ गजराज ऊपर चड़घउ आवइ,
उगानइ नवा भव कउ नहरउ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु नेमि दखउ,
जाणे स्याम घनी उमट्यउ महरउ ॥२५॥
चली चतुरंग सेना सबला रथ,
ऊडी ज जाइ लागी अरकइ ।
इन्द्र चामर ढालइ धरइ सिर छत्र

मोती मणि माला लांबी लरकइ ॥
मरइ रउ नेह नवा भव करउं,
लिख बंध उपांग सबइ परकइ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु श्री सखि भाखइ,
नीके पचरंगी नेमे फरकइ ॥२६॥

दादुर मोर करइ अति सोर,
प्रीयु प्रीयु बोलइ ए बप्पीउ रउ ।
मेहरउ टबकइ बिजुरी झबकइ,
थरहउ क्यू करि उठर रहइ हियरउ ॥
गिरिनारि गए श्री योगीन्द्र भए,
अब हूं भी हठकि रासु लीउरउ ।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि छोरी,
पणि हूं रउ न छोरु मरउ पीयरउ ॥२७॥

अप अमोला ब, काली कोयल कइ री गोरी राजुल ।
देख्या कहां, नेमि सरीर इह लाका सामल ॥
व हम देख्या गिरिनार, जोग मारग पणि लिया ।
करइ तपस्या कष्ट, देह सुख छारी दीया ॥
पाया केवल न्यान, इन्द्र करइ आवी सेवा ।
समयसुन्दर कइ सामि, देख्या श्री अरिहंत देवा ॥२८॥

वे बप्पीया माई काहरो,
राजुल थाई तु प्रीयु कही केम सुणाई वः ।

मरा पिऊ सउ मेह हु तिण फु,
पोकारूँ मास आठ थया मुक्त पाणी
पीधा विण सारूँ ।
म्या मान्या थी थात हुई,
लोक प्रमद लपन्ताणा,
समयसुन्दर प्रभु पासि सा,
तेरा मन विर्हा लोभाणा ॥२६॥
व मोर काहे री राजुल करइ जोर,
अरे मइ सउ करती हु निहोर व ।
कांइ तरा करूँ काम जहाँ मू कह तहाँ जाउ,
प्रीयु कउ काम कियाँ पछी,वेगि वधाइ पाउ ॥
गिरिनार गुफा मइ नेमि,
हइ वसि केही सरी दया ।
समयसुन्दर प्रभु का सामि,
मुक्त गुनह विगरि छोरी गया ॥३०॥
अरे कारे कउया काहिरी राजुल मयुया,
वीर कछु बोलि नइ वधुया व ।
सहु बोछु हु साथ मारा को मापा आवाइ,
कुशल थम छड कंत आरति मत काइ आवइ ॥
पखि हु वा प्रियु पासि,
पारिव छीयाँ दुखाय किस्यइ ।

श्री पार्श्वनाथ अनेक तीर्थ नाम स्तवन

राग—सोरठ

हो जग मइ पास जिणंद जागइ।

साचउ देव प्रगट जिन शासन, मेटवा दुख माजइ। हो जग०।
थंभण पास सेवक थिर थापइ, मजाहरउ नाम सखि आपइ,
कलिकुंड दुख कापइ, अमीझरइ अप्सर आलापइ।
आयइ पाप वीराउल रा जापइ, पचासरउ पास प्रगट प्रतापइ,
वाडीपुर जस व्यापइ॥ हो जग मइ पास जिणंद जागइ।१।

महिमा माझ घणी मुलतागइ, जेसलमेर जगत सहु आगइ,
पारू परकरगइ, जागती ज्योति नगर ओघागइ।
अंतरीख अचरज चित आणइ, परतिख गउडी पुण्य प्रमाणइ,
पालणपुर पहिचाणइ॥ हो जग मइ पास जिणंद जागइ।२।

हमीरपुर रावण करहेडइ, नागद्रह नरन्याय निमेडइ,
फलवधि दुख फेडइ, तिमरीपुर सुख संपति तेडइ।
नवखंडउ मुक्ति पंथ करि नेडइ, आरास आरति उखेडइ,
पट्ट खड जस खेडइ॥ हो जग मइ पास जिणंद जागइ।३।

कलि मांहि पास कुशल वेलिका छो तवीस नाम जपत दुख पाछौ,
पाप गमठ पाछौ अरिहंत देव ध्यान धरउ आछौ।
वामादेवी मात तणउ माछउ मन सभे प्रभु सेवा वल माछउ,
कहइ समयसुन्दर काछउ॥ हो जग मंइ पास जिणंद जागइ।४।

श्री जेसलमेर मण्डण पार्श्वजिन गीतम्

जेसलमेर पास सुहारउ ।
कुशलसूरि प्रतिमा प्रतिष्ठी, मांहि बेठि गुमारउ । जे०।१।
धन्य जिके नर नारि निरंतर, प्रतिमा दरसइ सवारउ ।
बेकर जोडी आगइ बइठी, शक्रस्तव करइ सारउ । जे०।२।
तू साहिब हूँ सेवक तोरउ, दुर्गति दुख निवारउ ।
समयसुन्दर कहइ इस भव परभव,मुझ आधार तिहारउ। जे ।३।

श्री फलवर्द्धि पार्श्वनाथ स्तवनम्

फलवधि मंडण पास, एक करू अरदास ।
कर जोडी करि ए, हरख हियडउ धरि ए ॥१॥
मइ मन धरिय उमेद, यात्रा करउ (हु) प्र वेद ।
पोष दसमी तणी ए, उतकण्ठा घणी ए ॥२॥
आज घडी परमाण, भेट्या श्री जग भाण ।
मन वंछित फल्या ए, दुख दोहग टल्या ए ॥३॥
एकल मल्ल अरिहंत, भय भंजण भगवंत ।
मूरति सामली ए, सफल फलावली ए ॥४॥
लोक मिलइ लख कोडि, प्रणमइ बेकर जोडि ।
महिमा अति घणी ए, पास जिणंद तणी ए ॥५॥

परता पूरइ पास, सामी लील विलास।
तीरथ जागतउ ए, मथ दुख भागतउ ए ॥६॥
आससेण कुल चंद, वामा राणी नंद।
अहि लांछण भलउ ए, तु त्रिभुवन तिलउ ए ॥७॥
समरथउ देजे साद, टाले मन विषवाद।
सानिध सर्वदा ए, करजो संपदा ए ॥८॥
पास जिनेसर देव, भव भव देज्यो सेव।
मुझ सेवक भणी ए, तु त्रिभुवन धणी ए ॥९॥

कलश

फलवधी मडण पासनाह,
वीनवियउ जिनवर मन उच्छाह।
पोष मास जन्म कल्याणक जाण,
गणि समयसुन्दर आत्रा प्रमाण ॥१०॥

---

(२)
राग—परभाती

प्रभु फलवधी पास परभाति पूजउ,
दुनी मइ नहीं को इसउ देव दूजउ ॥१॥
वडउ तीरथ पफलमल विराजइ,
नित आपणां सेवकां नइ निवाजइ ॥२॥

सदा सामलउ रूप सकलाप सोहइ,
मुख देखतां माहरु मन मोहइ ॥३॥
कृपानाथ सेवक उपरि कृपा करइ,
अरिहंत श्री अष्ट महासिद्धि आपइ ॥४॥
प्रभो प्रणमतां परम आनन्द पावइ,
गुरु समयसुन्दर ओरि गावइ ॥५॥

इति श्री फलवर्धि पार्श्वनाथ भास ॥ १५ ॥

सप्तदश राग गर्भित

श्री जेसलमेर मण्डण पार्श्वजिन स्तवनम्

पुरिसादानी परगडउ, जेसलमेर जिणंद ।
वंश कल्याणक सेहना, पभणिसु परमाणंद ॥१॥
जिनवर ना गुण गा तां, लहियइ समकित सार ।
गोत्र तीर्थंकर बांधियउ, लहु तरियइ संसार ॥२॥
राग भेद रलियामणा, गायइ चतुर सुजाण ।
भाव भगति गुण गावतां, जीवित जन्म प्रमाण ।३॥

१ राग—रामगिरि

जंबूदीप मांहइ भरह भरतखेत्र,
नयरी बणारसी रिद्धि विचित्र ॥ जं० ॥४॥

नरपति अश्वसेन न्याय पवित्र,
रामगिरी मनोहरी वामा कलत्र ॥ श० ॥५॥

२ राग—वेसाख

दसम सुरलोक थवि भूरि सुख भोगवी ।
चैत्र वदि चउथ निशि गुण मरुचउ ए ॥ स्वामी गुण०॥६॥
अश्वसेन राया घरइ माता वामा उरइ ।
हंस मानस सरइ, अवतरयउ ए ॥ स्वामी अव० ॥७॥
चवद सुपन लह्या, फल आगलि कह्या ।
राय विहां फल कह्या, मति विचारी ॥ भइयो मति०॥८॥
अम्ह कुल गुण निलउ, पुत्र होसइ भलउ ।
दस दिशा-मग ज्युं उपोत कारी ॥ भ.यो उपोत०॥९॥

३ राग—सारङ्ग

सुत जायउ अश्वसेन राय के,
अश्वसेन राय के सुत जायउ ।
छप्पन दिशिकुमरी मिल गायउ,
नारकियइ सुख पायउ ॥ श्रय०॥१०॥
पोष पढम दसमी दिन सामी,
चंद्र इक्ष्वाग सुहायउ ।
चउसठ इन्द्र मिली मन रंगइ,
मरु शिखरि न्हवरायउ ॥ श्रय० ॥११॥

शुभ अनुकूल समीरस वायउ,
आनंद अंग न मायउ ।
भाल विशाल भरी मुक्ताफल,
सारंग वदनी वधायउ ॥अम०॥१२॥

४ राग—वसंत

सुपन पन्नग पख्यउ, जननियइ सार ।
तिण प्रभु नाम दीधु , पार्श्व कुमार ॥१३॥
स्वामी नवकर तनु, नील वरण सोहइ ।
सुरंग लांछन रूपइ, जगत्र मोहइ ॥१४॥
प्रभावती राणी वर, गुण अनंत ।
सुर नर नारी चित्त, मांहे वसन्त ॥१५॥

५ राग—वैराडी

कमठ कठिन तप करति कानन,
मठ पंचाग्नि साधइ चित्त मइइ अभिमान ।
कुमति देखाडइ बहु जन कु मिथ्यात्व पाडइ,
तब प्रभु गज चडे आए री उद्यान ॥क०॥१६॥
बलतउ सुअंग लीधउ परमेष्ठि मंत्र दीधउ,
धरणेन्द्र कीधउ कृपानिधि शुभ ध्यान ॥क०॥१७॥
मिथ्यात्व मारग टाल्यउ कमठ कउ मान गाल्यउ,
लोक देखइ राखी तेरउ तप अज्ञान ॥क०॥१८॥

६ राग—श्री

लोकान्तिक सुर आये, जंपइ जयकार,
जिन नइ वधावइ, दीक्षा अवसर अधिकार । लो० ॥१६॥
इग्यारस वदि पोष तणी, त्रिभुवन धणी,
करम छेदन भणी, तजत संसार । लो० ॥२०
पंच मुष्टि लोच करि, प्रभु अणगार हुया,
संजम सिरी रा, गुणधर भरतार ॥ लो० ॥२१॥

७ राग—कल्याण

अमम अमाय अमोह अमच्छर,
नहीं लवलेश लोभ मानरी ।
अप्रतिबंध अकिंचन अमदन,
दायक सकल अभय दानरी ॥२२॥
सुमति गुपति शोभित मुनि नायक,
उपयोग एक परम ध्यान री ।
पंचेन्द्रिय विषया रस जीत,
परसन रसन घाण चक्षु कान री ॥२३॥

८ राग—मालासरी

पार्श्व जिन स्वामी हो तरी अनंत क्षमा ।
सगति थकी तू सहइ उपसर्गा,
सतरिपण तोडइ करम इंधन भगा ॥ पा० ॥२४॥

कमठ पठ्यउ कोपइ प्रभु ऊपरि,
मेघ घटा जल परसइ बहु परि ॥ पा० ॥२५॥
धरणेन्द्र आवी कमठ निवारयउ,
जिन आशातन करत निवारयउ ॥ पा० ॥२६॥

६ राग—गुड ।

चैत्र ठठम चउथी वासरइ, जिनवर अष्टम तप आदरइ ।
प्रभु पास रे, पूरइ आस रे ॥२७॥
चार कर्म नउ क्षय करी, पामी निरमल केवल सिरी ।
सुर आवइ रे, गुण गावइ रे ॥२८॥
माणिक हेम रूपा तणउ, विरचइ त्रिगडउ सुर जिन तणउ ।
प्रभु सोहइ रे, मन मोहइ रे ॥२९॥
कुसुम वृष्टि वासमिया, भागु कर देख हरखिया ।
प्रभु संगी रे, मन रंगी रे ॥३०॥

१ राग—माल

धन धन ते नर आ, देहनउ जन्म प्रमाण ॥ ध० ॥
बारह परषदा मोहि बइसी नइ, भवियण सुणइ तोरी वाण ॥३१॥
त्रिण छत्र सिर ऊपरि सोहइ, चामर ढोलइ इन्द्र जी ।
गयणांगण सुर दुंदुभि बाजइ पेखत परमाणंद ॥ ध० ॥३२॥
मालवकोशिक राग आलापति, अमृत वचन अनूप जी । ध ।
केवलज्ञानी धर्म प्रकासइ, जीवदया खमा रूप जी ॥ ध० ॥३३॥

११ राग—गउरी

मोह मिथ्यात्व निद्रा तजउ, जीव जागउ री ।
परिहरउ पंच प्रमाद, भविक जीव जागउ री ॥
राग द्वेष फल पाइया, जीव जागउ री ।
मत्ति करजो विषवाद, भविक जीव जागउ री ॥३४॥
धइ जिनवर उपदेस, धर्मध्यान लागउ री ॥ श्रांकणी ॥
दाम भणी जल बिन्दुयौ, जीव जागउ री ।
पड़त न लागइ बार, धर्म ध्यान लागउ री ॥
इण परं चंचल जाणजो, जीव जागउ री ।
सकल कुटुम्ब परिवार, धर्म ध्यान लागउ री ॥३५॥

१२ राग—केदारउ

सउ बरस पाली श्राउखउ, तेत्रीस मुनि परिवार ।
समेतशिखर प्रभु रह्या, माम सलेखण सार ॥३६॥
चिरंद राय चढ्यउ रे, समेत गिरिंद ।
दीठो पाम्यउ रे, परमाणंद ॥ जि० ॥
प्रभु भावण सुदि श्राठम दिनइ, श्री पार्श्व शिवपुर गामि ।
निज कर्म सकलिया चूरिया, जिके दारुण परिणामि । जि०।३७।

१३ राग—परजउ

तू अरिहंत अकल अलख सरूपी,
तू निराकार निरंजन ज्योति रूपी । तू० ॥३८॥

ए पिंडस्थ पद रूपस्थ रूपातीत ध्यान धर री,
ए मन भूङ्ग भजि भगवंत बहु पर दउर धार री। दू०॥३६॥

१४ राग—सूहव

संसार सागर दुख जल, निस्तरउ नर बोहित्य।
शुभ भाव समकित वासना, शिव सुख करण समत्य ॥४०॥
जिन प्रतिमा जिन सारिखी वंदनीक, भक्ति करउ निर्मीक। जि०।
भगवती ज्ञाता प्रमुख मइ, उपदिशि प्रतिमा एह।
जो एम जे मानइ नहीं, मूढ पशु कहइ तेह ॥ जि० ॥४१॥

१५ राग—खंभायति

बेसलमेरु बीकानेरइ रे, नागउरइ करहेडइ रे।
सइरीसइ सखेसरइ रे, गउडी दुख फेडइ रे ॥४२॥
थंभी आगती जगनायक, महिमा अगि घणी रे।
दू तो सुख संपति पूरवइ, सुरमणि रे ॥४३॥
कलिकुंड ए आबू अमीझरइ रे, फलवधि पुर ओवाणइ रे।
नारंगपुर पंचासरइ रे, खंभायति वरकाणइ रे ॥४४॥

१६ राग—कल्याण

जिनजी मेरउ मानव भव आज प्रमाण रे मेरो। मा०।
तु त्रिभुवन पति पुण्यउ, अग मारग ए,
माव भगति आनंद, मन आया रे॥ मे ॥४५॥

च्यवन जन्म दीक्षा ज्ञान निर्वाण रे,
इण परि पच कल्याणक जाण रे ॥ मे० ॥४६॥

१७ राग—धन्याश्री

इम पुण्यउ जेसलमेरु मण्डण, दुरित खण्डण शुभ मनइ।
रस कला दर्शन तरणि वरसइ, आदि जिन पारणा दिनइ ॥
जिनचन्द्र–सूरति सकलचंदन, मृगमदा केसर करी।
प्रइ समइ–सुंदर पार्श्व पूजइ, तेहनी कल्याणसिरी ॥४७॥

— o —

श्री लोद्रवपुर सहस्रफणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

लोद्रपुरइ आज महिमा घणी, यात्रा करउ श्री जिनवर तणी।
प्रणमतां पूरइ मन आस, सहसफणा चिंतामणि पास ।१।
जूनो नगर हुयउ लोद्रवो, सुन्दर पोल सरवर पउहद्उ।
सगर राय ना सखर आवास, सहसफणा चिंतामणि पास ।२।
उगणीसम पाटइ जेहनइ, सीहमल साह थयउ तेहनइ।
जसलमेरु नगर जस वास, सहसफणा चिंतामणि पास ।३।
सीहमल नइ सुत थाहरू साह, धरम धुरधर अधिक उच्छाह।
जीर्ण उद्धार करायो जास, सहसफणा चिंतामणि पास ।४।
दंड कलस धज सोहामणा, रूडा मइ बलि रलियामणा।
निरखंता थायइ पाप नो नास, सहसफणा चिंतामणि पास ।५।

नयणां दीठां नित आणंद, सेवतां सुरतरु ना कंद ।
सहियइ लच्छी लील विलास, सहसफण्या चिंतामणि पास ।६।
प्राविख पारिखेख मुन्नीपति, सघु मे सीधा दसकोड वती ।
काती पूनम पुण्य प्रकास, सहसफण्या चिंतामणि पास ।७।
सक्ल सोल इक्यासी समइ, यात्रा कीधी काती पूनमें ।
तीरथ महिमा प्रगटी खास, सहसफण्या चिंतामणि पास ।८।
मननी सकट मांजो साम, प्रह ऊठी नइ करू प्रणाम ।
समयसुन्दर कहइ ए अरदास, सहसफण्या चिंतामणि पास ।९।

(२)

राग—कल्याण

पाछउ सोंवपुरे ।
सहसफण्या चिंतामणि स्वामी, मेटउ भाव धरे । पा० ॥१॥
महासाली चिरु बिंब मराया, जेसलमेरु गिरे ।
समयसुन्दर सेवक कहइ इमइ, प्रभु सानिध करे । पा० ॥२॥

— —

श्रीस्तम्भन–पार्श्वनाथ–स्तोत्रम्

नमिरसुरासुरखयररायकिन्नरविआहर ! ।
मउयराइविरायमाणपयपंकयसुंदर ! ॥
मणिमयसमणिमामेयमणवंछिमदायक ! ।

जय जय थंभण पासनाह । सुवणत्तयनायग ॥
पक्खयारपायवपवरसिंचणमुद्दरसमत्थ ।
पुरिसादाणिअ पासजिण, गुणगणरयणनिहाण ॥१॥
आससेणनररायवंसमाणससरहंसं ।
नायरलोअपओअरप्पपडिबोहणहंस ॥
पम्महकुम्भयखडलखडतिसनिहमथिरेण ।
पणमह पासजिणिंददवमेगग्गामणेण ॥
कलाकेलिवरखवर करुणाकेरवचंद ।
परखिकमलसु दरममरपउमासाधरविंद ॥२॥
वामादेवीउअरसुत्तिमगुलमुत्ताहल ! ।
सयलकलाकलिकलियकाय कलिमलविसुहलहल ! ॥
मोहमहामलनीरपंकनिप्पेडणदिणयर ! ।
दहि दयापर परमदेव सेवं मह सुहयर ! ॥
अरिकरिनिअरिनिरागरणपचाणण ! जय देव ! ।
थम(थ)णपुरमंडणमउड सुरनरवड्डिमसेव ॥३॥
कमडकडप्पकुडीरकू ठकमठासुरगअणा ! ।
सुत्तलिअतयणासुहाक्कारिको़त्तीरजणा ' ॥
पावमुरासुर पुंडरीअ रमणीअगुणालय ।
फणिसिंवालमसाहमोह पडुम पडिवालय ॥
भवसमुद्दतारणतरणा ! सिद्धमणजयणमाधार ! ।
पास जिणेसर ! गरिमगुरु गमीरिमगुणसार ! ॥४॥

नवकमलसुंदरकमलसरीअ मन्मथरिममलकिअ ।
ससिवदनविमलविसालभालमंगुलमयलकिअ ॥
तुह मुहचंदविलोअणस्स मह नाह सुहंकर ! ।
केरववणमिव लोअणाणि विमसंति जिणेसर ॥
जगबंधव ! जगमाइपिअ ! जगजीवण ! जिणराय ! ।
जगवच्छल ! जगपरमगुरु ! जय जय पणमिअपाय ! ॥४॥
धवलकमलदलकिलिपिपूरपयलीकयमहिमल ! ।
पयलपमायपल्लावहु मरमंजणघणमविमल ॥
दुःखदावानलसलिलवाह ! दोहग्गविहंडण ! ।
जय जय पास जिणंद ! देव ! पंमणपुरमंडण ! ॥
चउगइभयभमणपयर, उपसामिअ दुहदाह ।
रोगसोगसंतावहर, जय जिण ! तिहुअणनाह ! ॥६॥
हिमयसरोवरसोहमाणगुणसमुपिअसुणी ।
गब्भत्थमलपिलसिअमाणस कलहंसविणी ॥
कमठदणवमाणमनरिंदकिंनरपयमणी ।
पुरिसादाणिअ ! पासनाह ! देहं तुह मुणी ॥
केवलकमलालामहसकर, मिथरमणीठरहार ।
सिद्ध ! बुद्ध ! निस्संग ! जिण ! सयलजीवसुहकार ! ॥७॥
इय पास जिणवर सुखसंदिणयर, पंमणिपुरहिओ ।
सगुणो सामी सिद्धिगामी सिद्धिसोहपरहिओ ॥
जिणचंदसरिसुरिंदकिंनरसयलवंदनमसिओ ।
मह देहि सिद्धिं सुहसमिद्धिं समयसुन्दर संसिओ ॥८॥

इति श्रीस्तम्भनकपार्श्वनाथस्य लघुस्तोत्रं प्राकृतभाषामयम् ।

जगि जागती ज्योति सीरेष उदार,
करै सुरनर कोडि प्रभु नइ जुहार ।
सदा सवर्ला लोक सानिध्यकारी,
प्रभु पास स्तंभनो विघ्न वारी ॥६॥
इम श्रीजिनचद्र गुरु सकलचद्र,
सुपसाउलै समयसुन्दर मुणिंद ।
थुण्यो त्रिभुवनाधीश संताप चूरइ,
प्रभु पास स्थंभणो आस पूरइ ॥७॥

इति श्रीस्थंभणकपार्श्वनाथलघुस्तवनं ।
श्रीस्तंभतीर्थेवसंघसमभ्यर्थनया कृतं संपूर्णं ।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

राग—गुड

मङ्गल मण्डउ नर जन्म ओ मण्डउ थमणो रे ।
उपजउ परमानन्द, मुझ मन प्रभि पणो रे ॥१॥
मारिय पसरो गरणा, घनाघन सरीरय वरणा ।
दुर्नामइ दुःख के हरणा, सुरकुरु सुख के करणा ॥
रागि गमार के सिरणा, भव भ्रम स्वामि के शरणा ॥ थांस्थी ॥
श्री खरतर गच्छ नायक, सुखदायक यति रे ।
अमरदरसूरीश्वर, प्रकटित मूरति रे ॥२॥ मा० ॥

सामी सीधा वछित काम, आणंद अति घणउ रे ॥ म०॥१॥
सामी तु थउ त्रिभुवन करउ राजियउ रे ।
सामी हूँ छु तोरउ दास, करुणा करउ रे ॥
सामी माहरा रे, भलिय निपन दूरइ हरउ रे ॥ म०॥२॥
सामी तुम नइ रे, कर जोडी वीनवु रे ।
सामी देज्यो भवि भवि सेव, तुम्ह आपणी रे ॥
इम बोलइ रे, वाचक समयसुन्दर गणी रे ॥ म०॥३॥

इति श्रीस्तंभरा पार्श्वनाथ गीत संपूर्णम् ॥ १६ ॥

श्रीकंसारी-त्रंबावती मंडन भीडभंजन पार्श्वनाथ भास

(१)

बोलउ सखी चित चाह सु, त्रंबावती नगरी तेथि रे ।
कंसारी केरउ जागतउ, तीरथ छइ अथि रे ॥१॥
भीडभंजन सामी भेटियउ, सखी मइ उगमतइ सूरि रे ।
पारसनाथ मनायइ, दुख दोहग आपइ दूरि रे ॥२॥ भी ॥
सखि आरति चिंता अपहरइ, निकसणा पान्देवग मेलइ रे ।
रोग सोग गमाडइ, वैमनर[1] दुमिणि नइ ठेलइ रे ॥३॥ भी०॥
सखि स्नात्र कीधां सुख सपजइ, गुण गातां लाभ अनंत रे ।
समयसुन्दर कहइ सुणउ, भय भजण भी भगवंत रे ॥४॥ भी०॥

इति श्री कंसारीमंडण भीडभंजण पार्श्वनाथ भास ॥२३॥

---

१ वैमनर

( ) राग—सबाब

भीड़ भंजण तू श्री अरिहंत,
  अलिय विघन टालइ अरिहंत ॥ भी० ॥१॥
सुन्दर मूरति पमाण सोहइ,
  मोहन रूप जगत मन मोहइ ॥ भी० ॥२॥
भविजन भक्ति गु भावना भावइ,
  परमानन्द लीला सुख पावइ ॥ भी० ॥३॥
पास प्रभाती प्रगट प्रभाव,
  समयसुन्दर मयापति गावइ ॥ भी० ॥४॥

(३) राग—काफी

भीड़भंजन तुम पर वारि हो जिणंदा ।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, दरसन परमानन्दा ॥१॥
  तुम पर वारि हो जिणंदा ॥
मस्तक ऊपर मुकुट विराजइ, वदन कमलदल रवि चन्दा ।
तेज प्रताप अधिक प्रभु तेरउ, मोहि रहे नर वृन्दा ॥२॥ तु०॥
पारसनाथ प्रगट परमेसर, वामा राणी नंदा ।
समयसुन्दर कर जोड़ी कहे, मसमत पाय अरविंदा ॥३॥ तु०॥

(४) राग—मारुणी

भीड़ भंजण रे दुखगंजण रे ।
  रूड़ी मूरति मन मन रंजण रे,

निरखीजइ पास निरजण रे ॥१॥ मी०॥
हरसई मन वंछित दाता रे,
प्रणमीजइ उठि परमाता रे।
फलारी नाम कहाता रे,
समायत मांहि विख्याता रे ॥२॥ मी०॥
ईति चिंता भारति सवि पूरइ रे,
प्रभु सहुना परता पूरइ रे।
दुख दोहिला टालइ दूरइ रे,
समयसुन्दर पुण्य पड़रइ रे ॥३॥ मी०॥

इति श्री संभात मंडण श्रीइमवन पार्श्वनाथ भास ॥८॥

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ स्तवनम

मांपचे पर बइठा लील करउ, निज पुत्र कलत्र सु प्रेम धरउ।
तुम्ह वस देसंतर को फटउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ ।१।
मन वंछित सगली आस फलई, सिर ऊपर चामर छत्र हलइ।
भागाति पालइ शुभमति चोडउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ ।२।
भूत प्रेत पिशाच वैताल वली, शाकिणी डाकिणी जाइ टली।
छल छिद्र न लागइ को भटउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ ।३।
कण्ठमाला गड गुंबड सबला, शत्रु क्रम रोग टलइ सगला।
पाडा न करइ दुख गलि फोडउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ ।४।

एकन्तर ताप सीयउ दाह, उराध विण आवइ घर माह।
दुरइ नहीं माथउ पग गोडउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ।५।
न पडइ दुरभिष दुकाल कदा, शुभ वृष्टि सुभिक्ष सुगाल सदा।
वतविन तुम्हें अशुभ करम वोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ।६।
ए जागनउ तीरथ ठाम यहू, जाणइ ए वात जगत्र सहू।
मुझ नइ भव दुःख थकी छोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ।७।
श्रीपाम महेवापुर नगर, मइ भेट्यउ जिनवर हरख भरे।
इम समयसुन्दर कहइ गुण जोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ।८।

इति श्री महेवा मडण श्री नाकउडा पारश्वनाथ लघु स्तवन सम्पूर्णम्।

श्री संखेश्वर पार्श्वजिन स्तवन्

(१) राग—मल्हार मिश्र

परघा पूरइ पृथ्वी तणा, यात्रा मली लोक आवइ घणा।
अति सुन्दर सोहइ देहरउ, साचउ देवत संखेसरउ ॥१॥
आराधे ज नर इकमना, पइ लोक नी कामना।
सुख फलै वंछित सहरउ, साचउ देवत संखेसरउ ॥२॥
सुन्दर मूरति सोहामणी, रूडी नइ वलि रलियामणी।
फणे इकदस सिर सेहरउ, साचउ देवत संखेसरउ ॥३॥
केसर चंदन पूजा करउ, ध्यान एक भगवत नउ धरउ।
संकट कष्ट नहीं कहरउ, साचउ देवत संखेसरउ ॥४॥

संखेसरउ वायउ छउ तुम्हे, शक्ति नहीं किम आवु अमें।
समयसुन्दर नी वयति करउ, साचउ देवउ संखेसरउ ॥४॥

(२)

सकलाप प र्श्व संखेसरउ।
माग सयोग मले परि मेळाउ, देख्यो सुन्दर दहरउ।१।स०।
वरस अठारै यात्रा करता छ, भावै ध स ला आफरउ।
सु तिम की मन कामना पूरइ, भव कृपाल मोह उद्धरउ।२।स०।
सामलउ तीरथ तु जगनायक, सकट विपति सवे हरउ।
पाटण संघ सहित वच्छराज साह, समयसुंदर कइ आणंद करउ।

(३) राग—धन्यासिरी

संखेसरउ रे सागतउ तीरथ जाणियइ रे,
हां रे भी जात्रा करइ सहु कोय।
आणद अति घणउ र, तु देहनउ र,
संकट विकट सब हरइ रे ॥१॥ स०॥
सामी तू वउ र, परतिग परता पूरवइ र,
हां रे मन वंछित दातार।
सुरवरु सारिखउ र, पृथ्वी माहि रे,
लोक लीघउ पारखउ रे ॥२॥ स०॥
स्वामी तू वउ र, त्रिभुवन केरउ राजियउ रे,
हां र नामा कुलि मन्हार।

रतन थोभा घरू रे, इम बोलइ र,
समयसुन्दर सानिध करु रे ॥३॥ स०॥

(४) राग—भमरथ

साचउ देव मउ सखेसरउ, ध्यान एक भगवत नउ धरउ।१।
कां तुम्हे आरत चिन्ता करउ, सखसरउ मुखि उचरउ।२।
धादि विना न थायन ठरउ, उपरि बोल आवइ आपरउ।३।
आणद लील करउ मत डरउ, दूनीए दीठउ पतउ खरउ।४।
पारसनाथ पाप अणुमरउ, समयसुन्दर कहइ भ्रिम निस्तरउ।५।

इति श्रीसंखेश्वर पार्श्वनाथ भास ॥ ३० ॥

— ० —

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवनम

(१)

गाजा गाजइ र, गिरुयउ पारसनाथ।
भव दुख भांजइ र, मल्हइ सुगति नउ साथ ॥१॥
आगमउ तीरथ र, लोक आवइ छइ आत्र।
भावना भावइ रे, करइ पूजा नइ स्नात्र ॥२॥
परचा पूरइ रे, पारसनाथ प्रत्यक्ष।
चिन्ता चूरइ र, सेहनउ आगलउ पक्ष ॥३॥

नीलड़इ घोडइ रे, चढि आवइ असवार।
सघ नो रखा रे, करै मारग मम्मार ॥४॥
विषमी ठामइ रे, सइ रखा पारकर नइ पास।
हुं किम आवुं रे, नहीं म्हारे गोडा नो वेसास ॥५॥
दूर थकी पण रे, तुम जागज्यो देवा।
मोरा स्वामी रे, मो मन धणी सेवा ॥६॥
रंगे गायउ रे, रूडउ गौडीचउ राया।
भाव भगति सु रे, प्रणमै समयसुन्दर पाया ॥७॥

(२) राग—गौडी मिश्र

ठाम ठाम ना सघ आवै यात्रा,
सतर भेद करइ पूजा मनात्रा ॥१॥
गौडी जागतउ पारसनाथ प्रत्यक्ष ॥ गौ० ॥ आंकणी ॥
केसर चदन भरिय कचोल,
प्रतिमा पूजइ मन रग रोल ॥२॥ गौ० ॥
मानता मानइ वकर जोड़,
स्वामी मन वधन थी छोड ॥३॥ गौ० ॥
नटवा नाचइ शास्त्र संगीत,
गंधर्व गावइ मधुरा गीत ॥४॥ गौ० ॥
निरखंता थाइ नव नवा रूप,
स्वामी मूरति सरस स्वरूप ॥५॥ गौ० ॥

नीलई घोड़इ चढि असवार,
रवा करइ संघ नी पच सार ॥६॥ गौ० ॥
गरुयडि गाजइ गौडी पास,
समयसुन्दर कहइ पूरउ आस ॥७॥ गौ० ॥

(३) राग—गउडी

परतिख पारसनाथ तु गउडी । प० ।
लोक मिलइ यात्रा लख कउडी,
चरण कमल प्रणमे कर जोडी ॥ प० ॥१॥
तुये इण देव तणी किण होडी,
और देव इण आगइ कौडी ॥ प० ॥२॥
दरशन दउलति आपइ दउडी,
समयसुन्दर गुण गावइ गौडी ॥ प० ॥३॥

(४) राग—श्री

तीरथ भेटन गई, सखि हुं हरषित भई ।
परतिख गउडा पास पूछउ, पूरवइ मन आस ।
सेवक म्यउ री सेवक म्यउ ।
नीलइ घोड़े चढी आवइ, पूरवइ मन आस ॥ से० ॥१॥
अपुत्रियाँ पुत्र आपइ, दुखिया को दुख कापइ, अशरण्यां आधार ।
निर्धनियां नइ धन आपइ, भरूं धन भण्डार ॥ से० ॥२॥

इसो मइ अवरज दीठ, जागतो जिम्यद पीठ, प्रगट पड़र।
समयसुन्दर कहो, स्वामी हाजरा हजूर ॥ से० ॥३॥

(५) राग—आसावरी

गउड़ी पारसनाथ तु वारु,एकलमल विराजइ ॥ ग०॥१॥
दसो दिसथी सघ आवइ दिवाजइ,
ए प्रभुता प्रभु ताहरइ छाजइ ॥ ग०॥२॥
पूजा स्नात्र करइ प्रभु काजइ,
समयसुन्दर कहइ सहु नइ निवाजइ ॥ ग०॥३॥

(६)

गउड़ी पारसनाथ तू गाजइ, वारु एकलमल्ल विराजई ॥१॥
दिसो दिस थी सघ आवइ दयाल, भय सकट मारग भांजइ ॥२॥
वाजित्र ढोल दमामा वाजइ, ए प्रभुता प्रभु ताहरी छाजइ ॥३॥

इति श्री गउड़ी मण्डण पार्श्वनाथ भास।

—०—

श्री भाभा पार्श्वनाथ स्तवनम्

(१) राग आसावरी

भाभउ पारसनाथ मइ भेटयउ, आमाठलि मांहि आज रे।
दुख दोहग दूरि गर्या सगलां, सीघ्या वछित काज रे। भा०॥१॥

भावक पूजा स्नात्र करै सहू, सपूरव ताल पखाज रे।
भगवंत आगल भावन भावइ, भय सकट भाजइ आज रे। भा०।२।
अश्वसेन राजा कुल मंगल, तेवीसम जिनराज रे।
समयसुन्दर कहइ सेवक तोरउ, तू मोरा सरताज रे। भा०।३।

(२) राग—मल्हार

भाभा पारसनाथ मल्हू करे, मलू करे भाभा मल्हू करे। भा०।
अलिय विघन म्हारां अलगां हरे। भा०।१।
कुशल खेम करे मुझ घरे, ऋद्धि वृद्धि पावे बहु परे। भा०।२।
समयसुंदर कहइ मत किहां फिरे, ध्यान एक भगवंत नुं धरे। भा०।३।

इति श्री तीरथ भास छत्रीसी समाप्ता।
संवत् १७०० वर्षे आषाढ वदि १ दिने लिखितं ॥ छ ॥ १६ ॥

श्री सेरीसा पार्श्वनाथ स्तवनम्

सकलाप मूरति सेरीसइ,
पोस दसमी पारसनाथ मल्हउ, देव नीमी देहरउ दीसइ। स०।१।
प्रतिमा सोहति आइ पातालइ, धरखि आथीरइ सीसइ।
भाव भगति भगवंत नी करतां, हरख घणउ हीयउ हींसइ। स०।२।
पन्सी पारिउ सरखी सघ सुं, जात्र करी ताम सुजगीसइ।
समयसुंदर कहइ साचउ मइ जाणयउ, वीतराग देव विसवा वीसइ।

इति श्री सेरीसा मंडन पार्श्वनाथ भास ॥ २१ ॥

श्री नलोल पार्श्वनाथ भास

राग—धन्यासिरी

पद्मावती सिर उपरि, पारसनाथ प्रतिमा सोहइ रे ।
नगर नलोलइ निरखतां, नर नारी ना मन मोहइ रे ॥१॥ प०॥
सु दरा मांहि अति भली, महावीर प्रतिमा मांडी रे ।
भगति करउ भगवंत नी, मोक्ष मारग नी ए दांडी रे ॥२॥ प०॥
लोक आवइ यात्रा भणी, पद्मावती परतां पूरइ रे ।
समयसुन्दर कहइ जिन थउ त, आरति चिंता चूरइ रे ॥३॥ प०॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वजिन स्तवन

आवी मन सची आसता, देव जुहारूं सासता ।
पारसनाथ मुझ वंछित पूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥१॥
को कहनइ को कहनइ नमइ, माहरइ मन मंइ तू हिज गमइ ।
सदा जुहारू ऊगमते सूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥२॥
अमियपाखी तोरी आंखड़ी, जाणइ कमल तणी पांखड़ी ।
मुख दीठां दुख जायइ दूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥३॥
चीतड़िया वाल्हेसर मेल, वारी दुसमण पाछा ठेल ।
तू छइ माहरउ हाजरउ हजूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥४॥
मुझ मन लागी तुम सू प्रीत, बीजउ कोइ न आवइ चीत ।
करउ मुझ तज प्रताप पडूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥५॥

एह स्तोत्र जगत मन धरइ, तेहना काज सदाइ सरइ।
आधि व्याधि दुख जायइ दूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥६॥
भव भव देज्यो तुम पय सेव, श्री चिंतामणि अरिहंत देव।
समयसुंदर कहइ सुख भरपूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥७॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भास

राग—भयरव

चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि, पारसनाथ मुझ वंछित पूरि ।१।
जागतउ देव तू हाजर हजूरि, दुख दोहग उपसर्गा करि दूरि ।२।
सदा सुहारू उगतइ सूरि, समयसुंदर कहइ करि तू पडूरि ।३।

इति श्री चिन्तामणि पारश्वनाथ भास ॥ २४ ॥

—:o:—

श्री सिकन्दरपुर चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन

राग—धमाल फागनी जाति

स्यामल वरण सुहामणी रे, मूरति मोहन वेल।
जोतां तृप्ति न पामियइ रे, नयण अमी रस रेल ।१।
चिंतामणि पास जुहारियइ रे, सिकंदरपुर सिणगार। चिं। आंकणी
तू प्रभु त्रिभुवन गाजियउ रे, हूँ प्रभु तोरउ दास।
तिण पर शरणै हूँ आवियउ रे, साहिब सुणि अरदास ।२ चिं०।

प्रणमतां पातिक टलइ रे, दरसण दउलति होय ।
गीत गान गरुयडि पढइ रे, सेवा करइ सहु कोय ।३। चिं०।
वामा राणी उरि धरयउ रे, अश्वसेन कुलचंद ।
पार्श्व चिंतामणि प्रणमतां रे, समयसुन्दर आणंद ।४। चिं०।

xxxx

श्री अजाहरा पार्श्वनाथ भास

(१) राग—केदारउ

आवउ देव जुहारउ अजाहरउ पास, पूरइ मन नी आस।
तीरथ मांहि मोटउ रे त्रिभुवन मांहि,जागती महिमा जास। आ १।
आदि न जाणइ रे एहनी कोई, अरिहंत अकल सरूप ।
सती सीता रे प्रतिमा पूजी एह, भक्ति करइ सुर भूप ।आ०।२।
परता पूरइ परतिख एह, समरयां दे प्रभु सात ।
चिंता चूरइ रे चित नी, वग हरइ विपवाद ।आ०।३।
भगवंत भेटयउ रे अजाहरउ पास, सफल थयउ अवतार।
तीरथ जूनउ रे जागतउ एह, समयसुंदर सुखकार ।आ०।४।

(२)

आवउ जुहारउ रे अजाहरउ पास, सह नी पूरइ आस । आवउ०।
त्रिभुवन मोहउ रे तीरथ एह, जागति महिमा जेह ।।१।।
आदि न जाणइ रे एहनी कोय, भगवंत भेटउ सोय ।
सीता पूजी रे प्रतिमा रंगि, भगति भरी बहु भंगि ।।२।।

परता पूरइ रे पास त्रिखद, दूरि करइ दुख दद ।
चिंता चूरइ रे चिंत नी एह, वञ्च मय करइ देह ॥३॥
तीरथ मेट्यउ रे श्रम्हे श्राज, सीधा वंछित काज ।
तीरथ जानउ रे श्रजाहरउ वाणि, समयसुंदर सुख पाणि ॥४॥

श्री नारंगा पार्श्वनाथ स्तवनम्

पारसनाथ कृपा पर, पाप रखउ मुज दूरि ।
निरखता तुम्ह मूरति, मू रति थाई भरपूरि ॥१॥
अति सुन्दर तुम्ह सूरति, सूर तिमिर हरइ जेम ।
अति सकलाप सुकोमल, को मल नहिं नहिं भ्रम ॥२॥
सुन्दर वदन विलोकन, लोकनई तू हितकार ।
वामा देवी नंदन, नद नलिन पद चार ॥३॥
अलि कुल कज्जल नीलक, नील कमल सम देह ।
भव समुद्र सू तारक, तार कला गुण गेह ॥४॥
मावइ सेवइ भुजगम, जगम पखि थिर थाय ।
न पडइ भगत वैतरणी, तरणी लाधु उपाय ॥५॥
जग बांधव जग वत्सल, वत्स लघू जिम पालि ।
श्री जगगुरु जगजीवन, जीव नउ तू दुख टालि ॥६॥
वंश इखाग निशाकर, माकर सम तुम्ह वाणि ।
भव भव हूँ तुम्ह सनक, सब कर तें मध्याणि ॥७॥

घर दरिसण रलियामणउ, आमणु दमणु थाई ।
जिम सुक्ख पहुँचाइ आम्बडि, आवडियां न दसाई ॥८॥
नारिंगपुर मडण मणि, नमयि करइ नर नारि ।
समयसुन्दर पहवी नति, विनति करइ वार वार ॥९॥

(२)
राग—कल्याण

पाम्स मांहि नारगपुरउ री । पा० ।
चैत्यभवन करि देव जुहारउ,
जिम ससार समुद्र तरउ री ॥ पा०॥१॥
आधि व्याधि चिंता सहु धरइ,
ब्री कर न सकउ को तुरउ री ।
सुदर रूप मनोहर मूरति,
दार दियइ मस्तकि सहरउ री ॥ पा०॥२॥
वीतराग तखा गुण गावउ,
अरिहत अरिहंत ध्यान धरउ री ।
समयसुदर कहइ पाम पसायइ,
कुशल कल्याण आणद करउ री ॥ पा ॥३॥

मा नारगा पार्श्वनाथ स्तवनम्

पाम्स मइ परमिद्द थयी, नारंगपुर पारसनाथ तयी ।
भाव भागतउ तीरथ पइ खरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।१।

हाटे घर मरठा घन खान्ठ, सखरइ ब्यापार तणउ साटउ ।
दरिय देसांतर कांइ फिरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।२।
राजा करइ तेहिज भग घणउ, उपर सही बोल हुवइ आपणउ ।
झगड़इ कांटइ तुम कांइ डरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।३।
तुम दइ देवालय मति जावउ, मिथ्यात्व देव नइ मतिध्यावउ।
पुत्र रत्न लहिस्यउ मति सफरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।४।
नख आंख भनइ मुख कुख तणी, स्वास खास नई ज्वर रोग घणी।
जायइ ते मात्र तुरत अरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।५।
भील धरोली भयरा मीर तखा, मारग में भय अत्यंत घणा।
मत बीहउ धीरज नित्य धरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।६।
व्यंतर नइ राक्षस वैताला, भूत प्रेत ममइ दग दग वेला ।
सत्कण शाकण डर कांइ डरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।७।
परिवार कुटुम्ब सहु को मानइ, सौभाग्य सुजस पषव पानइ ।
चलि न हुवइ मक किणी बातरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।८।
आणद पूरउ तुम इह लोकइ, शिव सुख पिण करइ परलोकइ।
भणै समयसुंदर भव समुद्र तरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ ।९।

श्री वाड़ी पार्श्वनाथ भास

चउमुख वाड़ी पास जी,
सुन्दर मूरति सोहइ मेरे लाल ।
नित नित नयण निरखतां,
भवियण ना मन मोहइ मेरे लाल ।१। च०।

मोम चिंतामणि संपति आपइ,
अचित चिंतामणि आस पूरइ मेरे लाल।
विघ्न चिंतामणि विघ्न विडारइ,
चउगति ना दुख चूरइ मेरे लाल।२।च०।
मोह तिमिर भर दूर निवारइ,
निरमल करइ प्रकाश मेरे लाल।
समयसुंदर कहइ सफल मन नइ,
परतिख तूठउ वाड़ी पास मेरे लाल।३।च०।

इति श्री वाड़ी पार्श्वनाथ भास ॥ २० ॥

श्री मगलोर मडण नवपल्लव पार्श्वनाथ भास

ढाल—धम्मती रासी इण परि बोलइ, नेम विना कुण घू घट खोलइ

नवपल्लव प्रभु नयण निरख्यउ,
प्रगटयउ पुण्य नइ हियडउ हरख्यउ ॥१॥
वामी मंगे मूरति आणी,
मारगि पं अंगुल निसवाणी ॥२॥
वलीय नवी आवी तं वासउ,
नवपल्लव ते नाम कहायउ ॥३॥
मंगलोर गढ मूरति सोहइ,
भवियण लोक तणा मन मोहइ ॥४॥
जात्र करी भीसप समाणि,
समयसुन्दर प्रणमइ परमाणि ॥५॥

इति श्री मगलोर मडण श्री नवपल्लव पार्श्वनाथ भास ॥२१॥

श्री देवका पाटण दादा पार्श्वनाथ भास

देवकइ पाटण दादउ पास, सखी मइ भुहरउ म्हारी पूरी आस। दे।१।
चंदन केसर घसक कली, प्रतिमा पूजी मन नी रली। दे।२।
यात्र करण सघ आवइ घणा, सनात्र करइ जिनवर तणा। दे।३।
दउलित आपइ दादउ पास, समयसुन्दर प्रभु लील विलास। दे।४।

इति श्री देवका पाटण मण्डण दादा पार्श्वनाथ भास ॥२३॥

—•—

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ गीतम्

राग—सारंग

मले मेटयउ पास अमीझरउ।
नयर वडाली माँहि देख्यउ प्रभु देहरउ जी।१। पा०।
नव नव भग पूज रचो मन रंगे, निर्मल ध्यान धरउ।
भगवंत नी भावना मन भावउ, जिम ससार तरउ जी।२। पा०।
ईडर सघ सहित यात्रा, हरख्यउ मो हियरउ।
समयसुंदर कहइ पास पसायइ, वंछित काज सरयउ।३। पा०।

श्री शामला पार्श्वनाथ गीतम्

राग—मल्हार

साचउ देव तउ ए सामलउ, अलगउ टालइ जपलउ। सा।१।
पूजा स्नात्र करउ सघ मिलउ, जन्म मरण ना दुख थी टलउ। सा।२।
समयसुंदर कहइ गुण सांमलउ, जिम समकित थायइ निरमलउ।३।

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ गीतम्
राग—धर्सन

पार्श्वनाथ परतिख अंतरीख,
सकलाप सामी कृष्य ए सरीख। पा० ।१।
श्रीपाल राजा कीधी परीख,
कोढ़ रोग गयो हुवो प्रभु बरीक। पा० ।२।
निरधार मूरति नयण निरीख,
समयसुन्दर गुण गावइ हरीख। पा० ।३।

श्री चीचीपुर मण्डन चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन
राग-काफी

चिन्तामणि चालउ दव जुहारण जावां। चि०।
चीचीपुर मांहइ प्रभु बइठउ, दरसणि दउलति पावां। चि० ।१।
कसर चदन भरिय कचोली, प्रतिमा पूज रचावां।
स्यामल मूरति सुन्दर सोहइ, मस्तक मुकुट धरावां। चि० ।२।
गुणस्तन आगार करी साथउ, गुण वीतराग ना गावां।
समयसुन्दर कहइ भाव भगति सुँ, भावना भली भावां। चि० ।३।

श्री भडकुल पार्श्वनाथ गीतम्
राग—वैराड़ी

भडकुल मण्डिउ हो, पारसनाथ पडूर। भ०।
परतिख रूप धरणिंद पदमावती, परचा पूरइ हाजरा हजूर। भ०।१।

समरथां सा' दियइ मेरउ साहिब, भ्रारति चिंता करइ चकचूर ।
आसा सफल करत सेवक की, यात्रा आवइ सब लोक सनूर । म०।२।
पोष दसमी दिन जन्म कल्याणक, यात्रा करी में ऊगमते सूर ।
समयसुन्दर कहइ तेरी कृपा ते, राग वेलाउल आणद पूर । म०।३।

श्री तिमरीपुर पार्श्वनाथ गीतम्

राग—काफी

तिमरीपुर भेट्या पास जिनेसर येई । ति० ।
देश प्रदेश थकी नर नारी, यात्रा आवइ धँस लेई । ति०।१।
सतर भेट पूजा करइ भावक, नृत्य करइ तता थेइ ।
समयसुदर कहइ हरियामनो परि, मुक्ति तणा फल लेइ । ति०।२।

श्री वरकाणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

राग—सारंग

जागतउ तीरथ तू वरकाणा । जा० ।
जात्रा करण को जग सब आवत,
सेव करइ सुर नर राय राणा ।जा० ।१।
सकल सुन्दर मूरति प्रभु तेरी,
परखत चित्त सुभाणा ।
मन वंछित कमना सुख पूरति,
कलियुग तीरथ निकट कहाणा । जा० ।२।

तू गति तू मति तू त्रिभुवन पति,
तू शरणागत आधा ।
समयसुन्दर कहइ इह भव पर भव,
पारसनाथ तू देव प्रमाणा । भा० ।३।

श्री नागोर मण्डन पार्श्वनाथ स्तवनम्

पुरिसादानी पास, एक करूं अरदास ।
मुझ सेवक सखी ए, तू त्रिभुवन धणी ए ॥१॥
दीठां अमरख दुख, मेटी भूख सब ।
काज न को सरयउ ए, भवसागर फिरयउ ए ॥२॥
हिव मुझ फलियउ भाग, मिलीयो तू वीतराग ।
अशुभ करम गयउ ए, जन्म सफल थयउ ए ॥३॥
माता भगवती सार, धरीग्राम अभिकार ।
जिन प्रतिमा सही ए, जिन सारखी कही ए ॥४॥
अश्वसेन कुल चन्द, वामा राणी नन्द ।
तू त्रिभुवन तिलउ ए, मांझ मन मिलउ ए ॥५॥
अजरामर अरिहंत, भजउ तू भगवंत ।
दुख दोहग टल्या ए, मन वंछित फल्या ए ॥६॥
पास जिणेसर देव, मन भव तुम पय सेव ।
पास जिणेसरू ए, वंछित सुरतरू ए ॥७॥

॥ कलश ॥

इम नगर श्री नागौर मण्डण, पास जिणवर शुभ मनइ।
मंइ थुणयउ संवत सोल इकसठ, चैत्र वदि पंचमि दिनइ॥
जिन चन्द्र रवि नक्षत्र तारा, सकल चन्द्र सुरी सुरा।
कर जोडि प्रभु नी करइ सेवा, समयसुन्दर सादरा॥८॥

—०—

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम

दव सुहारण देहरइ चाली,
सखिय सहली[1] साथि री माई।
कम्मर चन्दन भरिय कचोलडी,
कुसुम की माला हाथि री माई॥१॥
पासनाथ मेरउ मन लीयउ[2],
वामा कउ नन्दन लाल री माई॥आंकणी॥
पग पूजी चढ़ पावड़ सालइ,
भगवत भरम दुवार री माई।
निस्सही तीन करू तिहु ठउड़े,
पंचाभिगमण सार री माई॥२॥ पा०॥
तीन प्रदिक्षणा ममती दयु,
तीन करू परणाम री माई॥
चैत्यवंदण करू दव सुहारू,

१—सहिय समाणी। २—मान्यउ

गुण गाऊ अभिराम री माई ॥३॥ पा० ॥
ममती मांहि ममइ स भवियण,
स न ममस्यै संसार री माइ ।
समय सुन्दर कहइ मनवंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई ॥४॥ पा० ॥

संस्कृतप्राकृतभाषामय पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

ससंस्थान–विभाषा–सभाषा–भेद,
कस्तामि कस्तामियु तात्मीय देहम् ।
महुरुत्तो कला–कलि–स्थाणुगार,
स्तुवे पार्श्वनाथं गुण–भ शि–सारं ॥ १ ॥
सुघा सम तुम्हाण वाणी सदेवं,
गत तस्य मिथ्यात्व–मात्मीय–मंगम् ।
कइ पद मन्मिहन–पीऊस–पाणा,
विपासेद–कृत्यं भवम प्रमाणम् ॥ २ ॥
तुहप्पाय–पंके–रुहे जस्स भत्ता,
लभे से सुत्त निरुप–भेषाद्य–चित्ता ।
कइ निष्फला कप्परुक्खस्स सेवा,
मनोज्ञायिनां भक्तिभाजां सदेवा ॥ ३ ॥
तुहर सर्ण जस्स सिवगति लोगा,
ससंतोष–पोष लभत समोगा ।

जहा मेह–रेह पवट्ठ स मोरा,
यथा वा विधो दर्शनं सचकोरा ॥ ४ ॥
इवे अत्य दिट्ठा जिणायां पसन्ना,
गता तेम्य आपमितान्त निखिला ।
पगासो सिया जत्थ सरस्स सारं
कथं तत्र तिष्ठेत्कदाप्यन्धकारम् ॥ ५ ॥
तुमं नाम चिंतामणि जस्स चित्ते,
विभो कामितिस्तस्य संपत्ति वित्ते ।
जओ पुप्फमालमि पत्ते गाणोया,
यशस्सेषि पुष्पाग्र–माला–प्रमेया ॥ ६ ॥
मए वंदिया जत तुम्हाण पाया,
नितान्त गता मेऽद्य सर्वेप्यपाया ।
जदा सुट्ठु दट्ठूण तुट्ठ च मोरा,
भुजङ्गा प्रजेपुर्भियात्यन्त–घोरा ॥ ७ ॥
अहो अज्ज मे वद्धिमत्यस्समाला,
फलस्पार्श्व नाथ–प्रसादा–द्विशाला ।
अहा मेह–धारामि–सित्तास्स वीणा,
समृद्धा भवन्ति न वल्ली न रीणा ॥ ८ ॥
इय पागय–भासाए सक्कत–वाएया च सत्युत पाश्व ।
भवस्स समयसु दर–गसमनो–र्जाक्षितं दयात् ॥ ९ ॥

॥ इति अर्धमागध–भद्र संस्कृतमयं श्रीपार्श्व नाथलघुस्तवनम् ॥

अथ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर-गुरु नाम गर्भित

श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्

वृषभ धुरन्धर उद्योतन वर, अजित विमो सुवि सुवन दिनेश्वर,
वर्द्धमान गुणसार ।
नामा सम्भव पार्श्व जिनेश्वर, सुमन दशा-मभिनन्दन शशिकर,
चन्द्र कमल पद धार ॥१॥

जय सुमति लता धन अभयदेव सूरीन्द्र ।
पद्म प्रभु कर नत वल्लभ भक्ति मुनीन्द्र ॥
वसु पार्श्व विगत मद दुच भविक मन मन्द्र ।
चन्द्र प्रभु यशसा सुन्दर तर जिन चन्द्र ॥२॥

सुविधिनाथ जिनपति सुदार मति शीतल वचन ।
नौमि जिनेश्वर सूरि साधु कृत संस्तव रचनम् ॥
श्रेयास भविक प्रतिबोध निपुणं निस्तन्द्र ।
श्री पार्श्व दे वासुपूज्य मानं जिनचन्द्रम् ॥३॥

विमलमं कुशलाम्बुज-भास्कर
प्रशमन सम्पद ध्यानरम् ॥
नमत धर्म-सुखम्पि-विराजितं
जिनमशान्ति मुखंद्रवियोग्मिसतम् ॥४॥

कु थु रत्नाकरं विहितवृजिनोदय, अरविचिताहारं राजमानासयम् ।
मल्लिम्भ सहितमद्यशासनस्थापिनं, स्मरत मुनिसुव्रतं चन्द्रादयं
जिनम् ॥५॥

जय नमित सुरासुर गुण समुद्र ।
जय नेमि भवापह हस मुद्र ॥
जय पार्श्व कला माणिक्य गेह ।
जय वीर मनोहर चन्द्र देह ॥६॥

इत्थं नीरधिनेत्रतीर्थपगुरुस्पष्टाभिधागर्भितो ।
सर्वाधाररसेन्दुसवति नुतिं श्रीस्तम्भनस्य प्रभो ! ।
चक्रे श्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुश्रीसिंहसूरिप्रभो !,
शिष्योऽस्य समयादिसुन्दर गणि· सम्पूर्णचन्द्रद्युते ॥७॥

इति श्री चतुर्विंशति तार्थङ्कर चतुर्विंशति गुरु नाम गर्भितं
श्री पार्श्व नाथ स्तवनं समाप्तम् ।

इरियापथिकी मिथ्यादु कृतविचारगर्भित
श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

मणुयातिसय तिडुत्तर (३०३), नारय चउदसय (१४) तिरिय
अडयाला (४८) ।
देव अडनवइसयं (१९८), पणसयतेसट्ठि (५६३) जियं भेया ।१।
अभिहय-पमुह-पएहिं, दस गुणिया (५६३०) रागदोस-कय
दुगुणा (११२६०) ।
जोगे (३३७८०) त्रिगुणा करणे (१०१३४०), कालेत्रिगुणा
(३०४०२०) छः गुणायसक्खिसंगे (१८२४१२०) ।२।

त सभ्वे संशया, लक्खा अठार सहस चौबीसं ।
इग सय वीसा मिच्छा, दुक्कडया इरियपडिक्कमणे ।।३।

इय परमत्थो धम्मो, परूविर्य अत्थ मविय बोहत्थ ।
पणमामि समयसुदर, पणयंत पास जिणचद ।४।

इति इरियापथिकीमिथ्यादुष्कृतविचारगर्भितश्रीपार्श्वनामस्तवनम्
श्री जेसलमेरु सपार्श्वर्भमयाल्व सम्पूर्णम् ॥

××××

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

प्रकृत्यापि मिना नाथ, विग्रह दूरतस्त्यजन् ।
कमल प्रत्यय नैव, सिद्धिं साधितवान् भवान् ।।१।।
निर्जितो वारिवाहोऽर्हन्, गम्भीरध्वनिना त्वया ।
वहत्यद्यापि पानीय, प्रतिसद्या सितानन ।।२।।
तव मित्र भद्रादेश, तथा शत्रु–रिवागमः ।
समीहित–कृते रीति, संहते शब्द–वारिध ।।३।।
नित्यं मकृति–मत्तेऽपि, नाना–विग्रह–र्वचिनि ।
भ्रमम्ये ध्यमिवारिस्वासर्व–सिद्धि–कर कथम् ।।४।।
निर्दर्प दरूपमास, शक्त्या सत्वर–मङ्गल ।
तदूर्व त कर्म नाथ, कृपाद्य कथयाम्यहम् ।।५।।

एवं श्रीजिनचन्द्रस्य, पारवनाथस्य सत्स्तवम् ।
चक्रे हर्ष-प्रकर्षेण, समयादिम सुन्दरः ॥६॥

इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवन श्लेष।दिमायमयं सम्पूर्णम् ॥
सं० १६६० वर्षे चैत्र सुदि १ दिने श्री अहमदावाद नगरे लिखितम् ।

[जेसलमेर-खरतराचार्यगच्छोपाश्रये यति धुलीलाल ममहे स्वय लिखित पत्रात्]

—φ—

श्री पार्श्वनाथ यमक बद्ध लघु स्तवनम्

पार्श्वप्रभु केवलमासमान, भव्याम्बुजे हसविभासमानम् ।
कैवल्यचन्द्रेरविलासनाथ, भक्त्या भजेहं कमला सनाथम् ।१।
विभानलीवाच्छिमसगमीर, विरा प्रमो मेऽभिमतं गमीर ।
भगन्मनः करवराजराज, नताङ्गिना शान्तिकराज राज ।२।
ददान धर्मं अगनाहसार, मर्दोदद दुःखसती हसार ।
भयीश्वच्छ्वर्म सतां जनानां, अहार दीसारशिवां जनानाम् ।३।
यगादृपनीपी दरिद्र ममाद, भिपापि नो यो भविकममादम् ।
जुन प्रभु त च नता रराज, शिवे यशः कैरवतारराज ।४।
यमसम् ॥
उवदयपामिह स्वकानां, त्व मानसे पुष्करसत्कानाम् ।
मयो लमत कमलां जिनेश, त दव कन्ता कमला मिनेश ।५।
यमाम मन्दोपि हदा मुदार, वदन पद पाति निदा मुदारम् ।

पोता पद्मस्तरसेऽवदाता, भियो जगद्देव मवेक्दात ।६।
चिन्तामणि मे घटिता ममाय, जिनेश हस्ते फलिता ममाय ।
गुहांगणे कल्पलता सदैव, दृष्टे तवास्ये ललिता सदैव ।७
एवं स्तुतो यमकबद्धनवीन काव्यै', पार्श्व प्रभुर्ललित 'वितानमयीः
कार्यः । करोतु कुशलैरवपूर्णचन्द्रः, सिद्धांतसुंदरराति विनमत्सुरेंद्र ॥८॥

इति श्री यमकबद्ध श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्लेषमय लघु स्तवनम्

उपोषद वपो सपस्या, उद्भुज्वल यशोभर ।
प्रकृष्ट-गुण भे थि, सं सभित जय प्रभो ॥१॥
दूरस्थमपि पार्श्व त्वां, यन्मे हृदभिधावति ।
यस्य येनाभिसम्बोधो, दूरस्थस्यापि तेन सः ॥२॥
एकवायोरनेकानि, रूपाणि किन्नु तत्क्षणम् ।
एकमेवाऽभवद्रूप—मपिते सत्पत्तुमि' ॥३॥
केवलागममाश्रित्य, युष्मद्रूपाकरणे स्थिताः ।
सिद्धिं प्रकृतयः प्रापुः, पार्श्व चित्रमिदं महत् ॥४॥
एवं देव दयापर, चिन्तामणिनामधेय पार्श्वस्वाम् ।
गणि समयसुन्दरेण, प्रशंस्तुत' इति मुक्तिप्रदम् ॥५॥

इति श्लेषमय चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ।

स० १७०० वर्षे मार्गशीर्षे वदि ५ दिने श्री अहमदावादे हाजा पटेल पोळिमध्ये वृद्धोपाश्रय । उ० श्री समयसुन्दरलिखितं स्वस्य शिष्यार्थं च पठनार्थम् ॥

श्री पार्श्वनाथस्य शृंखलामय लघु स्तवनम्

प्रणमामि जिन कमलासदन, सदनवगुण कुलहारसमम् ।
रस मंदमदंमसुधानयन, नयनविव वैभजनं शमिनम् ॥१॥
भुवनोन्मुखकेशरिशावरव, वरवशपदा न वदा सहितम् ।
सहित समया रमया मदना, मदनामि सिरस्कृतनीरकहम् ॥२॥
कदनरवि बोधितानेकजनपकम, पंकम मालपायोदसमसचरम् ।
सचरत सरोजेषु सुतमोदर, मोहरंभा गजे पार्श्वनाथं मुदा ॥३॥

त्रिभि कुलकम् ॥

विदितमगद्य मगल सद्रवि नुत जिन सदय सदय जना ।
विगत दय न देवनरोचितं, गतकजामरचामरराजितम् ॥४॥
जिन यस्य मनो भ्रमरो रमत, रमते पदपद्मयुग मततम् ।
सततं नववामकरदमिना, दमिनावनिपीयमुद दमिनः ॥५॥
महोदये धाम जिन वसत, जिनं धर्मतं शुभवप्रिकंदे ।
सस्मार पार्श्व सुमनो विमानं, मनो विमान स जगाम यस्य ॥६॥
कल्याणकंदे कमल हरंत, जिन जनानकमलं हरतम् ।
मतां महानन्मद स पथ, पार्श्व ददौ यो दमदंस पथ ॥७॥
कल्पकल्पोपमं पूर्णमोमोऽप, मोदयत जनान् भंगाहसप्रमम् ।
सप्रमं पार्श्वनार्थ वद मानम, मानसगालगातुनमनं जिनम् ॥८॥

एवं स्तुता मम जिनाधिपपार्श्वनाथ ,
कल्याणपद्जिनचद्ररसा सनाथ ।

ज्ञानांबुधो सकलचंद्रसम प्रसद्य
सिद्धान्तसुन्दररतिं जिनातु सद्य ॥ ६ ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

श्रीसंखेश्वरमण्डनहीर, नीलकमलकमनीयशरीर,
गौरगुणगंभीरम् ।
शिवसुखकरमनोहरकीर, दूरीकृतदुःखकृतपीरं,
इन्द्रियदमनकुलीरम् ॥१॥
मदनमहीपतिमर्दनवीर, मोक्षिसमीरणमघवाहीर,
मरणभयाननजीरम् ।
संस्तुतिसिगुबाभितवीर, वचननिरस्तसिता गोक्षीर,
गुणमणिराशिकुन्नीरम् ॥२॥
समतारमवनसिंचननीर, विशदयशोनिर्जित डिंडीर,
त्रिभुवनतारकधीरम् ।
धीरिमगुणपरवीवरवीरं, सेवकजनसरसीरुहसीर,
गगरसारुलसीरम् ॥३॥
दुरितरजोभरहरणसमीर, गजमिव ममकषायकरीर,
कल्याणीरसकरीरम् ।
सुरपतिमिंसनिषशिवधारं नरसमयपूर्णसुरितरमरे,
प्रशमनोदधिसीरम् ॥४॥

अश्वसेननृपकुलकोटीर, निर्मलकवलकमलाधीर,
श्रीजिनचन्द्रस्तोरम् ।
सकलचन्द्रमुखमनुपमहीर, प्रणमत समयसुन्दर गणि धीर,
वन्देपार्श्व ममीरम् ॥४॥

इति श्री संखेश्वर पार्श्व नाथ लघु स्तवनम् ॥ २२ ॥

श्री अमीझरा पार्श्वनाथस्य पूर्वकविप्रणीतकाव्य द्व्यर्थ करणमय लघुस्तवनम्

अस्त्युत्तरास्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोय निधीवगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।१।
[कुमारसम्भवे]

कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः ।
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः ॥
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु ।
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।२।
[मेघदूत काव्ये]

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि ।
वसन् ददर्शावतरन्तमम्बराद्, हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः ।३।
[माघ काव्ये]

बालोपि यो न्यायनये प्रवेश-मल्पेन वाञ्छत्यलसः श्रुतेन ।
संक्षिप्तयुक्तान्वितर्कभाषा, प्रकाश्यते तस्य कृते मयैषा ।४।

[तर्क भाषा]

—मित भाषित्वम्

हेतवे जगतामेव, संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्वविद्यानां, शंभवे गुरवे नमः ।५।

[सप्त पदार्थी]

सुखसन्तानसिद्ध्यर्थं, नत्वा ब्रह्माच्युतार्चितम् ।
गौरीविनायकोपेतं, शंकरं लोकशंकरम् ।६।

[वृत्तरत्नाकरे]

एवं पूर्वकविप्रणीतविविधसद्ग्रन्थैर्नवीनार्थत ।
आनंदेन समीक्ष्याभिधविधिं श्रीपार्श्वनाथस्तुतिम् ॥
श्रीमच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरोः शिष्याणुशिष्यो व्यधात् ।
मोदात्सं समयादिसुन्दरगणिस्त्वेतत्समत्कारिणीम् ।७।

—x—

श्री पार्श्वनाथ यमकबन्ध स्तोत्रम्

प्रणत मानव मानव-मानवं, गतपरामव-रामव-रामवम् ।
दुरितवारण वारण-वारणं, भुवन-तारण तारण-तारणम् ।१।
भ्रमर-सत्कल-सत्कल-सत्कलं, सुपदया मलया मलयामलम् ।
प्रणत-मादर मादर-मादरं, शम-दमाकर-माकर-माकरम् ।२।

भुवननायक-नायक-नायक, प्रथितु नावज-नावज-नामजम् ।
भिन मर्वत-मर्वत-मर्वतर्म, स शिव-मापरमा-परमा-परम ।३।
[त्रिभि: कुलकम्]
रविसमोदय-मोदय मोदय, क्रमयु-नीरज-नीरज-नीरज ।
लसदु[१] मामय-मामय-मामय, व्यय कृपालय पालय पालयः ।४।
इति मया प्रभुपार्श्वजिनेश्वरः, समयसुन्दरपद्दिनेश्वर: ।
यमकबन्धकविश्वमरै स्तुत , सकलऋद्धिसमृद्धिकरोस्त्वतः ।५।

इति यमकबन्धं श्री पारश्वनाथ स्तोत्रम् ।

श्रीपार्श्वनाथशृंगाटकबन्धस्तवनम्

कमन-कंद-निकदन-कर्म्मदं, कठिन-कष-ममा नमति समम् ।
मदन-मंदर-मर्दन-नंदिर, नयन-नदन-नंदनि निदनम् ॥१॥
निखिल-निवृत्त-निधन-नर्दित, नत खनं सम-नर्म्मद-दंममम् ।
दम-पद विमद घन-नम्पर्म, नम-घन दसल शिवर्समवम् ॥२॥
सकल-सज्जन-नंदित-नम्पर्म, नयघन वरशर्म्भिवरं समम् ।
रदन-नाकमन-भजन-प्रियं, नखिन-नम्पय-नष्ट-वर्न कसम् ॥३॥
सलवर्ल सकर्ल शम-शवित, ससमर्व सवर्व निज जन्मतम् ।
अगदर्व विरर्व दम-मंदिरं, महित-मगप पण्डित-पर्षदम् ॥४॥

---

१ स्फुर दुमामयमा मय मामय ।

पद्मामल परम-भग-कराऽमदाऽक,
कष्टावली-कलितवद्विप-हीन-पापम् ॥१॥

पद्मानन पवन भक्षधर महाऽघ,
वन्दारु-देव-मरुजं जिनराज-मानम् ।
नम्राजमान मधुर घर सार-धीर,
रम्याम्बक रसबध सुमनो-धरोमम् ॥२॥

मन्दार-कुसुम-मरमं समधाम-राम-
मर्हन्तमाऽमयतमस्तवित सोमकान्तिम् ।
हिम्मो महान्ति वरु-पशु-सर्म परामम्,
संतीति हाम-मऽवि-मर्दननाम-मानम् ॥३॥

गर्वाऽऽर-राग हरमङ्गज भीमराज,
जन्त्वाऽऽनतं अयिन-मंग मदाऽऽमदस्तम् ।
नष्टाऽशिवं नत शिवप्रद-मेव सादं,
दमाऽयुत दम-युत सुगताऽन्तरङ्गम् ॥४॥

समार-वामधर-शम्भ-सम शवास,
सद्देव-दाम-शिव-शर्म-कर शमकम् ।
कम्र कलाऽऽकर कुन्त गल-माल-शाल,
सम्भोदय समग्नन्तमगिं नमाम ॥५॥

मञ्जूदयं मल-दय शुभ-गेय शोभ,
मर्घ्यं विदम-कवि-मन्य-मदाऽऽयजापम् ।
पस्तंभ-रूप-निभय वर-काय-मार,

रत्नाकर रतिकर्ता नव सर-आरम् ॥६॥
तुष्टः प्रभो गुण-गणान्तर-गुण वृत—
मुक्तावली-प्रथित-माशु विवेक-दानम् ।
देहीह मे स्वदभिधा स्फुट-नायकम्,
दृष्ट्वा-भवत्स्तवन-हार-मुदार-मेनम् ॥७॥
इति हारबन्ध-कल्पैर्मनोमत मेऽद्य संस्तुतः पार्श्वः ।
विदधातु पूर्णचन्द्रस्सकल-समयसुन्दराम्भोधौ ॥८॥
—(•)—

संस्कृत प्राकृत-भाषामयं श्रीपार्श्वनाथाष्टकम्

मझू भाग मेऽभ्य् प्रभोः पादपद्मम्,
फली आस मोरी नितान्त विपद्मम् ।
गयूं दुःख नासी पुनः सौम्यदृष्ट्या,
थयुं सुख म्हाकु यथा मेघवृष्ट्या ॥१॥
जिके पार्श्व केरी करिष्यन्ति भक्ति,
तिके धन्य वारु मनुष्या प्रशक्तिम् ।
मली भाग केता मया वीतरागाः,
सुखी माँहि मेळा नमद् वेनागाः ॥२॥
तुम्हे विश्व माँहे महा-कल्प-वृक्षा,
तुमे भव्य लोकाः मनोमीष्ट-दक्षा ।
तुमे माय बाप प्रियाः स्वामि-रूपाः,
तुमे देव मोटा स्वयंभू स्वरूपाः ॥३॥

तुमारु सदाई पदाम्भोज—देश,
नमइ राय राणा यथा भानि मेशम् ।
रली रग हूआ सर्वा पूरिवेह,
तुम्हा दव दीठा सुरोमाञ्च—देहम् ॥४॥
इसो चाखि मीठी सवातीव१—मिष्टा,
घणी ठाम जोई मयानैव दृष्टा ।
सही भक्त साथी विना चक्र—बिंब,
फद होइ नांही सुधायाः फदम्बम् ॥५॥
तुम्हारा गुणा री तुला यो दधान,
निको हूँ न दम्यूँ जगत्यां प्रधान ।
करे डूगरे किं गुणैः सुन्दराणां,
घरी ओपमा एकदा मदराणाम् ॥६॥
तुम्हारी वडाई नु को वक्तु—मीश,
कलिकालमाहे कवि—वागरीश ।
फली एतली ए मया भूरि भक्त्या,
सदा पाय सेवु तवातीव—शक्त्या ॥७॥
इति स्तुति सज्जन२—सस्कृताभ्यां,
तव प्रभो पार्श्विक—सस्कृताभ्याम् ।
स्वस्पादपद्मः प्रणमत्पुरन्दरः,
श्री पार्श्व चक्रे समयादि सुन्दर ॥८॥

---

१ तवात्यन्त । २ प्राकृत

अष्ट महाप्रातिहार्य गर्भित पार्श्वनाथ स्तवनम्

कनक सिंहासन सुर रचिय, प्रभु बइसण अतिसार ।
धरम प्रकासइ पास जिण, बइठी परषदा बार ॥१॥
सा.स उपर अति सोहितउए, छत्र त्रय सुविशाल ।
तिण प्रभु त्रिभुवन राजियउए, न्याय धरम प्रतिपाल ॥२॥
बिहुँ पासे उज्जल विमल, गंग प्रवाह समान ।
चामर वींजत' देवता ए, वपु वपु पुण्य प्रमाण ॥३॥
अष्टोत्तर सउ धज रुचिर, रू पउ वृक्ष अशोक ।
नव पल्लव छाया बहुल, टालइ सुरनर शोक ॥४॥
मोह तिमिर भर सहरण, मार्तंड न प्रभु पूठि ।
झल मल तेजइ झलकतउए, जिम रवि जलधर वूठि ॥५॥
जानु प्रमाणइ जिन तणइए, जल थल जासुर जाति ।
कुसुम वृष्टि विरचंति सुर, पंच वरण बहु भांति ॥६॥
वीणा वेणु मृदंग वर, सुर दुदुभि सवाद ।
दिव्यनाद जिनवर तणउए, अमृत सम आस्वाद ॥७॥
गुहिर गभीर मधुर गगने, वाजइ वाजित्र सूर ।
तीर्थंकर पदवी तणउए, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥८॥

॥ कलश ॥

इम पास जिनेसर परमेसर सुखकंद ।
आठ प्रतिहारज शोभित श्री जिनचंद ॥
सवे सुरनर किन्नर सकलचंद मुनि वृंद ।
नित समयसुन्दर सुख पूरउ परमानंद ॥ ९ ॥

1 वाजइ

श्री पार्श्वजिन पचकल्याणक लघु स्तवनम्

श्री पास जिणेसर सुख करणो, प्रणमीजइ सुरपति नत चरणो।
नील कमल सामल वरणो, निज सेवक सवि सकट हरणो।१।
चैत्र मास वदि चउथि दिनइ, प्राणत सुरलोक थकी चवि नइ।
वामादेवी नरपति भवनइ, अवतरियउ जिन चउदस सुपनइ।२।
पोप मास वदि दसमी तणइ, दिन जायउ जिण सुपुण्य दिनइ।
जय जयकार सुराइ भणइ, सेवइ दिशि कुमरी हरखि घणइ।३।
इग्यारस वदि पोष तणइ, निरुपम व्रत नइ उपकार भणइ।
पामी शुभ संयम रमणी, सेवउ भवियण जग जगत धणी।४।
वदि चउथि जिन मधुमासइ, निरमल केवल थानइ भासइ।
पाप पडल टाली पासइ, जिम घर करी सम भर नासइ।५।
सावण सुदि अठमी दिवसइ, निज जन्म थकी सउ मइ वरसइ।
पामी शिव रमणी हरसइ, जसु जस विस्तरियउ दिश विदशइ।६।
मुझ मांगणि सुरतरु वलि फली, चिन्तामणि करियल आवि मिली।
वलि समरणि सुर धनु मिली, सो सेवउ जिनवर रग रली।७।

कलश

इय पञ्च कल्याणक नाम मणि श्री पास।
संथुण्यउ जिनवर निरुपम महिम निवास॥
जिणचंद पसायइ लाभइ लील विलास।
मुनि[१] समयसुन्दर नी पूरउमन नी आस॥८॥

१ गणि

श्री पार्श्वजिन (प्रतिमा स्थापन) स्तवन

श्री जिन प्रतिमा हो जिन सारखी कही, ए दीठां भावइ।
समकित विगड़इ हो सका कीजतां, ग्रिम अमृत विष विंद। श्री.१।
आज नहीं कोई तीर्थंकर इहां, नहीं कोइ अतिशय वंत।
जिन प्रतिमा हो एक आधार छइ, आपैं सुगति एकांत। श्री २।
सूत्र सिद्धान्त हो तर्क व्याकरण भण्या, पण्डित कहइ पण लोक।
जिन प्रतिमा नइ हो जे मानइ नहीं, तइनउ सगलो ही फोक। श्री ३।
जिन प्रतिमा हो आगइ सूर्याभ कहइ, पूजा सतर प्रकार।
फल पिण बोल्या हो हित सुख मोषना, द्रोपदी नइ अधिकार। श्री ४।
रायपसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीवाभिगम नइ मांभि।
ए सूत्र मानइ हो प्रतिमा मानै नहीं, महरी मां नइ वांझ। श्री ५।
साधुनइ बोल्या हो भावस्तव भला, श्रावक नइ द्रव्य भाव।
ए निहुं करणी हो करतां निस्तरइ, जिन प्रतिमा सुप्रभाव। श्री ६।
पार्श्वनाथ हो तुझ प्रसाद थी, सद्दहणा मुझ एह।
भव भव होजो हो समयसुन्दर कहइ, जिन प्रतिमा सु नेह। श्री ७।

श्री पार्श्वजिन दृष्टान्तमय लघु स्तवन

हरख धरि हियडइ मांहि अति घणउ,
तुह पसाय सही तुह गुण भणु।
मलयि पासइ प्रकइण उत्तरइ,
तिहां समीरण सहि सानिध करइ ॥१॥

भाइयवार्ष करण करि हूँ घल्यउ,
कर्मग्रंथि थकी पाछउ वल्यउ ।
मयणा निम्मिय दस करी घरणा,
किम घभायइ छोड़ वरणा चरणा ॥२॥

प्रभु तुम्हारी सब समाचारी,
मयल सजन नइ शिम मुइ करी ।
तिस्यउ स्वाति नखत्रे जलहरू,
बरससउ मवि मुक्ताफल करउ ॥३॥

हरि हरादिक तब तणी घणी,
मगति कीधी मुक्ति गमन भणी ।
नवि फलइ जिम जल सिंचावियउ,
ऊसर मध्यइ श्रोदन वावियउ ॥४॥

सुगुरु मग ममवित पामियउ,
पणि पुठव मणी सिर नामियउ ।
जिम्यो दूध मयाणि एलिपउ,
भइव अमृत सु विष मेलियउ ॥५॥

प्रभु तुम्हारउ धम लहो करी,
बलि गमाइयउ मद मच्छर करी ।
भुवन नायक मुद दायक सही,
रयण गंक मगाइ टाखइ नहीं ॥६॥

प्रभु चतुगति भमि बहु दुख सही,
तुपत निमय तुह सरखउ सही।
ममिय चिहु खूणइ विधि मई गयउ,
त्रिभउ सोगठ प्रभु निर्भय थयउ ॥७॥

हिव अमीमय दृष्टि निहालियइ,
जिम चिरसत पाप पखालियइ।
दुरिय दोहग दुख निवारियइ,
भव पयोनिधि पार उतारियइ ॥८॥

इम थुण्यउ प्रभु पास त्रिभुवनरू,
भविय शोप पयोय जिनेसरू।
मधक्त वीनतड़ी हिव कीजियइ,
समयसुन्दरि शिव सुह दीजियइ ॥९॥

इति श्रीपारवनाथस्य दशमन्तमर्थ प्रभुस्तवनं सम्पूर्णम्।

— —

श्री जेसलमेर मण्डन महावीर जिन विज्ञप्ति स्तवन

वीर सुणउ मोरी वीनती, कर जोड़ी हो कहुं मननी वात।
बालक नी परि वीनवु, मोरा सामी हो तु त्रिभुवन तात। वी १।
तुम दरिसण विन हु भम्यउ, भव मांहि हो सामी समुद्र मझार।
दुख अनंता मइ सह्या, ते कहितां हो किम आवइ पार। वी २।

पर उपगारी तू प्रभु, दुख भंजइ हो जग दीन दयाल।
तिण तोरउ चरणे हुँ आवियउ,सामी मुझ नई हो निज नयण निहाल
अपराधी पिण ऊधरया, तइ कीधी हो करुणा मोरा साम।
हुँ तो परम भक्त ताहरउ,तिण तारउ हो नहि ढील नउ काम। वी ४।
शूलपाणि प्रति बूझव्या, जिण कीधा हो तुझ नई उपसर्ग।
चंड दियउ पड कोसियइ,तइ दीधउ हो वसु आठमउ स्वर्ग। वी ५।
गोसालो गुण हीन थयउ, जिण बोल्या हो तोरा अवरण वाद।
ते बलतउ तइ राखियउ, शीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद। वी ६।
ए कुण छइ इन्द्र जालियउ, इम कहितां हो आयउ तुम तीर।
ते गौतम नइ तइं कियउ, पोतानी हो प्रभुता नउ वजीर। वी ५।
वचन उथाप्या ताहरा, जे झगड्यउ हो तुझ साथि जमाल।
तेहनइ पणि पनरह भवे, शिव गामी हो तइं कीधो कृपाल। वी ७।
अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल मांहे हो बांधी माटी नी पाल।
तिरती मूकी काचली, तइं तारया हो तेहनइ तत्काल। वी ८।
मेघकुमर रिषी दूहव्यउ, चित चूक्यउ हो चारित थी अपार।
एकावतारी तेहनइ, तें कीधउ हो करुणा भंडार। वी १०।
बार बरस वेश्या घरइ, रह्यउ मूकी हो संयम नउ भार।
नंदिषेण पण ऊधर्यउ, सुर पदवी हो दीधी अति सार। वी ११।
पंच महाव्रत परिहरी, गृहवास हो वसिया वरस चौवीस।
ते पिण आर्द्र कुमार नइ,तइं तारयउ हो तोरी एह जगीश। वी १२।

राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप तणि हो जित पूछ्यां छेह।
समवशरण साधु साधवी, सह दीधा हो आराधक तेह। बी १३।
व्रत नहीं नहीं आखड़ी, नहीं पोसो हो नहीं आदरी दीख।
ते पिण श्रेणिक राय नइ, तइ कीधा हो स्वामी आप सरीख। बी १४।
इम अनेक तइ ऊधर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात।
सार करउ हिव माहरी, मन आणउ हो सामी माहरी वात। बी १५।
खपउ सजम नवि पलइ, नहिं तेहवउ हो मुज दरसण नाण।
पण आचार इह एकलउ, एक तोरउ हो परउ निश्चल ध्यान। बी १६।
मेह महीतलि वरसतउ, नवि जोवइ हो सम विसमी ठाम।
गिरुया सहिज गुण करइ, सामी सारउ हो मोरा वंछित काम। बी १७।
तुम नामइ सुख संपदा, तुम नामइ हो दुख जावइ दूर।
तुम नामइ वंछित फलइ, तुम नामइ हो मुझ आणंद पूर। बी १८।

॥ कलश ॥

इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थकर चउवीसमउ
शासनाधीश्वर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समउ
जिनचंद्र त्रिशला मात नंदन, सकलचंद कलानिलउ
वाचनाचारज समयसुंदर संथुण्यउ त्रिभुवन तिलउ ॥१६॥

श्री साचोर तीर्थ महावीर जिन स्तवनम्

धन्य दिवस मइं आज जुहारयउ, साचोरउ महावीर जी।
मूलनायक अति सुंदर मूरति, सोवन वरण सरीर जी ।ध० १।
जूनउ तीरथ सगि जाणीजइ, आगम ग्रंथइ साख जी
जिन प्रतिमा जिन सारखी भाख्यउ, भगवंत इण परि भाखी जी ।ध० २।
सत्रुंजइ जिम श्री आदीसर, गिरनारे नेमिनाथ जी।
मुनिसुव्रत स्वामी जिम भरुअच्छइ, मुक्तिनउ मेलइ साथ जी ।ध० ३।
मूलनायक जिम मथुरा नगरी, पार्श्वनाथ प्रसिद्ध जी।
तिम साचोर नगर मइं सोहइ, श्री महावीर समृद्ध जी ।ध० ४।
तीर्थंकर नउ दर्शन देख्यउ, मइं उमाहते खर जी।
निज समकित निर्मल थायइ, मिथ्यात्व जायइ दूर जी ।ध० ५।
आर्द्रकुमारे समकित पाम्यउ, जिनवर प्रतिमा देख जी।
चउद पूरवधर भद्रबाहु स्वामी, तेहना वचन विशेष जी ।ध० ६।
सय्यंभव गणधर प्रतिबूझ्यउ, प्रतिमा कारण तेह जी।
परमत मुक्ति ना सुख पामीसइ, हिव सुख संपति एह जी ।ध० ७।
चित्र लिखित नारी देखी नइ, उपजइ चित्त विकार जी।
तिम जिन प्रतिमा देखी जागइ, भक्ति राग अति सार जी ।ध० ८।
जिन प्रतिमा नइं जुहारवा जातां, पग थयउ मुझ सुपवित्र जी।
मस्तक पण प्रणमंतां माहरउ, सफल थयउ सुविधित जी ।ध० ९।

नयन कृतारथ म्हारा थया मुझ, मूरति दरसण पाय जी।
सीस पवित्र थइ बसी म्हारगी, सुपरर्या श्री जिनराय जी ॥ भ० १०॥
म्हारा भवस सफल थया म्हारा, सुणता जिन गुण ग्राम जी।
मन निर्मल थयउ ध्यान धरता, अरिहंत नउ अभिराम जी ॥ भ० ११॥
श्री अरिहंत कृपा करउ स्वामी, मांगू बेकर जोड़ि जी।
आवागमन निवार अतुल बल, भव संकट थी छोड़िजी ॥ भ० १२॥
त्रिभुवननाथ ईश्वर तू मुझ साहिब, चउवीसमउ जिणचंद जी।
इकवीस सहस बरस सीम वरतै, तीरथ तुम आणंद जी ॥ भ० १३॥

॥ क ल श ॥

इम नगर श्री मारोट मंडण, सिंह लंछण सुम करउ।
मरुस्थल ग्राम मकसूद मूरति, मात त्रिशला उरधरउ।
नगर मोनह मही मन्थोलग, नाम नाई मनोहरउ।
वीनव्यउ पाठक समय सुन्दर, प्रकट तू परमेसरउ ॥१४॥

श्री मोदुया ग्राम मण्डन श्री रजिन गीतम्

राग—मेघ मल्हार

महावीर मेरउ ठाकुर। म०।
मारवाड़ ग्राम मनो पर पर मंडयउ, तउ प्रताप प्रभाकर ॥१॥ म०।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, निरखित हरखित नागर।
सिद्धारथ राय मात त्रिशला सुत, सिंह लांछन सुख सागर ॥२॥ म०।

तारि तारि तीर्थंकर मोकू, पर उपगारी कृपा कर ।
समयसुंदर कहइ तु मेरउ साहिब, हूँ तेरउ चरण कउ चाकर ।३। म०।

श्री महावीर देव गीतम्

राग—१ भवक रे थयउ महारइ पूज्य जी पधारया
२ मधु रे कीधु सामी नेम कुमार।

सामी मुं नइ तारउ भव पार उतारउ ।
साहिब आवागमण निवारउ, महावीर जी सा० ॥१॥ आंकणी ॥
सामी तुम्हे त्रिभुवन जनना आधार ।
सेवक नी करउ हिव सार ॥ महा०॥२॥
सामी मोरइ एक तुम्ह अरिहंत देवा ।
भवि भवि करज्यो पाय सेवा ॥ महा०॥३॥
श्री वर्धमान नमुं सिर नामी ।
समयसुन्दर धा स्वामी ॥ महा०॥४॥

इति श्रीमहावीर देव गीतं सम्पूर्णम् ॥ १७ ॥

—×—

श्री महावीर गीतम्

राग—श्रीराग

नाचति सुरिभाम सुर वीर कइ आगइ
ठुमरिय ठुमर अट्ठोत्तर सउ रचि,
भगति जगति प्रभु चरण लागइ ॥१ ना०॥

ताल रबाप मृदंग सब वाजित,
घुघरया घुघरा पाय घूघरी वागइ ॥
तत तत थेई थेईथेई पद ठावत,
ममरी ममत निज मन के रागइ ॥२ ना०॥
जिन के गुण गावत सुख पावत,
भविक लोक समकित जागइ ॥
समयसुन्दर कहइ धन सुरियाभ सुर,
नाटक करि फल सुगति मागइ ॥३ ना०॥

—x—x—

श्री महावीर गीतम्

हां हमारे वीर की कृपा रसधि पहू ।
पूछति गौतम सामि की, हमकु एह सन्देह ।१। हां०।
पुलकित तनु मोती रही, आणंद अगि न माय ।
दूध पाइउ झरि रही, सम्मुख ऊभी आय ।२। हां०।
चित्र लिखित पूतली, न करइ मेष निमेष ।
सखित कमल लोयणी, देखि रही तुम एप ।३। हां०।
कहति वीर गोयमा, ए हमारी अम्म ।
ब्यासी दिवस उरि धरे, त्रिशला के घरि जम्म ।४। हां०।
देवानंदा माहणी, माहण ऋषभदत्त ।
मात पिता सुगति गए, वीर के वचन रत ।५। हां०।

वीर के वचन सुणत ही, हरखे गौतम सामि ।
समयसुन्दर गुण भणइ, वीर तणो अभिराम ।६। हां० ।

इति श्री ऋषभदत्त देवानंदा गीतम् ॥ ४२ ॥
[लींबड़ी प्रति]

श्री महावीरजिन सुरियाभ नाटक गीतम्

नाटक सुर विरचति सुरियाभ ।
भमर भमरी भमरी देयत, वीर कइ आगइ ॥
तथेंग थेई थेई थेई तत थेई त थेइ थेई, शब्द मत्त भेद उचरति ।
धमिक धमिक धींधी कटता दों मृदंग वागइ ।१। ना० ।
अद्भुत रचि सोल शृङ्गार ठरि, मनोहर मोतिनहार ।
गीत गान करि मधुर आलापति चरखि लागइ ॥
इया इया इया सुर की शक्ति, समयसुन्दर प्रभु की भक्ति ।
स्वर ग्रामे तान मूर्च्छना, स्वर मंडल मान नट गुंड रागइ ।२। ना० ।

श्री श्रेणिक विज्ञप्ति गर्भित श्री महावीर गीतम्

राग—कल्याण

कृपानाथ सई कृपाइ नृपपैठ री । कृ० ।
श्रेणिक राय वदति महावीर कु,
हमारी बेर प्रभु अरज करपेठ री ॥१॥ कृ० ॥
चण्ड कोसियउ अहि प्रतिबोध्यउ,
वो तुम्ह कु उरि आय लग्यों री ।

मेघकुमार नन्दिषेण मुनीसर,
अइमुत्तकुमार संजम आदरयउ री ॥२॥ कु० ॥
खंधक संधक परिव्राजक,
अइमुत्तउ ऋषि मुगतिवरयउ री।
श्री शिवराज महाजस प्रभउ,
राय उदायन दुक्ख हरयउ री ॥३॥ कु० ॥
पद्मनाभ तीर्थंकर हउगे,
वीर कहइ तुम्ह काज सरयउ री।
समयसुन्दर प्रभु तुम्हारी भगति तइ,
इहु संसार समुद्र तरयउ री ॥४॥ कु ॥

श्री सुरियाभसुर नाटक दर्शन महावीर गीतम्

राग—सारंग

रचति वेष करि विशेष, नयण अंजण नीकि रेख,
नाचति तत तत थेइ थेइ, थोंगिगिंगि थोंगिगिंगि सुन्दरी। र० ।
कुमर कुमरी अति अनूप, इक शत अठ रचत रूप।
बाजति बाजित्र सरूप, घूघरा घूघरा घूघरी। र० ।१।
थइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि बजाय।
मैं मैं मधुकरिय साय, रणझण रणझण नेउरी।
सुरियाम सुर करि प्रणाम, मांगति भव मुक्तिधाम।
समयसुन्दर सुजस नाम, जय जय जय सोमरी। र० ।२।

॥ ढाल ॥

अवधि नाणि जाण्यो जिण जम्म,
तत्खिण करिवा निय निय कम्म ।
आवइ सुरपति मनि गह गही,
सुर नर लोकई अंतर नहीं ॥ ६ ॥
यइ ओसोवणि तिसला पासि,
जिण पडिबिंब ठवी उल्लासि ।
लेई आव्यइ सुर गिर नइ शृंगि,
पांडु कंबला नइ उच्छंगि ॥ ७ ॥
आणी नव नव तीरथ तोय,
कनक कुंभ भरइ सवि कोय ।
तिम वलि धूप तणा शृंगार,
स्नान भणी सुर मेलइ सार ॥ ८ ॥
कनक कुंभ सुर हाथइ जस्यइ,
हरि संसय ऊपजउ तस्यइ ।
अति लहुडउ ए जिणवर वीर,
किम सहस्यइ कलसा ना नीर ॥ ९ ॥
प्रभु हरि संसय भंजन भणी,
पग अंगुली चांपइ निज तणी ।
थरहर कंपइ भूधर राय,
महावीर तिहां नाम कहाय ॥ १० ॥

बांधव नी प्रभु अनुमति लेई, दान दयाल संवच्छर देई;
देई सयल सनेह ।
मगसिर वदि दसमी दिन सामि, चरण रमणि मन रगह पामि;
चामीकर सम देह ॥१६॥

॥ ढाल ॥

तिहां थी करिय विहार, पडिबोही भविः
चाह कोसिय जिणवरू ए ।
सामि सहइ उपसग्ग, निय सगति थकीः
धरणीधर धीरिम धरू ए ॥१७॥
शुभ जोगइ वयसाख, सुदि दशमी दिनइ;
मोह तिमिर म नासवउ ए ।
पाम्यउ केवल नाण, भाग समोपम;
लोयालोय प्रकाशवउ ए ॥१८॥
समवसरण सुरकोडि, रचइ अनोपमा;
सामी वइसइ तसु धरी ए ।
सुर नर तिरिय समक्खि, धइ जिण देसणा;
सयल लोय संसय हरी ए ॥१६॥
सधारइ सुरसार, सरसिज सुन्दर;
पाय कमल तलि प्रभु तणइ ए ।
सुरवर नी इग कोडि, जघन्य तणइ लेखइ;
सेव करइ हरखइ घणउ ए ॥२ ॥

जिणवर कत्ती मास, वदिहि अमावसी;
सिव रमणी रगइ वरी ए।
गयणंगण सुरसार, वज्जिय दुन्दुभी;
महियलि महिमा विस्तरी ए ॥२१॥
ते नर नारी धन्य, नाम जपइ नित;
सामि तणा वलि गुण कहइ ए।
पामइ परमाणंद, नव निधि नइ सिधि;
मन वंछित फल ते लहइ ए ॥२२॥

॥ कलश ॥

इय पट् कल्याणक नाम भाखी, वर्द्धमान जिणसरो।
संथुण्यउ सामी सिद्धि गामी, पवर गुण रयणायरो ॥
जिणचंद पय अरविंद सुन्दर, सार सेवा महुयरो।
गणि सकलचंद सुसीस जपइ, समयसुन्दर सुहकरो ॥२३॥

इति श्री महावीरदेवपट् कल्याणक गर्भित वृहत्स्तवनम्।

—•)०(•—

श्रीवीतरागस्तव–छन्दजातिमयम्

श्रीसर्वज्ञ जिन स्तोष्ये, छंदसां जातिभिः स्फुटम्
यतो जिह्वा पवित्रा स्यात्, सुश्लोकोपि भवेद्भुवि ॥ १ ॥

भीमगवन्त भक्त्या, सुरनिर्मितसमवशरणमध्ययम् ।
देषा दम्यो मनुजा, आर्या मुनयश्च सेवन्ते ॥ २ ॥

कर्थं नौम्यऽहं त जिनस्तोतुमीशा ।
सुमामा सोमराजीव युक्तानेसेन्द्रा (?) ॥ ३ ॥

प्रमुदित-हृदई स्तुति-गुण-निकर ।
मधुकर इव त मधुमति कुसुमे ॥ ४ ॥

भ्रमति भ्राजमान सुतरां सम्ब-लोके ।
तव कीर्ति-विशाला भवता हस माला ॥ ५ ॥

दृष्टो मया-ऽर्चितो भाग्यानूर्धं भ्रमता ।
भीवीतराग-जग-प्रभुरामणि समहो ॥ ६ ॥

शुक्लध्यान-श्रेणी वाईत्, शुभ्रा इभ्रा प्रौढस्फुर्ये ।
स्वन्मूर्ते का वा पुण्यात्यां, रजे रम्या विद्युन्माला ॥ ७ ॥
मध्यजीवकृतमाधुर्क, पापदवधनपातकम् ।
सामसिव भनत जिन, मन्निका भवति या सुशाम् ॥ ८ ॥
नाभयिति सा सद्गुणवन्त, बभ्मिव एवासौ गुणवन्दा ।
या मधुकृत प्राणी भगवन्त, चम्पकमालासमसुरत्नम् ॥ ९ ॥
चोमं नो प्रतयति कन्दाषित्सान्ते स्वारतव गिरिधीर (?) ।
स्वगस्य स्त्री मदमदनेनोत्समता क्रीडा करवा विद्ग्धा ॥ १० ॥
लोकप्रदीपो जिन (?) लोक्य, पापान्तीपकमयोदनाथ ।
बीपावगवन्नु दितप्रदस्ता, नमेन्द्रवंशामरवा प्रसौ त्व ॥ ११ ॥

रूप्य-सुवर्ण-सुरत्न मयोच्चैः, वप्र-सुमध्य-चतुर्मुख-मूर्ते ।
त्व जन राजसि मानव-तिर्यग्, दिवस-दोषकर-प्रतिबोधे ॥ १२ ॥

मम चेतसि तीर्थकरोसि तमो, वद-दर्पवि बिम्ब-रुचि-हृदये ।
अघ-पातक दवर दयाया (?) सहितोटकर सुमते सुगते ।१३।

अहिकुल गरुडा-गमने यथा, तव जिनेश्वरसंस्तवने तथा ।
अरिकरिज्वलनानल समव, द्रुत विलसित-मुग्र-भय भवेत् ।१४।

भव-भय-कानन-भेद-कुठारं, रतिपद सुन्दर-रूप-मुदारम् ।
प्रथमत तीर्थकर सुखकारं, चरण नमर (?) संतति-सारं ॥१५॥

दवतवदीय शरणं समुपागतं मां, ससार-सागर-भयाद्वय रक्ष रक्ष ।
स्नात भवेषु बहुशः सुख-शान्त-साध-वल्ली वसंततिलकस्मकृले कृपालो ॥ १६ ॥

त्रिभुवनहितकर्ता दु खदावाग्निहर्ता,
विषम-विषय-गर्ता सपतस्त्राणिधर्ता ।
जिनवर जयतार्त्ता देहि मे मोक्षतत्त्व,
कलि-गाह ? न कश्यानो मालिनीहारमानो ॥ १७ ॥

अशरण-शरण-मरण-भय-हरण ।
सुरपति-नरपति-शिवसुख-करण ॥
जय जिनवर भव-जल-निधि-तरण ।
गुणमणि-निकर-चरण-मय-चरण ॥ १८ ॥

तिमिर-निकर-ध्वंस-सूर्य भवोदधि-तारणम् ।
हित-सुखकर-भव्य-प्राणि-प्रजा-सुख-धारणम् ॥

तव सुवचन पीयूषामं करिष्यति नान्यथा ।
नरकगतितो नरयेत् प्राणी यथा हरिणी हरे ॥ १६ ॥
दु खोत्यादि परिधाति (?) सहने नोत्साहमाज्ञो सूर्य ।
सत्सांसारिक-सौख्य-सव-विषये ब्यासक्तिमच्चवतस' ॥
संसाराम्बुधि-मज्जदगिनिकरोधारे समर्थस्तव (?) ।
साहाय्यं मम दहि सयमविधौ शाश्वतविक्रीडितम् ॥२०॥
ममास्ते कपि दर्प पुनरपि गिरिशं केपि नारायणं च ।
कश्चिच्छक्तिस्वरूपं पुनरपि सुगतं कपि दध्यामिधानम् ॥
मुग्धाध्यायंत्यह सद्गुणमखिजतधि वीतराग स्मरामि ।
को वांछ्न्मुचमार्ता यदि मिलति महत्कर्षिणी स्रग्धरार्मा ।२१।

एवं दृष्टो भातिमिरमिष्टुतो वीतराग-गुणलश ।
इति वदति समयसुन्दर, इह-पर-जन्मसु जिनधर्म्म ।२२।

— (०) —

श्री शाश्वत तीर्थंकर स्तवनम्

शाश्वता तीर्थङ्कर च्यार, समरंतां संपत्ति सुखकार ।१। शा ।
वांदू ऋषभानन वर्द्धमान, चन्द्रानन वारिषेण प्रधान ।२। शा ।
स्वर्ग मर्त्य अनइ पाताल, त्रिभुवन प्रतिमा नमुं त्रिकाल ।३। शा०।
पांचसउ धनुष छइ वड प्रमाण, कंचन वरणी रूपाप्रमाण ।४। शा०।
अनादि अनंत महिज नाम ठाम, समयसुन्दर करइ नित परणाम ।५।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

प्रभु तेरो रूप बण्यो अति नीको । प्र० ।
पक्ष परण्या के पाट परम्पर, पेख बण्यो कसवी को । प्र०।१।
मस्तक मुकुट काने दोय कुंडल, हार हियड़ सिर टीको ।
समकित निर्मल होत सकल जन, देखत दरस जिनजीको । प्र०।२।
समवशरण बिच स्वामी विराजित, साहिब तीन दुनी को ।
समयसुन्दर कहइ ये प्रभु भेटे, जन्म सफल ताही को । प्र०।३।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

राग—पूरबी

सरण ग्रही प्रभु तारी, अब मैं सरण० ।
मोह मिथ्यामत दूर करण कुं, प्रभु दरस्या उपगारी । अ स ।१।
मोह सङ्कट स बौस उबारथा, अब की बेर हमारी । अ स ।२।
समयसुन्दर की यही अरज है, चरण कमल बलिहारी । अ स ।३।

श्री अरिहंत पद स्तवनम्

राग—भूपाल

हो हो एक तिल तिल में आति तु, करइ कर्म नउ नाश ।
अनन्त शक्ति छइ ताहरी जिम वर्नाई दहइ धाम ॥ ए० ॥१॥
हो हो नाम जपइ हियइ तु, नहीं तउ सिद्धि न होय ।
माद कीमइ ऊँमइ म्वार, पत्त धरइ नहीं कोय ॥ ए० ॥२॥

मिरिंद गुण गनि मन मोह्यु, जि०
समयसुन्दर प्रभु ध्याने मन मोह्यु ।२। म० ।

सामान्य जिन विज्ञप्ति गीतम्

राग—केदारउ

जगगुरु तारि परम दयाल ।
जन्म मरण जरादि दुख जल, भव समुद्र मयाल ।१। ज० ।
हौं हुँ दीन अत्राण अशरण, तू दि त्रिभुवन सुबाल ।
स्वामि तरइ शरणि आयउ, कृपा नयण निहालि ।२। ज० ।
कृपानाथ अनाथ पीहर, भव भ्रमण भय टालि ।
समयसुन्दर कहति सेवक, सरणागत प्रतिपालि ।३। ज० ।

श्री सामान्य जिन आंगी गीतम्

राग—मारुणी

नीकी प्रभु आंगी बनी सो, ताँता हो हीयइ हरख न माय ।
मणि मोतिय हीरे जड़ी, तजइ हो आंगी झगमगि थाय ।१। नी ।
बांहि अमूलिक बहिरखा, काने काने होय कुण्डल सार ।
मस्तकि मुगट रयण जड़यउ, हीयड़इ हो मोतिन को हार ।२। नी ।
सुमि दस भाल तिलक मसउ, नयणे हो नीक कनक कपोल ।
प्रभु मुख पुनिम चंद्रमा टीपइ, टीपइ हो दरपण कपोल ।३। नी ।
मोहन मूरति निरखतां, मागे माग हो दुख दोहग दूर ।
समयसुन्दर मगति मणइ, प्रगटे हो मेरे पुण्य पडूर ।४। नी ।

श्री तीर्थंकर समवशरण गीतम्

विहरता जिनराय, भाव्या त्रिभुवन ताय ।
मिलिया चतुर्विध दवा, प्रभु नी भगति करेवा ॥ १ ॥
विरचइ समवसरणा, भव भय दुख हरणा ।
त्रिगडउ त्रिविध प्रकार, रूप सोवन चमुसार ॥ २ ॥
च्यार चरम चक्र दीपइ, गगन मडलि रवि जीपइ
अभूत वृक्ष अशोक, निरखइ भविपण लोक ॥ ३ ॥
छत्र त्रय सिरि छाजइ, निहुं दिसि चामर राजइ ।
दव दु दुमी प्रभु वाजइ, नादइ अम्बर गाजइ ॥ ४ ॥
जानु प्रमाण्या पुष्प वृष्टि, विरचइ समकित दृष्टि ।
उ ची इन्द्रधज लहकइ, प्रभु जस परिमल महकइ ॥ ५ ॥
सिंहासनि प्रभु सोहइ, त्रिभुवन ना मन मोहइ ।
भामडल प्रभु भासइ, चिहुँ मुखि धर्म प्रकासइ ॥ ६ ॥
बइठी परषद बार, सांभलइ धरम विचार ।
निज भव सफल करति, हियइ हरख धरति ॥ ७ ॥
धन ते श्रावक साख, सहनु जीव्यु प्रमाण ।
समवसरण जे महावइ, पुण्य भडार भरावइ ॥ ८ ॥
पइसु जिनवर रूप, सुदर अतिहि अरूप ।
जोवंतां दुख जायइ, आणंद अगि न माय ॥ ६ ॥
चिंता भारति चूरा, श्री सघ वांछित पूरइ ।
जिनवर जगत्र आधार, समयसुन्दर सुखकार ॥१०॥

हां हो एक तू एक तू दिल धरूँ, नाम परा अपू तू हि।
समयसुन्दर कहइ भाहरइ, एक अरिहंत तू हि ॥ ए० ॥३॥

श्री जिन प्रतिमा पूजा गीतम्

राग—केदारा

प्रतिमा पूजा भगवंति भाखी रे,
मकरंड सख्र गणधर साखी रे ॥ प्र० १ ॥
द्रूपदि न ठवि नारद देखी रे,
जिन प्रतिमा पूज्यां हरखीरे ॥ प्र० २ ॥
प्रतिमा पूजी सुर सुरियाभइरे,
रायपसेणीइ अधर लाभइरे ॥ प्र० ३ ॥
भावक श्रावक पूजा कीधी रे,
गणधर देवे साख ते दीधी रे ॥ प्र० ४ ॥
सोहम सामी भगवती अंगइरे,
अधर लिखि नइ प्रथमइ रंगइरे ॥ प्र० ५ ॥
भद्रबाहु स्वामी कल्प सिद्धान्तइरे,
द्रव्य थिवर वंदइ खंतइ रे ॥ प्र० ६ ॥
चमरेन्द्र चिप मई उपयोग भाख्यउरे,
अरिहंत चेइ शरणउ राख्यउ रे ॥ प्र० ७ ॥
प्रतिमा पूजा श्रावक करवी रे,
भवदुख हरवी पार उतरवी रे ॥ प्र० ८ ॥

समयसुंदर कहइ जोज्यो विचारी रे,
प्रतिमा पूजा छइ सुखकारी रे ॥ प्र० ६ ॥

श्री पञ्च परमेष्ठि गीतम्

राग—परभाती

अपठ पंच परमेष्ठि परभाति आपे,
हरइ दूरि शोक संताप पापं ॥ १ अ० ॥
अठसट्ठि अक्षर गुरु सप्तमान,
सुख संपदा अष्ट नव पद निधान ॥ २ अ० ॥
महामंत्र ए चउद पूरब निचार,
मप्यउ भगवती सूत्र धुरि तत्त्व सार ॥ ३ अ० ॥
अपइ सास नवकार नो एक चित्तं,
लहइ ते तीर्थंकर पद पवित्तं ॥ ४ अ० ॥
कहुँ ए नवकार केतु वखाण्या,
गमइ पाप संताप पांच सार प्रमाण्यां (?) ॥ ५ अ० ॥
सदा समरतां सपजइ सर्व काम,
भणइ समयसुंदर भगवंत नाम ॥ ६ अ० ॥

श्री सामान्य जिन गीतम्

राग—शुद्ध मल्हार

हरखित सुरनर किन्नर सुन्दर,
मार रूप पेखि जिनजी कउ ।१। चालि० ।

जिणिंद गुण गनि मन मोह्यु, जि०
समयसुन्दर प्रभु ध्यान मन मोह्यु ।२।म ।

सामान्य जिन विज्ञप्ति गीतम्

राग—केदारउ

जगगुरु थारि परम दयाल ।
जन्म मरण जरादि दुख जल, भव समुद्र भयाल ।१। ज० ।
हाँ हुँ दीन अनाथ अशरण, तु हि त्रिभुवन सुपाल ।
स्वामि सरणि शरणि आयउ, कृपा नयण निहालि ।२। ज० ।
कृपानाथ अनाथ पीहर, मत्र भ्रमण भय टालि ।
समयसुन्दर कहति सेवक, सरणागत प्रतिपालि ।३। ज० ।

श्री सामान्य जिन आंगी गीतम्

राग—मारूणी

नीकी प्रभु आंगी बणी वो, शोभा हो हीयड़ इगरा न माय ।
मणि माणिक हीरे जड़ी, तजा हो आंगी झगमगि थाय ।१। नी ।
बांहि अमूलिक बहिरखा, कान कुन्डल दोय कुण्डल सार ।
स्फटिक मुगट स्यम अड़यउ, हीयड़ा हो मोतिम की हार ।२। नी ।
माथि रूप मान तिलक मलउ, नयण हो नीका कनक कपोल ।
प्रभु मुख पूनिम चन्द्रमा सोभा, दीपइ हो दरपण कपाल ।३। नी ।
मोहन मूरति निरखतां, भाग भाग हो दुख दोहग दूर ।
समयसुन्दर भगति भगइ प्रगट हो मई पुण्य पडूर ।४। नी ।

—श्री तीर्थंकर समवशरण गीतम्

विहरता जिनराय, आव्या त्रिभुवन राय ।
मिलिया चतुर्विध देवा, प्रभु नी भगति करेवा ॥ १ ॥
निरखइ समवसरणा, भव भय दुख हरणा ।
त्रिगढउ विविध प्रकार, रूप सोवन बहुसार ॥ २ ॥
च्यार धरम चक्र दीपइ, गगन मंडलि रवि जीपइ
अद्भुत वृष अशोक, निरखइ भवियण लोक ॥ ३ ॥
छत्र त्रय सिरि छाजइ, विहुँ दिसि चामर राजइ ।
दव दुंदुभी प्रभु वाजइ, नाचइ अमर गाजइ ॥ ४ ॥
जानु प्रमाण पुप्फ वृष्टि, निरखइ समकित दृष्टि ।
ऊंची इन्द्रधज लहकइ प्रभु तस परिमल महकइ ॥ ५ ॥
सिंहासनि प्रभु सोहइ, त्रिभुवन ना मन मोहइ ।
भामंडल प्रभु भासइ, चिहुँ मुखि धर्म प्रकासइ ॥ ६ ॥
बइठी परपद बार, सांभलइ धरम विचार ।
निज भव सफल करति, हियइ हरख धरति ॥ ७ ॥
धन ते भावक आया, तेहनु जीव्यु प्रमाण ।
समवसरण ने मंडाणइ, पुण्य महा भराणइ ॥ ८ ॥
एहवु जिनवर रूप, सुंदर अतिहि सरूप ।
सोवतो दुख जायइ, आणंद अंगि न माय ॥ ९ ॥
चिंता भारति चूरा, श्री सघ वांछित पूरइ ।
जिनवर जगत्र आधार, समयसुन्दर सुखकार ॥१०॥

चत्तारि अट्ठ दस-दोयपदविचारगर्भितस्तवनम्

जिनवर मंचि समुल्लसिय, रोमचिय निय अंग ।
नाना विधि करि वरणवुं, आणी मनि उछरंग ॥ १ ॥
चार आठ दस दोय जिन, वर्तमान चउवीस ।
अष्टापद प्रतिमा नमूं, पूरं मनह जगीस ॥ २ ॥
च्यार कहीजइ आठ गुणा, दस बलि दुगुणा हुंति ।
नंदीसर बलन भुवन, सुरवर खयर नमंति ॥ ३ ॥
चउ-अरि चत्तारि तिक, आठ भनइ दस दोप ।
विहरमान जिन वीस इम, समरतां सुख होय ॥ ४ ॥
अरि गंजण चत्तारि तिम, दस गुण कीजइ आठ ।
ते बलि दुगुणा सहि सम, कन्ह् विजय विशिष्ट ॥ ५ ॥
चार मनइ अठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार ।
जिमय चालीस नमूं सयल, सरहेरवय मझार ॥ ६ ॥
चार अनुत्तर गेविज, कप्पिय जोइस वासि ।
अठ बलि व्यंतर प्रतिमा, दस मुक्खसर ठाणि ॥ ७ ॥
दो सासय पडिमा महियसि जिन चौवीस ।
त्रिभुवन माहि प्रणमिय, नाम जपूं निशदीस ॥ ८ ॥
अठ भनइ दस दोय मिलिय, हुन्ति अठारह ठेह ।
चार गुणा बहुत्तरि सयल, जया चउवीसी एह ॥ ९ ॥

चउ चउगुणिये सोलहुय, अठ अठ गुणि चउसट्ठि।
दस दस गुणिया एकसउ, अट्ठिसय परमट्ठि ॥१०॥
दो उक्किट्ठ सहस पय, सत्तरि सय दस दिट्ठ।
पायकमल सवि प्रणमतां, दुख दोहग सवि नट्ठ ॥११॥
पूर्व विधि सहु एक सय, दुगुणा तिग सयमट्ठि।
पण भरत जिन प्रणमियइ, त्रिण चउवीसि इगट्ठ ॥१२॥
चार गुणा दस अक किय, अठ सय चालीस आणि।
पण विदह रवय दुग, तिण्हु काल जिन जाणि ॥१३॥
चार नाम जिन सासवाण, अठ चउ अरय दु वदि।
दस ठवणारिय नरय सुर, गइ आगय दुग भदि ॥१४॥
चउ अठ दस बावीस इम, वंश इक्खाग जिणंद।
जग गुरु जग उद्योत कर, दो हरि वंश दिणंद ॥१५॥
अष्टापद गिरनार गिरे, पाशा चंप चत्तारि।
अठ दस दोय समेत शिखर सिद्ध नमूं सुखकार ॥१६॥

॥ कलश ॥

इम पुण्य अधिक शास्त्र सम्मत, करिय वरइ प्रकार ए।
चत्तारि अठ दस दोय वन्दिय, पद वणइ विस्तार ए।
जिनपद वंदन सकल पातक, परम आणंद धाम ए।
कर जोडि वाचक समयसुन्दर, करइ नित परणाम ए ॥१७॥

इति श्री चत्वारिंशद्दरसबोधर्वदिया—इति पदविचारगर्भित
सर्वतीर्थंकरबृहत्स्तवनम्
॥ श्रीजमकसमरमंघसमभ्यर्थनया कृत संपूर्णम् ॥

---

१७ प्रकार जीव अल्प बहुत्व गर्भित स्तवनम्

अरिहंत कमल मान भमर, भव दुख भंजण श्री भगवंत ।
प्रणमु बेकर जोड़ी पाय, जनम जनम ना पातक जाय ॥ १ ॥
मेरु मध्य आकाश प्रदेश, गोस्तनाकार रुचक समदेश ।
तिहां थी चारे दिशि नीसरी, शकट ऊधि सरिखी विस्तरी ॥ २ ॥
सुषम आव पांचा ना भद, ते चिहुँ दिशि सरिखा प्र बद ।
अल्प बहुत्व कहुँ बादर तथा, किण दिशि थोड़ा किण दिशा घणा ॥ ३ ॥
जिहां बहु पाणी तिहां जीव बहु, वनस्पति विगलादिक सहु ।
कृष्ण पक्ष बहु दक्षिण दिशा, प्रभु तीर्थंकर उपदिशा ॥ ४ ॥

ढाल दूसरी—आल्यउ तिहां नारद ऋषी।

सामान्य पण पश्चिम दिशि थोड़ा जीव, ।
पूर्व दिशि अधिका तिहां, नहीं गौतम दीव ॥
दक्षिण अधिका नहीं, शशि रवि गौतमकोइ ।
उत्तर दिशि अधिका, मान सरोवर होई ॥ ५ ॥
मान सरोवर तिहां कह मोटउ, तिण तिहां अधिकउ पाणी ।
जिहां पाणी तिहां वनस्पति, बहु विगल मत्स्यादिक जाणी ॥

दक्षिण दिसि अधिका, असंख्यात गुण एह।
तिहां पुष्पावकीर्णक, नारकि ना बहु गेह ॥११॥
नारकी ना बहु गेह तिहां छइ, असंख्यात गुण पहुला।
दक्षिण दिशि भगवन्तइ भाख्या, कृष्ण पखी तिण बहुला ॥
कृष्ण भावे ए जीव घणा तिहां, थोड़ा पखि तिम ठामइ।
वीतराग ना वचन तहत्ति करि, मानीजइ हित कामइ ॥१२॥

ढाल ३ भवन थोड़ी ताम—एहनी

पृथ्वीकाय ना जीव दक्षिण दिसि,
थोड़ा नरकावास भवन घणा ए।
भवन नइ नरकावास त थोड़ा तिहाँ,
अधिका उत्तर दिसि कहाए ॥१३॥
लवण मइ शशि रवि द्वीप तिहां पूरव दिशि,
पृथ्वी जीव अधिक कह्या ए।
अधिकउ गोतम द्वीप पश्चिम दिशि कहउ,
तिण अधिका जीव सद्दह्या ए ॥१४॥
पूरव पश्चिम माहि भवन पति देव थोड़ा,
भवन थोड़ा तिहां ए।
उत्तर अधिक असंख दक्षिण ते थकी,
बहु बहु भवन भलइ कहाए ॥१५॥
पूरव नहीं पोलादि थोड़ा व्यन्तर अधिक,
अधोग्राम पश्चिमइ ए।

ऊपर दखिरा एम अधिक अधिक कह्या,
नगर अधिक छइ अनुक्रमइ ए ॥१६॥

पूरब पश्चिम सम बेउ, ज्योतिषी,
देखता थोड़ा ते द्वीपइ रहइ ए।
दखिरा अधिक विमान कृष्ण पखी बहु,
अधिक तिरा अरिहंत कहइ ए ॥१७॥

उत्तर अधिक विशेष मान सरोवर,
क्रीड़ा करवा आवइ इहां ए।
देखी मच्छ विमान जाति स्मरण,
नियाणउ करि हुइ तिहां ए ॥१८॥

प्रथम चार देवलोक ते थोड़ा कह्या,
पूर्व पश्चिम सरखा मह ए।
उत्तर अधिक विमान पुष्पावकीरत्न,
दखिरा कृष्ण पखी बहु ए ॥१९॥

पांचमा थी आठ सीम थोड़ा तिहुँ दिश,
तिहां विमान सरिखा कह्या ए।
दखिरा अधिक उद कृष्ण पखी बहु,
समकित धारी सहसा ए ॥२०॥

ऊपरलें देवलोक सर्वार्थ सिद्ध सीम,
चिहुँ दिशि सरखा उपना ए।

उपशम एम मनुष्य तप संयम करी,
सुख भोग वे भ्रम वेसश ए ॥२१॥

॥ कलश ॥

इम अल्प बहुत्व विचार विर्हु दिशि,
सकल भेद जीवां तणउ।
श्री पन्नवणा सूत्र पदे तीजे,
तिहां विस्तार घर घणउ॥
मंइ तुम्ह वचने स्तवन कीधो,
समयसुंदर इम भणइ।
मुझ कृपा करि वीतराग देव तु,
जिम देखूं परतिख पणइ ॥२२॥

गति आगति २४ दण्डक विचार स्तवनम्

श्री महावीर नमू कर जोडि, दण्डक मांहिं फरा छोडि।
चउवीसी दण्डक ना ए नाम, गति आगति कहवाना ए ठाम ॥१॥
नारिक साते दंडक एक, असुरादिक ना दस प्रत्येक।
पृथ्वी पाणी अग्नि नइ वायु, वनसपति बलि पांचमी काय ॥२॥
ति चउरिन्द्री गर्भज वली, नर तिर्यंच कह्या केवली।
भवण जोतिष वैमानिक देव, चउवीस दंडक ए नित मेव ॥३॥

नारक मरि नर तिर्यंच थाइ, नरक गति नर तिर्यंच जाइ ।
असुरादिक दसनी गति एइ, भू पाणी प्रत्यक वनस्पति जेइ ॥४॥
तिर्यंच मनुष्य मइ उत्पत्ति जोइ, आगति मनुष्य तिर्यंच नी होई ।
भूजल अग्नि पवन थण पच, बिति चउरिन्द्री नर तिरजंच ॥५॥
ए दश पृथ्वी ना गति ना दीश, आगति नारकि विण त बीस ।
जिम पृथ्वी तिम पाणी लखी, गति आगति बोले इम धणी ॥६॥
नर विण अग्नि नी गति नवपदे, आगति दस विपटै नवि कहे ।
जिम अग्नि तिम जाणउ वायु, गति आगति मईं कहिवाय ॥७॥
पृथ्वी प्रमुख दसे दंड के, वनस्पति नी गति छइ तिके ।
आगति नारक विण तेवीस, दंडक बोल्या श्री जगदीश ॥८॥
ब ते चउरिन्द्री दडक त्रिहु, गति आगति दस बोलनी कहुँ ।
गति आगति गर्भज तिर्यंच, चउवीस दडक मगले सच ॥९॥
गर्भज मनुष्य चउवीस नर सिद्धि, अगनि वाय आगति प्रतिषिद्धि ।
वण ज्योतिष वैमानिक लखी, गति गर्भज नर तिर्यंच मखी ।१०।
पली भूदग वस प्रत्येक सही, आवे नर नइ तिर्यंच वही ।
जीव तणी गति आगति कही, भगवत भाखे संदेह नहीं ।११।
चौवीस दडक नगर मझार, हूँ मम्यउ दव अनंती वार ।
दुख सहिया त्यां अनेक प्रकार, ते कहितां किम आवे पार ।१२।
वीनति करूं य वारवार, स्वामी आवागमण निवार ।
भगवती सूत्र तणइ अनुसार, समयसुन्दर कहै एह विचार ।१३।

श्री घघाणी तीर्थ स्तवनम्

ढाल १-प्रभु प्रणमु रे पास जिणेसर थंभणो-

पाय प्रणमु रे पद पंकज प्रभु पासना,
गुण गाइस रे मुझ मन हरषी आसना ।
घघाणी रे प्रतिमा प्रगट थई घणी,
तसु उत्पत्ति रे सुणजो भविक सुहामणी ॥
सुहामणी ए वात सुणतां, कुमति शल्य भांजस्यै ।
निर्मली थास्यै शुद्ध समकित, श्री जिन शासन गाजस्यै ॥
मरु देश मण्डोवर महा, वसु घर रात्रा सोहए ।
तिहां गाम एक अनेक थानक, घघाणी मन मोहए ॥१॥
दूधेला रे नाम तलाव छै जेहरउ,
तसु पूरब रे खोखर नामइ देहरउ ।
तसु पासै रे खिणंता प्रगटउ सु हरौ,
परियागत रे जाणे निधान प्रगट्यो खरउ ॥
प्रगटयउ खरउ भू हरउ, तिस मांहि प्रतिमा अति भली ।
जेठ सुदी इग्यारस मोक्ष वासर, बिंब प्रगटउ मन रली ॥
केतली प्रतिमा केहनी वलि, किण भराव्यउ भावसुं ।
ए कवण नगरी किण प्रतिष्ठी, ते कहुँ प्रस्ताव सुं ॥२॥
ते सगली रे पैंसठ प्रतिमा जाणियइ,
जिन शिवनी रे भगती विगत वखाणियइ ।

मूलनायक रे श्री पद्म प्रभू पासजी,
इक चौमुख रे चौवीसटउ सुविलास जी ॥
सुविलास प्रतिमा पास थकी, बीजी पखी वे वीस ए ।
त मांहि काउसग्गिया बिहु दिसि, पेउ सुन्दर दीसए ॥
वीतरागनी चउवीस प्रतिमा, वली बीजी सुन्दरु ।
सगली मिली नैं जैन प्रतिमा, सेंतालीस मनोहरु ॥३॥
इन्द्र ब्रह्मा रे ईसर रूप चक्रेश्वरी,
इक अम्बिका रे कालिका अद्ध नारीश्वरी ।
विन्यायक रे जोगणी शासनदेवता,
पास रहइ रे श्री जिनवर पाय सेवता ॥
सविता प्रतिमा त्रिण मरासी, पांच पृथ्वी पाल ए ।
चन्द्रगुप्त सम्प्रति बिन्दुसार, असोकचन्द्र कुणाल ए ॥
कंसाल जोडी धूप धाणा, दीप संख भृगार ए ।
त्रिसठिया मोटा तरु थाल ना, एह परिकर सार ए ॥४॥

ढाल—दूसरी

मूलनायक प्रतिमा सजी, परिकर अभिराम ।
सुन्दर रूप सुहामणउ, श्री पद्म प्रभु स्याम ॥१॥
श्री पद्म प्रभु सरिषा, चन्द्रक दरी पुलाय ।
नयण मूरति निरखतां, समकित निर्मल थाय ॥२॥
आप गुरुनी प्रतिमा, आगम सुण विचार ।
मोहन रंक सगा दिषड, सीषड सयम भार ॥३॥

उज्जैनी नगरी धनी, ते थयउ सम्प्रति राय ।
जातिसमरण जाणियउ, ए रिद्धि पुण्य पसाय ॥४॥
पुण्य उदय प्रगटयउ यथउ, साध्या भरत त्रिखण्ड ।
त्रिण पृथ्वी जिन मंदिर, मण्डित कीधी अखण्ड ॥५॥
बलि तिण गुरु प्रतिबोधियो, थयउ श्रावक सुविचार ।
मुनिवर रूप करावियउ, अनार्य देश विहार ॥६॥
वेमे तिहोत्तर वीर थी, संवत प्रबल पडूर ।
पद्म प्रभु प्रतिष्ठिया, आय सुहस्ती सूरि ॥७॥
माह तणी सुदि आठमी, शुभ मुहूरत विचार ।
ए लिपि प्रतिमा पूठे लिखी, ते बांची सुविचार ॥८॥

ढाल—तीजी

मूलनायक प्रतिमा वली, सकल सुकोमल देहो जी ।
प्रतिमा श्वेत सोना तणी, मोटो अचरज एहो जी ॥१॥
अर्जुन पास जुहारियइ, अर्जुन पुरि सिणगारो जी ।
तीर्थंकर तेवीसमउ, मुक्ति तणउ दातारो जी ॥२॥ अ ॥
चन्द्रगुप्त राजा थयउ, चाणिक्यइ दीयउ राजो जी ।
तिण ए बिंब भराबियउ, सारया उत्तम काजो जी ॥३॥ अ० ॥
महावीर संवत थकी बरस, सत्तर सउ बीतो जी ।
तिण समें चवद पूरव धरू, श्रुत केवलि सुविदीतो जी ॥४॥ अ० ॥
भद्रबाहु सामी थया, तिण कीधी प्रतिष्ठो जी ।
श्राव सफल दिन माहरउ, ते प्रतिमा मंइ दीठो जी ॥५॥ अ ॥

ढाल—चौथी

मोरो मन तीरथ मोहियउ, मंई भेट्यउ हो पद्म प्रभु पास।
मूलनायक प्रतिमा भली, प्रशमता हो पूरें मननी आस।१ मो।
जूनां बिंब तीरथ नवो ए, प्रगट्या हो मारवाड़ मझार।
पंचाणी मजु न पुरी, नाम आज्यो हो सगलउ संसार।२ मो।
संघ आवै ठाम ठाम ना, वलि आवै हो इहां वर्ष अठार।
यात्रा करइ जिनवर तणी, तिण प्रगट्या हो तीरथ अति सार।३ मो।
श्री पद्म प्रभु पास जी, ए बई हो मूरति सकलाप।
स्वम देखाड़ समरतां, तिण थप्पा हो तसु तज प्रताप।४ मो।
महावीर वारां तणी ए, प्रगटी हो प्रतिमा अतिसार।
जिन प्रतिमा जिन सारखी, को मत्त हो मत करज्यो लगार।५ मो।
संवत सोल बासठ समइ, आव कीधी हो मइ माह मझार।
जन्म सफल थयउ माहरउ, हिव मुझ नइ हो सामि पार उतार।६ मो

॥ कलश ॥

इम श्री पद्मप्रभु पास सामी, थुण्या सुगुरु प्रसाद ए।
मूलगी मजुनपुरी नगरी, बद्ध मान प्रसाद ए॥
गच्छराज श्री जिन चंद्र सूरि, श्री जिन सिंह सूरीसरो।
गणि सकलचंद्र विनय वाचक, समयसुन्दर सुखकरो॥७॥

इति श्रीपंचासरी तीर्थ स्तोत्र स्तवनम्

श्री ज्ञान पंचमी बृहत्स्तवनम्

ढाल १—गौड़ी मृदङ्ग पास महनी

प्रणमू श्री गुरु पास, निरमल न्यान उपास।
पांचमि तप भणु ए, जनम सफल गणु ए ॥ १ ॥
चउवीसमउ जिण चंद, केवल न्यान दिणंद।
त्रिगडइ गह गहइ ए, भवियण नइ कहइ ए ॥ २ ॥
न्यान बडउ संसार, न्यान मुगति दातार।
न्यान दीवउ कहाउ ए, साचउ सरदहो ए ॥ ३ ॥
न्यान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकास।
न्यान विना पसू ए, नर जाणइ किसू ए ॥ ४ ॥
अधिक आराधक जाणि, भगवती सूत्र प्रमाणि।
ज्ञानी सब लहु ए, किरिया देस कहइ ए ॥ ५ ॥
न्यानी सासो सास, करम करइ जे नास।
नारकि नइ सही ए, कोडि वरस कही ए ॥ ६ ॥
न्यान तणउ अधिकार, बोल्यउ सूत्र मझार।
किरिया छइ सही ए पहिलि पछइ कही ए ॥ ७ ॥
किरिया सहित जउ न्यान, हुयइ तउ अति प्रधान।
सोनउ नइ सुरह ए, सांख दूधइ भरयउ ए ॥ ८ ॥
महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार।
भगवंत भाखिया ए, गणधर साखिया ए ॥ ९ ॥

ढाल २—कपूर हुए अति ऊजलु रे ए चाल ...

पांचमि तप विधि सांभलउ, पामउ जिम भव पारो रे।
श्री अरिहंत इम उपदिसइ, भवियण नइ हित कारो रे। पां।१०
मगशिर माह फागुण भला, जेठ आसाढ वइसाखो रे।
इण षट मासे लीजियइ, सुभ दिन सद गुरु साखो रे। पां।११।
देव जुहारी देहरइ, गीतारथ गुरु वांदी रे।
पोथी पूजइ ग्यान नी, सकति हुवइ तउ नांदी रे। पा।१२।
बे कर जोड़ी भाव सु, गुरु मुखि करइ उपवासो रे।
पांचमि पडिकमणु करइ, पन्इ पडित गुरु पासो रे। पा।१३।
जिणि दिन पांचमि तप करइ, तिण दिन आरम टालइ रे।
पांचमि स्तवन थुइ कहइ, ब्रह्मचरिज पणि पालइ रे। पां।१४।
पांच मास लघु पंचमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे।
पांच वरस पांच मास नी, पांचमी करइ सुभ दृष्टी रे। पां।१५।

ढाल ३—पाय पउमो रे जिणवर नइ सुपसाउलइ ए देशी

हिव भवियण रे पांचमि उजमणउ सुणउ,
घर सारू रे वारु धन खरचउ घणउ।
ए अवसर रे आवेवा वली दोहिलउ,
पुण्य योगइ रे धन पामता सोहिलउ॥
सोहिलउ धन वलि पामवो, पणि धरम काज रिहां वली।
पंचमी दिन गुरु पासि आवि, कीजियइ काउसग रली॥

त्रिण ज्ञान दरसण चरण टीकी, देई पुस्तक पूजियइ ।
वासना परिली पूजि केसर, सुगुरु सेवा कीजियइ ॥१६॥

सिद्धांत नी रे पांच परति मोंगणा,
पांच पूठा रे मुखमल सत्र प्रमुख तणा ।

पांच दोरा रे लेखणि पांच मसीभरणा,
वस्त कूँपी रे कांबी चारू वरतणा ॥

वरतणा चारू वलिय कमली, पांच झलमलति अति मली ।
वासनाचारित्र पांच ठवणी, मुहपत्ती पुड पाटली ॥
पट सूत्र पाटी पांच कोथलि, पांच मउकरवालि ए ।
इम परि भावक करइ पांचमि, उजमणु उजुयालिए ॥१७॥

वलि देहरइ रे स्नात्र महोत्सव कीजियइ,
वित्त सारू रे दान वलि तिहाँ दाजियइ ।

प्रतिमा नइ रे आगलि ढोयण ढोइयइ,
पूजा नां रे बे जे उपगरण जोइयइ ॥

जोइयइ उपगरण देव पूजा, कलश कलस सिंगार ए ।
आरती मंगल चाल दीवउ, धूप धाणउ सार ए ॥
घनसार केसर अमर सूखडि, अंगलूहण दीस ए ।
पांच पांच सगली वस्तु ढोवइ, सगति सहु पचवीस ए ॥१८॥

पांचमिदा रे साहमी सवि कीमाडियइ,
रातीजागइ रे गीत रसाल गवाडियइ ।

इण करणी रे करतां न्यान आराधियइ,
न्यान दरसण रे उत्तम मारग साधियइ ॥
साधियइ मारग एणि करणी, न्यान लहियइ निरमलउ ।
सुरलोक नइ नर लोक मांहइ, न्यानवत ते आगलउ ॥
अनुक्रमइ केवल न्यान पामी, सासतां सुख ते लहइ ।
जे करइ पांचमि तप अखंडित, वीर जिणवर इम कहइ ॥१६॥

॥ कलश ॥

गउड़ी राग—

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ।
मइ थुणयउ श्री भगवंत अरिहंत अतुलबल अलवेसरो ॥
जयवंत श्री जिण चंद सूरज, सकलचंद नमंसिउ ।
वाचनाचारिज समय सुन्दर, भगति भाव प्रसंसिउ ॥२०॥

इति श्री ज्ञानपंचमीतपोविचारगर्भित श्रीमहावीरदेव बृहत्स्तवनं सम्पूर्णं कृतं लिखितं च संवत १६६६ वर्षे ज्येष्टे ज्ञानपंचम्यां ॥

ज्ञान पंचमी लघु स्तवनम्

पांचमि तप तुम करो रे प्राणी, निरमल पामो ज्ञान रे ।
पहिलु ज्ञान नइ पाछइ किरिया, नहिं कोई ज्ञान समान रे ।पां० १।

नंदी सूत्र मई ज्ञान बखाण्यउ, ज्ञान ना पांच प्रकार रे ।
मति श्रुति अवधि अनइ मन पर्यव केवल ज्ञान श्रीकार रे ।पां० २।
मति अठावीस श्रुति चउदे बीस, अवधि छ असंख्य प्रकार रे ।
दोय भेद मन पर्यव दाख्यउ, केवल एक प्रकार रे ।पां० ३।
चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेज तेज आकास रे ।
केवल ज्ञान समउ नहीं कोई, लोकालोक प्रकास रे ।पां० ४।
पारसनाथ प्रसाद करी नइ, माहरी पूरउ उमेद रे ।
समयसुंदर कहइ हूँ पण पामू , ज्ञान नो पांचमउ भेद रे ।पां० ५।

मौन एकादशी स्तवनम्

समवसरण बइठा भगवंत, धरम प्रकासइ श्री अरिहंत ।
बारे परखदा बइठी जुडी, मगसिर सुदि इग्यारस बडी ॥ १ ॥
मल्लिनाथ ना तीन कल्याण, जनम दीक्षा नइ केवल ज्ञान ।
अर दीक्षा लीधी रूबडी, मिगसर सुदि इग्यारस बडी ॥ २ ॥
नमि नइ उपनू केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ।
ए तिथिनी महिमा एवडी, मिगसर सुदी ग्यारस बडी ॥ ३ ॥
पांच भरत ऐरवत इम हीज, पांच कल्याणक हुवे तिम हीज ।
पचास नी संख्या परगडी, मिगसर सुदी ग्यारस बडी ॥ ४ ॥
अतीत अनागत गिणतां एम, दोढ सै कल्याणक थाये तेम ।
कुण तिथि छइ ए तिथि जेवडी, मिगसर सुदी ग्यारस बडी ॥ ५ ॥

अनंत चौवीसी इण परि गियो,लाभ अनंत उपवासां तणउ ।
ए तिथि सहु तिथि सिर राखड़ी,मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी ॥ ६ ॥
मौन पणइ रह्या श्री मल्लिनाथ,एक दिवस संजम व्रत साथ ।
मौन तणी परिग्रत इम पड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥ ७ ॥
अठ पुहरी पोसउ लीजियइ, चउविहार विधि सुँ कीजियइ ।
पण परमाद न कीजइ घड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥ ८ ॥
वरस इग्यार कीजइ उपवास,जाव जीव पणि अधिक उलास ।
ए तिथि मोक्ष तणी पावड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥ ६ ॥
उजमणउ कीजइ श्रीकार, ज्ञान ना उपगरण इग्यार इग्यार ।
करो काउसग्ग गुरु पाये पड़ी,मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥१०॥
देहरे स्नात्र करीज बली, पोथी पूजीजइ मन रली ।
सुगति पुरी कीजइ ढूकड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥११॥
मौन इग्यारस म्होटो पर्व, आराध्यां सुख लहियइ सर्व ।
व्रत पचखाण करो आखड़ी मिगसर सुदी इग्यारस बड़ी ॥१२॥
जसह सोल इक्यासी समइ, कीधू स्तवन सहू मन गमइ ।
समयसुन्दर कहइ करउ ध्याइड़ी,मिगसर सुदि इग्यारस बड़ी ॥१३॥

श्री पर्यूषण पर्व गीतम्

राग—सारंग

मलइ आय, पर्यूषण पर्व री मलइ आये ।
जिन मंदिर मादल धोंकार, पूजा स्नात्र मंडाए ।पo।१।

सामायक पोसह पडिकमणा, धम विशेष कराए।
साहमी भोजन भगति महोच्छव, दिन दिन होत सवाए। प०।२।
गीतारथ गुरु गुहिर गमीर सरि, धम्म सिद्धांत सुणाए।
नर भव सफल किए नर-नारी, समयसुन्दर गुण गाए। प०।३।

श्री रोहिणी तप स्तवनम्

रोहिणी तप भवि आदरो रे लाल,
भव भमतां विश्राम हितकारी रे।
तप विण किम निज आतमा रे लाल,
शुद्ध न थाय मन काम हितकारी रे। रो०।१।
दुरगधा भव आदरयो रे लाल,
जपियो वलि नवकार हितकारी रे।
सिहां थी रोहिणी ऊपनी र लाल,
मघवा इस जयकार हितकारी रे। रो०।२।
चित्रसेन मन भावती रे लाल,
सुख भमवा निसदीस हितकारी रे।
वासपूज्य जिन बारमउ रे लाल,
समवसरया जगदीस हितकारी रे। रो०।३।
चित्रसेन वलि रोहिणी रे लाल,
आठ पुत्र सुखकार हितकारी रे।
दीक्षा जिन हाथ सु लह र लाल,
संयम ध चितधार हितकारी रे। रो०।४।

करम खपाय मुगत गया रे लाल,
    धन धन रोहिणी नार हितकारी र।
समयसुन्दर प्रभु वीनवे रे लाल,
    तप थी शिव सुखसार हितकारी रे। रो०।५।

उपधान (गुरु वाणी) गीतम्

वाचि करावउ गुरु जी वाचि करावउ,
    पूज जी अम्हे आया तुम्ह पासि। म्हारा।१।
कपूर कस्तूरी परिमल वास,
    सखर सुगंध आए घउ वास। म्हारा।२।
आपणा मुखि मुझ वायना देयउ,
    न्यान तणउ लाभ लेयउ। म्हारा।३।
गुरु पग पूजू ज्ञान लिखावु,
    गीत मधुर सरि गाऊ। म्हारा।४।
विहु बीसइ नी ब म वाचि,
    छकंड चउकड नी एक आखि। म्हारा।५।
पांत्रीसइ अठावीसइ विहु तप करी,
    त्रिया नवाणि करउ भेरी। म्हारा।६।
श्रीपूज्य श्री नइ वांद् कर जोडि,
    माल पहिरावनउं मु नइ कोडि। म्हारा।७।

माल परिरथां शुभ किरिया समझइ,
चतुर हुयइ ते प्रतिबूझइ ।म्हारा।८।
समयसुन्दर कहइ उपधान वहियइ,
सुगति तथा सुख लहियइ ।म्हारा।९।

उपधान तप स्तवनम्

ढाल—एक पुरुष सामल सुकमालिका, एहनी

श्री महावीर धरम परकासइ, बइठी परखद बारजी ।
अमृत वचन सुनइ अति मीठा, पामइ हरख अपार जी ॥१॥
सुणो सुणो रे श्रावक उपधान वह्यां, विन किम सूझइ नवकारजी ।
उतराध्ययन बहुश्रुत अध्ययन, एह भण्यउ अधिकार जी ।२। सु।
महानिशीथ सिद्धांत मांहे पणि, उपधान तप विस्तार जी ।
अनुक्रमि सुद्ध परंपरा दीसइ, सुविहित गच्छ आचार जी ।३। सु.।
तप उपधान वह्यां विण किरिया, तुच्छ अल्प फल जाण जी ।
जे उपधान वहइ नर नारी, तेहनउ जनम प्रमाण जी ।४। सु.।
सूत्र सिद्धांत तथा तप उपधान, जोग न मानइ जेह जी ।
अरिहंत देव नी आण विराधइ, भमस्यइ बहु भव तेह जी ।५। सु.।
अघटतां भाग समा नर नारी, विण उपधानइ होइ जी ।
किरिया करतां आदेस निरदेस, काम सरइ नहीं कोइ जी ।६। सु।
एक घेवर वलि खांड सुं भरियउ, अति घणउ मीठउ थाय जी ।७। सु.।
एक श्रावक नइ उपधान वहइ तउ, धन धन ते कहिवाय जी ।८। सु.।

ढाल २—भाद्रवे पोस पडम पखि दसमी निसि जिम जागरउ, ए ढ़ाल.

नउकार तणउ तप पहिलउ वीसइ जाणि,
इरियावही नउ तप बीजउ वीसइ आणि ।
इण विणु उपधाने निश्चय नांहि महाव्रत,
बारे उपवासे गुरु मुखी बे बे वाणि ॥८॥
पांत्रीसइ त्रीजउ सक्रस्थुक उपधान,
त्रिण एह वायणा उगणीस तप उपधान ।
प्रधान अरिहंत चेइय चउथउ कहइ एह,
उपवास अढाई वाणि एक गुणा गेह ॥९॥
पांचमउ लोगस तप अट्ठावीसइ नाम,
साढा पनरह उपवास वायणा त्रिण ठाम ।
पुक्खर वरदी तप छट्ठउ इकवीस सार,
साढा त्रिण उपवास वाणि एक सुविचार ॥१०॥
सिद्धाणं बुद्धाणं सातमउ उपधान माल,
उपवास करइ एक चउविहार तत्काल ।
एक वाणी करइ वलि गुरु सुख सरस रसाल,
गच्छ नायक पासइ पहिरइ माल विसाल ॥११॥
माल पहिरवा अवसरि आयो मन उछरंग,
घर सारू खरचइ धन बहु मनि ।
राती जगइ आपइ तास तुरत तंबोल,
गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल ॥१२॥

ढाल ३—चउवीसमउ जिणराय रंगे पणमिये—

एक सात उपधान विधिसु जे वहइ,ते सवी किरिया करइ ए।
विच न करइ परमाद जीव जतन करइ,पूँजी पूँजी पगला भरइ ए।१३।
न करइ क्रोध कसाय हसइ नहीं,मरम केहनउ नवि कहइ ए।
नाखइ घर नउ मोह, उत्कटी करइ,साधु तणी रहणी रहइ ए।१४।
पहुर सीम सज्झाय करिय पोरसी भणी,ऊंघइ सरि बोलइ नहीं।
मन माहे भावई एम,धन २ ए दिन,नर भव माँहि सफल सहीए।१५।
ए सातें उपधान, विधी सेती वहइ,परिहरइ माल सोहामणी ए।
तेहनी किरिया सुद्ध,बहु फल दायक,करम निर्जरा अति घणीए।१६।
परभवि पामइ रिद्धि,देवतणा सुख,बत्तीस बद्ध नाटक पडइ ए।
सामइ सोल विलास अनुक्रमि सिव सुख,पदवी पदवी ते चढइए।१७

इम वीर जिनवर भुवन दिनयर, मात त्रिसला नंदणो,
उपधान ना फल कहइ उत्तम, भविय जण आणंदणो।
जिणचंद जुगपरधान सद्गुरु, सकलचंद मुणीसरो,
तसु सीस पाठक समयसुंदर, भणइ वंछित सुख करो ॥१८॥

इति सप्तोपधानविचारगर्भितश्रीमहावीरदेवस्तवनम् संपूर्णम्
कृतं श्री साचिर नगरे शुभं भवतु ॥

— ० —

साधु-गीतानि

श्री अइमत्ता ऋषि गीतम्

राग—कनरव

वड़ली मेरी री, तरइ नीर विशाल अइमत्तउ रमइ बाल। बे०।
मुनि बांधी माटी पाल। तस मध्यउ तरूवल,
श्रवली मूकी विशाल, रिषी रामति बाल।१। बे०।
साधु करइ निंदा हीला, अइमत्ता पहचा इह हीला।
प्रभु तुम सीख देयउ भव नोकइ पाल। महावीर कहइ सामी;
अइमत्तउ सुगति गामी, समयसुन्दर करइ वंदना त्रिकाल।२। बे०।

श्री अइमत्ता मुनि गीतम्

श्री पोलास पुराधिप विजई, विजय नरिंद प्रधान रे।
श्री इख नामइ तसु पटराणी, निरमल नीर भ्रमराणी रे।१।
धन धन मुनिवर सधु थइ तप लीधउ, अइमत्तउ सुकुमाल रे।
तहना गुण ना पार न लहियइ, कहउ धरम विसाल रे।२। ध०।
तसु उपरि सर सीह समोपम, अइमत्तउ सुकलीणउ रे।

....

यह गीत श्री मो० द० देसाई संग्रहस्थित प्रति (पत्र ४ ६) से अपूर्ण मिला है।

श्री अनाथी मुनि गीतम्

राग—१ मालवीगडा नी
२ चांदलिया नी

श्रेणिक रयवाड़ी चढ्यउ, पेखियउ मुनि एकांत ।
वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछइ कहउ रे विरतंत ॥ १ ॥
श्रेणिक राय हूँ रे अनाथि निग्रंथ ।
तिण मई लीधउ रे साध नउ पंथ ॥ श्रे० ॥ आंकणी ॥
इणि कोसंबी नगरी वसइ, मुझ पिता परिघल धन ।
परिवार पूरइ परवरयउ, हूँ छू तेहनउ रे पुत्र रतन । श्रे २ ।
एक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी मंई न खमाय ।
मात पिता सहु झूरी रह्या, पणि केहनइ रे ते न लेवाय । श्रे ३ ।
गोरडी गुण मणि ओरडी, मोरडी अबला नारि ।
कोरडी पीड़ा मइ सही, न किणइ कीधी रे मोरडी सार । श्रे.४ ।
बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय ।
बावना चंदन लावीया, पणि तउ ही रे समाधि न थाय । श्रे.५ ।
जग मांहि को केहनउ नहीं, ते भणी हूँ रे अनाथ ।
वीतराग ना धर्म बाहिरउ, कोई नहीं रे मुगति नउ साथ । श्रे ६ ।
वेदना जउ मुझ उपसमइ, तउ हू लेऊँ संजम भार ।
इम चींतवतो वेदन गई, व्रत लीधउ रे हरष अपार । श्रे ७ ।
कर जोडि राजा गुण स्तवइ, धन धन ए अणगार ।
श्रेणिक समकित तिहां लहइ, वांदी पहुँतउ रे नगर मंझारि । श्रे ८ ।

मुनिवर अनाथी गावतां, करम नी त्रूटइ कोडि।
गणि समयसुंदर वेहना पाय,वांदइ रे बे कर जोडि। श्रे ६।

श्री अयवती सुकुमाल गीतम्

नयरि उजयिनी मांहि वसइ, परिघल जेहनउ आयो जी।
भद्रा सुत सुख भोगवइ, बतीस अंतेउर साथो जी।१।
धन धन अयवती सुकुमाल नइ, न पाल्युं जेहनु ध्यानो जी।
एकण रात्रे पामियउ, नलिनि गुल्म विमानो जी।२।ध.।
सद्गुरु आवी समोसरया, सांभलि नलनि अभ्ययणो जी।
जाति समरण पामियउ, संजम परम रयणो जी।३।ध.।
गुरु पूछी रे वन मांहि गयउ, काउसग्ग रहउ समसानोरे जी।
स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमानो जी।४। ध।
ततखिण सुर पद पामियउ, एहवा अयवंती सुकुमालो जी।
समयसुन्दर कहइ भदना, ए मुनिवर नइ त्रिकालो जी।५। ध।

श्री अरहनक मुनि गीतम्

राग—आयो कही अनार की रे हां सुणवा रस्य रे लोभाय मेरे लोचना। ए गीवनी.

विहरण वेला पांगुर्‌यउ हां, धूप तपइ असरात, मेरे अरहना।
भूख त्रिखा पीड्यउ पखु हां, मुनिवर अति सुकुमाल मेरे अरहना।१।
माता करइ रे विलाप, भद्रो करइ रे विलाप। मे ।। आंकणी ।।

घरथी घसि ऊठी घसु रे हां, मारग मांहि बईठ मेरे अरहना।
गउखि घड़ी किण सिरहणी रे हां, नारी नयणे दीठ मेरे अरहना।२।
बोलावी ऊंचउ लीयउ रे हां, भाण्यउ निज आवासि मेरे अरहना।
हाव भाव विभ्रम करी रे हां, पदमनी पाड्यउ पासि मेरे अरहना।३।
मूक्यउ भोपउ मुहपती रे हां, भोगवइ भोग सदीव मेरे अरहना।
करम थी को छूटइ नहीं रे हां, करम तणइ वसि जीव मेरे अरहना।४।
गउख ऊपरि बइठउ थकउ रे हां, दीठी अपणी माय मेरे अरहना।
गलियां मांहि गहिली भमइ रे हां, पूछइ अरहन वात मेरे अरहना।५।
विहरण वेला टलि गयी रे हां, आवउ म्हारा अरहन पूत मेरे अरहना।
चारित्र थी प्रित पड्यिउ रे हां, मोहनी मांहे खुत मेरे अरहना।६।
मई माता दुखिणी करी रे हां, धिग धिग मुझ अवतार मेरे अरहना।
नारि तजी रिषि नीसर्यउ रे हां, आयउ गुरु पासि अपार मेरे अर।७।
माता पणि आवी मिली रे हां, आणंद अंगि न माय मेरे अरहना।
पाप आलोया आपणा रे हां, पणि चरित न पलाय मेरे अरहना।८।
तावी सिला अणसण लियउ रे हां, पहुतउ मन परिणाम मेरे अरहना।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे हां, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम मेरे अरहना।९।

इति अरहनक गीतम् ॥ ४२ ॥

श्री अरहन्ना साधु गीतम्

विहरण वेला रिषि संचरयो, तउ तडतड़ तावड़ि संचरयउ।
सरो मांहि ममतउ पाउंर थउ, भूख तरस लागी तास सामंर पड्या रे।

म्हारउ अरहनउ, किहां दीठउ रे म्हारउ अरहनउ ।।आंकणी।।
गउखइ चढ़ि दीठउ गोरडो, आवउ आ मन्दिर ओरडी ।
करस्या कर्म सोखउ कोरडी, मन आशा पूरउ मोरडी ।।२ म्हां०।।
श्रापि चूकउ चारित थी पडयउ, ऊंचो आवास चड़ चढ्यउ ।
भोगकर्म भोग नारि नड पडयउ, विषयइ किम घाट देवइ घडयउ
।।म्हां० ३।।
भद्रा माता इम सांभलि, गहिली थईजोयइ गलिय गली ।
आवउ विहरवा वेला टली, हा हा मोहनी करम महाबली ।।म्हां०४।।
गउखइ बइठइ मां ओलखी, धिग धिग सरस्यइ सुख पखी ।
मइ मूकइ मात कीधी दुखी, नव मास धरयउ जहनी कूखी ।।म्हां ५।।
नारी तजि नीचउ उतरयउ, संवेग मारग वयउ वरयउ ।
सिला ऊपरि सथारउ करयउ, वगइ सुरसुंदरि नइ वरयउ ।।म्हां०६।।
धन धन ए मुनिवर अरहनउ, अणसण ऊपरि धयउ इक मनउ ।
अधिकार भण्यउ मइ एहनउ, समयसुदर नइ ध्यान तेहनउ।।म्हां ७।।

श्री अरहनक मुनि गीतम्

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडकउ लागइ सीसो जी ।
पाय उवराणइ रे वेलु परि बलइ,
तन सुकमाल मुनीसो जी ।। अर० ।।१।।
मुए कमलाणउ रे मालती फूल ज्यु, ऊभउ गोख नइ हेठो जी ।
खरइ दुपहरइ दीठउ एकलउ,
मोही मानिनी मीठो जी ।। अर० ।।२।।

रूपवती रंगीली रे नयणे वेधियउ, रिषि थंम्यउ तिण वारो जी।
हासी नइ करइ बाय उवासली,
मो मुनि वेढी आयो जी ॥ अर० ॥३॥
पावन कीजइ रिषि घर मांगणउ, वहिरउ मोदक सारो जी।
नव यौवन रस काया कंइ दहउ,
सफल करउ अवतारो जी ॥ अर० ॥४॥
चंद्रा वदनी रे चारित्र चूकव्यउ, सुख विलसइ दिन रातो जी।
इक दिन गोखइ रमतउ सोगठइ,
तव दीठउ निज मातो जी ॥ अर० ॥५॥
अरहनक अरहनक करती मां फिरइ, गलियइ गलियइ मझारो जी।
कहो किण दीठउ रे म्हारउ अरहनो,
पूछइ लोक हजारो जी ॥ अर० ॥६॥
उतर पिरांवी रे जननी पाय नमइ, मन मइ लाज्यो विचारो जी।
धिक धिक पापी म्हारा रे जीवनइ,
एह मंइ अकारज धारयो जी ॥ अर० ॥७॥
अगन धखती रे सिला ऊपरइ, अरहनक अणसण लीधो जी।
समयसुंदर कहइ धन्य ते मुनिवरु,
मन वंछित फल लीधो जी ॥ अर० ॥८॥

इति अरहनक मुनि गीतम्

श्री आदीश्वर ९८ पुत्र प्रतिबोध गीतम्

शांतिनाथ जिन सोलमउ, प्रणमु वेदना पाय ।
दरसन जेहनु देखतां, पातक दूरि पुलाय ॥१॥
सुगडांग सूत्रइ कह्या, ए बीजइ अमझयण ।
वैतालीं नामइ वली, वीतराग ना वयण ॥२॥
एहु सखि उतपति कहु, निर्युक्ति नई अणुसार ।
भद्रबाहु सामी मणइ, चउद पूरवधर सार ॥३॥
श्री अष्टापद आविया, आदीसर अरिहन्त ।
साध संघाति परिवर्‍या, केवल ज्ञान अनन्त ॥४॥
इण अवसरि आव्या तिहां, अट्ठाणु सउ पुत्र ।
वांदी नइ करइ वीनति, तात सुणउ घर सूत्र ॥५॥
भरत थयउ अति लोभियउ, न गिण्यउ बांधव प्रेम ।
राज उदाल्या अम्ह तणा, हिव करउ कीजइ केम ॥६॥
राज करउ महिलां घणु, घर दुगति ना दुख ।
त भणी त उपदेस द्यु, जिम ए पामइ सुख ॥७॥
पुत्र भणी प्रतिबोधिवा, ए अध्ययन कहंति ।
अट्ठाणुं सुत सांभलइ, उगाणी अरिहन्त ॥८॥

ढाल—धन धन अवयंती सुकुमाल नइ एहनी ढाल ।

आदीसर इम उपदिसइ, ए समार असारो जी ।
अगार दारुक नी परि, तृपति न पामइ लगारो जी ॥१॥ सं ॥

संमुच्छम किं मुच्छम, नहिं छइ राग नउ लागोजी।
पपर विरोध वात नहीं, पालउ मन वयरागो जी ॥२॥ सं॥
ए अवसर मति दोहिलउ, मानस ना अवतारो जी।
आरिज देस उत्तम कुल, पडवडी इंद्री अपारो जी ॥३॥ सं ॥
धरम सांभलिवुं दोहिलुं, सरदहणा पणि तेमो जी।
कर्म बांधउ राय आरिमउ, प्रतिबूझउ नहिं केमो जी ॥४॥ सं ॥
पुण्य कियां सिव प्राणिया परमवि पहुंचस्यइ जेहोजी।
बोधि न अ लहिस्यइ नहीं, ममस्यइ मन मांहि तेहोजी ॥५॥ सं ॥
राति दिवस जे जायइ वली, पाछा नावइ तेहो जी।
जिम जिम ऊगइ आउखुं, खीण पडइ वलि देहो जी ॥६॥ स ॥
राम ना काज रूडा नहीं, दुःख छइ वेदना सुक्खो जी।
भेदन छेदन ताड़ना, नर तरकां बहु दुखो जी ॥७॥ स ॥
गरम रहां मानस गलइ, बालक वृद्ध जुवानो जी।
सींचाणउ मरवइ चिड़ी, पणि चालइ नहीं प्राणोजी। ८ ॥स।
अथिर आखी इम आउखूं, किम कीजइ परमादो जी।
नरकां न राज्य न बांछियइ, ते मांहि नहिं को सवादो जी। ६ ॥स।
कुडुंब सहु को कारिमुं, पुत्र कलत्र परिवारो जी।
स्वारथ विना विहड़इ सहु, कुण करनउ आधारो जी ।१०।सं०।
भवनपती व्यंतर वली, जोतषी वैमानिक देवो जी।
चक्रवर्ती राजा राजवी, बलदेव नइ वासुदेवो जी ।११।सं०।

त पणि प्रभुना आंपणी, छोडइ पामता दुक्खो जी ।
मप मोन्ठ मरिवा खचट, मसार मांहि नहि मुक्खो जी ।१२।सं०।
काम मोग घणा मोगवां, त्रिपति पूरी जिम धायो जी ।
ते मूरिख निज छांडडी, आपडिवा नइ उजायो जी ।१३।सं०।
पवण थी ताल फल पडथउ, तइनइ को नहीं ग्राणो जी ।
निम जीवित शूटइ धकउ, कइनइ न चालइ प्राणो जी ।१४।स०।
परिगृह आरम पाइया, पाड्या पाप ना कर्मो जी ।
पाईजइ परभवि गयां, त तिम कीजइ अधर्मो जी ।१५।स०।
ग्रान दरसण चारित बिना, सुगति न पामइ कोयो जी ।
कष्ट करइ अन्य तीरथी, सुगति न पामइ सोया जी ।१६।सं०।
विरमउ पाप थकी तुम्हे, जउ पूरव कोडि आयो जी ।
धरम बिना थंच त सहु, सरस मभम सुधायो जी ।१७।सं०।
ज मूगा काम मोगवइ, राग बंधण पाम बधो जी ।
त ममिम्यइ ममार मइ, दुख मोगवता अपुद्दो जी ।१८।सं०।
पृथिवी नीर समाकुली, हइनइ न दीजइ दुक्खो जी ।
ममिति गुपति मन पालियइ, ज्रिम पामीजइ सुखो जी ।१९।सं०।
ज हिंसादिक पाप थी, विरम्यां भी महाजिते जी ।
तिरा ए धरम प्रकासियउ, पहुँचाइइ भव तीरे जो ।२०।सं ।
गृहस्थाराम मूकी करी, जे न्हाइ सजम मागे आ ।
धारीग परिमा ज मरइ, चालइ सुद्ध आचारो आ ।२१।सं०।

घन घण करम नो क्षय करो,संविग शुद्ध धरंतो जी।
भव सागर श्रोद्दामसउ, ते नर सुरत तरतो जी।२२।सं०।
लेपी मीति घसी अती, अनुक्रमि निर्लेप थायो जी।
आकरा तप करतां थकां, निरमल थायइ कायो जी।२३।सं०।
माति नु पुत्र उतावलउ, थमइ नइ तूं आधारो जी।
तुझ विण कुण वृद्धापणइ,करिस्यइ अम्हनी सारो जी।२४।सं०।
विरह विलाप घणा करी, कूड़ कुबुद्धि साचो जी।
पछि पूछइ नहीं साधु नी, विण परमारथ साचो जी।२५।सं०।
मोहनी करम कीधां थकां, जे पूछइ अविचारो जी।
ते संसार मांहे भमइ, देखइ दुक्ख अपारो जी।२६।सं०।
ए संसार असार छइ, छोडउ राग नइ रिद्धो जी।
तप संजम तुम्हे आदरउ, शीघ्र लहउ जिम सिद्धो जी।२७।सं०।
तात नी देसणा सांभली, थारू कीधउ विचारो जी।
राग नइ रिद्धि छोड़ी करी, लीधउ संजम भारो जी।२८।सं०।
कीधा तप जप आकरा, उपसर्ग परीसा अपारो जी।
अष्टापद ऊपरि चढ्या, अढ़ाम्युं अणगारो जी।२९।सं०।
श्री आदीसर सूं सहु, खीपा करम सपापो जी।
पाम्यां शिव सुख सासता, सुध संयम परमावो जी।३०।सं०।
सूगडांग सूत्र उपरि कीधउ, ए संबंध प्रधानो जी।
बयराग भावी बांचज्यो, धरिज्यो साथ नु ध्यानो जी।३१।सं०।

हाथी साह उपम हुयउ, तिम ए करावी हाली सी ।
समयसुन्दर कहइ वंदथा, ते साधजी नइ निस्तरसो सी ।२२।सं०।
इति श्रीआदीश्वरप्रतिबोधितनिज १८ पुत्रसाधुगीतम् ॥ ३६ ॥

श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम्

राग—भूपाल भइरव् जाउरा गेथा ।

भावना मनि सुद्ध भावउ, परम मांहि प्रधान रे ।
भरत आरीसा भवन मइ, लाधुं, केवल ज्ञान रे ।१।भा०
आदित्य नइ महाजसा अतिबल बलभद्र नइ बलवीर्य।
दत्तवीरिज जलवीरिज राज कीरतिवीरिज धीर्य र ।२।भा०।
आठ राजा एण अनुक्रमि, इन्द्र थाप्या आणि रे ।
रिषभदेव ना मुकुटधारी, भरथ भरत मइ जाणि रे ।३।भा०।
भरत नी परि भवन मांहि, पाम्युं केवल ज्ञान रे ।
समयसुन्दर वेह साधु नु, धरइ निर्मल ध्यान रे ।४।भा०।
इति श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम् ॥ ३७ ॥

श्री इला पुत्र गीतम्

राग—मल्हार
ढाल-मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि
बीनति सुणउ एक मोरडी । एह गीतनी.

इलावरध हो नगरी नु नाम कि,
सारथवाहि तिहां वसइ ।

वहनउ पुत्र हो इलापुत्र प्रधान कि,
मात्त पयउ मन उल्लसइ ।१।
वंस उपरि हो चढ्यां करत न्यान कि,
इला पुत्र नइ ऊपनउ ।
ससार नउ हो नाटक निरखंत कि,
संवेग सहु नइ सपनउ ।२।वं०।
वंस ऊपरि हो चढी खेलइ जेह कि,
ते नटुया सिर्दा भाखिया ।
मली रमति हो रमइ नगरी मांहि कि,
नर नारि मनि भाविया ।३।व०।
नाटुया नइ हो महा रूप निधान कि,
सोल बरस नी सुन्दरी ।
गीत गायइ हो वायइ डमरू हाथि कि,
भाव्य प्रवीणा जोबन भरि ।४।वं०।
इला पुत्र नउ हो मन लागउ तथि कि,
कहइ कन्या द्यउ मुज्झ नइ ।
कन्या समउ हो सोनउ द्यु तोलि कि,
तुरत नायक कहु तुज्झ नइ ।५।वं०।
नायक कहइ हो आपूं नहीं एह कि,
कुटुम्ब आधार अइ कुंयरी ।
अम्हा मांहे हो आवि कला सीखि कि,
पछइ परणाविस सुंदरी ।६।वं०।

मस्त मानी हो इलापुत्रइ एह कि,
ऐ ऐ क्रम विटम्बणा।
अपनी बोलइ हो अपर नइ मोलइ कि,
आगइ पणि धूका घणा।७।मं०।
मूँकी नइ हो कुटुम्ब परिवार कि,
विवहारियउ नटुए भिल्यउ।
निज लेवा हो वीवाह निमित्त कि,
राजा रजवा नीकल्यउ।८।म०।
वंस मांड्यउ हो ऊँचउ आकाश कि,
ते ऊपरि खेलइ कला।
राय राणो हो सगला मिल्या लोक कि,
देखइ ते रहइ वेगला।६।मं०।
ते नटुइ हो करि सोल शृंगार कि,
गीत गायइ रलियामणा।
वलि वायइ हो डमरू ले हाथि कि,
विरुद बोलइ नटुया तणा।१०।मं०।
जिम खेला हो नटुयउ रमइ घाव कि,
राजा तं जोयइ नहीं।
जोयइ नटुइ हो साम्ही द दृष्टि कि,
नटुइ पणि जोयई रही।११।मं०।
इम जाणई हो कामातुर राय कि
नटुयउ पडि नई जउ मरई।

तउ मड्डूं हो ई लेउं एह कि,
ध्यान सुद्ध मन मइ धरइ ।१२। धं० ।
इण अवसरि हो छंभइ पड धड कोइ कि,
साध नइ नयणे निरखियउ ।
ए धन धन हो ए कृत पुण्य साध कि,
हियड्उ दरसण हरखियउ ।१३। ध० ।
मंइ कीधू हो ए अधम नुं काम कि,
इम आतमा समझावतां । ।
इलापुत्र हो लह्यु केवल न्यान कि,
अनित भावना मनि भावतां ।१४। धं० ।
इम राजा हो राणी पणि आणि कि,
नटइ पणि केवल लह्यु ।
पोतानउ हो अवगुण मनि आणि कि,
समकित सहु सरदह्यु ।१५। धं० ।
सोना नउ हो थयउ कमल ते वंस कि,
देवता आणि सानिधि करी ।
साध दीधउ हो धम नउउपदेस कि,
परषदा ते पणि निस्तरी ।१६। ध० ।
इलापुत्र तउ हो गयउ मुगति मझारि कि,
सासती पामी संपदा ।

कर जोड़ी हो करू चरण प्रणाम कि,
साघ नु ध्यान धरू सदा ।१७।चं०।
कडुयामती हो मसउ रायसंघ साह कि,
चिरादरइ आग्रहर किपउ ।
अमदाबाद हो ईदलपुर माहि कि,
समयसुन्दर गीत करि दीयउ ।१८।च०।

इति इलापुत्र गीतम् ॥११॥

(२) श्री इलापुत्र सझाय

नाम इलापुत्र जाणियइ, धनदत्त सेठ नउ पूत ।
नटवी देखी रे मोहियउ, ते राखइ घर सूत ॥ १ ॥
करम न छूटइ रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ।
निज कुल छोडी रे नट थयउ, नाणी सरम लगार ।क०। २ ।
इक पुर आयउ रे नाचवा, ऊंचउ वंस विवेक ।
तिहां राय जोवा रे आवियउ, मिलिया लोक अनेक ।क०। ३ ।
दोय पग पहिरी रे पावडी, वंश चढ्यो गज गेलि ।
निरधारा ऊपरि नाचवउ, खेलइ नव नवा खेलि ।क०। ४ ।
ढोल बजावइ रे नाटकी, गावइ किन्नर साद ।
पाय घरि घूघरा घम घमइ, गाजइ अंबर नाद ।क०। ५ ।

---

१ आदर

तिहां राय पिता रे राजियउ, लुब्धो नटवी रे साथ।
जो पड़इ नटवो रे नाचतउ, तो नटवी मुझ हाथ।क०।६।
दान न आपइ रे भूपति, नट आसइ नृप बात।
हूँ धन बंछू रे राय नउ, राय बछइ मुझ घात।क०।७।
तिहां थी मुनिवर पेखियउ, धन धन साधु नीराग।
धिक् धिक् विषया र जीवड़ा,मनि आणयउ वइराग।क०।८।
सवर भावइ रे केवली, इलिसुत धरम खपाय।
केवलि महिमा रे सुर करइ समयसुन्दर गुण गाय।क०।६।

श्री उदयन राजर्षि गीतम्

सिंधु सोवीरइ वीतभउ र,पाटण रिद्धि समृद्धो रे।
राज करइ तिहां राजियउ रे, उदायन सुप्रसिद्धो रे॥ १॥
मोरे कोडइ महावीर पधारइ वीतभइ रे, तउ हूँ सेवूँ पाय।मो॥
मुगट बद्ध राजा दस रे, सेवइ चकर चोडो रे।
कुमर अभीचि कला निलउ र, पूरइ वछित कोडो र।२ मो।
एक दिन पोसउ ऊचरयउ रे,वीर जिणंद वखाणयउ रे।
धरम जागरिया जागतां रे, एह मनोरथ आणयउ रे।३ मो।
धन धन गाम नगर तिहां रे,विहरइ वीर जिणिंदो रे।
धन धन नरनारी तिके रे, वाणि सुणइ आणंदो रे।४ मो।
भाग संजोगइ आवइ इहां रे,त्रिशलासुत जग आधारो रे।

नउ इहां आवि समोसरइ रे*,सफल करूं अवतारो रे ।५।मो।
एह मनोरथ जाणिनइ रे, जगगुरु करइ विहारो रे ।
चंपा नयरी थी चल्या रे, उदायन उपगारो रे । ६ ।मो।
वीतभय नगरि समोसर्या र, मृगवन नाम उद्यानो रे।
समवसरण देवइ रच्यु रे, बइठा श्री प्रधमानो रे । ७ ।मो।
राजा वांदवा आवियउ रे, हय गय रथ परिवारो रे ।
पंचाभिगम साचवी र, परम सुखइ सुविचारो रे । ८ ।मो।
प्रतिबूझउ प्रभु देसणा रे,जाण्यउ अथिर ससारो रे ।
बे कर जोडी वीनवइ रे, भवसायर थी तारउ रे । ९ ।मो०।
दई राज अभीचि नइ रे, संजम सुद्ध धरेसो रे ।
प्रभु कहइ देवाणुप्पिया रे, मा पडिबंध करेसो रे ।१०।मो०।

दूहा—

वीर वांदि घर आवियउ, मनि करइ एह विचार ।
इट्ठ कंत पिय माहरइ, अगज अभीचि कुमार ॥११॥
राज काज मइ सौं पणु, मत ए नरकइ जाय ।
पाणि मारोजउ पापियउ, कसी नाम कहाय ॥१२॥
कुमर अभीचि रीसाइ करि, पहुतउ कोणिक पास ।
सुरनर पदवी भोगवी, लहिस्यइ शिवपुर वास ॥१३॥

---

* पाय कमल सेवा करु रे (पाठान्तर सीकरी प्रति)

रिण माहे रिवि मातरइ रे मूक्या गुण पीवाणा रे।
काज सरी सुगति गया रे, विहार मारग जाणो र ॥७॥
[सीकरी वाली प्रति में अधिक]

ढाल—मधुकरनी

आडंबर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर।
श्री वीर सइं हथि दीखियउ, सघी पालइ सीख मुनिवर ॥१४॥
चरम राज ऋषि थिर थयउ, नाम उदायन राय, मुनिवर।
गिरुयां ना गुण गावतां, पातक दूरि पुलाय, मुनिवर ॥१५॥
तप करि काया सोखवी, लीधा अरस आहार, मुनिवर।
रोग सरीरइ ऊपनउ, साधजी न करइ सार, मुनिवर ॥१६॥
औषध वैद्य बतावियउ, दधि सेव्यउ रिषि राय, मुनिवर।
वीतमय पाटण आविया, गोचरि गोपछि जाय, मुनिवर ॥१७॥
राज लेवा रिषि आवियउ, पिशुन उपाडी वात, मुनिवर।
केसी विष दिवरावियउ, कीधउ साध नउ घात, मुनिवर ॥१८॥
साधु परीसउ ते सह्यउ, आण्यउ उत्तम ध्यान, मुनिवर।
कीधी मास संलेखना, पाम्यउ केवल न्यान, मुनिवर ॥१६॥
मुगति पहुँता मुनिवरु, भगवती अग विचार, मुनिवर।
समयसुदर कहइ प्रणमता, पामीजइ भवपार, मुनिवर ॥२०॥

॥ इति श्री उदयन राजर्षि गीतम् ॥२८॥

श्री खंदक शिष्य गीतम्

ढाल—करम मंडित नारी नागिला पहनी

खंदक सूरि समोसर्या रे,
　　पांच सइ मुनि परिवार रे।

पालक पापी घाणी पीलिया रे,
पूरब वइर समार रे ॥१॥ खं०॥
खदग सीस नमु सदा रे,
जिण सारया आतम काज रे।
सबल परिसहउ जिण सहउ रे,
पामियउ मुगति नउ राज रे ॥२॥ खं०॥
अनित्य भावना मनि भावतां रे,
साधु खमा भण्डार रे।
मुनिवर अतगड केवली रे,
पहुंता मुगति मझारि रे ॥३॥ खं०॥
रुधिर भरयउ ओघउ लियउ रे,
समली जाणयउ हाथ रे।
बहिनी आंगण पड्यउ अलोइयउ रे,
आदरयो अरिहत साथ रे ॥४॥ खं०॥
श्री मुनिसुव्रत सामिना रे,
जीव दया प्रतिपाल रे।
समयसुन्दर कहइ एहवा रे,
यांदू वांदू साधु त्रिकाल रे ॥५॥ खं०॥

इति श्री खदग शिष्य गीतम्-

— ० —

श्री गजसुकुमाल मुनि गीतम्

ढाल—गजरा नी—

नयरि द्वारामती आविया जी, कृष्ण नरेसर राय ।
नेमीसर विहां विहरता जी, आव्या त्रिभुवन ताय ॥१॥
कुंयर जी तुम्ह विन घड़िय न जाय ।
बोलइ माता देवकी जी, तुम्ह दीठां सुख थाय ॥कुं ॥आंकणी॥
प्रतिबूधउ प्रभु देसणा जी, जाण्यउ अथिर संसार ।
गयसुकुमाल मुनिसरू जी, लीधउ संजम भार ॥कुं ॥२॥
राति वेदकी चींतवइ जी, जउ किम ऊगइ रे सूर ।
उठ हूं वांदूं बालहउ जी, गयसुकुमाल सनूर ॥कुं०॥३॥
प्रभु वांदी नइ पूछियूं जी, किहां म्हारउ गयसुकुमाल ।
आतमारथ निज साधियउ जी, तिण मुनिवर ततकाल ॥कुं ॥४॥
समसामइ उपसग सही जी, पाम्यु केवल ग्यान ।
मुगति पहुंता मुनिवरू जी, समयसुन्दर तसु ध्यान ॥कुं०॥५॥

इति श्री गयसुकुमाल गीतम् ॥१॥

श्री थावच्चा ऋषि गीतम्

ढाल—जगनी मन भारग थयी, पहूनी

नगरी द्वारिका निरखियइ, देवलोक समानो ।
थावचा सुत तिहां वसइ, पुण्यवंत प्रधानो ॥१॥

रिधि थावचउ रूयडउ, उत्तम अणगारो।
गिरुया ना गुण गावतां, हियडइ हरप अपारो ॥२॥रि०॥
बत्तीस अंतेउर परिहरचउ, भोगवइ सुख सारो।
नेमि समीपइ संजम लियउ, जाण्यउ अथिर ससारो ॥३ रि०॥
बत्तीस अंतउर परिहरी, लीधउ संजम भारो।
तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारो ॥४। रि०॥
सेत्रुंजा ऊपरि चढी, संथारा काधा।
समयसुन्दर कहइ साधु जी, [1]मोर्दँ सइ सीधा ॥५। रि०॥

च्यार प्रत्येक बुद्ध—

श्री करकण्डु प्रत्यक बुद्ध गीतम्

राग—नदियारे साजण मिल्या हुं वारी।

चंपा नगरी अति भलि हुं वारी,
            दधिवाहन भूपाल रे हुं वारी लाल।
पद्मावती कुखि ऊपनउ हुं वारी,
            करमइ कीधउ चंडाल रे हुं वारी लाल ॥१॥
करकंडु नइ करूं वंदना हुं वारी,
            पडिबूझउ प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल। आंकणी।
गिरुया नां गुण गावतां हुं वारी,
            समकित थायइ सुद्ध रे हुं वारी लाल ॥क०।२॥

---

१ सेत्रुंजा

साधी वांस नी साकडी हु वारी,
पयउ कंचनपुर राय रे हु वारी लाल।
बाप सु संग्राम मांडियउ हु वारी
साधवी लियउ समझाय रे हु वारी लाल ॥क०।३॥
वृषभ सरूप देखी करी हु वारी,
प्रतिबोध पाम्यउ नरेस रे हु वारी लाल।
उत्तम संयम आदरयउ हु वारी,
देवता दीधउ वेस रे हु वारी लाल ॥क० ४॥
करम खपावी मुगति गयउ हु वारी,
करकंडू रिषि राय रे हु वारी लाल।
समयसुन्दर कहइ ए साधनइ हु वारी,
प्रणम्यां पाप पुलाय रे हु वारी लाल ।क०।५॥

इति श्री करकंडू प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥४०॥

श्री दुमुह प्रत्येक बुद्ध गीतम्
ढाल—पिउ चीम्यु चालु रामला रे।

नगरी कंपिला नउ धणी रे, जय राजा गुण जाण ।
न्याय नीति पालइ प्रजा रे, गुणमाला पटराणि रे ॥१॥
दुमुह राय वांदउ प्रत्येक बुद्ध ।
वयरागइ मन वालियउ रे, संयम पालइ सुद्ध रे ॥दु०।आंकणी॥
धरती खणतां नीसरयउ रे, मुगट एक अभिराम ।

बीजउ मुख प्रति बिंबियउ रे, दुमुह थयउ तिम नाम रे ॥२॥ दु०॥
मुगट सेवा मणी मांडियउ रे, पएडमधोत सप्राम ।
पखि अन्याय कुर्मीलियउ रे, किम सरइ तहनउ काम रे ॥३॥ दु०॥
इन्द्रधज अति सिणगारीयउ र, जोतां तृप्ति न थाय ।
सहस्र लोक सेवइ रमइ र, महुच्छव मांडयउ राय रे ॥४॥ दु०॥
गईज इन्द्रधज दखीयउ रे, पड्यउ मल मूत्र मभ्कार ।
हा ! हा ! शोभा कारिमी रे, ए सहु अथिर ससार रे ॥५॥ दु०॥
वयरागइ मन वालियु रे, लीधउ सयम भार ।
तप सप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार रे ॥६॥ दु०॥
बीजउ प्रत्येक बुद्ध ए रे, दुमुह नाम रिषिराय ।
समयसुंदर कहइ साधना रे, नित नित प्रणमु पाय र ॥७॥ दु०॥

इति दुमुह नाम द्वितीय प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥२॥

श्री नमि प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—नस राजा रइ दमि हो जी पूगल हु ती पतागिया

नयर सुदरसण राय हो जी,
    मणिरथ राज करइ तिहां ।
करयउ सबल अन्याय हो जी,
    जुगबाहु बधव मारियउ लाल ॥जु०॥१॥
मयणरहा गई नासि होजी,
    आपउ पुत्र ठजाड़िमइ ।

पड़ीय विद्याधर पासि हो जी
पणि सील राख्यउ मयणरेहा सारु ॥प०॥२॥

पथरय भूपाल हो जी,
पोढ़इ अपहरयउ आपियउ ।
तिस रे लीघउ बाल हो जी,
पुत्र पाली पोढ़उ कियउ सार ॥पु०॥३॥

शत्रु नम्या सहु आय हो जी,
नमि पढ़वउ नाम आपियउ ।
थयउ मिथिला नउ राय हो जी,
सहस अंतेउरि सु रमइ सार ॥स०॥४॥

दाह ज्वर थयउ देह हो जी,
करम थी को छूटइ नहीं ।
थिर मडु रिषि एह हो जी,
नमि राजा संयम लीयउ सार ॥न०॥५॥

इन्द्र परीस्यउ आय हो जी,
चढ़ते परिणामे चढ्यउ ।
प्रणम्यां जायइ पाप हो जी,
समयसुंदर कहइ साधनइ ॥स०॥६॥

इति श्री तृतीय प्रत्येक बुद्ध नमि गीत ॥४३॥

—:०—

श्री नमि राजर्षि गीतम्

जी हो मिथिला नगरी नउ राजियउ,
जी हो हय गय रथ परिवार ।
जी हो राज लीला सुख भोगवइ,
जी हो सहस रमणी भरतार ॥ १ ॥
नमि राय धन धन तुम अणगार ।
इन्द्र प्रशंसा इम करी जी हो,
पाय प्रणमइ वार वार ॥ नमि०॥ आंकणी
जी हो एक दिवस तिहां ऊपनउ,
जी हो पूरव करम संयोग ।
जी हो अगनि तणी परि आकरो,
जी हो समल दाह ज्वर रोग ॥नमि०॥ २ ॥
जी हो चंदन मरिय कचोलड़ी,
जी हो कामिनो लगावइ काय ।
जी हो खलकइ चूड़ी सोना तणो,
जी हो शब्द कने न सुहाइ ॥नमि०॥ ३ ॥
जी हो एक रहाय मगल भणी,
जी हो राख्या रमणी बाँहि ।
जी हो इम एकाकी पणउ भलउ,
जी हो दुख मिल्यां जग मांहि ॥नमि०॥ ४ ॥

जी हो जाति समरण पामियउ,
    जी हो लीधउ संजम भार ।
जी हो राज रमणी सवि परिहरी,
    जी हो मणि माणिक भंडार ॥नमि०॥ ५ ॥
जी हो रूप करी मासण तणउ,
    जी हो इन्द्र परीख्यउ सोय ।
जी हो चढ़ते परिणामे चढ़यउ,
    जी हो सोनउ श्याम न होय ॥नमि०॥ ६ ॥
जी हो उत्तराध्ययनइ एह छइ,
    जी हो नमि राजा अधिकार ।
जी हो समय सुंदर कहइ वांदतां,
    जी हो पामीजइ भव पार ॥नमि०॥ ७ ॥

श्री नग्गाइ चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—कासहरे नी

पुंडवधन पुर राजियउ म्हांकी सहियर,
        सिंहरथ नाम नरिंद हे ।
एक दिन घोड़इ अपहर्यउ म्हांकी सहियर,
        पहुंतउ अटवी वृन्द हे ॥ १ ॥
परवत उपरि पेखियउ म्हांकी सहियर,
        मात भूमियउ आराम हे ।

कनकमाला विद्याधरी म्हांकी सहियर,
परणी प्रेम उल्हास हे ॥ २ ॥
नगर मझि राजा नीसरयउ म्हांकी सहियर,
नग्गई नामि कहाय हे ।
मारग मइ आंबउ मिल्यउ म्हांकी सहियर,
मांजरि रही महकाय हे ॥ ३ ॥
कोमल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहियर,
सुंदर फल फूल पान हे ।
राजा एक मांजरी ग्रही म्हांकी सहियर,
तिम मत्री परधान हे ॥ ४ ॥
वलतइ राजा त वली म्हांकी सहियर,
ठूंठ दीठउ त वीखाय हे ।
सोमा सगली कारिमी म्हांकी सहियर,
खिण मांहे खेरु थाय हे ॥ ५ ॥
आतो समरथ पामियउ म्हांकी सहियर,
सजम पालइ शुद्ध हे ।
समयसुंदर कहइ साध जी म्हांकी सहियर,
चउथउ परतेक बुद्ध हे ॥ ६ ॥

इति नग्गई चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥ ४३ ॥

— o —

च्यार प्रत्येक बुद्ध सलग्न गीतम्

ढाल—साहेली हे आंबलउ मउरीयउ, एह गीतनी ।

चिहुं दिशि थी च्यारे आवीया,
समवसरइ हे एक देहरा मांहि ।
सहेली हे वांदउ रूडा साधजी,
जिण वांद्या हे आवइ मनमना पाप ॥ सहे०॥

एक पउमुख थयउ आखि नइ,
मत आवइ हे मुझ पूठि कं वांहि ।
करकंडू विरथउ कहीयउ,
करला थी हे खाजि खणवा काजि । स० ।

दुमुख कहइ माया भली,
राखी कां हो छोड्यउ सगलउ राज ॥स०।२॥

नमि कहइ निंदा कां करइ,
निंदा ना हो बोल्या मोटा दोष ।
नगगई कहइ निंदा नहीं,
हित कहितां हो हुवइ परम संतोष ॥स०।३॥

समकाले च्यारे चव्या,
समकाले ह थया कुल सिणगार ॥ स० ॥
समकालइ संयम लीयउ,
समकाले ह गया मुगति मझार ॥स०।४॥

उत्तराध्ययने ए कह्यउ,
सूत्र मांहि हे च्यारे प्रत्येक बुद्ध । स० ।
समयसुन्दर कहइ मइ साधना,
गुण गाया हे पाटण पर सिद्ध ॥स०।५॥

श्री चिलातीपुत्र गीतम्

पुत्री सेठ धन्ना तणी, सुसुमा सुन्दर रूपो रे ।
चिलातीपुत्र करइ कामना, जाण्यउ सेठ सरूपो रे ॥१॥
चिलातीपुत्र चित्त मांहि वस्यउ, उपसम रस भडारो रे ।चि०।
निकस्त मेल तणी परइ, घर धीर सुविचारो र ॥२।चि०॥
सेठ नगर थी काढ़ियउ पल्लीपति थयउ चोरो रे ।
पांचसइ चोरां सुँ परिवरयउ, करम करइ कठोरो रे ॥३।चि०॥
एक दिवस मारी सुसुमा, मस्तक हाथ मां लीधउ रे ।
साधु समीपे धर्म सुणी, मस्तक नांखी दीधउ रे ॥४।चि०॥
उपसम विवेक संवर धरयउ, काउसग मांहि कीड़ी परोग्यउ रे ।
काया कीधा चालणी, तो पण मन नवि डोल्यउ रे ॥५।चि०॥
दिवस अढ़ी वेदना सही, आठमउ देवलोक पावइ रे ।
चिलातिपुत्र ऋषि चिर जीवउ, समयसुन्दर गुण गावइ रे ॥६।चि०॥

—:०—

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

नगरी राजगृह मांहि वसइ रे, सेठ ऋषभदत्त सार।
धारणी माता जनमियउ रे, जम्बू नाम कुमार ॥ १ ॥
जीवन जी प्रणमइ तू आधार।
मेल्ही कोड़ी नीनरा रे, अबला आठे नार ॥ जी ॥ आंकणी ॥
यौवन भर मांहि आवियु रे, मेल्यु वैरागमाल।
आठ कन्या अति रूपड़ी रे, परणी प्रेम रसाल ॥ जी ॥ २ ॥
तिण अवसर तिहां आविया रे, गणधर सोहम साम।
चतुर चौपु मत आदरयउ रे, कीधउ उत्तम* काम ॥ जी ॥ ३ ॥
गुरु वांदी घर आवियउ रे, मांगइ मत आदेश।
मात पिता परणावियउ रे, बोरे करिय किलेस ॥ जी ॥ ४ ॥
आठ कन्या स्यु आवली रे, आव्यउ निशि आवास।
हाव भाव विभ्रम करइ रे, बोलइ वचन विलास ॥ जी ॥ ५ ॥
आ जोवन आ संपदा रे, आ प्रेम अंकुर वइ।
भोग पनोता भोगवउ रे, निपट न दीजइ छेह ॥ जी ॥ ६ ॥
तन धन यौवन कारमु रे, जवा मा येरू थाय†।
काम भोग फल पाइया रे, दुर्गति ना दुख दाय ॥ जी ॥ ७ ॥
प्रभोधर करि परगड़उ रे, प्रतिबोधी निज नार।
प्रभवो चोर प्रतिबूझव्यउ रे, पांच सयां परिवार ॥ जी ॥ ८ ॥

* दुक्कर। † खिण मांहि विणसी जाय।

आठ अंतेउर परिहरि रे, कनक निवाणु कोड़ ।
संयम मारग आदर्यउ रे, माया बंधन छोड़ ॥ जी ॥ ६ ॥
मात पिता कन्या मिली रे, प्रभवो आप जगीस ।
दीक्षा लीधी सामठी रे, पांच सउ अठावीस ॥ जी ॥१०॥
जंबू सामि नी जोड़ली रे, को नहं इण संसार ।
ब्रह्मचारी चूड़ामणि रे, नाम तणाइ बलिहार ॥ जी ॥११॥
जंबू केवल पामियउ रे, पाम्यउ अविचल ठाम ।
समयसुन्दर कहइ हूँ सदा रे, नित नित करु य प्रणाम ॥जी ॥१२॥

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

जाऊं बलिहारी जंबू स्वामि नी रे, जिण तजी कनक नी कोड़ि रे।
आठ अंतेउरी परिहरी रे, चरण नमुं कर जोड़ि रे। जा ।१।
यौवन भर जिण आणियउ रे, एह संसार असार रे ।
संयम रमणी आदरी रे, मुनिवर बाल ब्रह्मचारि रे । जा ।२।
जिण प्रभवो प्रतिबूझियउ रे, पांचसइ चोर परिवार रे।
केवल ज्ञान पामी करी रे, पहुतउ भव तणउ पार रे । जा ।३।
जंबू सौभागी जोयउ तुम्हे रे, मुगति नारी वरयउ जोय रे।
मन गमतउ वर पामियउ रे, अवर न वांछइ बीजउ कोय रे। जा ।४।
धारिणी माता ऊ यरू रे, सुधरम स्वामि नो सीस रे ।
समयसुन्दर कहइ साधुना रे, हुं नाम जपूं निशदीस रे। जा ।५।

इति श्री जंबू स्वामी गीतम् ॥ ३५ ॥

श्री ढंढण ऋषि गीतम्

ढाल—धन धन अवंती सुकुमाल नइ—ए देशी

नगरी अनोपम द्वारिका, सोवी जोयण बारो जी।
इन्द्र नीमी अति दीपति, सरगपुरी अवतारो जी। १।
धन धन श्री ढंढण रिषि, नेमि प्रशस्यउ जेहो जी।
अभ्राम परिमउ जिण सह्यउ, दुरजल कीधी देहो जी। २। ध।
राज करइ तिहां राजियउ, नवमउ श्री वासुदेवो जी।
बत्तीस सहस अंतउरी, सुख भोगवइ नित मेवो जी। ३। ध।
ढंढणा राणी जनमियउ, नामइ ढंढण कुमारो जी।
राजलीला सुख भोगवइ, देवकुमर अवतारो जी। ४। ध।
नेमि जिणिंद समोसरया, वांदिवो गयउ वासुदेवो जी।
ढंढण कुमर साथि गयउ, सहु वांदी करइ सेवो जी। ५। ध।
इंद नेमीसर देसणा, ए संसार असारो जी।
जनम मरण बंदन घणा, दुख दीयउ भंडारो जी[1]। ६। ध।
ढंढण कुमर हलूकमउ प्रतिबूधउ वइरागो जी।
नमि मनीषि मन्नम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी। ७। ध।
नगरी मांहि विहरण गयउ, पणि न मिल्यउ आहारो जी।
बकर जोड़ी चीनवइ, कहउ मामी इस प्रकारो जी। ८। ध।

---

[1] कुटुम्ब सहु को कारिमु पछइ इह परम आधारो जी (पाठां)।

सुझनइ आहार मिलइ नहीं, द्वारिका रिद्धि समृद्धो जी।
साधना भगत आदर सह, मुझ गुरु बाप प्रसिद्धो जी।९। ध।
सुणि ढंढण रिषि साधु तु, माखइ श्री भगवंतो जी।
कीधा करम न छूटियइ बिण भोगव्यां नहीं अंतो जी।१०। ध।
पाछिलइ भवि तु वांभण हुतउ, अधिकारी दुख दायो जी।
पांचसइ हाली नइ सह कीयउ, अम पापी अंतरायो जी।११। ध।
ढंढण रिषि मयाइ हुँ हिव, परकौ लबधि आहारो जी।
लेसु नहीं ममम्यु सदा, करमनउ करिस्यु सहारो जी।१२। ध।

(२) ढाल बीजी—नेमि समीपइ रे संयम आदरयउ, एहनी

इण अवसरि श्री कृष्ण नरसरू,
प्रसन करइ कर जोड़ो जी।
अढारह सहस मइं कुण अधिक जती,
जेहनी नहिं कोई जोड़ो जी।।१।।
अढारह सहस मांहि अधिक ढंढण जती,
माखइ श्री भगवंतो जी।
सघल अभाम परीसउ जिया सहउ,
करिव करम नो अंतो जी।।२।। अढा०।।
वासुदेव प्रभु वांदि नइ सन्यउ,
द्वारिका नगरी मझारो जी।
मारग मइं ढंढण मुनिवर मिल्यउ,
गोचरी गयउ अणगारो जी।।३।। अढा०।।

हरि बांधउ हाथी थी ऊतरी,
विप्रह प्रणिपत्य दीधो जी ।
कृष्ण महाराज परससा करी,
जन्म सफल सहू कधो जी ॥४॥ मदा० ॥

त्रैलोक्यनाथ तीर्थंकर वादरू,
भी मुख करइ वखाणो जी ।
तू धन्य तू कृतपुण्य मोटो अछी,
जीवित जन्म प्रमाणो जी ॥५॥ मदा० ॥

कृष्ण ना मनियाउन देखि करी
मडक नइ थयो माणो जी ।
मिह कमरिया मोदक सूमता,
पडिलाभ्या मत्ताणो जी ॥६॥ मदा० ॥

ढंढण रिपि पूछय भगवन्त नइ,
अभिग्रह पूगउ मुज्फो जी ।
कृष्ण तणी ए लब्धि कहीजियइ,
लब्धि नहीं ए तुज्फो जी ॥७॥ मदा० ॥

पारकी लब्धि न लऊ लाड्या,
परिठवतां परथउ ध्यानो जी ।
चूरंतां ध्यारे कर्म चूरियां
पाम्यु केवल न्यानो जी ॥८॥ मदा ॥

सुगति पहुँता अनुक्रमि मुनिवरु,
श्री ढंढण रिषि रायो जी।
समयसुन्दर कहइ हूँ ए साधना,
प्रतिदिन* प्रणमु पायो जी ॥६॥ महा० ॥

इति श्री ढंढण ऋषि गीतम् ॥ ६ ॥ सर्वगाथा २१

श्री अमदावाद पार्श्ववर्त्तिनि ईदलपुरे नगरेमध्ये चतुर्मासी कृत्वा मासकल्पस्थितै: श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायै कृतं लिखितं च सं० १६६२ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १ दिने ॥४४॥ †

—१० —

श्री दशारण भद्र गीतम्

राग—रामगिरी जाति—कडखानी ।

मुगध जन वचन सुणि राय चित चमकियउ,
अहो अहो देव नउ राग देखउ।
हूँ महावीर नइ तेम वांदीसि जिम,
किण न वांद्या तिण परठि पेखउ ॥१॥
धन्य हो धन्य हो राजा दसारण तूँ,
आपणउ मोह परमार्थ पाल्यउ।

* नित नित । †(बीकानेर भंडार प्रति)

लोच करि आप हरं धार सयम लीयउ,
इन्द्र नइ आयि पाये लगाड्यउ ॥२॥च०॥
नगर सिणगार चतुरंग सेना सजी,
पांच सइ महुत्त परिवार सेती ।
आप आगइ बतीस बद्ध नाटक पडइ,
हइ वाजइ कहूं बात केती ॥३॥च०॥
आवियउ इंद्र अभिमान उतारिवा,
अनंत गुण भी अरिहंत एहइ ।
इन्द्र चउसठि एकठा मिली संस्तवइ,
पार न लहइ तउ गान केहइ ॥४॥च०॥
एक हाथी तणइ आठ दंतूसला,
दंत दंत आठ आठ वावि सोहइ ।
वावि-वावि आठ आठ कमल तिहां,
आठ आठ पांखडी पेखतां मन मोहइ ॥५॥च०॥
पत्र पत्रइ बतीस बद्ध नाटक पडइ,
कमल विचि इंद्र बइठउ आणन्दइ ।
आठ वलि आगलि अग्र महिषी खडी,
वीर नइं एण विधि इंद्र वांदइ ॥६॥च०॥
इन्द्र नी रिद्धि देखी करी एहनी,
हूँ किसइ गानि राजा विचारयउ ।
राज नइ रिद्धि सहु छोडि संजम लीयउ,
इन्द्र महाराज आगइ न हारयउ ॥७॥च०॥

इन्द्र वांदी प्रसंसा करी एहवी,
धन्य कृतपुण्य तू साध मोटउ ।
आपणउ जन्म जीवितव्य सफलउ कीयउ,
आगम्यउ बोल कीधउ न कोन्ड ॥८॥ध०॥

दसणभद्र करम खय करिय सुगति गयउ,
एह अभिमान साधउ करीजइ ।
समयसुन्दर कहइ उत्तराध्ययन मइ,
साधना नाम थी निस्तरीजइ ॥९॥ध०॥

श्री धन्ना (काकंदी) अणगार गीतम्

सरसति सामण वीनवु, मागू एकज सार ।
एक जीभे हु किम कहूँ, एहना गुण नो नहीं पार ॥ १ ॥
गुणवंत ना हुँ गुण स्तवु, धन धन्नउ अणगार ॥ आंकणी ॥
निरदोष नासीजतो लीइ, पट काया आधार ॥गु०॥ २ ॥
सुख संयम सीमो नहीं, जग मांहि तत्त्व सार ।
जन्म मरण दुख टालवा, लीधउ संजम भार ॥गु०॥ ३ ॥
बत्रीसइ रंभा तजी, जोम्यउ यौवन वेस ।
विकट थारी दोय वरा कया, श्री जिनवर उपदेश ॥गु०॥ ४ ॥
मयण दरा छोड ना घणा, किम मानस्यै कज ।
मरु मामर करी पालवू, खड्गधार हो पथ ॥गु०॥ ५ ॥

शरीर सुभूषा नवि करइ, वाध्या नख नइ केस ।
मुनिवर आठे मद गालिया, विषय नहीं लवलेस ॥ गु ॥ ६ ॥
हाड हींडतां खड खडइ, कम्पा काग नी जंघ ।
सरीर संतोपे सुक्यउ, न फीयउ व्रत भंग ॥ गु० ॥ ७ ॥
नसा जाल सवि ऊपडी, सुकयउ लोही नइ मांस ।
बावीस परिसह ओपमा, रह्यउ वन वास ॥ गु० ॥ ८ ॥
आंखि ऊ डी तारा जगमगइ, सुरतरु सुरभी कान ।
सुकी आंगली मग नी फली, पग जिम सूकउ पान ॥ गु० ॥ ६ ॥
श्रेणिक भी जिन वांद नइ, प्रश्न पूछइ ज एह ।
कुण तपसी तप आगलउ, मुझ नइ कहउ तेह ॥ गु० ॥ १० ॥
साधु शिरोमणि जाणियइ, धन धन्नउ अणगार ।
आठ कर्म करमे मरी, कढी नांखइ सइ बाहर ॥ गु० ॥ ११ ॥
मणिक हींडइ वन सोधतो, देख्यूं भूलों रूप ।
एक खोल्यु जेहवु सर्प सु, वेहवु दीठ सरूप ॥ गु ॥ १२ ॥
ऊठ कोडी रोम ऊलस्या, हुई सफल ते यात्र ।
त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, भावे वंदइ हो पात्र ॥ गु० ॥ १३ ॥
मास एक अणसण करी, ध्यायउ शुक्ल ते ध्यान ।
नव मासे कर्म खपेवी, पाम्यु अनुत्तर विमान ॥ गु ॥ १४ ॥
करि काउसग्ग कर्म खपेवी, यति धारण हो तरण ।
समयसुंदर कहइ एहनु, मुझ नइ साधु जी नउ शरण ॥ गु० ॥ १५ ॥

धन्ना (काकन्दी) अणगार गीतम्

वीर जिणंद समोसर्या जी, राजगृही उद्यान ।
समवसरण सुरवर रच्यउ जी, बइठा श्री भगवान ॥१॥
जग जीवन वीरजी, कउण तुमारउ सीस ।
आप तरइ अउर तारइ जी, उग्र तप धरइ निशदीस । श्री । ज ।
प्रभु आगमन सुणी करी जी, श्रेणिक हरष अपार ।
प्रभु पय वदन आवियउ जी, हय गय रथ परिवार ॥२॥ ज०॥
श्रेणिक प्रभु देसना सुणी जी, प्रश्न करइ सुविचार ।
चउद सहस अणगार मइं जी, कउण अधिक अणगार ॥३॥ ज०॥
काकंदी नगरी वसइ जी, भद्रा मात मल्हार ।
संयम रमणी आदरी जी, जाणी अथिर संसार ॥४॥ ज०॥
छठ तप आंबिल पारणइ जी, उज्झित लियइ आहार ।
माया ममता परिहरि जी, दह दीपइ आचार ॥५॥ ज०॥
सील दुविध पालइ भली जी, शम दम संयम सार ।
तप जप प्रमुख गुणे करी जी, अधिक धन्नउ अणगार ॥६॥ ज०॥
धन्नउ नाम सुणी करी जी, हरख्यउ श्रेणिक राय ।
त्रिण प्रदिक्षणा दइ करी जी, वांदइ मुनिवर पाय ॥७॥ ज०॥
नवमइ अंगइ ए अछइ भां, धन्ना नउ अधिकार ।
सोहम सामी उपदिस्यउ जी, समय नइ हितकार ॥८॥ ज०॥

एहवा मुनिवर वांदियइ जी, परख कमल चित लाय।
समयसुंदर गरुड़[1] मबइ जी, निरुपम शिव सुख थाय ॥६॥ ज०॥

इति धन्ना अणगार गीतं सम्पूर्णं।

श्री प्रसन्न चन्द्र राजर्षि गीतम्

ढाल—तपोधन रूडा रे, भमरा ना गीतनी।

मारग मइ मुनइ मिल्यउ रिषि रूडउ रे,
　　साधु निग्रंथ रिषीसर रूडउ रे।
उतकष्टी रहणी रहइ रिषि रूडउ रे,
　　साधतउ मुगति नउ पथ रिषीसर रूडउ रे॥ १॥
एकइ पग ऊभउ रहउ रिषि रूडउ रे,
　　सरिस सामी दृष्टि रिषीसर रूडउ रे।
बोलायउ बोलइ नहीं रिषि रूडउ रे,
　　ध्यान धरइ परमेष्टि रिषीसर रूडउ रे॥ २॥
कहइ श्रेणिक सामी कहउ रिषि रूडउ रे,
　　मउ मरइ तउ जाइ केथि रिषीसर रूडउ रे।
सामी कहइ जाइ सातमी रिषि रूडउ रे,
　　तीव्र वेदना छइ यथि रिषीसर रूडउ रे॥ ३॥
देव की वाजी दुंदुभि रिषि रूडउ रे,
　　उपनू केवल ग्यान रिषीसर रूडउ रे।

---

[1] मर्गाद

भेणिक नइ समझावियउ रिपी रूडउ रे,
अशुभ मनइ शुभ ध्यान रिपीसर रूडउ रे ॥ ४ ॥
प्रसन्नचन्द्र सरिखउ मिलइ रिपी रूडउ रे,
तउ हूँ तरू ततकाल रिपीसर रूडउ रे ।
दूसम कालइ दोहिलउ रिपी रूडउ रे,
समय सुंदर मन वालि रिपीसर रूडउ रे ॥ ५ ॥

इति श्री प्रसन्न चन्द्र रिपीसर गीतम ॥ ४५ ॥

श्री प्रसन्न चन्द्र राजर्षि गीतम्

राग—वेगि विहरण थाज्यो घरे ।

प्रणम चंद प्रणमु तुम्हारा पाय, तुम्हे अति मोटा रिपीराय ।
॥प्र०॥ आंकणी ॥
राज छोड्यउ रलियामणो तुम जाणयउ अथिर ससार ।
वयरागे मन वालियु तुमे लीधउ सयम भार ॥प्र ॥१॥
वन मांहे काउसग्ग रह्या पग ऊपर पग चाडइ ।
बांह बेऊं ऊंची करी सूरिज सामी दृष्टि दइ ॥प्र ॥२॥
दुरमुख दूत वचन सुणी तुम कोप चढ्या ततकाल ।
मन सुं सग्राम मांडियउ तुम जीव पड्यउ जजाल ॥प्र ॥३॥
भेणिक प्रश्न करयु तिसे स्वामी एहनइ कुण गति थाइ ।
भगवंत कहइ हिवणां मरइ तउ सातमी नरक जाइ ॥प्र ॥४॥

थण इक अतर पूछियउ सवार्थ सिद्ध विमान ।
वाणी देव की दुंदुभी ए पाम्यउ केवल ज्ञान ॥प्र.॥५॥
प्रसन चंद्र मुगते गयो श्री महावीर नउ शिष्य ।
समयसुंदर कहइ धन्य ए जिण दीठा प्रत्यक्ष ॥प्र ॥६॥

श्री बाहूबलि गीतम्

तक्षसिला नगरी रिषभ समोसर्या रे,
सोम्ह समइ वन मांहि ।
वनपालक दीधी वद्धामणी रे,
बाहूबलि अधिक उच्छाहि ॥ १ ॥
वांदूं वांदूं रिषभजी रिद्धि विस्तार सुं रे,
प्रह उगमतइ सूर ।
बाहूबलि रयणी इम चिंतवइ रे,
अति घणउ आणंद पूर ॥ २ ॥ वां० ॥
पवन तणी परि प्रतिबंध को नहीं रे,
आदि जिन विचरया अनेथि ।
बाहूबलि आम्यउ आडंबर करी रे,
नयण न देखइ केथि ॥ ३ ॥ वां० ॥
मणिमय पीठ मनोहर कर्युं रे,
तात भगति अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ तीरथ तिहां थयुं रे,
बोगा अदिम नाम ॥ ४ ॥ वां० ॥

इति श्री बाहूबलि गीत ॥ २६ ॥

(२) श्री बाहुबलि गीतम्

राग—काफी

राज तणा अति लोभिया, भरत बाहुबलि जूझइ रे।
मूँठि उपाडी मारिवा, बाहुबलि प्रतिबूझइ रे ॥१॥
बांधव गज थी उतरउ, ब्राह्मी सुन्दरी भासइ रे।
रिषभदेव ते मोकली, बाहुबलि नइ पासइ रे ॥२॥ बां ॥ आंकणी॥
[वीरा म्हारा गज थकी उतरउ, गज चढ्यां केवल न होइ रे वी]
लोच करी संजम लीयउ, आयउ वलि अभिमानो रे।
लघु बांधव बांदूं नहीं, काउसग्ग रह्यउ शुभ ध्यानो रे ॥३॥ बां ॥
बरस सीम काउसग रह्यउ, वेलड़िए वींटाणउ रे।
पंखी माला मांडिया, सीत तावड़ सोसाणउ रे ॥४॥ बां ॥
साधवी वचन सुणीकरी, चमकयउ चित्त विचारइ रे।
हय गय रथ सवि परिहर्या, पणि चढ़यउ हूँ अहंकारो रे ॥५॥ बां ॥
वयरागइ मन वालियउ, मूँकयउ निज अभिमानो रे।
पग उपाडयइ वांदिवा, पाम्यउ केवल न्यानो रे ॥६॥ बां ॥
पहुता केवलि परषदा, बाहुबलि रिषिराया रे।
अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वांदइ पाया रे ॥७॥ बां ॥

इति भरत बाहुबलि गीतम् ॥ २७ ॥

———

श्री भवदत्त—नागिला गीत

ढाल—साधु नइ वहिरावु ... रे।

भवदत्त भाई घरि आवियउ रे,
प्रतिबोधिवा मुनिराय रे।
नव परणी मूकी नागिला रे,
भवदेव वांदइ मुनि पाय रे ॥१॥

अरध मंडित नारी नागिला रे,
सांभरइ म्हारा हियडला मांहि रे।
भवदत्त मारगइ मुनइ मोकल्यउ,
लाजइ लीधउ संजम भार रे ॥२॥ अ०॥

हाथे दीधु घी नु पातरु,
मुझनइ आपेरउ वउलावि रे।
इम करि गुरु पासि लेई गयउ,
गुरुजी पूछ्युं संजम नउ छइ भाव रे ॥२॥ अ०॥

लाजइ नाकारउ नवि कर्यउ,
दीक्षा लीधी भाई बहु मानि रे।
बार बरस व्रत मांहि रह्यउ,
हीयडइ धरतउ नागिला नउ ध्यान रे ॥४॥ अ०॥

हा! हा! मूरिख मई स्युं कर्युं,
कांय पड्यउ कष्ट मझारि रे।

चंद वदनी मृग लोयणी रे,
विल विलती मुकी नारि रे ॥५॥ भ० ॥
मवदत्त मागइ चित्त आवियउ,
पिय ओलख्यों पूछइ वात रे।
कहउ कोई जाणइ नारि नागिला रे,
किहाँ वसइ केही छइ घात रे ॥६॥ भ० ॥
नारि कहइ सुणि साध जी,
सम्यउ न लेयइ कोई आहार रे।
गज घडी सर कोई नवि घडइ,
तिम व्रत छोडी नइ नारि रे ॥७॥ भ० ॥
नागिला नारि प्रति बूझव्यउ,
वयराग धरयउ मुनिराय रे।
भवदत्त देवलोक पामियउ,
समयसुन्दर वांदइ पाय रे ॥८॥ भ० ॥

इति भवदेव गीतम् संपूर्णम् ॥ २८ ॥

श्री मेतार्य ऋषि गीतम्

नगर राजगृह मांहि वसउ जी, मुनिवर उग्र विहार ।
ऊंच नीच कुल गोचरी जी, सुमति गुपति पद्म सार ॥१॥
मवारज मुनिवर बलिहारी हूँ तोरइ नामि ।
उत्तम करणी तइ करी जी, त्रिकरण करू रे प्रणाम ॥म ।आंकणी।

सोवनकार घर आंगणइ जी, मुनिवर पहुतउ जाम ।
आहार मस्यो ते मांहि गयउ जी, क्रौंच गल्या जव ताम ।।मे ।।२।।
सोवनकार कोपइ चढ्यउ जी, ए मुनिवर नइ दोष ।
नाना विध उपसर्ग करइ जी, ऋषि मनि नाणइ रोष ।।मे ।।३।।
वाध्र सुं मस्तक वींटीयउ जी, निविड बंधन मइ मीड ।
त्रटकि आंख त्रूटी पडी जी, प्रबल प्रकट थई पीड ।।मे ।।४।।
क्रौंच जीव करुणा मस्यो जी, उपशम धरयउ शुभ ध्यान ।
अनित्य भावना भावतां जी, पाम्यउ केवल ज्ञान ।।मे ।।५।।
अंतगड थयो केवली जी, पाम्यउ भव नउ पार ।
अजरामर पदवी लही जी, सासता सुक्ख अपार ।।मे ।।६।।
श्री मेतारज मुनिवरू जी, साध गुणे अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ माहरो जी, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम ।। मे ।।७।।

इति मेतार्य ऋषि गीतम् प समयसुन्दर लि भाविका माता पठ

श्री मृगापुत्र गीतम्

सुग्रीव नगर सोहामणु रे, बलभद्र राजा ताम ।
मिरगां माता जनमियउ रे, मृगापुत्र सुप्रताप ।। १ ।।
कुंयर कहइ कर जोडि नइ रे, हूँ किम दीक्षा लेम ।।मा ।।आं।।
गउख उपरि बइठउ थकउ रे, एक दीठउ अणगार ।
जाती समरण ऊपनुं रे, ए संसार असार ।। मा ।२।।

तन धन जोवन कारिमु रे, खिण मांहि छेह थाइ ।
कुटुम्ब सहु को कारिमु रे, जीवित हाथ मई जाइ ।। मा ।।३।
दीधा छइ पुत्र दोहिली रे, तूं तउ अति सुकुमाल ।
किम परिस्यइ ए कामिनी रे, बापड़ी अबला बाल ।। मा ।।४।।
कारिमि ए छइ कामिनी रे, हु शिव रमणी परणीसि ।
घर धीर नइ सोहिलुं रे, हुं मग परिशा परणीसि ।। मा ।।६।।
माता नउ आदेस ले रे, लीधउ संजम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार ।। मा ।।६।।
मृगापुत्र मुगति गयउ रे, उत्तराध्ययन मझार ।
समयसुन्दर कहइ हूं नमु र, ए मोटउ अणगार ।। मा ।।७।

इति मृगापुत्र गीतम् ।। ४१ ।।

मघरथ (शान्तिनाथ दसम भव) राजा गीतम्

दसमइ भव श्री शांति जी,
मेघरथ जिनदा राय, रूड़ा राजा ।
पोसहशाला मंइ एकला,
पोसह लियउ मन भाय, रूड़ा राजा ।।१।।
धन धन मेघरथ राय जी,
जीव दया गुण खाण धर्मी राजा ।।आंकणी।।
इशानाधिप इन्द्र जी,
वखाण्यउ मेघरथ राय, रूड़ा राजा ।

घरमे चलायउ नवि चलइ,
  मास्तुर देवता आय रूडा राजा ॥ २ ।।घ०।।
पारेवउ सींचाणा मुखे भवतरी,
  पड़ियु पारेवउ खोला माय रूडा राजा ।
रख राख मुझ राजवी,
  मुझनइ सींचाणउ खाय रूडा राजा ।। ३ ।।घ०।।
सींचाणउ कहइ सुणि राजिया,
  ए छइ माहरउ आहार रूडा राजा ।
मेघरथ कहइ सुण पखिया,
  हिंसा थी नरक अवतार रूडा राजी ।। ४ ।।घ०।।
सरणइ आव्यु रे पारेवडउ,
  नहीं आपूँ निरधार रूडा पंखी ।
माटी मगावी तुझ नइ देउ,
  तेहनउ तू कर आहार रूडा पंखी ।। ५ ।।घ ।।
माटी खपइ मुझ एहनी,
  कै वली तांहरी देह रूडा राजा ।
जीव दया मेघरथ वसी,
  सत्य न भंजु धरमी तेह रूडा राजा ।। ६ ।।घ०।।
कातो लेई पिंड कापी नइ,
  ले मांस तू सींचाणा रूडा पंखी ।
त्राजुए तोलावी मुझ नइ दियउ,
  एह पारिवा प्रमाण रूडा राजा ।। ७ ।।घ ।।

आज मगान्नी मघरथ राय जी,
फापी कापी मइ मूकउ मांस रूड़ा राजा ।
वव माया भारय समी,
नामइ एकन्य अस रूड़ा राजा ॥ ८ ॥घ०॥
माई सुत रम्भी विल–विलइ,
हाथ मसली कहइ तइ गहिला राजा ।
एक पारवइ नइ कारणइ,
स्यू झपउ छउ देह गहिला राजा ॥ ६ ॥घ०॥
महाजन लोक धारइ सहु,
मकरउ एवड़ी बात रूड़ा राजा ।
मघरथ कहइ धरम फल मला,
जीव दया मुझ बात रूड़ा राजा ॥१०॥घ०॥
तराजुए चढ़उठ राजवी,
ज भावइ त खाय रूड़ा पंखी ।
जीव थी पारवउ अधिकउ गिणयउ,
धन्य पिता तुझ माय रूड़ा राजा ॥११॥घ०॥
चढ़ते परिणामे राजवी,
सुर प्रगट्यउ तिहां आय रूड़ा राजा ।
खमावइ बहु विध करी,
लालि लालि लागइ छइ पाय रूड़ा राजा ॥१२॥घ॥
इन्द्रे प्रशंसा थारी करी,
जइवउ सू छइ राय रूड़ा राजा ।

मेघरथ कथा सांभली करी,
सुर पहुतो निज ठाम रूडा राजा ॥१३॥ध०॥
प्रथम ग्रिवेक मघरथ राय जी,
साउ पूरब नउ आयु रूडा राजा ।
वीस स्थानक वीस सेविया,
तीर्थङ्कर गोत्र उपाय रूडा राजा ॥१४॥ध०॥
ग्यारमई भव मंई श्री शांति जी,
पहुँता सरवारथ सिद्ध रूडा राजा ।
तेतीस सागर नउ आउखउ,
सुख विलसइ सुर रिद्धि रूडा राजा ॥१५॥ध०॥
एक पारेवा दया थकी,
बे पदवी पाम्या नरिंद रूडा राजा ।
पंचम चक्रवर्त्ती जाणियइ,
सोलमां शांति जिणंद रूडा राजा ॥१६॥ध०॥
बारमइ भवे श्री शांति जी,
अचिरा कुखइ अवतार रूडा राजा ।
दीक्षा लेई नइ कर्म खरचा,
पहुँता मुगति मझार रूडा राजा ॥१७॥ध०॥
तीजइ भव शिव सुख लह्यउ,
पाम्या अनतो नाण रूडा राजा ।
तीर्थङ्कर पदवी लही,
लाख वरस आयु आण रूडा राजा ॥१८॥ध ॥

दया थकी नव निधि हुवइ,
दया ए सुमनी खाण रूडा राजा।
भव अनंत नो ए सगी,
दया त माता मान्य रूडा राजा ॥१९॥प०॥
गज भव ससलउ राखियउ,
मेघकुमार गुण जाण रूडा राजा।
श्रेणिक राय सुत सुख लह्यउ,
पहुंता अनुत्तर विमान रूडा राजा ॥२०॥प०॥
इम जाणी दया पालजो,
मन मइ करुणा आण रूडा राजा।
समयसुंदर इम वीनवइ,
दया थी सुख निर्वाण रूडा राजा ॥२१॥प०॥

श्री मेघकुमार गीतम्

धारणी मनावइ रे, मेघकुमार नइ रे;
तु सुठ मुझ एक ज पूत।
तुझ विन जाया रे, दिनड़ा किम गमूं रे;
राखउ राखउ घर सूत्र सूत ॥धा०।१।
तुझ नइ परणावि र, आठ कुमारिका रे;
ते पइ अति सुकुमाल।
मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे;
मयणा नयणा सुविसाल ॥धा०।२।

बहुली संपद हुँती छांडि नइ रे,
कहो किम कीजइ धीर ।
स्त्री धन रे, मोसा मोगवी रे;
पछइ व्रत लेज्यो तुम धीर ॥धा०।३।
मुझ नइ आशा रे, पुत्र हुँती घणी रे;
रमाडिस मदुमर तणा वास ।
व्रत आदरउ रे, देखी नवि सकइ रे;
ऊमायउ संशास ॥धा०।४।
मेघकुमरइ रे, माता प्रति बूझवी रे;
दीधा लीधी वीर नइ पास ।
समयसुंदर कहइ धन्य ते मुनिवरू रे;
छूटे छूटे भव तणा पास ॥धा०।५।

श्री रामचन्द्र गीतम्

राग—मारूणी

प्रियु मोरा तइं आदरयउ वइराग,
प्रियु मोरा कोटि शिला काउसग रहउ हो ।
प्रियु मोरा कहइ सीता वचन सराग,
प्रियु मोरा देवलोक थी आवी करी हो ॥१॥
प्रियु मोरा तइं लीधी व्रत पास,
प्रियु मोरा बीज लीधा पछी अति घणी हो ।

प्रिय मोरा मुझ नइ पच्यउ परांस,
प्रिय मोरा अवसर चूकउ आवइ नहीं हो ॥२॥
प्रिय मोरा करि तूं नियाणउ कंत,
प्रिय मोरा आवि अम्हां सु करि साहिबी हो।
प्रिय मोरा आणंद करिस्यां अत्यत,
प्रिय मोरा प्रीति पारेवा पालिस्यां हो ॥३॥
प्रिय मोरा अथरिज पाम्यउ राम,
प्रिय मोरा अहो अहो काम विटंबणा हो।
प्रिय मोरा हिव हूं साधू काम,
प्रिय मोरा ध्यान सुकल हियडइ धरचउ हो ॥४॥
प्रिय मोरा पाम्यउ कवल ज्ञान,
प्रिय मोरा सेत्रुंज शिव सुख पामियउ हो।
प्रिय मोरा समयसुन्दर धरइ ध्यान,
प्रिय मोरा राम रिषीसर साचनउ हो ॥५॥

इति श्री रामचन्द्र गीतम् ॥ ३६ ॥

श्री राम सीता गीतम्

सीता नइ संदेसउ राम जी मोकल्यउ रे,
करि मुदरडी द मूंक्यउ हनुमन्त वीर रे।

सोभागी शालिभद्र भोगी रहो ॥ आंकणी ॥
बत्तीस लक्षण गुण भर्यो जी, परणयउ बत्तीस नार ।
मानव नइ भव देवना जी, सुख विलसइ ससार ॥ सो ॥२॥
गोभद्र सेठ तिहां पूरवइ वा, नित नित नवला रे भोग ।
करइ सुभद्रा उवारणा जी, सत्र करइ बहु लोग ॥ सो ॥३॥
इक दिन श्रेणिक राजियउ जी, जोवा आव्यउ रूप ।
दखी अंग सुकोमला जी, हर्ष धयउ बहु भूप ॥ सो ॥४॥
वच्छ वैरागी चिन्तवइ जी, मुझ सिर श्रेणिक राय ।
पूरव पुण्य मइ नवि कर्या जी, तप आदरस्यु माय ॥ सो ॥५॥
इण अवसर श्री जिनवरू जी, आव्या नगर उद्यान ।
शालिभद्र मन ऊजम्यउ जी, वांदचा वीर जी न ठाम ॥ सो ॥६॥
वीर वखी वाणी सुणी जी पूठो मइ अकाल ।
एकाकी दिन परिहरइ जी, जिम जल छडइ पाल ॥ सो ॥७॥
माता दखी टलवलइ जी, माछलड़ी विनु नीर ।
नारी सगली पाय पड़ी जी, मत छडो माहस धीर ॥ सो ॥८॥
बहुभर सगली वीनवइ जी, सांभलि जियमु विचार ।
सर छंडी पालइ चल्यउ जी, हमलउ उडण हार ॥ सो ॥९॥
इण अवसर तिहां न्हावता जी, धन्ना सिर आंसू पड़त ।
कउण दुख तुम मोभर्यउ जी, ऊचउ जोइ नार कहत ॥ सो ॥१०
[ध]इमुगी मृग लोचनी जो, बोनारी मरतार ।
वीपर बात मही निमइ जी, नारी नउ परिहार ॥ सो ॥११॥

जइ नइ संदेसउ कहिज्यो माहरउ रे,
तुम्हे हियड़इ धरज्यो साहस धीर रे ॥१॥ सी०॥
मत तुम्हे वाहउ अम्हनइ वीसरया रे,
तुम्हे छउ माहरा हियड़ला मांहि रे ।
तुम्ह नइ संभारू सास सखी परि रे,
तुम्ह नइ मिलवा वछउ मन उच्छाहि रे ॥२॥ सी०॥
जे वेहनइ मन मांहि वस्या रे,
ते तउ दूरि थकां पणि पास रे ।
किहां कुमुदिनी किहां चंद्रमा रे
पणि दूरि थी करइ परकास रे ॥३॥ सी०॥
सीता नइ संदेसउ हनुमंत जइ कह्यउ रे,
वलतु सीता पणि मोकल्यु सहिनाण रे ।
समयसुन्दर कहइ राम जी रे,
मयउ पाम्यु सीता शील प्रमाणि रे ॥४॥ सी० ।

इति श्री राम सीता गीतम् ॥ २५ ॥

— —

॥ धन्ना शालिभद्र सझाय ॥

प्रथम गोवाल तणइ भव जी, मुनिवर दीधु रे दान ।
नगर राजगृह अवतर्या जी, रूप मयण समान ॥ १ ॥

सोभागी शालिभद्र भोगी रह्यो ॥ आंकणी ॥
बत्रीस लक्षण गुण भर्यो जी, परण्यउ बत्रीस नार।
मानव नइ भव देवना जी, सुख विलसइ संसार ॥ सो ॥२॥
गोभद्र सेठ तिहां पूरवइ जो, नित नित नवला रे भोग।
करइ सुभद्रा उवारणा जी, सेव करइ बहु लोग ॥ सो ॥३॥
इक दिन श्रेणिक राजियउ जी, जोवा आव्यउ रूप।
दखी अंग सुकोमला जी, हर्ष थयउ बहु भूप ॥ सो ॥४॥
चञ्चल वैरागी चिन्तवइ जी, मुझ सिर श्रेणिक राय।
पूरव पुण्य मइ नवि कर्‌या जी, तप आदरस्यु माय ॥ सो ॥५॥
इण अवसर श्री जिनवरू जी, आव्या नगर उद्यान।
शालिभद्र मन ऊजम्यउ जी, वांदथा वीर जी ने ठाम ॥ सो ॥६॥
वीर तणी वाणी सुणी जी बूठो मेह अकाल।
एकेकी दिन परिहरइ जी, जिम जल छंडइ पाल ॥ सो ॥७॥
माता देखी टलवलइ जी, माछलड़ी विनु नीर।
नारी सगली पाय पड़ी जी, मत छंडो साहस धीर ॥ सो ॥८॥
बहुअर सगली वीनवइ जी, सांभलि त्रिभुवन विचार।
सर छंडी पाल्हइ चढ्यउ जी, हसलउ उड़ण हार ॥ सो ॥९॥
इण अवसर तिहां न्हावतां जी, धन्ना सिर आंसू पड़ंत।
कउण दुख तुझ सांभर्‌यउ जी, ऊचउ जोइ नइ कहंत ॥ सो ॥१०
चन्द्रमुखी मृग लोचनी जी, बोलावी भरतार।
बंधव वात मही तिसइ जी, नारी नउ परिहार ॥ सो ॥११॥

भणो भद्र सुख गहेलड़ी जी, शालिभद्र पूरउ गमार ।
जो मन भाण्या छोडिया जी, तो विलंब न कीजइ लगार ॥ सो ॥१२॥
कहइ लोडी कहइ कामिनी जी, धन्न सम नहीं कोइ ।
कहिता वात सोहिली जी, करतां दोहिली होय ॥ सो ॥१३॥
नार तो तउ इम कमु जी, तो मइ छोडि रे आठ ।
पिउडा मई हंसतां कझु जी, इण्यासु करस्यु वाद ॥ सो ॥१४॥
इम वचने भमउ नीसरयो जी, जाणे पंचानन सींह ।
सालो नइ जइ साद करयउ जी, गहेला उठ अबीह ॥ सो ॥१५॥
कहइ आइडी निज ममइ जी, पूठ म जोइस वाय ।
नारी बंधन दोरडो जी, भव भव दुखइ निराश ॥ सो ॥१६॥
जिम पीवर तिम माहलो जी, पीवर नांख्यो आस ।
पुरुष पड़ी जिम माहलो जी, तिम अर्पित्यो भ्रमल ॥ सो ॥१७॥
जोवन भर बिहुँ नीसरया जी, पहुँता वीर जी पास ।
दीक्षा लीधी रूयडा जी, पालइ मन उल्हास ॥ सो । १८॥
मासखमण नइ पारणइ जी, पूछइ श्री जिनराज ।
अमनइ शुद्ध गोचरी जी, लाभ देस्यइ कुण आज ॥ सो ॥१९॥
माता हाथइ पारणउ जी, थास्यइ तुम नइ आहार ।
वीर वचन निश्चय करी जी, आव्या नगरी मझार ॥ सो ॥२ ॥
घर आव्या नहीं ओलख्या जी, फिर आव्या आपि ठाय ।
मारग मिलतां मही‌यारडी जी, सामी मिली तिण ठाय ॥ सो ॥२१॥
मुनि देखी मन उल्लसइ जी, विकसित थइ तनु देह ।
मस्तक गोरस लालउ जी, पडिलाभ्यउ धरि नेह ॥ सो ॥२२॥

मुनिवर विहरी चालिया जी, आव्या श्री जिन पास ।
मुनि संशय थइ पूछयउ जी, माय न दीधुं दान ॥ सो ॥२३॥
वीर कहइ ऋषि सांभलउ जी, गोरस वहेरचउ रे जेह ।
मारग मिली महियारडी जी, पूर्व जनम नी माय तेह ॥ सो ॥२४॥
पूरव भव जिन मुख लही जी, एकण मासइ रे दोय ।
आहार करी मन धारियउ जी, अणसण योग ते होय ॥ सो ॥२५॥
जिन आदेश लेई करी जी, चढिया मुनि गिरि वैभार ।
शिला उपरी थइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार ।सो ।२६।
माता भद्रा संचरचा जी, साथइ बहु परिवार ।
अंतेउर पुत्र अ तणउ जी, लीधउ सगलउ साथ ॥ सो ॥२७॥
समोसरण आवी करी जी, वांदचा वीर जग तात ।
सकल साधु वांदी करी जी, पुत्र नइ जोयइ निज मात ॥ सो ॥२८॥
जोइ सगली परषदा जी, नवि दीठा दोय अणगार ।
कर जोडी नइ वीनवइ जी, तब भाखइ श्री जिनराज ॥ सो ॥२९॥
वैभार गिरि चढ़ चढचा जी, मुनिवर दर्शन उमंग ।
सहु परिवारइ परिवरी जी, पहुंती गिरिवर शृंग ॥ सो ॥३०॥
दोय मुनि अणसण उचरइ जी, झीलइ ध्यान मझार ।
मुनि देखी विलखी थी, नयणे नीर अपार ॥ सो ॥३१॥
गद गद शब्द जो बोलतां जी, मिली छइ बत्रीसे नार ।
पिउडा बोलउ बोलडा जी, जिम सुख पामुं अपार ॥ सो ॥३२॥
अमे तो अवगुण भरचा जी, तुम छउ गुण ना भंडार ।
मुनिवर ध्यान चूक्या नहीं जी, तेह नइ चित्त न लगार ॥ सो ॥३३॥

बीरा नयण निहाल जो जी, ज्यूँ मन थाय प्रमोद ।
नयण उघाडि जोअउ सही जी, माता पामइ मोद ॥ सो ॥३४॥
शालिभद्र माता मोहिनी जी, पहुता अमर विमान ।
महाविदेह सीझस्यइ जी, पामी केवल ज्ञान ॥ सो ॥३५॥
धमउ धरमी मुक्ति गयउ जी, पामी शुक्ल ध्यान ।
जे नर नारी गावस्यइ जी, समयसुन्दर नी वाण ॥ सो ॥३६॥

श्री शालिभद्र गीत

राग—आथा फूमाणी नी

धमउ सालिभद्र धा, भगवंत नउ आदेस लइ जी हो । हो मुनिवर ध.।
संवेग सुद्ध धरेव, वैभार गिरि उपरि चढया जी हो । हो मुनि । स ।१।
अणसण करि अणगार, धन्ना सिलातल उपरइ जी हो । हो मुनि अ ।
ए ससार असार, ध्यान भलउ हियडइ धरइ जी हो । हो मुनि ए ।२।
आवी मनि उछरंग, आवी सुभद्रा वांदिवा जी हो । हो मुनिवर आ.।
पेखी पुत्र निभग, रोवा लागी हवक जी हो । हो मुनिवर पेखी ।३।
सालिभद्र तु सुकुमाल, ए परीसा पुत्र आकरा सी हो । हो मुनि सा.।
बतीस अंतेउरी बाल, निरधारी तजि नीसरयउ जी हो । हो मुनि. ब.।४।
मंदिर महुल मम्भार, सेज तलाई मा पउढतउ जी हो । हो मुनि मं ।
कठिन सिला संथारि, भयस परीसा पुत्र तूं महइ जी हो । हो मुनि क.।५।
साम्हउ जो इकवार, मन वाल्हउ थारी मावडी सी हो । हो मुनि सा.।
नाणयउ नेह लगार, सालिभद्र साम्हउ जोयउ नहीं जो हो । हो मु ना.।

चढते मन परिणाम, कीधी मास सलेखणा जी हो । हो मुनि च।
सारया आतम काज, सर्वारथ सिद्धि गया जी हो । हो मुनि सा ।७।
महाविदेह मझारि[१], सुगति जास्यइ मुनिवर जी हो । हो मुनि मह।।
वंदना करू वार वार, समयसुंदर कहइ हुं सदा जी हो । हो मुनि वं ।८।

इति श्री धन्ना शालिभद्र गीतम् ॥४६॥
सं. १६६१ वर्षे मगसिरस्यअमावास्यां ओकाशा ग्रामे पं हरिराम लिखितम्।

श्री शालिभद्र गीतम्

राग—मूपाल

शालिभद्र आज तुम्हारइ आपणी माता,
पडिलाभस्यइ सु सनेहा रे ।
श्री महावीर कहइ सुणि शालिभद्र,
मत मनि धरइ संदेहा रे ॥ सा ॥१॥
वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ,
सालिभद्र मन संतोषी रे ।
आपउ घरि ओलस्यउ नहीं माता,
तप करि काया सोषी रे ॥ सा ॥२॥
विन विहरयइ पाछउ बल्यउ मुनिवर,
मन मांहि संदेह आण्यउ रे ।

---

१ उत्तम कहि अवतार

मारग मांहि मिला महियारा
तिण गोरस विहरायउ रे ॥ सा ॥३॥
वेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ,
प्रश्न करूं स्वामी तुम्ह नइ रे ।
विहरण गया तो दूरो रही पणि,
मां ओलख्यउ नहीं मुम्हनइ रे ॥ सा ॥४॥
पूरव भव माता परिसाम्यउ,
भगवंत संदेह भाजउ रे ।
समयसुन्दर कहइ धन धन सालिभद्र,
वीर वचने अइ लागउ रे ॥ सा. ॥५॥

इति श्री सालिभद्र गीतम् ॥ ४० ॥

श्री शालिभद्र गीतम्

ढाल— कपूर हुवइ अति ऊजलु रे वली अनोपम गंध । ए गीतनी

राजगृही नउ विवहारियउ रे, गोभद्र वणउ रे मन्हार ।
भद्रा माता कूंयर रे, सालिभद्र गुण भण्डार ॥१॥
मुनीसर धन सालिभद्र अणगार, जिण लीधउ संजम भार ।
मुनीसर धन० त्रिण पाम्यउ भव नउ पार ॥मु० ध ॥आंकणी॥
बत्रीस अंतेउरि परिवरयउ रे, भोगवइ लील विलास ।
मन वंछित सुख भोगवइ रे, गोभद्र सगली आस । मु०॥ २ ॥

रतन कंबल आण्यां घणां रे, पणि श्रेणिक न लेवाय ।
सालिभद्र नी भउरी रे, लूही नाख्यां पाय ॥मु०॥ ३ ॥
श्रेणिक आव्यउ आंगणइ रे, पुत्र सुखउ सुविचार ।
श्रेणिक क्रियाणु मेलवी रे, मात जी मेल्हउ बलारि ॥मु०॥ ४ ॥
श्रेणिक ठाकुर आपणउ रे, जेहनी वसियइ छत्र छांय ।
चमकयउ सालिभद्र चिंतवइ रे, मुझ माथइ पणि राय ॥ मु०॥ ५ ॥
तृण जिम रमणी परिहरी रे, जाण्यउ अथिर ससार ।
महावीर पासि मुनीसरू रे, लीधउ सजम भार ॥मु०॥ ६ ॥
तुम नइ मां पडिलाभयइ रे, इम बोलइ महावीर ।
परि आव्यउ नवि ओलख्यो र, तप करी मोख्युं सरीर ॥मु०॥ ७ ॥
पडिलाभ्यउ गोवालणी रे, पूरब भवनी माय ।
वीर वचन साचां थयां रे, धन धन श्री जिनराय ॥मु०॥ ८ ॥
वैभार परवत ऊपरी रे, ल अणसण शुभ ध्यान ।
मास सलेखण पामियु र, सरवारथ सिद्धि विमान ॥मु०। ९ ॥
सालिभद्र ना गुण गायतां रे, सीझइ वंछित काम ।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम । मु०॥१०॥

इति श्री शालिभद्र गीतम् ॥ १० ॥

श्री श्रेणिक राय गीतम्

प्रभु नरक पडतउ राखियइं, तउ तूं पर उपगारी र ।
श्रेणिक राय वदति वीर नइ, हुं तउ सिजमति धारी र ।प्र।१।

कालककूरियउ महिष न मारइ, कपिला दान दिराय रे।
वीर कहइ सुण भेणिक राया, तउ तूँ नरक न जाय रे।प्र।२।
कालककूरियउ किम ही न रहइ,कपिला भगति न भाइ रे।
कीधउ हो करम न छूटइ कोइ, हिंसा दुरगति जाइ रे।प्र।३।
दुख न करि महावीर कहइ तोरी, प्रकट हुसी पुण्याई रे।
पदमनाम तीर्थंकर होस्यइ, समयसुन्दर गुण गाई रे।प्र.।४।

—∞—

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

मनडउ तं मोह्यउ मुनिवर माहरू रे,
कहइ इम कोश्या ते नारि रे।
आठे ते पहुर उमाहयउ रे,
घट घट चित्त मझार रे। मन०।१। आं०।
पांजरडउ त भूलउ ममइ रे,
जीव तुमारे पासि रे।
तमस्युं कोश्या प्रिय माहरइ रे,
पनरइ दिन छमासि रे। मन०।२।
पर दुक्ख आवइ नहीं पापिया रे,
दुसमण पसइ विषइ पास रे।
जीव लागउ जइनउ जइस्युं रे,
किम सरइ फीचां विण वास रे। म०।३।

श्रोड़ी नवि प्रीति प्रट्य नहीं रे,
ग्रोटतां से प्रट्य माहरा प्राण रे।
फ्रउ कही परि कीज़ीपइ रे,
तुम्हे जउ चतुर सुजाण रे। म०।४।
सक्त मोल नव्यामीयइ रे,
मार मोज्ञा नु राज र।
अकमरपुर मांहि रही र,
माटघइ जोड़ी छइ माम रे। म०।५।
स्थूलिभद्र कोश्या प्रति पूभव्इ रे,
धरम उपरि धरउ राग रे।
प्रम बधन नवि पाख्यो र,
ममयमुन्दर सुगकार र। म०।६।

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

त्रिपुड़उ माल्यउ र श्यामा पत्नी,
बोलइ कोमा नारी।
प्रानि पनउना पालिपइ,
हू छूं दासि तुम्हारी। १। त्रि०।
हू त्रिपुटा तुम्ह गगिणी,
तू नौ हृदय क्टार र।
पइ परोग नग्ग पणि
माल्यउ तू मन मोर र। २। त्रि०।

साजण सरसी[१] प्रीतड़ी,
कीजइ पुरि पखी जोय रे ।
कीजोयइ तउ नवि छोड़ियइ,
फठइ प्राण भलां होय र । ३ । प्रि० ।
चउमासु चित्रसालीयइ,
रह्या मुनिवर राय रे ।
नयण भसीयाले निरखती,
गोरी गीत गुण गाय रे । ४ । प्रि० ।
कोसा वचन सुणी करी,
मुनिवर नवि डोलइ रे ।
समयसुन्दर कहइ कलियुगइ,
थूलिभद्र न को तोलइ रे । ५ । प्रि० ।

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम्

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

प्रीतड़ी प्रीतड़ी न कीजइ हे नारे परदेसियाँ र,
खिण खिण दाझइ देह ।
बीछड़ियाँ बीछड़ियां वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ र,
सालइ अधिक सनेह ।।प्री.।१।
आजनइ आजनइ आव्या रे काल्हि चालस्यइ रे,

१ सखी

ममर ममता ओड़ ।
साजखिया साजखिया मउलाती मलतां चालतां रे,
घरती मारग्यि होय ॥प्री ।२।
फागलियउ फागलियउ लिखतां मीज्झ आंसुए रे,
आखर दोपी हायि ।
मनघ्र मनघ्र मनोरथ मन मांहे रहइ रे,
कहियइ केहनइ साथि ॥प्री ।३।
इण परि इण परि कोसा थूलभद्र पूछवी रे,
पाली पूरव प्रीति ।
सीयल सोपल सुरंगी ओढाड़ी चूनड़ी रे,
समयसुदर प्रभु रीति ॥प्री ॥४॥

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम् ॥ ४३ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

राग—सारंग

प्रीतड़िया न कीजइ हो नारि परदेसियां र,
खिण खिण दाझइ देह ।
प्रीतड़िया पान्हेसर मलणो दोहिलउ र ।
सालइ सालइ अधिक सनेह ।प्री ।१।
आज नइ तउ आस्या आल उठि चालवु र,

ममर ममतां जोई ।
सालनिया कोशाविं पाछा वलतां थकां रे,
धरती मारयिं होइ ।प्री।२।
राति नइ तउ नावइ माहरा नींदड़ो रे,
दिवस न लागइ भूख ।
अन नइ पाणी मुझ नइ नवि रुचइ रे,
दिन दिन सबलो दुख ।प्री।३।
मन ना मनोरथ सवि मन मां रह्या रे,
कहियइ केहनइ रे साथि ।
कागलिया तो लिखतां भीजइ आंसुआं रे,
आवइ दोखी हाथि ।प्री।४।
नदियां तणा व्हाला रेला वालहा रे,
ओछा तणा सनेह ।
वहता वहइ वालइ उतावला रे,
झटकि दिखावइ छेह ।प्री।५।
सारसडी चिड़िया मोती चुगइ रे,
चुगे तो निगल कांइ ।
साचा सद्गुरु जो साची मिलइ रे,
मिले तो विछुडइ कांइ ।प्री।६।
इण परि स्थूलिभद्र कोशा प्रतिबूझवी रे,
पाली पाली पूरव प्रीति सनेह ।

शील सुरगी दोभी चूनडी रे,
समयसुन्दर कहइ एह ।श्री.।७।

इति स्थूलिभद्र गीतं ॥ २७ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम

राग-मल्हार-धन्या श्री मिश्र

ज्यावत मुनि के मेखि देखि दासी सासीनी ।
कोशि वेशि कु आइ इसी जु बधाई दीनी ॥
पियु आये सखि आपुने मुनि हर्षित भई नारि ।
तबहि उतारी आग हो दीनउ मोतिय हार ॥ १ ॥
स्थूलिभद्र आये मलइ ए माइ जोवत खोवत माग के ॥ आंकणी ॥
चित्रशालि चउमास रहे लहे गुरु आदेसा ।
कोशि कामिनी नृत्य करइ सुरसुन्दरी जैसा ॥
हाव भाव विभ्रम करइ हु भये निठुर निटोल ।
एउम प्रेम समास प्रियु तू मान हमारो बोल के ॥ २ ॥
काम भोग सयोग सबइ किंपाक समाने ।
पलत कूपइ कूप पडइ सुखि कोश सयाने ॥
मेरु अडिग मुनिवर रहे ध्यान धरम चित लाय ।
समयसुन्दर कहइ साध जी हो धन धन स्थूलिभद्र रिषिराय ॥३॥

—:०:—

स्थूलिभद्र गीतम्

पूलभद्र आव्यउ रे आसा फली, कोसइ कोस्या नारि ।
प्रीति पनउती पालियइ, हूँ छु दासि तुमारि ॥१॥ पू ।
हूँ प्रीयुडा तुम्ह रागिणी तूँ का हृदय कठोर ।
चंद चकोर तणी परि मान्यउ तूँ मन मोर ॥२॥ पू ।
साजण सती प्रीतड़ी, कीजइ पुरि पणी जोड़ ।
कीजियइ तउ नवि छोडियइ, कंठ प्राण जो होइ ॥३॥ पू ।
चउमासु चित्र सालियइ, रह्या मुनिवर रंग ।
नयण कटाखे निरखती, कोस्या गीत गुण गाय ॥४॥ पू ।
कोस्या वचन सुणी करी, मुनिवर नवि डोलइ ।
समयसुन्दर कहइ कलियुगइ, पूलिभद्र न को तोलइ ॥५ पू ।

— o —

स्थूलिभद्र गीतम्

राग—केदारउ गउड़ी

तुम्ह चार मोरंगां आव्या, हूँ जाऊं बलिहारी रे ।
कहउ मुझनइ कांइ तुम लाव्यां, हूँ जाऊं बलिहारी रे ॥ १ ॥
इम बोलइ कोस्या नारि, हूँ जाऊं बलिहारी ।
एतला दिन क्युं वीसारी, हूँ जाऊं बलिहारी ॥ आं० ॥
पइ वखत म्हारा स मंभारी, हूँ जाऊं बलिहारी ।
रहउ चित्रशाली मइ तुम्हारी, हूँ जाऊं बलिहारी रे ॥ २ ॥

तुम्ह पूरउ आस अम्हारी, हु जाऊं बलिहारी।
अम्हे साथ निग्रंथ कहाय, तू सुंदरि सांभलि रे ॥ ३ ॥
अम्हे धरम मारग संभलाय, तू सुंदरि सांभलि रे।
तू मोल्हु बोलि मां मांमलि, तू सुंदरि सांभलि रे ॥ ४ ॥
अम्हे मुगति रमणि सु राचू, तू सुंदरि सांभलि रे।
जिहां सासवु सुख छइ साचूं, तु सुंदरि सांभलि रे ॥ ५ ॥
रिषि ना वचन सुणि प्रतिबूधा, तूं सुंदरि सांभलि रे।
एतो भाविका थई अति सूधी, तूं सुंदरि सांभलि रे ॥ ६ ॥
साधाश कोशा शील पाल्यु, तूं सुंदरि सांभलि रे।
समयसुंदर कहइ दुख टाल्यु, तू सुंदरि सांभलि रे ॥ ७ ॥

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम् ॥ ४४ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

मुझ दंत जिसा मचकुंद कली,
केसरी कटी लंक जिसी पतली।
काया केलि गरभ जिसी कुयली,
सुसनेही हूँ कोशा आई मिली ॥ १ ॥
रमउ रमउ रे स्थूलिभद्र रंग रली ॥ रम० ॥ आंकणी ॥
नीली कम बंधी कसी कंचुली,
चंचल लोचन जाणे बीजली।
कंचन तनु गोरी हूँ नहीं सांमली,
मामिनी मुझ थी नहिं कइ भलि ॥२॥ र०॥

कंथा विण नारि किसी एकली,
घोडइ पाणी छीजइ मछली ।
कहउ वात कई थिगुरा केतली,
मेलउ संभरउ पिउ पिछली ॥३॥ र०॥
पिछली वात कोशी त वात टली,
हमी नारी हवी सगति सगली ।
परमव दुरगति पड़न दुहिली,
बोलइ मव कोसा ते वात वलि ॥४॥ र०॥
प्रतिबोधी कोश्या प्रीति पली,
मनमथ रह जीतउ अतुल बली ।
थूलभद्र मुनिवर गरी आर्ड वली,
समयसुन्दर कहइ मेरी आस फली ॥५॥ र ॥

स्थूलिभद्र गीतम्

म्हाला स्थूलिभद्र हो स्थूलिभद्र म्हाला,
एक करू अरदास हो हां०
प्रीति संभारउ पाछली ।
तुम्ह विण खिण न रहाय हो,हां०
ज्यूँ कीवइ जल विण माछली ॥१॥ थू॥
मिलती पु मिलियइ सही हो,हां०
पिव भमर जेम चकोरडा । म्हा० ।

म करिस साचा तापि हो, हां०
  तू पूरि मनोरथ मेरहा ॥२॥ पू ॥
लाख टका नी प्रीति हो, हां०
  मन मान्या सूं किम छोडियइ । था० ।
कीजइ प्रीत न होइ हो, हां०
  त्रूटी पिया सांधी जोडियइ ॥३॥ पू ॥
जोरइ प्रीत न होइ हो, हां०
  दे शील सु रगी चूनडी । था० ।
साधउ धर्म सनेह हो, हां०
  आपे करस्यो सुदर बातडी ॥४॥ पू ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

ढाल— सुण मेरी सजनी रजनी जानइ पहनी ।

पिउड़ा मानउ बोल हमारउ रे,
  आपणी पूरब प्रीति समारउ रे ॥ १ ॥
आ चित्रशाला आ सुख सेज्यां रे,
  मान मानइ तउ पत्री सज्या रे ॥ २ ॥
बरसइ मेहा म अइ देहा रे,
  मत दउ छेहा नवल सनेहा रे ॥ ३ ॥
कहइ मुनि म करि वेस्या आदेशा[1] रे,
  सुख उपदेसा अमृत जैसा रे ॥ ४ ॥

१ अदेशा

पाळसूँ निर्मल शील सुरगा रे,
पामसी परमव शिवसुख अभंगा रे ॥ ५ ॥
धन धन धूलभद्र मुनि रिषिराया रे,
समयसुन्दर कहै प्रणम्यु पाया रे ॥ ६ ॥

—१—

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती गीतम्

सांभलि सनतकुमार हो राजेसर जी,
अबला किम मेल्ही हो राजेन्द्र एकली जी ।
अम्हनइ तुमथ आधार हो राजेसर जी,
रडवड़ किम धीरज राजन राखियों जी ॥१॥
ए संसार असार हो राजेसर जी,
करुणा थे दीठी हो राजन करमी जी ।
लीधो संजम भार हो राजेसर जी,
छांडी राजरिद्धि तृण किम त छती जी ॥२॥
मन वसियो वइराग हो राजेसर जी,
मूकी हो माया ममता मोहनी जी ।
तिं कीधउ पट खंड त्याग हो राजेसर जी,
इम किम निठुर हुआ नाहला जी ॥३॥
एकरस्यउ पिउ पेखि हो राजेसर जी,
अम्हनइ मन वाल्हो राजन आपणु जी ।

राखी अपि नी रेखा हो राजेसर जी,
योगीन्द्र फिरि पाछउ जोयउ नहीं जी ॥४॥
वरस सातसइ सीम हो राजेसर जी,
महुली हो वेदन सही साध जी।
निरवाधा व्रत ताम हो राजेसर जी,
देवलोक तीजइ हुयउ देवता जी ॥५॥
साधु जी सनतकुमार हो राजेसर जी,
चक्रवर्ती चौथउ तिहाँ थी चवी जी।
उत्तम सहि अवतार हो राजेसर जी,
शिव सुख लहस्यइ मुनिवर सास्वता जी ॥६॥
इम परीख्या थाय हो राजेसर जी,
हुँ बलिहारी जाऊं एहनी जी।
प्रणम्यां जायइ पाप हो राजेसर जी,
समयसुन्दर कहइ सुख सदा जी ॥७॥

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती गीतम्

सोवा आव्या रे देवता, रूप अनोपम सार।
गरव धरी विलसी गयउ, चक्रवर्ति सनतकुमार ॥१॥
नयण निहालउ रे नाहला, अबला करइ अरदास।
एकरस्यउ अवलोइयइ, नारी न मूकउ नीरास ॥२॥न०॥
काया दीठी रे कारिमी, जाणयउ अथिर संसार।
राज रमणि सवि परिहरी, लीघउ संयम भार[१] ॥३॥न०॥

१ मणि माणिक भंडार

अगइ अपराध न को कियउ, सांभलि तूं भरतार ।
निपट न दीजइ रे लाखउ, थयउ कुण आचार ॥४॥न०॥
सनतकुमार मुनिसरू, नापयउ नइ सागार ।
काज समार थउ रे आपणउ, समयसुन्दर कहइ सार ॥५॥न०॥

इति श्री सनतकुमार चक्रवर्ती गीतम् ॥ २४ ॥

श्री सुकोशल साधु गीतम्

साकेत नगर सुखकार रे, सहदेवी माता नद रे ।
गढ मांहि कीधउ फदरे, सुकोसलउ बाल नरिंद रे ॥ १ ॥
साधु सुकोसलउ रे, उपसम रस नउ भंडार ।
जिण लीधउ सजम भार, जिण पाम्यो भव नउ पार ॥ आं० ॥
कीर्तिधर नउ कियउ घात रे, सहदवी पापिणी मात रे ।
सुकोसलइ जाणी वात रे, मुझ नइ मलउ तात संघात रे ॥२॥सा.॥
व्रत लीधउ तात नइ पास रे, थिरउड रहउ चउमासि रे ।
तप संजम लील विलास रे, तोड्या कर्म बंधण पास रे ॥३॥सा.॥
वागाधि थाती विकराल रे, सामि लूच्यु तनु सुकुमाल रे ।
मुनि वेदन सही असराल रे, केवल पाम्यउ ततकाल रे ॥४॥सा.॥
सोना ना वींटा दांत रे, आपणउ पूरब विरतांत रे ।
अणसण लीधउ एकांत रे, वाघण पण थइ उपसांत रे ॥५॥सा.॥
सुकोसलउ कर्म खपाय रे, मुगति पहुंतउ मुनिराय रे ।
नाम लेवां नवनिधि थाय रे, समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥६॥सा॥

श्री सयती साधु गीतम्

ढाल—बे बांधव वांदण चाल्या एहनी

कपिल्ला नगरी धणी, संजती राजा नामो रे ।
चतुरग सेना परिवर्‌यउ, गयउ मृगचरिआ कामो रे ॥ १ ॥
सजती नइ धन्नी मिल्यउ, एकान्त कहि इह कीधउ रे ।
राज रिधि छोड़ी करी, इण राजा व्रत लीधउ रे ॥ २ ॥
मृग दखि सर मू कियउ, त पड़ चउ साघ नइ पासो रे ।
हा मन साव हएयउ दुवइ, तिण उपनउ मुनि त्रासउ र ॥ ३ ॥
साध कहइ मत बीहज, मुझ थी अमया दानों रे ।
अभय दान हिव आपि तु, सुरा दुख सहु नइ समानो रे ॥ ४ ॥
प्रतिबूधउ रिधि परिहरी, आण्यउ मनि उल्लासो रे ।
संयम मारग आदर्‌यउ, गई मिलि गुरु पासो र ॥ ५ ॥
मारग मइ खत्री मिल्यउ, मुणि संजत सुविचारो रे ।
ई माटउ रिधि मइ सजी, मत करइ तु अहकारो रे ॥ ६ ॥
चीत्र पण बहु राजवी, छोडी रिधि अपारो र ।
तप संयम करी आकरा पाम्यउ भव नउ पारो रे ॥ ७ ॥
भरत सगर मघवा भला, चक्रवर्ती सनत कुमारो र ।
शांति कुथु अरनाथ ए, तीथकर अवतारो र ॥ ८ ॥
महा पदम हरिषेण जय, दसारणमद करकड़ रे ।
दुमुह नमी नइ नग्गई, उदायन राय प्रगट्ट रे ॥ ९ ॥

सेऊ कासी नउ राजवी, विजय महाबल रायो रे ।
ए ~ मुनीसर, राज छोड्या कर्मवायो रे ॥१०॥
ए सहु भाव संबन्ध छइ, उत्तराध्ययन मझारो रे ।
समयसुंदर कहइ माणनइ, नाम थी हुयइ निस्तारो रे ॥११॥

इति सप्ती साधु गीतं ॥ ४० ॥
[पत्र १४ पूरणचंद जी नाहटा सं०]

श्री अजना सुन्दरी सती गीतम्

ढाल—रामिमतो रायी इण परि बोलइ रहनी ।

अञ्जना सुन्दरी शील वखाणी
पवनजय राजा नी राणी ।
पाछिलइ भव जिन प्रतिमा सांति,
करम उदय आव्या बहु भांति ॥अं०॥१॥
बार बरस भरतार न बोल्यउ,
तो पणि तहनउ मन नवि डोल्यउ ॥अं०॥२॥
रात्रि सु चकवी प्रिय पाम्यउ,
चकवी शब्द सुणी दुख साम्यउ ॥ अं० ॥४॥
राति छानउ पाछउ आयउ,
अञ्जना सुंदरी सु सुख पायउ ॥ अं० ॥५॥
गर्भ नो भांति पड़ी अति गाढ़ी,
सासू कलंक दे बाहिर काढ़ी ॥ अं० ॥६॥

मन मांह हनुमत मन्त्र जायउ,
मामउ मिल्यउ घर तहि सिधायउ ॥ अ० ॥७॥
पवनञ्जय आयउ अवसर घरि,
दुख करि अंजना नउ बहु परि ॥ अ० ॥८॥
काष्ट भक्षण करिवा ते लागउ,
मित्र मली अंजणा दुख भागउ ॥ अ० ॥६॥
सुख भोगवि सञ्जम पछि लीधउ,
अजणा सुदरि पछि सीधउ ॥ अ०॥१ ॥
अंजणा सु दरि सती रे शिरोमणि,
गुण गायउ श्री समयसुन्दर गणि ॥ अ ॥११॥

श्री नरमदा सुदरी सती गीतम्

ढाल—साधजी न जाए रे पर घर एकलउ ।

नरमन्दा सु दरी सतिय सिरोमणि,
पाली समुद्र मभारि ।
गीत गायन ना भाग लक्षण कह्या
भरम पड्यउ भरतारि ॥१॥न०॥
रावण दीपइ मेल्ही एकली,
कीधा विरह विलाप ।
बब्बर कुलइ काढउ ले गयउ,
प्रगट्या तिहां मछि पाप ॥२॥न०॥

वेश्या नइ राजा नइ वसि पड़ी ,
सुदरूम दीधी मारि ।
गहिली कारती थइ गलिए भमइ,
पखि रास्यउ सीस नारी ॥३॥न०॥
मरुयच्छ वासी विश्वदास मावस्,
पीहर मूँकी भारिं ।
परम सुखी नइ सजम आदरयउ,
कठिन क्रिया गुण खाणि ॥४॥न०॥
अनमी ध्यान साधवी नइ ऊपनुँ,
पहुँती साल्ह पासि ।
रिषिदत्ता दीधउ उपासरउ,
थइ उपदेश उलासी ॥५॥न०॥
स्वर सप्तम नउ भेद सुणावियउ,
प्रियउ करइ पश्चाताप ।
निरपराध मूँकी मइं नरमदा,
मइं कीधउ महापाप ॥६॥न०॥
दुक्ख म करि तु देवाणुप्पिया,
तुम्ह दूषण नहीं तेह ।
तेहनइ करमे ते दुखिणी थई,
तेह नरमद एह ॥७॥न०॥

प्रिय प्रतिबोधउ नरमदासुंदरी,
पहुँती सरग मझारि ।
समयसुंदर कहइ सील प्रभावतां,
पामीअइ भव पारि ॥८॥न०॥

इति नरमदा सुन्दरी सती गीतं ॥६॥

श्री ऋषिदत्ता गीतम्

ढाल—हिरणपर सु मेरउ मन लीणउ ए गीतनी

रुक्मणी नइ परणवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ नाम रे ।
रिषिदत्ता तापस नी पुत्री,
दीठी अति अभिराम रे ॥ १ ॥
रिषिदत्ता रूपइ अति रूयडी,
सील सुरंगी नारि रे ।
नित उठी नइ नाम जपतां,
पामीअइ भव पारि रे ॥ २ ॥ रि० ॥
रिषिदत्ता परणी घरि आव्यउ,
सुख भोगवइ सुविवेक रे ।
रुक्मणी पापिणी रीस करीन्ह,
मूकी जोगणी एक रे ॥ ३ ॥ रि० ॥

मासास मारि मांस स मूँकइ,
रिपिदत्ता नइ पासि रे।
लोही सु मूँहडउ पणि लेपइ,
आवी निज आवासि रे ॥४॥ रि० ॥

राधसणी आखी राय कोप्यउ,
गदइ ऊपरि चाडि रे ।
मस्तक दई नइ बाहिर कढइ,
सारउ नगर ममाडि रे ॥५॥ रि० ॥

मारण तरुग दलि नइ मद्दिया,
धरती पडी अचेत रे।
मूँइ जाणी धडासइ मूँकी,
धरम सरीरी हेत रे ॥६॥ रि० ॥

सीतल वाय सचेतन कीधी,
पहुँती बाप नइ ठाम रे।
पुत्र थई ओलषि परमातइ
रिषिदत्त तापस नाम रे ॥७॥ रि ॥

वलि रुक्मणी परणेवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ तइ रे
तिण ठामइ तापस मिल्यउ तइजि,
प्रगट्यउ परम सनेह रे ॥८॥ रि० ॥

तापस सापि छीपउ मीनति करि,
परणी रुकमणी नारि रे ।
एक दिन कहइ रिपिदत्ता सु प्रियु,
मेल्हउ हसउ प्यार रे ॥ ६ ॥ रि० ॥
जीवन प्राण हुती त माहरउ,
तब रुकमणी कहइ एम रे ।
पणि राषसणी दोस दइनइ,
मइ दुख दीधउ केम रे ॥१०॥ रि० ॥
रुकमणि नइ निभ्र छि नांखी,
काष्ट भषण कहइ राम रे ।
मुई पणि मेलु रिपिदत्ता,
कहइ मुनि करउ सउ पसाय रे ॥११॥ रि० ॥
कहइ राजा मांगइ ते आपुं,
राखउ पांपणि मुज्झ रे ।
आप भरी नइ रिपिदत्ता नइ,
दई मूं किसि तुज्झ रे ॥१२॥ रि० ॥
इम कहिनइ परियछि माहि पइठउ,
ऊमषि कीधी दूर रे ।
रिपिदत्ता रमभ्रमती आवी,
प्रगटयउ पुण्य पड्डूर रे ॥१३॥ रि० ॥
रिषिदत्ता सोई परि आव्यउ,
पणि मित्र न कहइ दुख रे ।

रिपिद्‌धा कहइ वे मिश्र म्हा हूं,
भेद कहउ भयउ सुक्लु रे ॥१४॥ रि० ॥
रिपिद्‌धा मांगइ मांपवि वर,
एकमनि सु कहउ रग रे।
रिपिदधा नीं देखउ स्वार्थ,
देखउ सील सुरंग रे ॥१५॥ रि० ॥
रिपिद्‌धा प्रिय सुं सुख भोगवी,
लीधउ सजम भार रे।
कमल न्यान लहा तप जप करी,
पाम्यउ भव नउ पार रे ॥१६॥ रि० ॥
रिपिदत्ता राखी स्त्री परि,
पाम्यु निरमल सील रे।
समयसुंदर कहइ सुगति पहुँती,
सांभलो भविपल सील रे ॥१७॥ रि० ॥

॥ इति रिपिदत्ता गीतम् ॥

श्रीदवदंती सती भास

हो सायर सुत सुहामणा, सुहामणा रे,
हो सांभलि सुगुणा संदेस।
हो गगन मंडल गति ताहरी, ताहरी र,
हो देखइ सगला तूं देस ॥१॥

चांदलिया संदेसउ रे, कहे म्हारा कंथ रे,
थारी अबला कहइ रे संदेश। अ०
नादलिया विहूणी र नारि हु क्युं रहुं रे। आंकणी॥
हो वालिम मइ तुनइ वारियउ, वा० रे,
हो जूयटइ रमिवा तूं म जाइ।
हो राज हारी तूं निसरयउ, नी० रे,
वन माँहि गयउ विलखाइ ॥२॥०।चा०॥
हो नल तुझ सु हू नीसरी सु, नी० र,
हो आंगमि लीधउ दुख आय।
हो तूं मुझ नइ मूंकी गयउ, मु रे,
हो इसडउ किसउ अपराध ॥३॥ब।चा॥
हो सती मूंकी कांइ सती, कांइ सती र,
प्रमदा न आयी तइ पीर।
हो हाथे लिण परणी हुंती, परणी हुंती र,
हो चतुर कपाणउ किम चीर ॥४॥च।चां॥
हो मवकि आगी लगी भूरिवा, भूरि वा० रे,
हो प्रिउ तूं न दीठउ र पामि।
हो वनि वनि जोयउ तूं नइ वालहा, वा० र,
हो माद क्रिया सउ पंचास ॥५॥च।चां॥
हो निरति न पामी थारी नाहला, ना० र,
हो पग पग भूगली र पूठि।

इम मनसा नर एकली,
इम तजइ वन मांस नल राजा ॥५॥सु०॥
दवदंती पीहर गई,
पाल्यउ निरमल शील नल राजा ।
समयसुँदर कहइ पिणु मिल्यउ,
छाया अविचल सील नल राजा ॥६॥सु०॥

इति नल दवदंती गीतम् ॥ ३४ ॥

श्री चुलणी भास

नयरी कपिला नउ धणी, पहुतउ प्रभु पर लोकरे ।
दीरघ राजा सु ते रमइ, चुलणी न कीयउ सोक रे ॥१॥
चुलणी पथि सुगतइ गई, तप संजम फल सार रे ।
पाप कीधां पथा पाइयां, पडती नरक मझारो रे ॥२॥चु०॥आं
ब्रह्मदत्त पुत्र परणावियउ, लाख नउ घर रच्यउ माइ रे ।
निज स्वारथ भय पइंचवउ, दीधी अगनि लगाइ रे ॥३॥चु ॥
मुँहतइ सुरंग मई काढियउ, बाहिर मन्यउ कुमारो र ।
॥४॥चु ॥
।
चुलणी मिव सुउ पामियु समयसुदर कहइ ध्यानो रे ॥५॥चु ॥
॥ इति चुलणी भास ॥ ६० ॥

श्री कलावती सती गीतम्

बांधव मूक्या बहिरखा रे, बहिनइ पहिरया बांहि ।
आसीस दीधी पहवी रे, चिरजीवे जग मांहि ॥१॥
कलावती सती रे सिरोमणि जाण ।
काप्या हाथ आव्या नवा रे सील तणइ परमाणि ॥आं॥
संखे आसीस सांभली रे, भरम पड्यउ भरतार ।
पइनउ अनेरउ वालहउ रे, मूंके दडाकार ॥क०॥२॥
चंडाले हाथ कापिया रे, जायउ पुत्र रतन ।
हाथ नहीं हुई वंदना रे, जीव नी हिंसा अधन्न ॥क०॥३॥
सूडा नी पांख खोसी हुंती रे, आव्या उदय ते कर्म ।
कर्म थी को छूटइ नहीं रे, जीवनी हिंसा अधर्म ॥क०॥४॥
सीलइ सुर सानिधकरी रे, तुरत आव्या वे हाथ ।
पुत्र सोनानइ पालणइ रे, पउढाड्यउ सुख साथ ।क०॥५॥
राजा वात ए सांभली रे, अपराध थयउ मन एह ।
आणी आडवर सु घरे रे, वाध्यउ अधिक सनेह ॥क०॥६॥
जीवदया सहु पालज्यो रे, पालज्यो सुधूं सील ।
समयसुंदर कहइ सीस थी रे, लहिस्यउ आणद लील ॥क०॥७॥

श्री मरुदेवी माता गीतम्

मरुदेवी माताजी इम भणइ,
सुणि सुणि भरत सुविचार रे ।

तूं थयउ सुख तणउ लोभियउ,
न करइ म्हारा रिषभ नी सार रे ॥ म ॥ १ ॥
सुरनर कोडि सु परिवर्यउ,
हींडतउ वनिता मझार रे ।
आज भमइ वन एकलउ,
रिषभजी जगत आधार रे ॥ म ॥ २ ॥
राज लीला सुख भोगियउ,
म्हारउ रिषभ सुकमाल रे ।
आज सहइ ते परिसहा,
भूख तृषा नित काल रे ॥ म ॥ ३ ॥
हस्ति ऊपर चढ्यउ हींडतउ,
आगलि जय जय कार रे ।
आज हींडइ रे पग अलवाणउ,
चिहुं दिसि भमर गुंजार रे ॥ म ॥ ४ ॥
सेज तलाइ में पउढतउ,
थर पग फूल बिछाइ रे ।
आज तउ भूमि संथारउ,
पउढवो रयणी विहाय रे ॥ म ॥ ५ ॥
मस्तकि छत्र धरावतउ,
चामर वींजता सार रे ।
आज तउ मस्तकइ रवि तपइ,
डांसा मसक मसकार रे ॥ म ॥ ६ ॥

हम मुझ दूरा फरंतड़ा,
रोवंता रात नइ दीसरे।
नयण भय पड़ल पन्या,
मोहनी विषम गति दीस रे ॥ म ॥ ७॥

तिण समइ आवि वधामणी,
अपम नइ ऊपज नाण रे।
सांभलि भरत नरेसरू,
वांदिवा आवइ अगमाण रे ॥ म ॥ ८॥

मरुदेवी गज चढ्या मारगइ,
सांभल्या वाजित्र तूर रे।
देव दुंदुभि प्रभु देसना,
मरुदेवि पड़ल गया दूर रे ॥ म ॥ ६॥

प्रभु तणी रिधि देखी खरी,
चिंतवइ मरुदेवी मात रे।
एतउ भारइउ दुःख करू,
रिषम नइ मनि नहीं वात रे ॥ म ॥ १०।

एतला दिवस मइ मुझ भणी,
नवि दियउ एक संदेश रे।
धागस माइ मनि मोकल्यउ,
नवि करयउ राग नउ लेश रे ॥ म ॥ ११॥

धिग धिग एह ससार नइ,
आणियउ परम वइराग रे।
किम प्रतिबंध जिनवर करइ,
ए अरिहंत नीराग रे॥म॥१२॥
गज चढ्यां केवल ऊपनु,
पाम्यउ मुगति नउ राज रे।
सुरनर कोडि सेवा करइ,
भरत बंधा जिनराज रे॥म॥१३॥
नाभिरायां कुल चंदलउ,
मरुदेवी मात मल्हार रे।
समयसुन्दर सेवक भणइ,
आपजो शिव सुख सार रे॥म॥१४॥

श्री मृगावती सती गीतम

वद्ध मान वीर वांदिवा[१] आव्या,
निरखि नहीं निसदीस।
मृगावती तिण मउडी आवी,
गुरुणी कीधी रीस॥१॥
मृगावती खामइ वे कर जोडि।
चंदना गुरुणी हुं चरण लागु,
ए अपराध थो छोडि॥मृ॰२॥आंकणी॥

चारित्रियउ चित मां वसयउ जी,
सोवहि बाहिर राख्यउ हाथि ॥३॥वी०॥
मम्मकि लागी कहइ चेलणा जी,
किम करतउ हुस्यइ तेह ।
कुमती नइ मन कुण वसयउ जी,
श्रेणिक पाम्यउ रे संदेह ॥४॥वी०॥
अंतेउर परिजालज्यो जी,
श्रेणिक दियउ रे आदेस ।
भगवंत संसउ भांगियउ जी,
पछतायउ चित नरेस ॥५॥वी०॥
वीर वांदी वलतां थकां जी,
पइसतां नगर मझार ।
धूआ नउ घोर देखी करी जी,
आ वा र अभयकुमार ॥६॥वी०॥
तात नउ वचन पाली[१] करी जी,
व्रत लीयउ हरष[२] अपार ।
समयसुन्दर कहइ चेलणा जी,
पाम्या भव तणउ पार ॥वी० ॥ ७॥

---

१ पालवा विहां थी. २ अभयकुमार

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजमती मन रग, चाली जिण वदन हे राजुल चाह मूं ।
साधवी सील सुचग, गिरनारि पहुता हे राजुल गहकती । १ ॥
मारगि वूठउ मेह, चीवर भीना हो राजुल जिहुँ गमा[१] ।
गईय गुफा मांहि गेह, [२]साहसउ उतारचउ हे राजुल सुदरी ॥२॥
देखि उघाड़ी देह, प्रारथना कीधा हो रहनेमि पाहुई ।
म्व्रदसुत जोवन एह, सफल करीजइ हे राजुल सुन्दरी ॥ ३ ॥
साधवी कहइ सुस साध, विषय तरणा फल हो रहनेमि विषसमा ।
आपइ दुख अगाध, दुर्गति वेदन हो रहनेमि दोहिली ॥ ४ ॥
चतुर तु चित्त विचार, आपे केहवइ कुलि हो रहनेमि ऊपना ।
इस वातइ अरणगार, लौकिक न लहियइ हो रहनेमि लोकमइ ॥ ५॥
साधवी वचन सुणि एम, पाछउ मन वाल्यउ हो रहनमि पाप थी।
इत्वचन कह्या मई कम, अति पछतावउ हो रहनेमि आप थी ।६।
अरिहत चरण आवि,पाप आलोया हो रहनेमि आपणा[३] ।
सिव मांहि करम खपावि, सुगति पहुंतउ हो रहनमि मुनिवरु ।७।
राजमती रहनेमि, साल सुरगा हो मइ को सांमलउ ।
जायइ पातक जम, भाव मगति हो समयसुन्दर भरणइ ।८।

॥ इति रहनेमि गी म ॥

१ दिसा २ मारवी उतारयउ हे राजुल साहसउ ३ पाछिल्या

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राग—रामगिरी

रूडा रहनेमि म करिस्यउ म्हारी म्हांसि ।
मुहडइ बोलि समालि रे,
हुं नहीं छु मे (१ ने) वाली रे । र० । म० ।
सुणि पाछली बात जउ सांभलस्यइ,
गुरु देस्यइ तुम्ह नइ गालि रे । र० ॥ १ ॥
जोरइ प्रीति न होयइ आठव,
एक हथि न पड़इ ताळि रे ।
समयसुन्दर कहइ राजुल वयने,
रहनेमि सीधु मन वालि रे । र० ॥ २ ॥

इति राजुल रहनेमि गीतम् ॥

पं० रत्नविमल लिखितम् ॥ शुभंभवतु ॥ छ ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

ढाल—सिंहा गयउ नस किहां गयउ प्र रुक्मणी ना गीत नी ।

पशुपति वांदण आवतां रे, मारगि वूठउ मेहो रे ।
गुफा मांहि राजुल गई रे, वस्त्र ऊगाविवा देहो रे ।१।
दूरि रहउ रहनेमि जी रे, वचन समाली बोलउ रे ।
राजमती कहइ मांधजी रे, मारग थी मत डोलउ रे ।२। दू।

भग उघाड़ा देखिनइ रे, आव्यउ मदन विकारो रे।
मुनिवर प्रारथना करइ रे, ल्यउ जोवन फल सारो रे ।३। द्द।
राजमती कहइ आपणउ रे, उत्तम कुल संभारउ रे।
विषय तणां फल पाडुया रे, साधजी चित्त विचारउ रे ।४। द्द।
सतिय वचन इम सांभलि रे, वइरागइ मन वाल्यउ रे।
समयसुन्दर रहनेमि जी रे, सील अखंडित पाल्यउ रे ।५। द्द।

इति श्री रथनेमि गीतम् स० ॥ ४ ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजुल चाली रगसु रे लाल, यदुपति वंदन जाइ सुकुलीणी रे।
मेह सु भीनी मारगे रे लाल, ऊभी गुफा मांहे आइ सुकुलीणी रे।१।
राजुल कहइ रहनेमि जी रे लाल, मत कर म्हारी आलि सुकुलीणी रे।
भावा कुल उपन्या रे लाल, चतुर तु चारित पाल सुकुलीणी रे २।
भग उघाड़ा देखि नइ रे लाल, चूक्यउ रहनेमि चित्त सुकुलीणी रे।
आव आप सुख भोगवा रे लाल, पालस्यां पूरब प्रीत सुकुलीणी रे।३।
क्षाधिक न रहइ लोकमां रे लाल, विषय थकी मन वाल सुकुलीणी रे।
काम भोग मुख्या कह्या र लाल, नरक ना दुख निहाल सु० रे।४।
दूध दक्ख्यो दूर कियउ रे लाल, राग्यउ नइ रहनेमि शील सु०।
समयसुदर साबास द्या रे लाल, मुकुलीणी रे।५।

श्री सुभद्रा सती गीतम्

मुनिवर आव्या विहरता जी, भमती दीठी आंखि ।
जीभ संघाति काढियउ जी, तरणु तणखिय नाँखि ॥१॥

जग मांहि सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जाण ।
विनयवंत भावक सुतउ जी, सील रयण गुण खाण ॥ज मां ॥

तिलक रंग लागउ तिहां जी, मुनिवर भाल विसाल ।
दुसमण लोक कलंक दियउ जी, काउसग्गि रही तत्काल ।ज ।२।

सासण देवत इम कहइ जी, म करे चित्त लगार ।
तुझरउ कलंक उतारिस्युं जी, जिन सासन जयकार ॥ज ॥३॥

काचे तांतण छत्र नइ जी, चालणी काढ्यु नीर ।
चंपा बार उघाडियउ जी, सीले साहस धीर ॥ज ॥४॥

मन वचने काया करउ जी, सील अखंड संसार ।
समयसुंदर वाचक कहइ जी, सती रे सुभद्रा नार ।ज ॥५॥

श्री द्रौपदी सती भास

ढाल—मांगी तूंगी रे बलभद्र जइ रहा रे, एहनी

पांच भरतारी नारी द्रुपदी रे, तउ पणि सतीय कहाय रे ।
नारी निर्यांणुं कीधुं भोगवइ रे, करम तणी गति कहाय रे ।१। पं.।
जुधिष्टिर नई पामइ हुती रे, देवता आवी दीध रे ।
पदमनामइ पद्मु प्रारथी रे, पणि सत साहस कीध रे ।२। पं ।

छम्मास सीम आंबिल किया रे, राख्यु सील रतन रे।
पाछी आवी वलि पांडवे रे, परणि श्रीकृष्ण जतन रे।३। पं।
सील पाली संजम लियउ रे, पांचमइ गई देवलोकि रे।
महाविदेह मइ सीमस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे।४। पं।
द्रुपद रायतणी तणया रे, पांच पांडव नी नारि रे।
समयसुन्दर कहइ द्रुपदी रे, पहुँती भव तणइ पारि रे।५।५।

(१) श्री गौतम स्वामी अष्टक

प्रह ऊठी गौतम प्रणमीजइ, मन वंछित फल नउ दातार।
लबधि निधान सकल गुण सागर, श्रीवर्द्धमान प्रथम गणधार। प्र १।
गौतम गोत्र चउद विद्यानिधि, पृथिवी मात पिता वसुभूति।
जिनवर वाणी सुणया मन हरखे, बोलाव्यो नाम इन्द्रभूति। प्र २।
पंच महाव्रत ल्याइ प्रभु पास, दे त्रिपदी जिनवर मनरंग।
श्री गौतम गणधर तिहां गू थ्या, पूरव चउद दुवालस अंग। प्र ३।
लब्ध अष्टापद गिरि चडियउ, चत्यवंदन जिनवर चउवीस।
पनरसै तीड़ोत्तर तापस, प्रतिबोधि कीधा निज सीस। प्र ४।
अठ्ठुव पद सुगुरु नो अतिसय, जसु दीखइ तसु केवल नाण।
आप बीन छट्ठ छट्ठ तप पारणइ, आपण पइ गोचरीय मध्यान्ह। प्र ५।
कामधेनु सुरतरु चिन्तामणि, नाम मांहि जस करे रे निवास।
ते सद्गुरु नो ध्यान धरता, लामइ लच्मी लील विलास। प्र ६।

लाभ घणो विणजे व्यापारइ, आवे प्रवहण कुशल खेम।
ए 'सदगुरु नो ध्यान धरता, पामइ पुत्र कलत्र बहु प्रेम।प्र ७
गौतम स्वामि तणा गुण गातां, अष्ट महासिद्धि नवे निधान।
समयसुन्दर कहइ सुगुरु प्रसादे, पुण्य उदय प्रगट्यो परधान।प्र ८

(२) श्री गौतम स्वामी गीतम्

ढाल—वीरजी नी

मुगति समय जाणी करी वी रे जी,
वीरजी मुझ नइ मूक्यउ दूरि रे।
मइ अपराध न को कियउ जी रे जी,
वीरजी रहतउ तुम्ह हजूरि रे॥ वी०॥१॥
वीर जी वीर जी किहां गयउ जी रे जी,
वीर जी नयणे न देखूं केम रे।
तुम पासइ किम हूं रहूं जी रे जी,
वीरजी साचउ तुम्ह सु प्रेम रे॥ वी०॥२॥
आपणु आडउ मांडस्यइ जी रे जी,
वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे।
विलखतो मूकी गयउ जी रे जी,
वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे॥ वी०॥३॥

---

१ श्री गौतम गुरु.

वीर वीर कहता कह जी रे जी,
　　वीरजी हिव हूं प्रश्न करूं किण पासि रे।
कुण कहस्यइ मुझ गोयमा जी रे जी,
　　वीरजी कुण उत्तर दस्यइ उल्हासि रे ॥ वी०॥४॥

हा हा वीर वई स्यु करयु जी रे जी,
　　गौतम करत अनेक विलाप रे।
वेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी,
　　जिवड़ा वेतलउ हुयइ पछताप रे ॥ वी०॥५॥

जगि मांहे को कहनु नहीं जी रे जी,
　　गौतम पाम्यु मन वइराग रे।
मोह पडल दूरे करया जी रे जी,
　　गौतम पाम्यु जिन नीराग रे ॥ वी०॥६॥

गौतम केवल पामियु जी रे जी,
　　त्रिभुवन हरख्या सुरनर कोडि रे।
पाप कमल गौतम तणा जी र जी,
　　प्रणमइ समयसुन्दर कर जोडि रे ॥ वी०॥७॥

(३) श्री गौतम स्वामी गीतम्

राग—परभाती

श्री गौतम नाम जपउ परभाते, रलिय रग करउ दिन रात ॥१॥

भोजन मिष्ट मिलइ बहु भांत, शिष्य मिलइ सुविनीत सुजाते ॥२॥
वाधइ कीरति जग विख्यात, समयसुन्दर गौतम गुण गाते ॥३॥

एकादश गणधर गीतम्

राग—वेलाउल

प्रात समइ उठि प्रणमियइ, गिरुया गणधार ।
वीर जिणंद वखाणिया, अनुपम इग्यार ॥प्रा०॥१॥
इन्द्रभूति श्री अग्नि भूति, वायुभूति कहाय ।
व्यक्त सुधरमा स्वामि स्यु, रहियइ चित लाय ॥प्रा०॥२॥
मंडित मौरिपुत्र ए, अकंपित उल्हास ।
अचलभ्राता ध्याइयइ, मेतार्य प्रभास ॥प्रा०॥३॥
ए गणधर श्री वीर ना, सुखकर सुविशाल ।
धान्यो माहरी वंदना, समयसुन्दर तिहुँ काल ॥प्रा०॥४॥

गहूँली गीतम्

प्रह समरुं साहिब देवा रे, माता सरसति नी करु सेवा रे ।
सुध समकित ना फल लेवा रे, हुं तो गाउस गुरु गुण मेवा रे ।१।
मुनिराया रे ॥
गुण सतावीस करि पूरा रे, शुद्ध किरिया मांहि पूरा रे ।
तप बारे भेदे सूरा रे, शियल व्रत सपूरा रे ।मु०।२।
गुरु जीवदया प्रतिपालइ रे, पंच महाव्रत सदा पालइ रे ।
बेंयालीस दोष निवारइ रे, गुरु आगम अर्थ विचारइ रे ।मु०।३।

गीतारथ गुण ना दरिया रे, गुरु समता रस ना भरिया रे।
पंच सुमति गुपति सु परिवरिया रे, भवसागर सहज तरिया रे। सु ।४।
गुरु नु पाटियो मोहन गारो रे, सहु संघ नइ लागइ प्यारो रे।
गुरु उपदेश घइ सुख कारु रे, मनि आवइ नइ भव निधि तारु रे। सु ।५।
गुरु नी आंखड़ली अणियाली रे, प्राणइ ज्ञान नी सरी निहाली रे।
घार विषधर ना विष टाली रे, सम साधा शिव लटकाली रे। सु ।६।
गुरु नु वदन त शारद चंद रे, जाणे मोहन वलि ना कंद रे।
गुरु आगम तर्जे आनंद रे, हुं तो प्रणमुं अति आनंद रे। सु ।७।
इम गहुली मांड गाई रे, रयण अमुरु थी मवाइ रे।
इम समकित थी चित लाइ रे, सहु संघ मिनी नइ वधाई रे। सु ८।
गुरु नी वाणी त अमिय समाणी रे, जाणी मोक्ष तणी नीसाणी रे।
इम विनय मुं नमा अति मति प्राणी रे, इम समयसुन्दर वद वाणी रे। सु।

खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणंद दर, गणहर सहर जिमर सर।
श्री खरतर गुरु पट्टावली, नाम मात्र पभणु मन रली ॥१॥
उदयउ श्री उद्योतनसूरि, वर्द्धमान विद्या भरपूरि।
सूरि जिणेसर सुरगुरु समा, श्री जिनचन्द्र सूरीसर नमउ ॥२॥
अभयदेव सूरि सुमहरस, श्री जिनवल्लभ सूरिगया सार।
युगप्रधान जिनदत्त सूरिंद, नरमनि मंडित श्री जिनचंद ॥३॥

श्रीजिनपति सूरीसर राय, सूरि जिनेसर प्रणमुं पाय ।
जिन प्रबोध गुरु समरू सदा, श्रीजिनचंद्र मुनीसर मुदा ।।४।।
कुशल करण श्री कुशल सुरिंद, श्रीजिनपदमसूरि सुखकंद ।
लब्धिवंत श्री लब्धि सूरीश, श्री जिनचंद नमूं निशदीस ।।५।।
सूरि जिनोदय उदयउ भाण, श्री जिनराज नमूं सुविहाण ।
श्री जिनभद्रसूरीसर मलउ, श्री जिनचंद्र सकल गुण निलउ ।६।
श्री जिनसमुद्रसूरि गच्छपती, श्री जिनहंससूरिसर यती ।
जिनमाणिक्यसूरि पाटे थयउ, श्रीजिनचंद सूरीसर जयउ ।।७।।
ए चौवीस खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट ।
ते पामइ मन वंछित कोड, समयसुंदर पभणइ कर जोड़ि ।।८।।

इति श्रीखरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिता च प० समयसुन्दरेण ।
(अभयचंदजी भंडार गु० नं० २५)

गुर्वावली गीतम्

राग—नट्टनारायण जाति कड़खा

उद्योतन वर्द्धमान जिनेसर, जिनचंदसूरि अभयदेवसूरि ।
जिनवल्लभसूरि जिनदत्त जिनचंद,श्री जिनपतिसूरि गुण भरपूरि ।।१।।
ए गुरु श्रीजिनपतिसूरि गुण भरपूर नम,
श्रीगुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ।।
जिनेसरसूरि प्रबोधसूरि जिनचंदसूरि, कुशलसूरि पद्मसूरिंद ।
लब्धिसूरि जिनचंद जिनोदय श्री जिनराजसूरि सुखकंद ।।

मद्रसूरि जिणचंद सुसूरि, हसूरि चोपड़ा कुशलचंद ।
जिन माणिक्यसूरि श्री जिनचंदसूरि, श्रीजिनसिंघसूरि चिर नंद ॥२॥

एसु श्रीजिनसिंहसूरि चिर नंदइ,
श्री गुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ॥

सुधरम सामि परंपरा चंद कुल, वयर सामि नी साखा आख ।
खरतर गच्छ भट्टारक गिरुया, परगच्छि ए पद्य क्रिया प्रमाखि ।
पाखी आठमि नी चउमासइ, गुरावलि गीत सुणो वखाणि ।
श्रीसंघ नइ मंगलीक सदइ, समयसुन्दर बोलति मुख वाणि ॥३॥

दादा श्री जिनदत्तसूरि गीतम्

दादाजी वीनती अवधारो । दा० ।
चड़ली नगर श्री शांति प्रासादे, जागतउ पीठ तुम्हारो ॥दा ।१॥
तूं साहिब हूं सेवक तोरो, वंछित पूर हमारो ।
आरधियां परिहइ नहीं उत्तम, ए तुमे मात विचारो ॥दा ।२॥
सेवक सुखियां साहिब सोमा, त मथी मक्त संभारो ।
समयसुंदर कहइ भगति शुगति करि, जिनदत्तसूरि सुधारो ॥दा ।३॥

दादा-श्रीजिनकुशलसूरिगुरोरष्टकम्

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा-भवरकश्वरणार्चितपत्कजम् ।
मरुघुगुर्ज्जरगच्छालयमण्डनं, कुशलसूरिगुरु प्रणत स्तवे ।१।

कति न सन्ति किमवरदायिनो, भुवि भवान् सुगुरुर्मयकामितः ।
सुगमणिर्यदि हस्तगतो भवेत्, किमपरैः किल काचकपर्दकैः ।२।
कनिकमममाकुलवन्मने प्रवरसौम्यसमन्वितसद्घने ।
मम हृदि स्मरण तव सर्वदा, भवतु नाम जपस्तु मुदाप्तये ।३।
विकटसङ्कटकोटिषु कम्पिता, सनुभृतां विषमा नियमा समा ।
सुगुरुराज तवस्थित दर्शना-दनुभवन्ति मनोरथपूर्णता ।४।
नृपसभासु यशो बहुमानतां, विवदमानजने जयवादताम् ।
सुपरिवार-सुशिष्य-परम्परा-स्वप गुरो सुयशस्करतेश्वराम् ।५।
न खलु राजभयं न रणाद्भयं, न खलु रोगभयं न विषाद्भयम् ।
न खलु बन्दिभयं न रिपोर्भयं, भवतु भक्तिभृतां तव भूस्पृशाम् ।६।
अपर-पूर्व-सुदक्षिण-मण्डले, मरुधु मालवसिन्धिषु मङ्गले ।
मगध-माथुमवस्थपि गूर्जरे, प्रति पुर महिमा तव गीयते ।७।
मम मनोरथकल्पलता मतां, कुशलसूरिगुरो फलिताऽधुनाम् ।
प्रबलभाग्यवशेन मया यतात्, यदमृत दशा तव दर्शनम् ।८।

मरुधरस्मरबाणरसक्षिति (१६५१),
प्रमितविक्रमभूपतिसत्पति ।
समयसुन्दरभक्तिनमस्कृति,
कुशलसूरिगुरोर्मतताङ्घ्रिय ।।९।।

दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

आयौ आयो श्री समरता दादा आयौ ।
संकट दूरउ सेवक कूं सद्गुरु, देराउर तें धायो आ ।।म ।। १।।

समयसुंदर कहइ मांस्यु रे,
नित प्रणमु सिर नामी रे आतीड़ा ॥ ४ ॥

दादा श्री जिन कुशल सूरि गीत

राग—वसंत

आज आणंदा हो आज आणंदा ।
भाव भगति परभाते भेट्या,
श्री जिन कुशल सूरीन्दा ॥ आ० ॥ १ ॥
आरति चिन्ता टालइ आलगी,
गुरु मेटे दूर करे दुख दंदा ।
भगतो पीठ आले लोग बाहर,
नर नारी ना वृन्दा ॥ आ० ॥ २ ॥
साहिब हूँ तोरी करु सेवा,
आठ पहर भरत वंदा ।
समयसुंदर कहइ सानिध करज्यो,
चंद कुलंबर चंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥

अमरसर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—मारुणी

वाजि हो सफ दरिसण दादा, श्रीजिनकुशल करि सुप्रसादा ।
सेवक नइ समरथड पइ सादा, जग सिगलउ जंपइ जसवादा । दा.।१।

असपति गजपति नृपति उदारा, इन्द्र तणा ठीसइ अमतारा।
पुत्र कलत्र मनइ परिवारा, ते सब तेज प्रताप तुम्हारा।दा।२।
नर नारी आपद निस्तारा, भइबड़ियां नइ तू आधारा।
परतिख परता पूरणहारा, मनवंछित फल पूरि हमारा।दा।३।
नपर अमरसर पु म निवेशा, प्रसिद्धि घणी प्रगटी परमेसा।
सत करइ सद्गुरु सुविशेषा, एह समयसुन्दर उपदेसा।दा।४।

उग्रसेनपुर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

पंथी नइ पूछूं वातड़ी रे, तुम आया उग्रसेनपुर थी आज रे।
तिहां दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्रीजिनकुशल सूरिराज रे ॥१॥
सुणो नइ गोरी तुम गुरु राजीया, अमे दीठा मारवाड़ मेवाड़ देस रे।
धर्म मारग परकाश रे, आणंद लील विलास रे ॥२॥
सघ सहु सेवा करइ, राय राणा सहु घइ मान रे।
मार नमइ सहु नर नार रे, महिमा मरु समान रे ॥३॥
मारो मन घणो उमह्यो रे, वांदूं मइ गुरु ना पाय रे।
समयसुन्दर सेवक रे, श्री जिनकुशलसूरि गुरु राय रे ॥४॥

नागोर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

उग्र घरि अम आविया दादा, भगत तोरा पाय।
व ... छोड़ी बीनवु दादा, आपनि दूरि गमाय ॥१॥

इण रे अगम मई, नागोर नगीनइ दादो आगलउ।
मान मगति सु मेटंतां, मन दुख मागलउ ॥ इण रे०॥
को केहनइ को केहनइ, दादा मगत मानावइ देव।
मई इक तारी आदरी दादा, एक करूँ तोरी सेव ॥ इण ॥२॥
सेवक दुखिया देखतां दादा, साहिब सोम न होय।
सेवक नइ सुखिया करइ दादा, साचो साहिब सोय ॥ इण ॥३॥
श्री जिनकुशल सूरीसरु दादा, पिता आरति चूरि।
समयसुन्दर कहइ माहरा दादा, मन वंछित फल पूरि ॥ इण ॥४॥

श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—भैरव

पाणी पाणी नदी रे नदी, सानिध करो दादा सदी रे सदी। पा.।१।
ध्यान एक दादइ श्री रो धरतां, कष्ट न आवइ कदी रे कदी। पा.।२।
समयसुंदर कहइ कुशल कुशल गुरु,समरयां साद चै सदी रे सदी।३।

पाटण मंडन श्री जिनकुशलसूरि गीतम

राग—मल्हार

उदउ करो संघ उदउ करो, विनती करइ श्री संघ दादाजी।उ।
ऋद्धि समृद्धि सुख सपदा द्रव्य भरो भंडार दादाजी।
मणि माणक मोती बहु, पुत्र कलत्र परिवार दादाजी।उ.।१।

आधि व्याधि आरति चिंता, संकट विकट विकार दादाजी।
दुख दोहग दूरइ हरउ, तुम्हे अडवड़ियां आधार दादाजी। उ।२।
सदगुरु समरथां साद द्यउ, सेवक नी करउ सार दादाजी।
परतिख परचा पूरवउ, तुम्हे जागती ज्योत उदार दादाजी। उ।३।
पूजउ गुरु पगला भला, पूनिम दिन बुधवार दादाजी।
केसर चंदन मृगमदा, अगर कुसुम अनिवार दादाजी। उ।४।
गीत गाव तान मान सु, मादल ना धोंकार दादाजी।
दान मान आपउ घणा, भावना भावउ उदार दादाजी। उ ५।
श्रीजिनकुशलसूरीसरु, मन वंछित दातार दादाजी।
पाटण संघ पूरउ रली, भणइ समयसुन्दर सुविचार दादाजी। उ।६।

अहमदाबाद मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादो तो दरसण दाखइ, दादो मोहिला सुखिया राखइ हो।
दादाजी दौलत दौ॥
दादो तो चिंता चूरइ, दादो परतिख परचा पूरइ हो। दा।१।
दादो तो बिछड़ियां मेलइ, दादो वैरिमर दुसमण ठेलइ हो। दा।२।
दादो तो समरथां आवइ, दादो परघल लखमी लावइ हो। दा।३।
दादो तो दुसमण दाबइ दादो विघन हरइ वाट पाधरइ हो। दा।४।
दादो तो साचो जाणइ, दादो बोल ऊपर चित आणइ हो। दा।५।
दादो तो दामरा दइवइ, दादो अहमदावाद पाटइ हो। दा।६।
दादो तो कुशल करइ, इम समयसुन्दर गुण गावइ हो। दा।७।

दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादाजी दीयइ दोय चेला ।
एक मगइ एक करइ सयातच, सेवक होत सोहेला । दा० ।१।
श्रीजिनकुशलसूरीसर सानिध, आज के काज बहेला ।
समयसुन्दर कहइ सीरखी मांटूँ, गुन्दवड़ा गुल भेला । दा० ।२।

भट्टारक त्रय गीतम्

राग—आसावरी

भट्टारक तीन हुए बड़ भागी ।
जिण दीपायउ श्री जिन शासन, सबल पडूर सोभागी । म० ।१।
खरतर श्री जिनचंद सूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी ।
विधि पक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी । म० ।२।
मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक, पुण्य दशा हम जागी ।
समयसुंदर कहइ तत्त्व विचारउ, भरम जायइ जिम भागी । म० ।३।

—•—

जिनचन्द्रसूरि कपाटलोहशृङ्खलाष्टकम्

श्रीजिनचन्द्रसूरीशा, वयत्रअरशृङ्खला ।
शृङ्खला धर्मशालायां चातुरे किमसौ स्थिता ॥ १ ॥
शृङ्खला धर्म शालायां,वासितां पापनाशिनाम् ।
शिवसधसमारोह, किमु सोपानसन्ततिः ॥ २ ॥

पा पठ्यमान मुनिमि प्रक्रम
श्रीपार्श्व नाम-प्रगुण-प्रक्रमम्।
भुत्वा स्वनाथोऽत्र सत समागाद्
सेवाकृतहि: किल शृङ्खलाच्छलात् ॥ ३ ॥

दर्पसयममुन्दर्या:, केशपाश किमङ्ग स ।
धराङ्गस्थितिरामाति, शृङ्खला श्यामलघु ति ॥ ४ ॥

कपाटे कृष्णपद्मीव, शृङ्खला शुशुभेतराम् ।
स्थापितेव महामोह-नागनाशाय नित्यश ॥ ५ ॥

पापपाश धराङ्क-रघाय साधुमन्दिरे ।
ध्रुव धर्म मरुद्देनोरियं प घनशृङ्खला ॥ ६ ॥

महामोहमृगादीनां, पाशपाताय मण्डिता ।
शृङ्खलापाश सेसेव, धर्म शब्दातिघोषणात् ॥ ७ ॥

सप्त छद्यमेघादि-मीत्यैषा लोहशृङ्खला ।
धर्मस्थानस्य साधूनां, गुप्त्य समुपागता ॥ ८ ॥

इति कपाट लौह भ सप्ताष्टक सम्पूर्णम् ॥

यु० जिनचन्द्र सूरि गीतम्

भाषा १

पणमिय पार्श्वजिणंद, माणंद मयललोयणाणंद ।
श्रीजिणचन्दमुणिंद थुणामि भो भविय भावरय ॥१॥

सा धन्ना जयपुन्ना, सयत्थी जीवम्मि सफलसोयम्मि ।
जं इच्छीए पत्तो, उप्पन्नो एरिसो पुत्तो ॥२॥
जह चंदस्स चकोरा, मोरा मेहस्स दंसणं पवर ।
इच्छंति जस्स गुरुणो, सो सुगुरु आगउ इत्थ ॥३॥

छन्द गीता

सिरिवंत साहि सुतन, माता सिरिया देवी नंदणो ।
वयरागि लहुवय लिद्ध संजम, भविय जण आणंदणो ॥
शुभ भाव समकित ध्यान समरण, पंच श्री परमिट्ठिओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ४ ॥
श्री जैनमाणिक्यसूरि सद्गुरु, पाटि प्रगटयउ दिनकरो ।
सुविहित खरतर गच्छनायक, धर्म मार धुरंधरो ॥
तप जप सुजपणा जुगति पालइ, मात प्रवचन अट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयण दिट्ठओ ॥ ५ ॥
जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव किय ।
उद्धरी किरिया नयरि विक्रमि, संघ सोह चढ़ावियं ॥
निरखंत दरसण सुगुरु केरउ, दूरि दोहग नट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ६ ॥
चारित्र पात्र कठोर किरिया, नाम संसय सोहए ।
मुनिराय महियलि मनहि नामइ, माइ माया छोइ ए ॥

आरति चिंता सयल पूरइ, पूरइ मन इट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, मम नयण दिट्ठओ ॥ ७ ॥
जो चउद विद्या पारगामी, सयल जण मण मोह ए।
अति मधुर देसण अमृत धारा, अमुह जिय पडिबोह ए॥
कलिकाल गोयम सामि समवडि, वयण अमृत मिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, मम नयण दिट्ठओ ॥ ८ ॥
पुर नयर गामइ ठाम ठामई, गुरु महोच्छव अति घणा।
कामिनी मंगल गीत गावइ, रलिय रंगि वधामणा॥
गुरुराज चरणे रंग लागउ, जाणि चोल मजिट्ठओ।
सो गुरु श्रीजिणचंदसूरि, मम नयणे दिट्ठओ ॥ ९ ॥
इक दियइ पाठक पद प्रधानं, वलिय वाचक गणि पद।
इक दियइ दीक्षा सुगुरु शिक्षा, एक कुं सुख संपद॥
इक माल रोहण भविय बोहण, जाणि सुरतरु तुट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, मम नयण दिट्ठओ ॥१०॥

दोहा

इक दिन अकबर भूपति इम भाखइ,
मंत्रीसर कर्मचंद सु दाखइ।
तुम्ह गुरु सुणियइ गुजर सहर,
मिट्ट पुण्य सुप्रताप मसहर ॥ ११ ॥
वेगि बोलावउ लिखि फुरमाणं,
आदर अधिक दइ बहु माणं।

सुणि जिणचंद सूरि सुखदाए,
जिम हम जैन धरम पतिआवे ॥ १२ ॥

तब मंत्रीसर वेगि बुलाए,
आडंबर मोटइ गुरु आए ।
नर नारी मन रंगि वधाए,
पातिसाहि अकबर मनि भाए ॥ १३ ॥

छंद गीता

आवतां आदर अधिक दिद्धउ, पातिसाहि पर सिद्धओ ।
लाहोर नयरि महा महोच्छव, सुजस श्री सघ लिद्धओ ॥
श्री पूज्य आया हुया आणद सावि अलघर बुद्धओ ।
सो गुरु श्री जिणचद सूरि, धम नमयो दिट्ठओ ॥ १४ ॥

प्रति दिवस अकबर साहि पुच्छइ, जैन धरम विचारओ ।
प्रति पुच्छइ गुरु मधुर वाणी, दया धरमइ सारओ ॥
प्राणातिपातादिक महाव्रत, रात्रि भोजन छड्डओ ।
सो गुरु श्री जिणचद सूरि, धम नयण दिट्ठओ ॥ १५ ॥

रंजियउ अकबर साहि बगसइ, विषम सात अमारि के ।
वलि मच्छ मारे नगर खंभाइत दरिया वारि के ॥
जो जिपउ जुगह प्रधान पद द, सबहि मई उच्छिट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचद सूरि, धन्न नयण दिट्ठओ ॥ १६ ॥

मिथा वाचिव जुगलउ शिष्य जिणसिंघ,सूरि पाट्ट थप्पिमो।
सई हत्थि आचारिज पद दे, सूरि मंत समप्पिमो ॥
अकबर साहि हुकमइ हुयउ सुजस गरिट्ठमो।
सो गुरु श्री जिनचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठमो ॥ १७ ॥
सग्राम संग्रम मंत्रि कर्मचन्द, कुल दिवाकर दीप्पिमो।
गुरु राज पद उच्छव करायउ, सवा कोड़ि समप्पिमो ॥
मास्खद घरत्या हुया उच्छव, महुइ मांहि वरिट्ठमो।
सो गुरु श्री जिणचद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठमो ॥ १८ ॥

॥ कलश ॥

आज हुया आणंद, आज मन वंछित फलिया,
आज अधिक उच्छरग, आज दुख दोहग टलिया।
श्री जिणचद मुणिंद, सूरि खरतर गच्छ नायक,
रीहड़ कुलि सिणगार, सार मन वछित दायक ॥
लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहुँ खंडि जस विस्तारिया।
कर जोड़ि समयसुंदर भणइ,श्री पूज्य मलाइ पधारिया ॥१६॥

— o —

युगप्रधान-श्रीजिनचन्द्रसूर्यष्टकम्

ए श्री सजन के मुख वाणि सुणो,
जिणचंद मुणिंद महंत यती।

तप जप करइ गुरु गुर्जर में,
प्रतिबोधत है भविकु सुमति ॥
तब ही चित चाहन चूंप भई,
समयसुन्दर के प्रभु¹ गच्छपति ।
पठई² पतिसाहि अकब्बर³ की छाप,
बोलाए गुरु गजराज गति ॥१॥
एजी गुर्जर तें गुरराज चले,
बिच में चौमास जालोर रहे ।
मेदिनीतट मंत्रि मंडाण कियो,
गुरु नागोर आदर मान लहे ॥
मारवाड़ रिणी गुरु वंदन को,
तरसे तरसे बिच वेग वहे ।
हरख्यो सब लाहोर आये गुरु,
पतिसाह अकब्बर पांव गहे ॥२॥
एजी साहि अकब्बर बब्बर के,
गुरु सूरत देखत ही हरखे ।
हम योगी यति सिद्ध साधु व्रती,
सब ही षट दर्शन के⁴ निरखे ॥
तप जप्प दया धर्म धारण को,
जग कोई नहीं इनके सरखे ।

१ गुरु, २ भेजे ३ अकब्बरी ४ अपवित्र ५ में

समयसुन्दर कहै धन्य गुरु,
पतिसाहि अकब्बर जो परखे[९] ॥३॥
एजी अमृत वाणि सुणी सुलतान,
ऐसा पतिसाहि हुकम्म किया।
सब आलम मांहि अमारि पलाइ,
बोलाय गुरु फुरमाण दिया॥
जग जीव दया धर्म दाखण तैं,
जिन शासन मइं शु सोभाग लिया।
समयसुन्दर कहै गुणवंत गुरु,
दग देखत हरखित होत हिया ॥४॥
एजी[९] श्री जी गुरु धर्म गोठ[१०] मिले,
सुलतान सलेम अरज करी।
गुरु जीवदया नित चाहत[११] हैं,
चित अन्तर प्रीति प्रतीति धरी॥
कर्मचन्द बुलाय दियो फुरमाण,
छोडाय खंभायत की मछरी।
समयसुन्दर कहइ सब लोगन मइं,
जु खरतर गच्छ की ख्याति खरी ॥५॥

---

९ रोपी वच ऽमापस चन्द उदय अम तीन बताय कथा परखे (मुद्रित में पाठांतर एवं पंक्ति ऊपर नीचे) ७ गुरु ८ मदद ९ इम १० ध्यान ११ प्रेम धरे.

एही श्री जिनचन्द सूरिन्द्र सुखी,
　　पतिसाहि मयौ गुरु राजिय रे।
उमराव सबै कर जोडि खड़,
　　पमखै पपखै मुख छाजिय रे॥
युग प्रधान किये गुरु कुं[१२],
　　गिगड़दें धूँ धूँ बाजिय रे।
समयसुन्दर तु ही जगत गुरु,
　　पतिसाहि अकब्बर गाजिय रे॥६॥
एजी ज्ञान विज्ञान कला सकला,
　　गुण देखि मेरा मन रीझिये जी।
हिमायु को नन्दन एम भणै,
　　मानसिंह पटोधर कीजिये जी॥
पतिसाहि हजूरि थप्यो सिंहसूरि,
　　मण्डाण मन्त्रीसर कीजिये[१३] जी।
जिनचन्द्र अनें[१४] जिन सिंह सूरि,
　　चन्द्र सूरिज ज्युं प्रतपीजियेजी॥७॥
एजी रीहड़ वंश विभूषण हंस,
　　खरतर गच्छ समुद्र ससी।
प्रतप्यो जिन माणिक सूरि के पाट[१५],
　　प्रभाकर ज्युं प्रणमू उलसी॥

१२ चामर छत्र मुरातब भत्त　१३ कीजिये　१४ पदे　१५ पट्ट।

मन सुद्ध अकब्बर मानतु है,
जग जाणत है परतीति इसी ।
जिणचन्द मुणिंद चिर प्रतपो,
समयसुन्दर देत आसीस इसी ॥८॥

—०—

६ राग ३६ रागिणी नामगर्भित श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतम्

श्रीजइ ओच्छव सदा सुगुरु करउ,
सुललित वयण सुणि सखिमरउ ।
कहउ री सदेसा एरा गुरु आवविया,
तिण वेला उलसी मेरी छतिया ॥ १ ॥
आए सखी भीर्वत मल्हारा,
खरतर गच्छ सिणगार हारा ॥ आंकणी ॥
मरसा रंग वधावन श्रीजइ,
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ ।
मदसे गुरु कुं नित उत्तगउरी,
सुंदर शिरीरा गच्छपति भउरी ॥ २ ॥
दुख के दार सुगुरु तुम हउ री,
गाऊ गुण गुरु कदारा गउरी ।

युगप्रधान जिनचन्द मुनीसरा,
तूं साहिब मेरा ॥१२॥
दुरित मे वारउ गुरु जी सुख करउ रे,
श्री संघ पूरउ आशा।
नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे,
लाभइ लील विलासा ॥१३॥
धन्या सरी रागमाला रची उदार,
छ' राग छत्तीसे माषा मेद विचार। ध०।
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरु वार,
थंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार ॥१४॥ध०॥
युगप्रधान जिनचंद सूरिंद सार,
चिरजयउ जिनसिंहसूरि सपरिवार। ध०।
सकलचंद मुनीसर सीस रूपसिकार,
समयसुंदर सदा सुख अपार ॥ध०॥१५॥

इति श्री युगप्रधान श्री जिनचंद्र सूरीणां रागमाला सम्पूर्णा कृता च समयसुन्दर गणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे कार्तिक सुदि ४ दिने श्रीस्तम्भतीर्थनगरे।

श्री जिनचन्द्रसूरि चन्द्राउला गीतम्

ढाल—चन्द्राउला नी

श्री खरतर गच्छ राजियउ रे, माणिक सूरि पटधारो
सुन्दर साधु सिरोमणि रे, जिनचंद परिवारो

जिनयर्वत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
ए चन्द्राउलउ अह अति सारउ,
श्री पूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ॥१॥
जिन चन्द सूरि श्री रे, तुम्हे जगि मोहन वेलि
सुखिन्यो वीनति रे, तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि,
गिरुया गच्छपति रे ॥ आंकणी ॥
वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारी रे ।
संघ सहु उच्छव करइ र, घरि घरि मंगलाचारो ॥
घरि घरि मंगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ बहिनी मोरी ।
ए चद्राउलउ सांभलज्यो री, हुँ बलिहारी पूज जी तोरी ॥२॥
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतां सुख पायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अशिय विघन सवि जायो ॥
अशिय विघन सवि जाय रे दूरइ, श्रीपूज्य चांद उगमते सूरइ ।
ए चंद्राउलउ गाउ हजूरइ, तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ॥३॥
जिण दीठां मन उल्लसइ रे, नयणे अमिय झरंति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे, वंछित काम सरंति ॥
वंछित काम सरंति सदाई, श्री जिण चद सूरि वांदउ माई ।
ए चंद्राउला मास मइ गाई, प्रीति समयसुन्दर मनि पाई ॥४॥
इति श्री युगप्रधान जिनचंद्रसूरीणां चद्राउला गीत सपूर्णम् ॥१६॥

सोरठगिरि की जात्रा करत हूं,
भाग्य री गुरु पाय रम्यो,
भाग्य फल्यो आण्द्रम सोकसरम्यो ॥ ३ ॥
तूं कृपा पर दउलति दे मोहि सु तेरउ मगल हुं री।
गुरु श्री तूं ऊपर श्रीउ राखी रहुं री।
हद् सपनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी,
हूं चरण लागुं इर हमर वारी ॥ ४ ॥
अहो निके नट नरायण के आगइ,
अपसइ नृत्य करत गरु के रागइ।
अपसे शुद्ध नाटक होता गावत सुदरी,
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर घुघरी ॥ ५ ॥
रस मधु माधवइ देति रंभा,
सुगुरु गायंति वायंति भंभा।
तेज पुंज जिम सोमइ रवि,
युगप्रधान गुरु पेखउ मवि ॥ ६ ॥
सखहि ठउर वरी अपत सिरी,
गुरु क गुण गावत गुजरी।
मारुणी नारी मिली सब गावत
सुंदर रूप सोभागी रे,
आज सखी पुण्य दिसा मेरो जागी रे ॥७॥

विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
ए चन्द्राउलउ छइ अति सारउ,
श्री पूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ॥१॥
जिन चन्द सूरि जी रे, तुम्हे जगि मोहन वेलि
सुणिज्यो वीनति रे, तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि,
गिरुया गच्छपति रे ॥ आंकणी ॥
वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारो रे ।
सघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मंगलाचारो ॥
घरि घरि मगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ पहिनी मोरी ।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्यो री, हुँ बलिहारी पूज्य जी तोरी ॥२॥
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतां सुख पायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जायो ॥
अलिय विघन सवि जाय रे दूरइ, श्रीपूज्य चांद उगमते पूरइ ।
ए चंद्राउलउ गाउ हजूरइ, तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ॥३॥
जिण दीठां मन उल्लसइ रे, नयणे अमिय भरति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति सदाई श्री जिण चद सूरि चांदउ माई ।
ए चंद्राउला मास मई गाई, प्रीति समयसुन्दर मनि पाई ॥४॥
इति श्री युगप्रधान जिनचंद्रसूरीणां चन्द्राउला गीतं संपूर्णम् ॥१६॥

युगप्रधान जिनचन्द सूरीसरा,
तूं साहिब मरा ॥१२॥
दुरित न करउ गुरु श्री सुख करउ रे,
श्री संघ पूरउ आशा ।
नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे,
सामइ लील विलासा ॥१३॥
धन्या सरी रागमाला रची उदार,
छः राग छत्रीस भाषा भेद विचार । ध०।
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरु वार,
अमरा पासु पसायइ श्रमावती मझार ॥१४॥ध०॥
युगप्रधान जिनचन्द सूरिंद सार,
चिरजयउ जिनसिंहसूरि सपरिवार । ध० ।
सकलचंद सूरीसर सीस दयतिवार,
समयसुंदर सदा सुख अपार ॥ध०॥१५॥

इति श्री युगप्रधान श्री जिनचंद्र सूरीणां रागमाला सम्पूर्णा कृता च समयसुन्दर गणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे कार्तिक सुदि ४ दिने श्रीस्तम्भतीर्थनगरे ।

श्रीजिनचन्द्रसूरि चम्बावला गीतम्

ढाल—चम्बावला नी

श्री खरतर गच्छ राजियउ रे, माणिक सूरि पटधारो
सुन्दर साधु सिरोमणि रे, जिनचंद्र परिवारो

विनयवन्त परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
ए चन्द्राउलउ छइ अति सारउ,
श्री पूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ॥१॥

जिन चन्द सूरि जी रे, तुम्हे जगि मोहन वेलि
सुणिज्यो वीनति रे, तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि,
गिरुया गच्छपति रे ॥ आंकणी ॥

वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारो रे ।
संघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मंगलाचारो ॥
घरि घरि मंगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ बहिनी मोरी ।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्यो री, हुँ बलिहारी पूज जी तोरी ॥२॥

अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतां सुख पायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि आयो ॥
अलिय विघन सवि आय रे दूरइ, श्रीपूज्य चांद उगमते सूरइ ।
ए चंद्राउलउ गातं हजूरइ, तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ॥३॥

जिण दीठां मन उल्लसइ रे, नयणे अमिय झरति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे, वंछित काम सरति ॥
वंछित काज सरंति सदाई श्री जिण चद सूरि वांदउ माई ।
ए चन्द्राउला भास भई गाई, प्रीति समयसुन्दर मनि पाई ॥४॥

इति श्री युगप्रधान जिनचंद्रसूरीणां चन्द्राउला गीत सम्पूर्णम् ॥१६॥

श्रीजिनचन्द्रसूरिस्वप्नगीतम्

सुपन लह्यु साहलड़ी रे, निसि भरि सूती रे आज ।
सुंदर रूप सुहामणा रे, दीठा श्री गच्छराज ॥१॥
सुगुरु जी मूरति मोहनवेलि,
श्रीपूज्य जी चालइ गजगति गेलि ॥आंकणी ॥
गाम नगर पुर विहरता रे, आव्या जिण चंद सूरि ।
श्री संघ साम्हउ संचरइ रे, वाजइ मंगल तूरि ॥सु०॥२॥
आव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखाण ।
संग सहु धर्म सांभलइ रे, धन मानइ परमाण ॥सु०॥३॥
सखि सवद सखि मई सुणयउ रे, ऊभी ओरडै रे बार ।
आंगणि मोरी आविया रे, परिवरथा मुनिवर थाट ॥सु०॥४॥
धवल मंगल गावइ गोरडी रे, हीयड़ इरख न माय ।
नारि करइ गुरु न्युंछणा रे, पडिलाभइ मुनिराय ॥सु०॥५॥
सुपन एह साचउ हुन्यो रे, सीमइ वंछित काज ।
श्रीजिन चंद्र सूरि वांदियइ रे, समयसुंदर सिरताज ॥सु०॥६॥

(गोड़ी जी का भंडार उदयपुर)

श्री जिनचंद्रसूरि छंद

भरतखित्तउ भरवर ठाम अगम, सबल साहि सतम ।
सत्त अकुस आगम ज्ञान साना, मानसिंह सुँ प्रम ॥

रायसिंघ राजा भीम राउल, खर नमे सुरतान।
घड़ा घड़ा महीपति मयण मानइ, दय आदर मान ॥
गच्छपति गाइये जी, जिनचंदसूरि मुनि महिराण।
अकबर थापियो जी, युगप्रधान गुण जाण ॥ग०॥१॥
कासमीर काबुल सिंघ सोरठ, मारवाड़ मेवाड़।
गुजरात पूरब गौड़ दखिण, समुद्रतट पयलाड़ ॥
पुर नगर देश प्रदेश सगल, ममइ जसि भ ण।
आषाढ़ मास अमीय वरसे, सुगुरु पुण्य प्रमाण ॥ग०॥२॥
पच नदी पांचे पीर साध्या, खोडियउ खेत्रपाल।
जल वहइ जय अगाध प्रवहण, थांभिया तत्काल ॥
किंत किता कहु वखाण।
परसिद्ध अतिशय कला पूरण, रीझवण राय.ण ॥ग०॥३॥
गच्छराज गिरुयो गुणे गाढ़ो, गोयमा अवतार।
बड खरतरपंथ बृहत्खरतर, गच्छ को सिणगार ॥
चिरजीवउ चतुर विध सघ मानिय, करइ कोड़ि कल्याण।
गणि समयसुदर सुगुरु मेग्या, सफल आज विहाण ॥ ४ ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी

मले री माई श्री जिन चन्द्र सूरि आए।
श्रीजिनधर्म मरम बूझण कुं, अकबर साहि बुलाए ॥म०॥१॥

सद्गुरु साहि सुखी साहि अकबर, परमानंद मनी पाए।
इक्कदर रोव अमारि पालन कु, सिखि फुरमाण पठाए ॥म॥२॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूरि पुलाए।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनचंद सूरि, सब जन के मन भाए ॥म॥३॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी

सुगुरु चिर प्रतपे तूं कोडि वरीस।
खंभायत बंदर मालसहो, सब मिलि देत आसीस ॥सु॥१॥
धन धन श्री खरतर गच्छ नायक, अमृत वाणि वरीस।
साहि अकबर हमकुं रासत कुं, आसु करी बकसीस ॥सु॥२॥
लिखि फुरमाण पठाया सबही, धन कर्मचन्द्र मंत्रीश।
समयसुंदर प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥सु॥३॥

श्री जिनचन्द सूरि गीतम्

राग—आसावरी

पूज्य श्री तुम चरणे मेरउ मन लीणउ,

ज्यूं मधुकर अरविंद।

मोहन बेलि सकल मन मोहित,

पेखत परमानंद रे ॥ पू० ॥ १ ॥

दस दंदोल सबलउ पड़पउ तिहाँ किण्ये,
तुरत ना पेंमिया तुम चाद् ॥ ३ ॥
दरसनी केइ पर दीप मई चलि गया,
केइ नासी गया कच्छ देसे।
केइ लाहोर केइ रह्या मूँहि माँ,
दरसनी केइ पाताल पैसे ॥ ४ ॥
तिण समइ युग प्रधान अगि राजियो,
श्री जिनचंद्र तब समायो।
पूज अणगार परन्न सबी पाँगुरथा,
आगरइ पातिसाह पासि आयो ॥ ५ ॥
तुरत गुरु राय नइ पातिसाह तेड़िया,
देखि दीदार अति मान दीधा।
धरम की बात फुरमाण करि भखिया
फरला गुनह सहु माफ कीधा ॥ ६ ॥
जैन शासन तणी टक राखी करी,
ताहरइ माम कोई न तोलइ।
खरतर गच्छ नई सोम चाढ़ी खरी,
समयसुदर बिरुद साच बोलइ ॥ ७ ॥

श्री जिनचन्द्र सूरि आलिजा गीतम्

आज माम वति आवियउ पूजजी,

भाविद्य उपधान सह वहई पू०,
मांड घउ नंदि मंडाण ।।पू०।।
माला पहिरावो भावि ने पू०,
जिम हुवे जनम प्रमाण ।।पू०।। ६ ।। तु० ।।
अभिग्रह पांदय उमरइ पू०,
कीधा हुँता नर नारि ।।पू०।।
ते पहुँचाम्रो वेहना पू०,
वंदावो एक वार ।।पू०।। ७ ।। तु० ।।
पत्र पजूसण मांहि गयउ पू०,
शेष वांचे सहु कोय ।। पू० ।।
मन मान्या आदेश घउ,
शिष्य सुखी जिम होय ।।पू०।। ८ ।। तु० ।।
तुम सरिखउ संसार मंई पू०,
देखु नहीं को दीदार ।।पू०।।
नयण तृप्ति पामइ नहीं पू०,
समारु सौ वार ।।पू०।। ९ ।। तु० ।।
तुम्ह मिलवा मनमउ घणो पू०,
तुम तो मकल सत्तप ।।पू०।।
सुपनि में आवि वदावो पू०,
हुँ वांदिस परतप ।पू०।१ ।। तु० ।।

मूयइ करइ ते मूढ नर, श्रीमइ जिण चन्द सूरि ।
जग जपइ जस जेहनउ जइ० हो पुहवि कीरत पड़ूरी ।।८।। ऊ०
चतुरविध संघ पीसारस्यइ, ज्यां श्रीविस्यइ तां सीम ।
वीसारया किम वीसरइ वीस० हो निरमल तप जप नीम ।।६।। ऊ०
पाटि तुम्हारइ प्रगटियउ, श्री जिन सिंह सूरीश ।
शिष्य निवाज्या तइ सहु तइ० रे, अतीयाँ पूरी जगीश ।।१०।। ऊ०

(अपूर्ण)

श्री जिनसिंहसूरि गीतानि

(१) राग—मेवाडउ

श्री गौतम गुरु पाय नमी, गाऊं श्री गच्छराज[१] ।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू, पूरवइ वंछित काज ।।
पूरवइ वंछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोह ए ।
मुनिराय मोहन वेलि नी परि, भविक जन मन मोह ए ।।
चारित्र पात्र कठोर किरिया, परम कारिज उदमी ।
गच्छराज[२] ना गुण गाइस्यु श्री,श्री गौतम गुरु पय नमी ।। १ ।।

गुरु लाहोर पधारिया, तेडाव्या कर्मचन्द ।
श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्यउ परमाणद ।।
पामीयउ परमाणंद ततखण,हुकम दिउढी नउ कियउ ।
अत्यन्त आदर मान गुरु ने, पातसाह[३] अकबर दियउ ।।
धम गोष्ठि[४] करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया ।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ।। २ ।।

श्री अकबर आग्रह करी, कास्मीर कियो रे विहार।
श्रीपुर नगर सोहामणु, तिहां वरतावी अमार॥
अमारि वरती सर्व धरती, हुओ जय जय कार ए।
गुरु सीत तावड़ ना परिसह, सह्या विविध प्रकार ए।
[1]महालाभ जाणी हरख आणी, धीर पणु हियडे धरी।
कास्मीर देश विहार कीधो, श्री अकबर आग्रह करी॥ ३॥
श्री अकबर चित रंजियो [2]पूज्य नइ करइ अरदास।
आचारिज मानसिंह करउ, मम मनि परम[3] उल्लास॥
मम मनि आज उल्लास आणकउ, फागुण सुदि बीजइ मुदा।
सईहत्थि जिणचंदसूरि दीधी, आचारिज पद संपदा॥
करमचंद मंत्रीसर महोच्छव, आडंबर मोटउ कियो।
गुरुराज ना गुण दखि गिरुया श्री अकबर चित रंजियउ॥ ४॥
संघ सहु हरखित थयउ, गुरु नइ द्यइ आसीस।
श्री जिनसिंह सूरीसरु, प्रतपे तू कोडि वरीस॥
प्रतपे तूँ कोडि वरीस, सदगुरु चोपड़ा चढ़ती कला।
चांपसी साह मल्हार, चांपल दवि माता धन इला॥
पादसाह अकबर साहि परख्यो, श्री जिनसिंघसूरि चिर जयउ।
आसीस पभणइ समयसुंदर, संघ सहु हरखित थयउ॥ ५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां अष्टकी गीत समाप्तम॥

१-२ गुरुराज ३ पातिसाहि ४ गोठि, ५ गुरु, ६ गुरु ७ धार्मिक ८ वेलि

(२) श्री जिनसिंहसूरि हींडोलणा गीतम्

हींडोलना नी ढाल

सरसति सामिणी वीनवू, आपज्यो एक पसाय
श्री आचारिज गुण गावस्युं हींडोलना रे, आणंद अंगि नमाय।हीं १
वंदउ जिणसिंघसूरि हींडोलणा रे, प्रह उगमतइ सूरि।हीं।
मुझ मन आणंद पूरि हींडोलणा रे, दरसण पातिक दूरि।आं।
मुनिराय मोहन वेलड़ी, महियलि महिमा जास।
चंद जिम चड़ती कला हींडोलणा रे, भीसंघ पूरइ आस।हीं २।
सोभागी महिमा निलो, निरुपम दीपइ नूर।
नरनारी पाय कमल नमइ हींडोलणा रे, प्रगट्यो पुण्य पहूर।हीं ३।
चोपड़ा वंशइ परगड़उ, चांपसी साह मल्हार।
मात चांपलदे उरि धरया हींडोलणा रे, खरतरगच्छ सिणगार[१]।हीं ४।
चउरासी गच्छ सिरतिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं हींडोलणा रे,समयसुन्दर द्यइ आसीस[२]।

(३)

चासठ सहली सद्गुरु वांदिया जी,
सखि मुझ वांदिवा नी कोड़ रे।
श्री जिनसिंह सूरि आविया जी,
सखि करूं प्रणाम कर जोड़ रे ॥ चा ॥१॥

---

१ प्रगटयउ पुरव पड़ूर। २ पूरवइ मनह जगीस

मात चांपलदे उरि धर्यो जी,
सखि चांपसी साह मल्हार रे।
मन मोहन महिमा निलउ जी,
सखि चोपड़ा साख शृंगार रे॥ चा॥२॥
वइरागइ व्रत आदर्यो जी,
सखि पंच महाव्रत धार रे।
सकल कलागम सोहता जी,
सखि लब्धि विद्या भण्डार रे॥ चा॥३॥
श्री अकबर आग्रह करी जी,
सखि कास्मीर कियउ विहार रे।
साधु आचारइ साहि रंजियउ जी,
सखि तिहां वरताविं अमारि रे॥ चा॥४॥
श्रीजिनचंद्र सूरि थापिया जी,
सखि आचारिज निज पटधार रे।
संघ सयल आस्या फली जी,
सखि खरतरगच्छ जयकार रे॥ चा॥५॥
नन्दि महोच्छव मांडियउ जी,
सखि श्री कर्मचंद मंत्रीस रे।
नयर लाहोर वित्त वावरइ जी,
सखि खरचियइ कोड़ि चरीस रे॥ चा॥६॥
गुरु जी मान्या रे मोटे ठाकुरइ जी,
सखि गुरु जी मान्या अकबर साहि रे।

गुरु जी मान्या रे मोटे ऊबरे जी,
सखि जसु[१] जस त्रिभुवन मांहि रे।धा॥७॥
मुझ मन मोह्यो गुरु जी तुम्ह गुणे जी,
सखि जिम मधुकर सहकार रे।
गुरु जी तुम्ह दरसण नयणे निरखतां जी,
सखि मुझ मनि हरख अपार रे॥धा॥८॥
चिर प्रतपउ गुरु राजियउ जी,
सखि श्री जिनसिंघ सूरीश रे।
समयसुन्दर इम वीनवइ जी,
सखि पूरउ माहरा मनहि जगीस रे॥धा॥९॥

(४)

आज मेरे मन की आस फली।
श्री जिनसिंह सूरि मुख देखत, आरति दूर टली।
श्री जिनचन्द्र सूरि सइ हत्थइ, चतुरविध सब मिली।
साहि हुकम आचारिज पदवी, दीधी अधिक भली॥२॥
छोडि वरीस मंत्री श्री करमचंद, उत्सव करत रली।
समयसुंदर गुरु के पद पंकज, लीनो जम अली॥३॥

— —

(५)

राग—सारङ्ग

आज कु धन दिन मेरउ ।
पुण्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥आ ॥१॥
श्री जिनसिंघसूरि तु हि तुहि मेरे जिउ में, सुपन में नहिंय अनेरउ ।
कुमुदिनी चंद जिसउ तुम लीनउ, दूर तुहि तुम्ह नेरउ ॥आ ॥२॥
तुम्हारे दरसन आनंद मोपइ उपजति, नयन को प्रेम नवेरउ ।
समयसुन्दर कहइ सब कु वल्लभ जिउ, तूं तिन थइ अधिकेरउ ।आ ३।

(६) वधावा गीतम्

आज रंग वधामणा, मोतियड़े चउक पूरावउ रे ।
श्री आचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे । आ०।१।
युगप्रधान जगि जाणियइ, श्रीजिनचंदसूरि सूरिंद रे ।
सइ हत्थि पाटइ थापिया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे । आ०।२।
सुर नर किन्नर हरखिया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे ।
पातिसाहि प्रतिबोधियउ[१], श्री अकबर साहि सुजाण रे । आ०।३।
बलिहारी गुरु वयणड़ा, बलिहारी गुरु मुख चंद रे ।
बलिहारी गुरु नयणड़ा, पेखतां परमाणंद रे । आ०।४।
धन चांपलदे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे ।
पुरुष रत्न जिहां ऊपना, श्री चोपड़ा साख शृंगार रे । आ०।५।

१ प्रतिबुद्धमस्य

श्री खरतरगच्छ राजियउ, जिन सासन मांहि दीवउ रे।
समयसुन्दर कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिरजीवउ रे।६।

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्।
श्री हर्षनन्दन मुनिना लिपि कृतम्॥

(७)

राग—पूरवी गउडउ

अरी मोकू देहु वधाई।
देहु वधाई देहु वधाई री॥ अरी मोकू०॥
युग प्रधान जिनसिंघ यतीसर, नगर निजीक पधार।
देखि गुरु सरर करण कुं हुं आई॥ अरी०॥ १॥
मन सुध साहि मिलाम मानसु है, मन मोहन गुरु माई।
समयसुंदर कहइ श्री गुरु आये, प्रीति परम मनि पाई॥अरी०।२॥

(८) चौमासा गीतम्

भाद्रव मास सोहामणो मछिपसि वरसे मेहो जी।
बापियडा रे पिउ पिउ करइ, मम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
मम मन सुगुरु सनेह प्रगटयउ, मह्निनी हरियालियाँ।
गुरु वीस जयवा सुगति पालइ, वहइ नीर परवालियाँ॥
सुध खेत समकित बीज वावइ, सघ आनंद अति घणउ।
जिनसिंघसूरि करउ चउमासउ, भाद्रव मास सोहामणउ॥ १॥

मलहइ आयउ माउवठ, नीर भरया नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिहि वखाणो जी॥
वखाण अन्य सिद्धांत वांचै, भविय रंजइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरखइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरड़ी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंघसूरि मुणींद गातां, मलहइ रे आयो माउवउ॥ २॥
आसू आसा सहू फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपसम रस भरया, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुणमणि सोहए।
अति रूप सुन्दर मुनि पुरंदर, भविय जण मन मोहए॥
गुरु चंद्र नी परि झरइ अमृत, पूनवां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सहगुरु, आसू मास आसा फली॥ ३॥
कती गुरु चढ़ती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
भरतियइ रे धान नीपना, मन मनि परमाणंदो जी॥
मन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान घणा घणा।
वलि परब दीवाली महोत्सव, रलिय रंग वधामणा॥
चउमास च्यारे मास जिनसिंह सूरि संपद आगला।
पीनवइ वाचक 'समयसुन्दर' कती गुरु चढ़ती कला॥ ४॥

(९)

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेली रे।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि रे। आ०।१।

गय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साहि रे।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा मंहियल मांहि रे। मा०।
अमय मोहन नवि करउ, सघा दीसउ सो साधु रे।
मोहनगारा गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ साध रे। मा०।
गुण वेली रागइ सह को, अवगुण रागइ न कोई रे।
हार स को हियडइ धरइ, नेउर पायतलि होय रे। मा०।
गुणवंत रे गुरु अम्ह तणा, जिनसिंहसूरि गुरराज रे।
ज्ञान क्रिया गुण निरमला, समयसुन्दर सरताज रे। मा०।

(१०)

राग—मयणरेखा री

चिहुं खंडि चावा चोपड़ा, जिण कुलि तुम्ह अवतार हो। पूज्य जी
बयरागइ व्रत आदरयउ, उत्तम तुम आचार हो पूज जी ॥१
तुम्हे करणार वड़ा किया, कुण करइ तुम होड़ हो पूज जी।
सोभागी महिमा निलउ, लोक नमइ लख कोडि हो पूज जी ॥२
सबल खमा गुण तप्परउ, साधु धरम नउ सार हो पूज जी।
मारग पग पग प्रति पगु, आगम अरथ भंडार हो पूज जी ॥३
आचारिज पद थापियउ, सई हथि जिणचंद सूर हो पूज जी।
पद ठवणउ अमयद कियउ, अकबर साहि हजूर हो पूज जी ॥४
मानइ मोटा ठाकरा, मानइ राणा राय हो पूज जी।
देस मखउ मगि तप्परउ, पिशुन लगाड़या पाय हो पूज जी ॥५

गिरुयउ गच्छ खरतर भलउ, तेह तणउ तूं राय हो पूज जी।
श्रीजिनसिंह सूरीसरू, समयसुन्दर गुण गाय हो पूज जी ॥६॥

(११)

प्रह ऊठी प्रणमुं सदा रे, चरण कमल चित लाइ।
देऊँ तीन प्रदक्षिणा रे, पातक दूरि पुलाइ ॥१॥
म्हारा पूज जी, तुम सुं धरम सनेह।
मुख दीठां सुख ऊपजै रे, जिम बापियउ मेह। आंकणी।
सुह राई सुह देवसी रे, पूछूं बे कर जोडि।
विनय करी गुरु वांदियइ रे, तूटइ करम नी कोडि। म्हा ॥२॥
सुणतां सुललित वखाण रे, आणंद अंग न माइ।
देव धरम गुरु जाणियइ रे, समकित निर्मल थाइ। म्हा ॥३॥
मात पाखी अति सुमकता रे, पडिलाभूं वार वार।
ज्यूं लाधउ लखमी तणउ रे, सफल करूं अवतार। म्हा ॥४॥
गुरु दीवउ गुरु चन्द्रमा रे, गुरु देखाडइ वाट।
गुरु उपगारी गुरु बडा रे, गुरु उतारइ घाट। म्हा.॥५॥
श्रीजिनसिंघ सूरीसरू रे, चोपडा कुल सिणगार।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, श्री संघ नइ सुखकार। म्हा ॥६॥

(१२)

मुझ मन मोह्यो रे गुरु जी, तुम्ह गुण जिम बाबीहडउ[1] मेहो जी।
मधुकर मोह्यो र सुन्दर मालती, चद चकोर सनेहो जी। मु ॥१॥

१ बाबीयडउ

मानसरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोही भरतारो जी। सु।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी। सु।३।
सकल सोभागी सहगुरु राजियउ, श्रीजिनसिंघसूरीसो जी।
समयसुन्दर कहइ गुरु गुण गावतां, पूगइ मनह जगीसो जी। सु।४।

(१३)

राग—मारुणी धन्याश्री

अमरसर अब बहउ केती दूर।
पगि पगि पगि पंथियन कूं पूछत, आये आणंद पूर।अ।१।
पातसाह अकबर के माने, जिहां श्री जिनसिंहसूरि।
मास कल्प रहे आग्रह करि, थानसिंह साहि सनूरि।अ।२।
गुरु के पद पंकज प्रणमत ही भाजि गये दुख भूरि।
समयसुन्दर कहइ आज हमारे, प्रगट्या पुण्य पडूरि।अ।३।

(१४)

सुन्दर रूप सुहामणउ रे,
जोतां तृपति न थाय म्हारा पूज जी।
सरद पूनम कउ चांदलउ रे लाल,
कंचन वरणी काय म्हारा पूज जी॥ १॥

सई मोरो मन मोहियउ रे लाल,
श्री जिनसिंह सूरीश म्हारा पूज जी ।
मूरति मोहन वलरी रे,
मीठी अमृत वाणि म्हारा पूज जी ।
नर नारी मोही रह्या रे लाल,
सुणवां सरस वखाणि ॥म्हा०॥२॥
गुण अवगुण जाणइ नहीं रे,
ते सउ मूरख होय म्हा० ।
मइं गुण जाण्या तुम्हरा रे लाल,
तुम्ह सम अवर न कोय ॥म्हा०॥३॥
मन रंग लागउ माहरो रे,
जेहवउ चोल मजीठ म्हा० ।
ऊतार्यो नवि ऊतरइ रे लाल,
दिन दिन दूण गुण दीठ ॥म्हा०॥४।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू रे,
खरतर गच्छ कउ राय म्हा० ।
सूरिज जिम प्रतपउ सदा रे लाल,
समयसुन्दर गुण गाय । म्हा०। ५॥

(१५)

राग—वयराड़ी

सुणउ री सुणउ मेरे, सद्गुरु वयणा । सु०।

अमृत मीठे अत्यन्त, सरस वांचे सिद्धांत ।
मस्तत मन की भ्रान्ति, चित्त होत चयणा ।।सु०।।१।।
गावत बयराडी रागइ, आलापइ श्री संघ आगइ ।
बांसुरी मधुरी वागइ, सुख पामइ सयणा ।।सु०।।२।।
श्री जिन सिंघसूरि, दस्यां दुख गये दूरि ।
समयसुन्दर सनूरि, हरखे नयणा ।।सु०।।३।।

(१६)

सद्गुरु सेवउ हो शुभ मतियां ।
श्री जिनसिंघसूरि सुखदायक, गच्छनायक गज गतियां ।।स ।१।
सूत्र सिद्धान्त वखाण सुणावत, पडित बयराग की वतियां ।
समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, दिन दिन बहु दउलतियां ।स ।२।

श्रीजिनसिंहसूरि सपादाष्टक

एक्षु लाहोर नगर वर, पातिसाहि अकब्बर;
दया धर्म चितधर, चूम्यउ धर्म वतियां ।
कर्मचंद मंत्री ख(इ)सी, गुरु चित वात वसी;
अमयकुमार जसी, मानु जाकी मतियां ।।
वाचक महिमराज, करत उत्तम काज;
बोलाए श्रु मंत्रिराज, लिखि करी पत्रियां ।

समयसुन्दर तब, हरखित होत सब;
अधिक आणद अब, उलसति छतियां ॥१॥
एहु प्रणम्यां श्री शांतिनाथ, गुरु सिर धरथउ हाथ;
समयसुदर साथ, चाले नीकी घरियां।
अनुक्रमि चलि आए, सीरोही मइ सुख पाये;
सुलताण मनि भाए, पखत अंखरियां ॥
जालोर मेदनीतट, पइसारउ कियउ प्रगट,
हिंडवाणइ जीते भट, जयसिरि वरियां।
रिणी तें सरसपुर, आवत पीरोजपुर;
लंघत नदी कसूर, मानु जइसी दरियां ॥२॥
पछ आवत सु शोभ लीनी, लाहोर वधाई दीनी;
मंत्री कु मालुम कीनी, कहइ ऐसो वधिया।
मानसिंघ गुरु आए, पातिसाहि कु सुणाए;
वाजित्र गृधु वजाए, दान दियइ दुखियां ॥
समयसुन्दर भायउ, पइसारउ नीकउ वणायउ;
भीसष साम्हउ आयो, सज करि हथियां।
गावत मधुर सर, रूपइ मानु अपछर;
सुन्दर सहव करइ, गुरु आगइ मथियां। ३॥
एजु तरदी श्री जी कु मिले, पूछया री गुरु हउमस;
दूरि देसि आए चल, बरुत सजोग री।
हरखित होत हीया, अत्यंत आदर दीया;
हउडी का हुकम कीया, मानइ सब लोग री ॥

श्रीजयदया धरमसार, धूमल सदा विचार;
मरत पत्नी उदार, कसें कीनउ बोग री।
मानसिंह मान्यउ साहि, यश मयउ जग माँहि;
समयसुन्दर याहि, सुख को प्रयोग री ॥४॥
एजु अकबर जहाँगीर, साथइ चले कासमीर;
सुगुरु साहस धीर, दृढ करि हरया री।
परत बरफ पूर, मारग विषम दूर;
धरत हरख धूर, खडा कीजइ दरया री ॥
श्रीपुरनगर आई, अमारि गुरु पलाई;
मछली सबइ छोराइ, नीकउ मयउ भरया री।
समयसुन्दर सत, गावत सुगुरु जस;
अकबर कीनउ वस, आइसे गुरु कमया री ॥५॥
एजु जिनचन्दसूरि ज्ञानी, गच्छ की उन्नति ठानी;
साहि कउ हुकम मानी, साहि के हजूरि री।
लाभपुर आए जोम, सिंह सम जान्यउ तम;
पातिसाहि दीनउ नाम, जिनसिंघसूरि जी॥
पाठक वाचक दोय, सब मिल ५५ होय;
शुगह प्रधान बोय धापे गुरु पूर री।
आचारिज बड भागी, सुन्दर बडइ सोभागी;
पुण्य दिसा जसु जागी, प्रबल पडूर री ॥६॥
एजु मसबर सुलतान, कमीं की मल(ल)मल;
रूप रूप निरमल, कमीपे की मतियाँ।

विचित्र तपू वखाण्यउ, उपाश्रउ नीकउ वणायउ;
इह मी देखण आयउ, सुन्दर सोभसिरियां।
नांदि कउ उच्छव कीनउ, कर्मचंद जस लीनउ;
सवा कोडि दान दीनउ, सुगुरु गावसियां ॥
समयसुन्दर कहइ, भीसघ गहगहइ;
दान मान सब लहइ, वाजत नोबतियां ॥७॥
पजु चोपडा वंश दिणिंद, चांपसीह साह नंद;
चदमुद रूप इद, सुख जइसो चद री।
सुविहित खरतर, गच्छ भार धुरधर;
सेवतां ही सुरतरु, सुख केरउ कंद री ॥
जिणचंद सूरि सीस, छाजत गुण छत्तीस;
पूरवइ मन जगीस, मथियया इन्द री।
समयसु दर पाय, प्रणमी सुजस गाय,
जिनसिंह सूरिराय, जगि चिर नंद री ॥८॥
इति श्रीजिनसिंहसूरीणां सपादाष्टकं सम्पूर्णम्।

(१७)

मेवरे कहे री सेवरे, भरे कहां आस हो उतावर, दुक रहो नइ खरे। मे।
म आवे बीकानेर साहि जहांगीर के मेजे,
हुकम हुआ फुरमाण जाइ मानसिंघ कु दजे।
हद साचक हउ तुम्ह चाह मिलणे की हम कु,
वेगि आयउ हम पास लाभ देउगा तुम कु ।१। मे मेवरे।

वे साहिबा म्हारे सुनकर, म्हारे हमकु बताव्यइ नइ कहां जिनसिंघसूरि
का दरबार । वे ।

बीकानेर के बीचि चैत्य चउवीसटा कहियइ,
उस तइ उत्तर कूणि गाम दिसि थगा सहियइ ।
पातइ सत्त पांच बार होउं मठत्य त्रकिया,
आम्हो मानसिंघ का त्रकिया ।२। व साहिबा ।

वे महाजन म्हारे दीवाण, म्हारे बोलायउ नइ म्हजी के मुला बखामठ
फुरमाया ।वे ।

हाजरि आजी एइ शुभ मस्ती परि बांधइ,
सुणइ लोक सहु कोउ मेघ धुनि मोर ज्युं माचइ ।
पातसाह जहांगीर बहुत करी लिखी बड़ाई,
करउ त्यास तुम आई तर्णा का होत लड़ाई ।२।व महाजन ।

पूँछि वी सलामत म्हारे मीयां जी, म्हकुं क्यूँ नहीं चलते बखाइ नहीं
दीलि किर्यां । वे ।

दिल्ली का पातसाह गइ मंडप मई गाजइ,
कमसि किय सब देस फतह की नोबति बाजइ ।
भो तुम कुं करे याद जइसई चंद कु चकोरा,
रेवा कु गजराज मेघ आगम कु मोरा ।४। पूँछि वी सिलामत ।

बीनइ गुरु वी धुजु मी स्पठ कलामत, मियां जी किम की शुजु नी,
भवीराय के दसखत । वे ।

अणीराय उमराउ पातिसाह का निश्री की,
तुम सु हइ इकलास प्रोति भो पालइ नीकी।
पातिसाह कइ पासि मत्या तुम कु फायदा,
सुगा फरइ सउ खूब किया षधारू कायदा।५। पेपूजनी।

—०✿०—

(१८)

श्री आचारिज कद्दपइ आसरयइ, बोसी जोय विचारो र।
सुंदर घात करइ सोहामणी, लगन वसइ अनुसारो र।१। श्री।
अहनिसि ओळ रे सदगुरु वान्दी, मो मनि पांहिवा खांति रे।
धर्म राग मेघउ चिर मीवरइ, पडाय पटोलइ भांति र।२। श्री।
सोभागी गुरु सहु नर वालहा, मुनिवर मोहरा पंक्ति र।
विनयवंत श्रावक सहु सांभलइ, वचन अमीरस रेलि रे।३। श्री।
गुरु उपरि अ राचइ नहि, त माणस निरमंषो रे।
परवाली मोती नु पारखु, चतुर लहइ परपचो रे।४। श्री।
श्रीखरतर गच्छ करउ राजियउ, जुगप्रधान पन्धारो र।
श्रीजिनसिंघसूरीश्वर वांदतां, समयसुन्दर जयकारो रे।५। श्री।

(१९)

राग—रामगिरि

गुपच्य सोभागी, कहि किहां सगुरु दीठा।
सारद वध सखी. मरा कगम मीठा र ॥ मोर म०॥१॥

मउ तूं रे वधामणि आस्यइ सुगुरु करी ।
तउ हूं सोवन चांच मढ़ाउं सुपटा तेरी री ॥ वीर व०॥२
सुणि सखि मारग मांहि मलपंता आवइ ।
श्रीप जिनसिंघसूरि महा प्रभाव रे ॥ वीर व०॥३
सुगुरु आगम सुणि आणंद पाया ।
सुरनर किन्नर नामीरी मधाया रे ॥ वीर व०॥४
श्राविका आव्या मन कामना फली ।
समयसुन्दर गुण गावइ मन नी रली रे ॥ वीर व०॥५

(२०)

मारग जोवतां गुरु जी तुम्हे मलइ आय रे । गु० ।
मोहन मूरति पेखी आणंद पाए ॥
हियरा हीं सतगुरु नी देखी मुख तोरा रे ।
मेघ के आगमि जइसइ मावत मोरा ॥१॥ मा०॥
नयण तुम्हारे गुरु जी मोहण गारे । गु० ।
ओरण न भावे हम कु बहुत प्यारे ॥
तुम्हारे चरण गुरु जी मेरा मन लीणा । गु० ।
वचन सुणंता चित्त भमर भीणा ॥२॥ मा०॥
किंहा कुमुदिनी किहाँ गगनि चंदारे । गु० ।
दूर थी करत तउ भी परम आणंदा ॥
जे नर जाके चित्त मइ ते दूर थइ नर भी । गु० ।
अहनिसि सेउं गुरु भी मामणा तरे ॥३॥ मा०॥

मन सुधि अकबर तुम कु मानइ रे। गु०।
तुम्ह चिर जीवउ गुरु जी सवतइ मानइ ॥
जिनसघसूरि अइसा मेरइ मनि भाया रे। गु०।
समयसुन्दर प्रभु प्रणमइ पाया ॥४॥ मा०॥

(२१)

राग—भयरव

मोर भयउ भविक जीव, जागि जागि जागि री;
जिनसिंघसूरि उदय भाण, तजपुञ्ज राज मान ।
ऊठि अइसे धरम मारगि, लागि लागि लागि री।१। मो०।
भविक कमल बन विकसन, दुरित तिमिर भर विनाशन;
कुमति उलूक दूरि गए, भागि भागि भागिरी।
श्रीजिनसिंघसूरि सीस, पूरवइ सब मन जगीस;
समयसुन्दर गावत भयरव, रागि रागि रागि री।२। मो०।

इति श्रीजिनसिंघसूरीणां चर्चरी गीतम् ।

(२२)

राग—सारंग

गुरु के दरस अखियां मोहि तरसइ ।
नाम जपत रसना गुरु पावन,
सुजस सुणत ही श्रवण सरसइ।१। अं.।

प्रथमत होत सफल सद्गुरु कुं, ।
ध्यान धरत मेरउ चितु हरसइ ।
सुगुरु वंदण कु चलत हीं चरण युग,
पतियां लिखत हीं कर फरसइ ।२। मं।
श्री जिनसिंहसूरि आचारिज,
वचन सुधारस मुखि बरसइ ।
समयसुंदर कहइ अबकु कृपा करि,
नयण सफल करउ निज दरसइ ।३। मं।

(२३)

राग—नट नारायण

तुम चलहु सखि गुरु वंदण ।
श्रीजिनसिंघसूरि गुरु दरसण, सब जण कु आणंदण ।१। तु।
पातिसाहि अकबर मन रंजण, वचन सुधारस चंदण । —
चोपड़ा वंस सुशोभ चढावत, चांपसी साह के नंदण ।२। तु।
तेज प्रताप अधिक गुरु तेरउ, दुरमति दुख निकंदण ।
समयसुन्दर प्रभु के पद पंकज, प्रणमति इन्द नरिंदण ।३। तु।

(२४)

राग—मालवी गउड़ी

आज सखी मोहि धन्य जीया री ।
श्रीजिनसिंघसूरीसर दरसण,

देखत हरखित होत हीया री ॥१॥ आ०॥
कठिन विहार कीयउ कासमीरइ,
साहि अकबर बहु मान दीया री।
श्रीपुर नगर अमारि पालब तइ,
सब जग मई सोभाग लीया री ॥२॥ आ०॥
गुहिर गंभीर सर मधुर आलापति,
देसणा सुणत मानु अमृत पीया री।
समयसुन्दर प्रभु सुगुरु वांदत तई,
इहु मइ मानव भव सफल कीया री ॥३॥ आ०॥

(२५)

राग—कल्याण

श्रीजिनसिंघसूरिंद जयउ री। श्री०।
युगप्रधान जिणचंद सुखीसर, पाटि प्रभाकर ज्यू उदयउ री।१।श्री।
अकबर साहि हजूरि हरख भरि, आचारिज पद जासु दयउ री।
मोहन वलि भविक मन मोहन,दरसण तइ दुख दूरि गयउ री।२।श्री।
चोपड़ा वंश चांपसी नंदन, चंदन कु भरउ मन उमयउ री।
समयसुंदर कहइ श्रीगुरु आए, श्रीसंघ कु आणंद भयउ री।३।श्री.।

(२६)

राग—केदारउ

जिनसिंघसूरि की बलिहारि।
बूझव्यउ पातिसाहि अकबर, दया धरम दिखारि।१।जि०।

घरि गुण छत्रीस शोभित, वचन अमृत धार।
श्री जिन शासन मांहि दिनकर, खरतर गच्छ सिणगार।२। जि०।
युगप्रधान सुसीस जगि मइ, प्रगटियउ परभार।
समयसुन्दर सुगुरु प्रतपउ, श्री संघ कुं सुखकार।३। जि०।

(२७)

राग—गउडी

पंथियरा कहिज्यो एक संदेश।
जिनसिंघसूरि तुम्हे वेगि पधारउ, इण गे हमारइ देश।१। पं।
भगत लोग इहु मात बहुत हइ, मानत सब आदेस।
चंद चकोर तणी परि चाहत, नाम जपत सुविशेस।२। पं।
पातिसाहि अकबर तुम माने, मानत लोक असेस।
समयसुन्दर कहइ धन्य जीया मेरउ, जब नयणे निरखेस।३। पं।

(२८)

राग—ललित

ललित वयण गुरु ललित नयण गुरु,
ललित रयण गुरु ललित मती री ॥ ल०॥
ललित चलण गुरु ललित करण गुरु,
ललित चरण गुरु ललित गती री ॥ ल०॥१॥
ललित पूरति गुरु ललित सूरति गुरु,
ललित मूरति गुरु ललित जती री।

ललित वयराग गुरु ललित सोभाग गुरु,
ललित पराग गुरु ललित मती री ॥ल०॥२॥
ललित खरतर गुरु ललित सुखकर गुरु,
ललित गणधर गुरु ललित रती री ।
समयसुन्दर प्रभु जिनसिंहसूरि कु
मानि अकबर मानइ छत्रपती री ॥ल०॥३॥

(२९)

राग—धन्यासिरी

बलिहारी गुरु वदन चंद बलिहारी ।
वचन पीयूष पान करि आण्, नयन चकोर अनुसारी री ।१। गु।
भविक लोक लोचन आनन्दन, दुरित तिमिर भरवारी ।
अकलंक सकल कला संपूरण, सौम्य कांति मनुहारी री ।२। गु।
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधक, युगप्रधान पटधारी ।
समयसुन्दर कहइ श्रीजिनसिंघसूरि, सब जन कुं सुखकारी री ।३।गु।

(३०)

राग—पंचम

आयउ सुगुरु माहलड़ी, मिलि वेसड़ी रे;
गायउ जिनसिंघसूरि मोहन वलड़ी ।१। आ०।
अमय सुधारस रेलड़ी, गुरु मेलडी रे;
मीठी सद्गुरु वाणि आम्ब सलड़ी ।२। आ०।

पालइ गछ गति गेलड़ी, मन ए मडी र;
समयसुन्दर गुरुराज महिमा एवडी ।३। आ०।

(३१) श्री जिनसिंघसूरि तिथिविचारगीतम्

राग—प्रभाती

पडिवा जिम मुनि यडउ साहेलडी ए,
बीज बेऊ भ्रम पालइ गुण वलडी ए ।
त्रीजइ त्रिण्ह गुपति धरइ साहेलडी ए,
चउथि कषाय च्यार टालइ ॥ गु० ॥ १ ॥
पांचमि व्रत पालइ पांचे साहेलडी ए,
छट्ठि छजीव निकाय ॥ गु० ॥
सातमि भय साते हरइ साहेलडी ए,
आठमि प्रवचन माय ॥ गु० ॥ २ ॥
नवमि आणइ नवनिधि साहेलडी ए,
दसमि दस भ्रम सार ॥ गु० ॥
इग्यारमि अंग इग्यार धरइ साहेलडी ए,
बारमि प्रतिमा बार ॥ गु० ॥ ३ ॥
तेरसि तेर क्रिया तजइ साहेलडी ए,
चउदसि नियम जाण्य ॥ गु० ॥
पुनिमचंद तणी परि साहेलडी ए,
सकल कला गुण खाण ॥ गु० ॥ ४ ॥

पनरे तिथि गुरु पूरण साहेलडी ए,
श्री जिनसिंघसूरराय ॥ गु० ॥
समयसुन्दर गुरु राजियउ साहेलडी ए,
पूरवइ मनह जगीस ॥ गु० ॥ ५ ॥

(३२)

चतुर लोक राचइ गुण रे, अगुण कोइ न राचइ रे।
परमारथ तुम्ह प्रीछज्यो रे, सहु को पतीजइ साचइ रे।१।
मन माहरउ गच्छनायक, मोह्यउ तुम्ह गुण रे।
जाणु ज रहुँ आधारिज चरण तुम्ह सेवु रे॥ मां०॥
सुन्दर रूप सोहामणउ रे, बोलइ अमृत वाणी रे।
नरनारी मोही रह्या रे, मुझ मनि अधिक सुहाणी रे।२। मन।
सोम गुण करि चन्द्रमा रे, सायर जिम गंभीरो रे।
समति धर्मी पूज वाहरी रे, सयम साहस धीरो रे।३। मन।
सोभागी महिमा निलउ रे, सकल कला गुण सोहइ रे।
मानइ राणा राजिया रे, भवियण ना मन मोहइ रे।४। मन।
श्रीजिनसिंघसूरिगुरु रे प्रतपउ सुरिज जमा रे।

श्री जिनराजसूरि गीतानि

(१)

राग—श्री

भट्टारक तुम्ह भाग नमो।
तू चतुर्विध संघ मन रमी, गुरु नहीं को तुम्ह समो॥ भ०॥१॥

मागइ मधुरक पद पामउ, मागइ दुरिजन दूरि गमउ ।
मागइ संघ किपउ वसि सगलउ देस प्रदेसि विहार क्रमउ ॥ म ॥२॥
सही अंबिका परतिख तुम्हनइ, अमीझरउ तीरथ उत्तमउ।
श्रीजिनराजसूरि प्रभ मोनइ, समयसुंदर कहइ तुम्ह सरमउ ॥ म ॥३॥

(२)

राग—आसावरी

मधुरक तेरी बडी ठकुराई ।
दसत थाठ करि हुकम चलावत, मानत सब लोगाई ॥ म.॥१॥
बिंब प्रतिष्ठा अमीझरइ प्रतिमा, ए तेरी अधिकाई ।
संघपती लिपि बांची वधाई, अंबिका परतिख आई ॥ म ॥२॥
श्रीजिनराजसूरि गच्छनायक, जाम्ब प्रबीस सदाई ।
समयसुंदर तेरे चरण शरण किए, अम करि अपणी बडाई ॥ म.॥३॥

(३)

राग—आहिणिया म जाए गोरी रावण हरइ

तु तूठउ पद संपदा पूज जी, धइ संपदी पद सार ।
पाठक वाचक पद भला पूज जी, इंद्र इंद्राणी सार ॥१॥
मकरस लक्ष्मी तु गुरु दीयउ, घइ अर्थमो पाई ।
अमृत अमृत धमइ के विप नयण वसइ, निरखि पडइ निधि काय ।म २।
तु रूठउ धइ आपदा पूज जी, राप यश करइ रांक ।
मेर थको सरसव करइ पूज जी, बांकउ काढइ वांक । म.॥३॥

शीतल चंदन सारिखउ पूज जी, तेज तपइ जकि सार ।
हँसि करी हेजइ मिलइ पूज जी, कदि न आणइ अहंकार । अ ।४।
श्री जिनराजसूरीगरू पूज जी, सू कहियइ करतार ।
सोम निजर करि निरखजो पूज जी, समयसुन्दर कहइ सार । अ ५।

(४)

राग—नट नारायण

श्री पूज्य सोम निजर करउ ।
चँप करी आयउ तरइ सरणा, अभिग्रह ले मन लउ आदरउ । श्री ।१।
महारक मोहयइ भारी खम, पडइ पाखइ नइ पाँतरउ ।
नमतां कोप करइ नहीं उत्तम, थांरै हुरइ जो पणो मातरउ । श्री ।२।
अति ताणयउ न रमइ अलसमर, भाज विषम पांघमउ भरउ ।
समयसुन्दर कहइ श्रीजिनराजसूरि, अर अपणउ करि ऊधरउ । श्री ।३।

(५)

राग—सूबा ना गीत नी

श्री पूज्य तुम्ह नइ वंदि चलतां हा,
चलता हा पाछा पग पटइ माहरा हा ।
परती माग्गी हाइ प०,
गानइ हो पा० वयइ गुरुगन तारा हो ।।१।।
अउनु भारइ हम मउ०,
आनूं हो आगु हा पाछा वनि जाउं वनी हा ।

सिथ विरहउ न खमाय सिथ०,
जीवइ हो जीवइ पाणी विण किम माछली हो ॥२॥
बसियइ वालइ बोल ह०,
ते बोल हो त बोल थारा मुझ नइ सांभरइ हो।
एहवा चतुर सुजाण ए०,
कहउ कुण हो कहउ कुण हो कहियउ पूज्य पटधरइ हो ॥३।
हजइ हियइ मीठि ह ,
पय गु हो पय गु हो गोमिलि मीठइ बोलड़इ हो।
सबल करइ बगमीस स०,
भवर हो भवर हो लाभइ उ बहुमोलड़इ हो ॥४॥
श्री जिनराजसूरींद श्री०,
वूठो हो वूठो हो साहिब सुरतरु सारिखउ हो।
समयसुन्दर कहइ एम स०,
परखिव हो परखिउ हो दीठउ ए मइ पारिखउ हो ॥५॥

इति श्रीजिनराजसूरिपरायां वियोगसमये गीतम्।

श्रीजिनसागरसूर्यष्टकम्

श्रीमज्जमतलमरहुग नगरे, श्रीविक्रमे गूर्जर।
यद्यार्या मन्नर-मध्नी तत् श्रीमेदपाट स्फुरन् ॥
श्रीजावालपुर च योघनगरे, श्रीनागपुर्यां पुनः।
श्रीमद्ग्रामपुर च वीरमपुरे, श्रीसत्यपुर्यामपि ॥१॥

श्रीवोहित्थकुलांशुधिप्रमिलसत्प्रालेयरोचिप्रभा ।
मासन्माहमगांसुकृचिसरसि श्रीराजहंसोपमा ॥
श्रीमद्विक्रमवासि विश्वविदित' श्रीवत्सराजाङ्गजा' ।
सन्तुश्री जिनसागरा' खरतरे गच्छे चिरं श्रीजिन' ॥७॥

इत्य काम्यकदम्बक प्रवरक मुक्ता पुर' प्राभृतम् ।
विज्ञप्त समयादिसुन्दरगणि र्भक्त्या विधत्ते स्फुटम् ॥
युष्मत्तौङ्गसमप्रतापतपनो देदीप्यतां सत्वरः ।
यूयं पूरयत स्वभक्तपटिनां शीघ्रं मनोवांछितम् ॥८॥

[अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर]

श्री जिनसागरसूरि गीतानि

(१) राग—कनड़ी

सखि जिनसागर सूरि सोभउ । स० ।
श्री खरतर गच्छ सोह चढावइ, आवइ हीरउ आयउ । स०।१।
सुलक्षित वाणि वखाण सुवाणइ, कहइ मत मायां राचउ । स०।
ए संसार असार अथिर छइ, ज्यूं माटी पर काचउ । स०।२।
शांत दांत सोभागी सद्गुरु, वड वड विरुदे वाचउ । स०।
समयसुन्दर कहइ ए गुरु ऊपरि, चतुर हुयइ ते राचउ । स०।३।

(२) राग—शुद्ध नाट

धन दिन जिन सागर सूरि निरखी नयणा । ए ए आं ।
सुललित सिद्धान्त वाचइ अमृत वयणा ॥ ध ॥१॥

श्री जिनसिंह सूरि पाटोधर,
फलउ सामल सम को इह रे ॥ जि० ॥२॥
वयरागी संवेगी सद्गुरु,
वयर विरोध विपोहइ रे ।
समयसुन्दर कहइ इस विदेसे,
सहु श्रावक परिपोसइ रे ॥ जि० ॥३॥

(५) राग—गुण्ड

आयो नंद नंदना, नंद नंदना; साह वच्छराज के नंदना ।
आयो चंद चंदना, चंद वदना; वचन अमीरस वदना ॥१॥
आयो फंद फंदना, फंद फंदना; नहिं माया मोह फंदना ।
आयो कंद कंदना, कंद कंदना; दुख दारिद्र निकंदना ॥२॥
आयो इंद इंदना, इंद इंदना; जिनसागरसूरि इंदना ।
आयो वंद वंदना, वंद वंदना; समयसुन्दर कहइ वदना ॥३॥

(६) राग—तोडी

गुरु अम्ह जिनसागर सूरि सरिखउ री[1] । गु० ।
धीरवंत मनइ सोभागी[2], पांच मास्स पंडित परखउ री । गु० ।१।
किहां काच[3] किहां पांच अमूलिक, किहां अराट कपास परखउ री ।
किहां कथीर किहां सुरतरु सुंदर, किहां मेरु कंपन करखउ री । गु० ।२।

---

१ अम्ह सुगुरु जिनसागर सरिखउ री २ संवेगी, ३ काचकि,

सुगण सुगुरु नउ एह पटधर, निर्विरोध[४] नयणा निरखउ री।
समयसुंदर कहइ एह धर्म पथ, साचउ जाणी मइ[५] हरखउ री। सु।३।

(७) राग—धन्याश्री

वंदउ वंदउ रे श्री जिनसागर सूरि वंदउ री।
दर्शन दर्शन गुरु देखी, अधिक अधिक आनंदउ री। श्री।१।
श्रीजिनसिंघ सूरि पटोधर, साह वच्छराज कुलचंद।
सब सिद्धांत वखाण सुणावत, आणी अमृत रस बिंदो री। श्री।२।
मन वांछित पूरवइ ए मुनिवर, जिम सुरतरु नो कन्दो री।
समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, चतुर्विध संघ चिर नंदउ री। श्री।३।

(८) ढाल—आवउ रे सहियर सवि मिली जी

बहिनी आवउ मिलि मेलड़ी जी, सजि करि सोल शृंगार।
पहिरो पटोली ओढउ चूनड़ी जी, तिलक करो तुमे सार।१।
सुगुरु वधावउ गणि गोगिये जी, श्री जिनसागर सूरि।
मारग जुगत पति आगानंद जी, भविय विघन जावइ दूरि। सु।२।
मसुर करउ तुम्हे माणिनउ जी, कूंकूं भरिय कचोल।
चौक पूरउ तुम्हे आंगणइ जी, गीत गावउ रमझोल। सु।३।
नारि करउ तुम्हे मंगला जी, हरखित हाथि उलास।
विधि सु करउ गुरु वंदना जी, पाग त्यउ सदगुरु पास। सु।४।
खरतर गच्छ केरउ राजियउ जी, जिनसिंहसूरि पटधार।
जिनसागर सूरि चिरजयउ जी, समयसुन्दर सुखकार। सु।५।

४ गुण समूह ५ हियइ। [अनूप संस्कृत लायब्रेरी में प्राप्त]

(९) ढाल—भरत पात्रा भली ए, अथवा—बाइए खिद्यामती ए

जिनसागर सूरि गुरु भला ए, मोटा साधु महंत ॥ जि०॥
रहसी मति रूड़ी रहइ ए, सौम्य मूरति शांत दांत ॥ जि०॥१॥
लघु वय जिण संजम लियउ, सूत्र सिद्धांत ना जाण ॥ जि०॥
वचन कला मली कलती ए, सुललित करइ रे वखाण ॥ जि०॥२॥
शीलवत शोभा घणी ए, सहु को व्यापइ साख ॥ जि०॥
नींबोली सु मन नहीं ए, मिस्त्री मुक्त मीठी द्राख ॥ जि०॥३॥
अम्हारइ सखि गुरु परखा ए, अम्हे रागु नहीं काच ॥ जि०॥
जिनसागरसूरि चिरजयउ भी, समयसुन्दर सुखकार ॥ जि०॥४॥

(१०) ढाल—मस्तु रे वधु म्हारा पूज्य की पधार्वा

पुण्य संजोगइ अम्हे सदगुरु पाया, नहीं ममता नहीं माया ।१।
जिनसागर सूरि मिरगाढे आया, संघसूरि पाट सवाया ।
खरतर गच्छ केरा राया, जिनसागरसूरि मिरगाढे आया । धर्मा ।३।
वयरागी गुरु सुललित वाणी,अम्ह मनि अमिय समाणी । जि०।२।
पालइ ए गुरु पंचाचार, आप तरइ बीजां तारइ । जि ।३।
वाई रे अम्हारा गुरु थोड़ा मुख बोलइ,रतन चिंतामणि तोलइ । जि ४।
वाई रे अम्हे लाधा ए गुरु साचा, समयसुन्दर नो वाचा । जि०।५।

(११) ढाल—नयण निहालो रे नाहला अथवा
पोपट चाल्यो रे परणवा पदमनी

मनड़ मोह्यु रे मारूं, गुरु ऊपरि गुणराग ।
जिनसागर सूरि गुरु भला साचउ जेहनउ सोभाग । म०।१।

मधुकर मोह्यउ रे मालती, कोइल प्रिय सहकार।
महिगल मोह्यउ रेवा नदी, सतीय मोही भरतार। म।२।
मानस मोह्यउ रे हंसलउ, चंद सु मोह्यउ चकोर।
मृगलउ मोह्यउ रे नाद सु, मेह सु मोह्यउ रे मोर। म।३।
जिनसागर सूरि सारखा, उत्तम ए गुरु दीठ।
मन रंग लागो माहरउ, जेहो चोल मजीठ। म।४।
तारइ ते गुरु आपणा, ज्यूं हवा दरियइ जिहाज।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ, सहु ना जिम सरइ काज। म।५।

(१२) ढाल—सुगुरु नाम राजा घरइ रे गुणमाला पटराणि
(बीजा प्रत्येक बुद्ध ना रास नी)
अथवा, छिंट बीनु माछ रामला रे बसुकी खजाय लाय पहमी

न्याति चउरासी निरखतां रे, ओसवाल उत्तम न्याति।
पुण्यवंत कुल चोपरा रे, बीकानेर विख्यात रे॥ १॥
अम्हारा गुरु जिनसागर सूरि एह।
शांत दांत शोभा घणी रे, कठिन क्रिया करइ तेह रे। अ।२।
मात मृगादे उरि धरयउ रे, वच्छराज साह मल्हार।
जिनसिंह सूरि पटोधरु रे, खरतरगच्छ सिणगार। अ।३।
बोलइ बोल बिचार रहइ रे, वाचइ सूत्र सिद्धान्त।
राति ऊभा काउसग करइ रे, ध्यान धरइ एकान्त। अ।४।
करस मला मति फूटरा रे, आउलि चांपा फूल।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ रे, तिहु मांहें कुण बहु मूल। अ।५।

मूयउ कहइ जिके नर मूरिख,
जीवइ जगि जोगी सुख जाइ ॥ सं० ॥ १ ॥
दीपक पंथ मडायउ दइरउ,
धर्म तु करयो परधउ अधिकार।
नलिनि गुल्म विमान निरखवा,
सोम सिधायउ सरग मझार ॥ सं० ॥ २ ॥
मोटा सबल प्रासाद मंडायउ,
करिवा मांड्यउ सोम सुकाज।
पृथिवी मांहि तिसउ नहीं परिकर,
इन्द्र पास लेवा गयउ आज ॥ सं० ॥ ३ ॥
भाख्यउ युगप्रधान साहि अकबर,
जिनचन्द सूरि गुरु बडउ जतीश।
सोम गयउ पूछवा सुर लोकें,
पातस कहस्यइ विसवा वीस ॥ सं० ॥ ४ ॥
मागउ मनइ करमचंद मारयउ,
राम काज रखी सबि रीति।
हरि तेड्यउ सोम तुं हिवणां,
पूछवा धरम रखी परतीति ॥ सं० ॥ ५ ॥
नास्तिक मत थापइ गुरु नित नित,
सभा मांहि पोषइ सिणगार।
इन्द्र धरम धुरंधर थाप्यउ,
सत्यवादी सहुं सिरदार ॥ सं० ॥ ६ ॥

पुण्य प्रसूत किया अति परिघल,
सुरपति सबल पड़ी मन सांक ।
पहुँतउ सोम इन्द्र परिषाषा,
बरस्यु सुगति नहीं सुझ बांक ॥ स० ॥ ७ ॥
वड़ दातार दान गुण विक्रम,
सघपति जोगी साह सुलभ ।
सोम गयउ धनद समझावा,
मरमइ भ्रयण खरघइ षभ ॥ सं० ॥ ८ ॥
विंन प्रतीठ सघ करि बहुला,
लाहलि साहमी सगले लाहि ।
ख्याति घणी खरतर गच्छि कीधी,
वड़ हत्र दीधउ बारउ बाहि ॥ स० ॥ ६ ॥
भाग वश विहुँ पखि पूरउ,
रूड़उ गुरु गच्छ उपरि राग ।
सानिध करे सोम सदगुरु नइ,
सुंदर जस दीपई सोभाग ॥ सं० ॥१०॥

इति सोमजी निर्वाण वेलि गीत सपूर्णम् ।
कर्त्त विक्रमनगरे समयसुन्दर गणिना ॥ शुभ भवतु ॥

गुरुदुःखितवचनम्

क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीता अपमादतः ।
यदि व न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ १ ॥

(१३) श्री जिनसागरसूरि सवैया*

सोल श्रृंगार करइ सुन्दरी, सिर ऊपर पूरण कुम्भ धरइ ।
पिहिरिं पिहिरिउ पारस्य नफेरी, गुहु गु दमामा की घूंस परइ ॥
गायइ गीत गान गुणी जन दान, पटंबर चीर पगे पथरइ ।
समयसुन्दर कहइ जिनसागरसूरि कउ, भावक ऐसो पैसारउ करइ ॥१॥

(१४) राग—साहेली हे आंबउ मोरीयउ ए गीतनी.

साहेली हे सागर सूरि वांदियइ,
　　जिण वांधा हे सुख हरख अपार ।
साहेली हे सोम मूरति सोभा घणी,
　　साहेली हे उत्तम आचार ॥सा.॥१॥
साहेली हे वयरागी गुरु बालहा,
　　साहेली हे बांचइ घन सिद्धांत ।
साहेली हे तप जप किरिया आकरी,
　　साहेली हे दरसण शांत दांत ॥सा.॥२॥
साहेली हे जिणचंदसूरि कर थापिया,
　　साहेली हे सामस सिरदार ।
साहेली हे वड वचन श्रिमिहिज थयु,

---

*[जैसलमेर नगरे आचार्ये खरतरोपाश्रये मति मुनीलाल समहे स्वयं लिखित पत्रात्]

साहेली हे पून्य थया पटधार ॥ सा ॥३॥
साहेली हे उठि प्रभाते एहनइ,
साहेली हे प्रणम्यां जायइ पाप।
साहेली हे समयसुन्दर कहइ श्रति घणउ,
साहेली ए हुन्यो तेज प्रताप ॥ सा ॥४॥

(१५) राग—प्रभाती

सिणगार करउ रे साहेलड़ी रे,
बहिनी आवउ मिली भेलड़ी रे ॥ सि०॥१॥
वांदउ गुरु मोहन वेलड़ी रे,
सांभलतां आवे मीठी सेलड़ी रे ॥ सि०॥२॥
पाट्ट नी पूजि ओढउ पछेवड़ी रे,
पाटण नी नीपनी ससरी दोपड़ी रे ॥ सि०॥३॥
कठिन तुम्हारी क्रिया केवड़ी रे,
तुम्हे तो पदवी पामी तेवड़ी रे ॥ सि०॥४॥
जिनसागर सूरि नी महिमा जगड़ी रे,
समयसुन्दर कहइ एवड़ी रे ॥ सि०॥५॥

इति श्रीजिनसागरसूरि गीतानि।

संघपति सोमजी वेलि

संघपति सोम तणउ जस सगलइ,
वरण अठारह करइ वखाण।

मूयउ अबर सिके नर सूरिख,
जीवइ जगि जोगी सुत जाय ॥ सं० ॥ १ ॥
दीपक जेम मंडायउ देहरउ,
अनुप्र त करवा पर पउ प्रविकार ।
नखिनि गुल्म विमान निरखवा,
सोम सिधायउ सरग मझार ॥ सं० ॥ २ ॥
मोटा सबल प्रासाद मंडायउ,
करिवा मांड्यउ सोम सुकाम ।
पृथिवी मांहि तिसउ नही परिकर,
इन्द्र पास लेवा गयउ आम ॥ सं० ॥ ३ ॥
थाप्यउ युगप्रधान साहि अकबर,
जिनचन्द सूरि गुरु वडउ जगीश ।
सोम गयउ पूछवा सुर लोके,
वासव कहस्यइ विसवा वीस ॥ सं० ॥ ४ ॥
मासउ अन्तइ करमचंद मारइ,
राज काज सघी सवि रीति ।
हरि तेड्यउ सोम सुं हिवर्डा,
पूछण परम सखी परतीति ॥ सं० ॥ ५ ॥
नास्तिक मत थापइ गुरु नित नित,
सभा मांहि पोषइ सिणगार ।
इन्द्र परम धुरंधर थाप्यउ,
सत्यवादी सह्यां सिरदार ॥ सं० ॥ ६ ॥

पुपय कृत्तृत किया अति परिमल,
सुरपति सबल पड़ी मन सांक।
पहुँचउ सोम इन्द्र परिषाषा,
परस्यु सुगति नहीं तुम्ह बांक ॥ स० ॥ ७ ॥
मइ दातार दान गुण विक्रम,
संघपति भोगी सहु सुतब।
सोम गयउ धनद समभावा,
परमइ कायन खरचइ घभ ॥ सं० ॥ ८ ॥
विंब प्रतीठ संघ करि बहुला,
साहम्मि साहमी सगले साहि।
स्यासि धणी खरतर गच्छि कीधी,
मइ इथ लीधउ पारउ थाहि ॥ सं० ॥ ६ ॥
श्रीग वंश विहुँ पखि पूरउ,
ध्यउ गुरु गच्छ उपरि राग।
सानिध करे सोम सदगुरु नइ,
सुंदर अस दीपइ सोभाग ॥ सं० ॥१०॥

इति सोमजी निर्वाण वेलि गीत सपूर्णम्।
कृतं विक्रमनगरे समयसुन्दर गणिना ॥ शुभं भवतु ॥

गुरुदु:खितवचनम्

क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीता भ्रमपादता।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ १ ॥

वंचयित्वा निजस्थानं, पोषिता मृष्टभुक्तिभिः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ २ ॥

लालिता पालिताः पश्चान्मातृपित्रादिवद् भृशं ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ३ ॥

पाठिता दुःख पापेन, कर्मबन्ध विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ४ ॥

गृहस्थानामुपालम्भाः, सोढा बाढं स्नमोहत ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ५ ॥

तपोपि धारितं कष्टात्कलिकोत्कृत लिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ६ ॥

वाचकादि पदं प्रेम्णा, दापितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ७ ॥

गीतार्थं नाम कृत्वा च, शास्त्रत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ८ ॥

तर्क-व्याकृति-काव्यादि, विद्यायां पारगामिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ९ ॥

सूत्र-सिद्धान्त-चर्चायां, याथातथ्यप्ररूपकाः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१०॥

वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥११॥

ज्योतिर्विद्या—चमत्कार, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१२॥
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्यश्च महिमा महान् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१३॥
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छहृदयिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१४॥
गच्छस्य क्षयकर्तारो, ह्यासो तेऽद्यऽभूस्त्वयाम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१५॥
गुरुज्ञानादि प्रदत्ते, शिष्या संशयितधियः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१६॥
गुरुणा पालिता नाऽऽज्ञा-ऽर्हतोऽस्तोऽपि दुःसमागऽभूत् ।
एषामहो गुरुर्दुःखी, लोकलज्जापि मेऽमहि ॥१७॥
न शिष्य-दोषो दातव्यो, मम कर्मैव वाच्यम् ।
परं मदृश्यमानेन, लोला लोलापद मम ॥१८॥
मत्स्यपत्तनसत्पार्श्वे, राजधान्यां स्वमारत ।
स्वस्य प्रकटीचक्रे, गणि समयसुन्दर ॥१९॥*

(२)

चेला नहीं मउ म करउ चिंता,
दीसइ घरा घने पग दुखरा ।
गयान करमि हुआ शिष्य बहुला,
गणि समयसुन्दर न पायउ सुखरा ॥ १ ॥

*[स्वयं लिखित पत्र १ मां आ अर्हद भंडार]

केई मुया गया पखि केई,
केई चूया रहइ परदेस ।
पासि रहइ ते पीड़ न जाणई,
कहियइ घणउ तउ पावइ क्लेस ॥ २ ॥
वोड़ पयी नित्तरी जगत मई,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यंत ।
पणि एकणि बात रही अणपूरति,
न कियउ किण चेलइ निमित्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सोमसिज्यो,
देतउ नही छु चेलां दोस ।
जिन आज्ञा न पाली अमर्त्तरि,
तउ शिष्यां दिसि किसउ करूं सोस ॥ ४ ॥
समयसुन्दर कहइ कर जोड़ि,
ऊपरला सुखिजे अरदास ।
मनोरथ एक करू छु मन रउ,
ए तूं पूरि अम्हारी आस ॥ ५ ॥

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—मारुणी

जागि जागि जसुया तुं, काइ निचिंतउ सोवइ री ।जा।
तउ आया मिस मरण तोहूं, आपणी वात जोवइ री ।जा।१

माया मोह मांहि लपटाणउ, कांई अमारउ खोवइ री ।जा।
समयसुन्दर कहति एक धम, तेही सुख होवइ री ।जा ।२।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—आसावरी

रे जीव परबत किरण्या सुख सहियइ ।
झूरि झूरि काहे होत पांजर, देव दीना दुख सहियइ रे ।१।
प्यारउ नहीं कोऊ अंतरजामी, जिण आगलि दुख कहियइ।
और नहीं परमेसर सेती, ज्यूँ राखइ त्यूँ रहियइ रे ।२।
इस की लाज प्रसाद मेटउ कुण, जिम तिम करि निरवहियइ ।
समयसुंदर कहइ सुख कउ कारण, एक धरम सरदहियइ रे ।३।

जीव प्रतिबोध गीतम्

ढाल—कपूर हुवइ अति ऊजलो पहनी

जिवड़ा आखे जिन धर्म सार, अवर सहु रे असार ।जि।
कुटुंब सहु को कारमु रे, को केहनउ नवि होय ।
नरक पड़तां प्राणिया तूँ नइ राखणहार कोय ।जि ।१।
कूड़ कपट नवि कीजियइ रे, पाप पिण्ड भराय ।
पहिले पुण्य न कीजियइ रे, तउ पछइ पछतावो थाय ।जि ।२।
काया रोग समाकुली रे, खिण खिण त्रूटइ आयु ।
सनतकुमार तणी परइ रे, खिण मांहे सेरू थाय ।जि ।३।

कीधा पाप न छूटियइ रे, पाप थकी मन वाल ।
कानै विहुं खीला ठम्या रे, तउ वीर तणइ गोवाल ।जि।४।
मरण सहु नइ सारखउ रे, कुण राजा कुण रांक ।
पणि आयइ जीव निसखलउ रे, एहिज मोटउ वांक ।जि।५।
जे पाखइ सरणु नहीं रे, जे सायइ प्रतिबंध ।
ते माणस उठि गया रे, तउ घरम पखइ सहु धंध ।जि।६।
जन्म मरण थी छूटियइ रे, न पडीजइ गर्भावास ।
समयसुन्दर कहइ ध्रम थकी रे, लहियइ लील विलास ।जि।७।

जीव प्रति बोध गीतम्

राग—जयतश्री सिंधुडउ

जीवडा रे जिन ध्रम कीजियइ, ए छइ परम आधारो रे ।
अवर सहु को अथिर छइ, सकल कुटुंब परिवारो रे ।जी.।१।
दस दृष्टांते दोहिलउ, लहि मनुष्य भव सार ।
ते पुण्य योगे पामियउ, जीव जन्म म हारि म हारो रे ।जी।२।
अति अथिर चंचल आउखउ, रमणीक यौवन रूप ।
चक्रवर्ती सनतकुमार ज्यु, जोय जोई देह सरूपो रे ।जी।३।
चक्रवर्ती तीर्थंकर किहां, किहां गणधर गुण पात्र ।
ते पण विधाता अपहरया, तो अवर केही मात्रो रे ।जी।४।
जीव रात्रि दिवस जे जाइ छै, वलि नवि आवै तेह ।
तप जप संजम आदरी, करी सफल आतम देहो रे ।जी।५।

अति तुच्छ सुख संसार नो, मधु लिप्त खड़गनी धार।
किंपाक ना फल सारिखा रे, द्यै दुख अनेक प्रकारो रे।जी।६।
विश्वास म कर स्त्री तणउ ए, मृगबंधन मृग पास।
अति कूड़ कपट तणी कूंडी वलि, दियइ २ दुर्गति वासो रे।जी।७।
जीव अत्यंत प्रमादियउ, दृषम काल दुरंत।
तिण शुद्ध क्रिया नहीं पलइ, आधार एक भगवंतो रे।जी।८।
मन मेरु नी परइ दृढ करी, स्थिर पालौ निरतिचार।
भव भ्रमण थी जिम छूटियइ, पामियइ भवनो पारो रे।जी।९।
जग मांहि ते सुखिया थया, वलि हुयइ हुस्यइ जेह।
ते वीतराग ना धरम थी रे, इहां नहीं कोई संदेहो रे।जी।१०
जिन धर्म सघो आदरे ए, सीख अमृत धार।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिम लहे भवनो पारो रे।जी।११।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—गउडी

ए संसार असार छइ, जीव विमासी जोय।
इहां सहु को स्वारथउ, स्वारथ नठ सहु कोय।ए०।१।
खिण खिण इन्द्रिय बल घटइ, खिण खिण त्रूटै आय।
वृद्ध पणइ परवश पड्या, कहि किम धर्म कराय।ए०।२।
आल जंजाल मांहि पड़यउ, आलि जमारउ म खोय।
तप जप पमुहे साधना, साचउ संबल जोय।ए०।३।

सांभलि सीख सोहामणी, ममता पी मन वास्त ।
समयसुन्दर कहइ जीव नइ, प्रघउ संयम पाल ।प्र०।४।

जीव प्रतिबोध गीतम्

असारा माया असार ससार, करि धम म्हारिम हारि ममतारा ।१।रे।
मात पिता प्रिय कुटुंब सनेहा, स्वार्थ बिनु दिखलावइ छेहा ।२।रे।
धन यौवन सब चंचल होइ, राख्या न रहइ कबहीं सोई ।३।रे।
जीर्ण पात परे ज्युं समीरा, ऐसा ही जीवन अथिर सरीरा ।४।रे।
सिर सिर चामर छत्र धरावे, वो भी रे छोरि गये विछावे ।५।रे।
बहुत उपाय किये क्या होई है है, मरण न छूटइ कोई ।६।रे।
पाप करी विछराया मारी,हारथा रे हाथ घसे ज्युं जुआरी ।७।रे।
किरतारी को बिनु बोल न करवी, अपनी करणी पार उतरवी ।८।रे।
मृगनयणी नयणे म लुभाये, ध्यान धर्म सु जीव चित लाये ।९।रे।
समयसुंदर कहइ जीव सु विचारी,या हित सीख करे सुखकारी ।१०।रे।

धम महिमा गीतम्

रे जीया जिन धर्म कीजियइ, धरम ना चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, जग मइ एहज सार ।रे।१।
वरस दिवस नइ पारणइ, आदीसर सुखकार ।
इक्षुरस दान वहिरावियउ, श्री श्रेयांस कुमार ।रे।२।
चंपा बार उघाड़ियउ, चालणी काढ़यउ नीर ।
सती सुभद्रा यश थयउ, शीले सुर गिरि धीर ।रे।३।

तप करि काया सोखवी, सरस निरस आहार ।
वीर जिणद वखाणियउ, ते धनउ अणगार ।रे।४।
अनित्य भावना भावतां, धरतां निर्मल ध्यान ।
भरत आरीसा भवन मइ, पाम्यउ केवल ज्ञान ।रे।५।
श्री जिन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छांहि।
समयसुन्दर कहइ सेवता, मुक्ति तणां फल पाहि ।रे।६।

जीव नटावा गीतम्

राग—नट नारायण

देखि देखि जीव नटावउ, भइसउ नाटक मंड्यउ री ।
कर्म नायक नृत्य करायउ, खेलत खास न खंड्यउ री ।।दे।१।
कबहि राजा कबहि रंक, कबहि भेख भिदरूपउ ।
कबहि मूरिख कबहि पंडित, कबहि पुस्तक पंड्यउ री ।।दे।२।
चउरासी लख भेख बनाए, कोउ भेख न छंड्यउ ।
समयसुंदर कहइ धर्म बिना सब, आप वृथा कर मंड्यउ री।।दे।४।

आतम प्रमोद गीतम्

राग—आसावरी

बूझि र तूं बूझि प्राणी, आणि मन वइराग रे ।
अथिर नर आउखु दीसइ, आणि संध्या राग रे ।।१।।बू०।।
माणुषो भव सही दुर्लभ, पापे पिंड म भार र ।
काग उडावणे कुं, मूढ रत्न म हार रे ।।२।।बू.।।

करिमा पइ कुटुंब कारणइ, म करि करम कठोर रे ।
एकलउ जीव सहीस परभव, नरक ना दुख घोर रे ॥१॥मू०॥
काम भोग संयोग सगला, आयु फल किंपाक रे ।
दीसतां रमणीक दीसइ, अति कडुक विपाक रे ॥२॥मू०॥
गर्व गरथ सखउ न कीजइ, थिर न रहस्यै कोय रे ।
राय फीटी रंक थायइ, राम हरिचंद जोय रे ॥३॥मू०॥
ए असार ससार मांहे, जाणि जिण धम सार रे ।
नरक पडतां थकां राखइ, परम हित दुःखहार रे ॥६॥मू ॥
इम जाणी जीव जिन धर्म कीजइ,लीजियै कछु सार रे ।
समयसुन्दर कहइ जीव कु, पामियै भव पार रे ॥७॥मू०॥

वैराग्य शिक्षा गीतम

म कर रे जीउड़ा मूढ, म माया तन मेरा मरा ।
आप स्वारथ सब मिले, नहीं को जग तेरा ॥म०॥१॥
एक आवै जावै एकला, कुछ साथ न आवइ ।
भली बुरी करणी करी रे, पीछे सुख दुख पावइ ॥म०॥२॥
धर्म किसवन कीजियइ रे, एहु अथिर संसारा ।
देखत देखत बाजता रे, घड़ी में घड़ियारा ॥म०॥३॥
एक क उदर मी दोहिला, एक के दस भरीजइ ।
आपणो कीने कर्मडे र, किस कु दोष न दीजइ ॥म०॥४॥

आप समउ और ललिपइ, तुम्हे बहुत क्या कहणा ।
समयसुन्दर कहइ जीव कु रे, ऐसी सीख में रहणा ।।म०।।५।।

घडी लाखीणी गीतम्
राग — आसाउरी

घडी लाखीणी जाइ ध, कछु धरम करउ चित लाइ ध ।घ ।१।
इहु मानव भव दोहिला लाधा,रमत खेलत मान्हइन गया आधा ।घ ।२।
इस लोयइ आगइ क्या होई, मरण जरा मिलि आवत दोई ।घ ।३।
बरसां सौ जीवण की आसा, पण एक घडिय नहीं वेसासा ।घ ।४।
समयसुदर कहइ अथिर ससारा, जनमि २ जिन ध्रम आधारा ।घ ।५।

सूता जगावण गीतम्
राग—भैरव

जागि जागि जागि माई जागि रे तु जागि ।
मोर भयो ध्रम मारगि लागी ।।जा०।१।
सूता रे तेह निगूता सही ।
जागतां कोउ डर भय नहीं ।जा०।२।
देव जुहारी गुरु वांदण जाइ ।
मुखि रे वखाण तोरा पाप पुलाई ।।जा०।३।
देहु दान कछु कर उपगार ।
समयसुन्दर कहइ ज्यु पामइ भव पार ।।जा०।४।

प्रमाद त्याग गीतम्

प्रातः भयउ प्रात भयउ, प्राणी नींद त्यागि रे ।
आलस प्रमाद तज, धर्म ध्यान लागि रे ॥
छोटी मात्रा वाल पड़, प्रभु गुण गावो रे ।
कछुक उपगार करो, जेह थी सुख पावो रे ।प्रा०॥१॥
हाथ दीने पांव दीन्हे, बोलवे कु वेण रे ।
सुणवे कुं श्रवन दीने, देखवे कु नैण रे ।प्रा०॥२॥
दिन दिन आए पड़, त तो घटतउ आयु रे ।
तरो जन्म सरातो जात, छोहा कैसे वाउ रे ।प्रा०॥३॥
केतो धन मास एतो, स्वारथियउ ससार रे ।
करणी तु विन नहीं, पावे भव पार रे ।प्रा०॥४॥
अंतर विचार करउ, समयसुंदर कहइ ।
अंतर प्रकाश विना, शिवसुख क्यु लहै ।प्रा०॥५॥

प्रमाद त्याग गीतम

जागौ रे जागौ रे माई परमात थयउ ।
घरम घरम उग्यउ अंधारउ गयउ ।मा०जा०॥१॥
आलस प्रमाद ऊंघ कीधा क्युं छुट ।
चपद पूरवधर निगोद पड़ रे ।मा० जा०॥२॥
रूडी परि राई प्रायश्चित पडिकमणौ करो ।
किरीया करी पूँबी पूछी कमउ ऊघरो ।मा० जा०॥

देहरइ जाइ नइ तुमे देव जुहारो ।
सुगुरु वांदी नइ सूत्र संभारो रे ।।मा० जा०।।४।।
मनुष्य जमारउ कोइ आलि गमाड़उ ।
समयसुन्दर कहइ प्रमाद छांडउ रे ।।मा० जा०।।५।।

मन सज्झाय

मना तने कई रीते समझावु ।
सोनु होवे तो सोगी रे मेलावु, तावणी ताप तपावु ।
लई फूंकणी ने फु कवा बसुं, पाणी जेम पिगलावु । म०।१।
लोह होवे तो एरण मंडावु, दोय दोय घमण घमावु ।
ऊपर घणा री घमसोर उडावु, जांतसी तार कडावु । म०।२।
घोड़ो रे होवे तो ठाण मंघावु, खासी अन्न मंडावु ।
असवार होइ करि माथे बैठावु, खेद खेद खेल खेलावु । म०।३।
हस्ती होवे तो ठाण मंधावु, पाय घुघरी घमकावु ।
मावत होइ कर माथे बेठावु, अंकुश दइ समझावु । म०।४।
शिला होवे शिलावट मंगावु, टांकणे टांक टंकावु ।
विध विध देवनी प्रतिमा निपजाउं, जगत ने पाये नमावु । म०।५।
चपल घोर कठिन है तु मनवा, पल एक ठौर न आवे।
मना तने मुनिवर समझावे, जोत में जोत मिलावे । म०।६।
जोगी जोगेसर तपसी रे तपिया, ज्ञान ध्यान से ध्यावो।
समयसुंदर कहइ मंइ पण ध्यायो, त पण हाथ न आयो। म०।७।

मन धोबी गीतम्

धोबीड़ा तूं धोजे रे मन करा धोतिया,मत राखे मैल लगार।
इण मइले जग मैलो करयउ रे,विण धोयां तूं मत राखे लगार।धो.।१।
जिन शासन सरोवर सोहामणो रे, समकित तणी रूड़ी पाल।
दानादिक चारु ही बारणा, मांहे नवतत्त्व कमल विशाल।धो।२।
त्यां झालइ रे मुनिवर हंसला, पीवैं छइ तप जप नीर।
शम दम आदि ज शीला रे, तिहां पखाले आतम चीर।धो।३।
तपवज्र तप नइ तड़के करी रे, जालवज्र नव ब्रह्मवाड़।
छांटा उडाडे रे पाप अढार ना रे, जिम उजलो हुवे ततकाल।धो।४।
आलोयण साबुड़ो सुद्धि करी रे, रखे आवे नी माया सेवाल।
निश्चय पवित्र पणो राखजे, पछइ आपणो नेम संभाल।धो.।५।
रखे तू मूके यो मन मोकलो रे, पाल मेली नइ संकेल।
समयसुन्दर नी आ छइ सीखड़ी, सीखड़ली मोहन वेल।धो.।६।

माया निवारण सज्झाय

माया कारमी रे माया म करो चतुर सुजाण।
माया माया धन विलुद्धि, दुखिया थाई प्राण्य॥१॥
माया कारण देश देसांतर, अटवी वन मां जावै रे।
प्रवहण बइसी धीर द्विपांतर, सायर मां झंपावै रे॥२॥
माया मेली करी बहु मेली, लोभे लक्षण जाय रे।
भींतें धन धरती में घाली, ऊपर विषहर थाय रे॥३॥

जोगी जगम तपसी सन्यासी, नगन थइ परवरीया रे।
ऊंधे मस्तक अगन भखती, माया थी न ओसरिया रे ॥ ४ ॥
नानना मोटा नर ने माया, नारी नै अधिकेरी रे।
वली विशेषे अधिकी व्यापइ, गरढा नइ महमेरी रे ॥ ५ ॥
शिवभूति सरिखो सत्यवादी, सतमें पोषें थाइ रे।
रतन देखि मन तेहनउ चलियउ, मरी नइ दुरगति जाइ रे ॥ ६ ॥
एहइ जाणी मतियम प्राणी, माया मूकउ अलगी रे।
समयसुन्दर कहइ सार छइ जगमें, धरम रंग सु विलगी रे ॥ ७ ॥

माया निवारण गीतम्

राग—रामगिरी

इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा।
जीव तु विमासि नहीं कुछ तेरा ॥ इ०॥१।
सामग्री सोस करइ बहु तेरा, आंखि मीची तब जग अंधेरा ।इ।२।
मात मसूक तनू धन केरा, सब कछु छोरि चलइगा इकेरा ।इ।३।
समयसुदर कहइ कई क्या घसेरा, माया जीवइ तिणकुं ईं घेरा ।४।

लोभ निवारण गीतम्

राग—रामगिरी

रामा रामा धन धनं,
ममघउ रहइ तूं राति दिनं, माई रा।

पुण्य विना करि क्युं धन पाइयइ,
पूछि न मानइ तउ पंच मर्न, माई रा. ।१
घर धंधइ सब धरम गमायउ,
वीसरि गयउ देव गुरु भजनं ।
पेटि उपाडि गये कया परभवि,
म करि म करि जीव लोभ घनं, माई रा. ।२
पग माँहि मरण धरइ रे मूरिख,
माया जाल म पडि गहनं ।
समयसुंदर कहइ मान वचन मेरउ,
ध्रम करि ध्रम करि एक मनं, माई रा. ।३

पारकी होड निवारण गीतम्

राग—गुडड मिश्र

पारकी होड तूं म करि रे प्राणिया,
पुण्य पाखइ म करि हूंमि खोटी ।
बापड़ा जीव चाली रहे बउ बाजरी,
करि किम ख्याति तुं सालि मोटी ।।पा०।।१।।
जउ वउ सोनार नइ खसट घडिवा दियउ,
तउ तूं मांगइ किम कनक ग्रोटी ।
देखि हनुमंत की हूंसि माँहे रसी,
राम भगतीस कीनी कछोटी ।।पा०।।२।।

पुण्य तई राज नई रिद्धि सुख पामियइ,
पुण्य पाखइ न रोटी न दोटी ।
समयसुंदर कहइ पुण्य कर प्राणिया,
पुण्य थी द्रव्य कोटान कोटी ॥पा०॥३॥

मरण भय निवारण गीतम्

राग—आसावरी

मरण तणउ भय म करि मूरिख नर, जिण थाटे जग जाइ रे।
तीर्थंकर चक्रवर्ती अतुल बल, तिण पणि खिण न रहाइ रे ।म ।१।
तप जप संजम पालि तूं सघु, ध्यान निरंजन ध्याइ रे।
समयसुंदर कहइ जिम तुं जिवड़ा, परभव सुखिपउ थाइ रे ।म ।१।

आरति निवारण गीतम्

राग—गूजरी

मरी जीयु आरति काइ करइ ।
जइसा अक्खर मई लिखति विधाता, तिण मई फछु न टरइ ।मे ।१॥
केइ चक्रवर्ती सिर छत्र धरावत, किइ कण्य मांगत फिरइ ।
केइ सुखिए केइ दुखिए देखत, ते सब करम करइ ।मे ।२॥
आरति आदोइ छोरि दे जीयुरा, रोयत न राज धरइ ।
समयसुंदर कहइ जो सुख बंछत, तउ करि धम विघ खरइ ।मे ।३॥

मन शुद्धि गीतम्

एक मन सुद्धि विन कोउ मुगति न जाइ ।
भावइ तुं केस जटा धरि मस्तकि, भावइ तु मुंड मुंडाइ ।ए.।१॥
भावइ तुं भूख तृषा सहि वन रहि, भावइ तुं तीरथ न्हाइ ।
भावइ तुं साधु भेख धरि बहु परि, भावइ तुं भसम लगाइ ।ए.।२॥
भावइ तुं पढि गुणि वेद पुराया, भावइ तुं भगत कहाइ ।
समयसुंदर कहि साच कहूं सुण, ध्यान निरंजन ध्याइ ।ए.।३॥

कामिनी-विश्वास निराकरण-गीतम्

राग—सारङ्ग

कामिनी का कहि कुण विसासा । का० ।
खिण रागइ विरचइ खिण मांहे,
खिण विनोद खिण मेल्है निसासा ॥ का ॥१॥
वचनि मधुर मधुर चित अंतर,
मधुर सु करइ हांसा ।
चंचल चित कुड मति कामिनि,
मुग्ध लोग मृग वचनि पासा ॥ का० ॥२॥
धन ज साथ वास संगति तजी,
जाइ रइ वन वासा ।
समयसुन्दर कहइ सीख धरउरि,
पालइ वाके चरण कउ ई हासा ॥ का० ॥३॥

कहइ कथा सीव कंत नइ, आगता रहउ मोरा स्वाम रे ।
ध्यान धरम सुख भोगवउ, ध्यउ भगवंत रउ नाम रे । नी.।३।
मन मांस्यउ रहइ साकतउ[1], कुसियारी भली होइ रे ।
समयसुन्दर कहइ आगता, छेतरी न सकइ कोई रे । नी।४।

निद्रा गीतम्

सोइ सोइ सारी रयणि गुमाई,
वैरण निद्रा तु कहां से आई । सो० ।
निद्रा कहइ मई तउ बाली रे भोली,
बड़े बड़े मुनिजन कु नाखु रे ढोली ॥ सो०॥१॥
निद्रा कहइ मई तउ जमकी रे दासी,
एक हाथ मूकी एक हाथ फांसी ॥ सो०॥२॥
समयसुन्दर कहइ सुनो भाई बनिया,
आप डूबे सारी डूब गई दुनिया ॥ सो०॥३॥

पठन प्रेरणा गीतम्

राग—मयरव

भणउ रे चेला भाई भणउ रे भणउ,
भएया रे माणस नइ आदर घणउ ॥ भ.॥१॥

---

[1] घरम करम सगळी परइ

भण्या नइ हुयइ भलउ विहरावणउ,
समर पत्र परिरण मोडखउ ॥ भ ॥२॥
पद हुयइ वाचक पाठक वणउ,
भाजउठइ चढ़ी सइसणउ ॥ भ ॥३॥
भण्यां पाखइ दुख पाय देखणउ,
कांधइ झोली हाथ मइ दोहणउ ॥ भ ॥४॥
समयसुन्दर कउ सगन मानणउ,
इह लोक परलोक सोहामणउ ॥ भ ॥५॥

क्रिया प्रेरणा गीतम्

राग—भयरव

क्रिया करउ चला क्रिया करउ,
क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ । क्रि० ।१।
पडिलेहउ उपगरण पालगउ,
अपणा गु खउउ ऊधरउ । क्रि० ।२।
पडिक्कमणां पाठ सुध ऊचरउ,
सह् भाषग्रर गमा मांमरउ । क्रि० ।३।
काउसग करता मन पांतरउ,
चार आंगुल पग नउ आंतरउ । क्रि० ।४।
परमाद नइ आलस परिहरउ,
तिरिय निगोद पन्न धी डरउ । क्रि० ।५।

क्रियारत दीसइ फूटरउ,
क्रिया उपाय करम छूटरउ ।क्रि ।६।
पांगलउ ज्ञान किम्पउ कामरउ,
ज्ञान सहित क्रिया भादरउ ।क्रि० ।७।
समयसुन्दर यह उपदेश खरउ,
मुगति वसउ मारग पाधरउ ।क्रि० ।८।

ओघ-व्यापारी गीतम्

राग—देव गंधार

भाये तीन जणा व्यापारी । भा० ।
घरा घरा करण कुं लागे, बठे मांहि बखारि ।भा०।१।
मूल गमाए चल्या एक मूरिख, एक रखा मूल भारी।
एक चल्या तीन लाभ बहुत ले, मन देखो अरथ विचारी;
भी उत्तराध्ययन विचारी ।भा०।२।
लाभ देख सउदा सब करणा, कुव्यापार निवारीं ।
समयसुंदर कहइ इण कलजुग मइं, सब रहिन्यो दुखियारी।भा०।३।

घडियाली गीतम्

राग—मिश्र

चतुर सुघउ चित लाय कर, कहा कहइ घरियारा ।
जीवित मांहि जायइ घरी, न कोइ राखणहारा । च ।१।

पहुर पहुर कइ म्होतरइ, राति दिवस मम्झारा।
बाजा रे बाजइ जम सथा, सब रहु हुसियारा। प०।२।
यतु छाया छडिया फिरइ, गाफिल म रहउ गमारा।
समयसुन्दर कहइ धम करउ, एहीज आधारा। प०।३।

उद्यम भाग्य गीतम्

राग—गूजरी

उद्यम भाग्य बिना न फलइ।
बहुत उपाय किये क्या होई, भवितव्यता न टलइ। उ०।१।
पूरब रवि पच्छिम दिस ऊगत, अविचल मेरु चलइ।
तउ भी लिखित मिटइ नहीं कबही, उद्यम क्या फलइ। उ०।२।
सुख दुख सब कछु सरज्या होवत, उद्यम भाग्य मिलइ।
समयसुन्दर कहइ धर्म करउ जिम, मन अभीष्ट मिलइ। उ०।३।

सवभेषमुक्तिगमनगीतम्

राग—नटनारायण

हां माइ हर कोउ भगत मुगति पावइ, ध्यान निरंजन को ध्यावइ। मा।
मैं सन्तोषर माथ दिगम्बर, मग्न कन्दर ममभावइ। मा।१।
हां माई भगवा भगवा तापस सन्यासी, सिंगीनाद सबद बावइ।
नगन उगाघर कोउ कनपारो, क जोगिन्द्र मथम सावइ। मा।२।

हां माई स्त्री पुरुष नपु सक सब कोउ, जोग मारग नइ सुमति भावइ।
समयसुन्दर कहइ सो गुरु साचउ, जोग मारग मोक्ष समझावइ 'मा ३।

कर्म गीतम्

राग—नटनारायण

हां माई करम थी को छूटइ नहीं। क०।
मल्लिनाथ भइस्त्री पणइ ऊपना, वीरइ दुःख वेदन सही। हां ।१।
हरिचंद राय पाणी सिर आण्यउ, नदिषेण वेस्या संग्रही।
घरि घरि भीख मांगी मुंज राजा, द्वारिका यादव कोडि दही। हां ।२।
लखमण राम भय वनवासी, रावण कष्ट विपति लही।
समयसुन्दर कहै करम अतुलबल, करम की बात न जात कही। हां।३।

नाथी गीतम्

राग—बनङ्ग मल्हार

नाथा नीम्मी री घरइ नीर मम्भार, बाजरि नहीं य सगार ना०।
रु पे हैं आगम इार, मरघउ हइ सक्षम भार।
आठला पांच आचार, बीरिम इह मृक्कार ॥ ना० ॥१॥
थिर मन कृपा थमउ, नांगर द्या उठ मउ;
समकित भावना सुवाय।
मास्समी आगम मासर, करने जिहाज रास्सर;
समयसुन्दर नाउयठ, कुशल शिवपुर पाय ॥ ना० ॥२॥

जीव काया गीतम्

जीव प्रति काया कहइ, सुनइ सुकि कर्ज समझावइ रे।
मइ अपराध न को कियउ, प्रिउ को समझावइ रे ॥जी०॥१॥
राति दिवस तोरी रागिणी, रात्रु हृदय मझारि रे।
सीस वायड हूँ सहु सह, यूँ छइ प्राण आधार रे ॥जी०॥२॥
प्रीतडी पालम पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे।
कठिन हियु नवि कीजियइ, कीजइ सुगुण सनेह रे ॥जी०॥३॥
जीव कहइ काया प्रति, अम्ह को नहीं दोस रे।
थिर रहइ किम्यइ थिया तदनउ किसोय भरोस रे ॥जी०॥४॥
थिरमित राग काया तणउ, कूट कपट निवास रे।
गुण अवगुण जाणइ नहीं, रहइ चित्त उदास रे ॥जी०॥५॥
जीव काया प्रतिबूझवी, भागो मन नो संदेह रे।
समयसुन्दर कहइ सुगुण सु, कीजइ परम सनेह रे ॥जी०॥६॥

काया जीव गीतम्

राग—केदारउ गउडी

रूडा पपीहा, पंखीडा सुन्दर मेम्ही नइ म जाय।
पुर थी प्रीति करी मइं तो सुँ, तुम्ह विण घड़ी न रहाय ॥रू०॥१॥
चतुर अमृत रस मोरठ तइं चाख्यउ, कीधी कोडि विलास।
जाण्युं नहीं इम उडी जाइस, हुती मोटी आस ॥रू०॥२॥
काया कमलनी आयइ कमलानी, न रहइ रूप नइ रेख।

विन अपराध तजइ को वालम, पंच राति वलि वच ॥ रू.॥३॥
इस कहइ ई न रहे परवश, सबल थी मुझ साप ।
समयसुन्दर कहै ए परमारथ, हस नहीं किय हाथ ॥ रू.॥४॥

जीव कर्म सम्बन्ध गीतम्

राग—भूपाल

जीव नइ करम माहो मांहि सबंध,
अनादि काल नउ कहियइ रे ।
ए पहिलउ ए पछइ न कहियइ,
पहु उपल भेद लहियइ रे ॥ जी० ॥१॥
तप जप अगनि करी नइ पइनउ,
दुष्ट करम मल दहियइ रे ।
समयसुन्दर कहइ पहिल आतमा,
सिद्ध रूप सरदहियइ रे ॥ जी० ॥२॥

सन्देह गीतम्

राग—भूपाल

करम अचेतन किम हुयउ करता, कहउ किम सक्रियइ पापी रे ।
परमेसर सिव किम हुयइ करता, पइ दुख तउ ते पापी रे । क॥१॥
आरीसा मांहि प्रगटउ दीसइ, कहउ त पुदगल केहा रे ।
जीव अरूपी करम सरूपी, किम सबंध संदेहा रे । क॥२॥

जिन सासन शिव सासन प्रच्छू, पुस्तक पाना वांचुं रे ।
समयसुन्दर कहइ सांसउ न मागउ, भगवत कहइ ते सांचु रे । क.।२।

जग सृष्टिकार परमेश्वर पृच्छा गीतम्

राग—वेलाउल

पूछू पंडित कहउ का हकीकत,
 आ जगत सृष्टि किण कीधी रे ।
जउ आण्यउ तउ जुगति कहउ कोइ,
 नहिं तरि ना कहउ सीधी रे ॥ पू०॥१॥
ब्राह्मण वांचउ वेद पुराणा,
 काजी वांचउ कुराणा रे ।
धर्म सिद्धांत वांचउ जिण शासनि,
 पणि समझावइ ते सुजाणा रे ॥ पू०॥२॥
जनम मरण दीसइ अति बहुला,
 प्राणी सुख दुख पावइ रे ।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ केवलि,
 तउ सहु विध समझावइ रे ॥ पू०॥३॥

करतार गीतम्

कबहु मिलइ मुझ जउ करतारा, तउ पूछु दोइ बतियां रे ।
ए किणगत किए इह पापी, लखि न सकूं तोरी गतियां रे । क०।१।

मन मान्या मायस वउ मेलइ, तउ कि विछोहा पाइइ रे।
विरह वेदन उनकी ओ जाणइ, रोइ रोइ जनम गमाडइ रे।क०।२।
दमकुमर सरखा पुत्र देइ, अयतिष म्याइ कु उदासी रे।
पुत्य रतन घडी पडी किम मांगइ, यौवन अवस्था चाली रे।क०।३।
जो तू छत्रपति राजा थापइ, तउ रंक करो कु सहाजइ रे।
जिण दाघइ करि दान दिरावइ, सो कु हाथ उडावइ रे।क०।४।
के कहइ ईश्वर के कहइ विधाता, सुख दुख सरजन हारा रे।
समयसुन्दर कहइ मई भेद पायउ, करम सु हइ करनारा रे।क०।५।

दुषमा-काले संयम पालन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो कहो संयम पथ किम पलइ, ए दुषमा काल।
किसबा पाखी जीव इहां घणा, वलि गच्छ जंजाल ॥ १ ॥
हां हो तप संयम नी खप करउ, जिन आज्ञा निहालि।
समयसुन्दर कहइ भ्रम करउ, राग नइ द्वेष टालि ॥ २ ॥

श्री परमेश्वर भेद गीतम्

राग—सबाब मिश्र

एक तु ही तु ही, नाम जुवा मूंकि मूंकि । १ । एक तु ही।
बाबा आदिम तु ही तु ही, अनादि मय तु ही तु ही। २ । एक तु ही।
पर ब्रह्म ने तु ही तु ही, पुरुषोत्तम ते तु ही तु ही। ३ । एक तु ही।
ईसर देव ते तु ही तु ही, परमेसर ते तु ही तु ही। ४ । एक तु ही।

राम नाम ते तु ही तु ही, रही नाम ते तु ही तु ही । ५ ।एक तु ही ।
साँई पथ ते तु ही तु ही, गोसोइ ते तु ही तु ही । ६ ।एक तु ही ।
विद्या ब्रह्मा तु ही तु ही, आंप एकल्ला तु ही तु ही ७ ।एक तु ही ।
व्रती जोगी तु ही तु ही, सुगत भोगी तु ही तु ही । ८ ।एक तु ही ।
निराकार ते तु ही तु ही,साकार पथि ते तु ही तु ही । ९ ।एक तु ही ।
निरजय ते तु ही तु ही, दुख भजया ते तु ही तु ही ।१०।एक तु ही ।
अकल गति ते तुही तुंही, अकल मति ते तुही तुही ।११।एक तु ही ।
एक रूपी तु ही तु ही, बहुय रूपी त तु ही तु ही ।१२।एक तु ही ।
घट घट भेदी तु ही तु ही, अतर जामी तु ही तु ही ।१३।एक तु ही ।
जगत व्यापी तुंही तुही, तेज प्रतापी तु ही तु ही ।१४।एक तु ही ।
पार्शीया दूरि ते तुंही तुही,परमी हजूरी ते तु ही तुंही। ५।एक तु ही ।
अतरजामी तु ही तु ही, सहसनामी तु ही तु ही ।१६।एक तु ही ।
एक अरिहंत तुही तुंही, समयसुन्दर तु ही तु ही ।१७।एक तु ही ।

इति श्री परमेश्वर भेद गीतम् ।

परमेश्वर स्वरूप दुर्लभ गीतम्

राग—धयराफी

कुण परमेसर सरूप कहइ री । कु० ।
गगन भमत खर खोज पखी का,
मीन का मारग कुण लहइ री । कु० । १ ।
कुण समुद्र पसली करि पीयइ,
कुण अमर कर मांहि ग्रहइ री ।

कृपा गगा वेष्णु क्या करु गिरिवर,
कृपा माथइ करि मेरु वहइ री । कृ० । २ ।
क्रोध मान माया लोभ धीपइ,
ओ तपस्या करि देह दहइ री ।
समयसुन्दर कहइ ते लहइ शिवसुख,
अ जोग ध्यान की जोति रहइ री । कृ० । ३ ।

निरंजन ध्यान गीतम्

राग—धमराडी

हाँ हमारइ परब्रह्म ध्यान ।
क्या माता क्या पिता कुटुम्ब क्या, सब जग सुपन समान । हाँ ।१।
तप जप किरिया कष्ट बहुत करइ, सिव कु तिल भी न मानें ।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एक निरंजन ध्यानें । हाँ ।२।

परब्रह्म गीतम्

राग—धमराडी

हुं हमारे परब्रह्म ध्यानें ।
क्या देव क्या गुरु क्या वेसा, मजर किसी कु न मान रे । हुं ।१।
क्या माता क्या पिता कुटुंब क्या, सब जग सुपन समानें ।
अकल अगोचर अकल सरूपी, पर ब्रह्म एक पिछानें । हुं ।२।
इंद्रजाल इंद्रधनुष ज्युं, तन धन अनित्य हुं जानें ।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एइ निरंजन ध्यानें रे । हुं०।३।

जीवदया गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जीवदया धरम वेलड़ी, रोपी श्री जिनराय ।
जिन सासण थार्णे बिहां, ऊगी अविचल भाइ । हां०जी०।१।
हां हो समकित मूल सींची थकी,शाखी जयणा सुहाय ।
गुपति मंडपि ऊंची चढ़ी, सुख शीतल छाय । हां०जी०।२।
हां हो व्रत साखा तप पानड़ा, रूडि रिद्धि ए फूल ।
समयसुन्दर कहइ सुगति ना, फल आपइ अमूल । हां०जी०।३।

वीतराग सत्य वचन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जिन धर्म जिन भ्रम सहु कहइ, थापइ आपइ आपणी वात ।
समाचारी जूजूई, कहउ किम समझात । जि० ।१।
हां हो चन्द्रगुपत राजा हुयउ, सुहणउ दीठउ एम ।
चंद्र भयउ आणु चालणी, जिण सासण तेम । जि० ।२।
हां हो अम्हे साचा भूठा तुम्हे, ए मूकउ टेव ।
समयसुन्दर कहइ सत्य ए, कहइ वीतराग देव । जि० ।३।

कर्म निर्जरा गीतम्

राग—जयणी मन आण्या थकी

कर्म तणी कही निर्जरा, पाप निहु टामे ।
भमणोपासक...मर् कही, ... परिणाम । क० । १

छठी रिद्धि कहि छोडसु, थोडी पणी जेह ।
भारम नउ मूल ए कही, तीर्थंकरे तेह । क० । २ ।
गृहस्थावास छोडी करी, होस्यूँ हूं अणगार ।
संयम शुद्ध पालसु, पामिसी भव पार । क० । ३ ।
अत समय संलखना, करि करस्यु शुद्ध ।
इह पर   । क० । ४ ।
ठाणांग सूत्र मांहे कही, ए तीजे ठाणे ।
सुधर्मा स्वामी कहै जंबू ने, समयसुन्दर वखाणे । क० । ५ ।

वैराग्य सज्झाय

मोक्षनगर मारू सासरू, अविचल सदा सुखवास रे ।
आपणा जिनवर नइ भेटिवइ, त्यां करउ लील विलास रे । मो ।१
ज्ञान दर्शन आणे आविया, करो करो भक्ति अपार रे ।
शील सिणगार पहरो पदमणी, उठि उठि जिन समरो सार रे । मो २
विवेक सोवन टीलुँ तप तपे, साचो साचो वचन तंबोल रे ।
सतोष काजल नयणे मर्यो, जीवदया कुंकुम घोल रे । मो ।३
समकित वाट सोहामणी, संयम वहेल उछमाल रे ।
तप जप बलदिया जोतर्या, भावना रास रसाल रे । मो ।४
धरमो सासरो परिहरो, चेतो चेतो चतुर सुजाण रे ।
समयसुन्दर मुनि इम भणइ, त्यां छइ मवि निरवाण रे । मो ।५

औपदेशिक गीत

क्रोध निवारण गीतम्

राग—केदारउ

जियुरा तूं म करि किण सुं रोस । जि० ।
तूं कहुं जीव तुं दुख पामइ, देइ करम नइ दोस । जि ।१।
हां पारकी निंदा पाप हइ बहु, म करि भरम नइ मोस ।
आप स्वारथ मिले सब आय, किण ही का न भरोस । जि ।२।
हां हो क्षमा गयसुकमाल कीनी, सासता सुख मोस ।
समयसुन्दर कहइ क्रोध तजि करि, धरे परम संतोस । जि ।३।

हुंकार परिहार गीतम्

राग—तोडी

यहां वहां ठउर ठउर हूं हूं हूं । अ० ।
कहा अति मान करइ तू । अ० ॥
रूप लगि कुण कुण आइ सिधारे,
तू किम गान में रहइ रे गमारे ॥ अ० ॥ १ ॥
यहु संसार असार असारा ।
समयसुन्दर कहइ तजि अहंकारा ॥ अ० ॥ २ ॥

मान निवारण गीतम्

राग—केदारउ गउडी

मूरख नर काहे तुं करत गुमान ।
धन धन जोबन चंचल जीवित, सहु जग सुपन समान । मू ।१।

कहां रावण कहां राम कहां नल, कहां पांडव परधान ।
इण जग इण इण आइ सिधार, करि नई तू किस धान । मू ।२।
आज के कालि आखर अस मरणा, मेरी सीख तू मान ।
समयसुन्दर कहइ अथिर संसारा, धरि भगवंत कउ ध्यान । मू.।३।

मान निवारण गीतम्

राग—केदारा गउडी

किसी क सब दिन सरिखे न होई ।
प्रह ऊगत अस्तमत दिनकर, दिन मई अवस्था होई । कि.।१।
हरि बलभद्र पांडव नल राजा, रहे वन खंड रिधि खोई ।
चंडाल कइ घरि पाणी आएयउ, राजा हरिचंद जोई । कि.।२।
गरब म करि र सू मूढ गमारा, चढत पडत सब कोई ।
समयसुन्दर कहइ ईरत परत सुख, सायउ बिन धर्म सोई । कि.।३।

यति लोभ निवारण गीतम्

राग—रामगिरि

चेला चेला पर्द पर्द, पुस्तक पाना लोभ मद । चे ।
मार भूत म मेलि परिग्रह, संयम पालइ सात्त्व कर्द । माई चे.।१।
मन चेला पद साध की पदवी, पुस्तक धरि शुभ ध्यान मुर्द ।
समयसुटर कहइ अपणे क्रिय ङ, अतिचपल एक सुगति सवर्द । मा चे २

विषय निवारण गीतम्

राग—केदारच

रे जीव विषय थी मन वालि ।
काम भोग संयोग भूडा, नरक दुख निहालि ॥ रे० ॥१॥
अल्पकाल विषय तणा सुख, दुख घण बहु काल ।
वसवत विषय नइ लोम बहुँ, टालि जीव जजाल ॥ रे० ॥२॥
मानखो भव लही दुरलभ, मत गमाडइ आलि ।
समयसुन्दर कहइ आपनइ सघु संयम पालि ॥ रे० ॥३॥

निंदा परिहार गीतम्

राग—सबाब

निंदा न करिजइ जीव पराई,
निंदा पापइ पिंड भराई ॥ निं० ॥१॥
निंदक निश्चय नरगइ जाई,
निंदक चउचउ चडाल कहाई ॥ निं० ॥२॥
निंदक रसना अपवित्र होई,
निंदक मांस भषक सम दोई ॥ निं० ॥३॥
समयसुन्दर कहइ निंदा म करिज्यो,
परगुण देखि हरख मनि धरज्यो ॥ निं० ॥४॥

निंदा वारक गीतम्

निंदा म करजो कोइ नी पारकी रे,
निंदा ना बोल्या महा पाप रे ।

वेर विरोध वाधई घणा रे,
निंदा करतां न गिणइ माय बाप रे। निं०।१।
दूर बलंती कां देखो तुमे रे,
पग मां बलती देखो सहु कोइ रे।
पर ना मल मांहि धोयां लूगड़ा रे,
कहो किम ऊजला होइ रे। निं०।२।
आपु संभालो सहु को आपणु रे,
निंदा नी मूको परि टेव रे।
थोड़ घणाइ अवगुण सहु भरया रे,
कहना नलिया चूयं कहना नेव रे। निं०।३।
निंदा करइ ते थायइ नारकी रे,
तप जप कीधु सहु जाय रे।
निंदा करउ तउ करज्यो आपणी रे,
जिम छूटक बारउ थाय रे। निं०।४।
गुण ग्रहजो सहु को तणाउ रे,
जेह मां देखउ एक विचार रे।
कृष्ण परइ सुख पामस्यउ रे,
समयसुन्दर कहइ सुखकार रे। निं०।५।

दान गीतम्

राग—रामगिरि

जिनवर जे मुगतइ गामी, ते पिण आपइ दान।
वरस वरं पोसइ जग वच्छल, वरसइ मेह समान ॥१॥

रूडा प्राणिया दान समउ नहीं कोइ रे, तूँ हृदय विमासी नइ जोइ रे। रूडा।
सालिभद्र नी रिद्धि सगमई लाधी, त दान लणउ परमाथ र।
बलदेव दान थकी रथकारइ, पाम्यु अमर विमाण ॥ रू ॥२॥
सवि विघन सब दूर पुलायइ, दानइ दउलति होइ रे।
इह मति सुजस कीरति वाधइ, पर भवि सबल सोइ ॥ रू. ॥३॥
दान तणा फल परतिख दखो, दानइ जगत वसि थायइ रे।
समयसुन्दर कहइ दान धरम ना, रामगिरी गुण गाइ ॥ रू ॥४॥

शील गीतम्

राग—मेवाड़उ

शील व्रत पालउ परम सोहामणउ रे, शील कहउ ससार।
शील प्रमाणइ शिव सुख सपजइ र, शील आभरण उदार। शी ।१।
कलावती कर नवपल्लव थया र, सीता अगनि थयउ नीर।
सुदरसण शूली सिंहासण थयउ र, द्रूपदी अखडित चीर। शी ।२।
स्थूलिभद्र जंबू शील वखाणियइ र, नवि डोल्या मुनिराय।
समयसुन्दर मार भगति धरी र, प्रणमइ तहना पाय। शी ।३।

तप गीतम्

राग— [illegible]

तप तप्या आपा शुद्ध निरम्मल, तपतपंग इम्‍ बमि थाइ।
तेर तप्या परमार्थ गौभद्र, तर तप्या प्रणमइ पाइ। त ।१।
ऋषभदेव वरषी तप कीधउ, छमासी कीधउ वधमान।
तप तपी सुरगति ज पहुता, त सुन्दर तु नहिं को गान। त ।२।

भातम वस्त्र करम मल मइलो, तप जल धोई निरमल करउ ।
समयसुंदर कहइ सम मतिक तुमइ, सुगति रमणी सुख लीला करउ ।।

भावना गीतम्

राग—धन्यासी

भावना भावज्यो रे भवियां, जिम लहउ भवनउ पार ।
गयवर चढ़िया केवल पाम्यु , वोरुउ मरुदेवी अधिकार । भा ।।१।।
वंश उपरि इला पुत्र नइ, भरत नइ भवन मझारि ।
भावना मन माँहि भावतां, उपन्यउ केवल उदार । भा.।।२।।
दान शील तप तउ भला रे, भावना हुयइ जो उदार ।
भाव रसायण जोग भलइ रे, समयसुन्दर कहइ सार । भा.।।३।।

दान शील-तप भावना गुर्वा गीतम्

राग—गूजरी

प्रजपति पुत्र भरत कहउ ।
दशमुख बंधु निवास क नारी, भवि भरण्यउ मूभरउ । प्र ।।१।।
ज्योतिष आख सहोदर नामे, तसु पद पिशुन लहउ ।
तसु प्रिय रति आगति रति रवि कउ, अधिक निकट आदरउ । प्र २।।
दधितनया मिघु तसु बांधव वित, चिंतव्यउ ते आदरउ ।
समयसुन्दर कहइ क.क गलइ जिम, ते सहि तुरत वरउ । प्र ।।३।।

तुर्य वीसामा गीतम्

ढाल—श्री नवकार मन ध्याइये

भार वाहक नइ कह्या भला, वीसामा वीतरागे जी ।
भाया थी मूकइ कधे तहा, मारग माहि लागो जी ॥
तहि मारग माहि चलतां, मल नइ मूत्र तजइ जिहां ।
नाग यच देहरे रह रात, भार उठाणइ तिहां ॥
आव जीव जिण थानक वसै, तिहां भार मूकी रहै सुक्खे ।
ए द्रव्य भणी चारे वीसामा, महावीर कहै मुखे ॥१॥
भमणोपासक त सुणो, वीसामा सुविवेको जी ।
शील व्रत गुण व्रत सहु, उपवास करति अनेको जी ॥
देसावगासियइ ।
वलि पर्व दिवस करइ पोसउ, ए भगवंते भाखियइ ॥
सलेखना करे सुद्ध देरइ, भाव वीसामा कह्या ।
ठाणांग सूत्र में चौथ ठाणइ, समयसुन्दर सरदह्या ॥२॥

—•—

प्रीति दोहा

कागद थोड़ो हत घणउ, सो पिउ लिख्यो न जाय ।
सायर मां पाणी घणउ, गागर में न समाय ॥१॥
प्रीत प्रीत ए सहु को कहइ, प्रीति प्रीति में फर ।
अब हीरा बडा किया, तर घर में भया अंधेर ॥२॥

श्रीक्रम प्रिया न परखि जो, सिर कही देह।
नदी किनारे रूखड़उ, कदीक समूलो लह ॥३॥
कठालो कालो कठण, ऊँधी देखी वाट।
समयसुन्दर कहइ गुण विना, ते सु करे ते वाट ॥४॥

अन्तरंग शृंगार गीतम्

हे बहिनी महारउ सोयउ सिणगार हे, बहिनी नीकउ सिणगार;
हे बहिनी साचउ सिणगार, जिण आज्ञा सिर राखडी रे हां।
सिर समकउ मन भांलडी रे हां ॥१॥ हे बहिनी० ॥

कनइ उगनियां भ्रम बालडी रे हे ब०,
सरकर सामाई सुनी रालडी रे। २। हे०।
कनक कुण्डल गुरु देसना रे हां ब०,
दान पूजा पर वरणना रे। ३। हे०।
मास मोरइ हियइ हारडउ रे हां० ब०,
पदकडि पर उपमारडउ रे हां०। ४। हे०।
मुखि तबोल सत्य बोलवउ रे हां० ब०,
पडिकमणउ अंगि खोलयउ रे हां। ५। हे।
जिण प्रणाम मालि चदलउ रे हां० ब,
नकफूली लाम विंदलउ रे हां०। ६। हे०।
नवसर गुणनउ मीठो गोलनी रे हां ब०,
ध्यान अगूठी बहु मोलनी र हां०। ७। हे०।

फडि मेखल सोहइ खमा रे हां० म०,
गुपति वेणी दंडोपमा रे हां० ।८। हे०।
नयण ध्रमल दया देखणी रे हां० म०,
किरिया हाथे महदी रेखणी रे हां० ।९। हे०।
इरिया समिति पाये वाक्षिया रे हां० म०,
साधु वेयावच मांहे पुखलिया रे हां० ।१०। हे०।
देव गुरु गीत गलइ दुलडी रे हां० म०,
शील सुरगड ओढइ चूनडी रे हां० ।११ हे०।
जीव जतन पग नेउरी रे हां० म०,
समकित चीर पहिरी नीसरी रे हां० ।१२। हे०।
नर नारी मोही रया रे हां० म०,
समयसुन्दर गीत ए कया रे हां० ।१३। हे०।

—०—

फुटकर सवैया

दीक्षा से खयी पालीजइ, सुख साता न अउखा कांइ।
कर्म खपावी केवल लहियइ, मयाना गुणना रउखा कांइ॥
इणही वात आन नहीं छइ, जीव थायइ तू गउखा कोइ।
समयसुन्दर कहइ शोचा कीजइ, मन साइ वेठ मउखा कांइ॥१॥
खाधूं पीधूं लीधूं दीधूं, वसुधा मांहि वधारउ वान।
गुरु प्रसादे साता सुखपाम्यो, जिनचंद्रसूरि ते युग परधान॥

सकलचंद्र गुरु सानिध कीधी, सद्गासियइ न थयउ तन ज्यान।
समयसुंदर कहइ हिव तू रे मन, करि संतोष नइ धरि धम ध्यान ॥२॥
आधि व्याधि रोग को उपजइ, जीव अचाले जायइ कही।
इण आण कही सगुपूर्ती, जीवे नांखी मूकी कहीं॥
धर्म करउ ते पहिली करसो, छेहली वेला थास्यइ नहीं।
समयसुन्दर कहे हूँ तो मानरे, वे घड़ी ध्यान धरूं सही ॥३॥

नव-वाड़ शील गीतम्

राग—दुङ्गिया गिरि सिखर सोहइ

नव वाड़ि सती शील पालउ, पामउ जिम भव पार रे।
भगवंत विस्तर थयइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। नव ॥१॥
पशु पशंग नइ नारि जिहां रहइ, तिहां न रहइ ब्रह्मचारि रे।
पहली वाड़ ए तुमे पालउ, शील बड़उ संसार रे। नव.॥२॥
कथा सराग कथा कहे नहीं, स्त्री सु एकांत रे।
बीजी वाड़ ए एम बोली, मानइ लोक महांत रे। नव ॥३॥
चपरि जिण बइसखे बइसे, बे घड़ी न बइसे तेथ रे।
तीजी वाड़ि ए कही तीर्थंकरे, भाखा मोटी एथ रे। नव.॥४॥
स्त्री अंग उपांग सुन्दर, देखत नहीं धरि राग रे।
चउथी वाड़ि ए चतुर पालउ, पामइ जस सोभाग रे। नव.॥५॥
कपडी नइ अंतरइ पुरुष स्त्री, रमइ स्नेह रंगि रे।
पंचमी वाडि ए तुम्हे पालउ, टालउ तेह प्रसंगि रे। नव.॥६॥

परिग्रह प्रथम नइ मोग भोगव्या, समारइ नइ वेद रे।
छठी बाड़ ए छइ मली परि, प्रसनइ पालिस्यइ जेह रे। नव।७।
पूरव क्रीड़ित पी सु, जिमइ नहीं प्रकारि रे।
सातमी बाड़ि ए प्रणु सखरी, पडि विगय पी विकार रे। नव।८।
बत्तीस अट्ठावीस कवलिया, नारी नर नउ आहार रे।
आठमी बाड़ ए कही उत्तम, अधिको न ल्याइ निरधार रे। नव।९।
सरीर नी शोभा करइ नहीं, न करइ उद्भट वेस रे।
नवमी बाड़ ए नित्य पालउ, सुयण देश प्रदश रे। नव।१०।
कल्पवृक्ष ए शील कहियइ, रोप्यउ श्री जिनराज रे।
बाड़ रचा नवी भाखी, सेवज्यो सुखकाज रे। नव।११।
पानड़ा प्रत्यक्ष प्रभुता, फूलरा सुख फल रे।
मुक्ति ना फल घणा मीठा, आपइ ए अमूल रे। नव।१२।
सकल सचर मास आसू, नगर अहमदाबाद रे।
समयसुन्दर वदइ वाणी, सकलचंद प्रसाद रे। नव।१३।

बारह भावना गीतम्

ढाल—वुंगिया गिरि सिखर सोहइ

भावना मन बार भावउ, त्रटइ करम नी कोड़ि रे।
तप संजम तउ छइ भला, पण नहीं भावना नी जोड़ि रे। भा। १।
पहली भावना एम भावउ, अनित्य आयुर दाय रे।
तन धन यौवन कुटुम्ब सहु ते, पण मरि ले रु पाप रे। भा। २।

बीजी भावना एम भावउ, जीव तु शरणउ न कोइ रे।
मात पिता प्रिय कुटुम्ब छइ घणा, राखणहार न कोइ रे। भा.। ३।
तीजी भावना एम भावउ, चउगति रूप संसार रे।
धर्म विना जीव भम्यउ भमस्यइ, वलि अनंती वार रे। भा.। ४।
चौथी भावना एम भावउ, जीव छइ तु अनाथ रे।
एकलउ आव्यउ एकलउ जाइसि, नहिं को आवइ साथ रे। भा। ५।
पंचमी भावना एम भावउ, जीव शरउ जुदी काय रे।
जीव न जाणइ केय चालइ, काय कलेवर थाय रे। भा.। ६।
छट्ठी भावना एम भावउ, अशुचि अपवित्र देह रे।
काया मूत्र मल रुधिर कोथलउ, नासउ तेह सु नेह रे। भा। ७।
सातमी भावना एम भावउ, आश्रव रूप अपाय रे।
आतमा सरोवर आपणउ जिम, पाप पाणी न भराय रे। भा। ८।
आठमी भावना एम भावउ, संवर सुधारम रे।
समिति गुपति सहु मला छइ, जीव तु करिजे अदम रे। भा। ६।
नवमी भावना एम भावउ, निर्जरा तप सार रे।
बार छइ बाह्य अन छइ अभ्यंतर, पहुँचावइ भव पार रे। भा.।१०।
दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मधान रे।
जिम त्रिलोकथउ त्रिलोकवर्ती वर्ग, सरीर नउ संस्थान रे। भा।११।
इग्यारमी भावना एम भावउ, बोधि बीज दुलम्भ रे।
इण विन जीव को मोक्ष न जाइ, ए परम नउ उड्ड म रे। भा. १२।
बारमी भावना एम भावउ, अरिहंत वीतराग देव रे।

चरम ना ए खरा आराधक, नाम जपउ नित्यमेव रे । मा ।१३।
भावना भावतइ चक्री भरतइ, पाम्यउ केवल ज्ञान रे ।
इम चौसा पम्हि जीव अनता, धरता निर्मल ध्यान रे । मा ।१४।
भावना ए मली श्रीची, मइ सउ म्हारइ निमित्त रे ।
समयसुन्दर कहइ सहु भणउ जिम, पामइ जीव पवित्त रे । मा ।१५।

देव गति प्राप्ति गीतम्

बारे भेद तप तपइ गति पामइ जी,
संजम सतर प्रकार देवगति पामइ जी ।
साते खेत्रे वित्त वावरइ गति पामइ जी,
पाप्रइ पंचाचार देव गति पामइ जी ।।१।।
गति पामइ जी पुण्य करइ ते जीव,
देव गति पामइ जी ।। आंकणी ।।
प्रतिदिन पडिकमणउ करइ गति पामइ जी,
सामायिक पर्कंत देव गति पामइ जी ।
आहार विहरावइ सूमतउ गति पामइ जी,
सांभलइ सूत्र सिद्धांत देवगति पामइ जी ।।२।।
भद्रक जीव गुण भला गति पामइ जी,
जीवदया प्रति पाल देवगति पामइ जी ।
सदगुरु नी सेवा करइ गति पामइ जी,
देव पूजइ त्रिहु काल देवगति पामइ जी ।।३।।

अवसर नइ आराधना गति पामइ जी,
आलउ नइ पचखाण देवगति पामइ जी।
घर्म समकित सरदहइ गति पामइ जी,
अरिहंत देव प्रमाण देवगति पामइ जी ॥४॥
पंच महाव्रत जे धरइ गति पामइ जी,
श्रावक ना व्रत बार देवगति पामइ जी।
ध्यान भलु हियडइ धरइ गति पामइ जी,
पालइ शील उदार देवगति पामइ जी ॥५॥
पुण्य करइ जे परवडा गति पामइ जी,
आणी अधिक उल्लास देवगति पामइ जी।
समयसुन्दर पाठक भणइ गति पामइ जी,
पामइ लील विलास देवगति पामइ जी ॥६॥

नरक गति प्राप्ति गीतम्

ढाल—सीखि मइ सीखि नइ चेउरणा—पहनी

जीव तणी हिंसा करइ, बोलइ मिरपावाद ।
प्राणसमा परधन हरइ, सेवइ पंच प्रमाद ॥ १ ॥
नरक मायइ ते जीवडउ, पामइ दुख अनंत ।
छेदन भेदन ते सहइ, मालइ श्री भगवंत ॥ न०॥ २ ॥
परदारा सु पापियउ, भोगवइ काम भोग ।
विषयारस लुब्धउ थकउ, न बीहइ पर लोग ॥ न०॥ ३ ॥

मदिरा मांस माखण मखइ, बहु आरम्भ निवास।
पार नहीं परिग्रह तणउ, इच्छा खेम आगास ॥ न०॥ ४ ॥
देव द्रव्य गुरु द्रव्य वलि, साधारण द्रव्य खाय।
दीन हीन निर्धन थकउ, दुखियउ ते थाय ॥ न०॥ ५ ॥
साघ अनइ वलि साधवी, धरमी नर नार।
तेह तणी निंदा करइ, न गिणइ उपगार ॥ न०॥ ६ ॥
क्रूरम क्रूर प्रकृति करइ, परवचन द्रोह।
कूड़ कपट नित केलवइ, माया नइ मोह ॥ न०॥ ७ ॥
आल पपाल मुखइ मखइ, हियइ बज्र कठोर।
पसमसतउ पंथइ फिरइ, करइ पाप अघोर ॥ न०॥ ८ ॥
जोयउ चक्रवर्ती आठमउ, समूम नउ जीव।
सातमियइ नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव ॥ न०॥ ६ ॥
पाप तणा फल पाइया, आपइ अति दुख।
समयसुन्दर कहइ ध्रम करउ, जिम पामउ सुख॥ न०॥१०॥

व्रत पच्चक्खाण गीतम्

राग—गौड़ी/मल्हार

पूरा तं पिय कहियइ वाल,
व्रत विना जे गमावइ काल।
बीमइ पोहर वि पोहर प्रमाद,
पण न करइ नोकारसी पच्चखाण ॥ पू० ॥१॥

पाणी न पीयइ राते इकि वार,
पत्ता म करइ रात्रे चउविहार ।। पू० ।।२।।
नीलवण राते नहीं दस क वार,
पिता मायइ पाप भार अढार ।। पू० ।।३।।
नवरा रहइ न करइ को काम,
पत्ता न लियइ परमेसर नु नाम ।। पू० ।।४।।
गांठ रुपइया ग्रम के पार,
पिण न करइ सु स पचास हजार ।। पू० ।।५।।
चउपद मांहि परि झाली नहीं,
हाथी नु स स न सके ग्रही ।। पू० ।।६।।
विनय विवेक ने जाण मरम,
श्रावक होइ नइ न करे धरम ।। पू० ।।७।।
पोषध करइ ने दिवसे पर्व,
ते धर्म फल पोषह नो सुवै ।। पू० ।।८।।
क्रिया न करइ कहावइ साध,
नाम रतन दाम न लहइ लाध ।। पू० ।।९।।
मनुष्य जन्म नवि हारो आल,
तमे पाणी पहली बांधो पाल ।।पू०।।१०।।
म करइ मत आलसी पचखाण,
समयसुन्दर कहइ ते चतुर सुजाण ।।पू०।।११।।

— —

सामायिक गीतम्

सामायिक मन शुद्धे करउ, निंदा विकथा मद परिहरउ ।
पढउ गुणउ वांचउ उपगरउ, जिम भवसागर लीला तरउ ॥१॥
दिवस प्रते कोई दियइ सुजाण, सोनारी कोडी लाख प्रमाण ।
तेहनउ पुण्य हुवइ जेतलउ, सामायक कीधे तेतलउ ॥२॥
काम काज घर ना चिंतवइ, निंदा कपट करी खीजवइ ।
आर्त रौद्र ध्यान मन धरइ, ते सामायिक निष्फल करइ ॥३॥
आप परायउ सरखउ गिणइ, साधु थोड़ु गमतु भणइ।
कंचन पत्थर समभव धरइ, ते सामायक सघ्ँ करइ ॥४॥
चदवर्तंसक राजा जेम, सामायक व्रत पाल्यु तेम ।
कहइ श्री समयसुन्दर सीस, सामायिक व्रत पालउ निशदीस ॥५॥

गुरु वदन गीतम्

हां मित्र म्हारा रे, पासउ उपासरइ बइयइ ।
संवेगी सदगुरु वांदी नइ, आपं कृतारथ थइयइ रे ॥१॥ हां ॥
श्री जिन वचन रसाल सुणीजइ, आपणि श्रावक थइयइ रे ।
समयसुन्दर कहइ भ्रम साचउ, हियइ मां सरदहियइ रे ॥२॥हां ॥

श्रावक बारह व्रत कुलकम्

श्रावक ना व्रत सुणजो बार, ससार मांहि एतउ सार ।
धुर थी समकित चखउ धरइ, पञ्चि मिथ्यात सघी परिहरइ। १ ।

बन्द्रिय प्रमुख जीव अ बहु, रूखी परि राखइ त सहु ।
जीव एकन्द्री जयणा सार, व्रत पहिला नउ एह विचार । २ ।
कन्यादिक बोलइ नहीं कूड़, त बोलइ तो जाणइ मूढ ।
साधु बोलइ ते भीकार, ए बीजा व्रत नउ आचार । ३ ।
अणदीधी चोरी नी आथि, हाथइ पथि भालइ नहीं हाथि ।
जूठउ बोलि न लीजइ जेह, तीजउ व्रत कहीजइ एह । ४ ।
पर स्त्री नउ कीजइ परिहार, नियत दिवस पोता नी नारि ।
रागदृष्टि राखीजइ साहि, चउथउ वरत धरउ चित मांहि । ५ ।
नव विध परिग्रह नउ परिमाण, यावज्जीव करइ हित आणि ।
आकास सरीखी इच्छा गमउ, पालउ ए अणुव्रत पांचमउ । ६ ।
आप बमइ सिहां थी दस दिसइ, करइ कोस गाउँ नियम वसइ ।
मन मान्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी भरगला । ७ ।
भोग भनइ उपभोगउ जेउ, आपणइ अंगइ लागइ जउ ।
वइ विगति वे लेवा तणी, सातमउ वरत कहउ जगधणी । ८ ।
आपणा अरथ विना उपदेस, पाप नउ दीजइ नहीं आदेश ।
पाडुया ध्यान तणउ परिहार, ए आठमा व्रत नउ अधिकार । ९ ।
आलावउ गुरु मुखि ऊचरइ, सावय जोग सहु परिहरइ ।
समता भावइ नि पाडी सीम, नवमउ सामायक व्रत नीम ।१ ।
सगला वरत तणउ सखेव, निरारंभ रहइ नितमेव ।
बां लगि भटकउ कोजइ कथा, दसमउ देसावगासिक वह ।११।

पापरवी पच्चक्खाण परव, वलि इग्यारस तिथि पण सर्व ।
सावद्य नउ ज कीधउ समउ, ए पोसउ व्रत इग्यारमउ ।१२।
पोसउ पारी नइ प्रहसमइ, व्रतियां नइ दीधउ ते जिमइ ।
गुरु ऊपरि आणी धमराग, ए बारमउ व्रत अतिथि समाग ।१३।
श्रेन्या श्रावक ना व्रत बार, मूल सूत्र सिद्धांत मझार ।
श्राणद नी परि पालउ एह, जिम पामउ भवसागर छेह ।१४।
मोसइ सइ नइयामी समइ, बीकानेर रह्या अनुक्रमइ ।
कीधउ बारां व्रत नउ कुलउ, समयसुन्दर कहइ नित सांभलउ ।१५।

श्रावक दिनकृत्य कुलकम्

श्रावक नी करणी सांभलउ, नित समकित पालउ निरमलउ ।
अरिहंत देव मनइ गुरु साध, भगवत भाख्यउ धरम अगाध । १ ।
जागइ पाछली रात विचार, निश्चल चित्त गुणइ नवकार ।
काल वेला पडिक्कमणउ करइ, पाप करम दूरि परिहरइ । २ ।
पच्चक्खाण करइ गुरु मुख पचखाण, जयणा सु पडिलेहण जाण ।
देव जुहारइ उदउ थाय, चैत्यवन्दन करइ चित्त लगाय । ३ ।
वलि गुरु वांदी सुणइ वखाण, सूत्र ना पूछइ अरथ सुजाण ।
व्रतियां नइ विहरावी जिमइ ते भव मांहि थोडउ भमइ । ४ ।
सांझइ वलि सामाइक लेइ, मन मान्यउ पचखाण करेइ ।
थापना ऊपर थिर मन ठवइ, सूधा आवश्यक सापवइ । ५ ।
अवसरइ सागारी उचरइ, ग्रतउ पारे सरणा करइ ।

राति दिवस इम रहथी रहइ, उठतउ पइसतउ अरिहंत कहइ। ६।
व्यवहार सुद्ध करइ व्यापार, वलि न्याइ श्रावक ना व्रत बार।
वलि संसारइ घटइइ नीम, मांगइ नहीं प सरइ तां सीम। ७।
निंदा परिण न करइ पारकी, ते करतउ थायइ नारकी।
सीख भली तउ यइ सुविचार, पछइ न मानइ तउ परिहार। ८।
मिथ्यात्व तउ मानइ नहीं मूल, वलि विरुपा न करइ पाहुल।
देव द्रव्य थी दूरि रहइ, नहि तरि नरक तणा दुख लहइ। ६।
साहमी नइ सतोषठ घणु, सगपण ते जे साहमी तणु।
भरखउ देतां न रहइ धर्म, मारखस नउ वोलइ नहीं मर्म।१।
अनंत अमख तजी आखडी, जीवदया पालइ अगि वड़ी।
वलि यइ साते ही उपधान, सुद्ध करइ किरिया सावधान।११।
गोती इरइ सरिखउ ग्रह वास, प्रमदा मधवा छांडइ पास।
सयम करिदि हुँ लेइसि सार, इसठ मनोरथ करइ अपार।१२।
करणी ए भावक जे करइ, ते भवसागर हेलां तरइ।
बीतराग ना एह वचन, नर नइ नारि करइ ते धन।१३।
परभाते पडिकमणउ करइ, धर्म बुद्धि हीयड़ मैं धरइ।
गुणइ इसउ ते सिव सुख लहइ, समयसुन्दर तउ साचउ कहइ।१४।

— —

शुद्ध श्रावक दुष्कर मिलन गीतम्

राग—आसाउरी सिंधुड़ड

ढाल—कइयइ मिलस्यइ मुनिवर एहवा—एहनी।

पाठांतर नव गीत आणियउ

कइयइ मिलस्यइ श्रावक एहवा,
सुखियस्यइ श्रावि थसाखो जी।
धरम गोष्ठी करवा करिस्यां,
वीतराग वचन प्रमाखो जी ॥ १ ॥ क. ॥

पुरि थी शुधूँ समकित जे धरइ,
मानइ नहिं य मिथ्यातो जी।
साहमी सु परवाइ पइसइ नहीं,
नहि राग द्वेष नी वातो जी ॥ २ ॥ क ॥

बारह व्रत सीखइ रूड़ी परि,
जां जीवइ तां सीमो जा।
छवइ मन किरिया नी खप करइ,
साचवइ चउदह नीमो जी ॥ ३ ॥ क. ॥

काल वेलागइ जे पडिकमणउ करइ,
सूत्र अरथ पाठ शुधो जी।
चार अधिकार गमा शिष्य सांभलइ,
गुरु वचने प्रतिबूधो जी ॥ ४ ॥ क ॥

व्यवहार (१) धम पणु पालइ सदा,
प्रथम चउउ गुण एहो जी।

रोग रहित पंचेन्द्री परगड़ा (२),
सोम प्रकृति (३) सुसनेहो जी ॥ ५ ॥ क. ॥
लोग प्रिय उत्तम आचार थी (४),
वचना रहित अक्रूरो (५) जी ।
पाप करम थी ते डरता रहइ (६),
कपट मकी रहइ दूरो (७) जी ॥ ६ ॥ क. ॥
श्रेष्ठ आप समी नइ पारका,
काम समारइ तेहो जी (८) ।
चोरी परदारादिक पाप थी,
करता लाजइ तेहो जी (६) ॥ ७ ॥ क. ॥
जीवदया पालइ जतना करइ (१०)
रहइ मध्यस्थ सुदक्षो जी (११) ।
सोमदृष्टि (१२) गुणरागी (१३) सतकथा,
(१४) मात पिता शुद्ध पक्षो जी ॥ ८ ॥ क. ॥
दीरघ दरसी (१५) मान्य विशेषता (१६),
उत्तम संगति एको जी (१७) ।
विनय करइ (१८) उपकार कियउ गिणइ (१६),
हित वच्छल सुविवेको जी (२०) ॥ ६ ॥ क. ॥
लब्ध लक्ष संगित अभ्यासना,
सत्य प्रबीण अपारो जी (२१) ।
एकवीस गुण श्रावक ना य कह्या,
सूत्र सिद्धांत मझारो जी ॥१०॥ क. ॥

निंदक थायइ निश्चइ नारकी,
,लोक कहइ चंडालो जी ।
श्रावक न करइ निंदा केहनी,
थइ नहीं कडुउ आलो जी ॥११॥ क. ॥
साध तथा फल छिद्र जोयइ नहीं,
भाखइ भगवान माखो जी ।
अम्मा पिउ सरिखा श्रावक कह्या,
ठाणांग सूत्र नी साखो जी ॥१२॥ क. ॥
विध विहराव्या आप जिमइ नहीं,
दाखीअइ दान खरो जी ।
आहार पाणी विहरावइ सूझतउ,
वस्त्र पात्र भरपूरो जी ॥१३॥ क. ॥
एक टंक जिमइ एकासणइ,
सचित सघउ परिहारो जी ।
चारित्र लेशा उपरि तप करइ,
पालइ सील उदारो जी ॥१४॥ क ॥
न्यायोपार्जित वित्तइ नीपनउ,
श्रावक थइ शु आहारो जी ।
तउ भम्इ थी सब संजम पलइ,
आहार सिसउ उद्गारो जी ॥१५॥ क. ॥
उत्तम श्रावक नी संगति करी,
साध भइ पणि गुण धारो जी ।

फूल अमूलिक संग थकी,
　　तिम तेल सुगंध कहायो जी ॥१६॥ क. ॥
ए नहिं साघ मिथल थीमइ घणु,
　　मूँड मिल्या पाखंडा जी ।
पहुवी संघ मनि आणइ नहीं,
　　साधु छड़ कीजइ खंडो जी ॥१७॥ क. ॥
वरतम जोगइ साव इहां अछइ,
　　दुपसह सीम महंतो जी ।
महावीर नउ सासन भरतस्यइ,
　　पहुवी वास करतो जी ॥१८॥ क. ॥
तुगिया नगरी श्रावक सारिखा,
　　आणन्द नउ कामदेवो जी ।
धरा सलक नइ सुदरसण सारिखा,
　　करसी करइ नित सेवो जी ॥१९॥ क. ॥
दूसम काल संजम दोहिलउ,
　　दोहिलउ श्रावक धर्मो जी ।
गुण लीजइ नइ अवगुण गाडियइ,
　　जिन धर्म नउ ए मर्मो जी ॥२०॥ क. ॥
तप जप किरिया नी जे खप करइ,
　　इस श्रावक कुल सावो जी ।
समयसुन्दर कहइ आराधक तिके,
　　सफल जनम तिण लाधो जी ॥२१॥ क. ॥

अंतरंग विचार गीतम्

राग—भैरव

ऊठ किम तिया परि हुयइ सवीचार,
    को कहनी मानइ नहीं कार ॥१॥ क० ॥
पांच मन हुडम्ब मिल्यउ परिवार,
    पूछइ मति मूझवउ अविचार ॥२॥ क० ॥
आप संपा हुयइ एक सगार,
    सउ जीव पामइ सुख अपार ॥३॥ क० ॥
समयसुन्दर कहइ स नर नारि,
    अंतरंग कह एह विचार ॥४॥ क० ॥

ऋषि महत्त्व गीतम्

गाठि लखण हुकम्म करइ, परमाति मान्द पातसाह बड़ा,
मध्याह्न समइ हाथि ठूठइ लीयइ, भीख मांगइ फकीर ज्युं बारि खड़ा।
न मर्द न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुंडित कम फड़ा,
अमरिज भया मोहि देख नहीं पड़, इम दुकाण देखउ रिखड़ा।।१।।
मध्याह्न समइ गम मिला ममइ, लोक भूपाम यान धइ धामइ खड़ा।
धम आप तरइ तारइ अउरया कु, नमइ लोक खलक बड़ा लहुड़ा।
दुख पाप आयइ सुख देखत ही, एहु सूत दुकाण भला रिखड़ा।।२।।

पर प्रशंसा गीतम्

हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जेहनउ अरिहंत नाम ।
जिण ए परम प्रकाशियउ, दीधउ उत्तम ठाम ॥ हू०॥१॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे भी साधु निर्ग्रंथ ।
आप तरइ अउर तारवइ, साधइ सुगति नउ पंथ ॥ हू०॥२॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे भी सूत्र सिद्धांत ।
जिण थी जिन धर्म पामियइ, दुष्पसह सूरि पर्यंत ॥ हूँ०॥३॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे गुरु गुरुवी गुणवंत ।
जिण मुझ ज्ञान लोचन दिया, ए उपगार महंत ॥ हूँ०॥४॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे नर गुपत करउ दान ।
पर उपगार करइ सदा, पणि न करइ अभिमान ॥ हू०॥५॥
हु बलिहारी जाऊँ तेहनी, निंदा न करइ जेह ।
देखी दाख धरइ नहीं, हूँ गुण ल्यूँ तसु एह ॥ हू०॥६॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, धरम करइ जे संसार ।
समयसुन्दर कहइ हूँ कहुं, धन धन ते नर नार । हूँ ॥७॥

साधु गुण गीतम्

तिण साधु के जाऊँ बलिहारे ।
अमम अकिंचन कुखी संबल, पंच महाव्रत जे धारे । ति ।१।
शुद्ध सम्यक्त्व नइ संवेगी, पालइ सदा पंचाचार ।
चारित्र ऊपर खप करइ बहु, द्रव्य क्षेत्र काल अनुसार । ति०।२।

गच्छ वास छोडइ नहीं गुणवंत, मकुश्या कुशील पणम भारइ।
समयसुंदर कहइ मो गुरु साचउ, आप तरइ अवरां तारइ। ति०।३।

साधु गुण गीतम्

राग—आसावरी

धन्य साधु संजम धरइ सूधउ, कठिन कृपम इस फल रे।
वास जीव छजीव निकायना, पीहर परम दयाल रे। ध।१।
साधु सहै बावीस परिसह, आहार ल्यइ दोष टालि रे।
ध्यान एक निरंजन ध्याइ, वइरागे मन वालि रे। ध।२।
सुद्ध प्ररूपक नइ संवेगी, जिन आज्ञा प्रतिपाल र।
समयसुंदर कहइ म्हारी वन्दना, वेदनइ त्रिकाल रे। ध।३।

हित शिक्षा गीतम्

राग—सोरठ

पुण्य न मूंकइ विनय न चूकउ, रीस न करिज्यो कोई।
देव गुरु नउ विनय करीजइ, आने सुणउ भलाई रे।१।
शिक्षा पड़ी दोइ मन राखउ ॥ आंकणी ॥
पूत न किम बाल कहीजइ, विरत नहीं जाणउ कोइ।
एक रुसइयउ राखउ बांध्यउ, दोड़यउ करिय दगाइ र। जी।२।
मांकड़ ज्युं जीव हालइ डोलइ, थांभ्यउ किड़ी नी खाइ।
नाग ऊपरि आपस बइठउ, आपथ आपणइ छदइ र। सी।३।
तेख बइठउ सोमे पईठउ, चार पहुर निश जागइ।
दोष पड़ी गामाइरू मेला, चोरउ विग न रागइ र। जी।४।

कीरति कमल उपगरण मांड्यउ, लाख लोक भरि लूंट्यउ ।
एक फूँदीफउ फलफल बांधइ, धरम तणी गांठ खोलइ रे । वी.।५।
रात्रि जागउ देवसि जागउ, ऊपरि भारख सहिवउ ।
दोय घडी नउ मूरतउ रहिवउ, सोइ दिन घडि जागउ रे । वी ।६।
भरि सामही परमसाला हुंता, वीस त्रिमासम पावइ ।
दोय   । वी.।७।
पंच अंगुलिया मेल म पहिरउ, ऊँचउ पहिरइ वागउ ।
घर परिणी नम पाट पडस्यउ, निरचइ वाली नागउ । वी ।८।
साथी अक्षर मस्तक मांडी, वदन कमल मुख दीपइउ ।
मारग पालइ सघर पालउ, पान फल मूल कदो । वी ।९।
ना उतरिपइ छठ पलेगो, सु सीचास्यउ वंदउ ।
समयसुंदर कहइ सुणउ रे भाई, धरम करउ वहनाइ वंदो । वी.।१०।

श्री संघ गुण गीतम्

राग—धन्याश्री

संघ गिरुयउ रे, श्री संघ गुणे करि गिरुयउ रे ।
मात पिता सरिखउ हित वछल[1], किमही कदेई नहीं विरुयउ रे ।श्री १।
चंद्र सरज पद्म नगर समुद्र चक्र, मेरु नी उपमा धरयउ रे ।
तीर्थंकर देवे पणि मान्यउ, दुखिया नउ दुख हरयउ रे ।श्री २।
संघ मिल्यउ कराइ[2] काम उलट पट, कनक पीतल रूप वरयउ रे ।
समयसुंदर कहइ श्रीसंघ सोहइ, वाडी मांहे जिम मरुयउ रे ।श्री ३।

---

१ वत्सल । २ मिलवाइ ते करइ काम ।

सिद्धान्त श्रद्धा सज्झाय

आज आधार छइ ग्रन्थ नउ, आरइ पांचमइ एह ।
सुधरम सामी संइ मुखइ, कह्यउ जंबू नइ तेह ॥ आ०॥१॥
तीर्थंकर दिवसा नहीं, नहीं केवली कोई ।
अतिशयवंत इहां नहीं, संशय भांजइ सोई ॥ आ०॥२॥
भरत मइ जीव भारी कर्मा, मत खांचे गमार ।
पणि ग्रन्थ में कह्यउ ते खरउ, ए छइ मोटी कार ॥ आ०॥३॥
आज सिद्धान्त न हुँत तउ, किम लोक करत ।
पणि वीतराग ना वचन थी, धरम बुद्धि धरत ॥ आ०॥४॥
इक्वीस सहस वरस इहां, जिन धर्म जयवंत ।
ग्रन्थ तणइ बलि चालस्यां, भास्यौ भगवंत ॥ आ०॥५॥
श्री महावीर प्ररूपियउ, धरम नउ मरम एह ।
समयसुन्दर कहइ सहु, कह्यउ तीर्थंकर तेह ॥ आ०॥६॥

अध्यात्म सज्झाय

राग—आसाउरी

इण योगी ने आसन दृढ कीना, पवन बंधि परमब्रह्म सु लीना ।इ ।१।
नासा अग्र नयन दोऊ दीना, मीतरि हंस ज्युं इव मन मीना ।इ ।२।
अपनि पवन दसमें द्वार आण्या, प्राणायाम करम दह पिछाण्या ।इ ।३।
बार अंगुल भस पवने परसाण्या, पूरक ध्यान पवन सधाण्या ।इ ।४।

नाभि कमल थी पवन निसार्या, रचक ध्यान चपल मन मार्या ।इ।५।
घट भीतरि कियां घन आकारा, नाभि पवन कुंभक आकारा ।इ।६।
पवन थीस्या थिर मन भी थीन्या, सो योगना मेरा सच्चा प्रीता ।इ।७।
ज्ञान की बात लहेगा ज्ञानी, समयसुन्दर कहइ आतम ध्यानी ।इ।८।

—— o ——

श्रावक मनोरथ गीतम्

श्री जिन शासन हो मोरड़ए सहु, जीवदया जिन धर्म।
प्रथ्वी प्रमुख हो जीव कह्या शुद्ध, भक्ति कहउ करता कर्म। श्री।१।
देव कहीजइ अरिहंत देव ना, गुरु तउ सघउ साधु ।
धर्म कहीजइ केवलि भाखियउ, सघउ समकित लाभ । श्री ।२।
पंच महाव्रत हो पालइ जे सदा, ल्यइ सूझतउ आहार ।
आप तरइ औरां नइ तारवइ, एहवा जिहां अणगार । श्री.।३।
समकित धारी हो श्रावक जिहां कह्या, मानइ नहीं मिथ्यात।
व्यवहार सुद्ध हो करइ आजिविका, न करइ पर नी घात। श्री ।४।
अभक्ष्य न खावइ हो रातडी वडउ, अनंतकाय नउ सूंस ।
सांझ सवारइ हो पडिकमणउ करइ, भक्ति करइ संयम हूंस। श्री ।५।
पारसनाथ हो इम प्ररूपियउ, जिन शासन जयकार ।
मन मइ होज्यो हो समयसुन्दर कहइ, इहां म्हारइ अवतार। श्री ।६।

मनोरथ गीतम्

ते दिन क्यार आवसइ श्री सिद्धाचल जासूँ।
ऋषभ जिर्णद जुहारि नइ सूरज कुण्ड मई न्हासूँ ॥ ते०॥१॥

समवसरण मां बइसी नइ, जिनवर नी वाणी।
सांभलसु साचे मनइ परमारथ आणी ॥ ते०॥२॥

समकित शुद्ध व्रत धरी, सद्गुरु नइ वंदी।
पाप सकल आलोय नइ, निज आतम निंदी ॥ ते०॥३॥

पडिकमणउ व टंक नउ, करसु मन कोडे।
विषय कषाय निवार नइ, तप करसु होडे ॥ ते०॥४॥

व्हाला नइ वयरी विचइ, नवि करवउ वैरो।
पर ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ चरो ॥ ते०॥५॥

धर्म स्थानक धन वावरी, छ काय नी हवे।
पंच महाव्रत लेय नइ, पालसु मन प्रीत ॥ ते०॥६॥

काया नी माया मेल्हि नइ, जिम परिसह सहसु।
सुख दुख सगला विसार नइ, समभावइ रहसु ॥ ते०॥७॥

अरिहंत देव ने ओलखी, गुण तेहना गासु।
समयसुन्दर इम वीनवइ, क्यारे निरमल थासु ॥ ते०॥८॥

मनोरथ गीतम्

राग—आसावरी

धन धन ते दिन मुझ कदि होसइ, हुँ पालिस संजम सूधोजी।
पूरव ऋषि पंथ चालीसु, गुरु वचने प्रति बूझो जी। ध।१।
अनियत भिक्षा गोचरी, रण वन काउसग लस्यु जी।
समभाव शत्रु नइ मित्र सु, संवेग शुद्ध धरस्यु जी। ध।२।
संसार नो संकट थकी, छूटिस जिन अक्खर जी।
धन्य समयसुन्दर ते घड़ी, पामिस भव नउ पार जी। ध।३।

मनोरथ गीतम्

ढाल—नगर सुदरसन अति भलउ

अरिहंत देहरइ आविनइ, प्रतिमा नइ हजूर।
चारित फेरी ऊचरूं, आणी आणंद पूर ॥१॥
ते दिन मुझ नइ कदि हुस्यइ, थाऊँ साधु निग्रंथ।
चारित फेरी ऊचरूँ*, पालु साधु नउ पंथ ॥२॥ ते०॥
आगम पइ आऊँ विहरवा, सूझतउ लूं आहार।
ऊँच नीच कुल गोचरी, लेऊँ नगर मझार ॥३॥ ते ॥
माया ममता परिहरी, करूं उग्र विहार।
उपगरण कांधे आपणइ, न लूं नफर कि भार ॥४॥ ते०॥
आपउ निंदू आपणउ, न करूँ परतांति।
चारित ऊपर खप करूँ, दिन नइ वलि राति ॥५॥ ते०॥

* परिगहउ सगलउ परिहरूँ।

लालच लोभ करूँ नहीं, छोड़ूँ लोभ नउ स्वाद।
सूत्र सिद्धान्त भणूँ गणूँ, न करूँ परमाद ॥६॥ ते०॥
दुषम काल दोहिलउ, अधिकउ पंथ एह।
पर्व माव †नि जो पलई' तो पण मलउ तेह ॥७॥ ते०॥
एह मनोरथ माहरउ, फलीजो करतार।
समयसुन्दर कहई जिम करू, हूँ सफलउ अवतार ॥८॥ ते०॥

चार मगल गीतम्

अम्हारइ हे आज वधामणा,
महेली हे गावउ मंगल च्यार। अम्हा०।
पहिलउ हे मगल माहरइ,
सहली हे गावउ अरिहत देव। अम्हा०।
तिर्थंकर त्रिभुवन तिलो,
कर जोडी हे करि सुरनर सेव। अम्हा०।१।
बीजउ ह मगल माहरइ,
सहली ह गावउ सिद्ध सुहाग। अम्हा०।
सिद्ध शिला ऊपर रह्या,
ओपम नइ हे चउबीसमइ भाग। अम्हा०।२।
तीजउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ साधु निग्र थ। अम्हा०।

---

† मास पास्त्र पिम तव पक्ष ।

ज्ञान दरशन चारित करी,
  स साधइ ए सुगति नउ पथ। प्रमदा०।३।
चउथउ ए मंगल माहरइ,
  सहुली ए गावउ श्री जिन धर्म। प्रमदा०।
भगवंत केवलि भाखियउ,
  भवियणा ना ए मांजइ मन ना मर्म। प्रमदा०।४।
च्यारे मगल चिरजयो,
  सहेली हे करइ कोड कल्याण। प्रमदा०।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ,
  पणि गायइ हे ते वो चतुर सुजाण। प्रमदा०।५।

चार मगल गीतम्

ढाल—महावीर की देशणा ए, एहनी

श्री संघ नइ मंगल करउ ए, मगल चार परम के।
अरिहंत सिद्ध सुसाध श्री ए, केवलि भाषित धरम के। श्री०।१।
पहिलु मंगल मनि धरउ ए, विहरता अरिहंत के।
भविक जीव प्रतिबोधता ए, केवल ज्ञान अनंत क। श्री०।२।
बीजउ मंगल मनि धरउ ए, सिद्ध सकल सुविचार के।
आठ करम नउ क्षय करी ए, पहुँता मुगति मझारि के। श्री ।३।
त्रीजु मगल मन धरउ ए, सघा साध निग्रंथ क।
निर्मल ज्ञान क्रिया करी ए, साधई सुगति नउ पंथ के। श्री० ४।
चउथु मंगल मन धरउ ए, श्री जिनधम उदार के।
चिंतामणि सुरतरु समउ ए, समयसुन्दर सुखकार के। श्री०।५।

चार शरणा गीतम्

राग—आसाउरी सिंधुड़ड

मुझ नइ चार शरणा हो जो, अरिहंत सिद्ध सुसाधो जी।
केवली धर्म प्रकासियउ, रतन अमोलिक लाधो जी। मु०।१।
चिहुं गति तणा दुख छेदिवा, समरथ सरणा एहो जी।
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेम किया सरणा तेहो जी। मु०।२।
संसार मांहे जीवनु, तो सीम सरणा चारो जी।
गणि समयसुंदर इम कहइ, कल्याण मंगलकारो जी। मु०।३।

अठारह पाप स्थानक परिहार गीतम्

राग—आसाउरी

पाप अठारह जीव परिहरउ, अरिहंत सिद्ध सुसाखो जी।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवंत इणि परि भाखो जी। पा०।१।
आश्रव कषाय दुबंधना, वलि कलह अभ्याख्यानो जी।
रतिअरति पैशुन निंदा, माया मोस मिथ्या ज्ञानो जी। पा०।२।
मन वच काये किया सहु[१], मिच्छामि दुक्कड तेहो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिन धरम मरमो एहो जी। पा०।३।

चौरासी लक्ष जीव योनि क्षामणा गीतम्

राग—आसाउरी

लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेको जी।
मिच्छामि दुक्कड दीजियइ, त्रिकरण शुद्ध प्रत्येको जी। ल०।१।

१ इण भव परभव जे किया।

सात लाख भू दुग तेउ वाउ, दस चउद वन ना भेदो जी।
षट विगल सुर तिरि नारकी, चार चार चउद नर वेदो जी। स ।२।
मुझ वयर नहीं काई केह सुं, सहु सु कर्इ मैत्री भावो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, पामिय पुण्य प्रभावो जी। स०।३।

अंत समये जीव निर्जरा गीतम्

राग—आसावरी

इण अवसर करि रे जीव सरखा,
ध्यान एक भगवंत का धरणा ॥ इ० ॥१॥
माया जाल जंजाल न परखा,
अरिहंत अरिहंत नाम समरणा ॥ इ० ॥२॥
चलि दोहिला नर भव अवसरणा,
समकित बिन संसार मइ फिरणा ॥ इ० ॥३॥
माल मलूक महल मन हरणा,
साथइ नहीं आवइ इक तरणा ॥ इ० ॥४॥
सात खेत्रे वित्त वावरणा,
अथिर आमि एता उगरणा ॥ इ० ॥५॥
छूटी नाडि न को कम सरणा,
करि सकइ तउ करि पहिली सवरणा ॥ इ० ॥६॥
मरण तणा भव आवे करणा,
ए मानइ देखि लघु इह तरणा ॥ इ० ॥७॥

भगमग अपराइ मुनि उच्चरणा,
    ग्रतीन माइस आदरणा ॥ ए० ॥८॥
पार अठार दूर परिहरणा,
    मइ गु मिच्छामि दुक्कड करणा ॥ ए० ॥९॥
समयसुन्दर एहइ पंभित मरणा,
    ससार समुद्र थी पार उतरणा ॥ ए०॥१०॥

आहार ४७ दूषण सज्झाय

राग—चउपई नी

साध निमित्त छजीव निकाय,
    हणतां आधा करमी (१) थाय।
एहवउ न्यइ नहीं जे आहार
    स कहियइ ग्रधा असणगार । १ ।
लाड गुरण भगनि सपानि,
    आपइ उद्देसक (२) प्रस्तावि । ए० । २ ।
आधा करमी नउ कण मिलइ,
    स अनपूति दूषण (३) अटकलइ । ए० । ३ ।
साध असाध निमित्त रंधाय,
    एकठउ अन स मिश्र (४) कहाय । ए० । ४ ।
साध आया विहरविनि एह,
    राखी मूंकइ थापना (५) तेह । ए० । ५ ।

काज किरियावर पहिमउ पकई,
　　सति निमित्त करइ प्राहुण (६) मकई। ए०। ६।
असुपातउ करइ गउख उघाडि,
　　यई अनापातर दोष (७) दिखाडि। ए०। ७।
सघी थी आणी यई वस्त,
　　क्रीत दोष (८) कहउ अप्रशस्त। ए०। ८।
ऊधी नु आणी यई जइ,
　　पामिष दोष (९) कहीजइ तइ। ए०। ९।
वमत पालटी नइ घइ कोइ,
　　तउ परिवर्त्तित (१०) दूषण होइ। ए०।१०।
घर थी उपासरइ आणी देइ,
　　ते अभ्याहृत (११) दोष करइ। ए०।११।
दाघउ ठामउ घामी काम,
　　आपइ ते दूषण उद्भिन्न (१२)। ए०।१२।
ऊँचामी नीचु उतारि,
　　घइ मालाहृत (१३) दोष विचारि। ए०।१३।
कहना हाथ थी खूटी दिख,
　　असमाद्दिक (१४) त दोष कहिजइ। ए०।१४।
घणा सामि श्रीमइ एकइ,
　　एक आपइ तउ त अनिसृष्ट (१५)। ए०।१५।
आप्पस रवाहि अधिक अनकूर,
　　साप निमित्त ते अध्यवपूर (१६)। ए०।१६।

ए सोलह कह्या उदगम दोप,
गृहस्थ लगाड़इ रागि के रोस।
पछ ग्रमहउ विहरावइ जोइ,
ऐहनई नाम धनता होइ। ए०।१७।
मस्त हुलरावइ राखइ मली
धात्री (१७) दोप कहउ केवली। ए०।१८।
संदेसा कहइ नावइ सर्म्म,
मिण्ड ल्यइ ते दूती (१८) कर्म्म। ए०।१९।
जो तेप निमित्त प्रगु जइ नित,
ल्यइ आहार ते दोप निमित्त (१९)। ए०।२०।
जाति प्रकासी ल्यइ आहार,
आजीव (२०) दूपण ते निरधार। ए०।२१।
दाता नउ प्रीतउ जे कोइ,
तसु प्रससवचो मग (२१) होइ। ए०।२२।
वैद पणु करइ पिण्ड निमित्त,
दोप चिकित्सा (२२) आखउ चित्त। ए०।२३।
क्रोध (२३) मान (२४) माया (२५) नइ लोम (२६),
करी पिण्ड ल्यइ न रहइ सोम। ए०।२४।
अणदाता नउ पहिली पछइ,
सस्तव (२७) करतो दूपण अछइ। ए०।२५।
विद्या (२८) मंत्र (२९) प्रयु जी लेइ,
कमल केउ दोप कहेइ। ए०।२६।

वसीकरण (३०) नइ चूरण (३१) देइ,
अन पाणी मन वछित लेइ ।ए०।२७।
गरम पाडइ ते तठ मूल कर्म्म (३२),
अन पाणी ल्यइ महा अधर्म्म ।ए०।२८।
ए सोलह उपजाबल थती,
संयम नी खप नहीं खप रती ।
पणि ते आगलि थास्यइ दुखी,
टालइ दोप ते थायइ सुखी ।ए०।२६।
आधाकरमी संकित (३३) अइइ,
भत्त प्रमुख प्रखित (३४) लहइ ।ए०।३०।
सचित ऊपरि मूक्यु अम पाणा,
विहरइ ते निक्खित (३५) अजाण ।ए०।३१।
फास ऊपरि परपठ सचित,
ते पिपइ पिहित (३६) मूपक निच ।ए०।३२।
एक ठाम थी बीजइ ठामि,
पाल्पठ ल्यइ साहरिय (३७) सुनाम ।ए०।३३।
बालइइ अयोग्य नठ दृत,
दायक दूपण (३८) कयउ अजुत ।ए०।३४।
मचित अचित वे मेला कीया,
मिभ दोप (३६) लागइ ते लीयां ।ए०।३५।
फासू पूरु प्रणाम्यु नहीं,
अपरिणित (४०) दूपण जाणउ सही।ए०।३६।

मसादि क करि सरकषु मग्न,
निहरइ लित दोप (४१) धरमउ मग्न। ए०।३७
निहरतां थी कच्च भूमि नखाय,
व छर्दित दूपरा (४२) कहिवाय। ए०।३८।
दस एपणा ना दूपरा कह्या,
साघ लीए धपा सरदह्या।
सांघादिक मिहुँ नइ उपजइ,
दायक ग्राहक नइ ते अइ।३९।
खीर खंड घृत सजोयना (४३),
धन् करि नइ जीमइ जे एक मना।४०।
सघम नउ निरवाहय थाय,
तेह थी अधिक प्रमाण (४४) कहाय।४१।
सखर आहार वखाणइ भग्नु,
निम कउ दूपण अंगार (४५) तग्नु।४२।
कम खोडइ मुह उ आहार,
धूम दोप (४६) रुखउ अभिकार।४३।
वेपणा प्रमुख छ कारण विना,
लेतां दोप अकारण (४७) तणा।४४।
मांडलि ना ए दूपरा पंच,
यह तयाउ बोल्यउ पर खंच।
स्याद् तथउ जे करिस्यइ त्याग,
बहनइ मनि साधउ अपराग।४५।

उद्गम दोष ए सोलह कह्या,
अपवादन पणि सोलह ग्रह्या ।
दस एषणा ना कह्या केवली,
पांच ग्रहण मांडलि ना वली ।४६।
सगला मिलि सईंतालीस दोष
। जिन सासन माहें परिपोष ।
साधनइ जोइयइ शुध आहार,
श्रावक नइ साचउ व्यवहार ।४७।
मधवार सुरा मो मंस,
ए छांडत कह्या अप्रशंस ।
भद्रबाहु स्वामी नी किद्ध,
पिण्ड नियुक्ति मांहि प्रसिद्ध ।४८।
रूप वर्ण बल पुष्टि नइ काज,
आहार निषेध्यउ श्री जिनराजि ।
ज्ञान दर्शन चारित्र निमित्त,
देह नइ भाडउ द्यइ समचित्त ।४९।
तथा तरइ नइ तरिस्यइ तेह,
सम्यक् नी तप करिस्यइ जेह ।
तेहनइ वंदना करु त्रिकाल,
जे श्री जिन आज्ञा प्रतिपाल ।५०।
संवत सोल एकाणु समइ,
समयसुन्दर कीधी सहु नइ गमइ ।

श्री खंभायत नगर मझारि,
खारुयावाड़इ वसति अपार ।५१।
दीवाली दिन आणंद पूर,
श्री खरतर गच्छ पुण्य पडूर ।
मघ विजय शिष्य नइ आग्रहइ,
समयसुन्दर ए सझाय कहइ ।५२।

इति श्री आहार ४७ दोष सज्झाय।

हीयाली गीतम्

कहिज्यो पंडित एह हियाली, तुम्हे छउ चतुर विचारी ।
नारी एक त्रण अक्षर नांमे, दीठी नयर मझारी रे । क ।१।
मुख अनेक पण जीभ नहीं रे, नर नारी सु राचइ ।
चरण नहीं ते हाथे चालइ, नाटक पाखे नाचइ रे । क.।२।
अन्न खायइ पाणी नहीं पीवइ, तृप्ति न राति दिहाडइ ।
पर उपगार करइ पणि परतखि[1], अवगुण कोडि दिखाडइ । क.।३।
अवधि आठ दिवस नी आपा, हियइ विमासी जोज्यो ।
समयसुंदर कहइ समझी लेज्यो, पणि ते सरिखा मत होज्यो ।क.।४।

हीयाली गीतम्

पंखि एक वनि ऊपनउ आव्यउ नयर मझार ।
आंखडली अणियालडी वी हो, दवइ नहिय लगार ।१।

---

१ पारधिय

हरियाली रे चतुर नर हरियाली रे, सुंदर नर जी हो कहिज्यो हिय
विमासि

साखा पांच करम क्या जी हो, कहइ सहनइ सामासि । ह.।२
चोथा सदा चरतउ रहइ जी हो, चमन करइ आहार ।
रात्रि दिवस भमतउ रहइ जी हो, न पडइ नर घर बार । ह.।३
भूखउ पोखइ अति घणु जी हो, बोल्यु नवि समझाय ।
नारी सघातइ नेहलउ जी हो, विनु अपराध बंधाय । ह.।४
ते पखि पंखी मालडउ जी हो, प्रमदा पाल्यउ पास ।
समयसुन्दर कहइ ते सखी जी हो, नारी नउ म करिस्यउ विश्वास रे

हीयाली गीतम्

राग—मिश्र

एक नारी वन मांहि उपनी, आवी नयर मझारि ।
पातसही रूपइ अति रूयडी, चतुर लोक लेइ धारी रे ।१।
कहिज्यो अरथ हियाली केरउ, बहिलउ हियइ विमासी ।
विनयवंत गुणवंत तुम्हारी, नहिं तउ थास्यइ हांसी रे । कां ।क
काम सिंगारइ देह कमावइ, नयण विना अखियाली ।
सामठ नरस सदा सुख लोभइ, बहु पीवइ रूप टाली रे । क. ।२
बुद्धि नवि बोलइ मस्तकि डोलइ, वचन शुभाशुभ काम ।
साजण दूरसण पासि रमती, दीठी लील विलास रे । क. ।३
ए हीयाली हियइ विमासी, कहज्यो चतुर सुजाण ।
समयसुन्दर कहइ प्रेम तुम्हारउ, पीजइ घणु वखाण । क. ।४

२ बेसाथ

सांझी गीतम्

ढाल—गुरु श्री रे बधामणउ —पहनी

सांझि रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया रंगरोल रे।
संघ सहु को हरखिदउ वाठ दीधा नवल तबोल रे। सां।१।
गुण गाया अरिहंत ना, वलि साव तणा अधिकार रे।
गुणवतां मसतां गावतां, सांभलतां हरख अपार रे। सां।२।
घरि घरि रग बधामणा, कोइ घरि घरि मगलाचार रे।
घरि घरि आनन्द अति घणा, श्री जिन शासन जयकार रे। सां।३।
सांझी गीत सोहामणा, ए मई गाया एकवीस* १ रे।
समयसुंदर कहइ संघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे। सां।४।

रात्री जागो गीतम्

राग—धन्याश्री

गायउ गायउ री रात्री जगउ रगइ गायउ।
मन गमती मिलि सहिय समाणी मन गमतउ गवरास्यउ री। रा १।
देव अनइ गुरु ना गुण गाया, दोहग दूरि गमायउ।
सफल जनम समकित थयउ निरमल, मवियण के मन भायउ री। रा २
चतुर सुजाण सुणयउ इक चित्ते, मलउ मलउ भेद सुणायउ।
पुरुषवत भावक परिघल चित, तुरत तबोल दिवायउ री। रा ३।
गीत पचास अनोपम गाय, आणंद अगि न मायउ।
चतुर्विध संघ थयउ अति हर्षित, समयसुन्दर गुण पायउ री। रा ४।

---

* पंचवीसो रे अगवीसो रे।

(१) तृष्णाष्टकम्

अप्सरस्कविवादे त्वं मन्यमानं तु नाऽमनक् ।
मौरोक्ति कृतवान् सत्यां तद्धन्य जन्म ते तृष ॥१॥
साधुश्चक्षुर्म्यमेनुभूत—पास्यद्भिकृत तृषम् ।
पुन: पुनर्मलस्याशु कृशानां वनसाधिकम् ॥२॥
राज्यर्द्धि त्यक्तवान् सद्या निःस्पृहः कृतकृत्यदारात् ।
परं त्वां तृष नामो न ढासम्य भुवि ते महत ॥३॥
अहो ते तृष माहात्म्य विवादे पतित त्वयि ।
सत्याय मस्तके न्यस्त तत्पस मन्यत कश्चिः ॥४॥
कृत यथामृते मोज्ये ताम्बूले मधित तृषा ।
वस्त्रालङ्कृतिकरन्तु त्वं वरांगस्थिति तन्महत् ॥५॥
अहो त तृष सौभाग्य मर्द्दराम: सम ततः ।
मन्तरालिंग्यस स्त्रीभिर्यया सौभाग्यवान् नरः ॥६॥
तपशक्तिरहोऽर्म—तृषस्मान्न मन्त्रत ।
दुष्टस्फोटकभूतादि दोषा यांति यत क्षय ॥७॥
छाया सर्पोपरिस्थस्त्वं दंतरथं भुवि जीवनम् ।
गो-जम्ब-ममि-दुग्ध तद्रुपकारि महत् तृषा ॥८॥
विद्वद्गोष्टिविनोदेषु तृष्याऽष्टकमयोकरत् ।
मौविक्रमपुरे ग्याङ्गसि समयसुन्दर ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृत तृषाष्टकम् ।

परस्पर कुमोद्यापे शतचन्द्रनभस्तलम् ।
समस्यामिति सम्पूर्णां चक्रे समयसुन्दर ॥१०॥

इति समस्याष्टकम् ।

—। —

प्रस्यते राहुणा नित्यमेक एकाहि मस्त्रिय' ।
सृष्टमासाधदा भेष्ठ शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१४॥
होनाधिककलामेदाद्विविधो दृश्यते विधु' ।
चचीव सुमर्म तत्के शतचंद्रनभस्तलम् ॥१५॥
न परयेत्पुण्यहीनो हि निधानं पुरत स्थितम् ।
किमन्ध' शतवर्ये वा शतचंद्रनभस्तलम् ॥१६॥

[स्वयं लिखित अन्य प्रति में अधिक]

× × × × ×

नेमिस्त्वामांधुरुद्धोसौ यस्य मोरोस्तदाऽभवत् ।
रामयोचितसिंहेभ्य शशशृङ्गे पयोनिधि' ॥२॥

× × × × ×

पृथ्वीकृपि मया वर्ष विहरणास्त्वं धासिपृथ्वीपति' ।
तस्माद्विज्ञपयाम इत्यनुदिनं संत्राशिनः शोषिडका' ॥
निनाथा इव नाथमन्तु रहिता मायामहे मिश्रकै ।
तस्मादाशुसमीमधूपकृपयाऽस्मान् रक्ष रक्ष प्रभो ! ॥१॥

स्मयश्रपुञ्जयभ्रमियाः पुद्गया पश्चिमांमोचिनीर निमज्जनमपि।
सम्भ्रमात् निज नीलिमान प्रगे पूर्णिमेन्दु प्रमोषाणि नवतुलम् ।३।
मेरु धैर्य्यात् समात विजिरहमपि गाम्भीर्य्यतस्त यं ।
सर्वो जिग्ये ययेह स्वमपि सुत तथा तेन बक्रभिया०ः (?) ॥
प्राप्तचर्मपेहि (?) दुःखादुदधिरिति विधु गर्जितै प्रीत्यमत्युग्र ।
मेघे यद्योकवार्य्यं विदितमिदमिमा पंचभिर्नत्र दुःखाम् ॥४॥

× × × ×

आदित्यो[१] निजतेजसा सुवचसा चन्द्रोरि[१] हस्टया कुजो[१] ।
ज्ञानाधिक्यवशात् बुधो[१] गुरुरपि सम्दे सुवर्धोक्षित[१] ॥
शुक्रो[१] विक्रमतः शनि[१] प्रकुपितो राहुश्च केतुः ।
त्वय्यात्मा मिन सर्व ग्रहात्मा वासि वत् (?) ॥१॥
स्वस्मो वाचि पदं विमक्रिरहितं किं तद्विशिष्यार्थकत् ।
जता रंजनमाह्वय प्रमुदिता नारायणं का गता ॥
कः कस यमसयनि प्रतिसरान् किं वष्टि शिष्ट नरः ।
क संस्पत्र तपोनिधो गणधरा सौमाम्यमाम्याधिकाः ॥२॥
श्रीविमला भवस्त वाचा ।
मन्यामिधादि पद मन्मथ पविज्ञातता।
हर्षं सुन्दुभदर्शकरश्मियोगा ॥
द्वन्द्व विधाय वद कोविद कीदृशास्ते ।
क सन्ति सम्प्रति यथा जनमापश्यन्त्या ॥
इदं पयद्वयं पराम्यर्थना कृत्वा दत्तमस्ति ।

आपणा वाल्हा आंत्र[२२], पण्या अ आपणां पेटा;
नाणयो नेह लिगार, बापइ पिण बच्या बेटा ।
लाषठ अतीए लाग, मूँकिनइ मांहइ लीधा;
हुवी खिलरी[२३] हुस, तीए तिलराहिज कीधा ।
कुलीया[२४] पणु मावक किया, तदि दीवा लाम देखाडीया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तइं कुटुम्ब विछोहा पाडीया ।।१०।

वार्ता खुटा गरथ, पछइ पर बेच्या परगट;
वलि अदया दीधा वेचि, किमही रहइ घरनी कुलवट ।
पथि पसर्यो दुरभिख, कहठ कबीसर कोजइ;
आपइ न को उधारि, सच नही सगइ सुसीअइ[१] ।
लाजते[२] मोख लीधो नहीं, मुहइइ[३] पग सबी मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते दयाल[४] तमइरा हूआ ।।११।

तइं हीर किया तुरक, मित्र तो मूल विटाल्या;
वणिके गइ विगचि, रोक करि संगरि राल्या ।
दरसणो दुखिया कीध, जती जोगी सन्यासी;
जटाधारि असधारि, प्रगट व पवन अभ्यासी ।
अभ मातइ ए [५]अपमेव, आगां सु स पुवासूए[६];
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते तुरक पाप निकासूए ।।१२।

७२ मात्र आमे २३ बिवालि २४ कुल्या.

१ मयाणइ, सपीओ　२ लाजेते　३ मुहइ.　४ लेद पात्र
५ अपधामते　६ मुपसूए

पाटण अमदावाद, खरो[१] सरत खंभायत;
साहक सतपति लोक, बसिक पिण हुँता विलायत।
वगड़ मोमो[१] शाह, उठ्यो को नाम उगारइ;
सबलउ सगूकार, मांहि महियलि साधारइ।
केतेक दिवस दीधउ कीव, पिण पिर बोम न को थयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तेहई तूं व्यापी गयउ ॥१

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया;
सोजो वल्पउ सरीर, पछइ पाज मांहे पडिया।
कालउ[४] कमस वसाई, इन्य उपाडइ किहां कठी;
तांवी नास्या तेह, मांडि[५] पर सगती माठी।
दुरगंधि दशोदिशि ऊछली, मडा पड्या दीसइ मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, किण घरि न पड्या कूकुआ ॥१

चैत्यवास को स्वर्गवासी हुए—

भीतखितप्रसु सूरि, पान्या पूनमिया सुगुरु[६];
प्रसु लहुडीपोसाल, पूज्य व पीपलिया-खरतर।
गुजराती गुरु वउ, वडउ असर्वत नइ कसब;
शालिवाडीयउ सूरि, कई किधो पूरो दिसव।
सिरदार घणेरा संहर्या, गीतारथ गिणती नहीं;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तु हत्यियारउ साचो सही।१

२ पूरो ३ रामदनी चोरी. ४ बालक ५ मांड. ६ सद्गु

कवि की आप बीती कथा—

पड़ि आव्यउ मो पासि, तु आवतउ मइ दीठउ;
दुरभख कीधी दूर, म करि कमउ मोजन मीठउ।
रुख दही घृतघोल, निपट जिमिवा न दीधा;
शरीर गमाडि शक्ति, केई लंघण पणि कीधा।
धर्मध्यान अधिक धर्या, गुरु दुख गुणगाउ पिण गुण्यउ;
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया,तु नै हाक मारिनइ मइं हण्यउ।१९।

पाटण पछी पांगुरी, इहां अहमदाबाद आयउ;
रखी माहरी दह, माल्ह गलबध[1] गमायउ।
गरडउ गीतारत्थ, गच्छ चउरासी धावउ;
मारक न करी मार, पिण रहिस्यइ पछतावउ।
मारक दोष न को सही, मत आंखउ धोख माहरउ।
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, त दूषण[2] मह ताहरउ।२०।

सहायकर्त्ता-श्रावक—

मारम शांतिदास, परधल अपणा गुरु पोष्या;
पात्रा भरि भरपूर, साधनइ घणा संतोष्या।
उमा पाखि आणि, वस्त्र पिण भला वहराव्या;
मस्तुर कीधा लघु शिष्य, गच्छ पिण गरुयडि पाया।

1 बंध 2 कसूर

इग्रजु लेइ आदरा, आपउ अठ्यासीयउ इहां;
अहमदाबाद आदि, पूठइ आसिमपुरउ किहां ।
महि बरसाम्या मेह, धान धरती निपजाम्यउ;
आखी नदी अयाग[१], प्रजा लोक नीरज पायउ ।
गुड खांड घारस गोहूं तथा, पोठ[२] आणि परगट[३] किया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीयउ, तु परहो जा हिव पापीया ।२८।

आम्या पोठी ऊँट, धान मरि मूँना गाडा;
मरथा समाइल भार, आंण्या इहां परठी माडा ।
सबल थयउ सङ्काम, भिडतउ[४] रख माहे मागउ;
सत्यासीयउ सच छोडि, लालच कर्मर घरश लागउ ।
घी तेल मूँग पयस भखा, धं सुमर्न पतउ श्रुयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, कहइ पडि रहिस अमभूयउ ।२६।

अठ्यासीयइ इहां[५] वेदि, सबी सत्यासीयइ सती;
सत्यासीया सुणि वात, कहिहिक अवस करती ।
ईश्र तखउ ए पेत्र, मरत दखिस ए मयणीयइ;
निरपराध नर नारि, हा हा पापी किम हयीयइ ।
निंदा करइ गुरुनी निपट, दया दान मुकी दिया;
पापीया पाप पप्या पछी, मइ फरत माहरा किया ।३०।

---

१ भतार २ पोठ ३ परगति ४ ति रिया माहबविभागइ.
५ इहां वहिवेद हिववेवि

सत्यासीयउ साहसी, ऊठि चलि सामठ[7] चावइ;
पापउ न रहइ पापीयउ, धांन मुहगउ करि धावइ ।
सत्यासीयउ अन्न[8] आंणि, करइ चलि सुहगा कोइ;
सागी[9] सत्यापत्ति, किस्युं थास्यइ हो सोइ ।
मम पुण्यउदयउ सचउ अधिक, लोक जिके करस्यइ सही;
'समयसुन्दर' साचउ कहइ, सुखी तिको थास्यइ सही ।२१।

अगलइ हुवउ सुगाल, अन्न[1] चिहुं दिसिथी आयउ;
भाव आपणइ व्यापारी, सको अधिकइ लायउ ।
बाजरी पउला मउठ, केक धान सुहगा कीधा;
सुहगा-मुंहगा अर्थ, लोक ए आप्यो लीधा ।
नर-नारी नूर आव्यउ नगरि, चहल-पहलाई चहुंवइ थई ।
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, हिव पिछली चिंता गई ।२२।

मरगी नइ मदवाडि, गया गुजरातथी नीसरि;
गयउ सोग संताप, घणो हरख हुयउ घरिघरि ।
गोरी गावइ गीत, वली विवाह मंडाया;
साह राजा लोक, रायइ वालोभर मांणा ।
शास्ति दासि पूत पालनु मना ए धर्म मया;
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, मापतउ भजन सांमया ।२३।

---

६ दमा. ७ ... ८ बाइ मागी मध्यार्थात स्यु ९ पुत्र
१० धान ।

श्रावक करइ संभाल, सहु धान थया सुहगा;
दरसणी कहइ दुकाल, अम्ह आस्या थां मुँहगा।
श्राद्धरमुं को श्रम, मन्नो आपे नहीं अम्हन;
श्रावक पिता समान, जिम कहीयइ तुम्हनें।
दया मया दिल धरम धरी, श्रावक सार सहु करइ;
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, धीरज तउ सहू को धरइ ।२४।

सत्यासी कहइ एम, म करो तुम्ह चिंता मुनिवर;
करौ क्रिया अनुष्ठान, तप जप संयम तत्पर।
बांचो सूत्र-सिद्धांत महतउ धरम मारग माखउ;
महावीरनो धर्म, रीति रूडीपरि राखउ।
सझाय ध्यान पासै रही, श्रावक सार सहु करै;
'समयसुंदर' कहै सत्यासीया, धीरज तउ सहु को धरै ।२५।

दुरभिख महादुकाल, बरस सत्यासीयउ पूरो;
दीठा घणा दुकाल, पणि एहवउ को न हूआ।
सत्यासीया-सरूप, दीठउ मइं तेहनो दाख्यउ;
गया भूखा मरउ, रह्यौ भगवंत वां राख्यउ।
रागद्वेष नहीं को मच्छर, मइं व्यास-विनोदइ ए कीयउ;
'समयसुंदर' कहइ सहु सुखी, कवि कल्लोल आणंद करउ ।२६।

अ पचामृत जीमता र, खाता डाख अखोड ।
फांटी खाय कोरणी रे, फ खंडणा छोड । ९ ।
सचीयांने देई जीमता र, उन्मा रहता भाडि ।
ते तउ मात तिहां रया र, जीमता अडे किमाडि । १० ।

दान न द्ये क दीपता र, सहु बैठा सत छांडि ।
मोख न थाइ को मानसु रे, द्ये तो दुख दिखाडि । ११ ।
देव न पूजे देहरे र, पडिकमइ नहीं पोसाल ।
सिथल थया मानक सहू र, बली पड्या जंजाल । १२ ।

रडवडता गलीए मूआ र, मडा पड्या ठाम ठाम ।
गलिमांहे पड़ गदगी रे, र्ष ड्या नांखस ठाम । १३ ।
सबद सोल सत्यासीयां र, ते दाठे न दीठ ।
हिव परमेसर पहनइ रे, भसगां करे अदीठ । १४ ।

हाहाकार मचल हूओ र, दीसे न को दातार ।
तिण बला उठ्यो तिहां र, करणा कास उदार । १५ ।
अवसर दखो दीजिये रे, कीजे पर उपगार ।
सावमीनी सारा लीजीये रे, 'समयसुन्दर' कहे सार । १६ ।

विशेषपरिचय मन्दसेखन प्रशस्ति में इस दुष्काल
का स्मरणोल्लेख —

मुनिवसुषोडशवर्षे (१६८७) गूर्जरदेशे च महति दुष्काले ।
मृतकेऽरम्भिमामे जाते भीमपत्तने नगरे ॥ १ ॥

भिक्षुभयात् कपाटे जटिते व्यवहारिभिर्गृहे बहुभिः ।
पुण्यैर्मानि मुक्ते सीदति सति साधुवर्गेऽपि । २ ।
माते च पचरजतेधान्यमये मरूलवस्तुनि महर्घ्ये ।
परदेशगत लोक मुक्त्वा पितृमातृबन्धुमनान् । ३ ।
हाहाकार जाते मारिकृतानफ्लोकसंहारे ।
कनाप्यदृष्टपूर्वे निशि कौशिकलु ठित नगरे । ४ ।
तस्मिन् समयेऽस्माभिः कनापि च हतुना च तिष्ठद्भिः ।
श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैर्लिखिता च प्रतिरेषा । ५ ।
मुनिमर्षविमयशिष्यो गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्त्ती च ।
तस्म पाठनपूर्व दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा । ६ ।
प्रस्तावोचितमतत् श्लोकषट्क मया कृतम् ।
वाचनीय विनोदेन गुणग्राहिविदांवरै । ७ ।

— • —

प्रस्ताव सवैया छत्तीसी

परमेसर परमेसर सहु कहइ, पणि परमेसर दीसइ किसउ;
वलता व्यापउ सहि पूछि जउ, परमेसर दीसइ पूपर जिसउ।
मसउ अगोचर साम्यउ न पावा, निराकार निरंजन परउ
'समयसुन्दर' कहइ जे योगीसर, परमेसर दीठउ इउ किसउ । १ ।
ह कहां कृष्ण न बरइ इसउ, न कहइ मन्ना जिसा जिग वद;
क कहीं मन्ना गदम कहइ क, परमेसर न द कहू मद ।

जगति सूगि करता उपगारी, मंहरता पखि नाणइ खेद;
समयसुन्दर कहइ हुँ तो मानु, करम एक करता ए भेद । २ ।
पखी ऊडि गमइ आकासइ, मीन करउ मारग कुण प्रदर्इ;
तारा मंडल कुण गिणइ कहउ, मापइ करि कुण मेरु महइ ।
धर्मी किम मार्टी करि डरिपउ, कुण करइ भाखी कुण कहइ;
समयसुन्दर कहइ मद मत्ती परि, परमेसर कउ कुण लहइ । ३ ।
भरख मडार छत्रीस पवन घर, सगुनई गुरु निगुरउ नहि कोइ;
पखि आरम करइ अगन्यांनी, जीव दया विण धरम न होइ ।
गुरु वउ ते मे सुध परूप" पग मुकइ जरथा सु बोद;
भाग धरां मगरां नइ तारइ, समयसुन्दर कहइ सद्गुरु सोइ । ४ ।
कष्ट करइ पंचागनि साधइ, साग होम करइ बहु कर्म;
जाणइ अम्हे मुगति पखि जास्यां, पणउ सगलउ खोटउ मर्म ।
आगन्या सहित दया पाली सार, सगलां धमनउ एहिज मर्म;
समयसुन्दर कहइ दुरगति पडतां धर आंटी आंहि भीजिन धम । ५ ।
गछ चउरासी दीसइ गिरुया पिण त (कुला) मिल २ आचार;
कहउ कहा गछनी कीजइ विधि, नाखी विण न हुयइ निरधार ।
मांप मांपखा गछनो करउ किरिया, पखि म करो परतात लगार;
समयसुदर कहइ हुँ इम जाणु, इस भारत मांहइ गयउ सफ्कार । ६ ।
चन्द्रगुपत राजा सुपना मुहुया, तिहां चन्द्र दीठउ चालणी समांप;
त तउ बाल माषी दीम" छइ मजपाइ मामी नउ न्यांन ।
जिम मामरा मट गच्छ गच्छधर, हुया घणा मती हुस्यइ गोरून;
समयसुदर कहै मांप मांपखउ, गच्छ करउ प्रगउ साखि निधान । ७ ।

इण मास्वइ साचउ कुण भूठउ, पूछ्यउ नही परमेसर पास;
मत्र सिद्धांत अक्षर सउ ग्हीज, पणि जू जूया थया वचन विलास।
रागद्वेष किण अरथ मरोड्या किणही कि अरथ न प्रीछ्या तास;
समयसुंदर कहइ ए परमारथ सहु को जोज्यो हीयइ विमास। ८।
जे धम करिस्यइ ते निस्तरिस्यइ पणि पारकी को मकरउ मास,
आपणी करणी पारि उतरणी, पुण्य पाप आवस्यइ सघास।
साची मूठी मन सरदहरणा दीपावइ सहु को दिन रात,
समयसुंदर कहइ वीतराग वचनइं मिलइ तिका जइ साची वात। ६।
संघ कंखा सांसउ मकरउ किणउ धरम सहु थूलि मिलइ;
सउकि मात गाषउ दीयउ ओखध पणि सांसइ सुत देह गलइ।
अमृत आंखि पांणी पणि पीघइ सर्प तणउ विषवेगि टलइ;
समयसुंदर कहइ आस्ता आंणी धर्म कर्म कीजइ ते फलइ। १०।
तपा कहइ हरियालही पहिली खरतर कहइ पडि कमियइ पछइ,
मुहपति आंचलिया गुरु कहूआ, लुंका कहइ जिन प्रतिमा न छइ।
स्त्रीनइं मुगति न मांनइ डुंगर पहणा बोल घणा ही अछइ;
पणि समयसुंदर कहइ सांसउ भांजइ, सउ को केवली पासइ गछइ। ११।
खरतर तपा आंचलिया पामचंद आगमीया पुनमिया सार;
कडुयामती दिगंबर लुंका चउरासी गछ अनेक प्रकार।
आंप आंपणउ गछ¹ थापइ मगला नवउ ठोकि आंपी अहंकार;
समयसुंदर कहइ कथा ज करउ पणि, भगवन भाख्यइ ते श्रीकार। १२।
मोटउ गछ अम्हारउ दरगउ माणस बहुल घर्मा घरांणि;
गर्व म करि र मूढ़ गमारा समय समय अनती हांणि।

१ मत

सूत्र मांहि एक दसवैकालिक जं'ती मांहि दुपसह सूरि जांणि ।
समयसुंदर कहइ कुमत कांयइ रे कहउ गछ रहिस्यइ परमांणि ।१३।
गछनायक हुयई अति गिरुया मारी समानइ अति गंभीर;
पालइ आप मलइ आचारइ तउ को गिणइ इन्ह नइ हीर ।
फाडि त्रोडि नइ गछ गमाडइ दिन नइ राति रहइं दिलगीर;
समयसुंदर कहइ ते गछनायक, दरसन मांहि धोपा धीर ।१४।
आसातना करतनी उपमइ कनक कसोटि त कसी नी आव';
परमारथ एक आंपन प्रीछइं बीजानइ पणि करइं व्याघात ।
रली रोहिसी विकथा करती, पारंका करनी परतात;
समयसुंदर कहइ सहुको सुणिज्यो भलांय मांहि मत करिज्यो बात ।१५।
कोसो करावउ मु ड मु डावउ, भद्य धरउ को नगन रहउ;
को तप्प तपउ पंचागनि साधउ कासी करवत कष्ट सहउ ।
को भिक्षा मांगउ भस्म लगावउ मौन रहउ भावइ[1] कथा कहउ;
समयसुंदर कहइ मन[2] शुद्धि पाखइ, मुगति सुख किमही न लहउ ।१६।
आव्यां ऊठि ऊभी थायइं दीजइ आदर मांन घणो;
भली परि भोजन पाणि दीजइं, कीजइ[3] पाप कमल नमणो ।
कुन्च करिमा लपां भनता, सारय नो सहु प्रेम घणो,
समयसुंदर कहइ सही करि जाणउ सगपण ते स साहमी तणो ।१७।
काम काज विसजइं व्यापारइ, सारउ दिन सगलइ रोकिवउ;
धरम नियम किरीया पामइ वायइ[4] पणि अउ मन आखिउ ।

१ ताप एक २ मात ३ भो ४ भाव विनासउ ५ कमइ भावइ ।

से भ्रम करिस्यइं ते निरतरस्यइ, कहनउ पाड कोइ चाढ़िवउ;
समयसुंदर कहइ अ[1] भ्रम दीजइ ते भलताइ मांहि दोडउ[2] काढ़िवउ।१८
भ्याम्या बिना खेत्र किम सुणियइ, खाधां पाखइ भूख न जाइ;
भांप भूयां विण सरग न अइयइ, घाते पापड किमही न थाइ।
साधु साधवी श्रावक[3] श्राविका एतउ खेत्र सुपात्र कहाइ;
समयसुंदर कहइ तउ सुख लहियइ, जउ घर सारउ दत्त दिवाइ।१६।
मस्तकि मुगट छत्र नइ चामर अमउ सिंहासन नई रोकि;
आस दाय करतावइ अपथी आइ नमइ नर नारी लोक।
राजरिद्धि रमणी घरि परिघल जे जोयइ ते सगला थोक;
पणि समयसुंदर कहइ जउ घम न करइ,तउ ते पाम्यु सगलु फोक।२०।
सीस फूल स मयउ नकफूली, कानइ कुण्डल हीयइ हार;
मास्तइ तिलक मसी कटि मेखल, बांहे चूडि पुणछिया सार।
दिव्य रूप देखती अपछर, पगि नेउर भमकार;
पणि समयसुंदर कहइ जउ भ्रम न करइ,तउ भार भूत सगलो सिणगार
मांस म खायउ मदिरा म पीयउ म करउ मांगि नइ घुंटाघुटि;
चोरी म करउ वाट म पाडउ, म करो भोंभी भूंठा भूंठि।
पर स्त्री मत भोगवउ पापी, म करउ लोक नइ लूंटा लूंटि;
समयसुंदर कहइ नरगइ पडिस्यइ बपारा जिम कूटा कूटि।२२।
मनुष्य तणु आउखु जायइ धरम विना मैंरसी रहा केम;
अम नीसाण घडउ रा घरसइ पहुर पहुर तिहां किहां थी खेम।

---

१ ज भरम। २ डोड। ३ स्वाह्मी साह्मिणी।

भागी भडी व पाखी नामइ करउ धरम धर जप नइं नम;
समयसुंदर कहइ सहु को सुखियो, परियालउ बोलइ छइ एम ।२३।
धरम ककूल करिउ व करिज्यो, ताथी तूँसी नइ तत्काल;
मन परिणाम अनित्य आउखु, पापी जीव पडइ जंजाल ।
मत बिलंब करउ धम करता आगी पडइ अंतराय निपात;
समयसुंदर कहइ सहु को समझउ, घडी मांहि थायइ परभात ।२४।
केहनइं पुत्र भली नहि केहनइं केहनइ धन तरसी नहि पखि;
केहनइं रोग सोग भर केहनइ, केहनइ गरघनी तरणी तूँखि ।
के विधवा के विरहिणी दीसइ, माथइ भार वहइ के भूँखि;
समयसुंदर कहइ संसार मांहि, कहउ नइ आज सुखी छइ कूँखी ।२५।
बेटा बेटी बापरि माई बहिनी तणउ नहि कलेस लगार;
विणज व्यापार मसास्कृति कथ, नहि उपारजिवउ मायइ नहि भार ।
सखर उपासरें वइसी रहिवउं, नमसि करइं मोटा नर नारि;
समयसुंदर कहइ अउ वासइ तउ आज सुखी जाणक अणगार ।२६।
सरिव कोडी धन कलपी मगध तणी उग्रगस्त रूपत;
सुण तउ अइ विरोध पापसु नास्तिक गुरु सिरां केहउ सुक्ख ।
सुनि पांगलउ पिताने बयरी राहु देइ पसाइ भरइ सुक्ख;
समयसुंदर कहइ सुख कहइ हुं कहयउ परिग पंचसु नाहि दुक्ख ।२७।
महावीर नइं काने खीला गोवालिए ठोक्या कहिवाय;
द्वारिका दाह पांखी सिर भांगयउ, परहत्त नइ परि हरिचंद राय ।
लखमण राम पांडव वनवासि, रावण सम लंका लूँटाय;
समयसुंदर कहइ कहउ व कहु परिग, करम तणी गति कही न जाय ।२८।

वयउत मांहि लिख्यउ वे लहियइ, निश्चय सत्त हुयइ सुखदार;
एक कहइ कारज साधीनइ, उद्यम कीजइ अनेक प्रकार।
नीखण कर्मा वाद करतां, इम भगड़उ मागउ पहुतौ दरबारि;
समयसुंदर कहइ मऊ मानउ, निश्चय मारग नइ व्यवहार।२९।
विषम कहल भरउ पणि पांचमउ, कृष्णा पाखी पणि जीव घणा;
मत चउरासी गच्छ मडाया त पणि ताणा ताणि सणा।
सघयण नहो मनो बल मांठा, चरित्र ऊपरि किहां चालणा;
पणि समयसुंदर कहइ खप तउ कीजइ पचाचार पलइ पालणा।३०।
मांस मखाणइ पर नइ निंदइ, त तउ अधम कह्या नर नारि;
सहु को मलउ पणि हु कांई, नहीं इम बोलइ तेहनइ बलिहारि।
गुण लीजइ अवगुण गाढीजइ समकित जू ए सघण सारि;
समयसुंदर कहइ इण अधिकारइं दृष्टांत कह्यो श्रीकृष्णमुरारि।३१।
दवतउ अरिहंत गुरु सुसाधनइ करुणा मांपिस सघउ धर्म्म;
एहु सरदहियइ स समकित जिनसासन नु बहीज मर्म्म।
पात आठ मद माहि मीभइ मजम सु मत मांणउ मर्म्म;
समयसुंदर कहइ सव धर्म नउ, मूल एक समकित सुमरम्म।३२।
अपणी करणी पारि उतरणी पारकी वात मइ कांइ पडउ
पूठि मांस खातउ परनिंदा लोकां सती कांइ लड़उ।
(निंदा म करौ कोइ कहनी तात पराइ मं मत पडउ)
निंदक नर चडाल सरीखउ, गहनइ मत कोइ आमड़उ;
समयसुदर कहइ निंदक नर नइ नरक मांहि पाडिस्यइ दडउ।३३।
भूग बोमइ त नरकउ जायर पडइ निंदा उग मोटी ग्याग;

पाइ जुगल नइ राजा रूठउ, वीस हादि घइ डांम निसाणि ।
भूठलउ मसाण कोइ न करइ बाहिर काढ़िनइ मढ़इ कमाइ;
समयसुंदर कहइ मृग माणस नइ सहु को कहइ ए महा सबाइ ।२४।
ए मसाण ममार नाखिनइ छोड़ी दीधउ सगलउ रंक;
तप सहाम्रम पालइ घणा सील घरत पणि धरइ सलज्ज ।
तप जप किरिया करइ उतकृष्टी एहवा पिण कइक छइ मज;
समयसुन्दर कहइ मइं तउ न पलइ, पणि हुं छु सेवना पगनी रज ।२५।
साध पीथ छीप दीप समुधा मांहि वधारयउ वांन ।
गुरु प्रसादि माता मुरु पामउ जिण चंद सूरि व जुगपरधान ।
सकलचंद गुरु गुणनिधि लीधी सत्पासियइ तन धयउ ज्ञान;
समयसुन्दर कहइ किहुं[१] कमिम्यु उत्कृष्टी करणी धम ध्यान ।२६।
सरस मालनउघा वरपे श्री रामपुर नयर मम्भारि;
कीधा सहासामस्थाल विनोदइ सुरु सहस भरण सुखकारि ।
साधउ एक धम्म मगस नउ दुरगति पड़ता पइ आधार;
समयसुन्दर कहइ जैन धरम त्रिहुं तिहुं सज्यो सार सनसार ।२७।

[महाराजा प्रतिलिपि पत्र ४ स्वयं कविलिखित—
इति सगार सतावन्द्रत्रीसी समाप्ता । सं० १६४८ वर्षे माहवद सुदि ० दिन । श्रीमद्भनवातारप रबेवर्मि श्रीमदम्सपुर श्रीरामसरगमये चतुर्मास्यां स्थिते श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायै स्वहस्तार्थं लिलिखा । शुभ भवतु लेखकपाठकयोः ।]

१ (हिव तु ज मन रहि संताप नइ धरि समध्यान ।

कृष्ण पंदाल करीजइ, सिहै मइ, निरनि नहीं कइइ दव जी ।
ऋषि चटाल करीजइ विइतो, टालइ मइ नी टेव जी । क्षा ।११।
सातमी नरक गयउ त अग्रदत्त, क्रोधी मासस मांस जी ।
क्रोध तणा फल कड़आ जाणी, राग द्वेष यो नांखजी । क्षा ।१२।
खधक ऋषि नी खाल उतारी, सह्यउ परिसह जेथ जी ।
गरमावास ना दुख थी छूटयउ, सबल क्षमा गुण तेथ जी । क्षा. ।१३।
क्रोध करी खधक आचारज, हुओ अगनिकुमार जी ।
दडक नृप नउ देश प्रजाल्यउ, ममसे मवइ मम्मार जी । क्षा ।१४।
चडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी ।
क्षमा करता कमल पाम्यउ, नव दीक्षित अणगार जी । क्षा ।१५।
पांच वार ऋषि नइ संताप्यउ, आणी मन मां द्वेष जी ।
पच भव सीम बाघो नडनारिक, क्रोध तणा फल देख जी । क्षा ।१६।
सागरचन्द्र नउ सीस प्रजाली, निशि नभसन नरिंद जी।
समतां भाव धरी सुरलोके, पहुँतो परमानद जी । क्षा ।१७।
चदणा गुरुणीए घणी निभ्रन्छी, धिक धिक तुझ आचार जी ।
मृगावती केवल सिरी पामी, एह क्षमा अधिकार जी । क्षा ।१८।
सांब प्रद्युम्न कुमार संताप्यउ, कृष्ण द्विपायन साह जी।
क्रोध करी तप नउ फल हारयउ, कीधउ द्वारिका दाह जी । क्षा ।१६।
भरत नइ मारण मूठि उपाड़ी, बाहूबलि बलवंत जी ।
उपशम रस मन मांहे आणी, सयम ले मतिमत जी । क्षा ।२ ।
काउसग मांहे चढियउ अति कोप, प्रसन्नचंद्र रिषिराय जी ।
सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कड़आ तस कषाय जी । क्षा ।२१।

आहार मांहे क्रोध रिषि धूम्यउ, आएयउ अमृत भाव जी।
कूरगडूए कवल पाम्यउ, खमा तणइ परभाव जी। आ।२२।
पार्श्वनाथ नइ उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठ जी।
नरक तिर्यंच तणा दुख लाधां, क्रोध तणा फल दीठ जी। आ।२३।
खमावंत दमदंत मुनीसर, वन मां रह्यउ काउसग्ग जी।
कौरव कटक हएयउ ईंटाले, त्रोड्यउ करम ना वग्ग जी। आ।२४।
सन्यासालक काने तरुआो, नाम्यो क्रोध उदीर जी।
तिहुँ काने खीला ठोकव्या, नवि छूटा महावीर जी। आ।२५।
चार हत्या नो कारक हुँतो, दृढ प्रहारी अतिरेक जी।
खमा करी नइ मुगति पहुँता, उपसर्ग सही अनेक जी। आ।२६।
पहुर मांहि उपजंतो हारयो, क्रोध केवल नाण जी।
दखो जी दमसार मुनीसर, सूत्र गयो उद्दाण जी। आ।२७।
सिंह गुफा वासी ऋषि कीधउ, थूलिभद्र ऊपर कोप जी।
वरया वचने गयउ नपाल, कीधउ संजम लोप जी। आ।२८।
चंद्रावतंशक काउसग्ग रहियउ, खमा तणउ भंडार जी।
दासी तेल भरयउ निसि दीवउ, सुर पदवी लहि सार जी। आ।२६।
एम अनेक तरया त्रिभुवन में, खमा गुणे भवि जीव जी।
क्रोध करी कुगति ते पहुँता, पाडंता मुख रीव जी। आ।३०।
विष हलाहल कहियइ विरूयउ, ते मारइ इक वार जी।
पण कषाय अनंती वेला, आपइ मरण अपार जी। आ।३१।
क्रोध करंता तप जप कीधा, न पडइ कांइ ठाम जी।
आप तप पर नइ संतापइ, क्रोध सु के हो काम जी। आ।३२।

खमा करता खरच न लागइ, मांग कोइ कलेस जी।
अरिहंत देव आराधक थाइ, व्यापइ सुयश प्रदेस जी। आ।२३।
नगर मांहि नागोर नगीनउ, जिहां जिनवर प्रासाद जी।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया, धर्म तणइ परसाद जी। आ।२४।
खमा छत्तीसी खांते कीधी, आत्मा पर उपगार जी।
सांभलतां श्रावक पण समज्या, उपसम धरयउ अपार जी। आ।२५।
युगप्रधान जिणचंद सूरीश्वर, सकलचंद तसु सीस जी।
समयसुंदर तसु शिष्य भणइ इम, चतुर्विध संघ जगीश जी। आ।२६।

—— ० ——

कर्म छत्रीसी

करम थी को छूटइ नहीं प्राणी,
　　कर्म सबल दुख खाण जी।
कर्म तणइ वस जीव पड्या सहु,
　　कर्म करइ ते प्रमाण जी।क०।१।
तीर्थंकर चक्रवर्ति अतुल बल,
　　वासुदेव बलदेव जी।
ते पणि कर्म विटम्ब्या कहिये,
　　कर्म मनावइ नित मेव जी।क०।२।
मुक्ति भणी उठ्या जे मुनिवर,
　　तेह तणा कहुँ नाम जी।

कर्म विपाक घणा अति कडुआ,
धर्म करो अभिराम जी क० ।३।
कृष्ण कृष्ण सीख विर्ग्ध्या कर्मे,
तेह तणा कहुँ नाम जी ।
कर्म विपाक घणा अति कडुआ,
धर्म करो अभिराम जी क०।४।
आदीस्सर आहार न पाम्यउ,
वर्ष सीम कहिवाय जी ।
खतां पीतां दान देवतां,
मत को करउ अन्तराय जी क०।५।
मल्लिनाथ तीर्थंकर साचउ,
स्त्री तणउ अवतार जी ।
तप करतां माया तिण कीधी,
कर्म न गिणी कार जी क०।६।
गोशाल सगम गोवाले,
कीधा उपसग घोर जी ।
महावीर नइ वीस पदाम्पी,
कर्म सु कहो जोर जी क०।७।
साठ सहस सुत नो समकाल,
लागो सबलो दुख जी ।
सगर राय थयो मूर्छागत,
कर्म न मांस सुख जी क०।८।

चलि सुभूम अति सुभ भोगवतो,
　　छ खंड लील विलास जी ।
सातमी नरक मांहे ए नांम्यउ,
　　कम नउ किमउ विसास जी ॥क०॥९॥
महलख नइ भांचउ कीधो,
　　रोग दुख अपार जी ।
कुरु मती कुरु मती सब्दथो पुकार,
　　सातमी नरक मझार जी ॥क०॥१०॥
इस बखाण्यो रूप अनोपम,
　　ते विणस्यो तत्काल जी ।
सात से बरस सही बहु वेदन,
　　सनत्कुमार कराल जी ॥क०॥११॥
कृष्ण केशव अवस्था पामी,
　　दीठउ द्वारिका दाह जी ।
मात पिता पण काढी न सक्या,
　　आप रह्यउ वन मांह जी ॥क०॥१२॥
गयाउ रावण सबल कहातो,
　　नवग्रह कीधउ दास जी ।
लखमण लंका गढ लूटायो,
　　दस सिर छेदया तास जी ॥क०॥१३॥

दसरथ राय दियो देसवटउ,
राम रखउ वनवास जी ।
वलि वियोग पड़यउ सीतानउ,
आठे पहर उदास जी ।क.।१४।

चिर प्रतिपाल्यउ चारित छोडी,
लीधो बांधव राज जी ।
कंडरीक नइ कर्म विटंम्यउ,
कोइ न सरयउ काज जी ।क।१५।

कोणिक कठ पंजर मइ दीधउ,
श्रेणिक आपणो बाप जी ।
नरग गयउ नाड़ी मारतउ,
प्रगटयउ हिंसा पाप जी ।क।१६।

वसु अठार मुकुट बद्ध राजा,
सब करइ कर जोड़ जी ।
कोणिक थी बीहतउ राय चेडउ,
कूप पड़यउ वस छोड़ जी ।क।१७।

सुण्यो मुंज मृणालवती सु,
उर्ज्जैनी नउ राय जी ।
भीख मंगावी वली दीघट,
कर्णाट राय कहाय जी ।क.।१८।

वाचना पांचसै साधु ने देतो,
योगी बन्ध थयो गृद्ध जी ।
अनारज देश सुमगल उपनो,
जोगी बड समृद्ध जी । क०।१९।

कृष्ण पिता नइ गुरु नमीश्वर,
द्वारिका ऋद्धि समृद्ध जी ।
ढंढण ऋषि तिहाँ आहार न पामइ,
पूर्व कर्म प्रसिद्ध जी । क०।२०।

आर्द्र कुमार महंत मुनीसर,
घृत लीधउ वैराग जी ।
श्रीमती नारि सभासे खुभ्यउ,
एह करम विपाक जी । क०।२१।

सेलग नाम आचारज मोटउ,
राज पिण्ड थयउ गृद्ध जी ।
मद्य पान करी रहे सूतउ,
नहीं पडिकमणा सुद्धि जी । क०।२२।

इकसहस्र उदधिम थको थयउ,
सातपात्तारिम जी ।
तीर्थंकर दस मेलि गमाइ्या,
पर दस्यउ अचारिम जी । क०।२३।

नंदिषेण श्रेणिक नउ बटउ,
महावीर नउ शिष्य जी ।
बार बरस वेश्या सु लुब्धउ,
कर्म नो वात भलाप जी ।क.।२४।

भगवंत नउ भाणेज जँवाई,
वीर सु कीधी वेरि जी ।
तीर्थंकर ना वचन उथाप्या
डूयउ जमालि सुर ढेड जी ।क.।२५।

रुद्रा साधवी रोग ऊपनो,
विणठो कोढ सरीर जी ।
भव अनंत भमी दुख सहती,
दोप दिखाड्यउ नीरि जी ।क.।२६।

सील सन्नाह घणु समभावी,
तोहि न मूक्यो माल जी ।
रुपी राय रुली भव मांह,
भदे घणु हवाल जी ।क.।२७।

लष भव रुली वलि लखमणा,
कुवचन बोल्या एम जी ।
तीर्थंकर परपीड न जाणी,
मैथुन वारयउ कम जी ।क.।२८।

मुइ आपणी भूकी मन मांहे,
सुकुमालिका सरूप जी ।
सार्थवाह घर भरणी कीधी,
कर्म नठ मक्कल सरूप जी । क.।२६।

रोहिणी साधु भणी वहरायो,
कड़ुओ तूंबो छेहि जी ।
भव अनंत भमी चउ गति मई,
करम न मूंकै केहि जी । क.।२०।

इम मृगांकलेखा मृगावती,
सतानीक नी नार जी ।
कष्ट पड़ी कमला रति सुंदरी,
कहतां न आवइ पार जी । क.।२१।

कर्म विपाक सुणी इम कड़ुआ,
जीव करउ जिन धम जी ।
जीव आयइ करमे तूं जीतो,
पिण हिव जीपि तू कर्म जी । क.।२२।

श्री मुलतान नगर मूलनायक,
पार्श्वनाथ जिन जोय जी ।
वासुपूज्य श्री सुमति प्रसादे,
शोक सुखी सहु कोय जी । क.।२३।

श्री जिनचन्द्रसूरि जिनसिंहसूरि,
गच्छपति गुण भरपूर जी ।
सिंघी जेसलमेरी श्रावक,
खरतर गच्छ पडूर जी । क.।२४।
सकलचन्द सद्गुरु सुपसाये,
सोलह सइ अड़सठ्ठ जी ।
करम छत्तीसी ए मइ कीधी,
माह तणी सुदी छठ्ठ जी । क.।२५।
करम छत्तीसी कानै सुणि नइ,
करजो मत पच्चखाण जी ।
समयसुन्दर कहइ सिव सुख लहिस्यउ,
धर्म तणे परमाण जी । क.।२६।

—•)❋(•—

पुण्य छत्तीसी

पुण्य तणा फल परतिख देखो,
करो पुण्य सहु कोय जी ।
पुण्य करंतां पाप पुलावे,
जीव सुखी जग होय जी ॥ पु•॥ १ ॥
अभयदान सुपात्र अनोपम,
वलि अनुकंपा दान जी ।

साधु श्रावक धर्म तीरथ यात्रा,
शील धर्म तप ध्यान जी ॥ पु०॥ २॥
सामायिक पोषह पडिक्कमणो,
देव पूजा गुरु सेव जी ।
पुण्य तणा ए भेद परूप्या,
अरिहंत वीतराग देव जी ॥ पु०॥ ३॥
मरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरव भव परसिद्ध जी ।
शांतिनाथ तीर्थंकर पदवी,
पाम्या चक्रवर्ती रिद्ध जी ॥ पु०॥ ४॥
गज भवे ससलउ जीव उगारयो,
अधिक दया मन आसिजी ।
मेघ कुमार हुयो महा भोगी,
श्रेणिक पुत्र सुजाया जी ॥ पु०॥ ५॥
साधु तणाउ उपदेश सुणी नइ,
मूक्यउ मच्छली जाल जी ।
नलिनी गुल्म विमान धणी थयो,
अवन्ती सुकमाल जी ॥ पु ॥ ६॥
पंच मच्छ राख्या मालि भणि,
पंच यव दियउ राम जी ।
रामकुमर लीला सुख लीधा,
सुमन फल गया माम जी ॥ पु०॥ ७॥

धन्य धन्य सार्थवाहस धनउ,
दीधउ घृत नउ दान जी।
तीर्थंकर पदवी तिण पामी,
आदीश्वर अभिधान जी ॥ पु०॥ ८॥
उत्तम पात्र प्रथम तीर्थंकर,
श्री श्रेयांस दातार जी।
सेलडी रस सधउ वहराव्यो,
पाम्यउ भव नउ पार जी॥ पु०॥ ६॥
चन्दन बाला बाकले माथे,
पडिलाभ्या महावीर जी।
दव वयी दु दुमी तिहां वामी,
मुन्दर थयउ सरीर जी॥ पु०॥१०॥
सुमुख नाम गाथापति मुनिवर,
दीधउ साधु नइ दान जी।
हुओ सुबाहुकुमर सोभागी,
वधता सुख विमान जी॥ पु०॥११॥
संगमे साधु भणी पडिलाभ्यउ,
ग्वारखांड घृत सार जी।
गोभद्र सेठ तणे घरि साधउ,
सालिभद्र नउ अवतार जी॥ पु०॥१२॥
मूलदेव मुनिवर पडिलाभ्यउ,
मास खमण अणगार जी।

राज ऋद्धि छतपणा पामी इहां,
कोइ नहीं उधार जी ॥ पु०॥१३॥
मोटो ऋषि बलदेव मुनीसर,
प्रतिबोध्या पशु वर्ग जी ।
दान सुपात्र दियो रथकारक,
पाम्यउ पांचमउ स्वर्ग जी ॥ पु०॥१४॥
धपक सेठ कीधी अनुकम्पा,
दीधु दान दुकाल जी ।
कोडि छनु सोनइया केरी,
विलसइ रिद्धि विसाल जी ॥ पु०॥१५॥
सुव्रत साधु समीपे कार्तिक,
लीधउ संजम भार जी ।
बत्तीस लाख विमान तणो धणी,
इन्द्र हुयउ ए सार जी ॥ पु०॥१६॥
सनत्कुमार सही अति वेदन,
सात सौ बरसां सीम जी ।
देवलोक त्रीजइ सुख दीठा,
निश्चल पाम्यो नीम जी ॥ पु०॥१७॥
रूप थकी अनरथ देखी नइ,
गयो बलभद्र वनवास जी ।
तप संयम पाली नइ पहुंतउ,
पांचमइ स्वर्ग आवास जी ॥ पु ॥१८॥

श्रावक शीलवत पाल्यउ,
जिन शासन जयकार जी ॥ पु०॥२४॥
चम्पा नगरी नंद वासी,
धन धनउ अणगार जी ।
अभिग्रह आगइ वीर बखाण्यउ,
अति उग्र तप अधिकार जी ॥ पु०॥२५॥
हूँ श्रेणिक किसु महाराजु,
ध्यकार नइ सहु थोक जी ।
मृगलउ भावना मन भावंतउ,
गयो पंचम देवलोक जी ॥ पु०॥२६॥
थिर सामायिक कीधउ थविरा,
राजकुमारी थइ रंग जी ।
मोग संजोग घणा तिहां भोगवी,
शिव सुख साधा संग जी ॥ पु०॥२७॥
सख श्रावक पोषद शुद्ध पाल्यउ,
वीर प्रशंस्यो सद जी ।
तीर्थंकर पदवी ते लहिस्यइ,
पुण्य तणा फल एह जी ॥ पु०॥२८॥
सागरचन्द्र कियउ वलि पोषह,
रयउ काउसग्ग राय जी ।
निमि नमसम तणो मघउ उपसर्ग,

संवत निधि दरसण रस ससिहर,
सिधपुर नगर मझार जी।
शांतिनाथ सुपसाउ कीधी,
पुण्य छत्तीसी सार जी ॥ पु०॥३५॥
युगप्रधान जिनचंद सवाई,
सकलचन्द्र तसु शिष्य जी।
समयसुन्दर कहइ पुण्य करो सहु,
पुण्य तणा फल प्रत्यक्ष जी ॥ पु०॥३६॥

—(०)—

संतोष छत्तीसी

साहमी सु संतोष करीजइ, वयर विरोध निवार जी।
संगपण त मे साहमी केरउ, चतुर सुणो सुविचार जी। सा.। १।
राय उदायन मोटउ राजा, कीधो सबल संग्राम जी।
चंड प्रद्योतन मूकी खाम्यउ, सांमल्यौं साहमी नाम जी। सा। २।
कोणिक चेडइ संग्राम कीधा, माणस मारया कोडि जी।
असी हास्य वसि ऊपरि करियर, वैर विरोध पउ छोडि जी। सा.। ३।
उदायन दीधउ केशी नइ, मास्खेजा नइ राज माग जी।
वैर बहतउ थयउ विराघक, अभीचि असुर कुमार जी। सा। ४।
सरो कीधउ पोसा सतरउ, पक्खुलि कीधी तास जी।
मिच्छामि दुक्कडं श्री महावीर विघटयो परमान जी। सा। ५।
दाविड़ वारिखिल्ल बे भाई, पच पंच कोड़ि परिवार जी।

सँन तापस ऋषि विढता राम्या, सेत्रुजइ सीधा अपार जी। सा। ६।
भरत बाहूबलि बहूँ भाई, आदीसर अंगजात जी।
बार बरस बहु वन सहारया, एह विरोध नी बात जी। सा। ७।
अरिहत साधु विना प्रथमे नहीं, वजजघन धम धीर जी।
सिंहोदर सु सतोष करायो, रामचद्र करि भीर जी। सा। ८।
सागरचद्र अन्याये परणी, कमला भला वहर जी।
माधइ सिगड़ी मूकी मारयो, नभसेन वाल्यो वैर जी। सा। ६।
आस थकी वे अधिका आगइ, तहनइ तू बीमाड़ि जी।
मत साहमी बच्छल कीधउ, सात वचन सिरवाड़ि जी। सा। १०।
उग्गायन राय मंघावी ले गयउ, चंड प्रद्योतन राय जी।
मासरचा नइ तिण अपहरी, इण विरोध न थाय जी। सा। ११।
सिंहोदर पासे दिवरायो, राम आधउ राज जी।
वजनघन स्वामी आणी नइ, ररर समारथउ काज जी। सा। १२।
कोणिक कीधी त को न करइ, चडो पाम्यउ रूप जी।
नगरी विशाला मांजी नांखी, एह विरोध सरूप जी। सा। १३।
विमउ विगमी चोरी पइठउ, म क्यउ शु डल नाग जी।
वजजघन नइ मेर उपाम्यउ, साधउ साहमी राग जी। सा। १४।
मांहो मांही नगर विध्वंस्या, पांडव दमन्त राय जी।
मुनि दयन्त इंगाल मारयो, काम्व न वन्यो परताप जी। सा। १५।
रुक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, मुडरी नउ मवन मंताप जी।
रामत रामगा किरा गर्व मन, प्रत सदा प्रभाव जी। सा। १६।

रेवती ऊपर रीस करी बहु, महाशतक श्रावक जी ।
गौतम मूकी नइ मिच्छामि दुक्कड, दिवराव्यो महावीर जी । सा ।१७।
सारंग साह घरी मद मच्छर, बांध्यउ कोचर साह जी ।
पणि उपाय नइ वचने मूक्यउ, साहमी जाणि उच्छाह जी । सा ।१८।
लखमण राम नइ घर थी काढ्या, कपिले मुंडो जीव जी ।
पणि साहमी भणी राम संतोष्यउ, आदर मान घन दीवजी । सा. १९।
बरस बरस मांहे त्रिण वेला, वस्तुपाल तेजपाल जी ।
साहमी वच्छल सबला कीधा, भक्ति युगति सुविसाल जी । सा ।२०।
बेठ इंद्र बुलाया कोशिक, मर्शी घडो राय जी ।
इंद्र कहे सुण भ्रमद किम मारूं, साहमी सगपण थायजी । सा ।२१।
साहमी सगपण नवउ करी नइ, प्रीति सतोष विशष जी ।
आर्द्रकुमार भणी प्रतिबोध्यउ, अभयकुमार दक्ष जी । सा.।२२।
समता रामखा करउ सर मन, मूको निज अभिमान जी ।
मृगावती नइ चन्दनबाला, पाम्यउ केवलज्ञान जी । सा ।२३।
पत्र कुमार ने वेला वाला, मिच्छामि दुक्कड टालि जी ।
मन शुद्ध विन करि मुक्ति न होइ, निश्चय दृष्टि निहालि जी । सा २४।
साधु बंधावे वाला कीम्बइ, असिपा गसिया जाण जी ।
सामायिक पडिकमणो सफल, जीवत जन्म प्रमाण जी । सा.।२५।
सामायक पोसो पडिकमणो, नित सज्झाय नवकार जी ।
राग द्वेष करतां सम्झ नहीं, न पड़े ठाम लगार जी । सा ।२६।
समता भाव धरी नइ करतां, सहु किरिया पड़े ठाम जी ।
अरिहंत देव कहइ आराधक, सीमन्ध वंदित काम जी । सा ।२७।

राग द्वेष कियां रडवडियइ, पडियइ नरक मझार जी ।
दुख अनंता सहियइ दुरगति, तइ तणउ नहीं पार जी । सा ।२८।
जिहां जीव जायइ तिहां कणि पामइ, सकल कुटुंब परिवार जी ।
पण साहमी नउ सगपण किहां थी, ए दुर्लभ अवतार जी । सा ।२९।
दूषम काल तणे परभावे, हुइ मांहो मां विषवाद जी ।
तो पणि तुरत खमावी लीजइ, पडित गुरु परसाद जी । सा ।३०।
सुगुरु वचन मानइ त उत्तम, श्रावक सुजस लहंत जी ।
भ.क जीव आसन्न सिद्धिगामी, अरिहंत एम कहंत जी । सा ।३१।
जिम नागोर खमा छत्तीसी, कर्म छत्तीसी मुलतान जी ।
पुण्य छत्तीसी सिद्धपुर कीधी, श्रावक नइ हित जाण जी । सा ।३२।
तिम संतोष छत्तीसी कीधी, लूणकरणसर मांहि जी ।
मेल थयउ माहमी मांहो मांहि, आणद अधिक उच्छाह जी। सा ३३।
पाप गयउ पांचां वरसां नउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर जी ।
प्रीति संतोष थय्यउ मांहो मांह, वाज्या मंगल तूर जी । सा ।३४।
संवत सोल चउरासी वरसइ, सर माह रह्या चउमास जी।
जस सोभाग थयउ जग मांह, सहु दीधी साबास जी । सा ।३५।
युगप्रधान जिनचंद सूरीसर, सकलचं. तसु शिष्य जी ।
समयसुन्दर संतोष छत्तीसी, कीधी सघ जगीस जी । सा ।३६।

आलोयणा छत्तीसी

ढाल—ते मुक्त मिच्छामि दुक्कडं एहनी

पाप आलोय तूं आपणा, सिद्ध आतम साख ।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवत इणि परि भाख ॥ पा ॥ १ ॥
साल हिया थी काढियइ, जिम कीधा तम ।
दुख दखिल नहीं सर पखा, रूपी लखमणा जेम ॥ पा ॥ २ ॥

शुद्ध गातारथ गुरु मिल्या, आतम शुद्ध कीध ।
तो आलोयण लीजियइ, नहीं तर सुख लीध ॥ पा ॥ ३ ॥
मोटो अपवाद थ भिक, पारका न्याइ पाप ।
लैबार छूटइ नहीं, अधर्मा न्याइ संताप ॥ पा ॥ ४ ॥

कीधा तिम को कहइ नहीं, जीम लउ थइ मूठ ।
कांटो भांगो आंगुली, खोलीजइ अंगूठ ॥ पा ॥ ५ ॥
गाहर मसाइ तू मूं किध, दूपम काल दुरंत ।
आतम साउ आलोइये, छूट अब कहत ॥ पा ॥ ६ ॥

कर्म निकाचित स किमा, ते भोगव्यां छूट ।
सिथल बंध बांध्या जिके, ते सो आपइ तूट ॥ पा ॥ ७ ॥
पृथ्वी पाणी आगिना, वाउ वनस्पति जीव ।
वेदनउ आरंभ तू करइ, स्वाद लोचउ सरीर ॥ पा ॥ ८ ॥

आंधउ बोलउ बोबडउ, मृगापुत्र ज्यूं दुख ।
अंगोपांगे गहनट, भाग्य खोट नी मस ॥ पा ॥ ९ ॥

बोलइ नहीं ते बापडउ, पिय पीडा होय।
वेदवो तीर्थंकर कहइ, आचारांग जोय ॥ पा ॥१०॥
आदी मूलो आदि दे कंद मूल विचित्र।
अनंत जीव छई अग्र में, पन्नवणा सूत्र ॥ पा ॥११॥
जीम नइ स्वाद मारयाजिके, ते मारस्यइ तुज्झ।
मन मांहे ममता थकां, थास्ये जिहां तिहां गुज्झ ॥ पा ॥१२॥
झूठ बोल्या घणा जीमडी, दीधा कूड कलंक।
गल जीभी थास्यै गले, हुस्यइ दुःखदो त्रिर्यंक ॥ पा ॥१३॥
परधन चोरया लूटिया, पाडघउ घसकउ पेट।
भूरयो भमि ससार मां, निर्धन थकउ नेट ॥ पा ॥१४॥
परस्त्री नइ भोगवी, तुच्छ स्वाद सू लेसि।
पिय नरके ताती पूतली, आलिंगन देसि ॥ पा ॥१५॥
परिग्रह मेल्यो कारमो, इच्छा जिम आकाश।
काब सरयो नहीं ते थकां, उत्तराध्ययन प्रकाश ॥ पा ॥१६॥
पापी पड़ी छंडसले, जीव ले पीवेसि।
आमिस सू नहिं तरि नरक मई, पापी मांहि पीलेसि ॥ पा ॥१७॥
इना असारिम करि पछर, गर्भ नांख्या पांहि।
परमाधामी ते तुज्झ ने, नित नांखिस्यै भाडि ॥ पा.॥१८॥
मोपा मा माहू नीधीया, लासी कोपा सहप।
आरंभी छठारिया राते ऊंचे सवद ॥ प ॥१९॥
गम्भा पहाव्या टांम्या, मांकस खाटला कूटि।
विरेष लेइ कमि पापिया, गलवो गपड कूटि ॥ पा.॥२०॥

राग द्वेष खाम्या नहीं, सौं औम्यउ तौं सीम ।
भनतानुबंधी ते थया, कहि करिस तू केम ॥ पा ॥२१॥
तड तडते नांख्या तावड़, सुन्या भान विचार ।
तड फड़ नइ जीव त मूआ, दया न रही लगार ॥ पा.॥२२॥
भणगल पाणी खूगरा, घोया नहीं वलाव ।
जीव संहार कियो घणउ, साधू फरस प्रभाव ॥ पा.॥२३॥
वैरी विष दे मारिया, गलै फाँसी दीध ।
त तुम्ह नइ पिण मारस्यै, मुकस्यै वैर सीध ॥ पा.॥२४॥
कोठ अंगाठी तई करी, पाप्यौ खिगड़ी कूड ।
रातें दीवो राखियो, पापे मरया रिंह ॥ पा ॥२५॥
माँ पो विछोड़या बाछड़ा, नीरी नहीं चारि ।
उन्हाले तिरस्या मुआ, कीधो नहीं सारि ॥ पा.॥२६॥
माँ बाप नई मान्या नहीं, सेठ सु असंतोष ।
धर्म नो उपगार नवि थयो, ओसिंगल किम होस ॥ पा.॥२७॥
बांधो टंगे पांगलो, कोडियो बार पोर ।
मरि फीट थाए पोस हु, कथा वचन कठोर ॥ पा ॥२८॥
मद्य नइ मांस भमख ले, खाधा दुस्यड हैंसि ।
मिच्छामि दुक्कड देह नै, पाप लेज तूं सुसि ॥ पा.॥२६॥
समकित पोसह कीया, लीधा साधु ना वेस ।
मन संवेग धरयो नहीं, कहि तू केम करेस ॥ पा ॥३०॥
ग्रन्थ नै प्रकरण समझता, कथा विपरीत कोय ।
मत्य अस मति मद अक्षर, सुसतो भ्रम होय ॥ पा.॥३१॥

वचन किके वीतरागना, ते वो सही साच ।
भगवती सूत्र घुरे मखी, वीर नी ए वाच ॥ पा ॥३२॥
कर्मादान पनरे कह्या, वलि पाप अढार ।
खिण खिण ए सहु खामिज्यो, संभरी संसारि ॥ पा ॥३३॥
इण भव परभव एहवा, कीधा हुवे जे पाप ।
नाम लेइ नइ खामज्ये, करिजे पछताप ॥ पा ॥३४॥
सरण कोई सागस्ये नहीं, देह नें नहिं दुख ।
पण मन वैराग वालज्ये, सही पामिस सुख ॥ पा ॥३५॥
सवत सोल अट्ठाणूए अहमदपुर मांहि ।
समयसुन्दर कहइ मई करी, आलोयणा उच्छाहि ॥ पा ॥३६॥

—०○•○०—

पद्मावती—आराधना

हिव राणी पदमावती, जीव रासि खमावइ ।
जाणपणु जगि ते भलु इण वेला आवइ ॥ १ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहंत नी साख ।
जे मइं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥
सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेऊकाय ना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥
दस प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार ।
बि ति चउरिन्द्री जीव ना, बि बि लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥

देवता तिरियंच नारकी, च्यार च्यार प्रकासी।
चउदह लाख मनुष्य ना, ए लाख चउरासी ॥ते०॥ ५॥
इणि भवि परभवि सेविया, जे पाप अढार।
त्रिविध त्रिविध करि परिहरू, दुरगति दातार ॥ते०॥ ६॥
हिंसा[1] कीधी जीवनी, बोल्या मिरषाद[2]।
दोष अदत्तादान[3] ना, मैथुन[4] उनमाद ॥ते०॥ ७॥
परिग्रह[5] मेल्यउ कारिमउ, कीधउ क्रोध[6] विशेष।
मान[7] माया[8] लोभ[9] मई किया, वलि राग[10] नइ द्वेष[11]। ते.॥८॥
कलह[12] करी जीव दूहव्या, दीधा कूड़ा कलंक[13]।
निंदा[14] कीधी पारकी, रति अरति[15] निसंक ॥ते०॥ ६॥
चाडी खाधी चउतरइ[16], कीधउ थांपण मोसउ[17]।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नउ, भलउ आणयउ भरोसउ[18] ते ॥१०॥
खाटकि नइ भवि मई किया, जीव ना वध घात।
चिड़ीमार भवि चिड़कला, मारया दिन रात ॥ते०॥११॥
मच्छीगर भवि माछला, झाल्या जल वास।
धीवर भील कोली भवे, मृग मांड्या पास ॥ते०॥१२॥
काजी मुल्ला नइ भवे, पढी मंत्र कठोर।
जीव अनेक जबह किया, कीधा पाप अघोर ॥ते ॥१३॥
कोटवाल नइं भवि किया, आकरा कर दंड।
बंदिवान मराविया, कोरड़ा छड़ि दंड ॥ते०॥१४॥
परमाधम्मी मइ भवे, द्या नारकि दुक्ख।
छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ते०॥१५॥

कुंभार नइ भवि जे किया, नीमाह पजावा ।
देखी भवि तिल पीलिया, पापी पेट भराव्या ।।ते०।।१६।।
हाली नइ भवि हल खड्या, फाड्या पृथिवी पेट ।
घड निंदाग्या किया घणा, दीधी बलद चपेट ।।ते०।।१७।।
माली नइ भवि रोपया, नाना विधि वृक्ष ।
मूल पत्र फल फुल ना, लागा पाप लक्ष ।।ते०।।१८।।
अद्धोवाई आंगमी, भरया अधिक्ष भार ।
पोठी ऊठ कीड़ा पड्या, दया न रही लगार ।।ते०।।१६।।
छीपा नइ भवि छेतरयठ, कीधा रांगणि पास ।
अगनि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ।।ते०।।२०।।
शरपणइ रण जूझता, मारया माणस वृन्द ।
मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला नइ कन्द ।।ते०।।२१।।
खाणि खणावी धातु नी, पाणी उलिंच्या ।
आरम कीधा अति घणा, पोतइ पाप सच्या ।।ते०।।२२।।
अंगार कर्म किया वली, घरमइ दव दीधा ।
सुस कीधा वीतराग ना, कूड़ा कोस पीधा ।।ते०।।२३।।
बिल्ली भवि ऊंदरि लीया, गलोई हतियारी ।
मूढ गमार तणइ भवे, मइ जूं लीख मारी ।।ते०।।२४।।
भाभड़-भूंजा नइ भवे, एकेन्द्री जीव ।
ज्वारि चिणा गोहुं सेकिया, पाडता रीव ।।ते०।।२५।।
खांडण पीसण गारि ना, आरम अनेक ।
रांधण इंधण आगि ना, किया पाप उदेक ।।ते०।।२६।।

विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पड्यां किया, रोदन विषवाद ॥ ते०॥२७॥
साधु अनइ श्रावक तणा, व्रत लेई भांगा ।
मूल अनइ उत्तर तणा, मुझ दूषण लागा ॥ ते०॥२८॥
सांप विच्छू सींह चीतरा, सकरा नइ समली ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते०॥२९॥
सूयावडि दूषण घणा, वलि गरभ गलावा ।
जीवाणी ढोल्या घणा, शील व्रत भंजाया ॥ ते०॥३०॥
भव अनंत ममता धर्या, कीया कुटुम्ब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरू, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते०॥३१॥
भव अनंत ममता धर्या, कीया देह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरू, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते०॥३२॥
भव अनंत ममता धर्या, किया परिग्रह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरू, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते०॥३३॥
इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरू, करू जनम पवित्र ॥ ते०॥३४॥
राग वयराडी जे सुणइ, ए त्रीजी ढाल[1] ।
समयसुन्दर कहइ पाप थी, छूटइ ते ततकाल ॥ ते ॥३५॥

इति आराधना संपूर्णा । (स्वयं लिखित पत्र से)

—०— —०—

[1] वास्तव में यह स्तवन कृति न होकर चार प्रत्येक बुद्ध चौपई की एक ढाल है ।

वस्तुपाल तेजपाल रास

—०x०—

सरसति सामिणि मनि धरु, प्रणमु सुह गुरु पाय ।
वसतपाल तेजपाल नउ, रास कहुं सुपसाय ॥१॥
पोरवाड वंसइ प्रगट, जिण सासण सिणगार ।
करणी मोटी जिण करी, सहु जाणइ संसार ॥२॥
चंद्र प्रचंड अनुक्रमइ, सोम भनइ आसराज ।
वस्तपाल तेजपाल बे, तसु नन्दन सिरताज ॥३॥
माता कुमरि उरि रतन, पाटण नगर निवास ।
वीरधवल राजा तणा, मुहुता पुण्य प्रकास ॥४॥
वरप अढार गया पछी, वरस अठारह साम ।
वसतपाल तेजपाल बे, धम करणी कर ईम ॥५॥

ढाल पहिली—भरत नृप भावसु ए, पहली ढाल

धरम करणी करइ ए, वस्तपाल तेजपाल साह । ध ।
साते खेत्रे वित वावरइ ए, ल्याइ लछमी नउ लाह । १ । ध ।
जैन प्रासाद करावीया ए, तेरह सइ नइ ल्यार । ध ।
तिसहस जिणसइ करावीया ए, जीरण चैत्य उद्धार । २ । ध ।
सगपंच बिंब भरावीया ए, सवा लाख अविमार । ध ।
अढार कोडि द्रव्य लगाडीया ए, त्रिणह भराया भडार । ३ । ध ।
पांचसइ सिंहासन दांत ना ए, नव सइ चउरासी पोसाल । ध ।
समोसरण पटकूलना ए, पांचसइ पांच रसाल । ४ । ध ।

सेत्रुञ्ज द्रम्य सफल कीयउ ए, भढार कोडि लन्नु लाख। ध।
गिरिनारि द्रम्य सफल कीयउ ए, भढार कोडि असीलाख। ५।ध।
आबू द्रम्य सफल कीयउ, लाख त्रेपन कोडि बार। ध।
नेमि प्रासाद मढावीयउ ए, सूत्रगवसही उद्धार। ६। ध।
आमस्ससाला सातसइ ए, सातसइ सत्रूकार। ध।
प्रासाद कराव्या महसरा ए, ते पणि त्रियडे हजार। ७। ध।
तापसना मठ सातसइ ए, चउमठि करावी मसीति। ध।
जिन बिंब नी रचा मसी ए, म्लेच्छ तणाइ मनि प्रीति। ८। ध।
पाषाण बद्ध करावीया ए, सरोवर चउरासीय। ध।
वारू सयवर[1] बावडी ए, च्यार-सइ चउसठि कीय। ९। ध।
मोटा गढ़ मढावीया ए, छत्रीस[2] पासाण बद्ध। ध।
ए सहु सप रचा मणी ए, परिश्रम पाथि किद्ध। १०। ध।
परब मढावी च्यारसइ ए, पर उपगार निमित्त। ध।
पालती चारम सत्रावढी ए, बारसउ चउरासी नित्त। ११। ध।
तीरथ त्रिण यात्राविया ए, शत्रुंज १ आबु २ गिरनार ३। ध।
सोनहियाँ त्रिहुँ लाख मउ ए, एकेकउ भीमपार १२। ध।
बि लाख सोनहियाँ तसउ ए, खंभायत व्यय कीध। ध।
वस्तुपाल तेजपालना ए, सफल मनोरथ सीध। १३। ध।
उदयप्रभसूरि प्रमुख ना ए, पदठवर्णा एकवीस। ध।
महुवइ सेवी करावीया, आचार्य पूरी जगीस। १४। ध।
जैन ना रथ नीपजावीया ए, दांत तणा चउवीस। ध।
जैन देहरासर सागना ए, ते पणि एकसउ वीस। १५। ध।

१ चारसय वर २ बत्रीस

चालता साथि पाखी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव।
तेत्रीस सइ दानशाला दाखी, बारह सइ सागना मुनिसाला।१
सप मांहि मालस सात लाउ, ए सहुना परबंधे साख।
सरसती कंठाभरण बिरूद, चउवीस बोलइ सह सुमद।६
वल वादल वैरा संगोरी, फलहर नेजा धजा अति मोटी।
सबल माडंबर रयणी रीति, सुप चालइ सहु सतोप प्रीति।७
संघत पत्तंप्र तत्रीस बार, सप्राम करि नइ पामी सार।
पहली सातरा बारह जात्रा कीधी, सम्रक्त सयवी पदवी लीधी।८
तिथ सहु पुण्यकरानी वात, जे द्रव्य खरच्या तेह कहात।
तेत्रीसह कोडि चउदह लाख, म्हदार सहस आठसह सहु साख।९
निहु कोडि ए ऊन्या सोनहिया, पुण्यपरह खरच्यात कहिया।
विस सासय मांहे सोह पहामी,बारसह अठाणुँ देवगति पामी।१
वस्तपाल तेजपाल पुण्य प्रधान, जेह नइ पगि २ प्रगव्या निधान
पुण्य थी पामी तेप्रम सुंदी, दषिसवरत संघ आसा पूरी।१
इम जाणी सहु को वित सारू, धन खरचउ विवहारी वारू।
सफल करउ अपयउ अवतार, जिम तुम्हे पामउ भवनउ पार।१
श्री खरतरगछ श्री जिनचंद,शिष्य सकलचंद नाम मुर्णिद।
समयसुन्दर पाठक तसु सीस, रास भण्यउ श्री संघ जगीस।१
संवत सोल सइ ब्यासीया वरषे, रास कीयउ तिमिरीपुरी हरषे।
वस्तपाल तेजपाल नउ ए रास, भणतां सुणतां परम हुलास।१

इति श्रीवस्तुपाल तेजपाल रास सम्पूर्णः।

पुजरक्ष ऋषि रास

श्री महावीर ना पाय नमू, ध्यान धरु निशदीश।
तीरथ वर्तै जेहनो, वरस सहस इकवीस ॥ १ ॥
साधु साध सहु को कहै, पिण साधु छै विरला कोइ।
दु षम काले दोहिलो, समस्त पुण्य मिलइ सोय ॥ २ ॥

पण तप जप नी खप करै, पालइ पचाचार।
सुणे बोल्यो साधु ते, वंदनीक व्यवहार ॥ ३ ॥
मत्ता दान शील भावना, पिण तप सरिखो नहीं कोय।
दुःख दीजइ निज देह नै, 'बात बड़ा न होय' ॥ ४ ॥
मुनिवर चउद हजार मई, श्रेणिक सभा मझार।
वीर जिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ ५ ॥

वासुदेव पूछै वानति, साधु छै सहस अढार।
कृष्ण अधिको जिनवर कहै, ढढण ऋषि अणगार ॥ ६ ॥
ए तपसी आगइ हुआ पणि हिवे कहुँ प्रस्ताव।
आजनइ कालइ एहवा, पुञ्जा ऋषि महानुभाव ॥ ७ ॥
श्री पारवचंद ना गच्छ माहि, ए पुञ्जो ऋषि आज।
आप तर नै तारवै, जिम मछ मकरी जहाज ॥ ८ ॥
पुञ्ज ऋषि पृच्छा परम, सयम लीधो सार।
कीधा तप जप आकरा, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ९ ॥

ढाल

गुजरात मांहि रायिज गाम, फरडुआ परिख गोत्र नो नाम।
बाप गोरो माता धन बाई, उत्तम जाति नहीं खोट कांई ॥
श्रीपार्श्वचंद्रसूरि पाट समरिचंद्रसूरि, श्रीराजचंद्रसूरि विमलचंद्र सूरि।
तेहना वचन सुणि प्रतिबुद्धो, असार संसार जाण्यो व्रत लीधो ॥११॥
वैराग्य आपणो मन वाल्यौ, कुटुंब माया मोह जंजाल टाल्यो।
संवत् सोलसइ सितरा वर्षे, संयम लीनो सद्गुरु परखई ॥१२॥
दिक्षा महोत्सव अहमदाबादइ, भावक कीधो नवलै नादै।
पुञ्जो ऋषि सुद्धो व्रत पालइ, दूषण सघला दूरइ टालइ ॥१३॥
ए ऋषि पुञ्जो सूझतो ल्ये आहार, न करै लालच लोभ लिगार।
ऋषि पुञ्जो अति रूडो होवइ, जिन शासन मांहि शोभ चढावइ ॥१४॥
तेहना गुण गातां मन मांहि, आनंद उपजै अति उच्छाह।
श्रोम पवित्र हुवे मस सयतां, श्रवण पवित्र थाये सांभलतां ॥१५॥

ढाल

ऋषि पुञ्जे तप कीधो ते कहुं, सांभलजो सहु कोई रे।
आज नइ कालै करइ छइ एहवा, पणि अनुमोदन थाय रे ॥१६॥
आठ उपवास कीधा पहिली, आठ वलि चोवीहार रे।
मासखमण कीधा दोय मुनिवर, बीस बीस व वार रे। १७॥
पंच-खमण पैंतालीस कीधा, सोल कीधा सोलह वार रे।
चउद चउद चवदे वारह कीधा, तेर तेर करण्या तेरह रे ॥१८॥

बार बार बारह बार कीधा, दस दस चउ चौवीस रे ।
बे सै पचास अठाइ कीधी, मन संवेग सुँ मेल रे ॥१६॥
छ छ कीधा वलि सित्तर दिन लगें, पारणें छासि आहार रे।
त मांहि पिण एक अठाइ, कीधी इण अणगार रे ।२०॥
बासठ दिन तांइ छठि कीधी, पारणइ छासि आहार रे ।
बार बरस लगि विगय न लीधी, ऋषि पु जा नैं मावासरे ॥२१॥
बरस पांच लग वस्त्र न ओढ्यो, सह्यो परिसह सीत रे ।
साढा पांच बरस सीम आन्ते, सूतो नहीं मुनिदीत रे ॥२२॥
अभिग्रह एक कीधो वलि एहवो, चिठी लिखी तिहां एम रे।
च्यार जणी पूजा करि इहां, सो पी पहिरावइ सुप्रेम रे ॥२३॥
तौ पुजो ऋषि ल नहीं तर, जावजीव तांइ सुम रे ।
ते अभिग्रह तीजें वर्षे फलीयो, थी सघ नी पहुँची हुम रे ॥२४॥
इम परि तह अभिग्रह पहुतो, ते सांभलज्यो संत रे ।
अहमदावादनी सघ नरोडइ, वांदवा गयो परमात रे ॥२५॥
तिण अवसर पूनां गमतांद, नीनी गजुला च्यार रे ।
पूजा करि बांदी निहरायो, रमनो पी मुनिवार रे ॥२६॥
मांगे लाभ थयो भाविका न, टाम्यो तिहां अनराय रे ।
इण विहुँ नैं मन पंक्ति पम्तु नो, उतराय नति थाय रे ॥२७॥
वलि धमा अणगार तपोधप, कीधो नव मासी मास रे ।
स मांहि पी अठाइ उन्वास च्यार अठम च्यार नाम रे ॥२८॥
दमास मीस अभिग्रह फाधा, कोइ फल्यो उपवास च्यार रे ।
उपवास मोन फल्यो पार, एद सर ना अविकार रे ॥२९॥

छट्ठम अट्ठम आकरा तप कीधा, आपि पुं ज वलि जेह रे।
तेह तणो कहुँ पार केसी, पहलो नावे छेह रे ॥३०॥
अठावीस वरस लगि तप कीधा,ते सफला कथा एम रे।
आगलि वलि करिस्यै आपि पुं ओ, ते आसिस्यइ तेम रे॥३१॥

ढाल

पुंजराज मुनिवर भलो, मन भाव मुनीसर मोटे रे।
उग्र करइ तप आकरौं, भवियण जन मन मोहइ रे ॥३२॥
धन कुल कलवी साखीयड, बाप गोरो ते पिता भम रे।
धन धना माय कूखडी तिहां, उपनो एह रतन रे ॥३३॥
धन जिमलचंद सूरि जियौ, दीख्या दीधी निज हाथ रे।
धन श्री जयचद्र गच्छ धणी, बसु साधु रहै ए पास रे ॥३४॥
आज तो तपसी एहवो, पुंजा आप सरीखो न दीसइ रे।
तेहने वंदता निहरास्यां, हरखे करि हियडौ हींसइ रे ॥३५॥
एक बे वैरागी एहवा, श्री पासचंद गच्छ माँहि सवाई रे।
गच्छनायक गच्छ माँहि, श्री पासचंदसूरि नी पुण्याई रे॥३६॥
संवत सोल अठाणुवइ आसाढ पचमी अजुआलइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाय रे ॥३७॥

— —

केशी प्रदेशी प्रबन्ध

धन धन अयवंती सुकुमालनइ एहनी ढाल ।

श्री सावत्थी समोसर्या, पांचसइ मुनि परिवारो जी ।
चउनाणी चारधिया, केशी भमण कुमारो जी ।१।
केशी नइ करु वंदना, पारसनाथ सतानो जी ।
परदेशी प्रतिबोधियउ, मिथ्यामति अज्ञानो जी ।२। के । आं
श्रावक थयउ चित्र सारथी, ते सह गयउ सेथोजी ।
परदेशी पापी हुतउ, कहइ जीव जुदउ न कथो जी ।३। क.।
केशी प्रदेशी मेला थया, चित्र प्रपच थी दोयो जी ।
प्रस्न उत्तर थया परगड़ा, ते सुणज्यो सहु कोयो जी ।४। के ।

ढाल बीजी—नींबड़ानी

प्रश्न करइ परदेशी एहवउ, परलोक मातु कस्यो जी ।
जीव नइ काया ते नहीं जूजुआ, इह लोक ऊपरि प्रेमो जी । १ प्र ।
दादउ हुँतउ माहरइ दीपतउ, करतउ पाप अघोरो जी ।
तुम्हारइ बचने ते नरके गयउ, जिहां वेदन छइ जोरो जी । २ प्र ।
हुँ पणि तेहनउ अति वाल्हम हुँतउ, ते आविनइ कहतउ जी ।
पाप म करिज्ये तु माहरी परि, दुःख देखिस दुर्दन्तो जी । ३ प्र ।
केशी गुरु उत्तर कहइ एहवउ, सुणि परदेशी रायउ जी ।
जीव काया छइ बेउ जूजुआ, कुगति थकी समझायउ जी । ४ प्र ।
केशी गुरु उत्तर यइ एहवउ ॥ आंकणी ॥
सुणि परदेशी ताहरी भारजा, सूरिकंता नामो जी ।
भोगवतउ देखइ तु तेहनइ, नरनइ स्यु करइ धामो जी । ५ के.।

छट्ठम अट्ठम आकरा तप कीधा, अपि पुंजे वलि जेह रे।
तेह तणो कहुं पार कठी, कहतां नावै छेह रे ॥४॥
अट्ठावीस वरस लगि तप कीधा,ते सघला कह्या एम रे।
आगलि वलि करिस्यै ऋषि पुंजो, ते आखिस्यइ तेम रे॥११॥

ढाल

पुंजराज मुनिवर वंदो, मन माहे मुनीसर सोहै रे।
उग्र करइ तप आकरो, भवियण जन मन मोहइ रे ॥१२॥
धन कुल कल्लेवो जाणीयइ, बाप गोरो ते सिरि धन्न रे।
धन धना माइ कूखड़ी जिहां, उपनो एह रतन्न रे ॥१३॥
धन विमलचंद सूरि जिणे, दीख्या दीधी निज हाथ रे।
धन श्री तपगच्छ गच्छ धणी, जसु साधु रहै एह साथ रे ॥१४॥
आज तो तपसीयड़ो, पुंजा ऋषि सरीखो न दीसइ रे।
तेहनै वंदता सिद्धगजनों, हरखे करि हियड़ो हीसइ रे ॥१५॥
एक वइरागी पुंजा, श्री पासचंद गच्छ मांहि मवई रे।
गरुअड़ गछइ गच्छ मांहि, श्री पासचंदसूरि नी पुण्याई रे॥१६॥
संवत सोल अगणुत्र आसाढ़ पंचमी अजुआलइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाइ रे ॥१७॥

तउ हुँ पांघू मारू सेवनइ, ते करे मूक्ति सगारो जी।
दुर्गंध नर कहि श्राद्ध हुँ पहचु, मत करउ गरू मसकारो जी। ६ क।
तउ तु मूरख ना मूक्त नहीं, जिम पशि नारकी जीवो जी।
परमाधम्मी खिण मूकइ नहीं, तिहाँ पाच्यउ करइ रीवो जी। ७ कं।
वलि प्रदेशी कहइ वदी हुंती, करती तुमारउ धर्मो जी।
तुम्हारे वचन त थई देवता, सुखी दुरुयइ शुम कर्मो जी। ८ क।
हुँ पणि हातो नर अधम हुँतउ, तिण पणि न कहउ मुज्झो जी।
जीवदया पाले जिन धर्म करे, सुरग संपत्ति कहइ तुज्को जी। ६ क।
सुणी नृप स्नान करि तु नीमयउ, देहरा भणी सुपरिचो जी।
विष्ठा घर मांहि वइठउ आदमी, तेडइ तु आवि तुरतो जी।१० क।
तिहाँ तु आपद कहइ आउ नहीं, तउ ते आवइ कमो जी।
काम भोग सपत्ताणा त रहइ, इहाँ दुर्गंध छइ पमो जी।११ क।
केगवास चोर कहाली आवी प्रियउ, मइ ते परीक्षा निमित्तो जी।
लोह कुमी मांहि घाली घाठउ, ढाकउ अपुयउ बार निचिन्तो जी।१२
वलि कुमी उघाडो पखडा, मूयउ दीठउ विवरउ जी।
नाउ त जीव हुंतउ तउ किहाँ गयउ, छिद्र न दीसइ सगारउ जी।१३।
कूडागार शाला जिहाँ छिद्र नहीं, ते मांहि पइठउ कोयो जी।
वउ ते भेरि बजाइ जोर सुं, शब्द सुणइ तु सोमउ जी।१४ क।
कहि त शब्द किहाँ थी नीसर्यउ, छिद्र पाच्यउ नहीं कोयउ जी।
तिम ए जीव मरूप तु आखिन्य, अप्रतिहत गति होयोजी।१५ क।
चोर कुमी मांहि घाल्यउ मारिनइ, वलि पखडा त दीठउ जी।
जीवाकुल कृमि दही तिहाँ, छिद्र तिहाँ किम ते पइठउ जी।१६ प्र।
लोह नउ गोलउ धमती मांहि, धम्यउ लाल थयउ रक्तरूसउ जी।

ोगउ पडिक्कमणउ करइ, साध साधवी नइ घइ दानो रे ।
ीलग्रत शुद्ध पाइ, रात दिवस करइ धर्मध्यानो रे । २ । प.।
नेज स्वारथ मन-पहुंचतां, निज सूरिकन्ता नारो रे ।
ापिणी पति नइ विप दियउ, पिण वेदस्यइ दुःख मारो रे । ३ । प ।
मशसण नइ आराधना छेहडइ, करि सद्‌गुरु साखि रे ।
ाप आलोइ पडिकमी, वलि मिच्छामि दुक्कड दाखि रे । ४ । प ।
काल करीनइ ऊपनउ, पहिलइ देवलोक मझारो रे ।
सूरियाभ नामइ देवतां, आउख पल्योपम चारो रे । ५ । प ।
आमलकल्पा आविनइ, श्री महावीर नइ आगइ रे ।
बत्तीस बद्ध नाटक कियउ, रूढि परि मन नइ रागिइ रे । ६ । प ।
भगवंत नइ भव पूछिया कह्यउ, तु छइ चरम शरीरी रे ।
सूरियाभ बात्ता सहु, गौतम पूछी कहि वीरो रे । ७ । प ।
सूरियाभ तिहां थी चवी, उपजस्यइ महा-विदेहो रे ।
उत्तमकुल ते पामिस्यइ, पणि नहीं करइ कुटम सनेहो रे । ८ । प ।
थविर पासि संजम धरी, तप आम आदरस्यइ रे ।
केवलज्ञान लही करी, आठ कर्म तणउ अंत करिस्यइ रे । ९ । प ।
रायपसेणी सूत्र थी, केशी प्रदेशी प्रबन्धो र ।
समयसुन्दर कहइ में कियउ, सज्झाय मयी सम्बन्धो रे ।१०। प ।

सर्वगाथा ५७ ॥ इति श्री केशी प्रदेशी प्रबन्ध समाप्त ।
सं १६९९ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने श्रीलोकिकशरण श्री अहमदाबाद नगरे श्रीहाजापटेल पोल मध्यवर्ती श्रीबृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक श्रीजिनसागरसूरि विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायै प हर्षकुशल गणि सहाय्ये ।

इहां भक्ति बोलउ दृष्टांत दाखव्यउ, मारमारक नउ विचारो जी।
मारवाड़ तणउ कनकी भली, साज बिना नाकरो जी ।२६।
ग्रन्थ वांचो नइ सगलु समझज्यो, किहां विस्तर संबंधो जी।
केशी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबन्धो जी ।३०।

ढाल बीजी—रुक्मिणी राणी इण परि बोलइ भमि लिया कुण धु पट बोलइ ।

इत्यादिक प्रश्नोत्तर करतां, हेतु युगति हिया मांहि धरतां ।
परदेशी राजा प्रतिबोध्यउ, केशी गुरु श्रावक कियो सधउ । २।धु।
मिथ्यात्व नी मति दूर निवारी, साची सद्दहणा मन धारी । ३।धु।
हिंसा दुर्गतिना दुख दाखवा, जीव दया साची करि दाखी । ४।धु।
जूदउ जीव नइ जूदी काया, परलोकगामी जीव अकाया । ५।धु।
मइ तसी वात आम्ही निवारइ, मई वास्तु तुमे ज्ञानि निवारइ। ६।धु।
पणि आपणउं हुं बांकउ बोल्यउ, हेतु युगति करवां हियउ खोल्यउ ।७।
आपणउ सगलउ अपराध खामइ, केशी गुरु नइ निज शीश नामइ।
श्रावक ना बारह व्रत लीधा, जन्म जीवित सफला सहु कीधा। ८।धु।
उतपति सातसै गामनी कीधो, विहुं बांटे बांटी नइ दीधी ।१०।धु।
राज, अंतेउर, पुण्य नइ खातइ, इस परिठि रहइं दिन रातइ ।११।धु।
रमणिक पहिलुं रूडो परि गमनु भलो परि मान्यु गुरु भाख्यु ।१२।धु।
बीजी ढाल थई ए पूरी, समयसुन्दर कहि वात अपूरी ।१३।धु।

ढाल ३—राग धन्याश्री—पास जिन जुहारियइ, एहनी ढाल

परदेशी श्रावक थयउ, बारह व्रत शुभ पालइ रे ।
मूल धनइ उपर तथा, दूषण ते सगला टालइ रे । १।धु।

भला करइ रात मेटणा, चदन घोला अमीरो जी।
एक मोती मूँगिया, घोली चरणा चीरो जी॥
ढी मइ चरणा चीर सखरा, सु सहा सुमय द ए।
रंग स्यु रहइ जसोभद्रा, जाणइ खेड प्रसाद ए॥
रायि मांडयउ राय एहवा, मन धीरजि ना मेटणा।
स्ढरीक ध्रमातुर थयउ घणु, भल भला करइ मेटणा॥ ४ ॥
एक दिन एकान्ते आव ए, प्रारथना करइ राजो जी।
भोग भोगवि भला मुज्झ सु, मन सेती मन लायो जी॥
मन सेती मन लाय मुझ सु, मकरिस ताणा ताण ए।
वहरउ जोवन जाइ लहरे, सु छइ चतुर सुजाण ए॥
एहवा धीरजि रहइ त घन, परलोक सुउ पात ए।
पसि करम नइ वसि पड्यउ प्राणी,एक दिन एकांत आवए॥ ५ ॥
एह सराग वचन सुणी, मुहढइ आंगुली दयो जी।
भउआई कहइ मत भणइ लोक मइ लाज मरेयो जी॥
लोक मइ लाज मरय बांधव, थकी इम किम बोलियइ।
धीरिम धरता धरम थायइ, धरम थी नवि डोलियइ॥
उपाय मांड्यउ अधम राजा, माई नउ मारण भणी।
धमान्ध माणस किसु न करइ, ए सराग वचन सुणी॥ ६ ॥
माइ मारि मूंहउ छिपउ, हुयउ हाहारबो जी।
रास रडरण नारी सती, शील वडउ समारो जी॥
शील वडउ जाणी जसोभद्रा, साथ मई मेली थई।
दुःख स्यु घणु दुःख करतो, सावथी नगरी गई॥

क्षुल्लक ऋषि रास

राग—नाम्बी । इणदिन महामन ध्यायइ अथवा श्री नवकार मनि ध्यायइ, ए गीता नगर नो राग

पारसनाथ प्रणमी करी, भालोर ज्योति प्रकाशो जी।
मात भगति सुं हुं भणुं, ऋषि क्षुल्लक नउ रासो जी॥
ऋषि क्षुल्लक नउ रास हुं भणुं, गिरुयाना गुण गावतां।
भांजसी बीज पवित्र थायइ, मानव नइ संभलावतां॥
ए भरत क्षेत्र मइ अति मनोहर, अयोध्या नामइ पुरी।
तिहां लोक भावि समकित सहु को, पारसनाथ प्रणमी करी॥ १॥

राज करइ तिहां राजियउ, पुण्डरीक नाम नरिंदो जी।
गुणसुन्दरी तसु भारिजा, पामइ परमाणंदो जी॥
पामइ परमाणंद तेहनइ, कंडरीक भाई भलउ।
भारिजा तेहनइ जसोभद्रा, रूप शील कला निलउ॥
एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ।
भोगवु जिम तिम करी भउजाई, राज करइ तिहां राजियउ॥ २॥

कामातुर न करइ किसु, क्रोधी किसु न करेउ जी।
लोभी पिण न करइ किसु, आप मरइ मारेवउ जी॥
आपण मरइ न मारेउ कोइ, अकारिज करिय जिसु।
करतो न लाजइ पछइ परभवि, मद पीधइ माणस जिसु॥
पामियउ प्राणी इम न जाणइ, नरग ना दुख देखिसु।
इह लोक मांहि दुख्यइ अपजस, कामातुर न करइ किसु॥ ३॥

भल भला करइ रत्न भेटणा, चंदन चोवा अबीरो जी ।
माणिक मोती मूंगिया, थोली भरणा थीरो जी ॥
थोली भइ भरणा थीर सखरा, सुखडी सुखन द ए ।
रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, आवइ जेठ प्रसाद ए ॥
उपाय मांड्यउ राय एहवा, मन धीरिज ना भेटणा ।
पुण्डरीक कामातुर थयउ घणु, भल भला करइ भेटणा ॥ ४ ॥
एक दिन एकान्ते आवि ए, प्रारथना करइ रागो जी ।
भोग भोगवि भला मुझ सु, मन सेती मन लायो जी ॥
मन सेती मन लाय मुझ सु, मकरिस ताण्या ताण ए ।
जाइरउ जोवन जाइ लहरे, तु छइ चतुर सुजाण ए ॥
एहवइ धीरिज रहइ छ धन, परलोक सुख पाव ए ।
पणि करम नइ वसि पडयउ प्राणी, एक दिन एकांत आवए ॥ ५ ॥
एह सराग वचन सुणी, मुहडइ आंगुली देयो जी ।
भउजाई कहइ मत भणइ लोक मइ लाज मरेयो जी ॥
लोक मइ लाज मरय बांधव, थकी इम किम बोलियइ ।
धीरिज धरता धरम थायइ, धरम थी नवि डोलियइ ॥
उपाय मांड्यउ अधम राजा, भाई नउ मारण भणी ।
कामान्ध माणस किसु न करइ, ए सराग वचन सुणी ॥ ६ ॥
भाइ मारि मूंक्यउ किणइ, हुयउ हाहाकारो जी ।
शील रतन नारी सता, शील बन्ध समारो जी ॥
शील करउ जाणी जसोभद्रा, माय माई मेली पई ।
हा दैव ! स्युं थयु दुःख करतो, सावथी नगरी गइ ॥

पाचरी पहुँती परमसाला, साचवी परम सुसासियउ ।
चारित लीधउ चतुर नारी, माई मारि मुंडउ कीयउ ॥ ७ ॥

ढाल बीजी । राग—[illegible] गुझिया गिरि शिखरि सोहइ
अथवा—भूम्कि रे तू भूम्कि माखी ए गीत नी ढाल

भली साधवी यशोभद्रा, पालइ पचाचार रे ।
विनय वेयावच करइ घणू, गिणइ गुरुणी नी कार रे । १ । भ.।
एक दिन पेट नउ गरभ दीठउ, गुरुणी पूछ्यउ सु एह रे ।
पति नउ गरभ ए हुतउ पहिलउ, नहिं पछिलउ निसंदेह रे ।२। भ.।
पर्छ तु बाहिर म आई, करिस्यां भल्ले सहु काज रे ।
गुरु गुरुणी मा बाप सरिखा, राखै कोरू लाज रे । ३ । भ.।
पूरे मासे पुत्र जायउ, नामइ खुल्लक कुमार रे ।
सज्यातरी श्राविका पाल्यउ, पइदा पोश प्रकार रे । ४ । भ.।
आठ बरस नउ थयउ एहवइ, माता नी मानी सीख रे ।
आचारिज श्री अजितसूरि नइ, पासइ लीधी दीख रे । ५ । भ.।
एत्र सिद्धांत भण्या भली परि, बार बरस थया जाम रे ।
हरिहर भला जिम हराम्या ते तसु आप्यउ काम रे । ६ । भ.।
मा पास जाइ कहइ मुनिवर, मन नहीं माहरउ ठाम रे ।
मा न्यइ ओघउ मुहपती तु को नहीं माहरइ काम रे । ७ । भ.।
कठिन लोचनइ कठिन किरिया, कठिन मारग जोग रे ।
दीक्षा पालिमउ नहीं छोडिसउ, हुं भोगविसुं काम भोग रे । ८ । भ.।

साचवी माता कहइ सांभलि, सु बा ए काम भोग रे ।
आलिंगन छोड़ पूतली सु, परमाहम्मी प्रयोग रे । ६ । म ।
इण भाणइ आगल किस्यूँ छइ, प्रत्यक्ष मीठउ प्रेम रे ।
गुरुणी कीर्तिमती छइ माहरइ, ते कहइ तु करि तेम रे ।१०। म ।
सीख घउ मुझ शील न पलइ, मुझ तुमे मात समान रे ।
बार बरस रह्यो मां नइ आग्रहइ, बार बरस मुझ मान रे ।११। म ।
क्षुल्लक मांहि दाक्षिण्य मलउ, त पणि मानी बात रे ।
बार बरस जिम तिम रह्यो, पणि घुरिली न गई धात रे ।१२। म ।
गुरुणी कहइ गुर पासि जा तु, जिणि तुँनइ दीधी दीख रे ।
गच्छनायक पासि जइ कहइ, सामी घउ मुझ सीख रे ।१३। म ।
गच्छनायक प्रतिबोधि दीधउ, पणि लागउ नहीं कोई रे ।
करम विवरउ न घइ त्यां सीम, जीव नउ जोर न होइ रे ।१४। म ।
आचारिज कहइ गच्छ अम्हारउ, उपाध्याय नइ आपि रे ।
एकला अम्हे कांइ न करु, सहु उपाध्याय साथि रे ।१५। म ।
मन विना पणि वचन मानी, पहुँतउ उपाध्याय पासि रे ।
उपाध्याय कहइ परखि इणि परि, वलि सउ विम पचाम रे ।१६। म ।
बार बरस लगि रह्यउ अबोलउ, दाक्षिण्य गुण निसदीस रे ।
ऊपल चित चित रह्यउ इणी परि, बरस अठ्तालीस रे ।१७। म ।
आंपणी माता पासि आव्यउ, बोलइ बेकर जोडि रे ।
मा आेपउ हु रहि न सकु, जाउ छु व्रत छोडि रे ।१८। म ।
मोहनी वसि कहइ माता, सपति निघु नहीं सुख रे ।
पीवरिया पासि आ तु पाधरउ, देखिस नहीं तरि दुःख रे ।१९। म ।

रतन कंबल सु पुडी स्यइ, फरिस्यइ ए सहु काम रे।
इम दीठइ आपस्यइ तुम्ह नइ, आयउ आपिसउ राज रे।२०। म.।
रिपडउ रमतउ थकउ, पाम्यउ संबल वित्त रे।
दवावलठ आम्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे।२१। म.।

ढाल श्रीजी जाति परिया नी। सखि आदम कोडि सु परिवरे जिनु
आये तोरण बारि रे यह गीत नी ढाल ॥

तिणि अवसर नाटक तिहाँ राजा, आगला पइइ राति रे।
मिली बलक लोगाइ, अपरो मोटी बहु भाँति रे। १।
नइई नाटक करइ, सुखि गायइ मीठा गीत रे।
नर नारी मोही रहा, पणि रीझइ नहीं चित रे। २। न.।
राति सारी नइइ रमी, पणि यइ नहीं राजा दान रे।
नइई नीरस थइ ममतो, मांगइ दान मान रे। ३। न.।
दिसगीर दान बिना थइ, ऊँघ सती आंखि घोलाई रे।
नडुयउ गाथा कही, रंग मइ भग म करे काई रे। ४। न.।

गाथा यथा—सुडु गाईयं सुडु वाइयं सुडु नचिय साम सुन्दरि
अणुपालिय दीह राएं सुमिर्ण्डे ते मास मास माय ए ॥१॥

रतन कंबल सुमरु दीयउ, कुमरइ दिया कुण्डल दोइ रे। ~
सुरवर कलसो आपियउ, राजा निम्नरि जोय रे। ५। न।
अंकुश पीलवाण आपियउ, सारथवाही दीयउ हार रे।
ए पाँचे अति रंजिया, तिणि दीयउ दान अपार रे। ६। न।

लाख लाख मोल पांचनउ, नदइ हुई सबल निहाल रे।
बीजे पणि लोके, मन मान्यउ लीधो माल रे। ७। न।
रेस धरी राय ऊठियउ, परभाते तेड्या पंच रे।
पहिलउ दान किम दियउ खरउ, कहई ते महिं खस खच रे। ८। न।
कुमर कहइ राजि सांभलउ, मुझनइ तुम्हे थउ नहीं राज रे।
नाटक उठती पछो, राजा मारी लेउ आज रे। ६। न।
एहवइ नाटकणी दियउ, मुझ नइ प्रतिबोध अपार रे।
भयउ काल गयउ दिन थोड़इ, लियइ अनम म हारि रे। १०। न।
मंत्रि कहइ राजि संमलउ, मुझ नइ न थउ थाली प्रास रे।
आज वयरी तेडि नइ, राज थयउ करूँ नास रे। ११। न।
क्षुल्लक ऋषि बोल्यउ खरउ, दीक्षा मांहि दीठा दुक्ख रे।
आज आवउ राज लेईनइ, संसार ना भोगवु सुक्ख रे। १२। न।
मीठ कहइ राजि मुझनइ, तु घइ नहीं पूरउ प्रास रे।
हाथी नइ अपहरी, आपणु जासु बीजा पासि र। १३। न।
सार्थवाही साथ् कहउ, आज छोपसि कुलाचार रे।
बार बरस पूरा थया, अजी नाव्यट मुझ भरतार रे। १४। न।
राजा कहइ पांचां प्रति, हूँ पूरू सगली आम रे।
पणि ते पांचइ कहइ अम्हे, न पड पाप नइ पासि र। १५। न।
अम्हे काम भोग थी ऊमगा, जाण्यउ संसार असार रे।
जोवन धन कारिसु अम्हे संजम लेस्यु सार रे। १६। न।

ढाल चउथी—नीबइयानी अथवा चरण करण धर मुनिवर वरिय

ए—श्री पुण्यसागर उपाध्याय नी कीधी साधु वन्दना नी ढाल।

ए पांच जणा संजम आदर्यउ, श्री सद्गुरु नइ पासो जी।
अधरिज लोक सहू नइ उपनउ, सहु आपइ साबासो जी। १ ए०।
पाप थकी पाछा वल्या, सफल जिम्यउ अवतारो जी।
तप जप किरिया कीधी आकरी, पाम्यउ भव नउ पारो जी। २ ए०।
क्षुल्लक कुमर मोह सबलउ छंडउ, दाखिय गुण अभिरामो जी।
पाप करतां निषमें निसत करी, आयउ शुभ परिणामो जी। ३ ए०।
परमादइ पडिउ कुयइ पापिया, पछइ आण्यउ मन ठामो जी।
दशवैकालिक सूत्र मांहे कह्यौ, ते उत्तम गति पामो जी। ४ ए०।
ए पांचे प्रतिबूझा देखि नइ, प्रतिबूझा बहु लोको जी।
समकित श्रावक ना व्रत आदर्या, जीव दया थया पोगो जी। ५ ए०।
श्रावक श्राविका सहु को सांभलउ, तुम्हे करउ चतुर सुजाणो जी।
जन्म जीवित सफल उ करउ आपणउ, करउ आलस परिहाणो जी।
सतर सोलइ सइ पंचोतरइ, श्री जालोर मझारो जी।
समयसुन्दर चउमासउ इहां रह्या, आण्यउ हाम विचारो जी।७ ए०।
सूत्रीय कमले लाग दर्शी करी रास्या आपणइ पासो जी।
रूपी राखी देसी रंखिया, सहु को करइ साबासो जी। ८ ए०।
सूखिया कथसा रस साठसस्सा, सगला कंकरिया साहो जी।
जिनसागरसूरि श्रावक थया, आयो मनि उल्लासो जी। ९ ए०।
रिषि मंडल टीका मांही कह्यौ, क्षुल्लक कुमर नउ रासो जी।
समयसुंदर कहइ सामग्री सदा, लहिज्यो लील विलासो जी।१० ए०।

सर्वगाथा ४४ इति श्री क्षुल्लक रास समाप्त ।

श्री शत्रुंजय तीर्थ रास[1]

थी रिसहसर पय नमी, आणी मनि आणंद ।
राग भणु रलियामणउ, सत्रुञ्ज नउ सुखकंद ॥१॥
सवत च्यार सत्योत्तरइ हुयउ धनसरसूरि ।
तिण सत्रुंज महातम कीयउ, सिलादित्य हजूरि ॥२॥
वीर जिणिंद समोसर्या, सेत्रु ज ऊपरि जम ।
इन्द्रादिक आगइ कह्यउ, सत्रु ज महातम एम ॥३॥
सत्रु ज तीरथ सारखउ, नहीं छइ तीरथ कोय ।
सर्ग मृत्य पाताल मइ तीरथ सगला जोय ॥४॥
नामइ नवनिध संपजइ, दीठां दुरित पलाय ।
भेटंता भवभय टलइ, सेवतां सुख थाय ॥५॥
जंबू नामइ दीप ए, दखिण भरत मझार ।
सोरठ देस सोहामणउ, तिहां छइ तीरथ सार ॥६॥

---

[1] इसकी गद्दी के अतिविशाल के आसिया म लिखित प्रति में प्रारम्भ में निम्नांश दो काव्य अधिक हैं—

श्री शत्रुंजय तीर्थाय मति रासो मनहरा।
सर्वमानानसयत मा।। र्काव [illegible] ॥१॥
परं मया स्वजिह्वाय पवित्र करणाधिना।
सम्यग्गुणानमनं रासः रचपादन। ॥२॥ युग्मम्
वृत श्री समयसुन्दरे ।

[illegible]

ढाल पहिली—नयरी द्वारामती कृष्ण नरेस एहनी, राग रामगिरि।

सत्रुंज[1] नइ श्री पुण्डरीक[2], सिद्धक्षेत्र[3] कहु तहतीक।
विमलाचल[4] नइ करूँ प्रणाम, ए सत्रुंज ना एकवीस नाम ॥१॥
सुरगिरि[5] नइ महागिरि[6] पुण्यराशि[7], श्रीपद[8] पर्वत इन्द्रप्रकाशि।
महातीरथ[9] एहवइ सुखधाम, ए सेत्रुंज ना एकवीस नाम ॥२॥
सासतउ पर्वत नइ दृढ़शक्ति, मुक्ति निलउ शिव कीजइ भक्ति।
पुष्पदंत महापद्म सुठाम, ए सेत्रुंज ना एकवीस नाम ॥३॥
पृथिवीपीठ सुभद्र कैलास, पातालमूल अकर्मक तास।
सर्वकामद कीजइ गुण गाम, ए सत्रुंज ना एकवीस नाम ॥४॥
ए सत्रुंज नां एकवीस नाम, समय वे वइठा[1] जपसी ठाम।
सत्रुंज यात्रा नउ फल लहइ, महावीर भगवंत इम कहइ ॥५॥

सर्व गाथा ११

दूहा

सेत्रुंजउ पहिलइ अरइ, असी जोयण परिमाण।
पहिलउ मूलइ ऊंच पणि, [illegible] जोयण आणि ॥१॥
सत्तरि जोयण आखियउ, बीजइ अरइ विशाल।
बीस जोयण ऊँचउ थयउ, सुगुरु कहता त्रिकाल ॥२॥
साठ जोयण त्रीजइ अरइ, पिहुलउ तीरथराय।
सोल जोयण ऊँचउ सही, ध्यान धरूँ चितलाय ॥३॥

---

1 बैठी जापको।

पंचास जोयण पहिलपखि, पउयइ भरइ मझारि ।
उंघट दस जोयण अचल, नित प्रणमइ नरनारि ॥४॥
बार जोयण पचम भरइ, मूल तणउ विस्तार ।
दो जोयण उपउ अछइ, सेत्रुञ्ज तीरथ सार ॥५॥
सात हाथ पइ भरइ, पहिलउ परवत एह ।
उंघउ होस्यइ सउ धनुष, सासतउ तीरथ तेह ॥६॥

सबगाथा १७

ढाल बीजी—जिणवर सु मेरो मन लीणउ, राग आसावरी

कवलज्ञानी प्रमुख तिर्थंकर, अनंत सीधा इण ठाम रे ।
अनत वली सीझस्यइ इण ठामइ, तिण करूँ नित्य परणाम रे । १ ।
सत्रु ञ्ज साध अनंता सीधा, सीझस्यइ वलिय अनत र ।
जिण सत्रु ञ्ज तीरथ नहिं भटयउ, ते गमवास कहव र । २ । से ।
फागुण सुदि आठमिनइ दिवसइ, ऋषभदेव सुखकार र ।
रायणि रू खि समोसरया सामी, पूरव निवाणूँ वार र । ३ । स ।
भरतपुत्र चैत्री पुनिम दिन इण सत्रु ञ्ज गिर आई र ।
पांच कोडि सुँ पुंडरीक सीधा, तिण पुंडरीक कहाइ र । ४ । स ।
नमि विनमी राजा विद्याधर, बि बि कोडि सगानि रे ।
फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमुँ परमानि रे । ५ । स ।
चैत्रमास वदि चवदस नइ दिन, नमि पुत्र चउसट्ठि रे ।
अणसण करि सत्रुञ्जगिरि ऊपरि, ए सहु सीधा एकट्ठि र । ६ । स ।

पोतरा प्रथम तिथङ्कर केरा, द्राविड़ नइ वालखिल्ल रे।
कार्तिक सुदि पुनिम दिन सीधा, दस कोडि मुनि सु निसल्ल रे।७।भ.।
पांच पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद रिषिराय रे।
सांब प्रजून गया इहां मुगति, आठे करम खपाय रे।८।भ.।
नेमि विना तेवीस तिथङ्कर, समोसरया गिरि शृङ्गि रे।
अजित शांति तिथङ्कर बेऊ, रह्या चौमासउ रंगि रे।९।भ.।
सहस साधु परिवार संघातइ, थावच्चा सुत साथ रे।
पांचसइ साधु सुं सेलग मुनिवर, सत्रुञ्ज सिवसुख साथ रे।१०।भ.।
असंख्यात मुनि सत्रुञ्ज सीधा, भरतेसर नइ पाट रे।
राम अनै भरतादिक सीधा, मुगति तणो [1] वाट रे।११।भ.।
जालि मयालि अनै उवयालि, प्रमुख साधुनी कोडि रे।
साध अनंता सत्रुञ्ज सीधा, प्रणमूं बे कर जोडि रे।१२।भ.।

सर्वगाथा २८

ढाल श्री श्री चउपई नी

सेत्रुञ्जना कहुं सोल उद्धार, ते सांभलज्यो सहु करि सुविचार।
सुणतां आणंद अंगि न माइ, जनम जनम ना पातक जाइ॥१॥
रिषभदेव अयोध्यापुरी, समोसरया स्वामी हित करी।
भरत गयउ वंदणनइ काजि, ए उपदेश दियउ जिनराजि॥२॥
जग मांहि मोटा अरिहंत देव, चउसठि इन्द्र करउ प्रभु सेव।
तेथी मोटउ संघ कहाय, जेहनइ प्रणमइ जिनवर राय॥३॥

[1] बार

तथी मोग्उ संघवी करयउ, मरत सुखी नइ मन गह गमउ ।
मरत कहइ ते किम पामियइ, प्रभू कहइ सत्रुञ्ज यात्र कीयइ ॥ ४ ॥
मरत कहइ सघवी पद मुज्फ, ते आपउ हू अगज तुज्फ ।
इन्द्र आण्या अक्षत वास, प्रभु आपइ सघवी पद वास ॥ ५ ॥
इन्द्र तिया वेला ततकाल, मरत सुमद्रा बिहूँ नइ माल ।
पहिरावी घरि सम्रेडिया, सखर सोना ना रथ आपिया ॥ ६ ॥
रिपमदेव नी प्रतिमावली, रतन तणी दीधी मन रली ।
मरतइ गणधर घर तेडिया,शांतिक पौष्टिक सहु विधि किया॥ ७ ॥
कंकोत्री मूकी सहु देस, मरत तेडाया सघ असेस ।
आया संघ अयोध्यापुरी प्रथम यत्री रथयात्रा करी ॥ ८ ॥
संघ मगत कीघी अति घणी, संघ चलाण्यउ सत्रुञ्ज भणी ।
गणधर बाहुबलि केवली, मुनिवर कोडि साथि लिया वली ॥ ९ ॥
चक्रवर्त्ती नी सगली रिद्धि, मरतइ साथि लीधी सिद्धि ।
हय गय रथ पायक परिवार, त कउ कहतां न आवइ पार ॥१०॥
मरतसर सघ री करिवाय, मारगि चैत्य उधरतउ जाय ।
सघ आपउ सेत्रुञ्जा पासि, सहु नी पूगी मन नी आस ॥११॥
नयणे निरख्यउ सत्रुञ्जराय, मणि माणिक मोती सूं वधाय ।
तिण ठामइ रहि मडुसव किपउ, मरतइ आणदपुर वासियउ ॥१२॥
संघ सेत्रुञ्जा ऊपरि चढ्यउ, फरसतां पातक झडि पड्यउ ।
केवलज्ञानी पगला जिहां, प्रणम्या रायण रूँख तइ जिहां ॥१२॥
केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईसानेंद्र आणि सुपवित्र ।
नदी सेत्रुंजी सुहामणि, मरतइ दीठी कौतुक मणि ॥१४॥

पोतरा प्रथम तिथंकर केरा, द्राविड नइ [1]वालखिल्ल रे।
कातीसुदि पुनिम दिन सीधा दस कोडि मुनि सु निसल्ल रे।७।म
पांचे पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद रिषीराय रे।
सब प्रद्युम्न गया इहां मुगति, आठे करम खपाय रे।८।म।
नेमि बिना तवीस तिर्थंकर, समोसरया गिरि शृंगि रे।
अजित शांति तिर्थंकर बेऊ, रह्या चौमासउ रंगि रे।९।म।
सहस साधु परिवार सघाति, थावच्चा सुत साध रे।
पांचसइ साथ सूं सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्ज शिवसुख लाधर।१०।म।
असंख्यात मुनि सत्रुञ्ज सीधा, भरतसर नइ पाट रे।
राम भनै भरतादिक सीधा, मुगति तणो ए घाट रे।११।म।
नालि मयालि भनै उवयालि, प्रमुख साधुनी कोडि रे।
साध अनंता सत्रुञ्ज सीधा, प्रणमूं बेकर जोडि रे।१२।म।

सत्रुञ्जया रा०

ढाल श्री श्री गउडी मी

सेत्रुञ्जना कहूँ सोल उद्धार ते सुणिज्यो सहु को सुविचार।
सुणतां आणंद अंगि न माइ, जनम जनम ना पातक जाइ॥ १॥
रिषभदेव अयोध्यापुरी, समोसरया सामी हित करी।
भरत गयउ वंदणनइ काजि, ए उपदेस दियउ जिनराजि॥ २॥
जग मांहि मोटा अरिहंत देव, चउसठि इंद्र करउ प्रभु सेव।
तेथी मोटउ संघ कहाय, जेहनइ प्रणमइ जिनवर राय॥ ३॥

[1] बार

चउथा देवलोक नउ धणी, माहेन्द्र नाम उदारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ कराविपउ, ए चउथउ उद्धारो जी।६। से।
पांचमा देवलोक नउ धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ करावियउ, ए पांचमउ उद्धारो जी।७। से।
भवनपती इंद्र नउ कियउ, ए छट्ठउ उद्धारा जी।
चक्रवर्ती सगर सातउ कियउ, ए सातमो उद्धारो जी।८। से।
अभिनंदन पासइ सुणयउ, सेत्रुंज नउ अधिकारो जी।
व्यंतर इंद्र करावियउ, ए आठमउ उद्धारो जी।९। से।
चन्द्रप्रभ सामि नउ पोतरउ, चन्द्रशेखर नांउ मन्हारो जी।
चन्द्रजसराय करावियउ, ए नवमउ उद्धारो जी।१०। से।
शान्तिनाथ ना सुणि देशना, शांतिनाथ सुत सुविचारो जी।
चक्रधर राय करावियउ, ए दसमो उद्धारो जी।११। से।
दशरथ सुत जगि दीपतउ, मुनिसुव्रत सामि वारो जी।
श्री रामचन्द्र करावियउ, ए इग्यारमउ उद्धारो जी।१२। से।
पंडव जूअइ धन हारिया, किम छूटां मोरी माम्यो जी।
खूटी सेत्रुंज यात्रा, यात्रा कियां पाप जाम्यो जी।१३। से।
पांचे पांडव संघ करि, सेत्रुंज भेट्यउ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बिंब लेपनउ, ए बारमो उद्धारो जी।१४। से।
मम्माणी पाषाण नी, प्रतिमा सुन्दर रूपो जी।
श्री सेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपो जी।१५। से।
अट्ठोत्तर सउ वरस गयां, विक्रम नृपथी जिवारो जी।

गणधर देव तणइ उपदेस, इंद्रइ बलि दीधउ आदेस।
आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि सेहरउ ॥१३॥
सोना नउ प्रासाद उत्तंग, रतन तणी प्रतिमा मन रंग।
भरतइ भी आदीसर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥
मरुदेवी नी प्रतिमा वली, माही पुनिम थापी रली।
ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्रासाद, भरतइ थाप्या नवल* निनाद ॥१७॥
इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद।
भरत तणउ पहलउ उद्धार, सगलउ ही जाणइ संसार ॥१८॥
सर्वगाथा ५५

ढाल चौथी—राग आसावरी-सिंधुडउ।
(बीछड़ा जिन प्रम कीजइ पहली ढाल)

भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडवीरज थयउ राजो जी।
भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुज संघवी कहायो जी ॥१॥
सेत्रुज उद्धार साँभलउ, मोक्ष मोटा मीकारो जी।
असंख्यात वीमा वली, तेनहि[1] कहूँ अधिकारो जी ॥२॥ से।
चैत्य करायउ रूपा तणउ, सोना नउ बिंब सारो जी।
मूलगउ बिंब भंडारियउ, पश्चिम दिस तिण वारो जी ॥३॥ से।
सेत्रुज नी यात्रा करी, सफल कीयउ अवतारो जी।
दंडवीरज राजा तणउ, ए बीजउ उद्धारो जी ॥४॥ से.।
सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जिवारो जी।
ईसानेंद्र करावियउ, ए त्रीजउ उद्धारो जी ॥५॥ से।

* नवल नाद [1] तिहंनां

चउथा देवलोक नउ धणी, माहेन्द्र नाम उदारो जी।
तिण सेत्रुज नउ करावियउ, ए चउथउ उद्धारो जी।६।से।
पांचमा देवलोक नउ धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी।
तिण सेत्रुञ्ज नउ करावियउ, ए पांचमउ उद्धारो जी।७।से।
भवनपती इंद्र नउ कियउ, ए छट्ठउ उद्धारो जी।
चक्रवर्ती सगर तणउ कियउ, ए सातमो उद्धारो जी।८।से।
अभिनंदन पासइ सुणयउ, सेत्रुंज नउ अधिकारो जी।
व्यंतर इंद्र करावियउ, ए आठमउ उद्धारो जी।९।से।
चन्द्रप्रभ सामि नउ पोतरउ, चंद्रशेखर नांउ मन्हारो जी।
चन्द्रयसराय करावियउ, ए नवमउ उद्धारो जी।१०।से।
शान्तिनाथ नी सुणि देशणा, शांतिनाथ सुत सुविचारो जी।
चक्रधर राय करावियउ, ए दसमो उद्धारो जी।११।से।
दशरथ सुत जगि दीपतउ, मुनिसुव्रत सामि वारो जी।
श्री रामचन्द्र करावियउ, ए इग्यारमउ उद्धारो जी।१२।से।
पांडव कहइ अम्हे पापिया, किम छूटां मोरी माायो जी।
कहइ कुंती सेत्रुंज तणा, यात्रा कियां पाप जायो जी।१३।से।
पांचे पांडव संघ करि सेत्रुंज भेटउ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बिंब लेपनउ, ए बारमो उद्धारो जी।१४।से।
मम्माणी पाषाण नी, प्रतिमा सुन्दर रूपो जी।
श्री सेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपो जी।१५।से।
अट्ठोत्तर सउ वरस गयां, विक्रम नृपथी विचारो जी।

गणधर तेम तणइ उपदेस, इन्द्र वलि दीधउ आदेस।
आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि सेहरउ ॥१५॥
सोना नउ प्रासाद उत्तंग, रतन तणी प्रतिमा मन रंग।
भरतइ थी आदीसर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥
मरुदेवी नी प्रतिमा भली, माही पुनिम थापी रली।
ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्रासाद, भरतइ थाप्या नवल* निनाद ॥१७॥
इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद।
भरत तणउ पहलउ उद्धार, सगलउ ही जाणइ संसार ॥१८॥
सर्वगाथा ४८

ढाल चौथी-राग आसावरी-सिधुड़ा।
(बीनवा जिन प्रम श्रीमंधर पहली ढाल)

भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडवीरज थयउ रायो जी।
भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुज संघवी कहायो जी ॥१॥
सेत्रुज उद्धार सांभलउ, सोल मोटा श्रीकारो जी।
असंख्यात बीजा थया, तेनहिं[1] कहूं अधिकारो जी ॥२॥ से.।
चैत्य करायउ रूपा तणउ, सोना नउ बिंब सारो जी।
मूलगउ बिंब भंडारियउ, पश्चिम दिस विस मारो जी ॥३॥ से.।
सेत्रुज नी यात्रा करी, सफल कीयउ अवतारो जी।
दंडवीरज राजा तणउ, ए बीजउ उद्धारो जी ॥४॥ से.।
सउ सागरोपम अतिक्रम्या, दंडवीरज थी जिवारो जी।
ईसानेंद्र करावियउ, ए त्रीजउ उद्धारो जी ॥५॥ से.।

* मधवड नाद [1] तेहना

पउथा देवलोक नउ धणी, माइन्द्र नाम उदारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ करावियउ, ए चउथउ उद्धारो जी।६।से।
पांचमा देवलोक नउ धणी, ब्रह्में द्र समकित धारो जी।
तिण सत्रुंज नउ करावियउ, ए पांचमउ उद्धारो जी।७।से।
भवनपती ईंद्र नउ कियउ, ए छट्ठउ उद्धारा जी।
चक्रवर्ती सगर तणउ कियउ, ए सातमो उद्धारो जी।८।से।
अभिनंदन पासइ सुण्यउ, सेत्रुंज नउ अधिकारो जी।
व्यंतर इंद्र करावियउ, ए आठमउ उद्धारो जी।९।से।
चंद्रप्रभ सामि नउ पोतरउ, चंद्रशेखर नांउ मल्हारो जी।
चंद्रजसराय करावियउ, ए नवमउ उद्धारो जी।१०।से।
शान्तिनाथ नी सुणि देशणा, शांतिनाथ सुत सुविचारो जी।
चक्रधर राय करावियउ, ए दसमो उद्धारो जी।११।से।
दशरथ सुत भगि दीपतउ, मुनिसुव्रत सामि वारो जी।
श्री रामचन्द्र करावियउ, ए इग्यारमउ उद्धारो जी।१२।से।
पडम कहइ धर्म्हे पाविया, किम छूटां मोरी मायो जी।
कहइ कुंती सेत्रुंज तणा, जात्रा कियां पाप जायो जी।१३।से।
पांचे पांडव संघ करि सेत्रुंज भेट्यउ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बिंब लेपनउ, ए बारमो उद्धारो जी।१४।से।
मम्माणी पाषाण नी, प्रतिमा सुन्दर रूपो जी।
श्री सेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपो जी।१५।से।
अट्ठोतर सउ बरस गयां, विक्रम नृपथी जिवारो जी।

पोरुम्पाड* सावद करावियउ, ए तेरमो उद्धारो जी ।१६। से ।
संवत बार बिरोतरइ, भीमाली मुविचारो जी ।
बाहडदे मुँहतउ करावियउ, ए चवदमउ उद्धारो जी ।१७। से ।
संवत तेर इकोतरइ†, देसलहर अधिकारो जी ।
समरइ साह करावियउ, ए पनरमउ उद्धारो जी ।१८। से ।
संवत पनर सित्यासियइ, वैसाख वदि सुभ वारो जी ।
करमइ दोसी करावियउ, ए सोलमउ उद्धारो जी ।१६। से ।
संप्रति काल सोलमउ, ए वरतइ छइ उद्धारो जी ।
नित नित कीजइ वंदना, पामीजइ भव पारो जी ।२०। से ।

सर्वगाथा ९०

दूहा

वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांभलउ जिम छइ तेम ।
धरि घनेसर इम कहइ, महावीर कहइ एम ॥१॥
जेहवउ तेहवउ दरसणी, सेत्रुंजइ पूजनीक ।
भगवंत नउ वेस वांदता¶, लाभ हुवइ तहतीक ॥२॥
श्री सेत्रुंजा ऊपरइ, चैत्य करावइ जेह ।
दल परमाणु समाकइ‡ पल्योपम सुख तेह ॥३॥
नवुं कउपरि देहरउ, नवउ नीपावइ कोय ।
जीरणोद्धार करावतां, आठ गुणउ फलहोय ॥४॥
सिर ऊपर गागरि भरि, न्हाण करावइ नारि ।
चक्रवर्ति नी अस्त्री थई, सिव सुख पामइ सार ॥५॥

* पोरवाड　† इकोतरइ　¶ मानता　‡ समो

काती पुनिम सेत्रुञ्जइ, चढि* नइ करइ उपवास।
नारकी सउ सागर समउ, नर करइ करमनउ नास ॥६॥
काती परव मोटउ कह्यउ जिहां सीधा दस कोडि।
ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पाप थी नांखइ छोडि ॥७॥
सहस लाख श्रावक भणी, मोजन पुण्य विशेखि।
सत्रुंज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि ॥८॥

सर्वगाथा ७५

ढाल पांचमी—धन धन अवंती सुकुमाल नइ, एहनी

राग—बइराडी

सत्रुञ्ज गया पाप छूटियइ, लीजइ आलोयण एमो जी।
तप जप कीजइ तिहां रही, तीर्थंकर कह्यउ तेमो जी ।१। स।
जिम सोना नी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी।
चैत्री दिन सेत्रुञ्ज चढी, एक करइ उपवासो जी ।२। स.।
वस्त्र तणी चोरी करी, सात आंबिल तप थाया जी।
काती सात दिन तप कीयां, रतन हरण पाप जायो जी ।३। स।
कांसी पीतल त्रांबा रजतनी चोरी कीधी जेणो जी।
सात दिवस पुरमढ करइ, तउ छूटइ गिरि एणो जी ।४। से।
मोती प्रवाली मुंगिया, जिण चोया नरनारो जी।

* चढी

अधिक करी पूजा करइ, तिम[1] टक सघर[2] आचारो जी ।५।स ।
पान पाणी रस घोरिया, त[3] भेटइ सिघ[4]यत्रो जी ।
सेत्रुंज तलहटी साध नइ, पडिलाभइ सुध[5] चित्तो जी ।६।से ।
चरनामरख] जिको इर्या, ते छूटइ इम मल्लो जी ।
आदिनाथ नी पूजा करइ, प्रह ऊठी सिंहु वेलो जी ।७।से ।
देवगुरु नउ धन जे हरइ, ते सुख पावइ एमो जी ।
अधिक द्रव्य खरचइ तिहां, पात्र पोषइ बहु प्रेमो जी ।८।से ।
गाय महिसि घोडा मही, गज गृह चोरणहारो जी ।
एह ते ते वस्तु तीरथइ, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ।९।स ।
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखइ आंपणउ नामो जी ।
छूटइ छम्मास[6] तप कीयां, सामायिक तिम ठामो जी ।१०।से ।
कुमारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारी जी ।
व्रत भांजइ तेहनइ पछड, छम्मासी तप सारो जी ।११।से ।
गो त्रिय स्त्री बालक रिषी, एहनउ घातक जेहो जी ।
प्रतिमा आगइ आलोयतउ*, छूटइ तप करि वेहो जी ।१२।से ।

सवगाथा ८०

राग कहो—(पदमप्रभु पूजीयइ पहनी

राग—धन्याशिरी

सांप्रत† अरतइ सोहमठ ए, वरतइ एह उद्धार ।
सेत्रुंज जात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ।१। से ।

---

१ तिम २ घात. ३ जे ४ सिद्ध, ५ शुभ ६ छमासी
*आलोयणा †संप्रति

अविल करी पूजा करइ, तिम[1] नंद सुघर[2] आचारो जी ।५।से।
पांन पाणी रस चोरिया, ते[3] भेटइ सिघ[4]षेत्रो जी।
सेत्रुंज तलहटी साध नइ, पडिलाभइ सुघर[5] चितो जी ।६। से।
वस्त्राभरण] जिण हर्यां, ते छूटइ इम भेलो जी।
आदिनाथ नी पूजा करइ, महऊठी निर्हे वेलो जी ।७। से।
देवगुरु नउ धन जे हरइ, ते सुघ थायइ एमो जी।
अधिक द्रव्य खरचइ तिहां, पात्र पोषइ बहु प्रेमो जी ।८। से।
गाइ महिसि घोडा मही, गज गृह चोरणहारो जी।
एह ते ते वस्तु दीरयइ, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ।९। से।
पुस्तक देहरा पारसा, तिहां लिखइ आपसउ नमो जी।
छूटइ छम्मास[6] तप कीयां, सामायिक तिम ठामो जी ।१०। से।
कुमारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारो जी।
व्रत भांजइ तेहनइ कहउ, छम्मासी तप सारो जी ।११। से।
गो विप्र स्त्री बालक रिपी, पहनउ पातक जेहो जी।
प्रतिमा आगइ आलोयतउ*, छूटइ तप करि तेहो जी ।१२। से।

सर्वगाथा ८०

ढाल छट्ठी—रिषभसमु पूजीयइ पहनी
राग—धन्यासिरी

सांप्रत[†] अवसइ सोलमउ ए, करतइ छइ उद्धार।
सेत्रुंज यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार । १ । से.।

१ तिम २ शुद्ध ३ जे ४ सिद्ध, ५ शुभ ६ छमासी
* आलोयतां † संप्रति

कुमारी पालती पालीयइ, सेत्रुञ्ज करी पाट। से।
पालीताणइ पहुँचीय ए, सघ मिल्या बहु थाट। २। से।
ललित सरोवर पखीयइ ए, बही सघा नी वावि। से।
गिरां वीसामठ लीजीयइ ए, वड नइ चउतर भावि। ३। से।
पालीताणा पाजडी ए, चढियइ ऊठि परभाति। से।
सेत्रुञ्ज नदीय सोहामणी ए, दूरि थकी दरसाव। ४। से।
चढियइ हींगुलाज नइ हडइ ए, कलि कुँड नमियइ पास। स।
वाटी मांहे परसीयइ ए, आणी अंगि उल्हास। ५। स।
मरुदेवी टूँक मनोहरु ए, गज चढी मरुदेवी माय। म।
सांतिनाथ जिण सोलमउ ए, प्रणमीजइ तसु पाय। ६। स।
सम पोल्याडइ परगडउ ए, सोमजी साह मल्हार। से।
रूपजी सघवी कराबीयउ ए, चउमुख मूल उदार। ७। म।
चउमुख प्रतिमा परखीयइ ए, ममती मांहि भला बिंब। से।
पांच पांडव पूजीयइ ए, अदबुद आदि प्रलंब। ८। मे।
खरतर वसही शांति सुँ ए, बिंब जुहारू अनेक। मे।
नमिनाथ चउरी नमुँ ए, टालु अलग उल्का। ६। स।
वाघणपोल मांहि नीसरु ए, दुरगति करु अति दूर। मे।
आदु आदिनाथ दहरइ ए, करम करूं चकचूर। १०। म।
मूलनायक प्रणमु सदा ए, आदिनाथ भगवंत। म।
देव जुहारूं देहरी ए, भमती मांहि ममंत। ११। म।

१ दहरी २ वडी ३ वैराग

सेत्रुञ्ज ऊपरि श्रीज्रोपइ ए, पांचे ठामे सनात्र । से ।
कलस भट्ठोत्तर सउ करी ए, निरमल नीर सुगात्र ।१२ से।
प्रथम भादीसर भागलइ ए, पुण्डरीक गणधार । से ।
रायणि नइ पगलां बली ए, शांतिनाथ सुखकार ।१३। से।
रायणि तलि पगलां नमुँ ए, चउमुख प्रतिमा च्यार । से ।
बीजी भूमि तिंवा* बली ए, पुण्डरीक गणधार ।१४। से।
खरत्र इणइ निहालीयाइ ए, भति भलि उल्लसी ! श्रोत्र । से ।
चेलवा तलाई सिधसिला ए, चंगि फरसुँ उल्लोल ।१५। से ।
आदिपुर पाज ऊतरूँ ए, सिधवड सुं विमाम । से ।
चत्र परिवड इस परि करी ए, सीधा वंछित काम ।१६। से।
यात्रा करी सेत्रुञ्ज तणी ए, सफल कीयउ अवतार । से ।
कुसल खेमसुं आवीयउ ए, संघ सहु सपरिवार ।१७। से।
सेत्रुञ्ज रास सोहामणउ, सांभलजो सहु कोय । से ।
घरि बइठां भणइ भाव सु ए, तसु यात्रा फल होय ।१८। से ।
संवत सोलसइ ब्यासीयइ ए, श्रावस वदि सुखकार । से ।
रास भण्यउ सेत्रुंज तणउ, नगर नागोर मझार ।१९। से ।
गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, श्री जिनचंद सूरीस से ।
प्रथम शिष्य श्री पूज्य ना ए, सकलचंद सुजगीस ।२०। से।
तासु सीस भगि परगडा ए, समयसुन्दर उवझाय । से ।
रास रच्यउ तिण रुयडउ ए, सुणतां आणंद थाय ।२१। से।

विण ...

पाटणी प्रति में अंत में निम्नोक्त दो गाथायें अधिक हैं —

मणसाली थिरु मति भलो ए, दयावंत दातार । से ।
शत्रुञ्ज संघ करावीयउ ए, जसलमेर मझार ।२२। से ।
शत्रुञ्ज महातम ग्रन्थ नइ ए, रास रच्यो अनुसार । से ।
भाव भगति सुणतां थकां ए, पामीजइ भवपार ।२३। भ ।

सर्वगाथा १०८ इति श्री शत्रुञ्जय रास सम्पूर्णः ।
सं० १६८३ वर्षे बीकानेर मध्ये शिष्य पंचाइण लिखत ।

दानशील तप भाव संवाद शतक

प्रथम जिणेसर पय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ।
दान सील तप भावना, बोलिसि बहु संवाद ॥१॥
वीर जिणिंद समोसर्या, राजगृह उद्यान ।
समोसरण देव रच्युं, बयठा श्री वर्धमान ॥२॥
बारे परषद परगडा, सुणिवा जिणवर वाणि ।
दान कहइ प्रभु हुं वडउ, मुझ नइ प्रथम वखाणि ॥३॥
मांभलिज्यो सहु को तुम्हे, कुण छइ मुझ समान ।
अरिहंत दीक्षा अवसरइं आपइं पहिलुं दान ॥४॥
प्रथम पहरि दातार नुं, ल्यइ सहु कोई नाम ।
दीधां ही देवल चढइ, सीझइ वंछित काम ॥५॥

तीर्थंकर नइ पारणे, इण्य करसइ मुझ होडि ।
वृष्टि करूँ सोवन तणी, साढी बारह कोडि ॥६॥
हुँ जग सगलउ वसि करु, मुझ मोटी छइ वात ।
इम कृपा दान यकी तपा, ते सुणिज्यो अवदात ॥७॥

ढाल—मधुकर नी

मनसारथवाई साधु नइ, दीधु घृत नु दान । सलूनां ।
तीर्थंकर पद मई दीर्द, तिय मुझ ए अभिमान । स० । १ ।
दान कहइ जगि हुँ वडउ, मुझ सरिखउ नहीं कोय । स० ।
रिद्धि समृद्ध सुख संपदा, दानइ दउलति होय । स० ।२ दा० ।
सुमुख नाम गाथापती, पडिलाभ्यउ अणगार । स० ।
कुमर सुबाहु सुख लहइ, ते तउ मुझ उपगार । स० ।३ दा० ।
पाँचसइ मुनि नइ पारणइ, देवउ विहरी आणि । स० ।
भरत थयउ चक्रवति भलउ, ते तउ मुझ फल जाणि । स० ।४ दा० ।
मासखमण नइ पारणइ, पडिलाभ्यउ रिषीराय । स० ।
सालिभद्र सुख भोगवइ, दान तणइ सुपसाय । स० ।५ दा० ।
आप्या उडद ना बाकुला, उत्तम पात्र विशेष । स० ।
मूलदेव राजा थयउ, दान तणा फल देखि । स० ।६ दा० ।
प्रथम जिनेसर पारणइ, श्री श्रेयांस कुमार । स० ।
सेलडि रस विहरावियउ, पाम्यउ भवनउ पार । स० ।७ दा० ।
चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर । स० ।

पछ दिव्य परगट थया, सुंदर रूप सरीर ।स।८वा।
पूरव भव पारेवडउ, सरणइ राख्यउ धीर ।स।
तीर्थंकर चक्रवति तथाउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर ।स।६वा।
गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार ।स।
श्रेणिक नइ घरि अवतर्यउ, अगज मेघकुमार ।स।१०वा।
इम अनेक मइ ऊधर्या, करतां नावइ पार ।स।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पहिलउ मुझ अधिकार।स।११वा।

दूहा

सील कहइ सुणि दान तु, किसउ करइ अहंकार।
आडंबर आठे पहुर, याचक सु मिरदार ॥१॥
धंसराय बलि तादरइ, मोग्य करम ससार।
तिथंकर कर नीचो करइ, तुम्ह नइ पडउ धिक्कार ॥२॥
गर्व म कर रे दान सूँ, मुझ पूठइ सहु कोय।
चाकर चालइ आगलि, सउ स्यु राजा होइ ॥३॥
जिन मदिर सोना तणउ, नवउ नीपावइ कोय।
सोवन कोडि को दान यइ, सील समउ नहि कोय ॥४॥
सोलइ संकट सवि टलइ, सीलइ अस सोभाग।
सीलइ सुर सानिध करइ, सील वडउ वइराग ॥५॥
सीलइ सर्प न आभडइ, सीलइ सीतल आगि।
सीलइ अरि करि केसरी, भय जायइ सम भागि ॥६॥

जनम मरण ना दुख थकी, मइ छोडाव्या अनक ।
नाम कहुं हिव तहना, सांभलिज्यो सुविवेक ॥७॥

ढाल—पाम जिणंद जुहारीयइ एहनी

सील कहइ जगि हुं वडउ, मुझ वात सुणउ अति मीठी रे ।
लालच लागइ लोक नइ, मइ दाख तणी वात दीठी रे ॥१ सी०॥
कलिकारक जगि जाणियइ, वलि विरति नहीं पणि काइ रे ।
ते नारद मइ सीझव्यउ, मुझ जोवउ ए अधिकाइ रे ॥२ सी०॥
बांहे पहिरया बहिरखा, संख राजा दूषण दीधा रे ।
काप्या हाथ कलावती, पणि मइ नवपल्लव कीधा रे ॥३ सी०॥
रावणि घरि सीता रही, तउ रामचंद्र घरि आणी रे ।
सीता कलंक उतारीयउ, मइ पावक कीधु पाणी रे ॥४ सी०॥
चपा बार उघाडीयां, वलि चालणि काढ्यउं नीरो रे ।
सती सुभद्रा जस थयउ, त मइ तस कीधी सीरो रे ॥५ सी०॥
राजा मारण मांडीयउ, राणी अभया दूषण दाख्यउ रे ।
सूली सिंहासन थयु, मइ सेठ सुदरसण राख्यउ रे ॥६ सी०॥
सील सनाह मंत्रीसरइं, आर्त्तता अरिदल थंभ्या रे ।
तिहां पणि सानिध मइं कीधी, वलि धरम करण आरम्भ्या रे ॥७ सी०॥
पहिरण चीर प्रगट कीया, मइ अष्टोत्तर-सइ वारो रे ।
पांडव हारी द्रूपदी, मइं राखी माम उदारो रे ॥८ सी०॥
ब्राह्मी चंदनबालका, वलि सीलवती दमयंती ।
चेडा नी सात सुता, राजीमती सुन्दरि कुन्ती रे ॥९ सी०॥

इत्यादिक मइ ऊधर्या, नरनारी फेरा दढो रे।
समयसुन्दर प्रभु वीरनी, मुझ पहिलउ करउ आणंदो र।१० सी०।

दूहा

तप बोल्यउ उत्की करी, दान नइ तु अवहीलि।
पछि मुझ आगलि तु किस्यउ रे, तु सांभलि सील ॥१॥
सरसा भोजन तइ तज्या, न गमइ मीठी नाद।
दह सबी सोमा तजी, तुम्ह नइ किस्यउ सवाद ॥२॥
नारि भरी हरतउ रहइ, कायरि किस्यउ पसाय।
कूड कपट बहु कलपी, जिम तिम राखइ प्राय ॥३॥
को विरलउ तुम्ह* आदरइ, छांडइ सहु संसार।
एक आपसु माखतउ, बीजा भांजइ प्यार ॥४॥
परम निकाचित शेठनु, मांजु भव मद भीम।
भरिहउ तुम्ह नइ आदर्यउ, बरस छमासी सीम ॥५॥
कवक नदीमर पर्वते, मुझ लबधइ मुनि जाय।
चैत्य जुहारइ सासतां, आणद अंग न माय ॥६॥
मोरा ओयण लाखनां, लघु कपूक आकार।
इय गयरथ पायक तणो, रूप करइ अणगार ॥७॥
मुझ पर परमाइ उपसमइ, कुष्टादिक ना रोग।
सवधि अठावीस उपजइ, उपम तप सपोग ॥८॥
च मइ तार्या ते कहुं, गुणिज्यो मन उल्लास।
चमतकार चित पामस्यउ, दस्यउ मुझ साबासि ॥९॥

*मुझ

ढाल—नणदल नी

दृढप्रहारि अति पापीयउ, हत्या कीधी च्यारि हो। सुन्दर।
ते मइ तिण भवि ऊधर्यउ, मुक्यउ सुगति मझारि हो। सु ।१।
तप सरिखउ जगि को नहीं, तप करइ करम नउ छेह हो। सु.।
तप करतां अति दोहिलउ, तप माँहि नही को फेह हो। सु ।२। तं.।
खट मासस नित मारतउ, करतउ पाप अघोर हो। सु.।
अरजुन माली मइ ऊधर्यो, देवा करम कठोर हो। सु. ।३। तं.।
नंदिसेण नइ मइ कीयउ, स्यो चतुरग समुद्रद हो। सु।
मद्दुवरि सहस अंतेउरी, सुख भोगवइ नित मेव हो। सु ।४। तं.।
रूप कुरूप थयउ थयु हरिकेशी चंडाल हो। सु।
सुर नर कोडि सेवा करइ, ते मइं कीधी पाल हो। सु. ।५। तं.।
विष्णुकुमार समयवि थयउ, लाख जोयण नउ रूप हो। सु.।
श्री संघ केरइ कारणइ, ए मुझ सकति अनूप हो। सु ।६। तं.।
अष्टापदि गौतम चड्या, वांद्या जिन चउवीस हो। सु ।
तापस तिण प्रतिबूझव्या, तिसि मुझ अधिक जगीस हो। सु. ।७। तं.।
चउदस सहस अणगार मइ, श्री धनउ अणगार हो। सु.।
वीर जिणंद वखाणीयउ, ए पणि मुझ अधिकार हो। सु. ।८। तं.।
कृष्ण नरेसर आगलइ, दुक्कर कारक एह हो। सु ।
ढंढण नेम प्रसंसीयउ, मुझ महिमा सवि तेह हो। सु ।९। तं.।
नंदिषेण विहरण गयउ, गणिका कीधु हास हो। सु ।
वृष्टि करी सोनातणी, मइं तसु पूरी आस हो। सु ।१ तं.।

इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या सपमी जाव हो। सु ।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पडिलउ मुझ प्रसताव हो। सु ।११।६।
सर्वगाथा ७५

दूहा

भाव कहइ तप सु कीस्यु, छण्डउ* करइ कषाय ।
पूरव कोडि तप सु तप्यउ, खिण मांहि खेरू थाय ॥१॥
खदक आचारिज प्रतइ, तई बाल्यउ देस ।
प्रसुम निमाणउ सु करइ, षमा नहीं लवलेस ॥२॥
दीपायन रिपि दूहव्यउ, संब प्रजूने साहि ।
तइ तप क्रोध करी तिहां, कीधउ द्वारिका दाह ॥३॥
दानसील तप सांभलउ, म करउ जूठ गुमान ।
लोक सहू बड़े साखि थइ, घरमइ भाव प्रधान ॥४॥
भाव नपुंसक मइ त्रिण्हे थइ व्याकरणी साखि ।
काम सरइ नहीं को तुम्हे, भाव भणइ मो पाखि ॥५॥
रस विण कनक न नीपजइ, जल विण तरुवर वृद्धि ।
रसवती रस नहीं लवण विण, तिम मुझ विण नहिं सिद्धि ॥६॥
मत्र तत्र मणि औषधि, देव घरम गुरु सव ।
भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलइ नित मव ॥७॥
दानसील तप त्रण तुम्हे, निज निज कह्यउ वृतांत ।
तिहां जउ भाव न हुत हु तउ को सिद्धि न जांत ॥८॥
मत कहइ मइ एकलइ, तार्या बहु नर नारि ।
सावधान थइ सांभलउ, नाम कहुँ निरधारि ॥९॥

*ठोपेड

ढाल चउथी—कपूर हुवइ अति ऊजलु रे, एहनी

कानन मांहि काउसग रह्यउ रे, प्रसनचंद रिषिराय।
ते मइ कीधउ केवली रे, सवलिय करम खपाय।१।
सोभागी सुन्दर मान वडउ ससारि, एतउ बीजा मुझ परिवार।
दानादिक विय एकलउ रे, पहुंचाडू भवपार।२।सो।
वंस उपरि चढ्यउ खेलतउ रे, इलापुत्र अपार।
केवलज्ञानी मइ कीयउ रे, प्रतिबोध्यउ परिवार।३।सो।
भूख खमा बेउ अतिघणा रे करतउ कूर आहार।
केवल महिमा सुर करइ रे, कूरगडू अणगार।४।सो।
लाभ थी लोभ वाधइ घणउ रे, आएयउ मन वयराग।
कपिल थयउ ते केवली रे, ते मुझ नइ सोभाग।५।सो।
अन्निका सुत गंग नउ धखो रे, शीस जंघा बल खाणि।
कीधउ अतगड केवली रे, गंगाजलि गुण खाणि।६।सो।
पनरहसई तापस मख्यो रे, दीधी गोतम दीख।
ततखिण कीधी केवली रे, ए उ मुझ मान्नो सीख।७।सो।
पालक पाखो[*] पीलीया रे, खंदक सूरि[†] ना सीस।
जनम मरण थी छोडव्या रे, आप्यउ मुझ आसीस।८।सो।
चंडरुद्र निमि चालता रे, दीधा दंडइ प्रहार।
नव दीखित थयउ केवली रे, ते गुरु पणि तिणवार।९।सो।
धन धन रथकार साधु नइ रे, पडिलाभइ उल्लासि।
मृगलउ भावन भावतउ रे, पहुतउ सुर आवास।१०।सो।

[*] घाणा [†] सु

निज अपराध खमावतो रे, मुकी मन थी मान ।
मृगावती नइ मइ दीयु रे, निरमल केवलग्यान ।११।सो।
महस्री गज चढी मारगइ रे, पेखी पुत्र नी रिद्धि ।
मुझ नइ मनमांहे धर्यउ रे, सतखिण पामी सिद्धि ।१२।सो।
वीर वंदिय चाल्यउ मारगइ र, चांप्यउ चपल तुरंगि ।
दडुर नामइ देवता रे, तेह थयउ मुझ संगि ।१३।सो।
प्रभु पाय पूजण नीसरी रे, दुर्गता नामइ नारि ।
अत-धरम विचि मइ करी रे, पहुती सरग मझारि ।१४।सो।
अपा सोमा करमी रे, मुक्यउ मन अभिमान ।
भरत आरीसा भवन मइ रे, पाम्यु केवलग्यान ।१५।सो।
आषाढ भूति कला निलउ रे, प्रगट्यउ भरत सरूप ।
नाटक करतां पामीयु र, केवलग्यान अनूप ।१६।सो।
दीक्षा दिन काउसगि रह्यउ, गयसुकमाल मसाणि ।
सोमिल सीम प्रजालीउ रे, सिद्धि गयउ सुह झाणि ।१७।सो।
गुणसागर थयउ केवली र सामन्यउ पृथिवीचंद ।
पेसइ केवल पामीयु रे सेव करइ सुरवृन्द* ।१८।सो।
इम अनंत मइ ऊधर्या रे, मुक्या सिवपुर वासि ।
समयसुन्दर प्रभु वीर नी रे, मुझ नइ प्रथम प्रकासि ।१९।सो।

दूहा

वीर कहइ तुम्ह सांभलउ, दानसील तप भाव ।
निंदा छइ अति पाड़ई, धरम करम प्रस्ताबि ।।१।।

*इंद

परनिंदा करतां थकां, पापइं पिंड भराइ ।
बलि राति बांधइं घणो, दुर्गति प्राणी जाइ ॥२॥
निंदक सरिखउ पापीयउ, मैं ह उको न दीठ ।
बलि चंडाल समउ कह्यउ, नंदक मुख अदीठ ॥३॥
आप प्रसंसा आपथी, करतां इंद नरिंद ।
लघुता पामइ लोक मइ, नासइ निज गुणवृन्द ॥४॥
को केहनी म करउ तुम्हे, निंदा नइ अहंकार ।
आप आपणो ठामइ रहउ, सहु को मलउ ससार ॥५॥
तउ पणि अधिकउ भाव छइ, एकणी समरत्थ ।
दानसील तप त्रिण भला, पणि भाव विना अकयत्थ ॥६॥
अंजन आंखे आंजतां, अधिकी आंखि ए रेख ।
रज मांहे तप्र फरतां, अधिकउ भाव विशेष ॥७॥
मगवत इठ भाखिया मली, च्यारे सरिखा गणंति ।
च्यार करी मुख आपणा, चतुर्विध धरम भणंति ॥८॥

ढाल पंचमी—चेति चेतन करी पहनी

वीर जिणेसर इम भणइ रे, सांठि परषदा मार ।
धरम करउ तुम्हे प्र णीया रे, जिम पामउ भव पारो रे।१।
धरम हीयइ धरउ, धरम ना च्यार प्रकारो रे ।
भवियण सांभलउ, धरम सुगति सुखकारो रे ।२।
धरम थकी धन संपजइ रे, धरम थकी सुख होय ।
धरम थकी आरति टलइ रे, धरम समउ नही कोयो रे।३। ध ।

दुर्गति पड़तां प्राणियां रे, राखइ श्री जिन धर्म ।
इम सहू को करिमु रे, मति मूंजउ मन मर्मो रे ।४। घ०।
जीव जिके सुखीआ हुमा रे, वलि हुस्यइ छइ जइ ।
ते जिणवर ना धर्म थी रे, मति को करज्यो संदेहो रे ।५। घ०।
सोलइ सइ छासठि समइ रे, सांगानयर मझारि ।
पदम प्रभु सुपसाउ लइ रे, एह भणयउ अधिकारो रे ।६। घ०।
साहम सामि परगरा रे, खरतरगच्छ कुलचद ।
युगप्रधान जगि परगडा रे, श्री जिनचद सूरिंदो रे ।७। घ०।
तास सीस अति दीपतां रे, विनयवंत जशवंत ।
आचारिज चढ़ती कला रे, श्री जिनसिंघसूरि महंतो रे ।८। घ०।
प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचद तसु सीस ।
समयसुन्दर पाठक भणी रे, संघ सदा सुजगीसो रे ।९। घ ।
दानशील तप भावना रे, सरस रच्यउ संवादो रे ।
भणतां गुणतां भावसु रे, रिद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ।१०।घ०।

इति श्री दानशील तप भाव संवाद शतकं संपूर्णम् ।
सर्वगाथा १०१ ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक १५५ ।

पोषध विधि गीतम्

खेमसमेरु नगर मसउ, जिहां श्री पास जिणंद ।
प्रह उठी नइ प्रणमतां, आपइ परमाणंद ॥ १ ॥
तासु चरण प्रणमी करी, पोषध विधि विस्तार ।
पभणु श्रावक हित भणी, आगम नइ अनुसारि ॥ २ ॥
पोसउ पोसउ सहु करइ, पोसउ करइ सहु कोइ ।
पण पोसा विधि सांभलउ, जिम निस्तारउ होइ ॥ ३ ॥

ढाल पहिली—प्रभु प्रणमु रे पास जिणेसर थंभणउ, एहनी ढाल

पडिलेहइ दिन रे, सांझ समइ उपग्रहण सहु ।
पडिलेही र, तेही परि राखइ बहु ॥
पहिली रातइं रे, साधु समीपि आवी करी ।
राइ प्राच्छित र प्रथम करइ मन संवरी ॥
संवरी श्रावक करइ पोसउ, आठ पुहरि गुरु मुखइ ।
उचरइ दंडक त्रिणइ पछा, सामायक पणि तिणि सुखइ ॥
पछइ करइ पडिकमणउ भांतरणी, साधु वांदइ तां गिणइ ।
कमभूमि भठारपंमि दसमो मगसीक इस्तक मणइ ॥ ४ ॥
पडिलेहण रे, अंग उही सगली करइं ।
उपासरउ र, पुंजी काढउ ऊपरइ ॥
इरियावही र, थापना आगइं पडिकमइं ।
करि सज्झाय र, साधु सहुना पाय नमइं ॥

पाय नमइ सगला साधु केरा, सुणइ सुगुरु वखाण ए ।
ध्यान करइ भयणा गुणइ, प्रकरण कहइ भरथ सुजाण ए ॥
पुंस पहुर पडिलेहणा करीनइ, मातरा पडिलेह ए ।
मल पड़ा छोटी याटका, पडिलेहवा मलि तेह ए ॥ ५ ॥

गुरु सांपइ रे, चैत्य प्रवाडि करइ खरी ।
दव वांदइ रे, शक्र स्तव पांचे करी ॥
उपासिरइ रे, आवी इरिया पडी कमी ।
आगमयाठ रे, आलोयइ नीचउ नमी ॥

नीचउ नमी भइसणइ धसइ, मिच्छामि दुक्कड देहि नइ ।
त्रिविहार हुयइ तउ पाणी पारइ, मुहपत्ती पडिलेह नई ॥
नउकार गुणतां पाठ भणतां, पहुर त्रीजइ दिवस रह ।
पडिकमी इरियावही पहिली, बेउ पडिलेहण करइ ॥ ६ ॥

पमसाला रे, पुंजी इरिया पडिकमी ।
वे पालउ रे, थापना पडिलेही समी ॥
मुहपत्ती रे, पडिलेही उभउ थई ।
ध्वरइ गुरुमुखि रे, पचखाण मनि गह गई ॥

गह गइ आठ द समामण, वस्त्र सगला आंपणा ।
पडिलेहिवा मातरा तिण परि, परवला पुमण तणा ॥
दहनी चिंता करजि मातां, कहइ भगवन आवस्सही ।
मारगइ इरिया समिति सोधइ, भ्रावता कहँ निस्सही ॥ ७ ॥

ढाल—चौबी बीसामा री गीतनी ढाल

हिव भवियण तुम्हें सांभलउ जी, गुरु नइ नामी सीस ।
सामाइक पोसा तणा जी, दूपण टालउ बत्रीस ॥
बत्रीस दूपण बारह तनुना, मारि मइसइ पालठी ।
थिर अथिर आसण दिष्टि चपल, करइ काया एकठी ॥
करइ काम सावद्य न्याइ उर्टिगण आलस करडक मोड ए ।
खणइ खाजि वीसामण कराव्इ उघ करइ मल छोड ए ॥ ८ ॥

वचन तणा दूपण दसे जी, सांभलउ एहि प्रकार ।
कुवचन बोलइ छोकनइ जी, पइ दोप सहसाकार ॥
सहसाकार कलह थइ वलि आप छंदइ बोल ए ।
सखेप सूत्र करइ आसातउ करइ कलह निटोल ए ॥
विकथा करइ उपहास मांडइ न राखइ पद सम्पदा ।
आ आवि बइठे तु ऊठि पहुची करइ माया सरवदा ॥ ९ ॥

दस दूपण हिव मन तणा जी, सांभलिज्यो चित एक ।
नून अधिक न सद्दइ क्रिया जी, मन मांहि नहीं य विवेक ॥
सुविवेक वस पन लाभ वांछइ करइ पोसउ बीहतउ ।
पोसउ करीनइ करइ नियाणउ पुत्र प्रमुख नउ ईह तउ ॥
अभिमान रीसइ करइ पोसउ धरइ फल सदेह ।
वलि विनय भगति सगार न करइ मन दूपण दस एह ॥ १० ॥

काया वचन नइ मन तणा जी, दूपण एह बत्रीस ।
जे टालइ दोप वेहनउ जी, पोसउ निसवा बीस ॥

पीम विसा बोलइ नहीं मलि उघाडइ मुखि मांपरइ ।
छूंक्षी भरी सु मात न करइ पांच दूषण परिहरइ ॥
उपवास करिनइ दिवस पोसउ कीधउ नहि निस करइ ।
एक पद छोडइ नहीं उत्तराध्यन अक्षर अनुसरइ ॥११॥
चउपरवी पोसउ कह्यउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि ।
हरिभद्र सूरि विवरउ कीयोजी, सावास सहस्सी सार ॥
बावीस सहस्सी सार बोलै दिवस प्रति करिव्यौ नही ।
पोसहउ अथिति सविभाग चऊ परव दिन करि वाणही ॥
ठरिण सबद वणठ अरथ हिव, सीलांगा-च्यारिज करइ ।
पोसउ पजूसण परव कल्याणक तिथि पणि आदरइ ॥१२॥
उपधान पोसउ कह्यउ जी, सूत्र निसीथ प्रमाणि ।
तिविहार चउविहार कीमयइ जी, एक निगप छूननाखि ॥
छून वास आचरणा परंपर पूरवाचारिज पइी ।
भगवत भाख्यउ सत्य सद्हिस खांचा-ताण करिनी नहीं ॥
तिविहार पोसउ च्यार पहुरी पुण पहुर सीमा करी ।
ग प्रिपद गच्छ सम्बो आचरणा अविधि छइ पणि आदरी ॥१३॥

ढाल बीजी—(सोभागी सुन्दर भाप वहउ गमारि एहनी ढाल

सांझ समइ पडिला करइ र, बार पाहिर माहि पार ।
इरियावहि पडि पडिकमी र, अइ विहूमण करइ मार ।१४।
सोभागी श्रावक गायउ पोसउ एह एमउ भगवंत भाख्यउ गह ।
विस्मरण गुद करउ छुंद र, निम पसउ मर छइ ।१४।सो ।

अरध बिंब रवि आथम्यौ रे, सूत्र कहइ सुविचार ।
तवन कहइ तहवइ समइ र, तारा दीसइ बि च्यार ।१६मो।
काउस्सग्ग बेहरायां पडिकमइं रे, तारी समासण वह ।
सुभ क्रिया नी खप करइ र, मन संवेग धरेइ ।१७।सो।
जिमदत्तसूरि काउसग करइ रे, पडिकमणा नइ छेह ।
पडिकमणउ पूरउ थयोरे, खरतरनी विधि एह ।१८मो।
मधुरइ सरि रातइ करइ रे, पोरस सीम सज्झाय ।
गीत गायइ वरांगना रे, पातक दूरि पुलाइ ।१९मो।

ढाल चौथी—(चेति चेतन करो पहुनी ढाल)

बहु पडिपुन्ना पोरसी रे, चांदइ दव उल्लास ।
सथारा गाथा सुणइ रे, सामइ जीवनी रासी रे ।।२०।।
धन धन ते नर-नारि, सफल करइं अवतारो रे ।
निसि पोसउ करइं भावनइ भावना बारो रे २१ध।
पाप अठारह परिहरे रे, चित धरइ सरणा च्यारि ।
काम संथारइ संवरइ रे, ध्यान धरइ सुविचारो रे ।२२ध।
धरम जागरिया जागतां रे, करइ मनोरथ एह ।
संजम लेइसि किवी दिनइ रे, धन दिवस सुभ्म तेहो रे ।२३ध।
संख श्रावक पोषउ कीयौ रे, वीर वखाण्यउ तेह ।
तिण परि तुम्हे पोसौ करउ र, जिम पामउ सिव गेहो रे ।२४ध।
वीतमय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय ।

तिणि रातइ पोसउ कीयौरे, धीर वांदया चित लायरे ।२५थ।
तुगिया नगरी तणा रे, श्रावक सुघ अनेक।
जिण विधि तिणि पोसउ कीयौ र, ते विधि करउ सुविवेक रे ।२६थ।
सेप श्रावक पोसउ कीयौ रे, आणंद नइ कामदेव।
पणि दिष्टांत सुणाइनउ र, मनि धरिज्यो नितमेव रे ।२७थ।

ढाल पांचमी—(अब जीवन जीरजी कुवण तुम्हारइ सीस, एहनी ढाल)

पाछिली रातइ उठइ नइ हो, श्रावक हुयइ सावधान।
राइ पापछत काउसग करी हो, देव वांदइ सुभ ध्यान।२८।
संवेगी श्रावक पोसउ नी विधि एह।
मिच्छती सूत्र सिद्धांत सु हो, मति करउ करिज्यो संदेह।२६।स।
उंचइ सरि बोलइ नहीं हो, दोष कह्या भगवत।
वलि सामाइक ल्यइ नवउ हो, पडिकमणउ करइ तत।३०।स।
पडिलेहण किरिया करइ हो सगली पूरव रीति।
सहु सज्झाय कियां पछी हो, खिण पडइ सहु प्रीति।३१।स।
पहिलउ पोरसी पारिनइ हो, सामाइक पारइ।
पडिलामइ अणगारनइ हो, अतिथि समाग करेइ।३२।सं।
विधि सेती पोसउ कीयउ हो, बहु फलदायक होइ।
अविधि संघाति कीमतां हो, काम सरइ नही कोइ।३३।स।
पणि विधिनी खप कीमतां हो, अविधि हुवइ जिकाय।
मिच्छा दुक्कड दीजतां हो, छूटक थारउ थाय।३४।सं।

पोसउ भोसउ कर्मनउ हो, टालइ दुरगति दुख ।
असुभ करम नउ खय करइ हो आपइ मासतां सुख ।३५मं.।
उत्कृष्टी पोसा कही हो, ए विधि कही उपगार ।
असलमरी संघ नइ हो, आग्रह करि सुविचार ।३६मं.।
सोलइ सइ सत सठि समइ हो, नगर मरोट मझार ।
मगसिर सुदी दसमी दिनइ हो, सुभ दिन सुर गुरुवार ।३७म।
श्री जिणचंद सूरीसरू हो, श्री जिनसिंघ सूरीस ।
सकलचंद सुपसाउलइ हो, समयसुन्दर भणइ सीस ।३८म.।

इति पौषध विधि गीत सम्पूर्ण
श्री शुभं भवतु । जेसलमेरु संघमभ्यर्थ्य पा हरो च

श्री मुनिसुव्रत पञ्चोपवास स्तवन

जम्बूदीव सोहामणु, दक्षिण भरत उदार ।
राजगृह नगरी भली, अलकापुरि अवतार ॥ १ ॥
श्री मुनिसुव्रत स्वामि जी, समरतां सुख थाय ।
मन वंछित फल पामियइ, दोहग दूरि पुलाय ॥ २ ॥ श्री ॥
राज करइ तिहां राजियउ, सुमित्र नरेसर नाम ।
पटराणी पदमावती, शील गुणे अभिराम ॥ ३ ॥ श्री ॥
श्रावण ऊजल पूनिमइ, श्री जिनवर हरिवंश ।
माता कुक्षि सरोवरइ, अवतरियउ रायहंस ॥ ४ ॥ श्री ॥
जेठ पटम पखि अष्टमी, जायउ श्री जिनराय ।
जनम महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय ॥ ५ ॥ श्री ॥
सामल वरण सोहामणउ, निरुपम रूप निधान ।
जिनवर लांछन कछपउ, वीस धनुष तनुमान ॥ ६ ॥ श्री ॥
परणो नारि प्रभावती, भोग पुरंदर सामि ।
राजलीला सुख भोगवइ, पूरइ वंछित काम ॥ ७ ॥ श्री ॥
नव लोगान्तिक देवता, आवि जपइ जयकार ।
प्रभु फागुण सुदि बारसइ, लीधउ संयम भार ॥ ८ ॥ श्री ॥
फागुण वदि प्रभु बारसइ, मनि धरि निर्मल ध्यान ।
च्यार करम प्रभु चूरियां, पाम्यउ केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ श्री ॥

॥ काव्य ॥

तत्क्षिण तिहां मिलिया चलियासण सुर कोडि ।
प्रभुना पद पंकज प्रणमइ बेकर जोडि ॥
बेकर जोडी मच्छर छोडी समवसरण विरचंति ।
माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय ऊलसन्ति ॥
सिंहासण बइठा तिहां सामी चउविह धरम प्रकासइ ।
बार परषदा आगलि बइठी निसुणइ मन उल्लासइ ॥१०॥

तप नइ अधिकारइ पखवासउ तप सार ।
पडिवा थी कीजइ पनरह तिथि सुविचार ॥
पनरह तिथि कीजइ गुरु मुखि लीजइ जिम दिन हुइ उपवास ।
श्री मुनिसुव्रत नाम जपीजइ, थांदी दव उल्लास ॥
तप ऊजमणइ रजत पालखउ सोवन पूतलि चंग ।
मोदक थाल देहरइ ढोइ जिनवर स्नात्र सुचंग ॥११॥

तप कीजइ रे निरंतर चतुर दर्शनी जेम ।
मन वंछित सुख संपति पामीजइ तेम ॥
संपति पामीजइ लील करीजइ राज रिद्धि विस्तार ।
पुत्र मित्र परिवार परंपर अति वल्लभ भरतार ॥
जस कीरति सोभाग वधइ महियल महिमा जाण ।
पर भवि सुगति तणा फल लहियइ ए तप तणइ प्रमाण ॥१२॥

फिर पापी रे चतुर्विध सघ तणउ अधिकार ।
भव्यन्दिन प्रमुख नगरादिक करिय विहार ॥

विहार करी प्रतिबोधी सखग पच सर्या परिवार ।
कार्तिक सेठ जितशत्रु तुरगम सुव्रत नाम कुमार ॥
तीस सहस बरस आउखु पाली जगदाधार ।
श्री सम्मेत शिखरि परमेसर पहुँता मुगति मझारि ॥१३॥
इम पच कल्याणक थुणियउ त्रिभुवन ताम ।
मुनि सुव्रत सामी वीसमउ जिणवर राय ॥
वीसमउ जिणवर राय जगत्र गुरु मय भंजण भगवंत ।
निराकार निरजण निरुपम अजरामर अरिहंत ॥
श्री जिणचंद विनेय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस ।
वाचक समयसुदर इम बोलइ पूरउ मनह जगीस ॥१४॥

इति श्री मुनि सुव्रत स्वामी पञ्चोपवास स्तवनम् ॥

प्राकृत संस्कृत स्तवन संग्रह—

ऋषभ-भक्तामर-स्तोत्रम् ।

नम्रेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्र ! चन्द्र !,
ज्ञानात्मदर्श-परिदृष्ट-विशिष्ट-विश्व ! ।
त्वन्मूर्तिरर्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
पालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

टीका—पं नमः । हे जिनेंद्र ! त्वन्मूर्ति जनानामालम्बनं । किं० भवजले पततां । केव ! तरणीव । किं० त्वन्मूर्ति ! अर्तिहरणी-संताप-नाशिनी । हे नमेंद्र ! नम्र इन्द्राणां चंद्र-समूहो यस्य संबोधनं । शेषं सुगमम् ॥१॥

गृह्णाति यज्जगति गारुडिको हि रत्नं,
तन्मंत्र-तंत्र-महिमैव गुणोऽप्यशक्तः ।
स्तोतुं हि यं पवगुणोऽप्यदयोऽप्यशक्तिः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

टीका— किलेति' सत्येऽहमगुणोपि तं प्रथम जिनेंद्रं स्तोष्ये । तत् अपरीग्रशक्तिः । तं कथं' स्तोतुं गुणोपि-सौम्योपि अपवा पवित्रोपि अशक्तोऽसमर्थः ! दृष्टांतमाह—यज्जगति गारुडिकोऽहिरत्न-सर्पमणिं गृह्णाति तन्मत्र-तंत्र-महिमैव । इत्यनेन निजयर्थेनिरास जिनमाहात्म्यैव वर्णितं । भक्ति-राग इव्यरोगोऽपि स्तौमीतीत्यस्ति ॥२॥

त्वां संस्मरन्नहमर करमीप्सितस्य,
दूरं चिरं परिहरामि हरादिदेवान् ।

हित्वा मणिं करगतामुपलं हि विज्ञ,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

ध्यानानुकूलपवनं गुण–पुण्य पात्र,
त्वामद्भुतं स्तुति विना जिन पानपात्र ।
मिथ्यात्वमत्स्य–भवन भवरूपमेन,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

क्षुत्क्षाम-कुक्षि-तृषिताऽऽतप–शीत-वात,
दुःखीकृताद्भुत–सुतोर्मरुदेविमाता ।
यथाप्युवाच भरतेति भवान् जिनस्य,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

टीका—मरुदेविमाता इति उवाच । इतीति किं ? हे भरत ! भवान् जिनस्य परिपालनार्थं अद्यापि किं न अभ्येति ?

मुक्तिप्रदा भवति देव ! तवैव भक्ति–
र्नान्यस्य देवनिकरस्य कदाचनापि ।
युक्तं यत सुरभिरेव न रंजमान–
स्तत्कार–भूत–घनिघनिकरोत्करद्रुः ॥ ६ ॥

गांगेयगात्र* ! नृतममृतप्रदात्र,
त्वमाम मंत्रयशो गुणरत्नपात्र ! ।
मिथ्यात्वमपि विलयं मम हृत्स्थितं न,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

*स्वर्ण.

नेत्रामृतं भवति[1] भाग्यबलेन दृष्टे,
हर्षप्रकर्षवशतस्तव भक्तिभाजाम् ।
वक्षस्थल-स्थित तु ते पतदम्बुतोऽसौ,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

श्रीनाभिनंदन ! तवाननलोकनेन,
नित्यं भवंति नयनानि विकस्वराणि ।
अम्भोरुहामिव दिवाकरदर्शनेन ।
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥

त्वत्पादपद्मशरणागतमानवांस्त्वं,
संसारसिंधुपतितान्परगतान्करोषि ।
निष्पाप ! पारगत ! यस्त्व स एव धन्यो,
मूर्खाश्रितं च न इह आत्मसमं करोति ॥१०॥

टीका—हे पारगत ! त्वं नरान् संसारसिंधुपतितान् पारगतान् करोषि । संसारसिंधुतटेः पारे गतान्-तीरे प्राप्तान् सन्निधि-त्वत्सदृशान् करोषीत्यर्थः । किं० न ? त्वत्पादपद्मेति सुगमं । यत्-यस्मात्कारणात् स एव ना-पुमान् धन्यो य इह जगति आश्रितं नरं भवि मूर्खा कृत्वा आत्मसमं करोति—आत्मतुल्यं कुर्यात् । अतः त्वं पारगतः सन् पराश्रितानपि पारगतान्करोषीति युक्तम् ॥१०॥

श्रुत्वा त्वदुक्तवचनानि निशम्य सम्यक्,
नो रोचते किमपि देव ! कुदेववाक्यम् ।

---

[1] भवति-स्त्वयि

पीयूषपानमसमानमहो विधाय,

क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

शम्भुस्स्वकीयललनाकलिताङ्गभोगो,

विष्णुर्गदासहितपाणिरितीव देव ! ।

मद्वेषरागरहितोऽसि जिन ! त्वमेव,

यस्मे समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

टीका—हे देव ! ईश-शंभुः स्वकीयललनाकलिताङ्गभोगः, विष्णुर्गदा-सहितपाणिरितीव हेतो रागद्वेषरहितः त्वमेवासि । यत्-यस्मा-त्कारणात्ते समानं-तव तुल्यमपरं रूपं नास्ति । अयं भावार्थः । देवत्वं त्रिष्वपि-हर-हरि जिनेषु वर्तते परं राग-द्वेषरहितो जिन एव । कथं ? हरस्तु स्त्रीसहितत्वाद्रागवान् । हरिस्तु गदाद्यस्त्रकलितपाणित्वात् द्वेषवान् ।

देवस्त्विन जिन ! सदेह मयंतमेव,

मन्येऽस्तमेति सविता दिवसावसाने ।

दीपोऽपि वर्तिविरह विधुर्मंडल च,

यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥१३॥

ये व्याप्नुवंति जगदीश्वर ! विरम-विरम,

मेऽयान् जनापि सुजवितरां ! त्रिलोक्याम् ।

त्वां भास्कर जिन ! विना तमसः समूहान्,

कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

टीका—हे जिन ! त्वां भास्करविना तान् तमसः समूहान्-अज्ञान प्रमाण यथे-च यथाप्रमाणम् को निवारयति ? कोपीत्यर्थः, इत्युक्तिः, शेषं सुगमम् ।

सिंहासनं विमलहेममयं विरेजे,
मध्यस्थितत्रिजगदीश्वरमूर्तिरम्यम् ।
नोद्योतनार्थमुपरिस्थितसूर्यबिंबं,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

टीका—किं मन्दराद्रिशिखरं न कदाचिच्चलितम् ।

दोषाकरो न सकरो न कलंकयुक्तो,
नास्तंगतो न सतमा नमविग्रहो न ।
स्वामिन् विधुर्जगति नाभिनरेन्द्रवंश—
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

टीका—हे स्वामिन् ! जगति त्वमपरो विधुरसि-नवीनचन्द्र असि । कथं ? विलक्षणधर्मानाह—स तु विधुर्दोषाकरो-दोषं रात्रिं करोतीति दोषाकरोऽथवा दोषायां-रात्रौ कराः-किरणा यस्य सः, त्वं तु न दोषाकरो दोषाणामष्टादशादीनामस्थानमनाकरः । पुनः स तु सकरः-सह करैः किरणैर्वर्तते यः सः, त्वं तु न सकरः-सह करेण दण्डेन वर्तते यः सः । पुनः स तु कलंकयुक्तः कलंकेनाभिधानेन युक्तो यः सः । त्वं तु न कलंकयुक्तो—न दोषविशेषसहितः । पुनः स तु अस्तंगतोऽस्तमस्ताचलं गतः-प्राप्तः प्रायः सायमित्यर्थात् प्रभातः । त्वं तु नास्तंगतः । नाशमिव अगमत् इत्यर्थः । पुनः स तु सतमाः सह तमसा-राहुणा वर्तते यः सः, त्वं तु न सतमा-सह तमसाऽज्ञानेन वर्तते यः सः एवंविधो न । पुनः स तु विग्रहः-सह विशिष्टैर्ग्रहैर्वर्तते यः सः त्वं तु एवंविधः सह विग्रहेण-संग्रामेण वर्तते यः सः, एवंविधो न शेषं सुगमम् ॥१६॥

नित्योदयस्त्रिजगतीस्वतमोपहारी,
भव्यात्मनां मदनकैरवबोधकारी ।
मिथ्यात्वमेघपटलैर्न समावृतो यत्,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्रलोके ॥१७॥

तावक्पपुण्यमुखरेख्य सुधानिधानं,
प्रह्लादकं जनविलोचनकैरवाणाम् ।
यत्र मिमो ! तव विभाति विभाविशेषं,
विद्योतमज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥

ध्यातस्त्वमेव यदि देव ! जनाभिलाप-
पूर्तीकर किमपरे विविधैस्तपस्यैः ।
निःपद्यते यदि च भौमजलेन धान्य,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

माहात्म्यमस्ति यदनंतगुणाभिराम,
सर्व्वज्ञ ! त हरिहरादिषु तद्वचो न ।
चिंतामणौ हि महतीह यथा प्रभावो,
नैव तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०॥

तद्देव [1] देहि मम दर्शननात्मनस्त्व-
मत्यद्भुत नूनयनामृत यत्र [2] दृष्टे ।
स्वामिन्निहापि परमेश्वर [3] मेऽन्यदेव,
कश्चिन्मनोहरति नाऽन्य भवांतरेपि ॥२१॥

---

* दर्शने [1] मम [2] अन्यमनो

ज्ञानस्य शिष्टवरदृष्टसमस्तलोक-
लोकस्य शीघ्रहतसंतमसस्य शश्वत् ।
दाता त्वमेव भुवि देव ! हि भानुमत्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
सिंहासनस्य भवदुक्त चतुर्विधात्मा,
धर्मात्ततो त्रिजगदीश ! युगादिदेव ! ।
सद्दानशीलतपनिर्मलभावनाख्या,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥
टीका—अपराभ्य शाक्यप्रभेदेऽभ्यंतोप्यस्ति भवो नात्र दोषः ।
स्वामिन्ननंतगुणपुञ्जकषायमुक्तः,
साक्षात्कृत त्रिजगदेव भवत्स्वरूपा ।
नान्ये निर्गमतयो रुचिर च पंच-
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥२४॥
चिंतामणिर्मणिषु धेनुषु कामधेनु-
र्गंगानदीषु नलिनेषु च पुण्डरीके ।
कल्पद्रु मस्तरुषु देव ! यथा तथात्र*,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
भास्वद्गुणाय करुणाय सुधीरणाय,
विघापघाय कमलप्रतिमेक्षणाय ।
सन्नचनाय मनताङ्करचनाय ।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

‡ धर्मोद्भवे-पुरुषमन्त्ररेखेति पर्याय * जगति.

एतां छलेन पतितं पुरतो हि रत्न,
दृश्येत किं नियतमतरलत्वरप्या ।
मोहादहेन मयि का त्वयि सस्थितेऽग्रे,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

मन्मानसान्तरगतं भवदीय नाम,
पापं प्रणाशयति पारगत प्रभूतम् ।
श्रीमद्युगादिजिनराज ! हिम समंता–
द्दिम्बरमेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

जन्माभिषेकसमये गिरिराजशृङ्गे,
प्रस्थापितं तव वपुर्विधिना सुरेन्द्रैः ।
प्रद्योतते भवतकोटियुतं च बिंबं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव नवांशुमालम्[1] ॥२९॥

केशाच्छटां स्फुरतीं दधदंगदेशे,
श्रीतीर्थराज ! विपुलांसतिसभितस्त्वम् ।
मूर्धस्थकुम्भसलिलक्षरितं च भृङ्ग–
पुंजैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

स श्रीयुगादिजिन ! मेऽभिमतं प्रदेहि,
धर्मोपदेशसमये दिवि गच्छदूर्ध्वम् ।
ज्योतिर्धिता जयति यस्य शिवस्य मार्गे,
प्रख्यापयद् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

---

[1] सहस्ररश्मे

सोपानपङ्क्तिमरवाँसि भवदूर्ध्वासि,
स्वर्गापवर्गसुखदायककृते यदि नो क्व तत् ।
तत्राभिरास्त्रिजगदीश्वर ! यान्ति जीवा,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥

भाति त्वया भुवि यथा न तथा विना त्वां,
श्रीसंघनायकगुणैस्सहितोपि संघ ।
शोभा हि यादृगमृतद्युतिना विना त,
नाऽपकृता महगणस्य विकाशिनो पि ॥३३॥

स्फारस्फुरत्सरसविह्वरावलिरूप्यपर्णि,
मक्षरस्फुरदिवनिशाविविनिर्यदग्निम् ।
सर्पोपि न प्रभवति प्रबलप्रकोपो,
दृष्ट्वा भव भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

सम्राप्तमंयमदरी मसतं प्रसव—
पुण्यौघपर्व परमशर्म्मफलोपपेतम् ।
मत्र्ये महोदयपत ! भववैरिवृन्दो,
नाऽऽक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

धर्म्मे धनानि निरिधानि सनातदर्थं,
मानुष्य मानसवने नियत वसतम् ।
प्रोषपरस्मरसमीपमखं कृपार्क !
त्वन्नामकीर्त्तनजल शमयत्यशेषम् ॥३६॥

यद्योद्गता शितिलताहि गिरेर्गुहायां,
किं तत्र तिष्ठति फणी गुणगेह तस्मात् ।
मिथ्यात्वमेतदगमभिसरागुवष्ट, !
त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंस ॥३७॥

पीडां करोति न कदापि सतां जनानां,
सूर्योदयाद्भृतव सरसोरुहाणाम् ।
दु खीकृत त्रिभुवनो विपदां च यस्य,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति ॥३८॥

त्वद्वाणिमञ्जुलमरदरसं पिवत–
स्तापोर्मिमतां परमनिर्वृतिमादिदेव ! ।
पुण्याढ्यभव्यजनचञ्चुरचञ्चरीका–
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभत ॥३९॥

कन्दर्पदर्परिपुसैन्यमपि प्रविश्य,
त्वद्धोदकारकृतमार्गसु धर्मितागा ।
देव ! प्रभो जय जयारवमगिधीरा–
स्त्रास विहाय भवत स्मरणाद् भजन्त ॥४०॥

त्वत्पादपद्मनखदीधितिकुङ्कुमेन,
चित्रीकृत प्रणमतां स्वललाटपट्ट ।
येषां तयेव सुरतां शिरसाँस्यमाञो,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥४१॥

भग्ने च कर्मनिगडे जिन ! लोहसार–

वाङ्मुद्गरस्य मदगुप्तिगृहात्तवाऽसौ ।
क्ष्मापाली–निगडितापि–मक्त–सत्वा,
सद्यः स्वयं विगतबन्धमया भवंति ॥४२॥

रोगादिवेल्लिसहगामपदस्य माम–
सौं सपदामिरमत सह　　पन्न्या ।
प्राक्पञ्चवासमगमद्विपदेव तस्य,
न स्यान्नकस्यचिदिव मतिमानपीते ॥४३॥

तस्यां गणे सुरतरुसुरधेनुरंहो–
चिंतामणिप्रकरतलं निखमंदिर च ।
यः श्रीयुगादिजिनदेवमसंस्तवीति,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥४४॥

श्रीमन्मुनीन्द्रजिनचन्द्रयतीन्द्रशिष्यं,
पूर्णेन्दुशिष्यसमयादिमसुन्दरेण ।
भक्तामरस्तवचतुर्थपद समस्या,
कव्यैः स्तुत प्रथमतीर्थपतिर्गृहीत्वा ॥४५॥

इति श्रीमदादीश्वरस्य गृहीतभक्तामरचतुर्थपादसमस्यास्तवः समाप्तः।

नानाविधश्लेषमयं श्रीआदिनाथस्तोत्रम्

विनौति यो नो सकलानिकेतन, कुर्वे जिन हसकलानिकेतनम् ।
सुखानि लभे समहस किन्नर, प्रणम्य पाद समहसकिन्नर ।१।
निर्मुक्तराग प्रमदाभिराम, मने मतगप्रमदाभिराम ।
नम्रीमवमदरविप्रहाम, जय प्रभो ! मंदरविप्रहाम ।२।
पुष्पाङ्करे जीवन्मुक्तमोदं, गुणद–राजीवनमुक्तमोदम् ।
विनौम्यह स्कधरमगदांत, जिनं वचस्कं घर मगदान्तम् ।३।
जय प्रभो ! कैतवचक्रहारी, यस्य स्तुवेस्त्व उव चक्रहारी ।
मास्यामदीवारहतो मताम, स्वर्गाभियामारह–शोभताम ।४।
प्रथमजिनवरा सकम्पमावप्रमास,
प्रगटभुवनकीर्ते कम्पमावप्रमास ।
प्रशमितरिपुवृन्द सर्वदा तातमेश,
प्रणय मदविभिये सर्वदाता तमेश ।५।
अपवर्गसरोवरराजहस, कुमतानलसंवरराजहस ।
सुमनोपमवंशमतागमन, जय हेमतनो ! शमतागमन ।६।
सुमनस्कृतसात्वपपातस्कान्त, भववारिधि भूत पपात कान्त ।
दृष्टो सम येन सनाथपांक, वदनं नयनेन मना वपाक ।७।
पत्कज चमरीकापव नायक, दीपनिष्पसनाकमपवे नायक ।
उ मुखमतसगागेयनालीकरम्, मक्तिमाजां सतां गयनालीकरम् ।८।
नम्रीमवसुरपुरन्दरमौलिरंगत्पादांबुजो नलिनसुंदरमौलिरंग ।
अज्ञानपंकहरणं न रराम धर्मे, नीपाम्बुधकसतपने नरराजचक्रे ।९।

भक्त्या श्रे   द जगयामदानदाद्यर्थ्वसक।
लक्ष्मीदोस्तनु दयागुणासुव तातों सतां दे परम् ॥
कृष्णस्फीतरुचिं नरा नमत भा जीवामतीति क्षिप्रं।
त्यागश्चेयसोरस कृतनति नमिं मुदा श्रायक ॥ ६ ॥

अत्र कवितं सरलतरश्लोकोऽनुक्रमेण निस्सरति स चायं—

मजदई जगदानद सकलप्रभुतावरम् ।
कृतराजीमतीत्याग श्रेय सर्वविदायकम् ॥१०॥

पदकमनत सदमरशरण वरकमलवदन वरकरचरण।
शमदमधर नरदरहरण जय जलधरघनमरकरकरण ॥११॥

एक स्वर मय काव्यम्—

श्रीसर्वज्ञ ग्रीयतप्रज्ञ, मोघावासं दत्तोल्लासम्।
भव्याधार रम्याकार, वंदे नित्यं नष्टासत्यं ॥१२॥

सर्वगुरुवर्णमय काव्यम्—

प्रोत्सप्यद्गुणपुष्पपुञ्जकलित कृष्णच्छवि सर्वदा।
मर्त्यानां श्रिरमौग्ध्यवञ्छितफल सद्धर्मशाखावरः ॥
दयाढ्य दरिद्रतामरहरः सद्यमपत्राकर ।
श्रीमद्र वतमरुमपडनमसौ श्रीनेमिकल्पद्रु म ॥१३॥

विविधवरकाव्यभेदं, स्तुत एवं सकलचंद्रबिंबमुख ।
प्रबलतन्द्रसमयसुन्दर गुणवितविर्नेमितीर्थेश ॥१४॥

इति श्रीनेमिनाथस्तवनं नानाविधकाव्यजातिमयं समाप्तं।

नेमिनाथ गीतम्

राग—आसावरी

जादवराय जीवे तुं कोडि वरीस ।
गगन मंडल उडत प्रमुदित चित, पंखिया देत आसीस ।१। जा.।
हम उपरि करुणा तइं कीनी, जगजीवन जगदीस ।
तोरण थी रथ फेरि सिधार्‌या, जोग ग्रह्यउ सुजगीस ।२। जा.।
समुद्र विजय राजाकउ अंगज, सुरनर नामई सीस ।
समयसुंदर कहइ नेमि जिणंद कउ, नाम जपुं निस दीस ।३। जा.।

इति नमिनाथ गीतं (३३)
(नेमिनाथ गीत छत्तीसी में स्वय लिखित ।)

यमकमयञ्च प्राकृतभाषाया पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

परमपासपहु महिमासयं, जस मिखिलिय सोमहिमासयं ।
सम   म रायमयं गयं, सिव पए य पयो अमयं गयं ।१।
चरणपाणिजिय (?) नीरयं, सयलहुयणवलियनीरयं ।
नमिर-नाग-पुरंदर-देवयं, मविअ-मायाव-सुन्दर-देवयं ।२।
सगुणिहा वि जिर्म्मं सयापम्मयं, कयकमायखय सयापम्मय ।
महिमसम्मदमासयस हं सयं, अतसमसुसमाणसहंसयं ।३।
परमरुअपहामरिमापयं, सुयसराञ्छलसामहिमापयं ।
सहिमलञ्छणरोहियलञ्छिमं, कम्मयवामरसेञ्छयलञ्छियं ।४।

विमरथामियवामरपायय,   परमसुक्खकरामरपायय ।
सुडुमर परवासयासयं, सुपसवीसरधासया सयं ।५।
परमपुपसत्तपायथानीरय,   दुहदवानासलवीवयनीरयं ।
सुभ्रंसेत्तवरगनिसायर,   गुणमणीमयणागधिसायर ।६।
दुरिमय दवयोगयमच्छरं, पवरसुक्खकर गयमच्छरं ।
सयथनिजिम्म-पंकयसपय, सरयसोममुहं कयसंपय ।७।
कलिकसायकलककमसावह,   निरुवमावकलाकमसावह ।
महिथुणामि तुम समयालय, नयदीव सम समयालयं ।८।
इय थुओ पहुपासजिणेसरो, सुरगसुक्खनिवासजिणेसरो ।
सयलपदवसप्पसरो वरो,   समयसुन्दरकप्पसरोवरो ।९।

इति श्रीपार्श्वनाथस्य लघुसमाप्यभाषायां लघुस्तवनसम्पूर्णम् ।

— • —

समस्यामयं पार्श्वनाथबृहत्स्तवनम्

त्वद्धामण्डलभास्करे स्फुरतरे भास्वत्प्रभाभासुरे ।
दृष्टे त्वेकपदे त्वदीयवदने पूर्णेन्दुबिम्बप्रभे ॥
घमास्थानविधौ त्वयीति भगवन् ध्यायापि ।
यथाचन्द्रमसौ प्रभातसमये घ्येकत्र किं रेजतुः ? ॥ १ ॥
विष्णुब्रह्ममहेश्वरप्रभृतयः सर्वेपि घ्र
सन्तु पयसा प्रतिदिनं ग्रोष्मार्पमास्य परे ॥
श्रीमर्हन् भगवन् भगत्त्रयपरेस्त्वम्बेमहतां यथा ।
अम्भोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधि ॥ २ ।

श्रीवामेयगुणत्रगेयमहिमामेयाभिधेयाभिध-
स्तत्पादाम्बुजयुग्मप्रसादवशतः राजत् त्रिलोकीपते ! ॥
अंधो पश्यति निर्धनो धनपती रंकोपि राजायते ।
मूको जल्पति संशृणोति बधिर' पङ्गुर्नरो नृत्यति ॥ ३ ॥
सिंहासनं समधिरोहयत' प्रभाते,
मार्मडलं भगवत प्रविलोक्य दूरात् ।
प्राच्यां स्थितेन पुरुषेस विनिर्मित य-
दस्युपतो दिनकरः खलु पश्चिमायाम् ॥ ४ ॥
त्वय्यशोभिरभिवरित्रविष्टपे, शुभ्रिते ऽमरशरविंदुसुन्दरे ।
पार्श्वदेव ! गुणारत्ननीरधे, कज्जलं रमससभिर्म यशौ ॥ ५ ॥
लोकोत्तरां धर्मधुरां दधाने, देव ! त्वयि ज्ञानगुणप्रधाने ।
तथापि विश्वेषु यशोरुकीर्ति-सुधाप्यपार्श्वजननीशिमानम् ॥ ६ ॥
मा दृष्ट होपोस्त्वतिसुदरत्वान्माया कर्ता कज्जलकल्परेखाम् ।
प्रभो' कपोले प्रविलोक्य कोप्यवक्, पिपीलिका भुवति चंद्रबिंबम् ७
मनोमवे धोमयितुं मनन्त, समुपत तीर्थपते ! नितान्तम् ।
त्वया तत्र नियन्त्रितं यत्सुतापराधे धनकस्य दण्डः ॥ ८ ॥
अस्यौपरिस्यामकलामयोनां, प्रभा प्र)
पार्श्वप्रभो ! कोपि विरो वदत्ति, चन्द्रोपरि क्रीडति सैंहिकेयः ॥९॥
दशशतनयनौघैः स्वर्ग कुम······
विमलसलिलपूर्णैः स्नापिते श्रीजिनेंद्रे ।
प्रवरवसुत्वपास्य प्रोच्छ······ ···
··· ·· ···था दुरासीत्पयोधि' ॥१०॥

यमां नियमां विधुरां द्विषन्त शान्त निशान्त नियत गुणानाम् ।
स्तवामि सेवामि समुस्त्रिलोकी-नाथं सनाथ समया मयाद्य ॥५॥
संकल्प सकल्पसमं नरेन्द्र ! कोटीरकोटीरमणीयपादम् ।
तारं जितारं जिनपं शरण्य !, दन्तं भदन्त भविका भजध्वम् ॥६॥
योगाय यो गाय　　शास्ते, सोमानसोमाननदेव धन्य ।
देवाधिदेवाधिमवगसिद्ध, सत्कीर्ति-सत्कीर्तितमोक्षमार्ग ॥७॥
इति स्तुतो जिनचन्द्र दिवाकरः, सकलचंद्रमुख प्रमुखाकरः ।
यमकबन्धकविलसदक्षरैः, समयसुन्दरभक्तिविनिर्मितैः ॥८॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य लघुस्तवनं यमकमयम् ॥

यमकमयं महावीरबृहद्स्तवनम्

जयति वीरजिनो जगतांगत, सकलविभवने विगतांगज ।
जयनिरस्तसमस्त मानवमहनिषण्ण पदो नत मानव ॥१॥
विधुररेणुपरा प्रसरो वर-प्रविलसद्गुणरसरोवर ।
दिशतु मेऽभिमतं सुमनोहर, स्मरविरस्तवरूपमनोहर ॥२॥
जिनवरं विनुवामि कलापदं, इतनमत्सुमनः सफलापदम् ।
त्रिजगतीपुरतोषितकोपमं, कमलबन्धुतया महकोपमम् ॥३॥
पिबत निर्मलवाक्यसुधारसं, जिनपते जन　ऽमृतरसम् ।
त्रिभुवनस्य विरस्तवतामसं, शुभदशिप्रसृत विश्वतामसम् ॥४॥
स्मरतर्कदर्पभरः स्मरतामसं, मम मतं हतमोऽस्मिरशामनम् ।
शिवसरोवरविं श्रमवामसं, सुरनर कृतिनां नमतामतम् ॥५॥

सुजनकैरवसोमसमोदयस्तनुसमस्तसुखालस मोदय।
त्वमिह मां कुरुष्वाखिलभूषन , कमनकुड्मलकोमलभूषन ।६।
अपवि नाम मनो जिन तावक, स्पृशति ये न विपज्जनतामकम्।
सुखकरं तमर्थं महिमाश्रमं, हृदयकैरवपूर्णहिमां शुमम् ॥७॥
जिन जडोपि जनस्तव नामतः, कवि पदं क्षमते रमनामत ।
सुकृतिसज्जनसंचयसोदर, प्रबलपुण्यलतापयसोदर ॥८॥
मम यथौ जिन मे सरसाशय, द्युतिजितांशुमविस्मरसाशय।
हरतु सर्वतम' पुन रागय, भवपयोधिपतज्जनरागय ॥९॥
त्वमिह पुण्यगुणेन मसुद्धर, प्रपवित भववारिसमुद्धर ।
रसिपतौ जिन मां सहसालसमलसनमालसनैकहसालस ॥१०॥
कनककैरवकायकलाप स' 'रुपमानतलोककलापरुक्।
सुजननेत्रसुधारविराजते, चरमतीर्थप ! कापि विराजते ॥११॥
समय मे जिनराज भवानल, पदकजं प्रथावस्य भवानलम्।
परिहरन् प्रतिपापपरपर, प्रवकृताम्भुतपपापरपरः ॥१२॥
मव सिलोक्य रुचि भुवि कांचनं, कृत तदा नो भवि कांचन।
प्रविमलीय द्युची शमतालसन्नुवपयोनिधिपोतभवालस ॥१३॥
इति मयका महितो जिनचंद्रमरमनिनभरमोदधिमद्र
स्तुति करखेन वितन्द्र ।
कल्याकैरवियीसमचद्र' समयमनोवरकविकुलमद्र'
प्रदशितमवमयचंद्रः ॥१४॥

इति श्री महावीरस्य बृहत्स्तवनं यमकमय सम्पूर्णम् ॥

अल्पाबहुत्व विचारगर्भित-श्रीमहावीर-वृहत्स्तवनम्

सेस परूविअमेयं, दिसाणुवाएण अप्पबहुत्वं ।
जीवाण बायराण य, पुणामि तं वद्धमाणजिण ॥ १ ॥
सामन्नेण जीवा आऊ-वण विगल - तिरिअ पंचिंदी ।
पच्छिमथोवा अहिआ, पुव्वादिसि दाहिणुत्तरओ ॥ २ ॥
मणुया सिद्धा तऊ, सव्व थोवा य दाहिणुत्तरओ ।
पुव्विं सखा पच्छिम, अहिआ कहिआ तुमे नाह ! ॥ ३ ॥
वाउ थोवा पुव्विं, तत्तो अहिआ य पच्छिमुत्तरओ ।
दाहिण नारय थोवा, पुव्वुत्तर पच्छिमासु समा ॥ ४ ॥
दाहिण असरव्व पुढवी दाहिण थोवा कमेण अहिम तओ ।
उत्तर पुव्वा वरदिसि, तुज्झ नमो अण निदिट्ठा ॥ ५ ॥
भवणवइ-पुव्व-पच्छिम, थोवा तुल्ला य उत्तर असंखा ।
दाहिण तओ असंखा, वतर थोवा य पुव्वदिसिं ॥ ६ ॥
पच्छिम उत्तर दाहिण, अहिआ थोवा य जोइसा तुल्ला ।
पुव्वा वरदिसि दाहिण, उत्तर अहिआ कमा भणिआ ॥ ७ ॥
पढम चउकप्प देवा, सव्व थोवा य पुव्वपच्छिमओ ।
उत्तर असंख दाहिण, अहिआ तुह मय निउणिविवि ॥ ८ ॥
बंभाइ कप्प चउग, पुव्वुत्तर पच्छिमासु थोवसमा ।
दाहिण सखा तत्तो, उवरिम देवा य सम सव्वे ॥ ९ ॥
थोवा पुग्गल उड्ढ, अहिअ अह तह य संखतुल्ला य ।
उत्तरपुव्विमअं, दाहिण पच्छिमेण तओ ॥ १० ॥

दाहिण पुरत्थिमेणं, उत्तरपच्छिमेण अहिमसमा ।
पुव्विं असस्स अहिआ, पच्छिम सह दाहिणुत्तरओ ॥११॥
अप्पबहुत्तसरूवं, इय दिहू केवलेण नाह ! तुमे ।
मह तह कुणसु पसाय, अहमवि पासेमि जह सव्वं ॥१२॥
इय पउदिसासु ममिओ, तुह आणा वज्जिओ य वीर ! अहं।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिव दसु ॥१३॥
इति श्री अल्पाबहुत्व विचारगर्भित श्री महावीरदेव वृद्धस्तवन सम्पूर्ण ।१६।*

संवत् १६८४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि १ दिन बुधवासरे श्रीपत्तने श्रीकंसारपाटके कृतं चोपड़ा पा० देवजी समस्त्यर्थनया।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि गीत

------- ---------------- - ------ - ---

------- ---------- ------ --- -- ---

"केसर अगर कपूर पूजा करी। घाडउ कुसुम की माला।"।डि०।
नगर विश्राम विमान

थि । खरतरगच्छ प्रतिपाल।१।डि०।
महतीयाण श्रावक प्रतिबोधक । आणत पाल गोपा(ला) ।
।२।डि०।

इति श्री दिल्ली मण्डन श्री जिनचन्द्रसूरि गीतं ॥१॥

जिनकुशलसूरि गीत

राग—सारंग

दादउ

।रसाकर।१।दा०।स०।

* यह टीका सहित आत्मानन्द सभा भावनगर से बहुत वर्षों पूर्व छपा था अब अप्राप्य है।)

परतखि २ यई कहई

गोजी। सबलउ देस्यइ सोभाग ॥३॥ जि०॥

केसर के० २ भरिय कचोल

। अगर उखेवउ अवि भाय ॥४॥ जि०॥

दिन २ दिन २ वेउ दादा दीपताजी

ऊगत भाण ॥५॥ जि०॥

इति श्री मुलताण मण्डन श्री जिनदत्तसूरि श्री जि

~ — रास समवे ॥७॥

अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीतम्

राग—मारुणी

पुजिमी क्ष

गुरु एह विचारवा। सघ उदय करिज्यो समारवा।१। पू०।

जागति जोति

मय सकल मागइ। मोटा महिपति सेवा मांगइ।२। पू०।

मेदनि तटसंघ

'तवइ परमाणइ। बलसवत गुरु एह वखाणइ।३। पू०।

समरयत सद

'य दत्तसूरि दादा। समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादा।४ पू०।

इति श्री मेड

करयो श्री अजयमेरु मंडन श्री जिनदत्तसूरि गीत ॥८॥

सं० १६८८ वर्षे मार्गशीर्ष २ दिन श्रीसमयसुन्दरोपाध्याये

लिखितम्'

प्रबोधगीतम्

साम्हो बको सहु भ्रम करउ, पछइ आपस्यउ कम ।
दुख आण्यां पापइ दोहिलउ, मन न रहइ ठाम ॥१॥सा०
जीवण आसइ   ग्रु, सउ बरस नी आस ।
पणि वेसास नहीं घडी, आविउ नाम्यो के सास ॥२॥सा०
भमर तो को दीसइ नहीं, वग ऊलटय   ।
वइसि रहउ किउं बापडा, करि मउ कइ पद ॥३॥सा०
ए सामग्री दोहिली, वली नीरोग डील ।
मोजन प्राप्   उ, विवइ काइ करइ ढील ॥४॥सा०
पहिलु परिघारी रहू, छेजे सघल साथि ।
समयसुन्दर कहइ   , दुस्यइ सहु सुख हाथि ॥५॥सा

साखा० इति गीतं ।

लिखितं पंडित जगजीवनेन साध्वी अजमी माला पठन कृते
शुभम् भवतु कल्याणमस्तु ।

● (पत्र १ आपा प्र लित मिला इसमें दादा गुरु के १० गीत हैं जिनमें पूर्व प्रकाशित ५ गीतों को छोड़ अन्य ५ गीत यहाँ दिये गये हैं ।)

परिशिष्ट

कविवर के गद्य रचना का एक उदाहरण

२४ तीर्थंकरों के नामों का अर्थ व कारण

(चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ)

१ । ॐ । संयम धुरा वहिवा भणी ऋषभ—समानि ते ऋषभ । ए सामान्य अर्थ ।

ऊरू नइ विषय ऋषभ लांछन अथवा चउद सुपना माहे पहिलउ मरुदेवायइ ऋषभ दीठउ ते भणी ऋषभ । ए विशेष ।१।

२. परीसहेन जीतउ ते अजित । ए सामान्य ।

गर्भे थकां माता नइ पासा सारी रमतां राजायइ जीती नहीं । ए वि० ।२।

३. चउत्रीस अतिसय अथवा सुख जेहनइ विषय संभवइ ते संभव । ए सामान्य ।

जिवारइ गर्भि थकां पृथिवी माहि धान्य निष्पत्ति अधिकी थई, ते सम्भव । ए वि० ।३।

४ अभिनंदियइ देवेंद्रादिके ते अभिनन्दन । ए सामान्य ।

गर्भि थकां पछी वार २ इंद्रइ अभिनंदयउ ते अभि० । ए वि० ।४।

५. जेह नी भली मति ते सुमति । ए सामान्य ।

गर्भि थकां सउकि नइ झगड़इ माता नइ भली मति ऊपनी झगड़उ भागउ ते भणी सुमति । ए वि० ।५।

६. पद्म नी परि प्रभा ते भणी पद्मप्रभ । ए सामान्य ।

गर्भि थकां माता नइ पद्म नी शय्या नउ डोहलउ ऊपनउ, ते भणी पद्मप्रभ । ए वि० ।६।

७ शोभन छइ पसवाड़ा जेहना ते सुपार्श्व । ए सामान्य ।

गर्भि थकां माता ना पसवाड़ा भला थया रोग गयउ, ते भणी सुपारश्व । ए वि० ।७।

८. चंद्र नी परि सौम्य प्रभा छइ जेहनी ते चंद्रप्रभ । प सामान्य।
गर्भि थका माता नइ चंद्रमा नउ डोहलउ थयउ,
ते भणी चंद्रप्रभ । प वि० ।८।

६. शोभन सकल विधि आचार जेहनउ ते सुविधि। प सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व विधि मइ विषइ कुशल थई,
ते भणी सुविधि। प वि० ।६।

१० समस्त जीव नइ सन्ताप पाप उपशमावी शीतल करइ,
ते शीतल । प सामान्य।
गर्भि थकां माताना कर स्पर्श थी पिता नउ पूर्वोत्पन्न असाध्य
रोग उपशम्यउ ते भणी शीतल । प वि० ।१०।

११ समस्त लोक नइ श्रेय हित करइ, ते श्रेयांस । प सामान्य।
गर्भि थकां माताइ किणइ अनाक्रमी शय्या आक्रमी
श्रेय कल्याण थयउ ते भणी श्रेयांस । प वि० ।११।

१२. वसु देव विशेष तेहनइ पूज्य, ते वसुपूज्य । प सामान्य।
गर्भ थकां वसु रत्ने करी इंद्रराज कुल पूरयउ हुयउ अथवा
वसुपूज्य राजा नउ बेटउ, ते वासुपूज्य । प वि० ।१२।

१३ विमल निर्मल ज्ञान छइ जेहनउ, ते विमल।
अथवा गयउ छइ मल जेहनो ते विमल । प सामान्य।
गर्भि थकां माताची मति अनइ देह विमल निर्मल थई
ते विमल । प वि० ।१३।

१४ अनन्त कर्म ना अंश जीता अथवा अनन्त ज्ञानादि छइ
जेहनो ते अनन्त । प सामान्य।
गर्भि थकां माता रत्न खचित अनन्त कहतां महाप्रमाण
दाम स्वप्नइं दीठु ते भणी अनन्त । प वि० ।१४।

१५. दुर्गति पड़तां प्राणी नइ धरइ ते धर्म । प सामान्य।
गर्भि थकां माता दानादि धर्म मइ विषय तत्पर थई
ते भणी धर्म । प वि० ।१५।

१६ शांति करइ, ते शांति । प सामान्य।
गर्भि थकां अशिव उपशम्यउ शांति थई ते भणी शांति
। प वि० ।१६।
१७ कु कहतां पृथिवी विषइ रह्यउ, ते कुन्थु । प सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नखचित कुन्थु कहतां थूम देखती हुई
ते भणी कुन्थु । प वि० ।१७।
१८ कुल नी वृद्धि भणी हुयइ ते अर । प सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नमय अरउ दीठउ, ते भणी अर ।
। प वि० ।१८।
१९. परीषहादि मल्ल जीता ते भणी मल्लि । प सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ सर्व ऋतु कुसुम माल्य शय्या नउ
दोहलउ देवता पूरयउ, ते भणी मल्लि । प वि० ।१९।
२० जगत् नी त्रिकालावस्था जाणइ ते मुनि, अनइ भला व्रत
छइ जेहना ते सुव्रत (बे) पद मिल्यां मुनि सुव्रत । प सामान्य।
गर्भि थकां माता मुनिनी परि सुव्रत थई ते भणी सु०। प वि० ।२०।
२१ परीसहां नइ नमाड्या ते भणि नमि । प सामान्य।
गर्भि थकां गढ परि माता नइ देखी नइ वैरी नम्या,
ते भणि नमि । प वि० ।२१।
२२. अरिष्ट उपद्रव छेदिया नइ नेमि कहतां चक्रधारा समान
ते नेमि । प सामान्य।
गर्भि थकां माता अरिष्ट रत्नमय नेमि दीठउ ते भणी
नेमि । प वि० ।२२।
२३ सर्व भाव देखइ ते पारस । प सामान्य।
गर्भि थकां माता अन्धारइ सांप दीठउ ते भणी पारस । प वि० ।२३।
२४ ज्ञानादि के वध्यउ ते वर्द्धमान । प सामान्य।
गर्भि थकां ज्ञान कुल, धन धान्यादिकइं करी वध्यउ
ते भणी वर्द्धमान । प वि० ।२४।
प चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ आखिया।
(पत्र १ स्वयं लिखित समयसुन्दर)